पहेली आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ जैनकथा रत्नकोष नामे ग्रंथनो आठमो भाग छापी अमोए अमारा सर्व साधर्मी सुज्ञ भाइओनी समक्षमां मूकेलो छे.जे भागमां सम्यग्दृष्टि समस्त सज्जनोने वांचवा योग्य एवो मुनिवर्य पंमित श्री रामविजयजी विरचित सोलमा तीर्थंकर जे श्री शांतिनाथ भगवान्, तेमनो मात्र एक रास दाखल करेलो छे, कारण के जीवने उत्तम पुरुषोनां चरित्रो वांचवाथी तथा सांभलवाथी संसारनो निस्तार थाय छे. आ रासना जूदा जूदा छ खंमो छे, तेमां श्री शांतिनाथ भगवानना बारे भवनी सविस्तर कथाओ आवेली छे, तेमज वली श्री शांतिनाथजीना मुख्य गणधर जे श्री चक्रायुध तेमना पण सर्व भवनी कथाओ आवेली छे. आ ग्रंथ एवो तो रमणीय छे के जेनी प्रत्येक ढाल सरस एवा नव रसे करी संमिलित छे, अने तेमां घणुं करीने तो स्थले स्थले वैराग्यकारक उपदेशोज आवेला छे, के जेने ध्यान दइने वांचवाथी वाचकवृंदने संसारनुं असारपणुं समजाय छे, अने तेथी तेमनां अंतःकरणनां परिणाम सुधरे छे, अने पछी तेने सद्गतिनी श्रेणि प्राप्त थाय छे. वली आ ग्रंथमां बीजी पण चित्तचमत्कृतिकारक मंगलकलश कुमार तथा सुमित्रानंदादिक तथा पुण्यसार विगेरेनी अनेक कथाओ आवेली छे, तेमज वली श्रावकनां बार व्रत परनी बार कथाओ आवेली छे,तेनुं अहीं अति वर्णन न करतां सर्व भाइओने हुं एटलीज भलामण करुं छुं के ते सर्व कथाओ तेओए पोतेज पोतानी मेले वांची तेनुं जे यथातथ्य स्वरूप छे ते समजवुं.आ रास मुनिवर्य पंमित श्री रामविजयजीए पंमित श्री अजितप्रभ सूरिए संस्कृत पद्यमां बनावेला श्री शांतिनाथचरित्र उपरथी रचेलो होय एम लागे छे, कारण के ते संस्कृत ग्रंथ अने आ ग्रंथ ज्यारे आपणे मेलवी वांचीए छीए, त्यारे बहुशः बेहु ग्रंथनी अक्षरशः वात मलतीज आवे छे. मात्र आ रासमां सहुने सारी रीते समजी शकाय ते माटे वैराग्यकारक कथाओमां केटलाएक कठिन भागमां यत्किंचित् चरित्र ग्रंथगत न छतां वधारेल छे, तथा एवीज रीते चैत्यवंदन स्तवन पण नवीनज बनावेलां छे. आ रासमां प्रसंगोपात्त पृथक् पृथक् कविकृत श्लोको तथा दोहा तथा सिद्धांत गाथाओ पण लीधेली छे. वली आ ग्रंथमां शब्दानुप्रास तो

आवेला छे के जेना वांचवाथी वांचनारने तथा सांजलनारने अमंद एवो आनंद उत्पन्न थाय छे, ते आनंदनुं यथायोग्य वर्णन करवामां अमारी कलम काम करी शकती नथी, अने आ ग्रंथ संस्कृत परथी जे रासरूपे रच्यो छे, ते तो कविए केवल संस्कृतजाषाना अविज्ञात जनोने मोटो उपकार करेलो छे, केमके जो आ रास न करे, तो संस्कृतना अविज्ञात जनोने श्री शांतिनाथनुं चरित्र वांचवानो लाज मली शके नहीं.

हवे आ ग्रंथने अमोए ज्यारे छापवानो विचार कर्यो, त्यारे ते छापवाने माटे प्रथम आ ग्रंथनी प्रत जोइए. तो पछी ते प्रतनो जे जे स्थले मलवानो संजव हतो, ते ते स्थले अमोए पत्र द्वारा तपास कराव्यो, अने वली अहीं मुंबइमां पण प्रयासपूर्वक तपास कर्यो, परंतु कोइ पण स्थलथी तेनी एक पण प्रत अमोने उपलब्ध थइ नहीं; मात्र जावनगरथी अमारा सुज्ञ साधर्मी जाइ जे शेठ कुंवरजी आणंदजी तेर्उए अमोने एक प्रत मोकली, अने पछी एक प्रत अमारा घरनां पुस्तको शोधवाथी मली आवी. तेमां अमारा घरनी प्रत शोध करेली होवाथी घणी शुद्ध हती, परंतु ते प्रतमां प्रथमथी ते चोथा खंमनी त्रीजी ढाल पर्यंतनां पत्रोज हतां नहीं, त्यारे तो ते जावनगरथी आवेली प्रत उपरथीज अमोए आ ग्रंथ यथामति संशोधन करावीने ते चोथा खंमनी त्रीजी ढाल सुधी छाप्यो छे, माटे एक प्रत परथी छपावाथी तेमां केटलीएक जूलो रही गइ हशे. तदनंतर तो अमोए आ ग्रंथने बेहु प्रत साथे मेलावी, तेनुं प्रयासपूर्वक यथाबुद्धि संशोधन करावी छाप्यो छे, तोपण आ ग्रंथमां दृष्टिदोषथी तथा कंपोज करनारनी जूलथी तथा अज्ञानथी जे कांइ जूलचुक रही गइ होय, तो तेने सर्व साधर्मी जाइर्उए मारी पर सुधारी वांचवारूप कृपा करवी, अने वली हे सुज्ञ जनो! संसारविटंबणाने वधारनार एवां बीजां कार्योमां व्यर्थ व्यय न करतां आवां अमारां, संसारोछेदक एवां उत्तम कार्योमां तन, मन, धनथी उदार आश्रय आपवामां अमारा पिताना समयमां जेम बहुपरिकर रहेता हता, तेम सांप्रत समयमां पण रहेशो एवी अमने पूर्ण आशा छे, कारण के आवा ज्ञानवृद्धिकार्यने उत्तेजन आपनारा जनोने ज्ञानदान समान पुण्यनी प्राप्ति थाय छे. सुमतिजनेषु किं बहुविलेखनेन ॥ शुजं जूयात् ॥

श्रावक खीमजी जीमसिंह माणेक

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

ज्ञानीओए, महात्माओए अने मुनि महाराजोए मुख्यत्वे करीने वैराग्यनोज बोध थवा माटे जे ग्रंथो रचेला छे ते ग्रंथोनी अंदर वैराग्यनोज बोध आपेल छे एम तेमना रचेला ग्रंथोनुं निरीक्षण करतां आपणने जणाय छे. आ जैनकथा रत्नकोषना आठ भाग छपाया छे, तेमांनो आ आठमो भाग छे,अने तेनी अंदर मुनि श्री रामविजयजी विरचित सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथनो रास छे. ते रास श्री राजनगर (अमदावाद) मां संवत् १७०५ नी सालमां रचेलो छे. आ ग्रंथ घणोज रसिक अने वैराग्यभावनाने उत्कृष्ट करे तेवो होवाथी अमोए तेनी प्रथम आवृत्ति खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति छपावी प्रसिद्ध करी छे. उत्तम जीवो दरेक भवमां उत्तम स्थाने उत्तम कुलमां उत्तम जीवना पुत्रपणे उपजे छे ते आ ग्रंथमां प्रत्यक्ष देखाडी आप्युं छे. श्री शांतिनाथ प्रभुना जीव बे वार तीर्थंकरना पुत्र थया, बे वार चक्रवर्त्तिपणुं पाम्या, एक वार बलदेव थया अने पोते तीर्थंकर पण थया. आवी श्रेष्ठता कोइ अपूर्व पुण्यवान् जीवने प्राप्त थाय छे. श्री महावीर स्वामीना जीव करतां श्री शांतिनाथना जीवनी उच्चता अति विशेष छे अने एमनुं आखुं चरित्र प्रशंसनीय छे. तेमना चरित्रमां कोइ पण प्रकारनो डाघ सरखो पण दृष्टिए पडतो नथी. श्री शांतिनाथना चरित्रमां कनकश्री तथा सुमतिनां वैराग्यनां कारणो, ते प्रसंगे संसारमां अति लोलुपी छतां अपराजित ने अनंतवीर्यना उत्तम विचार, मेघरथ राजाए पारेवाने उगार्या संबंधी वृत्तांत विगेरे प्रसंगो वांचवा जेवा छे, तेथी टुंक विस्तारथी दरेक खंडनुं वर्णन लख्युं छे.

श्री शांतिनाथनो प्रथम भव—रत्नपुर नगरमां श्रीषेण राजा अने तेनी अनिनंदिता तथा सिंहनंदिता राणीओनो वृत्तांत—इंदुषेण अने बिंदुषेण नामना बे पुत्रो—अचल ग्राममां धरणीजट ब्राह्मणनी दासीनो पुत्र कपिल—तेनो ब्रह्मत्वपणे वेदाभ्यास—तेनुं परदेश नीकलवुं—रत्नपुर आववुं—सत्यकि ब्राह्मणने त्यां निवास—तेनी पुत्री सत्यभामा साथे कपिलनुं पाणिग्रहण—तेना माननी वृद्धि—अन्यदा नाटक जोवा जवुं—रात्रिए वर्षाद होवाथी वस्त्र रहित थइने आववुं—तेथी सत्यभामाने कुलीनपणानी थयेली शंका—

प्रस्तावना.

स्नेहनी मंदता–कपिलना पितानुं कपिल पासे आववुं–तेणे कहेलो कपिलनो वृत्तांत–सत्यभामानुं श्रीषेण राजा पासे आववुं–अकुलीन वरने तजी देवानो आग्रह–सत्यभामानुं राजाना महेलमां पुत्रीपणे रहेवुं–रत्नपुरी नगरीनी नजीक देवरमण उद्यानमां विमलबोध सूरीश्वरनुं आगमन–सूरीश्वरे आपेल धर्मदेशना–देशना मध्ये मंगलकलश कुमारनी कथानुं कहेवुं–तेनी अंदर आवेल सुखदुःखरूप विचित्र रसिक आनंददायक मंगलकलश कुमारनुं चरित्र–इंदुषेणने वरवा आवेल श्रीकांता कन्या–तेनी साथे आवेली अनंतमतिका वेश्या–तेना पर इंदुषेण अने बिंदुषेण ए बंने भाइओनुं मोहित थवुं–परस्पर बंने भाइओनुं युद्ध–तेनुं निवारण न थइ शकवाथी श्रीषेण राजा अने तेनी बंने राणीओ तथा सत्यभामाए करेल विषप्राशन–तेथी चारे जीवनुं मरण–युद्ध करता बंने भाइओ पासे एक चारण मुनिनुं आववुं–तेणे कहेलो वृत्तांत–तेथी थयेलो पश्चात्ताप–तेनी साथे वैराग्यनुं उपजवुं–तेथी लीधेल दीक्षा–श्रीषेण राजा विगेरे चारे जीवो उत्तरकुरुक्षेत्रमां युगलिया देव थया ते शांतिनाथनो बीजो भव. बंने भाइओने तप करतां थका तथा शुद्धाचार पालता थका केवलज्ञाननुं उपजवुं–श्रीषेण राजा ते शांतिनाथ भगवाननो जीव तथा बीजा त्रण जीव मली चारे जीव त्यांथी च्यवी सौधर्म देवलोकमां देव थया ते तेमनो त्रीजो भव. एवी रीते श्री शांतिनाथना रासनो प्रथम खंड विविध अलंकारोए करी संपूर्ण थाय छे. रासकर्ता श्री रामविजयजी प्रथम खंडनी छेल्ली ढालमां कहे छे के–

॥ माहरे मन घणी भक्ति सुणवा तणी, शांति प्रभु रास
रसनाधिकारे। तेहनो खंड पहेलो थयो पुण्यथी, सांभलो
भवियणो निर्विकारे ॥ आगले सरस रस शांति जिन
रासमां, तास रचना रचीशुं भलेरी। वात विकथा तजी
चित्त समता भजी, सांभलो छोडो निंदा अनेरी ॥

श्री शांतिनाथ भगवानना चोथे भवे प्रसंगार्थ हरि प्रतिहरि प्रमु-चरित्र–रथनूपुरचक्रवाल शहेरमां अर्ककीर्त्ति विद्याधरनी स्त्री ज्योति-ना उदरमां श्रीषेण राजाना जीवनुं पुत्रपणे उपजवुं–अमिततेज नाम न–सत्यभामाना जीवनुं सुतारा नामे तेनी बहेनपणे उत्पन्न थवुं–

मेघनाद विद्याधर थवुं–तेनुं मेरु पर्वत पर आववुं–अच्युतेंद्रनो मेलाप–तेणे आपेलो मेघनादने बोध–तेथी तेणे लीधेली दीक्षा–पूर्व जन्मना वैरी देवे करेल उपसर्ग–मुनिनुं निश्चल रहेवुं–अनशन करीने बारमा देवलोकमां उपजवुं. एवी रीते विविध कलाए करी श्री शांतिनाथना रासनो त्रीजो खंड संपूर्ण थयो.

आठमे भवे रयणसंचय नगरीना क्षेमंकर राजानी रत्नमाला नामे राणीना उदरने विषे अपराजितना जीवनुं आववुं–तेणीए दीठेल चौद स्वप्न तथा पन्नरमुं वज्र–पुत्रजन्म–वज्रायुध नाम स्थापन– यौवनावस्थानुं पामवुं–लक्ष्मीवती साथे पाणिग्रहण–तेने थयेल सहस्रायुध नामे पुत्र–ते अनंतवीर्यनो जीव–तेनी यौवनावस्था–तेनुं कनकश्री साथे पाणिग्रहण–ईशान कल्पना देवोमां थयेली वज्रायुधना सम्यक्त विषे चर्चा–चित्रचूल देवनुं परीक्षा निमित्ते क्षेमंकर राजानी सभामां आववुं–तेणे करेल नास्तिक मतनुं स्थापन– वज्रायुधे तेनो आपेल उत्तर–देवनी प्रसन्नता अने तेनुं स्वर्गगमन–वज्रायुध अहींथी पांचमे भवे सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथ थशे एम ईशानेंद्रनुं कहेवुं–वज्रायुधनुं वसंतक्रीडा माटे सूरिनिपात उद्यानमां जवुं–जलक्रीडा–प्रतिवासुदेव दमितारिना जीवनुं विद्युद्दंष्ट्र देव थइने त्यां आववुं–तेणे करेल उपद्रव–वज्रायुधे करेल तेनुं निवारण–शक्रेंद्रनुं त्यां आववुं–तेणे करेल वज्रायुधनी स्तवना–क्षेमंकर राजा पासे लोकांतिक देवनुं आववुं–तेमणे लीधेल दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–तेमनी देशना–वज्रायुधनी आयुधशालामां चक्र रत्ननी उत्पत्ति–तेणे करेल मंगलावती विजयना छ खंडनुं साधन–पुण्यथी सुख प्राप्ति थाय छे तेना उपर पुण्यसारनी कथा–क्षेमंकर प्रभुनुं वज्रायुधनी नगरीए पधारवुं–वज्रायुधनुं वांदवा जवुं–तेने थयेल वैराग्य–सहस्रायुधने राज्ये स्थापन करी पोते लीधेली दीक्षा–तेने थयेल उपसर्ग–रंभा विगेरेए करेलुं तेनुं निवारण–सहस्रायुधे करेल राज्यपालन–तेणे लीधेली दीक्षा–वज्रायुध साथे मलवुं–बंनेए करेल तीव्र तप ने शुभ ध्यान–साथे करेल अनशन–नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थवुं. एवी रीते

१ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रमां शांतिनाथना चरित्रमां श्रीशांतिनाथ भगवान् नवमे भवे त्रीजा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल छे तेमज भगनलाल हठीसिंगना छापेला श्री शांतिनाथ चरित्रमां श्री शांतिनाथ भगवान् नवमे भवे नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल छे–खरुं शोडुं केवली भगवान् जाणे.

वैराग्य जावनाने दर्शावता अने विविध अलंकारोए करी रसिक श्री शांतिनाथना रासनो आ चोथो खंम संपूर्ण थयो.

श्रीपांचमा खंमना प्रारंजमां मुनिश्री वीश विहरमान
जिननी स्तुति करतां थका कहे ठे के–
जव दशमो श्रीशांतिनो, सुणतां मंगलमाल ।
निद्रा विकथा परहरी, निसुणो थइ उजमाल॥
जिनगुण सांजलतां थका, जन्म होय सुपवित्र ।
बोधिबीज निर्मल करे, मुनिजन कहे महंत ॥

दशमे जवे पुंमरीगिणी नगरीमां घनरथ राजानी राणी प्रीतिमतीना उदरमां वज्रायुधनुं पुत्रपणे उपजवुं–मेघरथ नाम स्थापन–अने तेनी बीजी राणी मनोहरीना उदरमां सहस्रायुधना जीवनुं पुत्रपणे उपजवुं–दृढरथ नाम स्थापन–बंनेनो बहोंतेर कलानो अच्यास–निहतारि राजानी प्रियमित्रा अने मनोरमा नामे बे पुत्रीउं साथे मेघरथनुं पाणिग्रहण अने त्रीजी कन्या सुमति साथे दृढरथनुं पाणिग्रहण–त्रणेने थयेल एकेक पुत्र–नंदिषेण, मेघसेन ने रथसेन नाम स्थापन–मेघरथे पूठेला सजामां निज पुत्रोने प्रश्नो अने तेना उत्तर–घनरथ राजा पासे सुसेना गणिकानुं कुकमो लइने आववुं–तेनी साथे मनोरमा राणीना कुकमानुं युद्ध–घनरथ राजाए कहेल बंनेनो पूर्व जव–कुकमाउने थयेल जातिस्मरण–तेमणे करेल अनशन–तेमनुं जूतनायक थवुं–मेघरथ पासे आववुं–तेमना उपकारनुं करावेल स्मरण–घनरथ राजा पासे लोकांतिक देवोनुं आववुं–तेमणे लीधेली दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–मेघरथ राजानुं उद्यानमां जवुं–तेमनी पासे जूतोए करेल नाटक–एक विद्याधर युगलनुं त्यां आववुं–तेनो मेघरथ राजाए कहेल वृत्तांत–प्रियमित्राना पूठवाथी कहेलो तेनो पूर्व जव–आंयबिल वर्धमान तपनो महिमा–ते विद्याधरनुं स्वस्थाने जवुं–तेणे घनरथ प्रजु पासे लीधेली दीक्षा–एकदा मेघरथ राजानुं पौषधव्रत लइ बेसवुं–एक पारेवानुं खोलामां आवीने पमवुं–मेघरथे आपेली तेने आश्वासना–पाठल बाज पक्षीनुं आववुं–तेणे करेल पारेवानी मागणी–मेघरथे आपेल उपदेश–तेमां कहेली मनोहर कथाउं–तेणे आपेलो उत्तर–मेघरथे पारेवा बरोबर पोताना शरीरनुं मांस आपवा कबुल करवुं–कांटानुं मंगाववुं–पारे-

मेघनाद विद्याधर थवुं–तेनुं मेरु पर्वत पर आववुं–अच्युतेंद्रनो मेलाप–तेणे आपेलो मेघनादने बोध–तेथी तेणे लीधेली दीक्षा–पूर्व जन्मना वैरी देवे करेल उपसर्ग–मुनिनुं निश्चल रहेवुं–अनशन करीने बारमा देवलोकमां उपजवुं. एवी रीते विविध कथाए करी श्री शांतिनाथना रासनो त्रीजो खंम संपूर्ण थयो.

आठमे जवे रयणसंचय नगरीना क्षेमंकर राजानी रत्नमाला नामे राणीना उदरने विषे अपराजितना जीवनुं आववुं–तेणीए दीठेल चौद स्वप्न तथा पन्नरमुं वज्र–पुत्रजन्म–वज्रायुध नाम स्थापन– यौवनावस्थानुं पामवुं–लक्ष्मीवती साथे पाणिग्रहण–तेने थयेल सहस्रायुध नामे पुत्र–ते अनंतवीर्यनो जीव–तेनी यौवनावस्था–तेनुं कनकश्री साथे पाणिग्रहण–ईशान कल्पना देवोमां थयेली वज्रायुधना सम्यक्त विषे चर्चा–चित्रचूल देवनुं परीक्षा निमित्ते क्षेमंकर राजानी सज्रामां आववुं–तेणे करेल नास्तिक मतनुं स्थापन– वज्रायुधे तेनो आपेल उत्तर–देवनी प्रसन्नता अने तेनुं स्वर्गगमन–वज्रायुध अहींथी पांचमे जवे सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथ थशे एम ईशानेंद्रनुं कहेवुं–वज्रायुधनुं वसंतक्रीमा माटे सूरिनिपात उद्यानमां जवुं–जलक्रीमा–प्रतिवासुदेव दमितारिना जीवनुं विद्युद्दंष्ट्र देव थइने त्यां आववुं–तेणे करेल उपद्रव–वज्रायुधे करेल तेनुं निवारण–शक्रेंद्रनुं त्यां आववुं–तेणे करेल वज्रायुधनी स्तवना–क्षेमंकर राजा पासे लोकांतिक देवनुं आववुं–तेमणे लीधेल दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–तेमनी देशना–वज्रायुधनी आयुधशालामां चक्र रत्ननी उत्पत्ति–तेणे करेल मंगलावती विजयना ठ खंमनुं साधन–पुण्यथी सुख प्राप्ति थाय ठे तेना उपर पुण्यसारनी कथा–क्षेमंकर प्रजुनुं वज्रायुधनी नगरीए पधारवुं–वज्रायुधनुं वांदवा जवुं–तेने थयेल वैराग्य–सहस्रायुधने राज्ये स्थापन करी पोते लीधेली दीक्षा–तेने थयेल उपसर्ग–रंजा विगेरेए करेलुं तेनुं निवारण–सहस्रायुधे करेल राज्यपालन–तेणे लीधेली दीक्षा–वज्रायुध साथे मलवुं–बंनेए करेल तीव्र तप ने शुज ध्यान–साथे करेल अनशन–नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थवुं. एवी रीते

१ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रमां शांतिनाथना चरित्रमां श्रीशांतिनाथ जगवान् नवमे जवे त्रीजा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल ठे तेमज मगनलाल दलीसिंगना ठापेला श्री शांतिनाथ चरित्रमां श्री शांतिनाथ जगवान् नवमे जवे नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल ठे–खरुं खोटुं केवली जगवान् जाणे.

वैराग्य जावनाने दर्शावता अने विविध अलंकारोए करी रसिक श्री शांतिनाथना रासनो आ चोथो खंम संपूर्ण थयो.

श्रीपांचमा खंमना प्रारंजमां मुनिश्री वीश विहरमान
जिननी स्तुति करतां थका कहे ठे के–

जव दशमो श्रीशांतिनो, सुणतां मंगलमाल ।
निडा विकथा परहरी, निसुणो थइ उजमाल ॥
जिनगुण सांजलतां थका, जन्म होय सुपवित्र ।
बोधिबीज निर्मल करे, मुनिजन कहे महंत ॥

दशमे जवे पुंमरीगिणी नगरीमां घनरथ राजानी राणी प्रीतिमतीना उदरमां वज्रायुधनुं पुत्रपणे उपजवुं–मेघरथ नाम स्थापन–अने तेनी बीजी राणी मनोहरीना उदरमां सहस्रायुधना जीवनुं पुत्रपणे उपजवुं–दढरथ नाम स्थापन–बंनेनो बहोंतेर कलानो अज्यास–निहतारि राजानी प्रियमित्रा अने मनोरमा नामे बे पुत्रीउं साथे मेघरथनुं पाणिग्रहण अने त्रीजी कन्या सुमति साथे दढरथनुं पाणिग्रहण–त्रणेने थयेल एकेक पुत्र–नंदिषेण, मेघसेन ने रथसेन नाम स्थापन–मेघरथे पूठेला सजामां निज पुत्रोने प्रश्नो अने तेना उत्तर–घनरथ राजा पासे सुसेना गणिकानुं कुकमो लइने आववुं–तेनी साथे मनोरमा राणीना कुकमानुं युद्ध–घनरथ राजाए कहेल बंनेनो पूर्व जव–कुकमाउंने थयेल जातिस्मरण–तेमणे करेल अनशन–तेमनुं जूतनायक थवुं–मेघरथ पासे आववुं–तेमना उपकारनुं करावेल स्मरण–घनरथ राजा पासे लोकांतिक देवोनुं आववुं–तेमणे लीधेली दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–मेघरथ राजानुं उद्यानमां जवुं–तेमनी पासे जूतोए करेल नाटक–एक विद्याधर युगलनुं त्यां आववुं–तेनो मेघरथ राजाए कहेल वृत्तांत–प्रियमित्राना पूठवाथी कहेलो तेनो पूर्व जव–आंबिल वर्धमान तपनो महिमा–ते विद्याधरनुं स्वस्थाने जवुं–तेणे घनरथ प्रजु पासे लीधेली दीक्षा–एकदा मेघरथ राजानुं पोषधव्रत लइ बेसवुं–एक पारेवानुं खोलामां आवीने पमवुं–मेघरथे आपेली तेने आश्वासना–पाठल बाज पक्षीनुं आववुं–तेणे करेल पारेवानी मागणी–मेघरथे आपेल उपदेश–तेमां कहेली मनोहर कथाउं–तेणे आपेलो उत्तर–मेघरथे पारेवा बरोबर पोताना शरीरनुं मांस आपवा कबुल करवुं–कांटानुं मंगाववुं–पारे-

मेघनाद विद्याधर थवुं–तेनुं मेरु पर्वत पर आववुं–अच्युतेंद्रनो मेळाप–तेणे आपेलो मेघनादने बोध–तेथी तेणे लीधेली दीक्षा–पूर्व जन्मना वैरी देवे करेल उपसर्ग–मुनिनुं निश्चल रहेवुं–अनशन करीने बारमा देवलोकमां उपजवुं. एवी रीते विविध कलाए करी श्री शांतिनाथना रासनो त्रीजो खंड संपूर्ण थयो.

आठमे जवे रयणसंचय नगरीना क्षेमंकर राजानी रत्नमाला नामे राणीना उदरने विषे अपराजितना जीवनुं आववुं–तेणीए दीठेल चौद स्वप्न तथा पन्नरमुं वज्र–पुत्रजन्म–वज्रायुध नाम स्थापन– यौवनावस्थानुं पामवुं–लक्ष्मीवती साथे पाणिग्रहण–तेने थयेल सहस्रायुध नामे पुत्र–ते अनंतवीर्यनो जीव–तेनी यौवनावस्था–तेनुं कनकश्री साथे पाणिग्रहण–ईशान कल्पना देवोमां थयेली वज्रायुधना सम्यक्त विषे चर्चा–चित्रचूल देवनुं परीक्षा निमित्ते क्षेमंकर राजानी सन्नामां आववुं–तेणे करेल नास्तिक मतनुं स्थापन– वज्रायुधे तेनो आपेल उत्तर–देवनी प्रसन्नता अने तेनुं स्वर्गगमन–वज्रायुध अहींथी पांचमे जवे सोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथ थशे एम ईशानेंद्रनुं कहेवुं–वज्रायुधनुं वसंतक्रीडा माटे सूरिनिपात उद्यानमां जवुं–जलक्रीडा–प्रतिवासुदेव दमितारिना जीवनुं विद्युद्दंष्ट्र देव थइने त्यां आववुं–तेणे करेल उपद्रव–वज्रायुधे करेल तेनुं निवारण–शक्रेंद्रनुं त्यां आववुं–तेणे करेल वज्रायुधनी स्तवना–क्षेमंकर राजा पासे लोकांतिक देवनुं आववुं–तेमणे लीधेल दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–तेमनी देशना–वज्रायुधनी आयुधशालामां चक्र रत्ननी उत्पत्ति–तेणे करेल मंगलावती विजयना ठ खंडनुं साधन–पुण्यथी सुख प्राप्ति थाय छे तेना उपर पुण्यसारनी कथा–क्षेमंकर प्रजुनुं वज्रायुधनी नगरीए पधारवुं–वज्रायुधनुं वांदवा जवुं–तेने थयेल वैराग्य–सहस्रायुधने राज्ये स्थापन करी पोते लीधेली दीक्षा–तेने थयेल उपसर्ग–रंजा विगेरेए करेलुं तेनुं निवारण–सहस्रायुधे करेल राज्यपालन–तेणे लीधेली दीक्षा–वज्रायुध साथे मलवुं–बंनेए करेल तीव्र तप ने शुभ ध्यान–साथे करेल अनशन–नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थवुं. एवी रीते

१ त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रमां शांतिनाथना चरित्रमां श्रीशांतिनाथ जगवान् नवमे जवे त्रीजा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल छे तेमज मगनलाल हठीसिंगना छपेला श्री शांतिनाथ चरित्रमां श्री शांतिनाथ जगवान् नवमे जवे नवमा ग्रैवेयकमां उत्पन्न थया एम लखेल छे–खरुं खोटुं केवली जगवान् जाणे.

वैराग्य ज्ञावनाने दर्शावता अने विविध अलंकारोए करी रसि
नायना रासनो आ चोथो खंम संपूर्ण थयो.

श्रीपांचमा खंमना प्रारंज्ञमां मुनिश्री वीश विहरम
जिननी स्तुति करतां थका कहे छे के–

ज्ञव दशमो श्रीशांतिनो, सुणतां मंगलमाल ।
निद्रा विकथा परहरी, निसुणो थइ उजमाल ॥
जिनगुण सांज्ञलतां थका, जन्म होय सुपवित्र ।
बोधिबीज निर्मल करे, मुनिजन कहे महंत ॥

दशमे ज्ञवे पुंमरीगिणी नगरीमां घनरथ राजानी राणी प्रीति
उदरमां वज्रायुधनुं पुत्रपणे उपजवुं–मेघरथ नाम स्थापन–अने तेन
राणी मनोहरीना उदरमां सहस्रायुधना जीवनुं पुत्रपणे उपजवुं–
नाम स्थापन–बंनेनो बहोंतेर कलानो अज्यास–निहतारि राजानी
मित्रा अने मनोरमा नामे बे पुत्रीउ साथे मेघरथनुं पाणिग्रहण अने
कन्या सुमति साथे दृढरथनुं पाणिग्रहण–ब्रणेने थयेल एकेक पुत्र–
षेण, मेघसेन ने रथसेन नाम स्थापन–मेघरथे पूछेला सज्ञामां
पुत्रोने प्रश्नो अने तेना उत्तर–घनरथ राजा पासे सुसेना गणिकानुं कुक
लइने आववुं–तेनी साथे मनोरमा राणीना कुकमानुं युद्ध–घनरथ राज
कहेल बंनेनो पूर्व ज्ञव–कुकमाउने थयेल जातिस्मरण–तेमणे करेल अ
शन–तेमनुं ज्ञूतनायक थवुं–मेघरथ पासे आववुं–तेमना उपकारनुं कर
वेल स्मरण–घनरथ राजा पासे लोकांतिक देवोनुं आववुं–तेमणे लीधेल
दीक्षा–प्राप्त थयेल केवलज्ञान–मेघरथ राजानुं उद्यानमां जवुं–तेमनी पासे
ज्ञूतोए करेल नाटक–एक विद्याधर युगलनुं त्यां आववुं–तेनो मेघरथ
राजाए कहेल वृत्तांत–प्रियमित्राना पूछवाथी कहेलो तेनो पूर्व ज्ञव–आंय-
बिल वर्धमान तपनो महिमा–ते विद्याधरनुं स्वस्थाने जवुं–तेणे घनरथ
प्रज्ञु पासे लीधेली दीक्षा–एकदा मेघरथ राजानुं पोषधव्रत लइ बेसवुं–
एक पारेवानुं खोळामां आवीने पमवुं–मेघरथे आपेली तेने आश्वासना–
पाछल बाज पक्षीनुं आववुं–तेणे करेल पारेवानी मागणी–मेघरथे आपेल
उपदेश–तेमां कहेली मनोहर कथाउ–तेणे आपेलो ...
बरोबर पोताना शरीरनुं मांस ...

वानुं अत्यंत वजन–मेघरथनुं कांटाने एक पासे बेसी जवुं–सामंतादिके करेल हाहाकार–देवतानुं प्रगट थवुं–पारेवा तथा बाज पक्षीना पूर्व भवनो मेघरथे कहेल वृत्तांत–बंनेने थयेल जातिस्मरण–तेमणे करेल अनशन–तेमनुं देवता थवुं–मेघरथ राजाए अष्टम करीने करेल कायोत्सर्ग–ईशानेन्द्रे करेल प्रशंसा–बे इंद्राणीउनुं परीक्षा माटे आववुं–तेमणे करेल उपसर्ग–मेघरथनुं अचल रहेवुं–इंद्राणीउनुं स्वस्थानके जवुं–घनरथ तीर्थंकरनुं त्यां आवागमन–तेउए आपेल धर्मदेशना –अंतर्गत कहेली देवराज वत्सराजनी कथा–मेघरथने थयेल वैराग्य अने जणावेल दीक्षा लेवानो विचार–दृढरथनुं पण साथेज तैयार थवुं–मेघसेनने राज्ये स्थापन–बंनेए लीधेली दीक्षा–मेघरथे करेल वीश स्थानकनुं आराधन–तीर्थंकर नामकर्मनो बंध–बंनेए करेल अनशन–बंनेनुं सर्वार्थसिद्ध विमानमां उपजवुं ए अगीयारमो नव. एवी रीते श्री शांति जिन रासनो पांचमो खंड वैराग्यरसे संमिश्रित कथाउ युक्त संपूर्ण थयो.

बारमे भवे हस्तिनापुर नगरना विश्वसेन राजानी राणी अचिरा देवीनी कुक्षिमां मेघरथना जीवनुं सर्वार्थसिद्धथी च्यवीने उपजवुं–माताए दीठेलां चौद स्वप्न–भगवंतना गर्भमां उपजवाथी मरकी विगेरेनी थयेली शांति–प्रभुनो जन्म–दिशिकुमारीकृत जन्मोत्सव–इंद्रकृत जन्मोत्सव–इंद्रे करेली प्रभुनी स्तुति–विश्वसेन राजाए करेलो जन्मोत्सव–शांतिनाथ नाम स्थापन-यौवनावस्था–राज्ये स्थापन–अनेक राजकन्याउ साथे पाणिग्रहण–शांतिनाथनी राणी यशोमतीए दीठेल शुभ स्वप्न–दृढरथना जीवनुं सर्वार्थसिद्धथी च्यवी तेनी कुक्षिमां उपजवुं–पुत्रजन्म–चक्रायुध नाम स्थापन–चक्ररत्ननी उत्पत्ति–शांतिनाथनुं दिग्विजय माटे प्रयाण–मागधादि देवोनुं शरणे आववुं–तेमणे आपेल भेट–उत्तर तरफना त्रण खंडनुं साधवा जवुं–म्लेछो साथे युद्ध–म्लेछोनुं वश थवुं–ऋषभकूट पर नाम लखवुं–हस्तिनापुरमां प्रवेश–पांचमा चक्री तरीके अभिषेक–लोकांतिक देवोनुं आववुं–सांवत्सरिक दान–दीक्षामहोत्सव–प्रभुए लीधेल दीक्षा–प्रभुने केवलज्ञान–देवकृत समवसरण–चक्रायुधने वधामणी–तेनुं वांदवा आववुं–प्रभुनी देशना–इंद्रियोने जीतवा संबंधी विषय उपर गुणधर्म अने कनकवतीनो संबंध तथा कषाय उपर नागदत्तनो संबंध–चार व्रत संबंधी कथाउ

सहित उपदेश–चक्रायुधे लीधेल दीक्षा–गणधरस्थापना–मोह राजा तथा तेना सैन्यनुं वर्णन–जीव संसारदुःख भोगवे तेना उपर रत्नचूडनु दृष्टांत–श्री शांतिनाथनुं मोक्षगमन–ते पछी देवादिकृत शोक तथा निर्वाणमहोत्सव–त्रीश मोहस्थानकनुं विवेचन–कोटिशिला तीर्थमां चक्रायुधनुं मुक्तिगमन–शांति जिन स्तुति–ग्रंथकारनी प्रशस्ति. एवी रीते श्री शांतिनाथनो रास छ खंडोए करी संपूर्ण थयो. ग्रंथकार श्री रामविजयजी कहे छे के–

श्रीराजनगरनो संघ सोभागी, तेहने प्रथम सुणाया ।
ऋद्धि वृद्धि प्रगटी अधिकेरी, आनंद अधिक उपाया ॥

आवा उत्तम ग्रंथोनुं वांचन अने मनन करवाथी मनोवृत्ति समभावने पोषे छे, शुद्ध वस्तु प्रति स्नेह जागे छे. सांप्रत काळना मोहक प्रसंगोथी लोलुपता न पामतां आत्मवृत्ति अलौकिक ज्ञानबल तथा तपोबल वधारवा उद्यत रहे छे, आ संसारना प्रपंचनुं स्वरूप समजाय छे, अंतःकरणमां गुप्त भराइ रहेला दोषोनुं भान थाय छे तथा तेमनो त्याग करवा आग्रह बंधाय छे, मिथ्यात्व विलय थइ जाय छे अने विनीत हृदयमां उत्तम भावना भाववानी तत्परता प्रगटे छे.

आ महान् उपकारी ग्रंथकारे आ ग्रंथमां वैराग्यभावनाने पुष्टि आपनारा उत्तम विषयो वर्णवेला छे. ग्रंथना मुख्य विषय वैराग्यना स्वरूपने पल्लवित करवाने निर्ममत्व वैराग्य विगेरे गुणोना स्वरूपने दर्शावी मोह, राग अने द्वेषना त्यागने माटे घणुं जणावेलुं छे. ते सिवाय वासनानो त्याग, क्षमानो स्वीकार, अहंकारनो जय, माननो नाश, मायानो विलय विगेरे केटलाएक वैराग्य गुणना विरोधी अवगुणोनुं स्वरूप अलंकारिक रूपे दर्शावी ग्रंथकारे ग्रंथना उद्दिष्ट विषयने सारी रीते वर्णव्यो छे. लोभ अने संतोष एम परस्पर विरोधवाला गुण अवगुण उपर चमत्कारिक [प्र]भाव दर्शावनारी दार्ष्टांतिक कथाओथी अने कषाय तथा इंद्रियोनी प्रब[ल]ताने दबावनारा उत्तम उपायवाला उद्गारोथी ग्रंथकारे सहृदय पुरु[षो]नां मनने सारी रीते आकर्ष्यां छे. छेवटे कामनी वासना अने मननी [चप]लता विगेरेनुं यथार्थ स्वरूप दर्शावी अने मुख्य विषय वैराग्यभावनानुं [...]द माहात्म्य दर्शावी ग्रंथकारे पछीज उत्कृष्ट रीते आ चरित्र समाप्त [कर]युं छे.

क्षमापना.

सर्वे साधर्मी भाइओने विनंति करीए छीए जे आ ग्रंथनी अंदर मति-दोषथी के प्रमादथी भूलचुक रही होय अगर सिद्धांतविरुद्ध लखायुं होय तो तेनी श्रीसंघ समक्ष क्षमा चाहीए छीए अने तेवी भूलो वांचनार सज्जन सुधारी वांचशे एवी अमारी नम्रता छे.

विज्ञप्ति.

आ ग्रंथनी आ बीजी आवृत्ति छपावी छे ते जोइ आनंदित थया छीए. सर्व सज्जनो आवा उत्तमोत्तम ग्रंथोनुं वांचन मनन करी पोतानो भव सुधारशे. जेथी रीते आवा ग्रंथोनो वधारे फेलावो थाय तेवी रीते सर्वेने नम्रता करीए छीए, जेथी अमो बीजा उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रसिद्ध करवामां उमंगी थइशुं.

वीर संवत् २४४२ चैत्री पुनम.
विक्रम संवत् १९७२.
मांडवी, शाकगली, मुंबइ.
घर नं. २२९ थी २३१.

ली.
श्रावक भीमसिंह माणेकनी वती
शा. भाणजी माया.



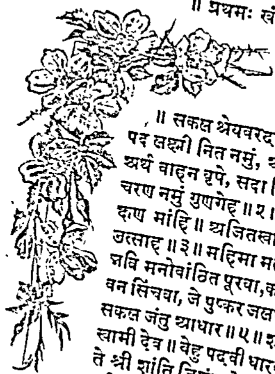
॥ अथ ॥

॥ श्री सुमतिविजय शिष्य पंडित श्री रामविजयजी विरचित ॥

॥ श्री शांतिनाथ भगवाननो रास प्रारंभ: ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमः खंडः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ सकल श्रेयवरदायिनी, मुनिवरवंदित जेह ॥ जिन-
पद लक्ष्मी नित नमुं, आणी अधिक सनेह ॥ १ ॥ ऊजय
अर्थ वाहन रूपे, सदा विराजे जेह ॥ ते श्री वृषभ प्रभु तणा,
चरण नमुं गुणगेह ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुवर्गदल, जिण जीत्युं
रण मांहि ॥ अजितस्वामी पमुहा नमुं, ते जिन धरी
उत्साह ॥ ३ ॥ महिमा महोटो जेहनो, सकल सुख दातार ॥
भवि मनोवांछित पूरवा, कामकुंभ अवतार ॥४॥ कुशलवल्लि-
वन सिंचवा, जे पुष्कर जलधार ॥ विश्वसेनकुल अवतर्या,
सकल जंतु आधार ॥ ५ ॥ शांतिनाथ प्रभु सोलमा, गजपुर-
स्वामी देव ॥ वेहु पदवी धारक थया, सारे सुर नर सेव ॥ ६ ॥
ते श्री शांति जिणंदनो, सरस रसिक संबंध ॥ विस्तारे करी
वर्णवुं, द्वादश भव अनुबंध ॥७॥ गुण अनंत श्री जिन तणा,
केम करी वर्णव्या जाय ॥ पण ते प्रभुनी भक्तिनुं, महोटुं मुज सहाय ॥ ८ ॥
श्री सुमति सुगुरु विद्यानिधे, पद्युं एह रसाल ॥ बालबंध श्री शांतिनो,
रासप्रबंध विशाल ॥ ९ ॥ नव नव भव चढती कला, शुक्ल पक्ष जिम चंद ॥
जिम कीधा तिम वर्णवुं, धरी मनमां आनंद ॥ १० ॥ भव पहेले श्रीषे-
ण, विलसी बहु संपत्ति ॥ ते विस्तारे हुं कहुं, सुणजो भवि इक चित्त ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ स्वस्ति श्रीशाखा ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप अनुपम दीप, ... महीधर मध्य विराजे, लख योजन विस्तार ॥ जे ...

आवासा,वासधरा दोइ चार ॥ तेह तणे अंतर अभ्यंतर, सन्निवास सुविचार ॥ १ ॥ यडुक्तमागमे ॥ नरहं हेमवयंति, हरिवासंति महाविदेहंति ॥ रम्मगए रणवयं, एरवयं चेव वासाइ ॥ १ ॥ ते मांहे शुनरत जन बहु संयुत, नरत नाम वर खित्तं ॥ जिनवर चक्रधरादिक नरवर, चरणवास सुपवित्तं ॥ नरतनूमिनूपण गतदूषण, पत्तन बहुजन वासं ॥ रत्नपुरं पुरमां रत्नोपम, बहु मणि रयण निवासं ॥ २ ॥ वापी वप्र विहार विराजे, वाफी वन आराम ॥ सकल लोक धनवंत विलासी, बहु आशा विश्राम ॥ ज्ञानी ध्यानी दानी मानी, सज्जन जन सन्मान ॥ एहवुं नगर अनोपम उंपे, इंद्रपुरी उपमान ॥ ३ ॥ वारु नीति शुन रीति महामति, लक्ष्मीपति गुणधारी ॥ श्रीषेणानिध नामे नूपति, जाणे सुर अवतारी ॥ नीम कांत नूपति गुण धारे, नरवसहो नरसिंहो ॥ राजा राज्य करे अतुलीवल, तेजे अकल अबीहो ॥ ॥ ४ ॥ तेह घर राणी गुण इंद्राणी, जाणीती जग मांय ॥ रूपे रति राणी दोय पट्टराणी, वाहाली जीवित प्राय ॥ अनि सिंह आगल नंदिता जोडे, आवंते अनिधान ॥ विलसे ते साथे नृप जगनाथे, जोमी जोमी समान ॥५॥ विलसंता नोगा पुण्यसंयोगा, एक दिवसने योग ॥ सुखसेजे सूती पुण्य पनोती, पट्टेली स्त्री नीरोग ॥ ऋतुधर्म सनाता तेज दिखाता, चंद सूर दोय इंद ॥ देखे उत्संगे क्रीमा करता, धरता अति आनंद ॥ ६ ॥ देखी सुपनंतर हर्षे निरंतर, हियडे गजगति गेल ॥ आवी पियु पासे मन उल्लासे, मानुं मोहनवेल ॥ जय जय मुऊ स्वामी अंतरजामी, प्राणनाथ अवधार ॥ सुहणे में दीठा लाग्या मीठा, चंद्र सूर्य दोय सार ॥ ७ ॥ तेहनुं फल स्वामी कहो रतिकामी, पूर्बु वे कर जोमी ॥ सांनल मृगनयणी अमृतवयणी, फल नाखुं मन कोम ॥ होशे सुत सुंदर रूप पुरंदर, निज कुलदीपक दोय ॥ हरखी ते राणी ने सुणी वाणी, आवी मंदिर सोय ॥ ८ ॥ दोय गर्न धरंती ते गुणवंती, सोहे अंग अपार ॥ जाणग उपगारी दोयने धारी, धरणी परे गुणधार ॥ शुन दोहला लावे अंगज वावे, लावे धर्मविचार ॥ शुन वेला राणी गुणमणि खाणी, प्रसवे दोय कुमार ॥ ए ॥ श्रीषेण नरिंदा धरे आनंदा, आवंता दरबार ॥ वंदी ओलावे गुणिजन गावे, बोले जयजयकार ॥ चिरं जीवो नंदन जग आनंदन, कोमाकोमी वरीस ॥ सोहव इम गावे हर्ष वधावे, देती बहु आशिष ॥ १० ॥ देखी दोय पुत्ता गुणसंयुत्ता, मत्ता हर्ष नरेण ॥ माता कुलरावे वडी धरवावे, स्नन मही निज करेण ॥ सुत नामे सुंदर गुणमणि

मंदिर, इंडुपेण बिंडुपेण ॥ चढती वय पामे बहु जन कामे, शोजे रूपगणेण ॥ ११ ॥ हवे अष्टम वर्षे बहुले हर्षे, पाठवीया दोय नंद ॥ निशाले सूना जिम ते रुमा, बुद्धे जेह अमंद ॥ रस ग्रंथ अनुत्तर कला बहुत्तर, जणीया चारे जेद ॥ देखी दोय जाया हरखी माया, वाध्यो चित्त उमेद ॥ १२ ॥ यौवन वय आया रूप सुहाया, मानुं दोय रतिकंत ॥ मावित्र मनोरथ करता सारथ, राजलील विलसंत ॥ पहेली ए ढाले पुण्य विशाले, दाख्यो राज विलास ॥ श्री सुमति सुगुरुनो शिष्य कहे जवि, सुणो शांति जिनरास ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसरे जरतमां, मगध नाम शुज देश ॥ तेमां बहु रूद्धे जर्यो, अचल नाम सन्निवेश ॥ १ ॥ वेदविचक्षण तिहां वसे, बारु बाम्हण एक ॥ धरणीजट नामे निपुण, सकल शास्त्र सुविवेक ॥ २ ॥ तस घरणी धरणी परे, क्षमावंतमां लीह ॥ नाम यशोजद्रा वली, मीठी जेहनी जीह ॥ ॥ ३ ॥ पियु साथे सुख विलसतां, जन्म्या अंगज दोय ॥ नंदिजूति श्रीजूति बेहु, रूप अनुपम सोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥ ते द्विजना घरमां वसे, कपिला नामे दासी रे ॥ आवी यौवनवेशमां, प्रेम कला सुविलासी रे ॥ १ ॥ विरुइ विषयविमंबना ॥ ए आंकणी ॥ जोजो जगत विमासी रे ॥ विषय समी विषमी नहीं, महीयल महोटी हांसी रे ॥ वि० ॥ २ ॥ रूप देखी दासी तणुं, बाम्हण थयो विपरीतो रे ॥ वेदकला अलगी रही, मोहकलणमां खूतो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ लोकलज्जा नवि लेखवी, मोह तणे वश लीनो रे ॥ शील तजीने कुशीलिनी, थयो दासी आधीनो रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ सुख विलसंतां तेहशुं, कपिला कुखनो जायो रे ॥ कपिल सुत त्रीजो थयो, जातिविहीन गवायो रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ अंगज दोयने आदरे, वेदाध्ययन करावे रे ॥ जातिविहीन जाणी करी, कपिल जणी न जणावे रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ मानहीन मति आगलो, अलगो रही एक चित्ते रे ॥ श्रवण मनन चिंतन करी, शास्त्र जणे शुज रीते रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ सांजलतां सघली कला, शीख्यो सकल विचारो रे ॥ वेदकलाकुशली थयो, मानधनी मतिधारो रे ॥ वि० ॥ ॥ ८ ॥ जाति अवज्ञाने जये, नगर मूकी नीसरीयो रे ॥ यज्ञसूत्र दोय धारतो, महा माहण जिम वरीयो रे ॥ वि० ॥ ए ॥ विद्यामदमां महा-

रतो, संचरतो भूपीठे रे ॥ अनुक्रमे रत्नपुरे गयो, सुख पाम्यो ते दीठे रे ॥ वि० ॥ १० ॥ नगर निरीक्षण कारणे, भमतो कपिल कदापि रे ॥ सत्यकि पावक तिहां वसे, द्विजवर अमल अपापी रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ छात्र भणावे ते बहु, कपिल गयो तस गेह रे ॥ वेद अर्थ पूछे घणा, अगम अगोचर जेह रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ उत्तर नवि देइ शक्यो, छात्र सकल मति-मंतो रे ॥ सत्यकि मन हरख्यो घणुं, मतिगुण देखी महंतो रे ॥ वि० ॥ ॥ १३ ॥ विद्यार्थी आदर लहे, विद्या सकल सखायी रे ॥ विद्या बंधु विदेशमां, विद्या देवत महायी रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ यडुक्तं ॥ हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति सर्वांगना, ह्यर्थिभ्यः प्रतिदीयमानमनिशं वृद्धिं परामृच्छति ॥ कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमंतर्धनं, येषां तान्प्रति मानमुज्झत जनाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ योग्य जाणीने सत्यकि, कपिलने निज पद स्थापे रे ॥ विद्यागुण ए जीवने, बहु सुख पदवी आपे रे ॥ वि० ॥ ॥ १५ ॥ यडुक्तं ॥ गुणाश्चाप्यादरः कार्यः, किमाटोपैः प्रयोजनम् ॥ विक्रीयंते न घंटाभिः, गावः क्षीरविवर्जिताः ॥२॥ दोहो ॥ निर्गुण ठंडे अप्पणा, परगुणो गुण-वंत ॥ शिर धारिजे वण कुसुम, अंगज मल ठंडंत ॥३॥ पूर्व ढाल ॥ पावकघरहिणी जंबुका, तस पुत्री सत्यनामा रे ॥ कपिलने जाणी योग्यता, परणावी अभि-रामा रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ नाम थयुं ते नयरमां, कपिल कपिल सहु बोले रे ॥ पुरयदशा जम पाधरी, ते नरने कुण तोले रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ उपाध्याय हरख्यो घणुं, गुरु लाग्ये ए मलीयो रे ॥ पुत्री पुण्यवंती घणुं, सकल मनो-रथ फलीयो रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ जग जीवाडण एकदा, वृषा ऋतु तिहां आवे रे ॥ सरस घटा घन मेलवी, जग मांहे जल वरसावे रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ चिहुं दिशि चमके दामिनी, सबल सजल घन गाजे रे ॥ जलधारा वरसे घणुं, नर जगतनो भांजे रे ॥ वि० ॥ २० ॥ इण अवसरे रयणी समे, नाटक देखण काजे रे ॥ कपिल गयो ते एकलो, बेठो जइने समाजे रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ नाटक जोइने वल्यो, विरमी नहीं जलधारो रे ॥ मन चिंते इहां मनुष्यनो, नहीं कोइ संचारो रे ॥ वि० ॥ २२ ॥ कोण अंशुक भीनां करे, इम मनडे सुविचारी रे ॥ थइ निरंशुक नीसर्यो, कक्षांतर सवि धारी रे ॥ वि० ॥ २३ ॥ आवी निज घर आंगणे, अंशुक पहेरी अंगे रे ॥ घर पेठो मनुष्यनी, सत्यभामा मन रंगे रे ॥ वि० ॥ २४ ॥ अंशुक दिधु अवर धर्यो, नूतन कपिल निहाली रे ॥ सुज वनिते मंत्र करी,

कोरां वस्त्र जो भाली रे ॥ वि० ॥ २५ ॥ जलवाला ज्योतथी, देखी अंग जलज्जीनुं रे ॥ मन मांहे चिंते ए सही, नहीं आचरण कुलीनुं रे ॥ वि० ॥ २६ ॥ नम्रपणे आव्यो इहां, धिक् एहशुं गृहवासो रे ॥ मंद राग ते उपरे, भामा गुण आवासो रे ॥ वि० ॥ २७ ॥ वीजुं न पडे कंबले, सहु कहे ए वातो रे ॥ राम कहे बीजी ढालमां, जोइ लेजो जातो रे ॥ वि० ॥ २८ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कपिल तणो हवे वाप, कर्मवशे थयो छूबलो ॥ प्रगट्यां पूरव पाप, क्षीण थयुं धन जेहनुं ॥ १ ॥ जोभीजे सो वार, राख्युं एह रहे नहीं ॥ खरचे कोइ शुच ठाम, जिम वाधे वमणुं वली ॥ २ ॥ यडुक्तं नैषधे ॥ पूर्वपुण्यविभवव्ययस्टष्टाः, संपदो विपद एव विमृष्टाः ॥ पात्रपाणिकमलार्पणमासां, तासु शांतिकविधिर्विधिदृष्टः ॥१॥ पूर्वं दोहा ॥ मूकी मननुं मान, परदेशे ते संचर्यो ॥ जाणी कपिल सन्मान, रत्नपुरे आव्यो वही ॥ ३ ॥ आवत दीठो तात, दोभी लाग्यो पाउले ॥ भीड्यो हियडे जात, हर्ष धरी हेजालुवे ॥ ४ ॥ कोइ मिष करी सोय, भोजन अवसरे कंतने ॥ अलगो वेठो जोइ, चित्त चमक्युं भामा तणुं ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नमणी खमणी ने मनगमणी ॥ ए देशी ॥ भामा कर जोभी कहे पाच, ससराजी मुज भाखो साच ॥ शुं तुम अंगज एह के अवर, जूठ कहो तो हत्या द्विजवर ॥ १ ॥ हत्यापातक वीहीतो तेह, साचुं कहे सुण वहू गुणगेह ॥ ए मुज दासीनो अंगजात, सांजली समजी सघली वात ॥ २ ॥ धन आप्युं तिहां कपिल प्रवर, धरणीजट चाल्यो निज नगर ॥ सत्यभामा गइ नृपनी पासे, कर जोभीने एणी परे भाषे ॥ ३ ॥ स्वामी तुं पंचम लोकपाल, दीन अनाथ तणो रखवाल ॥ हुं दुःखणी ने अबला बाल, कर कर स्वामी सार संभाल ॥ ४ ॥ यतः ॥ दुर्बलानामनाथानां, बालवृद्धतपस्विनाम् ॥ अन्यायपरिभूतानां, सर्वेषां पार्थिवो गतिः ॥ २ ॥ छप्पय ॥ रोपे तरु छतपात, थाल तरुवरने सिंचे ॥ कंटक काढे दूर, सरल तरु राखे वचे ॥ उंच नमाडे जाम, भूमि पमनां केइ रक्खे ॥ जे फूल्यां बहु फूल, तास पण खार न चक्खे ॥ एम अनेक माली तणा, गुण सघला अंगे धरे ॥ राम कहे ते नृपति, सफल लोक संपत्ति करे ॥ ३ ॥ पूर्वं ढाल ॥ जाति-

हीन पति मुक कर चढीयो, कोइक पूरव दुष्कृत नमीयो ॥ हवे एहशुं केहवो रतिराग, मुक मनमां वसीयो वेराग ॥ ५ ॥ ते माटे तुम पासे आवी, वात कहो तेने समजावी ॥ जिम आ जन्म लगे हुं शील, पालुं जेहथी लहीये लील ॥ ६ ॥ श्रीषेण राय सुणी एम वात, तेड्यो कपिल जणी साक्षात ॥ तुज गृहवासथी विरमी नार, विगतनेह उपर श्यो प्यार ॥ ७ ॥ मूक तुं एहने जनकने गेह, पाले शील सुनिर्मलदेह ॥ वलतुं बोले कपिल विमासी, महाराज शी मांमी हांसी ॥ ८ ॥ प्राणप्रिया ए केम मूकाय, ए विण मम्नी वरसां सो थाय ॥ राजन् जीवननी ए मूली, प्रीति न जाये में उन्मूली ॥ ए ॥ प्राण कहुं तो ए न कहाय, ए विण प्राण घणुं मीहाय ॥ मामी यसी वसीशुं बोलावो, प्राणप्रियाने घर बोलावो ॥ १० ॥ पत्नी नामा वतनुं मन मेली, ए साथे नवि करवी केली ॥ जो नहीं मेहले विमही एह, अनल शरण करशुं आ देह ॥ ११ ॥ राजन कपिल जणी एम भाखे, केम मार्टीपणे एहने राखे ॥ मन मोती भांग्यां वे जेह, कहो किण परे संधाये तेह ॥ १२ ॥ मुक मंदिरमां रहेशे एह, पुत्री परे सांनल ससनेह ॥ वात सुणी विलख्यो यह वलीयो, पण मनमां कोपे कलकलीयो ॥ १३ ॥ नामा रहे राणीनी पासे, पाले शील अखंड उल्लासे ॥ राम कहे श्रीजी ढाल मजार, धन्य जे राखे निज आचार ॥ १४ ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विमलबोध इण अवसरे, सूरीश्वर भगवंत ॥ बहु परिवारे परवर्या, भूमंडल विचरंत ॥ १ ॥ पावन करता पाउले, अवनीतल मुनिराज ॥ जे अगाध नवजलधिना, तारण तरण जहाज ॥ २ ॥ समितिए समिता साधुजी, साचा जेहना वाम ॥ दास कर्यो कंदर्पने, न पड्या आशापाश ॥ ३ ॥ रत्नपुरीने परिसरे, देवरमण उद्यान ॥ ते मुनि आवी समोसर्या, श्रुतज्ञानी नगवान् ॥ ४ ॥ सुणी आगमन मुनीशनुं, लोकमुखे नरराज ॥ मुनिवर वंदन नीसर्यो, लेइ सघलो साज ॥ ५ ॥ विधिशुं वंदी साधुने, विनिय यइ ठसमाउ ॥ निसुणे अमृतनाखिणी, मुनिदेशन सुरसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चेतन चेतो रे चेतना ॥ ए देशी ॥ मानवनव सघलो लइ, दुलहो दश दृष्टांते रे ॥ मूकी रे निद्रा मोहनी, धर्म करो एकांते रे ॥ १ ॥ नवि-

जण जावे रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ श्री जिनवरनी वाणी रे ॥ डुर्लजबोधिने दोहिली, मीठी अमीय समाणी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ दोष अढारथी वेगला, अरिहंत प्रजु आराधो रे ॥ सेवो सुगुरु सुसाधुजी, आतमधर्मने साधो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ एक असंयम टालीये, डुविध धर्म आदरीये रे ॥ परहरीये त्रण दंमने, चित्तमां चार न धरीये रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ पंच निवारी हो पंचने, करी सबला मन साथे रे ॥ पंचाराधनथी करो, पंचम गति सुख थाशे रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ षट् उपरे करुणा करो, षट् लोने नवि चलीये रे ॥ काढो षट्क मिथ्यात्वनुं, षट् वेरीने दलीये रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सातनो जय नवि संपजे, सातने नाणे दिलमां रे ॥ सात मांहे नवि उपजे, धर्मे शिवसुख पलमां रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ आठ जणी उन्मूलीये, आठने कीजे अलगा रे ॥ अष्टम पुढवीनां सुख लहे, जे ए धर्मशुं वलग्या रे ॥ ॥ ज० ॥ ८ ॥ नवविध वाडि विशेषथी, धरीये शील सुरंगो रे ॥ नव निधि सहेजे रे संपजे, परजव शिवसुखयोगो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ दशविध धर्म समाचरो, आणी मन वेरागो रे ॥ मंगलकलश तणी परे, धन्य ते नर महाजागो रे ॥ ज० ॥ १० ॥ तव श्रीषेण नरेश्वरु, बोले बे कर जोमी रे ॥ जगवन् मंगलकलशनो, कहो संबंध गुण जोमी रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ एकमना जवि सांजलो, एह सरस संबंध रे ॥ चोथी ढालमां महामुनि, कहे देशन अनुबंधो रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उपकारी अणगारजी, जविजन हितना रागी रे ॥ कहेशे श्रीषेण आगले, वात सबल वेरागी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री जिनवरपदकज नमी, धरी मनमां आनंद ॥ मंगलकलश कुमारनुं, कहुं चरित्र सुखकंद ॥ १ ॥ नयरी अवंती अति जली, अमरपुरी अवतार ॥ गढ मढ मंदिर शोजती, वाव्य सरोवर सार ॥ २ ॥ वेरसिंह नामे जलो, गुणनिष्पन्न जस नाम ॥ राजा राज्य करे तिहां, सुंदर शोजा धाम ॥ ३ ॥ ते नयरी मांहे वसे, धने धनद उपमान ॥ नामे धनदत्त शेठजी, सकल कलानो जाण ॥ ४ ॥ जाणे जीव अजीवने, सत्य शील सुविनीत ॥ जक्तिवंत गुरु देवनो, पाले शील सुरीत ॥ ५ ॥ सत्यजामा नामे जली, शीलकुंज रूपदेह ॥ जामिनी निज जर्त्तारशुं, राखे अविचल

नेह ॥ ६ ॥ सुख सघलां ते अनुजवे, पंच विषय वर जोग ॥ पण सुत नहीं कांइ तेहने, सबल कर्मसंयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नाना सूका हो, वात सुणो एक मीठी ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते शेठना चित्तमां, सुतनी चिंता पेठी ॥ कर जोडी कामिनी एम पूछे, पियुनी पासे बेठी ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे, वात कहो मन मूकी ॥ ए आंकणी ॥ अविनय आज लगे पियु तुमचो, नवि कीधो कांइ चूकी ॥ प्री० ॥ २ ॥ शेठ कहे नारी निशासो, कामिनी सुत विण शून्युं ॥ रात दिवस ए वेदन मनमां, बीजुं नहीं ऊणुं ॥ प्री० ॥ ३ ॥ यदुक्तं ॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं, दिशः शून्या ह्यबांधवाः ॥ मूर्खस्य हृदयं शून्यं, सर्वशून्या दरिद्रता ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ वलतुं वनिता कहे सुण कंता, शी चिंतो ए चिंता ॥ जावी जाव टले नहीं कोइ, रहीये मन निश्चिंता ॥ प्री० ॥ ४ ॥ यदुक्तं ॥ प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः, सोऽवश्यं जवति नृणां शुजोऽशुजो वा ॥ जूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने, नाजाव्यं जवति न जाविनोऽस्ति नाशः ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ धर्म जगतमां सवि सुखकारी, करे धरी एकतारी ॥ जेहनी छाया सुरतरु सरिखी, वांछित फल दातारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥ यतः ॥ धर्मेणधिगतैश्वर्य, धर्ममेव निहंति यः ॥ कथं शुजायतिर्जावी, स स्वामिद्रोहपातकी ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ देव गुरुनी जक्ति करीजे, दान सुपात्रे दीजे ॥ परिग्रह वित्त पामी अवसर, शुज ठामे वावीजे ॥ प्री० ॥ ६ ॥ यतः ॥ व्याजे स्याद्विगुणं वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं जवेत् ॥ ४ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचकः ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पात्रमुक्तं मनीषिजिः ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ एम करतां जो सुत नवि थाशे, परजव निर्मल होशे ॥ देव गुरुनी जक्ति जली परे, पापपंक नवि धोशे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ सुण मनहे मनमोहन वसीयो, अनुजव रस अति मीठो ॥ नेह अनंते काले प्रीतम, कहींए में नवि दीठो ॥ प्री० ॥ ८ ॥ वात सुणी विनतानी चारु, गइ विकलता मननी ॥ वचन कहे प्रीतम ए मारुं, हरख्यो हुं हवे तननी ॥ प्री० ॥ ९ ॥ मंदिर माली नेतेहीने, धन खरचीने सार्या ॥ प्रतिदिन परमेश्वर पूजाने, कुसुम तणी संतोष्यां ॥ प्री० ॥ १० ॥ पोते शेठ जइ नम चाली, लावे फूल प्रजाते ॥ एहजिन

पूजी जिनमंदिरमां, जाये मननी खांते ॥ प्री० ॥ ११ ॥ पंचाभिगमे त्रण त्रण निसीहि, दश त्रिक जाणी उरमां ॥ परमेश्वर आगल परकाशे, चैत्यवंदन जिनघरमां ॥ प्री० ॥ १२ ॥ अथ चैत्यवंदन ॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दीठ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ गुण अनंत प्रजु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रजु जिनध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ १ ॥ निज रूपे शिवस्थानके, ऊव्ये पण तिमही ॥ नाम स्थापना जेदथी, प्रगट जग मांहि ॥ अध्यातमथी जोमीये, निक्षेपा चार ॥ तो प्रजुरूप समान जाव, पामे निर्धार ॥ पावन आतमने करे ए, जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रजु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुखपूर ॥ २ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पूर्व ढाल ॥ शक्रस्तव पजणे कर जोमी, जाव धरी निज मनमां ॥ स्तवन करे प्रजुनुं लेखवतो, निज आतमने धन्यमां ॥ प्री० ॥ १३ ॥ अथ स्तवन ॥ राग सारंग ॥ मन मोह्युं प्रजु गुणगानमां ॥ काल अनंत न जाएयो जातो, मोहसुराके पानमां ॥ म० ॥ १ ॥ एकेंडिय वि ति चउरिंडियमां, काल गयो अज्ञानमां ॥ हवे कोइक पुएयोदय प्रगट्यो, आय मिलो प्रजु ध्यानमां ॥ म० ॥ २ ॥ अंतर जर्म गयो सवि दूरे, तत्व सुधारसपानमां ॥ प्रजु तुम दृष्टि जइ मोहि उपर, अंतर आतम ज्ञानमां ॥ म० ॥ ३ ॥ दरस सरस देख्यो जिनजीको, लग्न लगी तुऊ ज्ञानमां ॥ केवल कमलाकंत कृपानिधि, ऊंर न देखो जिहानमां ॥ म० ॥ ॥ ४ ॥ अशरणशरण जगत उपगारी, परमातम शुचि वानमां ॥ राम कहे तुम आण जजोजव, धारी नयर प्रमाणमां ॥ म० ॥ ५ ॥ इति साधारण जिनस्तुतिः ॥ पूर्व ढाल ॥ एम शुन ध्याने जिनगुण थुणतां, सुणतां सद्गुरु वाणी ॥ पात्रे दान दीये जले जावे, धनदत्त धन गुणखाणी ॥ प्री० १४ ॥ धर्म प्रजावे शासनदेवी, तुष्ट थइ एम बोले ॥ आप्यो सुत वर शेठ विचारे, नहीं कोइ धर्मने तोले ॥ प्री० ॥ १५ ॥ सत्यजामा रयणीए दीठुं, मंगलकलशनुं सुहणुं ॥ मन चिंते उतरशे महारुं, बांऊणीनुं सही महेणुं ॥ प्री० ॥ ॥ १६ ॥ संपूरण नव मासे प्रसव्यो, सुत सुंदर सोजागी ॥ पंचमी ढाले रामविजय कहे, धर्म करो वमजागी ॥ प्री० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुतजन्मोत्सव बहु कस्यो, खरची द्रव्य अपार ॥ सुपन नणी अनि
ठवे, मंगलकलश कुमार ॥ १ ॥ पंच धावे पाली जतो, बीज तणो जि
चंद ॥ माय ताय मन वल्लहो, जीवन नयणानंद ॥ २ ॥ सुत हुलरा
हर्षेशुं, थापी निज उत्संग ॥ दे आशिप एणी परे, माता मनने रंग
॥ ३ ॥ चिरं जीवो मुज नानका, वाहालेसर सुकुमार ॥ तुज अला वल्ला ज
पनो, खारा समुद्र मजार ॥ ४ ॥ थयो पंच वरष तणो, पाठवीयो निशाल
मूकी विकथा गुरु कने, शास्त्र नणे उजमाल ॥ ५ ॥ निज उद्यमर्गि
सुगुरु, चिंता रहित सुदेह ॥ विनय शास्त्र नणवा तणां, कारण सघलां ए
॥ ६ ॥ यतः ॥ आचार्य-पुस्तक-निवास-सहाय-वासो, वाह्या इमे पठ
पंचगुणा नराणाम् ॥ आरोग्यबुद्धिविनयोद्यमशास्त्ररागा, अभ्यंतराः पठ
पंचगुणा नवंति ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ नणी प्रवीण पोढो थयो, आठ व
सनो जाम ॥ वाडी जातां जनकनी, साथे चाल्यो ताम ॥ ७ ॥ सा
जइ लाव्यो कुसुम, पूज्या श्रीजिनराज ॥ प्रतिदिन लावे जइ तिहां, फू
सेवाने काज ॥ ८ ॥ वाडीमां जइ एकलो, लावे कुसुम सुवास ॥ कहे
न माने ताततुं, हियडे जिनगुणवास ॥ ९ ॥ एम चिहु दिन वील्या पर्व
एक दिवसने योग ॥ जे थयुं ते सांनलो, शुन नावीने नोग ॥ १०

॥ ढाल उठी ॥

॥ केसरवरणो हो, काढ कसुंबो ॥ माहारा लाल ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीपे हो
दक्षिण नरते ॥ माहारा लाल ॥ चंपा नामे हो, अंगे वर्त्ते ॥ मा० ॥ तिहां सु
सुंदर हो राजा राजे ॥ मा० ॥ नामे गुणावली हो, राणी गाजे ॥ मा०
॥ १ ॥ पुत्री रूडी हो, तेहनी जाइ ॥ मा० ॥ त्रैलोक्यसुंदरी हो, वि
निपाइ ॥ मा० ॥ रूपे सारी हो, रंना हारी ॥ मा० ॥ गजगति सारी हो
मोहनगारी ॥ मा० ॥ २ ॥ तनु सुकुमाली हो, अंग निहाली ॥ मा०
सुर नर मोहे हो, मुखडुं नाली ॥ मा० ॥ वेण सुंहाली हो, नागण काल
॥ मा० ॥ मदमतिवाली हो, वाणी रसाली ॥ मा० ॥ ३ ॥ नर यौवनम
हो, नामा आवी ॥ मा० ॥ राजसनामां हो, राय बुलावी ॥ मा०
पुत्रीनेहे हो, मन बंधाणो ॥ मा० ॥ चिंती नृपति हो, मन सपराणो ॥ मा
॥ ४ ॥ आपुं असंगी हो, तो दरिसण डुलहो ॥ मा० ॥ क्षण न खमा

हो, एहनो विरहो ॥ मा० ॥ राणी साथे हो, एम निर्धारी ॥ मा० ॥ तेड्यो मंत्री हो, सुबुद्धि विचारी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तुज अंगजने हो, आपुं बेटी ॥ मा० ॥ बहु धन साथे हो, गुणनी पेटी ॥ मा० ॥ राजन् मूको हो, एह ठगाइ ॥ मा० ॥ सरखा सरखी हो, होवे सगाइ ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं तुज पायक हो, तुं मुज स्वामी ॥ मा० ॥ जोमी न जुगति हो, कहुं शिर नामी ॥ ॥ मा० ॥ सरिखा कुलशुं हो, संबंध कीजे ॥ मा० ॥ यश जग मांहे हो, सबलो लीजे ॥ मा० ॥ ७ ॥ यतः ॥ कुलं च शीलं च सुनाथता च, विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ॥ वरे गुणाः सप्त विलोकनीया,–स्ततः परं जाग्यवशा हि कन्या ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ राजन बोले हो, मनडुं राजी ॥ मा० ॥ तो वली एहमां हो, शुं करे काजी ॥ मा० ॥ एह उखाणो हो, साचो जाणी ॥ मा० ॥ बोल न बोलो हो, अम्हशुं ताणी ॥ मा० ॥ ८ ॥ पुत्री देवी हो, अवश्य अमारे ॥ मा० ॥ मनमां चिंते हो, सचिव तिवारे ॥ मा० ॥ व्याघ्र तटीनो हो, न्याय ए आव्यो ॥ मा० ॥ न रहे राजा हो, में समजाव्यो ॥ मा० ॥ ए ॥ रति रंजा सी हो, रायनी तनया ॥ मा० ॥ मुज सुत कुष्टी हो, सबलो अन्या ॥ मा० ॥ योग बेहुनो हो, कहो किम मलशे ॥ मा० ॥ अथवा जावी हो, कहो केम टलशे ॥ मा० ॥ १० ॥ अथवा कुलनी हो, देवी साधी ॥ मा० ॥ करशुं कारज हो, में मति लाधी ॥ ॥ मा० ॥ मानी वातज हो, ते घर वलीयो ॥ मा० ॥ नृप राणीनो हो, वांछित फलीयो ॥ मा० ॥ ११ ॥ मंदिर आवी हो, देवी समरी ॥ मा० ॥ हरख्यो जाणी हो, आवी अमरी ॥ मा० ॥ पूछे कारण हो, किम संजारी ॥ मा० ॥ सुत मंदिरमां हो, कोढी जारी ॥ मा० ॥ १२ ॥ शुं पूछेवुं हो, करो नीरोगी ॥ मा० ॥ छानो राख्यो हो, बहु दिन रोगी ॥ ॥ मा० ॥ जाखे देवी हो, कर्म जे कीधां ॥ मा० ॥ चीकण रसनां हो, न जाये लीधां ॥ मा० ॥ १३ ॥ यतः ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुजाशुजम् ॥ ३ ॥ आरोहतु गिरिशिखरं, समुद्रमुल्लंघ्य यातु पातालम् ॥ विधिलिखिताक्षरमालं, फलति कपालं न जूपालः ॥ ४ ॥ नमस्यामो देवाननु हतविधेस्तेऽपि वशगा, विधिर्वंद्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः ॥ फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किं च विधिना, नमस्तत्कर्मेन्यो विधिरपि न येन्यः प्रजवति ॥

॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ मंत्री बोले हो, केम कुलदेवी ॥ मा० ॥ काम न आवे हो, बहु दिन सेवी ॥ मा० ॥ देवी बोले हो, नहीं अम जोरो ॥ मा० ॥ सो बहु वेला हो, एह निहोरो ॥ सा० ॥ १४ ॥ कहो तो आपुं हो, एक नर आणी ॥ मा० ॥ करशे चिंतित हो, कारिज जाणी ॥ मा० ॥ सचिव पयंपे हो, वात ए वहेली ॥ मा० ॥ देवी तुमने हो, करवी सहेली ॥ मा० ॥ ॥ १५ ॥ तव कहे देवी हो, नगरनी बहारे ॥ मा० ॥ तुज अश्वप वेसे हो, लावुं ते वारे ॥ मा० ॥ पुरने द्वारे हो, वाले वेशे ॥ मा० ॥ ते नृपकन्या हो, परणी देशे ॥ मा० ॥ १६ ॥ गइ कुलदेवी हो, एहवुं जाखी ॥ मा० ॥ वात ए चित्तमां हो, सचिवे राखी ॥ मा० ॥ बाध्यो उजम हो, ढाल ए छठी ॥ मा० ॥ रामे दाखी हो, रागे मीठी ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हर्षे विवाहनां, मांडे अति मंकाण ॥ राय सचिव महोटे मने, घुरवे ढोल निशाण ॥ १ ॥ सामग्री सखरी सजी, मंरुप अतिहि अनूप ॥ थंज थंज मणि पूतली, सोहे अतिहि सरूप ॥ २ ॥ अश्वपाल नर तेमीने, ठानो निज आवास ॥ वात कही घुरथी सवे, मंत्री मन उल्लास ॥ ३ ॥ जे कोइ आवे तुम कने, वालक नवले रूप ॥ तेहने तुमे इहां लावजो, जेद न जाणे जूप ॥ ४ ॥ हवे कुलदेवी सचिवनी, जावी जाणी कंत ॥ आवी उजेणी पुरी, हियमे हर्ष धरंत ॥ ५ ॥ फूल लेइ वाकी थकी, मार्गे वलतां ताम ॥ आकाशे उत्री रही, देवी बोले आम ॥ ६ ॥ फूल लेइ जाये अठे, जे वालक निज गेह ॥ राजसुता पाणिग्रहण, जाडे करशे तेह ॥ ७ ॥ वात सुणीने चिंतवे, जइ कहुं जनकने आज ॥ घेर गयो तव विसस्यो, वलग्यो ग्रहने काज ॥ ८ ॥ वीजे दिन तिमहीज सुणी, चिंते जाम कुमार ॥ महेल्यो उपाडी वातुले, चंपावनइ मजार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सुण मेरी सजनी, रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ आव्यो चंपानयरी पासे रे, मनमां मंगलकलश विमासे रे ॥ कुण ए नगरी कुण ए वाकी रे, केणे आण्यो मुऊने उपाकी रे ॥ १ ॥ जमतां थाक्यो सरोवर दीठुं रे, पाणी पीधुं टाढुं मीठुं रे ॥ सरोवर पाले वृक्ष एक अलगो रे, तिहां जइ दर्जनी दोरे वलगो रे ॥ २ ॥ अस्तंगत थयो रवि तिण वेला रे,

कुमर विचारे कर्मनी लीला रे ॥ जोइ ज्वलित अनल उतरीयो रे, ति
दिशे चाल्यो शीते ठरीयो रे ॥ ३ ॥ अश्वारक्षक नर बहु तापे रे, आ
कुंवर तास समीपे रे ॥ हांसी करता ते नरने जाणी रे, सांकेतिक न
बोल्यो वाणी रे ॥ ४ ॥ आव तुं मुफ पासे वत्स वहेलो रे, मंदि
माहरे थाइश सोहिलो रे ॥ एम कही आएयो मंदिर तेह रे, सोंप्यो मंत्रीने
करी नेह रे ॥ ५ ॥ अशन वसन आप्यां मनगमतां रे, नाव नक्तिए
करी जुगते जुगतां रे ॥ चिंते कुंवर कारिज कोइ रे, स्वारथ विण आदर
नवि होइ रे ॥ ६ ॥ यतः ॥ वृक्षं क्षीणफलं त्यजंति विहगाः, शुष्कं सरः
सारसाः, पुष्पं पर्युषितं त्यजंति मधुपा दग्धं वनांतं मृगाः ॥ निर्द्रव्यं
पुरुषं त्यजंति गणिका डुष्टं नृपं सेवकाः, सर्वः स्वार्थवशो जनोऽभिरमते
नो कस्य को वल्लनः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कुंवर पूछे कारज दाखो रे, मंदि-
रमां किम ठानो राखो रे ॥ शुं मुफ साथे काम तुम्हारे रे, मनमां
महोटी भ्रांति हमारे रे ॥ ७ ॥ सचिव कहे ए चंपानयरी रे, सुर-
सुंदर नृप जीत्या वैरी रे ॥ नाम सुबुद्धि तस प्रधानो रे, हुं तुं कारज
सुण सावधानो रे ॥ ८ ॥ नृपपुत्री मुफ पुत्रने आपी रे, परणी आपो
रतिरसव्यापी रे ॥ कुमर नणे श्यो पाक चखावो रे, अंगजने कां नवि
परणावो रे ॥ ए ॥ तेह कहे मुफ सुत छे कोढी रे, कर्म तणी गति विषमी
पोढी रे ॥ कुमर कहे कीधुं अविचार्युं रे, पर्यागतनुं जल उतार्युं रे
॥ १० ॥ कुण एवो मूरख अविचारी रे, परणी आपे परने नारी रे ॥
मंत्री मुफ कुल नहीं आचारो रे, कां बहु बोली लज्जा हारो रे ॥ ११ ॥
कूप उतारी वरतने कापे रे, जे परणी अवरने आपे रे ॥ ते माटे न
करुं ए कामो रे, इण वाटे परजव नहीं ठामो रे ॥ १२ ॥ यतः ॥ मित्र-
द्रोही कृतघ्नश्च, स्तेयी विश्वासघातकः ॥ चत्वारः कर्मचांमालाः, पंचमो
जातिसंजवः ॥ २ ॥ हस्ते नरकपालं तु मदिरामांसजक्षणी ॥ जानुः पृछति
चांमाली, केनेयं दीयते छटा ॥ ३ ॥ मित्रद्रोही कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वासघातकः
॥ स्वार्थे च तत्परो यो हि, तेनेयं दीयते छटा ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ मंत्री
बोले जो न करीश एह रे, तो हुं मारीश नहीं संदेह रे ॥ कुमर जणे
मरवानुं डुःख क्षणनुं रे, पण डुःख महोटुं मुफ लंछननुं रे ॥ १३ ॥ यतः ॥
लोजश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः, सत्यं चे[illegible]

शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्॥ सौजन्यं यदि किं गुणैः स्वमहिमा यद्यस्ति किं मंमनैः, सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥५॥ पूर्व ढाल ॥ खड्ग उपाडी मारण धायो रे, वचमां पुरुषे मंत्री साह्यो रे ॥ समजाव्यो मान ए वयण रे, नहीं इहां कोइ ताहरो सयण रे ॥ १४ ॥ कुमरे दैवती वाणी संजारी रे, जावी जाणुं मन निर्धारी रे ॥ मन पाखे मानी ए वात रे, हरख्यो मंत्री साते धात रे ॥ १५ ॥ वजडावे नोवत निशाण रे, वोले वंदिजन कल्याण रे ॥ गाये गोरी गीत सुजाण रे, चिरं जीवो कुंवर कुलजाण रे ॥ १६॥ हर्ष धरी कुंवर न्हवरावे रे, जूषण वस्त्रने पहेरावे रे ॥ सहु कहे धन जिण माडीए जायो रे, वहु दिवस अमे दरिसण पायो रे ॥ १७ ॥ हरख्यो साजन वृंद विशेखी रे, कुमर तणुं मुखपंकज देखी रे ॥ सातमी ढाले वात वखाणी रे, आखर वहेशे ढाले पाणी रे ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ १३७ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ २१॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कर जोडीने, मंत्रीसरने ठेक ॥ को न करे ते में कह्युं, वात सुणो हवे एक ॥ १ ॥ जे आपे मुजने नृपति, अर्थ गरथ जंमार ॥ ते सवि लेशुं हुं सही, एम कीधो निर्धार ॥ २ ॥ वस्तु उजेणी मारगे, लेइ थापजो सर्व ॥ सचिवे सघलुं मानीयुं, मनमां थइ निर्गर्व ॥ ३ ॥ लग्नदिवस आव्यो निकट, वाज्यां मंगलतूर ॥ वरत्या उत्सव वहु परे, सहु मन आनंदपूर ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी सोहेलानी ॥ हवे कुलवंती नारी, मज्जन करावे मंगलकलशने जी ॥ लेइ उर उपर सार, निर्मल जल जरे सोवन कलशने जी ॥ १ ॥ पहेरावे सुकुमाल, अंगे अनुपम वस्त्र सोहामणां जी ॥ दीपे सुंदर वेष, जूषणजूषित अंग रलीयामणां जी ॥ २ ॥ वेसारी गजखंध, जूलतो चाले कोतल आगले जी ॥ सावेलासें वरू, वाघे केसरीये आगे चले जी ॥ ३ ॥ टोले मली मली थोक, थोके थोके करे एम वातडी जी ॥ त्रैलोक्यसुंदरी धन्य, विधिना ए सरखी जोडी घडी जी ॥ ४ ॥ पग पग नाचे पात्र, यात्र करेवा जन वहु उलट्यां जी ॥ उंचां करी करी गात्र, देखण न गणे गजघटा जी ॥ ५ ॥ वहु आडंबर एम,

आव्या नृपति गृहने आंगणे जी ॥ हर्ष धरी मन मांहे, सासूए पोंख्या घरने बारणे जी ॥ ६ ॥ वेग मायरा मांहे, त्रैलोक्यसुंदरी मन हरखी घणु जी ॥ वरीयो कुमर सुरंग, राये आप्युं धन धन त्रूपणुं जी ॥ ७ ॥ कर नवि मूके कुमार, राये पूछ्युं शी मन कामना जी ॥ आपे पंच तुरंग, चपलगति पाणी पंथना जी ॥ ८ ॥ माग्युं आप्युं राय, हर्ष हुर्ड विवाह सोहामणो जी ॥ देखी कन्यारूप, कुमर थयो मन मांहे दयामणो जी ॥ ए ॥ कीधुं सबल अकाज, कुमरी अमरी सरखी पद्मिणी जी ॥ केम कोढीने हाथ, देतां निर्गमशे दिन जामिनी जी ॥ १० ॥ इम चिंतवतो तेह, मंदिर आव्यो बहु आडंबरे जी ॥ देखी पिउ चलचित्त, कुमरी चमकी हियका जीतरे जी ॥ ११ ॥ इंगित जाणी जाव, केम न मूके कुमरी तेहनी जी ॥ मन मांहे दिलगीर, रागे रंगाणी मींजी जेहनी जी ॥ ॥ १२ ॥ मंत्री राय दीधे मान, देहचिंताने मिप करी नीसर्यो जी ॥ जल जारी लेइ नारी, चाली लावे घूंघट विसर्यो जी ॥ १३ ॥ जेह कह्युं पण तेह, दीठो शून्य मने ऊजो रह्यो जी ॥ सोंपीयो तमने देह, जूख तृषा केठे मुजने कह्यो जी ॥ १४ ॥ हा ना न कहे रे कांइ, मन जाणी मोदक मगावीया जी ॥ कुंवर चाखी रे लेइ, अवसर वचन कहे रस जावीयां जी ॥ १५ ॥ दोहो ॥ मीठा ए मोदक जला, खातां जांगे जूख ॥ पण नीर उजेणीनुं मले, तो सवि थाये सुख ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ चिंते राजकुमार, शुं ए जाणे उजेणी नीरने जी ॥ अथवा तिहां कोइ दिस, गयो होशे घर मात त्यां वीरने जी ॥ १६ ॥ जले कीधुं मुख शुरू, वीडुं आप्युं हाथे कंथने जी ॥ आव्यो मंदिर सोय, विनता बोले लही चलचित्तने जी ॥ १७ ॥ केम पियु थें दिलगीर, वात कहो मनमां होवे जीसी जी ॥ ऽुःखे उदर मुज जोर, एम कही देहचिंता उव्यो धसी जी ॥ १८ ॥ विनता रही विश्वास, जल लेइ केडेथी जाशुं वही जी ॥ ते पहोंच्यो ततकाल, वस्तु उजेणीपंथे जिहां रही जी ॥ १९ ॥ रथ आरोपी वस्तु, चार तुरंगम जोडे जोतर्या जी ॥ बांध्यो पूठे रे एक, चाल्या तुरत तिहांथी पाधरा जी ॥ २० ॥ पूछे पंथीने पंथ, कुमर वेगो रथ निर्जयपणे जी ॥ थोडा दिवस मकार, कुमर पहोतो नगरे आपणे जी ॥२१॥ वुल्ये

सीधुं रे काज, आठमी ढाले रामविजय कहे जी ॥ पुण्य करो नविलोक, इहनव परनव जेहथी सुख लहे जी ॥ २२ ॥ सर्व० ॥ २०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मात पिता मंगल तणां, फांखर फुरी थयांह ॥ सुतनी सुध लाधी नहीं, केता दिवस गयाह ॥ १ ॥ मंदिर दीठो आवतो, रथ बेठो गुणवंत ॥ राजकुमर कोइ अम घरे, रथ खेफी आवंत ॥ २ ॥ वार्यो पण न रह्यो किमे, अरहो आव्यो जाम ॥ मात पिताए उलख्यो, निज अंगजने ताम ॥ ३ ॥ हियडुं हरखे हेजशुं, फुःख दोहग टलीयांह ॥ मात पिता ने पुत्र ए, बहु दिवसे मलीयांह ॥ ४ ॥ अंक बेसारी पुत्रने, रज लूहे घणे नेह ॥ सुत नवरावे माऊली, आंसुने नीरेह ॥ ५ ॥ वात कही सघली तिणे, धूरि हुंती ससनेह ॥ हरख्यां मात पिता घणां, पुण्योदय लही तेह ॥ ६ ॥ हवे त्रैलोक्यसुंदरी तणो, नवि निसुणो अवदात ॥ परण्या पूठे जे थयो, कहुं सविस्तर वात ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ राजकुंवरी केडे गइ, नवि दीठो निज कंत हो ॥ सुंदर ॥ मन विलखाणी महासती, नयणे नीर फरंत हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ कर्म न छूटे आपणां ॥ ए आंकणी ॥ दीजे केहने दोष हो ॥ सुं० ॥ परण्यो प्रीतम परहरी, केम गयो विण रोष हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २ ॥ पहेरावे निज पुत्रने, मंगलकलशनो वेष हो ॥ सुं० ॥ राजकुमरी पासे मोकल्यो, सूवाने सन्निवेश हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ३ ॥ आव्यो शय्या उपरे, कुमरीए दीठो जाम हो ॥ सुं० ॥ कुत्सित रूपे कोढीयो, फनक उनी थइ ताम हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ प्राणप्रिये केम वेगलां, जइ उन्नां इण वार हो ॥ सुं० ॥ आवो रमो सुखसेजमां, तुं मुफ प्राणआधार हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ५ ॥ वलतुं कहे सा सुंदरी, मूढ विमासी बोल हो ॥ सुं० ॥ तुं कोण हुं कोण एम सही, कहीये न वचन निटोल हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ६ ॥ पूर्वे फुष्कृत आचर्यां, फल पाम्यो ठे तास हो ॥ सुं० ॥ मूक फुःशीलपणुं इहां, नहींतर लहीश विनाश हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ७ ॥ यतः ॥ पंढत्वमिंडियच्छेदं, दौर्भाग्यं च नवे नवे ॥ नवेन्नराणां स्त्रीणां चा,—न्यकीयासक्तचेतसाम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ रहे अलगो मुफथी सही, सो परनारी संग हो ॥ सुं० ॥ मुफ पिउ नयरी उज्जेणीमां,

वास वस्यो मनरंग हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ७ ॥ वासजुवनथी ससंभ्रमे,
बाहिर आवी तेह हो ॥ सुं० ॥ दासी समीप ऊजी रही, पूछे ते सस्नेह
हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ए ॥ केम स्वामिनी उतावलां, मुख न समाये श्वास
हो ॥ सुं० ॥ प्रीतमथी केम ऊजगी, नाखो इम निःश्वास हो ॥ सुं० ॥ क०
॥ १० ॥ नहीं मुफ वल्लभ इहां कने, दीसे कोढी कोय हो ॥ सुं० ॥
नाह गयो किहां माहरो, कहे एम सुदती रोय हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ११ ॥
रात्रि गइ रवि ऊगीयो, गइ पीयर ते बाल हो ॥ सुं० ॥ वात सुणावी
मातने, सुणी ऊठी चित्त जाल हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १२ ॥ राजसजा मांहे
आवीयो, मंत्री कुबुद्धिनिधान हो ॥ सुं० ॥ श्याम वदन नीचे मुखे,
बोलाव्यो राजान हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १३ ॥ केम तुमे आमणडूमणा, कहो
मंत्री मन मेली हो ॥ सुं० ॥ दर्पने ठामे खेद श्यो, करो यथारुचि केलि हो
॥ सुं० ॥ क० ॥ १४ ॥ राजन् अवली कर्मनी, गति दीसे असहाय हो
॥ सुं० ॥ विधि प्रतिकूल थयो यदा, सो जग कीजे उपाय हो ॥ सुं० ॥
क० ॥ १५ ॥ यडुक्तं माघे ॥ प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ, विफलत्वमेति
बहुसाधनता ॥ अवलंबनाय दिनजर्तुरजून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि ॥
॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कृत उदये आवे सही, विणु कृत नावे कोय हो ॥ सुं० ॥
खेद किस्यो करवो इहां, कर्म करे सो होय हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १६ ॥
यतः ॥ उदयति यदि जानुः पश्चिमायां दिशायां, प्रचलति यदि मेरुः शीततां
याति वह्निः ॥ विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां, तदपि न चलतीयं
जाविनी कर्मरेखा ॥ २ ॥ तथा चान्यदप्युक्तं ॥ गाथा ॥ रे जीव सुहडहेसु,
निमित्तमित्तं परं वियाणाइ ॥ सकयफलं जुंजंतो, कस्स मुहा कुप्पसि
परस्स ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ राय कहे मंत्री कहो, डुःखनुं कारण मुफ हो
॥ सुं० ॥ अंतर श्यो मुफ आगले, प्रकाशो निज गुफ हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १७ ॥
प्रीति तिहां पमदो किस्यो, पमदो तिहां कुण प्रीति हो ॥ सुं० ॥ हेजे हियडुं
खोलीये, एहीज प्रीतिनी रीति हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १८ ॥ यडुक्तं ॥ ददाति
प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति ॥ जुंक्ते जोजयते चैव, षड्विधं प्रीति-
लक्षणम् ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ नाखी निसासो ते कहे, राजन् जे करे
... हो ॥ सुं० ॥ तिहां नहीं जोरो केहनो, कृत जोगवीये सदैव हो ॥
॥ क० ॥ १९ ॥ तुम पुत्रीनी संगते, मुफ अंगज गुणवंत हो ॥ सुं० ॥

विणठी काया कोढथी, फरसनो दोष महंत हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २० ॥ कुलखंपण ए कुंवरी, कां ए विधाता दीध हो ॥ सुं० ॥ देवकुमर सम कंतने, जेणीए कोढी कीध हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २१ ॥ वात सुणी विलखो थयो, आव्यो मंत्री आवास हो ॥ सुं० ॥ जामाता देखी करी, हुर्छ मन मांहि उदास हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २२ ॥ कर्में ए कोढी थयो, पण पुत्री शिर दोष हो ॥ सुं० ॥ एह चढ्यो अति आकरो, कीजे केहो रोष हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २३ ॥ राय कहे मंत्री सुणो, कीधुं में सघल अकाज हो ॥ सुं० ॥ जोरे आपी अंगजा, तुज सुत विणठो आज हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २४ ॥ दोष नहीं कांहीं राजनो, नहीं कांहीं वहूनो वांक हो ॥ सुं० ॥ त्रण जुवन मांहे वालीयो, कर्मे आज्यो आंक हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २५ ॥ माटे कहुं हुं स्वामीने, रीस न करशो कोय हो ॥ सुं० ॥ पुत्रीनी पेरे पालशुं, कर्म करे ते होय हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २६ ॥ कर्मवशे सहुने मने, वात वसी तेणी वार हो ॥ सुं० ॥ वहाली पण वैरण थइ, कोइ न ले तस सार हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २७ ॥ एक अलाइये मंदिरे, रहे ते अबला बाल हो ॥ सुं० ॥ चिंते ए मातुं मरणथी, मुज माथे ए आल हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २८ ॥ जवि सुणो नवमी ढालमां, कहुर्छ कर्मजंजाल हो ॥ सुं० ॥ रामविजय कहे कोइने, कहिए न दीजे आल हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रैलोक्यसुंदरी चिंतवे, विरुर्छ कर्मविलास ॥ मुज माथे आवी पड्यो, वेसी रहे उदास ॥ १ ॥ मुजने मूकीने गयो, व्हालम नवल सनेह ॥ अवगुण कोइ दाख्यो नहीं, साले मुजने तेह ॥ २ ॥ वली माथे सबलुं चढ्युं, कोढी तणुं कलंक ॥ थइ सहुने अलखामणी, कर्मवशे हुं रंक ॥ ३ ॥ यतः ॥ कुमुदवनमपश्रि श्रीमदंजोजखंमं, त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः ॥ उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तं, हतविधिललितानां ही विचित्रो विपाकः ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ काची कली अनारकी रे हां ॥ ए देशी ॥ पूरव जव में आचर्यां रे हां, कोइक डुरित कठोर ॥ कर्मविमंबना ॥ ए आंकणी ॥ तेह उदय आव्यां इहां रे हां, पिउ गयो मूकी निठोर ॥ क० ॥ १ ॥ के में दूध विठोहीयां रे हां,

स्तन पीतां लघु बाल ॥ क० ॥ उंदरबिल जले पूरीयां रे हां, के पाड्यां
मडुयाल ॥ क० ॥ २ ॥ अवगुण अठता काढीया रे हां, परने दीधां आल
॥ क० ॥ के वली शीलनी खंमना रे हां, कीधी कर्मचंडाल ॥ क० ॥ ३ ॥
यतः ॥ कुरंग रंगत्तण डुम्नगाइ, विलित्त निंदू विसकन्नगाइ ॥ जम्मंतरे खंमि-
य सीलजावा, नाउण कुथा दडसीलजावा ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ के पशु
पंखी मनुजनां रे हां, कीधां बाल विछोह ॥ क० ॥ के सुत शोक्यनी उपरे
रे हां, विरुंडं विमास्यो द्रोह ॥ क० ॥ ४ ॥ के वली दव देवरावीया रे
हां, वन मांहे धरी हुंश ॥ क० ॥ के तुछ कारिज आपणे रे हां, कीधां देव गुरु
सूंस ॥ क० ॥ ५ ॥ इत्यादिक कह्यो कुण लहे रे हां, ज्ञानी विण जवि
वात ॥ क० ॥ ते उदयेज थयां इहां रे हां, माहरे माय ने तात ॥
क० ॥ ६ ॥ अथवा पियु उजेणमां रे हां, होशे नहीं संदेह ॥ क० ॥
मोदक अवसर हित जणी रे हां, नाम कलुं गुणगेह ॥ क० ॥ ७ ॥ धीरज
धरे मनमां सती रे हां, चिंते चित्त उपाय ॥ क० ॥ मले मुफने जो वालहो रे हां,
तो टलशे डुरित अपाय ॥ क० ॥ ८ ॥ एक दिन सिंह सामंतने रे हां, तेड्यो
मंदिर मांहे ॥ क० ॥ वात कही सवि मूलथी रे हां, निसुणी धरी उत्साह
॥ क० ॥ ९ ॥ सिंह कहे सुणो स्वामिनी रे हां, म धरो मन जंजाल ॥ क० ॥
वात कहीश जइ रायने रे हां, होशे मंगलमाल ॥ क० ॥ १० ॥ लही
अवसर जइ विनवे रे हां, सुणो राजन् मुफ वाण ॥ क० ॥ कष्ट पमी तुमची
सुता रे हां, अचला बहु गुणखाण ॥ क० ॥ ११ ॥ आलापन सन्मानता
रे हां, दूर रह्यो महाराज ॥ क० ॥ वाक्य श्रवणमात्रे प्रजु रे हां, तनुजा
अरज निवाज ॥ क० ॥ १२ ॥ अश्रुजलाविल लोचने रे हां, नृप कहे सुण
सिंह ॥ क० ॥ बांध्यां उदय आवे वही रे हां, विरुड कर्मनी लीह ॥ क० ॥
॥ १३ ॥ प्राणप्रिया ए मुफ सुता रे हां, थइ कलंकित देह ॥ क० ॥ इष्ट
निष्ट थइ घणुं रे हां, कहीये कोने एह ॥ क० ॥ १४ ॥ पण रुठे निज
तमा रे हां, नवि प्रजवीये लोक ॥ क० ॥ आवी कहे इहां कने सुखे रे
, मन इछित लो शोक ॥ क० ॥ १५ ॥ अनुमति लइ आवी कहे रे हां,
ोस्यसुंदरी नाम ॥ क० ॥ तात वेष नरनो दीयो रे हां, करुं मनचिंतित
न ॥ क० ॥ १६ ॥ सिंह कहे कारणवशे रे हां, श्री महे नरनो वेष ॥
॥ राजकुंडे ए योग्यता रे हां, राय दीयो आदेश ॥ क०

सोंप्यो सिंह सामंतने रे हां, तस रक्षाने काज ॥ क० ॥ कुमरी कहे सुणो तातजी रे हां, जाउं उज्जेणी आज ॥ क० ॥ १० ॥ कारण कहीश हुं आवीने रे हां, आगलथी शी वात ॥ क० ॥ दोप न लागे वंशने रे हां, तेम करो इम कहे तात ॥ क० ॥ १ए ॥ सैन्य सहित लेइ सिंहने रे हां, तिहांथी कीध प्रयाण ॥ क० ॥ शोध कारण निज कंतनी रे हां, सुंदरी सुगुण सुजाण ॥ क० ॥ २० ॥ नावे नवियण सांजलो रे हां, मनोहर दशमी ढाल ॥ क० ॥ राम कहे धन्य जगतमां रे हां, जे रहे मनडुं वाल ॥ क० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अविछन्न प्रयाणथी, चालंतां निर्बीक ॥ आव्यां केटलेएक दिने, नयरी उज्जेणी नजीक ॥ १ ॥ वैरसिंह नृप सांजली, लोक मुखे एम वात ॥ आवे नयरे आपणे, चंपानृपनो जात ॥ २ ॥ दल लेइ साहामो चल्यो, वैरसिंह नूपाल ॥ तेमी लाव्यो कुंवरने, नयर मांहि उजमाल ॥ ३ ॥ स्वागत पूछे कुमरने, देइ बहु सन्मान ॥ कोण कारण थयुं आववुं, नाखो सुगुण निधान ॥ ४ ॥ तुम नगरी निरखण तणो, हतो बहु मन कोम ॥ तिण कारण अमे आवीया, कुमर कहे मद मोम ॥ ५ ॥ राजन कहे नले आवीया, अम घर पावन कीध ॥ सप्तनूमि आवासमां, नृप उतारो दीध ॥ ६ ॥ राजसुता तिहां तो रहे, साथ सबल दलपूर ॥ दे आदेश सेवक नणी, प्रह उगमते सूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥ तेमी सेवक तेह, कुमरी एम नणे री ॥ निरखो नीरनुं ठाम, जइने थल घणे री ॥ १ ॥ पूर्व दिशे एक स्वामी, ठे जलठाम नलुं री ॥ बहुजंतु विश्राम, नूशिर तिलक मनुं री ॥ २ ॥ लही नृपनो आदेश, जलमारग निवसे री ॥ चर्या देखण काज, कुमरी मन उल्लसे री ॥ ३ ॥ जल पीवाने काज, एक दिन ते निरखे री ॥ जाता हयवर पंच, मन साथे परखे री ॥ ४ ॥ ए मुज ताते दीध, हय देखी हरखी री ॥ सीधां वांछित काज, चिंते ते निरखी री ॥ ५ ॥ सेवकने कहे आम, एह स्वामी तणो री ॥ नाम ठाम निर्धार, मुज आगे ए नणो री ॥ ६ ॥ विनति करी कहे तेह, धनदत्त शेठ तणो री ॥ मंगलकलश कुमार, एहज स्वामी सुणो री ॥ ७ ॥ सिंह नणी कहे वात, एह

कुमर तेमो री ॥ जेम ह्यनो संबंध, सांजलीये निमो री ॥ ८ ॥ लेख-शालाए ताम, जातो तेह जाणी री ॥ अध्यापक संघात, प्रीति करी ताणी री ॥ ॥ ए ॥ एक दिन जोजन काज, गत्र सहित आवासे ॥ अध्यापक आणंद, तेड्यो मनने उल्लासे ॥ १० ॥ साथे निहाली नाथ, हियडे घणुं हरखी री ॥ जेम चकोरी चंद, उल्लसे चित्त परखी री ॥ ११ ॥ मांडे सोवन थाल, आदरे प्रीति घणी री ॥ प्रीतमने निज पास, बेसारे सुगुणी री॥ ॥ १२ ॥ बीजणे ढोले वाय, जोजन जलां प्रीसे री ॥ देखी प्रिय मुखचंद, अंतर दिल हींसे री ॥ १३ ॥ बीजाने सामान्य, गौरव जक्ति करे री ॥ ते देखी सहु बाल, मनमां अणख धरे री॥ १४ ॥ एवडुं एहने मान, कारण को न लहे री ॥ पंक्तिभेदनुं दुःख, मनडा मांहे दहे री ॥ १५ ॥ जमी उठ्या वली तेह, सहुथी अवल शिरे री ॥ क्षोमयुगल पियु काज, आपे हर्ष जरे री ॥ १६ ॥ अध्यापकने एम, वात कहे सुविचारी ॥ ए तुम सघला गत्र, मांहे रुडापण जारी ॥ १७ ॥ जे होय ते मुज आज, वात कहो एक सारी ॥ ते निसुणी मुज चित्त, हर्ष लहे संजारी ॥ १८ ॥ क्रोध तणे वश तेह, बोल्या सहु एम जामी ॥ कहेशे मंगल एह, जक्ति करी तुमे जामी ॥ १९ ॥ बोल्या मंगल ताम, रहो तुमे सहु अलगा री ॥ जक्ति करी ते माटे, शुं आवो वलगा री ॥ २० ॥ जक्ति करे सो वार, जिहां मन मान्युं हुवे री॥ परने न करे कोय, टगमग साहामुं जुवे री ॥ २१ ॥ सा मन मानी वात, कहोने तेह परी री ॥ सांजलीये एक चित्त, प्रीते रीति खरी री ॥ २२ ॥ एकादशमी ढाल, वात कही रढीयाली ॥ हवे मंगल मन मेली, कहेशे वात रसाली ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २९५ ॥ श्लोक ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अध्यापक आनंदीयो, सांजली शिशुना बोल ॥ मंगलने कहे वत्स तुमे, दाखो वात अमोल ॥ १ ॥ मंगल चिंते चित्तमां, त्रैलोक्य-सुंदरी एह ॥ मुज कारण नरवेष धरी, आवी नहीं संदेह ॥ २ ॥ धनधन एहनी चातुरी, राख्यो जिणे निज धर्म ॥ मुज जेवो पापी नहीं, कीधुं जेणे विकर्म ॥ ३ ॥ कहेवा लाग्यो कुमर ते, कल्पित के अनुजूत ॥ कुमरी कहे अनुजव तणी, वात कहो अद्भुत ॥ ४ ॥ धुरहुंती मांमी सकल, दाख्यो सकल संबंध ॥ यावत् मंत्री काढीयो, तिहां लगे सवि अनुबंध ॥ ५ ॥ हर्षित हुइ सा

सुंदरी,सांजली प्रीतम बोल॥रोम रोम तन उल्लस्युं,आज अधिक रंगरोल॥६॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ कृत्रिम कोप करीने जी ॥ कुमरी एम नाखे ॥ अहो ए मिथ्यानाषीने जी ॥ सहुकोनी साखे ॥ एहवुं जूतुं केम बोले जी ॥ कु० ॥ नहीं ए कोइ नरने तोले जी ॥ स० ॥ १ ॥ तेने अह- वा सेवक धाया जी ॥ कु० ॥ तव बालक सवि उजाया जी ॥ स० ॥ ते अही गृह मांहे आएयो जी ॥ कु० ॥ ते समज्यो मन मांहि जी ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम आसन बेसारी जी ॥ कु० ॥ कर जोमी रही सा नारी जी ॥ स० ॥ कहे सिंहने ए मुक कंत जी ॥ कु० ॥ ए आवी मिल्यो एकांत जी ॥ स० ॥ ३ ॥ आज मनोवांछित सवे फलीयां जी ॥ कु० ॥ प्राणजीवन मुऊने मलीया जी ॥ स० ॥ आज जीवित जन्म प्रमाण जी ॥ कु० ॥ मुक तूठ्या श्री जिनजाण जी ॥ स० ॥ ४ ॥ मन संशय सिंहज जाणी जी ॥ कु० ॥ जइ जुवे अवर सहिनाणी जी ॥ स० ॥ नाजन मूकतां ते दीधां जी ॥ कु० ॥ नामांकित असली सीधां जी ॥ स० ॥ ५ ॥ जइ जोयो ते सवि दीगे जी ॥ कु० ॥ मन संशय सघलो नागो जी ॥ स० ॥ धनदत्त शेठने कहे जाणी जी ॥ कु० ॥ ए तुम सुतनी धणीयाणी जी ॥ स० ॥ ६ ॥ सुणी वातने शेठ उजाणो जी ॥ कु० ॥ आवे तिहां श्वास नराणो जी ॥ स० ॥ धरी रूप रमणीनुं आगे जी ॥ कु० ॥ आवी श्वशुरने पाये लागे जी ॥ स० ॥ ७ ॥ आवे नयर नरेश्वर रंगे जी ॥ कु० ॥ जोवा मलीयां बहु उठरंगे जी ॥ स० ॥ पंच साखे राजकुमारी जी ॥ कु० ॥ थइ रही मंगल घरनारी जी ॥ स० ॥ ८ ॥ पसरी बहु नयरे वात जी ॥ कु० ॥ धन्य कुमरी एह सुजात जी ॥ स० ॥ नरवेष देइने चाल्यो जी ॥ कु० ॥ सिंह निज नयरी नणी आव्यो जी ॥ स० ॥ ए ॥ निज नृपति आगल आवी जी ॥ कु० ॥ सवि वात कही समजावी जी ॥ स० ॥ धन्य मुऊ तनया चतुराइ जी ॥ कु० ॥ अहो जुर्ठ सचिव धीठाइ जी ॥ स० ॥ १० ॥ प्रीतिए न रहे ठानुं पाप जी ॥ कु० ॥ नवि दीजे पर उपताप जी ॥ स० ॥ पढी करशुं एहने नायो जी ॥ कु० ॥ एक वार जमाइने तेमावो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ सिंह मूकीने तेमावे जी ॥ कु० ॥ दंपती दोय चंपा आवे जी ॥ स० ॥ नृप सामो आव्यो आपे जी ॥ कु० ॥ बहु मान जमाइने आपे जी ॥

स० ॥ १२ ॥ गजवरखंधे वेसारी जी ॥ कु० ॥ असवाव संघाते नारी जी ॥ स० ॥ पुरमां आवे असवारी जी ॥ कु० ॥ तिहां खलक मल्यां नर नारी जी ॥ स० ॥ १३ ॥ सहु जंपे ए चिरं जीवो जी ॥ कु० ॥ कुंवर ए कुलनो दीवो जी ॥ स० ॥ सघलो ए मंत्री वंक जी ॥ कु० ॥ दीधुं कूडुं कोडी कलंक जी ॥ स० ॥ १४ ॥ जव इज्जत एणे हारी जी ॥ कु० ॥ बोले पुरजन व्यवहारी जी ॥ स० ॥ मंदिर आव्यो कुलजाण जी ॥ कु० ॥ तव वाग्यां ढोल निशाण जी ॥ स० ॥ १५ ॥ नृप सचिवने कीधो कालो जी ॥ कु० ॥ कह्यो हुकम तलारने मालो जी ॥ स० ॥ कुण चोर तणो रखवाल जी ॥ कु० ॥ बोले एम बाल गोपाल जी ॥ स० ॥ १६ ॥ फल पाम्यो प्रत्यक्ष एह जी ॥ कु० ॥ दीधुं आल सतीने जेह जी ॥ स० ॥ महोकम माल्यो तव मूले जी ॥ कु० ॥ गरूडा पाटू पडवा पूठे जी ॥ स० ॥ १७ ॥ तिहां मंगलकलश विचारे जी ॥ कु० ॥ सहु निज कृतने अनुसारे जी ॥ स० ॥ निज आतम दोष विलावे जी ॥ कु० ॥ इहां पर ते निमित्त कहावे जी ॥ स० ॥ १७ ॥ यडुक्तं ॥ रे जीव सुहदुहेसु० ॥ १ ॥ अप्पा चेव दमेअव्वो, अप्पा हु खलु डुदमो ॥ अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्थ ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुऊ वेरी जो ए हणाय जी ॥ कु० ॥ अनुकंपाव्रत डुःखाय जी ॥ स० ॥ सहु जीवने जीवित प्यारुं जी ॥ कु० ॥ कही नृपने एने उगारुं जी ॥ स० ॥ १९ ॥ यडुक्तं ॥ अमेध्यमध्ये कीटस्य, सुरेंद्रस्य सुरालये ॥ समा च जीविताकांक्षा, समं मृत्युजयं द्वयोः ॥ ३ ॥ अन्यदर्शनेऽपि ॥ यो दद्यान्मेरुवत्स्वर्णं, कृत्स्नां चैव वसुंधराम् ॥ एकस्य जीवितं दद्या,-न्न च तुल्यं युधिष्ठिर ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे नृपने प्रजु अवधारो जी ॥ कु० ॥ सचिव उपरे कोप निवारो जी० ॥ स० ॥ मुऊ उपरे महेर करीजे जी ॥ कु० ॥ मंत्रीने जीवित दीजे जी ॥ स० ॥ २० ॥ धन्य उपगारी तेह जी ॥ कु० ॥ अवगुणी उपरे धरे नेह जी ॥ स० ॥ कही पारमी ढाल विचारी जी ॥ कु० ॥ गुणवंतनी जाउं बलिहारी जी ॥ स० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२२ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपजामाता आपदे, तेल्यो मंत्री तेह ॥ जा मूक्यो मुऊ जीवतो, पण इण पुर न रहेह ॥ १ ॥ निज नगरीथी नीसरयो, सचिव तेह मतिहीन ॥ जग सघलुं ए जाणजो, उदय तणे आधीन ॥ २ ॥ उदये आवे धर्मने,

महोटा मति मुंकाय ॥ गयो परदेशे वापडो, पण कोइ न दीये ठाय ॥ ३
मान रहित मेलो मने, मेली घरनुं राज ॥ करी परघरनी चाकरी, उद
रनेरवा काज ॥ ४ ॥ हवे नृप मंगलकलशने, आप्यो सुतने गाम ॥ जुवे
अजब गति पुण्यनी, पुण्ये सीजे काम ॥ ५ ॥ तेडाव्यां तेहनां तिहां, मात पित
तेणी वार ॥ सहु परिवारे परवस्यो, विलसे सुख संसार ॥ ६ ॥ एहवे दीधी वधा
मणी, वनपालक मतिमंत ॥ यशोजद्र मुनि उपवने, समवसस्या गुणवंत ॥ ७

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वारी मोरा साहेबा ॥ ए देशी ॥ नृप सुंदर सांजली हो राज, रीज्य
धर्मने राग ॥ वारी मोरा साधुजी ॥ ए आंकणी ॥ श्रीगुरुवंदन नीसस्यो
हो राज, आज अजब लह्यो लाग ॥ वा० ॥ १ ॥ तारण तरण जवांबु
हो० ॥ जगमां जेम जहाज ॥ वा० ॥ पंचाजिगम ते साचवी हो०
वांदे श्री मुनिराज ॥ वा० ॥ २ ॥ दल देखी दिल उल्लस्युं हो० ॥ दे दिल
जर उपदेश ॥ वा० ॥ धर्म करो थिंगरू थली हो० ॥ यौवन वय सुविशे
॥ वा० ॥ ३ ॥ जर कुट्टी यौवन शशो हो० ॥ काल आहेमी नित्त ॥ वा०
धर्मी विना धर्मज नहीं हो० ॥ कुशल किहांथी मित्त ॥ वा० ॥ ४ ॥ बे
पिशून वचे कूंपडुं हो० ॥ जाइ उजाणो काल ॥ वा० ॥ वहेती वा
शोधीये हो० ॥ धर्म थइ उजमाल ॥ वा० ॥ ५ ॥ रखे प्रमादने व
पमो हो० ॥ धर्म ते शुद्ध स्वजाव ॥ वा० ॥ अशुद्ध अनादिनी चेतन
हो० ॥ मोह्यो मोहविजाव ॥ वा० ॥ ६ ॥ दृष्टिविपर्यय थइ रह्यो हो०
पर उपरे निज जाव ॥ वा० ॥ निज वस्तु ए जाणो नहीं हो० ॥ देखी रह
चेतनजाव ॥ वा० ॥ ७ ॥ शुं पुफलने वश पड्या हो० ॥ ए कोण को
तुम रूप ॥ वा० ॥ निज घर तजी परघर रमो हो० ॥ शुं चतुराइ रूप
॥ वा० ॥ ८ ॥ मन मानी गुरुदेशना हो० ॥ आव्यो जववैराग्य ॥ वा०
कहे श्रीगुरु तारो मुने हो० ॥ आज लह्यो में लाग ॥ वा० ॥ ए ॥ कहे गु
देवाणुप्पिया हो० ॥ करीये नवि परमाद ॥ वा० ॥ जावसंधी जमत
सही हो० ॥ चाखो अनुजवस्वाद ॥ वा० ॥ १० ॥ आवी मंगलकलश
हो० ॥ सोंपीने निज राज ॥ वा० ॥ राजन संयम आदस्यो हो०
आतम साधन काज ॥ वा० ॥ ११ ॥ पंच समिति सूधा यति हो० ॥ क्षमा
वंत अणगार ॥ वा० ॥ शुद्ध निरीह तप आदस्यो हो० ॥ करता उ

विहार ॥ वा० ॥ १२ ॥ गुरु आणा शिर पाघडी ॥ हो० ॥ धारी राखे सार ॥ वा० ॥ विषय न वांछे पा घडी हो० ॥ हुं तेहनी बलिहार ॥ वा० ॥ १३ ॥ जे संयम सुख आगले हो० ॥ सुरसुख पण तिलमात ॥ वा० ॥ नर देव पण नित्य जेहना हो० ॥ चरण नमे परजात ॥ वा० ॥ १४ ॥ यडुक्तं ॥ तण संथार निविठो, मुणिवरो ज्ञग राग गयमोहो ॥ जं पावइ मुत्तिसुहं, कित्तो तय चक्कवट्टीवि ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ शुद्ध चरणाराधन थकी हो० ॥ सुरसुंदर ऋषिराज ॥ वा० ॥ सुगति लही सिद्धक दशा हो० ॥ जिहां सुख भोज समाज ॥ वा० ॥ १५ ॥ हवे पाले निज राजने हो० ॥ मंगलकलश नरेश ॥ वा० ॥ राज्ये वणिकने थापीयो हो० ॥ निसुण्युं अपर पुरेश ॥ वा० ॥ १६ ॥ दल लेइ ते आवीया हो० ॥ राज्य लेवाने काज ॥ वा० ॥ मंगल नृप चढती कला हो० ॥ वश कीधां सहु राज ॥ वा० ॥ १७ ॥ पुण्यदशा जस पाधरी हो० ॥ मंगलमाला थाय ॥ वा० ॥ पदपद पामे संपदा हो० ॥ मन धारे ते उपाय ॥ वा० ॥ १८ ॥ ढाल ज्ञणी ए तेरमी हो० ॥ पुण्योदयनी वात ॥ वा० ॥ धन्य जेहनी धर्मे करी हो० ॥ रंगाणी सवि धात ॥ वा० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२९ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख ज्ञोगवतां अनुक्रमे, त्रैलोक्यसुंदरी साथ ॥ सुत जन्म्यो एक सुंदरु उत्सव करे धरनाथ ॥ १ ॥ आनंद धरी अंगज तणुं, यशशेखर अभिधान ॥ सज्ञान संतोषी घणुं, थापे ते राजान ॥ २ ॥ जिनमंमित पृथिवी करी, खरची बहु धन कोमि ॥ ज्ञक्ति करे जिनवर तणी, प्रणमे बे कर जोमी ॥ ३ ॥ डव्यज्ञक्ति विरचे ज्ञली, ज्ञावज्ञक्ति अभिलाख ॥ वरस प्रत्ये साहम्मी निमित्त, खरचे धन केइ लाख ॥ ४ ॥ जिनगुरु जिनमत संघनी, ज्ञक्ति ज्ञेद ए चार ॥ आदरतां उज्ज्वल हुवे, समकितनो आचार ॥ ५ ॥ समरथ सुत आगल थयो, राजधुरंधर धीर ॥ प्रजापाल पाले प्रजा, पर डुःख कायर वीर ॥ ६ ॥ इण अवसर तिहां आवीया, श्री जयसिंह मुनीश ॥ अवनीपति वंदन चल्यो, साथे सबल जगीश ॥ ७ ॥ गुरु वांदी निसुणे नृपति, देशन अमृतवाण ॥ कथा रसिक संवेगनी, निर्वेदनी वखाण ॥ ८ ॥ देशन अंते पूछीयुं, नृप पूरव अवदात ॥ गुरु ज्ञानी ज्ञाखे प्रगट, पूरव ज्ञवनी वात ॥ ९ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ देशी विंदलीनी ॥ क्षेत्र नरत शुन्न ठामे, पुर धरणीप्रतिष्ठित नामे हो ॥ राजन् सुण वाणी ॥ विषमी ए कर्मकमाणी हो ॥ रा० ॥ सु० ॥ निवसे कुलपुत्रक एक, सोमचंद्राभिध सुविवेक हो ॥ रा० ॥ १ ॥ तस घरे कांता श्रीदेवी, रूपे अमरीना जेहवी हो ॥ रा० ॥ दंपती दोय प्रीति पनोतां, सुख विलसे सुर सम जोतां हो ॥ रा० ॥ २ ॥ श्रावक जिनदेव संघाते, तस प्रीति घनी एकांते हो ॥ रा० ॥ नखमांस तणी परे पाले, नेह निविम बेहु संनाले हो ॥ रा० ॥ ३ ॥ धन हुते पण जिनदेव, परदेश जावा चाह हेव हो ॥ रा० ॥ कहे मित्रने हुं अन्य देश, जाइश व्यापार उद्देश हो ॥ रा० ॥ ४ ॥ पण मुफ धन रागो पासे, वावरजो क्षेत्र उल्लासे हो ॥ रा० ॥ शुन्न मार्गे जो वावरीजे, परनवसंबल पामीजे हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ यडुक्तं ॥ व्याजे स्याद्विगुणं वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं नवेत् ॥ १ ॥ नेवचेऽपि ॥ दानपात्रमधमर्णमिहैकमाहि कोटिगुणितं दिवि दायि ॥ साधुरेति सुकृतैर्यदि कर्तुं, पारलौकिककुसीदमसीदत् ॥ २ ॥ धाकारोऽप्यत्र धारं, प्रकारस्त्राणवाचकः ॥ अकाररूपसंयोगे, पापमालुमनीषितः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ आपी दश सहस्र दीनार, परदेश चल्यो व्यापारे हो ॥ रा० ॥ हवे सोमचंद्र विचारे, धन्य धन्य एहनो अवतार हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ मुफ हाथे बहु धन दीधो, एणे जन्म कृतारथ कीधो हो ॥ रा० ॥ तो कांइक मुफ दमेरी, खरचुं शुन्न ठाम सवेरी हो ॥ रा० ॥ ७ ॥ सुकृत मूकी टनारी. प्रशंसे तेहनी नारी हो ॥ रा० ॥ बेहु बांधी पुण्यनो राशि. सुख विलसे निज आवास हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ एक नडा नामे नारी, श्रीदेवीने ते प्यारी हो ॥ रा० ॥ नंद शेठ सुता गुणखाणी, देवदत्तनी ते धणीयाणी हो ॥ रा० ॥ ९ ॥ नस विपुने अंगे रोग, थयो कुष्टनो पुरव नोग हो ॥ रा० ॥ देखी नडा दुइ दिलगीर, नयणे करे आंसु नीर हो ॥ रा० ॥ १० ॥ श्रीदेवी साथ सादेवी, करे वात बेहु मन मेली हो ॥ रा० ॥ कोइ कर्म तणी गति विरली. मुफ कंथने वेदन न टली हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ तव हांसीमां श्रीदेवी. बोली तुफ कंथ पदवी हो ॥ रा० ॥ तुफ मेल्ये ए व्याधि वलगी, जा तुं तस सुखथी अलगी हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ सुणी नडा नीचे वयणे, होय नही जरते नयणे हो ॥ रा० ॥ मनहुं वसुं मांहे हुगुं, सखीए

मुज दीधुं महेणुं हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ मन खेद उपन्यो जाणी, श्रीदेवी बोली वाणी हो ॥ रा० ॥ मत खेद करो मुज वहाली, में हांसीए कयुं तुज व्हाली हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ घट सुभगसा मनमां तेह, पहोती पोताने गेह हो ॥ रा० ॥ नाही पण चाली आगी.हांसीमां वात विगामी हो ॥ रा० ॥ १५ ॥ हांसी सम नहीं कोइ पाप, जाणे त्रिभुवनपति आप हो ॥ रा० ॥ बंधाये सात ने आठ, हांसीमां कर्मना ठाठ हो ॥ रा० ॥ १६ ॥ यडुक्तमागमे ॥ जीवेणं भंत हस्समाणे, कइ कम्म पयडिउं बंधणया ॥ गोयम सत्तविह बंधणया, अठविह बंधणया ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ हसमने हसवुं वारु, वेहु समयमां एम निर्धार्युं हो ॥ यडुक्तं ॥ अहरोगो अइतोसो, अइहासो डुज्जायो हि संवासो ॥ अइ उग्ग आवेसो, पंच गुणं अवि लहुयंति ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ नवि करीये कोनी हांसी, जेहथी जग होये ग्यासी हो ॥ रा० ॥ ॥ १७ ॥ एम आले आले जीव, बांधे परजव करे रीव हो ॥ रा० ॥ सोमचंद अने श्रीदेवी, साधुनी संगति सेवी हो ॥ रा० ॥ १८ ॥ कर्युं पुण्य ते आडुं आवे, पहेले सुरलोके जावे हो ॥ रा० ॥ पंच पल्योपमनुं आय, दोय सुर थयां सुंदरकाय हो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सोमचंद चवी तुं तेह, थयो नृपपति गुणगेह हो ॥ रा० ॥ त्रैलोक्यसुंदरी सारी, पहेली श्रीदेवी नारी हो ॥ रा० ॥ २० ॥ परभवे पुण्य कीधुं जारी, तिणे परण्यो जाणे नारी हो ॥ रा० ॥ हांसीमां कलंक चढाव्युं, ते आ भवे उदये आव्युं हो ॥ रा० ॥ २१ ॥ निसुणी श्रीगुरुनी वाणी, मन मोहदशा मुंकाणी हो ॥ रा० ॥ ए चौदमी ढाल वखाणी, कहे रामविजय धन्य नाणी हो ॥ रा० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वांदी कर जोमी कहे, तारो श्री गुरुराज ॥ जवजल मांहे मुज मिल्यो, दर्शन तुज जहाज ॥ १ ॥ पतित जणी पावन करो, द्यो प्रजु मुजने दीक्ष ॥ मनमां सूधी धारवी, सद्गुरु ताहरी शीख ॥ २ ॥ गुरु कहे देवाणुप्पिया, तेम करीये मन ठाम ॥ ए अनादि प्रतिबंधमां, नवि पमीये घर काम ॥ ३ ॥ गुरु वंदी मंदिर चव्यो, वनिता सहित नरिंद ॥ राज्य ठव्यो निज तनुजने, मनमां धरी आनंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए देशी ॥ यशशेखर आणा लही, नृप

चाल्यो हो संयमने काज ॥ वली जयसिंह मुनीशने, कहे आपो हो मुज संयम राज ॥ १ ॥ वलिहारी गुणवंतनी ॥ नृप मांहे हो व्रत साथे नेह ॥ कुमति कुटिल नारी तजी, जजे समता हो सुंदरी गुणगेह ॥ व० ॥ २ ॥ दीख ग्रही जवतारिणी, गुरु साथे हो विचरे मुनिहंस ॥ ध्यान विमल मोती चूणे, मतिहंसी हो साथे शुज वंश ॥ व० ॥ ३ ॥ समयजलाशयने तरे, लख नेदे हो जरू चेतनजाव ॥ अनुजव चंचुसजावथी, नय धारण हो पक्ष उज्ज्वल जाव ॥ व० ॥ ४ ॥ शुद्ध आहारे मन रमे, निर्दूषण हो नीरे संतोष ॥ गुरुआणाए चालतां, मन वाधे हो वैराग्यनो पोष ॥ व० ॥ ५ ॥ त्रैलोक्य-सुंदरी साधवी, करे किरिया हो गुरुणीनी साथ ॥ व्रत आराधे उजलां, मन आएयुं हो जेणे निज हाथ ॥ व० ॥ ६ ॥ अंते अणसण आदरी, वेहु पहोतां हो पंचम सुर ठाम ॥ त्रीजे जवे शिवसुख लह्यां, धर्म तारे हो जवि निसुणो आम ॥ व० ॥ ७ ॥ कीधो कराव्यो ए सही, अनुमोद्यो हो आपे शिव धर्म ॥ त्रिकरण योगे आदस्यो, मनचिंतित हो पूरे शिव शर्म ॥ व० ॥ ८ ॥ श्रीषेण नृप एम सांजली, गुरुदेशने हो बुज्यो मन मांहे ॥ समकित शुद्ध अंगीकरी, श्रावकव्रत हो ग्रहे मन उत्साह ॥ व० ॥ ९ ॥ मुनि वंदी मंदिर वल्या, मन सूधे हो पाले आचार ॥ जीवदया पाले जली, देश मांहे हो वरतावी अपार ॥ व० ॥ १० ॥ व्यसन निवारे वेगलां, मन वारे हो विषये सुविशेष ॥ आतमने उज्ज्वल करे, न लगावे हो कांइ काली रेख ॥ व० ॥ ११ ॥ चेतन शुक्लपक्षी थयो, तस संगते हो अजिनंदिता नार ॥ धर्म जज्यो जगवंतनो, जे साध्यो हो आपे जवपार ॥ व० ॥ १२ ॥ जडकजावपणुं लहे, अजिनंदिता हो राणी नृपसंग ॥ उत्तम संगति गुण करे, पत्थर पण हो तरे तुंब प्रसंग ॥ व० ॥ १३ ॥ एहवे कोसंवी धणी, वलि राजा हो वलीयो जूपाल ॥ श्रीमतीकुखे उपनी, श्रीकांता हो पुत्री सुकुमार ॥ व० ॥ १४ ॥ यौवनवय आवी जली, मोह रायने हो रमवानुं ठाम ॥ जोम न आवे तेहनी, जगतीमां हो जोतां कोइ ठाम ॥ व० ॥ १५ ॥ श्रीषेण सुत इंडुषेणने, योग जाणी हो सवले परिवार ॥ स्वयंवर साहमी मोकली, आवी उतरी हो वनमां तेणी वार ॥ व० ॥ १६ ॥ पन्नरमी ढाल पूरी थइ, जवि सुणजो जावे उजमाल ॥ रामविजय कहे तेहनां, नाम लीजे हो जेहने धर्मनी ढाल ॥ व० ॥ १७ ॥ ३०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपवती कुमारी घणुं, निरखी बेहु कुमार ॥ मनमथने तें वशे पड्या, व्याप्यो विषय विकार ॥ १ ॥ निरखी निरुपम नायका, विषमी कुंची जेम ॥ बेठी अंतर जायगा, नेह्युं तालक प्रेम ॥ २ ॥ चित्त बेहु बंधव तणां, एक द्रव्य अभिलाष ॥ नेह रहित निरस थयो, लीली जेहवी लाख ॥ ३ ॥ विषये विनय तज्यो परो, विंडुषेण कहे एम ॥ म करीश आशा एहनी, जो तुं वांछे क्षेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ हरिया मन लाग्युं ॥ ए देशी ॥ बे बंधव अमरष चड्या, देवरमण उद्यान रे ॥ विषये मदमाता ॥ तुं तुंकारे आवीया, बिहु ते योध सुवान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ लाज न आणी कुल तणी, न गण्यो जन अपवाद रे ॥ वि० ॥ एक तरुणीने कारणे, मांड्यो एम संवाद रे ॥ वि० ॥ २ ॥ लाज तजी अलगी तेणे, नाख्या हथियारे हाथ रे ॥ वि० ॥ चटपटमां खटपट थइ, आव्या बाथो बाथ रे ॥ वि० ॥ ३ योध कुंजा धम धमहडे, कायर कंपे प्राण रे ॥ वि० ॥ कोइ न छोडावी शके, मलीया राणो राण रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ कामणगारी कामिनी, शुं कीधुं एणे एह रे ॥ वि० ॥ जोतां बेहु बंधव तणो, ऊमी गयो एम नेह रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ वात सुणी श्रीषेणजी, वारणने असमथ रे ॥ वि० ॥ चित्त चिंते ए उपन्यो, विषय थकी अनरथ रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ धिक् धिक् ए लंपटपणुं, धिक् धिक् विषय विलास रे ॥ वि० ॥ युवती रूपे जगतमां, मोह जूपे धर्यो पाश रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिलमात्र सुख विषय तणुं, दुःख मेरु उपमान रे ॥ वि० ॥ विषयविलुद्धा मानवी, अंगे न वले वान रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ शल्य समा जिनवर कह्या, काम आशीविष तुल्य रे ॥ वि० ॥ जे एहथी विरम्या सही, ते नर रयण अमूल्य रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ म्हापण एहनुं क्यां गयुं, किहां गयो कुल-आचार रे ॥ वि० ॥ निर्लज ए लाजे नहीं, विषय पड्यो धिक्कार रे ॥ वि० ॥ १० ॥ जे पुद्गल नासे सरे, धर्म संयोग वियोग रे ॥ वि० ॥ ते उपर मूर्छा इसी, अहो अनादिनो रोग रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यदुक्तं ॥ एतानि तानि धनयौवनगर्वितानि, हारार्द्धहारमणिनूपुरसंचितानि ॥ वस्त्रान्नपान-शयनासनलालितानि, भूमौ लुठंति कुपितानि कलेवराणि ॥ १ ॥

अन्यदप्युक्तं ॥ विकलयति कलाकुशलं,हसति शुचिं पंडितं विमंवयति॥अध-रयति धीरपुरुषं, क्षणेन मकरध्वजो देवः ॥२॥ लीलावतीनां सहजा विलासा,-स्त एव मूढस्य हृदि स्फुरंति ॥ रागो नलिन्या हि निसर्गसिद्ध,-स्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडंघ्रिः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ कलह थकी विरम्या नहीं, लाज्यो मन भूपाल रे ॥ वि० ॥ एणे कुपुत्रे आदस्यो, निर्मल वंश विटाल रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ केम देखाडीश लोकने, मुख दरबारे बेसी रे ॥ वि० ॥ मरण भलुं मुजने इहां, घरने खूणे पेसी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ राणी आगल जइ कहुं, धरे परमेष्ठी ध्यान रे ॥ वि० ॥ विष मिश्रित लेइ कमलने, सुंघे मरण निदान रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ काल कस्यो श्रीषेणजी, राणी दोय पण तेम रे ॥ वि० ॥ सत्यभामा चोथी वली, जुर्ज अनरथ एम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ उत्तरकुरुमां उपन्यां, युगलपणे ते चार रे ॥ वि० ॥ एक नृप प्रथम प्रिया तनु,बीजी बीजी हिजनार रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ एहवे चारण मुनिवरु, गगने आव्यो कोय रे ॥ वि० ॥ देवरमण उद्यानमां, जिहां जुके वे दोय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ अहो उत्तम कुल उपन्या, चरमशरीरी होइ रे ॥ वि० ॥ एम केम लज-वाता नथी, करता कुकरम दोइ रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ एह कुचेष्टित तुम तणुं, देखी पितर परलोक रे ॥ वि० ॥ पहोता पण जाएयुं नहीं, धिक् तुम म्हापण फोक रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ अनूणपणुं कीधुं भलुं, थया तरु-णीना यार रे ॥ वि० ॥ मरणहेतु मावित्रने, थया तुमे मूढ गमार रे ॥ ॥ वि० ॥ २० ॥ शब्द सुणी साधु तणो, चित्त आव्युं तव ठाम रे ॥ वि० ॥ युद्ध तजी बेहु जणा, नाखे मुनिने श्याम रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ साचो सोलमी ढालमां, विषमो विषय जंजाल रे ॥ वि० ॥ रामविजय कहे ते भला, जेणे टाल्यो ए जंजाल रे ॥ वि० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०७ ॥ श्लोक ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तुं अमने तारक मल्यो, निःकारण जगबंधु ॥ युद्ध करंता तारीया, पमता भवजल अंधु ॥ १ ॥ अशरण शरण तुमे थया, वली अनाथना नाथ ॥ आवीने अम उपरे,कृपा धरी मुनिनाथ॥२॥वांदीने दोनो चल्या,आव्या तेह आगार ॥ पितर देखी धरणी ढल्या, चाली आंसुधार ॥ ३ ॥ रोता हियडे फाटते, करे विलाप अपार ॥ धार न खंचे नयण दो, जेम भाद्रव जल-धार ॥ ४ ॥ हा हा हा ए शुं थयुं, अमथी सबल अकज्ज ॥ केम कुकर्म

ए हटग्युं, वांध्युं अमे निर्लज्ज ॥ ५ ॥ मल्यो सहु परिवार तव, शोकाकुल ततकाल ॥ स्वामी तें माया तजी, कुण करशे संनाल ॥ ६ ॥ गया विदेशे वाछुडे, वाहला कोइक वार ॥ पण इण वाटे जे वल्या, ते न मले बीजी वार ॥ ७ ॥ प्रेतकार्य करी पितरनां, आणी मन अंदोह ॥ राज दीये गोत्री -णी, मल्यो विषयनो मोह ॥ ८ ॥ एहवे आव्या सांजली, धर्मरुचि अणगार ॥ जे अगाध नवसिंधुना, सूधा तारणहार ॥ ए ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥साहिबा मोतीडो रे हमारो ॥ ए देशी ॥ आव्या दोय कुमर वंदेवा, करे मुनि चरणनी सेवा ॥ साधु जी अमने अब तारो, मोहना मुने पार उतारो ॥ अमे अपराधी पापे नरीया, तुमे निरुपाधिक गुणना दरिया ॥ सा० ॥ मो० ॥ १ ॥ अमे शब्दादिक गुण व्यासंगी, तुमे तेहना सुपने नहीं संगी ॥ सा० ॥ मो० ॥ अमे क्रोधादिक कषाये नमीया, तुमे उत्तम गुणठाणे वढीया ॥ सा० ॥ मो० ॥ २ ॥ अमे मदमातंगने वश पमीया, नवि तुमे ते तिलमात्र आनमीया ॥ सा० ॥ मो० ॥ अमे अशरण अविनीत अजाण, मे जगशरण विनीत सुजाण ॥ सा० ॥ मो० ॥ ३ ॥ कीधी कमाइ अमे ति खोटी, मुनिवरजी तुम पदवी महोटी ॥ सा० ॥ मो० ॥ नव अजि- ही अमे हुपावी, तुमे पट् कायना नहीं परितापी ॥ सा० ॥ मो० ॥ ४ ॥ अमो ते इंद्रिये विषय राच्या, तुमे अनुनव सुखमां रह्या माच्या सा० ॥ मो० ॥ कीधी वात अमे अति काची, तुम किरिया निःक- ने साची ॥ सा० ॥ मो० ॥ ५ ॥ पतित अमे पुरुषारथ हीणा, तुमे न गुणज्ञान अहीणा ॥ सा० ॥ मो० ॥ हवे तुम चरणे आवी ा, एक पलक नवि रहेशुं अलगा ॥ सा० ॥ मो० ॥ ६ ॥ द्यो दीक्षा पावन काया, तो अमे जितनिशाण वजाया ॥ सा० ॥ मो० ॥ चार राजेश्वर साथे, लीधी दीक्षा श्रीगुरुहाथे ॥ सा० ॥ मो० ॥ ७ ॥ मुनि- धो उग्र विहार, पाले चार महाव्रत सार ॥ सा० ॥ मो० ॥ तप अति डुक्कर गाढां, राखे रूमी चारित्र राढा ॥ सा० ॥ मो० ॥ ८ ॥ सहे ताप ने टाढ, खरु खरु हिंकतां वाजे हाम ॥ सा० ॥ मो० ॥ चढीया ी आरोही, मुनिवर अकल अवीह अकोही ॥ सा० ॥ मो० ॥ ए॥ पशम गुणना जोरा, नाठा दुष्ट मदादिक चोरा ॥ सा० ॥ मो० ॥

नवपल्लव हुइ संयमवारी, समताजल सिंचतां जारी ॥ सा० ॥ मो० ॥
॥ १० ॥ वेहु मुनि निज गुणथी वाधे, साधन साधु ग्रहीने साधे ॥ सा० ॥
॥ मो० ॥ अप्रमत्त जूमि निर्धारी, मोह उपरे कीधी स्वारी ॥ सा० ॥ मो०॥
॥ ११ ॥ जाग्यो मोह सबल जरूवाह, चेतन जाति चव्यो उत्साह ॥ सा० ॥
॥ मो० ॥ क्षीणमोह गुणगाणे आवी, अंतर्मुहूर्त्त स्वारी टकावी ॥ सा० ॥
॥ मो० ॥ १२ ॥ ठेद करे आवरण वेहुनो, चेतन चढी तेरम गुण लीनो
॥ सा० ॥ मो० ॥ प्रकव्यो केवलनाण विजास, जासक लोकालोक प्रकाश
॥ सा० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जय जय शब्द करे सुरराजी, देव निशाणे रह्युं
अज गाजी ॥ सा० ॥ मो० ॥ वेहु मुनिवर केवल ऋद्धि लाधी, अंते सिद्ध-
दशा तेणे साधी ॥ सा० ॥ मो० ॥ १४ ॥ हवे श्रीपेणादिक दोय युगल,
त्रण पल्य आयु पालीने विमल ॥ सा० ॥ मो० ॥ तिहांथी चवी सौधर्मे
चार, त्रीजे जवे सुरसुख लह्यां सार ॥ सा० ॥ मो० ॥ १५ ॥ ढाल सत्तरमी
सुणतां प्यारी, शांति प्रजु गुण गाउं विचारी ॥ मो० ॥ सा० ॥ श्री गुरु
सुमतिविजयनो शिष्य, राम कहे प्रणमो निशदिस ॥ सा० ॥ मो० ॥ १६ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

॥ आतमा चित्तशुं चेत चातुरपणे, धर्म विण कोइ डूजो न जगमां ॥
धर्म ते शुद्ध सहजातमा आपणो, तारशे ते सही तुऊ वगमां ॥ आ० ॥
॥ १ ॥ निज उपादानथी निमित्त वल पामीये, धर्म अविरुद्ध सुविशुद्ध
लेही ॥ निमित्त शुज तेह जन संकथा जाणजो, तुरत ते जक्तने मुक्ति
देशी ॥ आ० ॥ २ ॥ माहरे मन घणी जक्ति गुणवा तणी, शांति प्रजु
रास रसनाधिकारे ॥ तेहनो खंम पहेलो थयो पुण्यथी, सांजलो जवियणो
निर्विकारे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आगले सरस रस शांति जिनरासमां, तास
रचना रचीशुं जलेरी ॥ वात विकथा तजी चित्त समता जजी, सांजलो
ठोमो निंदा अनेरी ॥ आ० ॥ ४ ॥ सत्तर पंचाशीए राजनगरे रही, आदि
जिन चरण सुपसाय साध्यो ॥ श्री सुमति सुगुरु तणुं सान्निध्य रामने,
आज आनंदनो पोष वाध्यो ॥ आ० ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३७ ॥ गाथा
तथा श्लोक ॥ ४१ ॥ इति पंमितश्रीरामविजयविरचितश्रीशांतिजिनवंधे
प्राकृतप्रबंधे सुकृतसंधे पूर्वजवानुबंधे मंगलकलशचरित्रे प्राकृतद्वादश-
जवनिबंधे जवत्रयवर्णनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयः खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध नमुं वली, आचारिज उवझाय ॥ साधु सकल परमेष्टिपद, जजीये नित सुखदाय ॥१॥ बीजो खंड रचुं हवे, सरस कथा अधिकार ॥ शांतिनाथ जववर्णना, करतां जव निस्तार ॥२॥ सुरलोके सुख जोगवे, मनोवांछित वर योग ॥ नाटकवद्ध बत्रीशमां, नित नित नवला जोग ॥३॥ वैमानिक सुख जोगवे, ते चारे पुण्यवंत ॥ चवी किहां ते अव-तरे, ते दाखुं विरतंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी चोपाईनी॥ जंबूद्वीपे जरत मझार, वैताढ्य नामे पर्वत सार ॥ पहोलपणे जोयण पचास, उंचपणे पचवीश विलास ॥ १ ॥ राजे रजत तणो गिरि तेह, उपर सोहे जिनवर गेह ॥ पुण्यवंतने ...सवा गाम, उत्तरश्रेणे पुर अजिराम ॥ २ ॥ नामे रथनूपुरचक्रवाल, ऋद्धे सोहे ...काकझमाल ॥ विद्याधर सुखीया सहु कोय, दुःखीयो नामे न वसे कोय ॥ ... ॥ साते सुख जिहां वासो वसे, धर्मी सहु धर्मे उल्लसे ॥ साते सुखनां दाखुं ...म, काव्य थकी सुणजो मन ठाम ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ नीरोगत्वं न जवति ऋणं ...प्रवासी तथैव, वासो नित्यं स्वजनसहितो निर्जयस्थानकेषु ॥ लक्ष्मीः ...ा तदनुसुजगा संगतिः श्रेष्ठपुंसां, चित्तं शुद्धं त्रिमलकृपया सप्तधा सौ-...नितत् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ तिण नगरी विद्याधर धणी, ज्वलनजटी नामे ...गुणी ॥ विद्यावंत वारु सुविवेक, वायुवेगा तस गृहिणी एक ॥ ५ ॥ लवणिम ...गुणे दंपती, सोल शृंगारे ते शोजती ॥ तद्यथा ॥ श्लोक ॥ आदौ मज्जा-...नालतिलकं नेत्रांजनं कुंमलं, नासामौक्तिकहारचारुकुसुमं झंकारव-...र ॥ अंगे चंदनलेपकंचुकमणिक्षुद्रावलीघंटिका, तांबूलं करकंकणं चतु-...गारकाः षोमश ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ ए सोले उपर शिरदार, नारीने स-...चार ॥ ६ ॥ लज्जावंती ने महासती, रूपे दासी कीधी रति ॥ अर्कसु-...वित सुत जएयो, अर्ककीर्त्ति नामे बहु जण्यो ॥ ७ ॥ यौवन वय ...

जावीयुं, युवराज पद शोभावीयुं ॥ तदनंतर एक पुत्री जणी, चंद्रलेखा सुनिज यद्गुणी ॥ ८ ॥ स्वयंप्रभा नामे सा हुइ, वृद्धिमती योवन वय लही ॥ अभिनंदन जगनंदन दोय, ब्रह्मचारी वंदे मुनि सोय ॥ ९ ॥ निसुणी धर्म गर्जी देशना, साधी समकितनी वासना ॥ पर्वदिने पोषध अनुसरे, त्रण काल जिनपूजा करे ॥ १० ॥ एक दिन जिनपूजा आदरी, नमण तणुं जल लेइ कुमरी ॥ जनक समीपे आवी चंग, बेसारी तेहने उठरंग ॥ ११ ॥ जोइ रूप नाच्यो मन हर्षे, पुत्री परणावा उत्कर्षे ॥ बंठे जइ तप पारणुं करो, उत्तम नारजने आदरो ॥ १२ ॥ तेव्या मंत्रीश्वर गतशोक, वर जोवो पुत्रीने योग्य ॥ आप आपणी मति अनुसरी, उत्तर आपे नृपने फरी ॥ १३ ॥ एक बोलयो सुश्रुत अभिधान, मंत्रीश्वर बहु बुद्धिनिधान ॥ राजन तेहनो वागे आज, तेहने परणावो महाराज ॥ १४ ॥ रत्नपुरे महोटो भूपाल, अश्वग्रीव त्रिहु खंड रखवाल ॥ प्रतिविष्णु तेहने दीजीये, बालाथी आहो कीर्तीये ॥ १५ ॥ अपर कहे उत्तरश्रेणीए, प्रभंकरा नगरी शेरीए ॥ मेघवनाभिध महोटो संत, मेघमालिनी केरो कंत ॥ १६ ॥ विद्युत्प्रभ सुत बेटो वली, ज्योतिर्माला ते निर्मली ॥ तस सुतने ए पुत्री योग्य, तस पुत्री आपण सुत जोग्य ॥ १७ ॥ अपर कहे स्वयंवरने करो, पुत्री मन माने ते वरो ॥ मुर्खी विचार विमर्या तेह, राजन् पहोतो आपण गेह ॥ १८ ॥ एक दिन नैमित्तिक आवीयो, संभिन्नश्रोत्र नृप बोलावीयो ॥ कहो मुझ पुत्री वरनी वात, जो जाणो ज्योतिष साक्षात ॥ १९ ॥ हवे कहेशे ते वात रसाल, बीजे खंडे पहेली ढाल ॥ रामविजय नाम्नी मन रली, आगल वातज ते अति जली ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ २४ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे नैमित्तिक रायने, वात वयण विलास ॥ पोतनपुर नृपति जलो, नाम प्रजापति जास ॥ १ ॥ तस अंगज उत्तम सबल, त्रिपृष्ठ अचल बे बंधु ॥ वासुदेव बलदेव ते, थाशे गुणमणिसिंधु ॥ २ ॥ अश्वग्रीव हणशे सही, वासुदेव ते महाबल ॥ एहवुं साधुमुखे सुण्युं, ते तुं माने सत्य ॥ ३ ॥ सुतने अविरति वारने, विद्याधर शिरदार ॥ तस पटराणी होयशे, स्वयंप्रभा वर नार ॥ ४ ॥ एवुं वचन कहे,साधु तणे वचनेह ॥ देखो साक्षी मुने, जब देखो नयणेह ॥ ५ ॥ नृपति मन संतोषीयो, सन्मान्यो देवज्ञ ॥

जतिए करी बोलावीयो, नरपति सबल गुणज्ञ ॥६॥ इवे इत मारीचि प्रत्ये, पाठवीयो तिण राय ॥ पोतनपुर पहोतो तुरत, जाइ विनवीयो राय ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥आठ टकानो कंकणो रे ॥नणदल॥ धरकी रही मोरी बांह॥कंकण मोकलीयो ॥ए देशी॥ इत कहे कर जोमीने रे ॥ साहिबा ॥ सुण प्रजापति स्वामी॥ वारु वयण सुणो ॥ ज्वलनजटीनो मोकल्यो रे ॥ सा० ॥ हुं आव्यो शुन्न काम ॥ वा० ॥ १ ॥ स्वयंप्रजा नामे जली रे ॥ सा० ॥ कुमरी गुणनी खाण ॥ वा० ॥ तुम तनुज त्रिपृष्टने रे ॥ सा० ॥ देवा वांछे राण ॥ वा० ॥ २ ॥ सरखे सरखी जोमली रे ॥ सा० ॥ इशे कोमी कल्याण ॥ वा० ॥ इत सन्मानी वालीयो रे ॥ सा० ॥ मान्युं ए वचन प्रमाण ॥ वा० ॥ ३ ॥ इण अवसरे प्रतिविष्णुजी रे ॥ सा० ॥ अश्वग्रीव नरिंद ॥ वा० ॥ सोल सहस्र नृपालनो रे ॥ सा० ॥ नायक धरणी इंद ॥ वा० ॥ ४ ॥ चढ्यो अहमेवे आकरो रे ॥ सा० ॥ नहीं कोइ मुऊ समान ॥ वा० ॥ सहु किंकर मुऊ आगले रे ॥ सा० ॥ हुं त्रिहु खंड सुलतान ॥ वा० ॥ ५ ॥ तनमद धनमद आकलो रे ॥ सा० ॥ यौवनमद उन्माद ॥ वा० ॥ धींगो थइ धरा जोगवे रे ॥ सा० ॥ वींट्यो नृप गरह ॥ वा० ॥ ६ ॥ मान चढ्युं अंस तेहने रे ॥ सा० ॥ पूछे एक दिन तेह ॥ वा० ॥ मोत होशे कोथी मुने रे ॥ सा० ॥ कहे नैमित्तिक एह ॥ वा० ॥ ७ ॥ वलतुं कहे नैमित्तिउ रे ॥ सा० ॥ मत आणो मम दोष ॥ वा० ॥ हणशे तारा इतने रे ॥ सा० ॥ जे चढीयो जर रोष ॥ वा० ॥ ८ ॥ शाल विणासे सिंहसो रे ॥ सा० ॥ ताहरी सीम मझार ॥ वा० ॥ हणशे हाथे तेहने रे ॥ सा० ॥ ते तुऊ मारणहार ॥ वा० ॥ ए ॥ वात सुणी कोपे चढ्यो रे ॥ सा० ॥ फेडुं तेहनुं ठाम ॥ वा० ॥ सामुं कुण जाली शके रे ॥ सा० ॥ पाडुं तेहनी माम ॥ वा० ॥ १० ॥ इण अवसर काने सुण्या रे ॥ सा० ॥ बलीया बंधव बेह ॥ वा० ॥ रखे आगल जातां थका रे ॥ सा० ॥ विहणे मुऊने एह ॥ वा० ॥ ११ ॥ करुं परीक्षा एहनी रे ॥ सा० ॥ पहेली बांधुं पाज ॥ वा० ॥ वैरी व्याधि ठेदीये रे ॥ सा० ॥ उगंतां तत्काल ॥ वा० ॥ १२ ॥ सहेजे मलवाने मिषे रे ॥सा०॥ मोकलीयो एक इत ॥वा०॥ चंमवेगाजिध आकरो रे ॥सा०॥ पोतनपुर तेह पहुत्त ॥ वा० ॥ १३ ॥ नाटक जोवाने मली रे ॥ सा० ॥ आवी राज-

कुशी ठत्रीश ॥ वा० ॥ इण वेलामां राउलो रे आवी, दूत नमावे शीश ॥ वा०॥१४॥ रायने शंका उपनी रे आव्यो,प्रतिहरिनो केम दूत ॥वा०॥ नाटकभंग कस्त्रो एणे रे आवी, कोप्या दोय नृपपुत ॥ वा० ॥ १५ ॥ ते सन्मानी चालीयो रे पाछो, मद मूके वस घाली ॥ वा० ॥ पूठे आवी दो जणा रे आगो, महोकम कूट्यो काली ॥ वा० ॥ १६ ॥ नाटकभंग अपराधीया रे धोकी, किहां जाइश हवे नासी ॥ वा० ॥ वात सुणी राय आवीयो रे दोमी, मूकाव्यो ग. दास ॥ वा० ॥ १७ ॥ राय खमावे दूतने रे घहेला, ए दोय वाल सजाव ॥ वा० ॥ घर आणी संतोषीयो रे वहेलो, प्रतिहरि जय मन जावी ॥ वा० ॥ १८ ॥ आव्यो दूत उतावलो रे वनमां, वीहीतो अमरपजाव ॥ वा० ॥ सगम आगल आवीने रे जनमां, जाखे ते सद्भाव ॥ वा० ॥ १९ ॥ राय प्रजापति सारिखो रे ॥ सा० ॥ नहीं कांहीं तेहनो दोष ॥वा०॥ पद मग अंगज उगता रे ॥ सा० ॥ विष अंकुरा जास ॥ वा० ॥ २० ॥ वात सये राय सांजली रे चित्तमां, चिंते अंतर गूढ ॥ वा० ॥ मौन धरीने ते रह्यो रे कूलमां, मतिमुंज्यो दिग्मूढ ॥ वा० ॥ २१ ॥ जावी जाव टले नहीं रे जविया, निपुणो वीजी ढाल ॥ वा० ॥ धन्य मुनि टाळ्यो जेणे रे विरुर्ड, महोटो मदजंजाल ॥ वा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शाखरेन्द्र प्रतिविष्णुने, ठे बहु निज परिजोग ॥ तास उपद्रव नित्य करे, सिंह मवल बलयोग ॥ १ ॥ तस चोकी चांपे करे, प्रतिवर्षे राजान ॥ द्वारे बहु परिवार युत, नृप आदेश सुजाण ॥ २ ॥ तिण वर्षे वारक विना, वाजिग्रीव नृपत्त ॥ हुकम प्रजापतिने करे, मूकी दूत तुरत्त ॥ ३ ॥ चित्तमां चिंता ऊपनी, दूत थकी थयुं काम ॥ कस्युं कुकर्म अविचारीने, उदये आव्युं आम ॥ ४ ॥ यतः ॥ सहसा विदधीत न क्रिया,–मविवेकः परमापदां पदम् ॥ वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ १ ॥ काज विचारीने करे, रहे तेहनी लाज ॥ अति उत्सुक उतावला, ते विणसाडे काज ॥ ५ ॥ यदुक्तं ॥ सुगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं, परिणतिरवधार्या यत्नतः पंडितेन ॥ अतिरजसकृतानां कर्मणामाविपत्ते,–र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ आव्या सजामां बंधव जोमी, प्रणमे पितरना पद कर जोडी ॥ बलवंत वे ॥ केम दीसो चिंतातुर आज, नाखो ते अमने महाराज ॥ दिल जे होइ ॥ १ ॥ कहे जनक सुणो पुत्र सुजाण, कुलदीपक कुल अंबर जाण ॥ ब० ॥ विण वारे तेडुं थयुं आज, तेणे जावुं चोकीने काज ॥ दि० ॥ २ ॥ राज बिराजो निज आवास, हुकम करो अमने उल्लास ॥ ब० ॥ ए वनचारी पशु अवतार, ए उपर शुं थया असवार ॥ दि० ॥ ३ ॥ चाल्या वलीया बंधव दोइ, जगमां देव करे ते होय ॥ ब० ॥ नाग्य बली तेजे तेजाल, चाले जिम मयगलनी चाल ॥ दि० ॥ ४ ॥ शालक्षेत्रना कहे रखवाल, अहो तुम न मल्या कोइ भूपाल ॥ ब० ॥ शुं तुम निज जीवित नहीं काज, जे एकला आव्या गे आज ॥ दि० ॥ ५ ॥ नहीं साह्य ने नहीं परिवार, सिंह संघाते युद्ध विचार ॥ ब० ॥ रे रे शोर करे शो गमार, करथी देखाको वनचार ॥ दि० ॥ ६ ॥ देखाड्युं पर्वततुं द्वार, मांहे सूतो सिंह हुशियार ॥ ब० ॥ रथ बेसी आव्या तेणी वार, काने सुएयो रथनो चित्कार ॥ दि० ॥ ७ ॥ उठ्यो आलस मोमी अंग, पंचानन करवाने जंग ॥ ब० ॥ मुख विकास्युं उपामी फाल, आव्यो गुफा बाहिर उजमाल ॥ दि० ॥ ८ ॥ देखी ते पदचारी सिंह, रथ मूक्यो अलगो नरसिंह ॥ ब० ॥ देखी निरायुध ते मृगनाथ, खड्गरल मूके नूनाथ ॥ दि० ॥ ९ ॥ केसरी चिंते अचरिज एक, मुज पासे आवे ए एक ॥ ब० ॥ बीजुं पदचारी मुज जेम, जीती जाशे कहो ए केम ॥ दि० ॥ १० ॥ त्रीजुं मूके आयुध दूर, एहना मनमां अमरप नूर ॥ ब० ॥ मुज अवगणना करे निःशंक, काढुं मरोडी एहनो बंक ॥ दि० ॥ ११ ॥ उठली नज हरि दीधी दोट, नाखी हरि शिर करवा चोट ॥ ब० ॥ कले कर झेपी मुख बल पोठ, हाथे साही हरिना होठ ॥ दि० ॥ १२ ॥ नाख्यो विदारी जोतां तंत, जीरण शाटक परे बलवंत ॥ ब० ॥ रोपे कलेवर चरके तास, सारथि कहे सुण सिंह हताश ॥ दि० ॥१३॥ मत मारयो जाणे सामान्य, सिंह तुं नरसिंह योध युवान ॥ब०॥ सिंहे सिंह हएयो नहीं दोप, मत आणे मन मांहे रोप ॥ दि० ॥ १४ ॥ सुणी वात न धरया गुरू प्राण, मरण लही नरके गयो दीन ॥ ब० ॥

धर्म लेइ हरिनुं गुणवास, मोकलावे प्रतिहरिनी पास ॥ दि० ॥ १५ ॥ कहेवाडे माने मुज पाय, सिंह तणां में पूर्यां लाय ॥ च० ॥ जम वेगे हुवे क्रूर ने जात, मुज सान्निध्य म धरीश प्रतांत ॥ दि० ॥ १६ ॥ निसुणी वेरीनां वयण कठोर, मन मांहे ड्डहवाणो जोर ॥ व० ॥ अंतर अनघ प्रज्वलीयो पूर, चिंते हणवा ते बेहु शूर ॥ दि० ॥ १७ ॥ पुण्यदशा जस चढती होय, शुं करे वैरी साहामुं जोय ॥ व० ॥ आव्यो पोतनपुरनी हजूर, हर्षे वाज्यां तव जय तूर ॥ दि० ॥ १८ ॥ हवे नवि सुणजो अधिकार, आगल वधशे बहु विस्तार ॥ च० ॥ बीजे खंडे त्रीजी ढाल, विरुठ क्रोध वडो चांमाल ॥ दि० ॥ १९ ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वाजिग्रीव इण अवसरे, स्वयंप्रजा सुकुमार ॥ रमणी निरुपम सांजली, वाध्यो विषयजंजाल ॥ १ ॥ मानिनी ए मोहनलता, मनमानी सुख-दाय ॥ ज्वलन जणी कहे तुज सुता, मुज सीताव परणाय ॥ २ ॥ सुखिणी थाशे तुज सुता, वली पामीश बहु मान ॥ रस रहेशे आपण अधिक, ए वाते म करीश कान ॥ ३ ॥ यत्किंचित् उत्तर कही, वाव्यो चर राजन् ॥ पोतनपुर त्रिपृष्ठने, परणावी प्रछन्न ॥ ४ ॥ वात जली अथवा बुरी, पट्ट कर्णे हुइ जेह ॥ पसरे पणिहारी मुखे, ढांकी न रहे तेह ॥ ५ ॥ यतः ॥ खंडण पीसण जलवहण, बाहर जूमि गयांह ॥ देवजुवण पप्पर वयण, रसगोठी महिलांह ॥ १ ॥ पण वधशे ए वातथी, आगल बहु संताप ॥ अश्व-ग्रीव मागी हती, पण परणावी नहीं बाप ॥ ६ ॥ सेवक मुख प्रतिहरि सुणी, परणावी सा थाल ॥ त्रिपृष्ठ जणी सामी जइ, उठी अंतर जाल ॥ ७ ॥ विषय थकी वाध्यो घणो, नारी तणे निमित्त ॥ कोप चढ्यो जाणे नहीं, कोण शत्रु कुण मित्र ॥ ८ ॥ जगमां नारी सम नहीं, अवर कोइ जंजाल ॥ विषयविलुब्धा मानवी, पडीया मोहने जाल ॥ ९ ॥ समजाव्यो समजे नहीं, मंत्रीश्वर वय-णेह ॥ वली अज्ञाने आवर्यो, नवि निरखे नयणेह ॥ १० ॥ यदुक्तं ॥ एकं हि चक्षुरमलं सहजो विवेक,–स्तद्वद्भिरेव सह संवसतिर्द्वितीयम् ॥ एत-द्वयं भुवि न यस्य स तत्वतोऽध,–स्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराधः ॥ २ ॥ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शिक्षा तस्य करोति किम् ॥ लोचनाभ्यां विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ देशी करूखानी ॥ कोप चढे क्रूरलोचन कहे शूरमां, सचिव धसी ठठ ठहां जाठ पद्देला ॥ दोय ते डुष्ट ने ज्वलन श्रीजा जणी, बांधी मुसके इहां लाठ वहेला ॥ १ ॥ जोयजो विषयथी विषम गति निपजे, बांधी मुसके नमीया वडे एम घेटा ॥ विषयथी सुरवरा नरवरा खेचरा, नारी आगे रह्या जेम चेटा ॥ जो० ॥ २ ॥ दूत आव्यो वही पोतनपुर सही, मद चढ्यो गोल बोले अटारो ॥ मूठ बल घालतो, शत्रुदल पाडतो, वांकमो बांधी केडे कटारो ॥ जो० ॥ ३ ॥ रे सुतारत्न मूकी निज स्वामीने, ज्वलन किम रंकने हाथे दीधुं ॥ रत्नतुं गाण प्रजुरेव पुहवीतले, नीचतुं वाक्य निसुएयुं न सीधुं ॥ जो० ॥ ४ ॥ यतः ॥ मणिर्मेदिनी चंदनं दिव्यहेति,-र्वरं वामनेत्रांगजो वाजिराजः ॥ विना भूभुजं को हि जोक्तुं समर्थो, ग्रहे युज्यते नैव चान्यस्य पुंसः ॥ १ ॥ ज्वलन कहे दूत सुण एह साचुं कहुं, स्वामी जाणी सुता एह दत्ता ॥ बोल तुं पाधरे निज धरा ए नहीं, कां सहे अन्यथा चरणलत्ता ॥ जो० ॥ ५ ॥ कुमर कहे दूत वाचाल दीसे जलो, जा कहुं जीवतो जीव लेइ ॥ पारकी नारी आशा करे ताहरो, स्वामी मरशे अखूटेज एही ॥ जो० ॥ ६ ॥ जाणुं मरवा तणी होंश दीसे घणी, जे अकाजे न लाजे न बूजे ॥ आवीयो फीटणकाल तुज स्वामीनो, तो सही एहवी बुद्धि सूजे ॥ जो० ॥ ७ ॥ दूत आठो थयो तुरत पाठो गयो, स्वामी आगे सहु वात गाइ ॥ वात सुणी ठवीयो सयल शिर चाटको, तुरत नेरी निशाणे दिवाइ ॥ जो० ॥ ८ ॥ दल थाठ हथियार मही सायदा, सवल विद्याधरो करो सजाइ ॥ तुरत पहोंच्यो जइ तेह पोतनपुरे, देखतां खेद नाख्यो जमाइ ॥ जो० ॥ ए ॥ आवीया तरवरा सैन्यशुं परिवर्या, नयर पोतनपुरे तेह वेला ॥ सिंहजित सामुहो आवी अमीयो हगी, दोट दीधी करया जेल जेला ॥ जो० ॥ १० ॥ देखी भमकाव नाठा सहु धापमा, ठडी आकाश पाठा सीधाव्या ॥ कुमर आव्या नगर जीत फत्ते करी, सधव मातंग मोती वधाव्या ॥ जो० ॥ ११ ॥ त्रिपृष्ट ठर अचल वेहु खेचरे परवर्या, आवीया श्वशुरगेहे जमाइ ॥ कंत स्वयंप्रजा कुमरीनो आवीयो, घर घरे वाटे सहुए वधाइ ॥ जो० ॥ १२ ॥ सामुहो आवीयो शत्रु निसुणी तदा, आप हयग्रीव कीधी चढाइ ॥ लाख हेताली गज हयवरा हिंसता, कोमि नव अश्वशुं आव्यो धाइ ॥ जो० ॥

१३ ॥ धरूहडे धरणी निशान तव गडगडे, तूर रणतूर ते सवल वाजे ॥ शब्द कायर तणा अतिहि वीहामणा, गुहिर वैताढ्यना कुहर गाजे ॥ जो० ॥ १४ ॥ सैन्य आणीए मळ्यां लोह तव उछल्यां, नाट नट कोटि नट दपट दीनी ॥ लटपटी आवीया चटपटी मांहे ते, रुधिरकर्द्दम मही घोर कीनी ॥ जो० ॥ १५ ॥ युद्ध विद्याधरा साथ वाके सही, होंश पूरी वढे सैन्य शूरा ॥ स्वामी गयवर चढ्या शिर वकारे जला, माहरा वीर वेहु पक्ष पूरा ॥ जो० ॥ १६ ॥ वहुत विद्यावले रूप कीधां घणां, दुष्ट वैताल सर्पादि जाणी ॥ फोज पाठी हठी त्रिपृष्ठ अचल तणी, आवी स्वामी लगे ते उजाणी ॥ जो० ॥ १७ ॥ नागीयुं सैन्य निज देखी कोपे चढ्यो, आप रथ वेसीने धींग धायो ॥ पाठल कोटि नट उठले आवता, मानुं महेराण ए पूर आव्यो ॥ जो० ॥ १८ ॥ पग जणी जोर आव्युं सवे कायरा, हाक वीरो तणी ताम वागी ॥ गयण गयण खलहल्यां देव दानव मळ्या, आज सयली दृशां आय लागी ॥ जो० ॥ १९ ॥ रथ चढी आवी साहामो अड्यो प्रतिहरि, दोय रिपु सामुहा आवी मलीया ॥ दल वेहु पासे देखे तमासो तिहां, धन्य राणीजाया एह वलीया ॥ जो० ॥ २० ॥ दिव्य हथियार धार्या तदा मेघ जिम, प्रतिहरि घन थकी ताम वुठी ॥ राय परजापति सुत नवल सीजथी, शस्त्र छेदी पडी ते अपूठी ॥ जो० ॥ २१ ॥ चक्र समर्युं तदा राय हयग्रीवजी, समर रे समर जे इष्ट ताहरे ॥ नय दिखाडे किस्यो लोहना खंडनो, चक्र मम मूक वलतुं वकारे ॥ जो० ॥ २२ ॥ मूकीयुं चक्र तेणे मान मनमां धरी, कोपथी हाथ उपरे नचाडी ॥ आवी त्रिपृष्ठनी पास ते पुण्यथी, तिहां रह्युं तुंवथी वक्र ताडी ॥ जो० ॥ २३ ॥ चक्र लेइ करे कहे हयग्रीवने, मान मुक आण जा तुज मूक्यो ॥ ते कहे मरण नलुं वेरी नमवा थकी, नवि नमुं प्रतिहरि एम कूको ॥ जो० ॥ २४ ॥ मूकीयुं चक्र शिर छेदी आव्युं करे, प्रतिहरि नरकनी वाट लीधी ॥ प्रथम हरि एम उद्घोषणा सुर करे, त्रिपृष्ट शिर कुसुमनी वृष्टि कीधी ॥ जो० ॥ २५ ॥ साधीया खंड त्रिहु नरत नूमि तणा, सर्व नर असुरनां वृंद साथे ॥ वाम भुज अमर्युं कोटिशिल उद्धरी, पट्ट अनिषेक कीनो सनाथे ॥ जो० ॥ २६ ॥ राज्य धरा नोगवे पुण्य पसीया थकी, ढाल चोथी कही खंड वीजे ॥ राग आशावरी जाति कडखे सही, राम कहे पुण्यथी को न सीजे ॥ जो० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलन जणी वेताढयनुं, विद्याधरस्वामित्त ॥ आपे अति उलट धरी, त्रिहु खंडे अधिपत्त ॥ १ ॥ अर्ककीर्त्तिने आदरे, ज्योतिर्माला नाम ॥ विद्युत्प्रज जगिनी जणी, परणावी तिण ठाम ॥ २ ॥ अति आडंबरे आवीया, निज नयरी नरसिंह ॥ बेहु बांधव सुख जोगवे, पुण्ये अकल अबीह ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ तावच्चंद्रबलं ततो ग्रहबलं ताराबलं जूबलं, तावद्योगनियोगमंत्रमहिमा तावत्कृतं पौरुषम् ॥ तावत्सिद्ध्यति वांछितार्थमखिलं तावज्ज्ञानःसज्ञानो, यावत्पुण्यमिदं नृणां विजयते पुण्यक्षये क्षीयते ॥ १ ॥ सोल सहसमां मूलगी, स्वयंप्रजा वर नारी ॥ सुख विलसे संसारनां, प्रियशुं रति अनुकार ॥ ४ ॥ हवे पहेला सुरलोकथी, श्रीषेणादिक चार ॥ जिहां आवीने अवतरे, ते दाखुं अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नदी यमुनानुं रे तट रलीयामणुं ॥ ए देशी ॥ चवी सुरलोक थकी श्रीषेणजी रे, जव चोथे अवतार ॥ अर्ककीर्त्ति विद्याधर मंदिरे रे, ज्योतिर्माला रे नारी ॥ १ ॥ सांजलजो जव शांति जिणंदनो रे ॥ ए आंकणी ॥ जवि राखी मन ठाम ॥ गुण गातां सुणतां गिरुआ तणा रे, सीजे वांछित काम ॥ सां० ॥ ॥ २ ॥ दीठो तेजे अमित रवि रातमां रे, सुपने महासुखकार ॥ नव मसवाडे सुत जनम्यो सही रे, प्राची जेम दिनकार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तेजे फलामल तनु देखी करी रे, हरख्यां दंपती दोय ॥ नाम ठवे साजन संतोषीने रे, अमिततेजा गुण जोय ॥ सां० ॥ ४ ॥ सुत हुलरावे मानी हर्षशुं रे, धरती अधिक जगीश ॥ चिरं जीवो मनमोहन माहरा रे, कोमा कोमि वरीस ॥ सां० ॥ ५ ॥ ज्वलनजटी इण अवसरे आदरे रे, अजिनंदन मुनि पास ॥ देशन सुणी मत गुणरयणे जलुं रे, मोमी निबिम जवपाश ॥ सां० ॥ ६ ॥ चलीया थइ मुनि साथे नीसस्या रे, हुं बलिहारी रे तास ॥ वेलवीयो इंद्रजाल समोवडे रे, जेणे जव पुमलवास ॥ सां० ॥ ७ ॥ सत्यजामा तदनंतर उपनी रे, ज्योतिर्मालानी कुख ॥ तारक सुत रयणी सुहणुं सही रे, जागी सा गतदुःख ॥ सां० ॥ ८ ॥ शुन ...ला राणी रयणी समे रे, प्रसवी सुता सुकुमार ॥ नाम सुतारा स्थाप्युं ...हनुं रे, मोहनवेलि रसाल ॥ सां० ॥ ९ ॥ तरुणपणुं पामी सा कुंवरी

रे, योवन रूप सुरंग ॥ मात पिताने वाहाली जीवथी रे, रमे जस अंगे अनंग ॥ सां० ॥ १० ॥ स्वयंप्रजानी कुखे उपन्यो रे, अजिनंदितानो रे जीव ॥ दीठो श्रीअजिषेक ते सुपनमां रे, वाध्यो हर्ष अतीव ॥ सां० ॥ ११ ॥ जन्म्यो हरि उत्सव हर्षे करे रे, नाम श्रीविजयकुमार ॥ विजयजड नामे बीजो हुउं रे, रूपे देवकुमार ॥ सां० ॥ १२ ॥ नारायण मंदिर सिंहनंदिता रे, ज्योतिःप्रजा अजिधान ॥ स्वयंप्रजानी कुखे उपनी रे, पुत्री रूपनिधान ॥ सां० ॥ १३ ॥ अनुक्रमे योवन वय आवी जली रे, ज्योतिःप्रजा रतिरूप ॥ स्वयंवर मांड्यो तेहने कारणे रे, तेडाव्या बहु नृप ॥ सां० ॥ १४ ॥ मंडप रचीया अति महोटे मने रे, अति उंचा रे आकाश ॥ मंडप स्थंज रची मणिपूतली रे, करती नाटक खास ॥ ॥ सां० ॥ १५ ॥ अर्ककीर्त्ति इण अवसर मोकले रे, सचिव नारायण पास ॥ ते कहे स्वामी सुण मुऊ स्वामीनी रे, एक सुंदर अरदास ॥ सां० ॥ १६ ॥ नामे सुतारा मुऊ पुत्री जली रे, आवी योवन वेष ॥ सां० ॥ ते इहां आवे स्वयंवर कारणे रे, जो होवे स्वामी आदेश ॥ सां० ॥ १७ ॥ नारायण कहे इहां आवो सुखे रे, नहीं अंतर अम कोय ॥ वाहाली वेला आवे वालहो रे, तो मन हर्षित होय ॥ सां० ॥ १८ ॥ सचिवे आवी वात सर्वे कही रे, अर्ककीर्त्ति उजमाल ॥ साथे सुतारा लेइ संचरे रे, सुत साथे तत्काल ॥ सां० ॥ १९ ॥ आव्यो पोतनपुर उतावलो रे, हरि दीधुं बहु मान ॥ मंगलशब्द बंदिजन उच्चरे रे, जाट करे रे कल्याण ॥ सां० ॥ २० ॥ मंडप बेठा बहु राजेश्वरा रे, विष्णु अने बलदेव ॥ मंडप आवी बे कुमरी जली रे, जिहां बेठा नरदेव ॥ सां० ॥ २१ ॥ ज्योतिःप्रजाए पूरव नेहथी रे, अमिततेजाने रे कंठ ॥ वरमाला स्थापी वरीयो जलो रे, आणी मन उत्कंठ ॥ सां० ॥ २२ ॥ श्रीविजयकुमर तणे कंठे ठवे रे, कुमरी सुतारा रे माल ॥ उजय संबंध थयो एम जाणीने रे, हरख्यो चित्तमां जूपाल ॥ सां० ॥ २३ ॥ सन्मानी नृप पाछा वालीया रे, निज निज कुमरी विवाह ॥ बेहु राजवीए कीधो रंगशुं रे, खरची द्रव्य उत्साह ॥ सां० ॥ २४ ॥ कुमरी मूकी वधूने तेहने रे, अर्ककीर्त्ति निज धाम ॥ ढाल्यो ढाल थइ ए पांचमी रे, सुख विलसे शुज ठाम ॥ सां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख जोगवतां अनुक्रमे, त्रिपृष्ठ हरि ते पीठ ॥ काल करीने उपन्यो, नरकावास अपइठ ॥ १ ॥ सुख जोगवतां बहु परे, अर्ककीर्त्ति जूपाल ॥ व्रत लीधुं देइ राज्य सुत, मूकी मोहजंजाल ॥ २ ॥ अचल बंधु नेहे घणो, रुदन करे तजी लाज ॥ जाइ अणबोल्या थकी, एम केम सरशे काज ॥ ३ ॥ हसी बोलो मुज बालहा, मूको रीस अलग ॥ निपट निहेजा थायतां, न रहे जेह एकंग ॥ ४ ॥ संस्कार करवा न दे, न मरे मारो वीर ॥ जे कोइ मूर्ठ कहे, तस हणवा धाय धीर ॥ ५ ॥ यडुक्तं ॥ तीर्थंकराणां साम्राज्यं, सपत्नीवैरमेव च ॥ वासुदेवबलस्नेहः, सर्वेज्योऽप्यतिरिच्यते ॥ १ ॥ बंधव हुं कोण आगले, कहीश मननी वात ॥ समजाव्यो समजे नहीं, नेहे रंगी धात ॥ ६ ॥ नेहो कहवि न किज्जइ, अह किज्जइ रयणकंबल सरिछो ॥ अहिएब धोयमाणो, सद्दावरंगं न ठंमेइ ॥ २ ॥ जाण अजाण यइ रह्यो, मोहे घेलुं मन ॥ सही जाशुं बंधव मूर्ठ, ज्यां रे विरखुं तन्न ॥ ७ ॥ प्रेतकार्य करी बंधुनुं, मोहवशे बलदेव ॥ उजगुं मन निज राज्यथी, श्री पुजनी सेव ॥ ८ ॥ श्री श्रेयांस जिनवर तणा, स्वर्णकलश अजिधान ॥ आचारिज मुनि परवस्था, समवसरया उद्यान ॥ ९ ॥ अचल चल्यो बंदण नणी, साथे लइ परिवार ॥ मुनि वंदी देशन सुणे, जेहथी जव निस्तार ॥ १० ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ राग नट ॥ मोह संगते बिगरी हे मति जनकी, स्वर्ग मृत्यु पाताल त्रिहु जगतमें, सयल डुहाइ फरत उनकी ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ दंसणमोह चरण दोय जेदे, स्थिति जारी हे सयल जिनकी ॥ रोकी सजाव विजावमें घेरी, चेतन चाल अनादिनकी ॥ मो० ॥ १ ॥ दोरत दोरत फिरत पवन ज्युं, हाथ न आवी दशा मनकी ॥ विनमें राग विराग तजत हे, आतप गंही ज्युं मास सावनकी ॥ मो० ॥ २ ॥ धन रमणीके विषयसें रातो, जेसें मधुमाती बनकी ॥ मदमातो जीतर ज्यों सूतो, खबर परे नहीं रपतनकी ॥ मो० ॥ ३ ॥ तीन तार गले राग ए नाची, तांबेकी खोटी गई सोननकी ॥ ऊंच नीच पर अंगण एणे, टहील मगाइचे ज्युं धननकी ॥ मो० ॥ ४ ॥ धन्य जिणे मोह महामल्ल जीत्यो, पूरित दशा नाठी ठंगणकी ॥ सो शुद्धातम आतम पदवी, चढीयो श्रेणि सही गुणकी ॥ मो० ॥ ५ ॥ मोह

उन्माद कीपे सो शूरो, एह वाणी गणधर जिनकी ॥ कहे मुनि अचल अचल गुण ध्यावो, तजी चंचलता ए निज मनकी ॥ मो० ॥ ६ ॥ दोहा ॥ ॥ मोह समो वेरी नहीं, काम समुं नहीं दुःख ॥ अनल नहीं कोइ क्रोध सम, ज्ञान समुं नहीं सुख ॥ १ ॥ कहो प्रनु ते मुज बंधवे, कुण गति साधी एण ॥ सत्तम पुढवीए उपन्यो, गुरु कहे कर्म वशेण ॥ २ ॥ विष्णु वीर तुज शी हुइ, गति एहवी गंजीर ॥ अचल विलाप करे घणा, हियडुं न धरे धीर ॥ ३ ॥ कहे गुरु देवाणुप्पिया, न करो खेद लगार ॥ चरम जिनेसर वीर तुज, होशे जरत मजार ॥ ४ ॥ निसुणी आनंद उपन्यो, आवी नयर मजार ॥ राज्य देइ श्रीविजयने, लीधो संयमजार ॥ ॥ ५ ॥ सूधो संयम आदरे, पाले निरतिचार ॥ मोह तजे संवर जजे, पाले शुद्ध आचार ॥ ६ ॥ हवे श्रीविजय नरेश्वरु, पोतनपुरनुं राज ॥ पाले अति रुमी परे, करे धर्मनां काज ॥ ७ ॥ गोयमने जिन वीर पयंपे ॥ ए देशी ॥ एक दिवसे श्रीविजय नरेसर, बेठो पर्षदा पूरी रे ॥ राजकुली उप्रीशे आगल, उजा सवल सनूरी रे ॥ १ ॥ सुण राजेश्वर अरज अमारी ॥ ए आंकणी ॥ आव्यो एक परदेशी रे ॥ नेमित्तिक तुम मलवा हेते, कहे प्रतिहार उदेशी रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हुकम कर्यो आव्यो दरबारे, करमां पुस्तक लेइ रे ॥ जय नृपति नरसिंह सवल दल, बेठो आशीष देइ रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ कहे नृपति मुज आगल जाखे, वात शुजाशुज जाणे रे ॥ कहे नेमित्तिक सवि जाणुं पण, न कहाये इण टाणे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नृप आग्रहथी ते एम जाखे, आजथी सातमे दिवसे रे ॥ पोतनपुरस्वामीने मस्तके, सहसा विद्युत् पमशे रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वज्राहत एम सकल सजा कहे रे, नेमित्तिक हीणा रे ॥ नृपशिर विद्युत् तव तुज शिर शुं, पमशे कर्मविहीणा रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ शो मुज दोष ए ज्ञाने जाखी, वात निर्बल राजननी रे ॥ जो कह्यो ठो तो मुज शिर थाशे, वृष्टि तदा सोवननी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ राजन बोले रे नेमित्तिक, एह सयल किहां शीख्यो रे ॥ ते कहे बलदेव संघाते, श्रीगुरु मुजने दाख्यो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जणयो आगम आम्नाय जली परे, वात सकल तेणे जाणुं रे ॥ थयो पन्निवाइ आव्यो इहां किण, लखीयुं मुज गुणगाणुं रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ पद्मिनी खंडे जनकलसानी, पुत्रीशुं विवाह्यो रे ॥ लेइ दीक्षा मेल्यो तदनंतर, आव्यो इहां उत्साह्यो रे

॥ सु० ॥ १० ॥ योवन रूप रसीली देखी, मुज मन मन्मथ चलीयो
॥ चारित्र चूकी धन कारण हुं, आव्यो कर्म ए वलीयो रे ॥ सु० ॥
११ ॥ सहु मन मानी वात ए साची, हा हा हवे शुं थाशे रे ॥ बुद्धिए बलीया
मंत्री बहु मलीया, आय उपाय विमासे रे ॥ सु० ॥ १२ ॥
एक कहे नृपने राखीजे, यानारूढ ए जलमां रे ॥ यानपात्र भांगे तो
शी गति, तेणे राखीजे स्थलमां रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ बीजो कहे वैताढ्य
गुफामां, पति राखीजे चले रे ॥ त्रीजो कहे साचुं पण हुं तुम, नवि
अनुमोदुं मतने ॥ सु० ॥ १४ ॥ जे कीजे शुभ हेते कारज, ते होये
कष्टनुं हेतु रे ॥ द्विजसुतनो संबंध कहुं इहां, सुणजो तुमे एक चित्ते रे ॥ सु०
॥ १५ ॥ द्विजसंबंध कहेशे मंत्री, न टले भावी भाव रे ॥ बीजे खंडे
ढाल ए छठी, राम कहे अभिराम रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जोरावर भवितव्यता, जोर न चाले कोय ॥ चलीयो इहां कणे को
नहीं, हृदय विमासी जोय ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोइ भलो राह बतावे रे ॥ ए देशी ॥ विजयपुरे नयरे एक निवसे,
ब्राह्मण इंद्रसोम नामे हो ॥ ज्वलनशिखा तस घरणी तरुणी, दंपति
दोय रति कामे हो ॥ १ ॥ कोइ नियति तणी गति न्यारी हो, नियति
करे ते कोइ न करे, सुणो भाइ हृदय विचारी हो ॥ ए आंकणी ॥
भूशिख नामे नंदन तेहनो, कर्यो महोटो उछेरी हो ॥ जनक गयो
परलोके तेहवे, कर्मनी रीति अनेरी हो ॥ को० ॥ २ ॥ तेणे नयरे
एक राक्षस आव्यो, करे मानवसंहार हो ॥ नित्य प्रत्ये एक माणस संकल्पी,
कर्यो तेहनो उपचार हो ॥ को० ॥ ३ ॥ राजहुकम तिण राक्षसे मान्यो,
सघले वात सुणावी हो ॥ नाम लखी बहु गोला भरीया, नित्य
प्रत्ये एक चढावी हो ॥ को० ॥ ४ ॥ एक दिन ते द्विजसुतने वारे,
जननी रोवा लागी हो ॥ एक आधार ए दैव न सांस्यो, कोण करमगति
जागी हो ॥ को० ॥ ५ ॥ आसनगृहस्थित भूतने करुणा, आवी कहे
निर्धारी हो ॥ रे अशरण अबला मत रोवे, लेशुं अमे उगारी हो ॥
को० ॥ ६ ॥ द्विजसुत राजसेवक जइ दोयो, राक्षस आगल लेइ हो ॥

अपहरीयो सांकेतिक अमरे, गयो निज मातने देइ हो ॥ को० ॥ ७ ॥ राक्षसजयथी गिरिनी गुफामां, द्वार शिला देइ आमी हो ॥ मूके सुतने तेह विलुद्धी, यत्न करीने मामी हो ॥ को० ॥ ८॥ ते द्विजसुतने राते गलीयो, जमते अजगरे जारी हो ॥ निसुणो जाइ कर्म कमाइ, शुं करे नर ने नारी हो ॥ को० ॥ ए॥ यडुक्तं ॥ उदयति० ॥ १ ॥ प्राप्तव्यो नियतिबला- श्रयेण योऽर्थः ॥ २ ॥ ए उपनय दाख्यो मंत्रीश्वर,त्रीजे नियति अनुसारी हो ॥ रामविजय कहे सुणो नवि प्राणी, जुओ तमे युक्ति विचारी हो ॥ को० ॥ १० ॥ दोहा ॥ चोथो चतुर कहे वली, जे बोलुं ते साच ॥ पण पोतनपुरईश्वरे, ए नैमित्तिक वाच ॥ १ ॥ कीजे पोतनपति अवर, तस शिर विद्युत्पात ॥ पछे स्वामी उगरे, मानी सघले वात ॥ २ ॥ नैमित्तिक कहे ए निपुण, मंत्रीश्वर शिरताज ॥ निज पति राखेवा सबल, वात बतावी आज ॥ ३ ॥ हुं पण ए कहेवा भणी, आव्यो डुं इण ठाम ॥ सात दिवस लगे नियम युत, स्वामी रहो निज धाम ॥ ४ ॥ रहो रहो रे जादव रीति नथी ॥ ए देशी ॥ कहे राजेश्वर सुणो मंत्रीश्वर, एह वात केम कीजे रे ॥ पर प्राणे निज प्राण उगारे, तेहने अधम कहीजे रे ॥ क० ॥ १ ॥ मर नामे दुःख पामे मानव, किम जाणी तस हणीये रे ॥ तेहथी आप हणायो वारु, पर भवे भय नवि गणीये रे ॥ क० ॥ २ ॥ यडुक्तं वसुदेवहिंडे ॥ हन्तूण परप्पाणे, अप्पाणं जो करेइ सप्पाणं ॥ अप्पाणं दिवसाणं, कएण णासेइ अप्पाणं ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ सकल धर्ममां प्रथम अहिंसा, भाखी जिनवरग्रंथे रे ॥ दुहवे आप न परने दुहवे, ते मुनि मूवे पंथे रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तथाचोक्तं ॥ हिंसा लाग्या नरकदवी सलमानापर्णाय, हेयं स्तेयं सुरतविरतिः सर्वसंगान्निवृत्तिः ॥ जैनो धर्मो यदि न रुचितः, पापपंकायनेऽन्यस्तेभ्यः सर्वेऽङ्गिति निवृत्तिः सर्वदा सर्वयैव ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ शुं ए प्राण सदा स्थिर रहेशे, आखर एक दिन मरवुं रे ॥ पर हणीये निज प्राणने माटे, स्या उपर ए करवुं रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जीव एक उगारी निण विणु, पडह अमारी वजाव्यो रे ॥ हिंसक जे जगमां अवतरीया, तेणे निज वंश लजाव्यो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ जेह न दृष्टि विना मुख धन विणु, नारी विणु गृह जेम रे ॥ विप्र वेद विद्या विणु बरयान, विणु विद्या बली तेम रे ॥ क० ॥ ६ ॥ शूर शस्त्र

विणु नारी पति विण, जेम जग शोन न पावे रे ॥ तेम मंत्रीश्वर धर्म नृप
विण, कोइ काम न आवे रे ॥ क० ॥ ७ ॥ पुनरपि मंत्री मली मन चिंते,
एहमां नहीं कांइ काचुं रे ॥ तेह मांहे एक बोल्यो चातुर, कहुं तुमने हुं साचुं
रे ॥ क० ॥ ८ ॥ यक्षपमिमा अजिषेक करीजे, काष्ठमयी एक आणी
रे ॥ दैवत अनुजावे नवि पमशे, तिहां विद्युत् एम जाणी रे ॥ क० ॥
ए ॥ जो पमशे तो नवीन बनावी, थापीशुं तिण ठामे रे ॥ सुरप समान
नृपने राखेवा, ते तिम कीधुं काम रे ॥ क० ॥ १० ॥ नृप पौषध धरी
श्रीजिनमंदिर, बेठो ध्याने लीणो रे ॥ पंच परमेश्वर चिंतन करतां, नहीं
मन खेद अदीणो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ सिंहासन यक्षपमिमा स्थापी, सेव
करे सहु खांते रे ॥ सातमे दिवसे गगनघन उमट्यो, हुई तिम चपला पाते
रे ॥ क० ॥ १२ ॥ त्रिणठी यक्षपडिमा नृप कुशलो, रह्यो सहु जन मन
हरख्यो रे ॥ जय जयकार थयो ते पुरमां, गणक खरो एम परख्यो रे ॥ क०
॥ १३ ॥ पौषध पारी नृप घर आव्यो, नैमित्तिक सत्कार्यो रे ॥ दृष्टि थइ
तस शिर सोवननी, वस्त्राजरणे जार्यो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ विघन टल्युं नृपनुं
अति सबलुं, सातमी ढाल ए गाइ रे ॥ बीजे खंडे रामविजय कहे, अविचल
पुण्य सखाइ रे ॥ क० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज पुरमां उत्सव हुवा, घर घर मंगलमाल ॥ पूजा रचावे जिनघरे, सत्तर
नेदी सुविचार ॥ १ ॥ दिन दोहेला उद्धरे, धन खरचे लख कोमि ॥ पमह
अमारी तणा वली, वजमावे मन कोडे ॥ २ ॥ नगर मांहे सहुको सुखी, नहीं
डुःखीनुं नाम ॥ अमिततेज इण अवसरे, आव्यो तेणे ठाम ॥ ३ ॥ जगिनीने
मलवा जणी, देखी उत्सव एह ॥ पूछे ए कारण कवण, रूपें तणुं ससनेह
॥ ४ ॥ जगिनी मुख सवि सांजली, सजा मांहे नूपाल ॥ बेहु राजेश्वर
मल्या, फली मनोरथमाल ॥ ५ ॥ अमिततेज दैवज्ञने, आपे बहु धन
सार ॥ पंच दिवस रही आवीया, फरी निज नयर मकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामचरणी कांइ आणी रे ॥ ए देशी ॥ एक दिवस श्रीविजय नरेसर,
वन जोवा नीसरीयो रे ॥ मृगनयणी रमणी संघाते, साथ सबल परवरीयो रे
॥ १ ॥ बाहाली मोह तणी ए लीला रे, जाण अजाण बहुने विलसे, दंपती

होय रसीलां रे ॥ वा० ॥ ए आंकणी ॥ क्रीमा करतां वन संचरतां, नाह रमणी मही हाथे रे॥ रतिकारक रसमेल वनावे, मन्मथ वेहुने साथे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ इण अवसरे कंचनमृग देखी, मनहरणी एम बोले रे ॥ प्राणजीवन मुज लागे प्यारो, ए मृग अमृत तोले रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ आणी आपो मुजने प्रीतम, ए मन रमण कुरंगे रे ॥ नेह नर्यो नृप केडे उजाणो, रंज्यो राणी रंगे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जिम जिम नृप केडे उजाये, तिम तिम दोमी जाये रे ॥ नृप नारी मूकीने अलगो, पहोतो श्वास नराय रे॥वा०॥५॥ प्राणप्रिया कर्कोट अहि रुसी, गाढ स्वरे पोकारी रे॥ प्राण- जीवनजी वहेला आवो, स्यो मुजने उगारी रे ॥ ६ ॥ स्वामी वाहार करो निननानी रे ॥ ए आंकणी ॥ शी वालेसर विलंबनी वेला, कां वहेला नर्थी वलना रे ॥ आवो उजाइने अलवेसर, जो गे मनना मलता रे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ गो अंतरजामी आतमना, तो शुं घणुं कहेवाणो रे ॥ करी उपाय कमलदल नयणा, मरती मुज जीवाडो रे ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी विनतानो आव्यो, दोमी अवला पासे रे॥ खमा खमा तुजने एम नाखे, राय नराणो श्वासे रे ॥ स्वा० ॥ ए ॥ क्षण एकमां अवला मूर्छाणी, नृप उत्संगे लीधी रे ॥ नयण निमिल्य रही जव युवती, तव नृपे हा हा कीधी रे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ मूर्छागत थइ धरणे ढलीयो, मोह महा रिपु उल्लीयो रे ॥ नृप चेतन पाम्यो वहु कष्टे, प्रेम पयोधि उल्लीयो रे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ महारे तो तूजी नहीं वल्लन, वाहाली सुतारा राणी रे॥ तुज परखा पूठे में वीजी, नारी न कोइ दिल आणी रे॥ स्वा०॥ १२॥ हे मानिनि एम मान न कीजे, बोल हसीने दीजे रे ॥ विण वांके केम ख्याखो कीजे, तुज विरहे तन त्रीजे रे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ हे गुणवंती हसी बोलंती, गुप्त अर्णीयाले नयणे रे॥ मुज सामुं निरखो घणे हेजे, शुं नाखुं वहु वयणे रे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ विरहव्यथा जगमां अति विरुइ, प्रीतिनी रीति कटारी रे॥ वाहिर शीतल अंतर उनी, प्रीति अगिनगति न्यारी रे ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ राय विमासे ए जीवयाथी, मरण नयुं ए साथे रे ॥ ए मूके पण हुं नवि मूकुं, कोल दीयो में हाथे रे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ राय रखावी चिता अति महोटी, तिण अवसरे तिहां आय रे ॥ ननमारग खेचर दोय दोम्या, जिहां पोतनपुरराय रे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ शुं मोझो

मायाने रूपे, जल मंत्री तेणे छांटी रे ॥ घर घर भृजंनी तिण वेला, माया सुतारा नाठी रे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ राय कहे ए शुं मुज जाखो, चिरं जीवो अम स्वामी रे ॥ कर जोमी कहे खेचर वखतुं, निसुणो अंतरजामी रे ॥ स्वा० ॥ १ए ॥ अमिततेजनो ठों नैमित्तिक, संभिन्नश्रोत्र उत्कर्ष रे ॥ सुतशुं ज्योतिर्वनमां रमवा, चाल्या वेहु अमे हर्ष रे ॥ स्वा० ॥ २० ॥ मारग मांहे सुतारा दीठी, आठमी ढाल एम जाखी रे ॥ बीजे खंमे राम-विजय कहे, नृप सुणो धीर मन राखी रे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चमरचंचा नयरी तणो, अशनिघोष उद्दंठ ॥ तेणे सुतारा अपहरी, त्रही जातां अमे दीठ ॥ १ ॥ आमा आवो वालहा, वालेसर वलवंत ॥ महेलावी मुजने करो, नाथ सनाथ महंत ॥ २ ॥ अमिततेज बंधव हुतो, जननीजाया धीर ॥ वाहार करो बहेनी तणी, गिरुआ साहस धीर ॥ ३ ॥ इस्यां वयण सुणी तेहनां, लही सुतारा तेह ॥ दोमी जइ रोक्यो अमे, बलीयो हुतो जेह ॥ ४ ॥ रे पापी अम स्वामिनी, बहेन सुतारा लेइ ॥ केम जाइश हवे जीवतो, मेल के युद्ध करेइ ॥ ५ ॥ कह्युं सुताराए तदा, अलं प्रयासे पंथि ॥ वेताली मोहित पियु, समजावो जइ तेथ ॥ ६ ॥ अमे आव्या उतावला, तुम्ह राखवा काज ॥ नाठी सुतारा रूपिणी, वेताली महाराज ॥ ७ ॥ चिंता मत करशो मने, करशुं चिंतित काज ॥ आवो अम स्वामी नगर, वधशे तुम्हारी लाज ॥ ८ ॥ खबर कहावी मातने, नृप चाल्यो ते साथ ॥ रथनूपुर पुर आवीयो, श्री विजयो नरनाथ ॥ ए ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ बाबा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥ अमिततेज उठ्यो गुणवंत, देखी श्रीविजयाजिध संत ॥ १ ॥ जोजो सज्जन मल्या, आज मनोरथ सफल फल्या ॥ ए आंकणी ॥ पूछ्युं केम चिंतातुर आज, परकाशो मुजने महाराज ॥ जो० ॥ २ ॥ जाख्यो तिणे सघलो अवदात, अमिततेज कोप्यो सुणी वात ॥ जो० ॥ ३ ॥ जेणे कीधुं ए काम कुचेत्र, पाधरो नेत्र करुं रणक्षेत्र ॥ जो० ॥ ४ ॥ मनमां धाप्यो अमरपपूर, अशनिघोष नाखुं चकचूर ॥ जो० ॥ ५ ॥ मोकलीयो शिखवी एक दूत, चमरचंचा पहोतो थइ नूत ॥

जो० ॥ ६ ॥ रे कीधुं तें निर्लज अकाज, परनारी लेइ आव्यो आज ॥ जो० ॥ ७ ॥ परशय्या परदार परान्न, परमंदिर परवसन निदान ॥ जो० ॥ ८ ॥ मूरख हृदय विमासी जोय, ए पांचे आपणां नवि होय ॥ जो० ॥ ए ॥ पररमणी नवि निरखे उंच, तो तेहने मुख शोजे मूछ ॥ जो० ॥ १० ॥ तुऊ सरिखा जे जगमां तुछ, ते तिर्यंच विण शिंग ने पुछ ॥ जो० ॥ ११ ॥ परनारी लावंतां तुऊ, मति सघली तारी गइ मुंऊ ॥ जो० ॥ १२ ॥ पण तारो इहां नहीं वंक, मल्यो नथी कोइ सबल निवंक ॥ जो० ॥ १३ ॥ पण जाणुं तुं सुण जूपाल, आव्यो ठे तुऊ फीटण काल ॥ जो० ॥ १४ ॥ पण मुऊ स्वामी ठे वमनाग्य, आप सुतारा पाये लाग ॥ जो० ॥ १५ ॥ अशनिघोष कोप्यो अति जोर, दूत प्रत्ये कहे वयण कठोर ॥ जो० ॥ १६ ॥ लाव्यो सुतारा नुज बलयोग, रयण नहीं ए रंकने जोग्य ॥ जो० ॥ १७ ॥ शय्या वसन अने तांबूल, नारी शस्त्र रयण बहुमूल ॥ जो० ॥ १८ ॥ जोगवे जगमां वीर जे होय, मूरख हृदय विमासी जोय ॥ जो० ॥ १ए ॥ ॥ मुऊ पासेथी नारी आश, करतो लेहशे अंते विनाश ॥ जो० ॥ २० ॥ रहे वेगो मन राखी गम, कहेजे दूत न पावे दाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ तुऊने शुं मारुं कंगाल, जेम आव्यो तेम वहेलो चाल ॥ जो० ॥ २२ ॥ वल्यो दूत थइ नैरव रूप, पति आगे कहे वात स्वरूप ॥ जो० ॥ २३ ॥ बीजे खंडे नवमी ढाल, पूर्व वैर तणो जुर्ड ढाल ॥ जो० ॥ २४ ॥ श्री सुमति सुगुरुनो कहे कवि राम, जगमां वैर न कीजे श्याम ॥ जो० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥२६ए॥ श्लोक तथा गाथा ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी वैरी तणां, सबल सजाइ कीध ॥ विकट कटक नट मेलीश, जोर नगारे दीध ॥ १ ॥ बहु राजेश्वर संचस्या, घर घरके दरबार ॥ कंत सुताराना हुर्ड, तरत तिहां असवार ॥ २ ॥ तुरत जाइ पहोंचो तुने, घमरचंचा स्यो वेरी ॥ सबल विद्याधर सैन्यशुं, करो अरिने केर ॥ ३ ॥ अमिट पुत्रशुं माघवा, जाउं हिमगिरि आज ॥ परविद्या उन्नेदिनी, महाज्वाला महाराज ॥ ४ ॥ शीघ्र आवी मलशुं अमो, अने सबल सुत साथ ॥ जानुकने कहे नारदी, सिद्ध करी नूनाथ ॥ ५ ॥ पिता पुत्र हिमगिरि जइ, साधे विद्या सार ॥ इहं श्रीविजय नरेंद्रजी, चढीया बहु परिवार ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥ राणीना जाया रे, चढी चपल उजाया रे, दलपूरे सिधाया, आया चोंपशुं रे ॥ १ ॥ गयण गाजे रे, निशाण अवाजे रे, घन फोज विराजे, उंची उमती रे ॥ २ ॥ नगरी ते घेरी रे, रणभेरी नफेरी रे, सिंधूके स्वर रुके, जागे शूरिमा रे ॥ ३ ॥ रिपु आयो जाणी रे, मूके सुत वाणी रे, देइ ठोर निशाणे, ते चढीया घणा रे ॥ ४ ॥ बल शूरमां चढीया रे, आवी तिहां अभीया रे, दलपूर संघाते, आथमीया तहा रे ॥ ५ ॥ अशनिघोष केरा रे, सुत सबल भलेरा रे, एक एकपे शूरा, आव्या सामुहा रे ॥ ६ ॥ सुत अमिततेजाना रे, अति सबल युवाना, आगल ते हुवा रे ॥ ७ ॥ भररोष भराणा रे, नहीं जगमां छाना रे, लही स्वामी आणा रे, आवी साहामा मंमाणा, युद्धने कारणे रे ॥ ८ ॥ रण लाग्यो मातो रे, भट रीसे रातो रे, एक मास उजातो, तिहां जाणयो नहीं रे ॥ ए ॥ नवि कोइ हारे रे, वच्चे कोइ न वारे रे, एम हुउं संहार, बहु सुभटा तणो रे ॥ १० ॥ वेरीसुत नाठा रे, कर देखी काठा रे, आव्या तेह शाठ, अशनिघोष आगले रे ॥ ११ ॥ दल देखी भाग्यो रे, झगमो बहु लाग्यो रे, आव्यो आपशुं आघो, रण मेदानमां रे ॥ १२ ॥ मातुं दल जोइ रे, नाठा सहु कोइ रे, सुत अमिततेजाना, पाठा उसख्या रे ॥ १३ ॥ श्रीविजय सबाइ रे, आव्यो तव धाइ रे, मांहो मांहे लागी लमाइ, घणी वेहुने रे ॥ १४ ॥ लइ खड्गने धायो रे, श्रीविजय उमाह्यो रे, रिपुशिर दीयो घायो, ते वेरी दोय हुवा रे ॥ १५ ॥ दोय छेदे विशेषे रे, तव चारज देखे रे, एम वाधे अशेखे, वेरी वांकमो रे ॥ १६ ॥ नृप चित्त विमासे रे, केम ए जीताशे रे, ए तो सबल तमासे, वात आवी पमी रे ॥ १७ ॥ शोचे एम जाम रे, अमित-तेज ताम रे, सिद्ध विद्याए आव्यो, काम सवे सख्युं रे ॥ १८ ॥ तस माया निवारी रे, बल देखी भारी रे, न रही असवारी, भनी रिपु तणी रे ॥ १ए ॥ रिपु केडे उजाणी रे, विद्या सपराणी रे, तुमने देउं आणी, ए पापी जुउं रे ॥ २० ॥ थइ विद्या केमे रे, जाणयुं ठाम ए फेमे रे, न रह्यो तेह नेमे, उजाणो घणुं रे ॥ २१ ॥ पासे जिनभुवने रे, बल केवली चरणे रे, पेठो जइ शरणे, ते उतावलो रे ॥ २२ ॥ देवी वली आवी रे, कह्युं ते सम-तावी रे, एम आण मनावी, बेहु वली ए मल्या रे ॥ २३ ॥ पुण्ये जय पायो

रे, खरू बीजे गायो रे, ढाल दशमी त्रिपृष्ठनो जायो, तिहां जीतीयो रे ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमिततेज मारीचने, कहे एणी परे जाप ॥ नगर मांहे जाउं तुमे, वहेन सुतारा पास ॥ १ ॥ तेडी लावो अम कने, अचल मुनिनी पास ॥ जीतनगारां देइ वल्यो, जावुक सहित उल्लास ॥ २ ॥ नगरीमें वलजद्र मुनि, पासे आव्या जूप ॥ प्रथम गया जिनदेहरे, निरखे देव सरूप ॥ ३ ॥ निराकार जिनरूपनी, स्तवना करे अनूप ॥ जय युगादि जिनवर विजो, जय जय अकल अरूप ॥ ४ ॥ नमी स्तवी जिनराजने, आवे सद्गुरु संग ॥ मुनि देखी मन उपन्यो, सवल धर्मनो रंग ॥ ५ ॥ गुरु वंदे गुरुजक्तिशुं, गिरुआ ते गुणवंत ॥ मुनिवर देखीने थया, तेहनां शीतल मन्न ॥ ६ ॥ शील अखंमित ते सती, नारी सुतारा ठाम ॥ पूंठल आवी पद्मिनी, निरुपम गुणनुं धाम ॥ ७ ॥ ते निरखी हर्षित हुआ, पति बांधव बेहु प्रेम ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, जिनगुरुदर्शने केम ॥ ८ ॥ दीये देशन मुनिवर हवे, नविक जीव हितकाज ॥ नवदव ताप शमाववा, जिम पुष्कर घनगाज ॥ ए ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ विमल केवली एक रे ॥ ए देशी ॥ केवली अचल मुणींद, कहे नवियण सुणो ॥ निज आतम निर्मल करो ए ॥ १ ॥ काढो मेल अनादि, मांहे जे जस्यो ॥ नव अनंत नेलो कस्यो ए ॥ २ ॥ नमो आवरणी जीव, नव चोगानमां ॥ भ्रांति विविध भ्रमजूलमां ए ॥ ३ ॥ जाणे सार असार, अस्थिरने घर कहे ॥ एम विपर्ययमां पड्यो ए ॥ ४ ॥ पीडे दोय विकल्प, राग ने द्वेष ए ॥ अरति वधारण आकला ए ॥ ५ ॥ महोटा ए परमाद, आव मांहे कह्या ॥ कथला जग एहना घणा ए ॥ ६ ॥ कुण पावत जग दुःख, न हुतो कुण सुखी ॥ जो जग ए नरूता नहीं ए ॥ ७ ॥ एक पेटमां दोय, दोय वली अन्यमां ॥ चार थाये वली चोगुणा ए ॥ ८ ॥ एहनो बहु विस्तार बांधे नव घणो ॥ धन्य वलीया जिणे वश कस्या ए ॥ ए ॥ कोटि कटक नट जीते, रणमां एकलो ॥ पण दोय जीते ते नलो ए ॥ १० ॥ ए जीत्ये सवि जीत्या, वाजी जीवनी ॥ एम अनंतनाणी कह्युं ए ॥ ११ ॥ अशनिघोष जूपाल, सुणी मन समजीयो ॥ धिक् में कुल मेलुं कह्युं ए॥

१२ ॥ न कर्युं आतमकाज, गुण गलीया सवे ॥ चलीया पण मुजमां किस्युं
ए ॥ १३ ॥ गुरुसाखे अपराध, रे खामे तेहने ॥ रोप रखे मन राखता ए
॥ १४ ॥ केवल लोकालोक, जासक प्रनु कह्यो ॥ राग केम ए उपरे ए
॥ १५ ॥ नहीं मुज पापनी बुद्धि रे, महेली मायिकने ॥ एहने में महीं आणीने
ए ॥ १६ ॥ कहेशे नाणी वात रे, ढाल अग्यारमी ॥ बीजे खंडे ए हुइ ए ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नपुरे पूरव नवे, गुरु कहे ए श्रीषेण ॥ अमिततेज नृपति हतो, घलीयो नाग्यवशेण ॥ १ ॥ कपिल नाम द्विज तुं हुर्ठ, सत्यनामा तुज नारी ॥ नवजोगे इहां अवतरी, सती सुतारा सार ॥ २ ॥ कपिल जीव बहु नव नमी, कोइक नव अज्ञान ॥ तप करीने इहां अवतर्यो, अशनिघोष राजान ॥ ३ ॥ पूरव नव संबंधथी, राग विना हरी एह ॥ गतरागी पूरव नवे, तेणे तुं मंदसनेह ॥ ४ ॥ अमिततेज निज नव चरित, निसुणी कहे मन कोड ॥ धन्य ज्ञानी तुम ज्ञानने, प्रणमुं बे कर जोडी ॥ ५ ॥ के हुं नव्य अनव्य हुं, नाखो मुज मुनिराज ॥ नवसायरमां तुं मल्यो, तारण तरण जहाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ ताहारो शहेर नलो योधाणो ॥ राजा जी ॥ ए देशी ॥ नाखे अचल मुनीश्वर वाण ॥ राजा जी ॥ नाग्य महोटानो तुं धणी जी ॥ इहांथी नव नवमे गुणखाणी ॥ रा० ॥ होशो जिनेश्वर बहु गुणी जी ॥ १ ॥ नव एके पंचम चक्री ॥ रा० ॥ सोलमो जिनवर वली जी ॥ २ ॥ तिहां श्रीविजयाजिध नृप ॥ रा० ॥ पहेलो सुत मन रली जी ॥ २ ॥ करी घाती कर्मनो अंत ॥ रा० ॥ थाशो तुमे तिहां केवली जी ॥ गुण गाशे तुज धरी रंग ॥ रा० ॥ समवसरण सुर नर मली जी ॥ ३ ॥ एम निसुणी ज्ञानीनी पास ॥ रा० ॥ दिल उल्लस्युं उलट घणे जी ॥ महीं श्रावकव्रत मन शुद्ध ॥ नाणी जी ॥ जइचे तुमारे नामणे जी ॥ ४ ॥ कहे अशनिघोष मुनिराज ॥ ना० ॥ तारो हो मुज करुणा करी जी ॥ हुं तो आव्यो नवमां जोर ॥ ना० ॥ चउगतिमां फेरा फरी जी ॥ ५ ॥ तुमो जाणो सघली वात ॥ ना० ॥ जेतुम आगल दाखवुं जी ॥ ते तो मातनी आगल आवी ॥ ॥ ना० ॥ जेम मोशालनुं नाखवुं जी ॥ ६ ॥ हवे आव्यो तुमारी पास ॥

स्वामी जी ॥ आश धरी हियमे घणी जी ॥ मुफ तारशो ए विश्वास ॥ ना० ॥ क्षायिक समकितना धणी जी ॥ ७ ॥ कहे केवली जेम मन गम ॥ ना० ॥ तेम कीजे निश्चल थइ जी ॥ सोंपी सुतने निज साम्राज्य ॥ ना० ॥ अशनिघोषे दीक्षा ग्रही जी ॥ ८ ॥ वली स्वयंप्रजा बहु नारी संघात, चरण ग्रहे केवली कने जी ॥ पाले पावन पंचाचार ॥ मुनि जी ॥ चरण करण गुणे एकमने जी ॥ ए ॥ हवे वांदी नृप दोय विशेपे, निज निज नयरे आवीया जी ॥ करे देवपूजा गुरुजक्ति सुवेपे, सहु जन मनमां जावीया जी ॥ १० ॥ दीये दीन दुःखीने दान अलेखे, जक्ति करे जिनमंदिरे जी ॥ पाले श्रावकनो आचार अशेपे, सुख विलसे वरमंदिरे जी ॥ ११ ॥ एक दिवस अमिततेज राय ॥ राजा जी ॥ उज्ज्वल एक जिनगृह करे जी ॥ मांहे स्थाप्या आदि जिणंद, ते दीठे चित्तडुं ठरे जी ॥ १२ ॥ नित्य जक्ति करे प्रजात ॥ रा० ॥ अष्टप्रकारी उज्ज्वल मने जी ॥ कहे चैत्यवंदन कर जोमी ॥ रा० ॥ जाव जले उल्लसित मने जी ॥ १३ ॥ अथ चैत्यवंदन ॥ ठप्पय ॥ जय सामी निज देव, जय अतिशय गुणधारी ॥ जय पारंगत परम रूप, अविचल अविकारी ॥ जय अध्यातम जावधर्म, अकलंक अमायी ॥ ज्ञानकला पूरण धणी, प्रजुताइ पाइ ॥ परमातम प्रेमे नमुं ए, प्रह उगमते सूर ॥ अमिततेज प्रजुध्यानथी, दिन दिन चढते नूर ॥ १ ॥ सिद्ध निरंजन नाथ नाम, धाता पुरुपोत्तम ॥ बुध अलख शंकर सदा, पर ब्रह्मा सत्तम ॥ चिदानंद चेतन कहो, वली आदि अनादि ॥ अव्यय अक्षय ने अरुज, प्रजु पूर्णानंदी ॥ एम अनेक नामे करी ए, तुम ध्यातां कल्याण ॥ राम कहे सुरधेनुथी, अधिक तुम्हारी आण ॥ २ ॥ अथ स्तवन ॥ राग केदारो ॥ आवो मुज मन धाम जिन जी ॥ आ० ॥ जेदथी एम रह्या अलगा, केम सरे अम काम ॥ जि० ॥ आ० ॥ १ ॥ सम अमारा तुमे न मानो, हाथ न जालो दाम ॥ नेह नजरे न कोइ निरखो, वीतराग तुम नाम ॥ जि० ॥ आ० ॥ २ ॥ हुं सरागी राग तोरे, मोहीयो गुणग्राम ॥ कोइ हरि हर वंज माने, कोइने मन राम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ३ ॥ तुंही तुंही तुंही तुंही, जाप जपतां आम ॥ केइ शुज रागे तस्या एम, कहुं केता स्वामी ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ लहे सरागी जावथी, वीतरागता परिणाम ॥ तेहने शी खोट जस शिर, तुंही आतमराम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ एम स्तवतां केते काल ॥ मुनि जी ॥

नजमारग दोय आवीया जी ॥ जाणी उतरीया जिनचैत्य ॥ मु० ॥ प्रभु
स्तवना करी जावीया जी ॥ १४ ॥ आवी वंदे अमिततेज राय ॥ नगीनो।
कहे स्वामी देशना दीयो जी ॥ बीजे बारमी ढाले श्री सुमति कविनो, राम
कहे ए रस पीयो जी ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४७ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर जाणी योग्यता, परकाशे निज धर्म ॥ वस्तु विनाशातीत
जे, क्लेश रहित आतम ॥ १ ॥ सामग्री लइ दोहिली, मत बांधो अंत-
राय ॥ एह निरंतर आदरे, चिदानंद सुख थाय ॥ २ ॥ मन कुविकल्पे जे
करे, सांतराय सुख तास ॥ जिम मत्स्योदरने थयो, अंतर सहित विलास
॥ ३ ॥ अमिततेज कहे कुण हिवो, मत्स्योदर हुउ तेह ॥ कृपा करीने
दाखवो, तस प्रबंध गुणगेह ॥ ४ ॥ मुनिवर जाखे तेहनो, सरस संबंध
रसाल ॥ निसुणो नवि जावे करी, धर्म उपर ए ढाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ प्रभुजी प्रसन्न होजो ॥ ए देशी ॥ क्षेत्र नरत अमरावती सरिखो,
नयर कनकपुर निरखो हो ॥ जाखे सद्गुरु वाणी, मीठी अमीय समाणी,
गरुआ गुणमणि खाणी, निसुणो चित्त हित आणी ॥ नविका धर्म करे
जो ॥ १ ॥ नामे कनकधर तिहां महाराजा, सबल प्रतापे ताजा हो ॥
घरणी तस गुणरंजा, दीठे होय अचंजा, कनकश्री गतदंजा, देवने ते
डुसंजा ॥ रमणी पुण्ये लही जो ॥ २ ॥ शेठ रतनसार नामे सोजागी,
तिहां निवसे वडजागी हो ॥ व्यवहारी गुणवंतो, पोढो पुण्यपनोतो, राज-
डुवारे समोतो, धर्म उपर दृढचेतो ॥ बारु सुख विलसे जो ॥ ३ ॥ रत्नचूला
रमणीनो जायो, कुंवर कुलमां सवायो हो ॥ नामे धनद कहायो, कुल-
दीपक कुल आयो, सहु साजन मन जायो, रूपे मयण हरायो ॥ बारु तनय
थठे जो ॥ ४ ॥ सिंहल नामे कितव एक महोटो, तिहां निवसे दिल खोटो
हो ॥ जूआरी शिरदार, सेवे ते अनाचार, एक दिन हार्यो गमार, आव्यो
देवी डुवार ॥ जाखे रीस धरी जो ॥ ५ ॥ रहुं तुक देवकुले हुं देवी, कां
पन नापे तुं सेवी हो ॥ वहेली प्रगट थइने, आपे धन मुक वहीने, नही-
तर गाल देइने, जाशुं इहांथी लेइने ॥ वचतुं देवी कहे जो ॥ ६ ॥ शुं ताहरे
पापे मुक आव्युं, के शुं तें मूइ मांहे थाप्युं हो ॥ आव्यो ठे रखवाल-

नो, पाठो जा वलवलतो, कोपे ते कलकलतो, पत्थर लेइ उछलतो ॥ देवी एम बोले जो ॥ ७ ॥ मूकी दीयो ए वयणना चटका, न करावो मूर्त्ति शत कटका हो ॥ देवी जाणो ए मागो, दीसे हियमानो कागो, जांजे मूर्त्ति बांगो, कांइक देइने टांटो ॥ देवी जीति लहे जो ॥ ८ ॥ आप्यो रे एक कागलीयानो कटको, बोल्यो कितव अमिनो चटको हो ॥ रे रे शुं करुं रंक, इण पत्रने गंक, देवी कहे सुण लंठ, एहथी होशे घमंक ॥ सांजल वात कहुं जो ॥ ९ ॥ देजो गाथा तेहने सार, आपे जे सहस दीनार हो ॥ निसुणी हियमामां हरख्यो, कागल रयण ज्युं परख्यो, आव्यो चहुटे उलक्यों, कौतुक जोवाने सरिखो ॥ जाले गाथा ए लेजो ॥ १० ॥ लोक कहे शुं गाथानुं मूल, कहे सहस दीनार अमूल हो ॥ सांजली मुह मचकोमे, वलतुं मांडुं न जोमे, कुण करे एहनी होम, धूर्तने शिर मोम ॥ कोइ मुह न मांडे जो ॥ ११ ॥ जमीयो पुर मांहे आखो दहाको, लोक कहे ए पवाडो हो ॥ सहीज सांजनी वेला, कुमर धनद अलवेला, ते वेहु थया जेला, पूछे वात सहेला ॥ कारण ए शुं छे जो ॥ १२ ॥ गाथा एहे वांची धनद कुमार, करे चित्त मांहे विचार हो ॥ जाइ साचुं ए जाख्युं, न टले विहिए जे लिख्युं, प्रत्यक्ष नजरे में देख्युं, वयण न जाय उवेख्युं ॥ गाथा साची छे जो ॥ १३ ॥ गाथा ॥ जंचिय विहिणा लिहियं, तंचिय परिणमे सयल लोयस्स ॥ इय जाणेवि हु धीरा, विहुरेवि न कायरा हुंति ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ देइ सहस दीनार ने लीधी, गाथा हो वांचे प्रसिद्धि जो ॥ ढाल तेरमी जाखी, धीज मंदे हो आखी. राम कहे चित्त राखी, सुणजो सज्जन साखी ॥ रहिजो धर्म करेजो ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १४ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ चिंते धनद कुमार, गाथा यहु मूली मली ॥ लखमूले पण एह, कुलने कहुवी दोहिली ॥ १ ॥ वांचे वारंवार, करमां लेइ पत्रिका ॥ उर उपर चित्त हार, नित्य ते राखी हृदयमां ॥ २ ॥ एहवे दुर्जन कोय, वसमान आगल कहे ॥ तुम सुत मूरख जोय, आगल ए शुं रालशे ॥ ३ ॥ सहस दीनार देइ. गाउ दीसे जगमां घणा ॥ देखे पण न कहेइ, सीजे देहवडे रावसां ॥ ४ ॥ चउपई ॥ दोहा ॥ एक मासी अरु दुष्ट नर, देखो इणके हाल ॥ अरास पराये कारणे, हाथ करी नजे पराण ॥ १ ॥ नरके मन-

की डुष्टता, देखत उपजत लाज ॥ चांच उठेहे आपणो, परबंधनके काज ॥५॥ पूर्व दोहा ॥ क्रोध नराणो शेठ, कहे पुत्रने पापीया ॥ कीधी में ताहारी वेठ, हवे जा महोलेथी परो ॥ ६ ॥ शातादायी पुत, पण कुपुत्त रुमो नहीं ॥ शाला शूनी नव्य, पण तस्करपूरी कशी ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ धन मुफ वेला आज, अचिरानो नंदन जिनजी नेटशुं जी ॥ ए देशी ॥ सांजली वचन धनद, मन विलखाणो घरथी नीसस्यो जी ॥ गाथा अर्थ विचार, धारे रे दिलमां ए मुफ आशरो जी ॥ १ ॥ शी चिंता तुफ जीव, साथे कमाइ आवे आपणी जी ॥ रखे मान करतो रे जीव, ताप किस्यो रे परनी तापणी जी ॥ २ ॥ चाल्यो धरी एक तार, नीर सरोवर निरख्युं आगले जी ॥ नाही पीधुं रे नीर, विसामो लीधो जइ वडतरु तले जी ॥ ३ ॥ धिक् धिक् क्रोध चंडाल, सार न कीधी पाठी पुत्रनी जी ॥ रखे मन थाय कंगाल, जोय विचारी गाथा सूत्रनी जी ॥ ४ ॥ जिम जिम सांजरे नाव, तिम तिम गाहा दिल मांहे धरे जी ॥ अर्थ अमृत रसनाव, ध्यान धाराए पीतां दिल ठरे जी ॥ ५ ॥ धरी अरिहंतनुं ध्यान, तरु तले सूतो करीने साथरो जी ॥ म करो कोइ गुमान, अथिर पदारथ शुं मनमां धरो जी ॥ ६ ॥ रात्रि व्याध अयाण, आव्यो रे जाण्युं वनचर ठे इहां जी ॥ ताकी नाख्युं रे बाण, वेध्युं रे पगमां सूतो ठे जिहां जी ॥ ७ ॥ आवे जेहवे रे व्याध, तेहवे रे जाग्यो मुखे गाहा नणे जी ॥ धिक् धिक् चिंते रे व्याध, पंथी में हणीयो सूतो श्रम घणे जी ॥ ८ ॥ पगे लागी अपराध, व्याध खमावे में मातुं कर्युं जी ॥ बांधे नण पटबंध, कुमर निवारे मुफ एणे सख्युं जी ॥ ९ ॥ जा तुं ताहरे रे गाम, काम नहीं कोइ गाथा माहरे जी ॥ करशे सघलां रे काम, वाट जोतां हशे घेर ताहरे जी ॥ १० ॥ कुण आपे सुख डुःख, आप कमाइ ए आवे उदे जी ॥ लागी तरष ने नूख, वेदन बाधी कहो कोने वदे जी ॥ ११ ॥ थये प्रनाते रे तेह, मूर्छा रे आवी पुहवी तल पड्यो जी ॥ मृत जाणी रे नारंड, चंचे महीने आकाशे उड्यो जी ॥ १२ ॥ पहोतो वारिधि द्वीप, नारंम मूक्यो जइ शुन स्थानके जी ॥ नक्षण करवाने जाम, चाहे जीवंतो जाण्यो अचानके जी ॥ १३ ॥ उडी गयो रे नारंम, शीतल वाये तन चेतना वली जी ॥

कोण थाएयो मुऊ आंही, कोण दशा ए इहां आवी मली जी ॥ १४ ॥ जीव म थाइश जीरु, सहस दीनारे जे गाथा लही जी ॥ धर तेहनो मन जाव, शोच न लावे दिल मांहे सही जी ॥ १५ ॥ उठ्यो धरी मन धीर, नीर जोवाने चाल्यो जेटले जी ॥ नहीं कोइ मनुष्य प्रचार, नयर निहाले ठहस तेटले जी ॥ १६ ॥ अस्थिर ए घरना रे मोह, मूकीने नाग दीसे मानवी जी ॥ शुं हशे कारण एह, कर्म तणी गति दीसे अजिनवी जी ॥ १७ ॥ जोतां एक जलकूप, निरखीने हरख्यो दिल मांहे घणुं जी॥ जल आकर्षी रे पीध, सुखीयुं थयुं रे मन तन तेह तणुं जी ॥ १८ ॥ फल कदलीनां रे आणी, कीधी कुमारे प्राणनी धारणा जी ॥ रहीयो नयरथी दूर, रात एकांते धर्मने धारतो जी ॥ १९ ॥ तिमिर पसर्युं अति घोर, शीतनो जोरो पवन थकी थयो जी ॥ ठरतो टाढे रे गाढ, निकट गिरिने उपकंठे गयो जी ॥ २० ॥ मेली बहुलां रे दारु, अग्नि उपाइ कीधुं उतापणुं जी ॥ एकलडो वन मांहि, उदये आवे रे कीधुं आपणुं जी ॥ २१ ॥ प्रातःसमय थयो एम, जूमि थइ अग्निए सोवनमयी जी ॥ चिंते शेठनो पुत, सोवनद्वीप सुण्यो ते में सही जी ॥ २२ ॥ हरख्यो हियडा मझार, कंचन कीजे हवे हरखे करी जी ॥ कीधो इंट संघात, माटी लेइने मन उजम धरी जी ॥ २३ ॥ अग्नि तणे रे संयोग, कंचन तेहनुं जावुं निपन्युं जी ॥ करे फल फुल आहार, जोजो जविउं फल हवे पुण्यनुं जी ॥ २४ ॥ थीजे खंडे रे ढाल, चौदमी दाखी अति रलियामणी जी ॥ राम कहे रे रसाल, जाव धरीने सांजलजो गुणी जी ॥२५॥ सर्व गाथा ॥२९७॥ श्लोक ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस गिरिकुंजमां, जमतां जाग्यवशेण ॥ रत्नसमुच्चय दीठडो, हृदय घणुं हरखेण ॥ १ ॥ आण्यां तिहांथी ते घणां, राख्यां सोवन पास ॥ कुंवर देखी उल्लसित थयो, मेल्यो बहु धनराशि ॥ २ ॥ प्राणवृत्ति तिहां करे रे, सुंदर फल लेइ आर्य ॥ रहे समाधे ते द्वीपमां, कुंवर सरल सजाव ॥ ३ ॥ हवे जविजन तुमे सांजलो, सुख दुःख फल अधिकार ॥ जाग्य बके जे निपजे, सरस कथा विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ हांजी माहरे घरे एक करहो कुकाव हो ॥ ए देशी ॥ एणे अवसरे

तिहां आवीयो ॥ सुणो नवि ॥ सार्थवाह सुदत्त हो ॥ प्रवहण साथे
घणां लीयां ॥ सु० ॥ सोवनद्वीप पहुत्त हो ॥ १ ॥ कर्म अजबगति बांध्युं
त्रिविध मति, उदये आवे अति आकरुं ॥ सु० ॥ कर्म कोणे न कलाय हो
। ए आंकणी ॥ बंदर आव्युं जाणीने ॥ सु० ॥ जल इंधणने काज हो ॥
लोक सवे तिहां उतरो ॥ सु० ॥ जलसंचय करो आज हो ॥ क० ॥
॥ बहु नर साथे आवीयो ॥ सु० ॥ सार्थवाह सुजाण हो ॥ नर जल जोवा
सख्या ॥ सु० ॥ मलीयो धनद गुणखाण हो ॥ क० ॥ ३ ॥ जलस्थानक
। बावड्युं ॥ सु० ॥ मलीयां माणसवृंद हो ॥ जल जीवन जगमां
॥ सु० ॥ जल विण श्यो आनंद हो ॥ क० ॥ ४ ॥ यदुक्तं ॥ पृथिव्यां
ं रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितम् ॥ मूढैः पाषाणखंडेषु, रत्नसंज्ञा
विधीयते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ सार्थवाह त्यां आवीयो ॥ सु० ॥ धनदे
कर्यो प्रणाम हो ॥ आलिंगी बेहु मल्या ॥ सु० ॥ पूछ्युं कुशल तेणे नाम
हो॥ क० ॥ ५ ॥ कंचन रयण ए कोण तणां ॥ सु० ॥ धनदे कही
सवि वात हो ॥ मुज नयरे पहोंचाडजो ॥ सु० ॥ हरख्यो निसुणी अव-
दात हो ॥ क० ॥ ६ ॥ रयण सोवननी इष्टका ॥ सु० ॥ गणी सोंपे
तेणी वार हो ॥ प्रवहण मांहे लेइ धरी ॥ सु० ॥ धन अनरथ करनार हो
॥ क० ॥ ७ ॥ चित्त चल्युं ते शेठनुं ॥ सु० ॥ धन मेलुं जग मांहि हो ॥
एक हणे एह माहरुं ॥ सु० ॥ नहीं कोइ बीजो आंही हो ॥ क० ॥ ८ ॥
शान करे सेवक भणी ॥ सु० ॥ नाखो ए कूप मझार हो ॥ प्रवहणमां
थाशे बही ॥ सु० ॥ धिक् धिक् लोभविकार हो ॥ क० ॥ ९ ॥ लोभ समुं
दुःख को नहीं ॥ सु० ॥ लोभ वडो जगमूल हो ॥ लोभवशे हुइ
जीवडो ॥ सु० ॥ भवभवमां मल्यो धूल हो ॥ क० ॥ १० ॥ सेवक धनद
भणी कहे ॥ सु० ॥ तुं जल ताणी आप हो ॥ अहोनिश तुज अभ्यास
हो ॥ सु० ॥ ए अमचो दुःख काप हो ॥ क० ॥ ११ ॥ करवाने उपगारडो
॥ सु० ॥ धनद आव्यो तत्काल हो ॥ पाप करंतां पापीया ॥ सु० ॥
निर्लज्ज न लाजे चंडाल हो ॥ क० ॥ १२ ॥ कूपकंठे ते आवीयो ॥ सु० ॥
अवसर लइ अविनीत हो ॥ मांहे ठेलीने नाखीयो ॥ सु० ॥ जुओ जुओ
कर्मनी रीत हो ॥ क० ॥ १३ ॥ विश्वासघाती पापीया ॥ सु० ॥ करतां
काम ए नीच हो ॥ रुले चिहुं गति संसारनां ॥ सु० ॥ लोभ कलप

संबंध रसाल ॥ म० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३३ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्या कूपनी मेखला, दिलजर दंपती दोय ॥ जे तिण अवसरे निपन्युं, ते निसुणो सहु कोय ॥ १ ॥ प्रवहण कोइ परदेशनुं, आव्युं तेणे द्वीप ॥ जल इंधणने उतस्यां, बंदर जाणी समीप ॥ २ ॥ आव्या जलने जोयतां, कूपकंठ नर केइ ॥ जल आकर्षण दोरिका, मूके हर्ष धरेइ ॥ ३ ॥ धनदे दोरी ग्रही तदा, बोल्यो एम वचन ॥ कूप थकी काढो मुने, महोटा तुमे महाजन ॥ ४ ॥ तिणे जइ निज पतिने कह्युं, देवदत्तने आम ॥ आवो स्वामी उतावला, छे उपकारनुं काम ॥ ५ ॥ ते आव्यो दोरी तिहां, मांची बांधी दोर ॥ धनदकुमरने काढीयो, देवदत्त करी जोर ॥ ६ ॥ सार्थवाह दीठो सरस, सुंदर वेष धवल ॥ रे सज्जन तुं कोण छे, निर्मल रूप नवल ॥ ७ ॥ केम पडीयो ए कूपमां, धनद कहे एक वार ॥ प्राण प्रिया पण माहरी, कूप मांहे निर्धार ॥ ८ ॥ अवर वस्तु पण छे घणी, कूप मध्ये महाराज ॥ काढीने कहेशुं पछी, वात सकल मुझ आज ॥ ९ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥ देवदत्त कहे सुविचारी, तुमे काढो परणी प्यारी ॥ सवि वस्तु निकासी सारी, ते दीठी सुंदर नारी रे ॥ १ ॥ जविका लोभ न करजो ॥ लोभ न करजो जी ॥ ए आंकणी ॥ छे अंते ए दुःखदाइ, माया विषवेल सहाइ ॥ तृष्णा तरुणीनो भाइ, रह्युं एहथी जग लपटाइ रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पूछे सार्थवाह निवार, कहो तुमचो हवे अधिकार ॥ दोय नाह रमणी निर्धार, केम पडीयां कूप मझार रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए भरत तणो हुं वासी, तुं जाते वणिक विलासी ॥ धन उपराजण उल्लासी, चल्यो द्वीप कटाह विमासी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ दैवयोगे प्रवहण भांग्युं, एक फलक करे मुझ लाग्युं ॥ दंपती दोय पाम्यां ताग, लाग्युं ए बंदर भाग्य रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जल जोतां ए कूप दीठो, मन मांहे लाग्यो मीठो ॥ नारी पग तिहां खस्यो, जोतां मनस्यो करी धीठो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ नारी केडे उजाइ आइ, पस्तुं महेस्युं में धाइ ॥ कूपमेखल उपरे जाइ, पडीयो हुं पुण्य सखाइ रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ जलदेवी यइ सुप्रसन्न, आप्यां अम बसन रतन्न ॥ कहे प्रवहण केमी जतन, तुमे जाणो पुरुष रतन रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ अम भाग्य

तुमे इहां आव्या, मनोवांछित सुख अमे पाया ॥ तुम दर्शन अधिक सुहाया,जिम चंद्र चकोरा न्याया रे ॥ ज० ॥ ए॥ कहे सार्थवाह हरामी, अमे द्वीप कटाहने पामी॥ आव्या जरत थकी शुन कामी, जाशुं निज नयरे धामे रे॥ ज० ॥ १० ॥ आवो तुमे अम संघाते, ल्यो वस्तु वली सहु साथे ॥ जलुं कीधुं ए जगनाथे, तुम साथ मल्यो अम पंथे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ पहोंचाको धनद कहे अमने, जाग ठलो देशुं तुमने ॥ करशुं तुम सेवा सुमने, मत मानजो कूडुं कुमने रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ देवदत्त कहे उत्कर्षी, अमे माणसना डुं परखी ॥ तुम्ह सेवा मेवा सरखी, करशुं अमे हियडे हरखी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ बेहु बेठा वहाण मांहि, चाल्यां प्रवहण उत्साही ॥ नारी देखी मन मांहि, चिंते ते धूरत शाह रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ रमणी ते रूपरसाली जरयौवन मांहे जाली ॥ गजगति चाले मतवाली, मृगनयनी तन सुकुमाली रे॥ ज०॥१५॥ मानुं मन्मथनी ए घरणी,हणुं तेहने तेणे ए परणी ॥ करुं ए साथे सुख करणी, करे विषया डुर्गति नीसरणी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ हवे सांजलजो जवि जाइ, जुर्ज विषय थकी थाइ ॥ विषयी पण अधिक कहावे, विषया मति प्रीति नसावे रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ खंड बीजे अढारमी ढाल,जोग महोटो विषयनो जाल ॥ कहे राम मुनि उजमाल, जग विषय वको चंमाल रे ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोजे पड्यो कामे नड्यो, देखी धन ठर नारी ॥ देवदत्त निज चित्तमां, आरत करे अपार ॥ १ ॥ धन रमणी ए एकलो, केम लेइ जाशे सुंच ॥ नाखुं दरियामां खरो, केडे वहार न बुंच ॥ २ ॥ ए तरुणी ए माल सवि, थाशे मुज आधीन ॥ परमेश्वर मुज पाधरो, करशुं काज अदीन ॥ ३ ॥ डुष्टे धनद कुमारशुं, खट पट मांकी जोर ॥ सरलपणे तिणे नवि लह्युं, तेहनुं हृदय कठोर ॥ ४ ॥ सज्जन जन जाणे नहीं, डुर्जननी गति जात ॥ चाल न जाणे उरगनी, विण जुजंगनी जाति ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ धनदत्त खल साथे मल्यो रे लो, वात करे मन मेली रे ॥ सुगुण नर ॥ तुम मलीया डुःख विसरे रे लो, आज वधी रंग रेल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ खलसंगति नवि कीजीये रे लो ॥ ए आंकणी ॥

जो करे वानां लाख रे ॥ सु० ॥ मीठो थइ आवी मले रे लो, फल किंपाकनी साख रे ॥ सु० ॥ स० ॥ २ ॥ एक दिवस रयणी समे रे लो, देहचिंता सद्भाव रे ॥ चतुर नर ॥ बेठो मांची उपरे रे लो, आव्यो वेरी दाव रे ॥ च० ॥ ॥ स० ॥ ३ ॥ जोइ अवसर तेणे पापीए रे लो, कापी दोर तुरंत रे ॥ च० ॥ करतां एम बीये नहीं रे लो, पापी काम दुरंत रे ॥ च० ॥ स० ॥ ॥ ४ ॥ धमकमतो पड्यो उछली रे लो, सायर मांहे कुमार रे ॥ च० ॥ गाज्या दिल मांहे सांभरी रे लो, जीव हुओ हुशियार रे ॥ च० ॥ स० ॥ ५ ॥ आवी नाव टले नहीं रे लो, इहां नहीं केहनो वांक रे ॥ च० ॥ कर्म-धर्म नडे जीवने रे लो, कोण राजा कोण रंक रे ॥ च० ॥ स० ॥ ६ ॥ शोर करी रडतो नहीं रे लो, जुवो निहाळी कोय रे ॥ च० ॥ माणस पखीयो निगुणो रे लो, शब्द सुणशे इम सोय रे ॥ च० ॥ स० ॥ ७ ॥ कयकी उठी ला सुंदरी रे लो, नवि देखे निज कंत रे ॥ च० ॥ धसक पड्यो तव धासको रे लो, किहां गया प्राणनाथ रे ॥ च० ॥ स० ॥ ८ ॥ हाथे हियडुं कूटती रे लो, रोती अबला धात रे ॥ च० ॥ दुःख भर छाती फाटती रे लो, टळवळी विरहनी झाळ रे ॥ च० ॥ स० ॥ ९ ॥ हा वालम मूकी गयो रे लो, केम दुःख सायर मांहे रे ॥ च० ॥ शोर सुणी तिहां आवीयो रे लो, देवदत्त सारथवाह रे ॥ च० ॥ स० ॥ १० ॥ कृत्रिम रुदन करी कहे रे लो, शुं ए थयो उत्पात रे ॥ च० ॥ हा मित्र तुजने केम थयो रे लो, सायर झंपापात रे ॥ च० ॥ स० ॥ ११ ॥ मुखे रोवे हियडे हसे रे लो, पापीमां शिरदार रे ॥ च० ॥ मुख मीठो धीठो हिये रे लो, ए खलना आचार रे ॥ च० ॥ स० ॥ १२ ॥ आक्रंदिता नवि गोठवे रे लो, रोये तन कुमळाय रे ॥ च० ॥ देव प्रते चाले नहीं रे लो. देव करे ते थाय रे ॥ च० ॥ स० ॥ १३ ॥ वचन सुणी चतुरा कही रे लो, ए पापीनां काम रे ॥ च० ॥ हा हा मुजने हवे सही रे लो, छेह जाशे निज माम रे ॥ च० ॥ स० ॥ १४ ॥ शील रतन केम राखशुं रे लो. किम रहेशे कुळलाज रे ॥ च० ॥ हा हा देव अटारको रे लो, ए शुं कीधुं अकाज रे ॥ च० ॥ स० ॥ १५ ॥ सार्थपति कहे बालही रे लो. तुज रांयु गयो भरथार रे ॥ च० ॥ हवे मुजने अंगीकरो रे लो. छोडो मुखानो शोक रे ॥ च० ॥ स० ॥ १६ ॥ चिंते ए मारी पगे रे लो. कहेशे शील विनाश ॥ स० ॥ काळ विलंबने कारणे रे लो, उत्तर आलुं

खास रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १७ ॥ यडुक्तं ॥ क्षणेन लन्यते यामो, यामेन लन्यते दिनम् ॥ दिनेन लन्यते कालः, कालः कालो नविष्यति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुफ पीयु मरवानो नहीं रे लो, रयणतणे प्रसाद रे ॥ च० ॥ तो उत्तर कही कारिमो रे लो, करुं एहने आल्हाद रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १८ ॥ तट जइ पुरना स्वामीनी रे लो, लही अनुमति सहु साख रे ॥ च० ॥ वयण तुमारुं मानशुं रे लो, हरख्यो एम सुणी जाप रे ॥ च० ॥ १९ ॥ निसुणो धनद तणी कथा रे लो, श्रोता बीजे खंम रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ढाल कही उंगणीशमी रे लो, लेहशे सुख अखंम रे ॥ च० ॥ ख० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर जइ नृपने संतोकशुं, धन देइ असमान ॥ चिंतित करशुं आपणुं चिंते ते अज्ञान ॥ १ ॥ पण जाणे नहीं बापमो, परद्रोहे केम काज ॥ सिद्ध थाये संसारमां, जेहथी प्रभु इतराज ॥ २ ॥ हवे धनद जलनिधि पड्यो, पूर्वजन्म कोइ थान ॥ फलक वही आव्युं करे, अहो अहो पुण्यनिदान ॥ ३ ॥ ते अवलंबी चालीयो, कल्लोले लोखंत ॥ पंचम दिवसे ते धनद, निज पुर निकट पहुंत ॥ ४ ॥ तट देखी हरख्यो हिये, जोवे नयणे जाम ॥ मत्स्य महोटे फलके सहित, गल्यो अचिंतित ताम ॥ ५ ॥ अहो विषमी गति कर्मनी, कोणे कली नवि जाय ॥ जे जे मनमां चिंतीये, ते ते निष्फल थाय ॥ ६ ॥ नरकोपम पमीयो तदा, मत्स्यउदरमां तेह ॥ चिंते ए शुं निपन्युं, कर्मवशे मुफ एह ॥ ७ ॥ कष्टहरण मणि समरणे, ते मत्स्य धीवरे बद्ध ॥ उपकंठे आएयो तुरत, छिधा विदारण कीध ॥ ८ ॥ उदरमध्यथी नीसर्यो, देखी दिव्यकुमार ॥ जले नवरावी तेहने, मूक्यो राजडुवार ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ हांरे नरवा रे गइती नदी यमुनानां नीर जो ॥ ए देशी ॥ हांरे तव पूछे राजा अचरिजवाली वात जो, नाइ मुफ नाखोने ए तुमची कथा रे लो ॥ हांरे केम रहीयो मत्स्यउदरमां तुं सुकुमार जो, केम सहेवाणी सबली ते व्यथा रे लो ॥ १ ॥ हांरे तव कुमर कहे राजन् जननुं शुं जोर जो, बांध्यो रे फकमीने कर्मे जीवमो रे लो ॥ हांरे एकेक प्रदेशे कर्म अनंती आठ जो, वर्गणाथी वीटाणो रह्यो अनुदिन जमो रे लो ॥ २ ॥ हांरे में

अनुनवीया सुख डुःखना बहुल विपाक जो, ते कहेतां नावे रे किमही छेहडो रे लो ॥ हांरे हवे शुं जाखुं तुझ आगल हुं राजान जो, पण संक्षेपे सांजल स्वामी नेहडो रे लो ॥ ३ ॥ हांरे हुं चडीयो गर्थने अर्थे प्रवहण मांहि जो. नांग्युं रे जलदरिये वाहन वेगशुं रे लो ॥ हांरे एक लाध्युं फलक फलक मांहे आव्यो पार जो, मत्स्ये रे उपकंठे महोटे मुझ गह्यो रे लो ॥ ४ ॥ हांरे ते धीवर हणीयो हुं उगरीयो आम जो, आणीने तुम आगल मुझने रजु कर्यो रे लो ॥ हांरे ते निसुणी नृपति चिंते चित्तमां आम जो, जाणी रे जोरावर जग मांहे नर्यो रे लो ॥ ५ ॥ हांरे हवे सोवननीरे नवरावी नरनाथ जो, मेहे रे जिन पाणी गाजतो मेहने रे लो ॥ हांरे तस सन्मानी मत्स्योदर दीधुं नाम जो, माहे रे गहु जिम आषाढे मेहने रे लो ॥ ६ ॥ हांरे तव राजा पासे रह्यो कोइ लायक काम जो, लीधुं रे पद तेणे यगिधरनुं रूयुं रे लो ॥ हांरे तस नृपनो राय अपावे पान जो, तेहने पनुं आपे कालिक रूपयुं रे लो ॥ ७ ॥ हांरे एम दिवस गया केताइक नयर मकार जो, मत्स्योदर हवे सुखी निकस्या वातने रे लो ॥ हांरे हवे पहेलुं प्रवहण जिहां हतु प्रवासि जो, आव्या रे तिण बंदर जोरे वायने रे लो ॥ ८ ॥ हांरे मन हरखी नष्ट धनोपम थयो अवाज जो, जाणुं रे पुरमां परदेशी आवीया रे लो ॥ हांरे तव हाथ्यां मनमां महोद्दर गुणवंत जो, आवे जो मुझ वेरी तो धनकार्चीया रे लो ॥ ९ ॥ हांरे हवे लेइ उपायन साथे स्वरूप दरिद्र जो, आव्यो रे दरबारे नृपति भेटवा रे लो ॥ हांरे भेटक निरखी तव नमीयो नरनाथ जो, आव्यो रे तुम नयरे डुःखडुं मेटवा रे लो ॥ १० ॥ हांरे अवर्णपति आप्यां बहुआं आदरमान जो, मत्स्योदर मन सपे निज कुल उंबर्युं रे लो ॥ हांरे तिहां देखी धनद सुदत्त हवे सनेह जो, कुलनुं रे कंगालुं ते कुमरे उबर्युं रे लो ॥ ११ ॥ हांरे तिहां तस्कर आवी कुमर पडे गेह जो, गयो रे यशात्युं बीडुं एकनुं रे लो ॥ हांरे तिहां कुमर गयो आणिया हाथोहाथ जो, जोडने देखीने हुं एनुं मननुं रे लो ॥ १२ ॥ हांरे मेंं जाण्यो हवे डुःखकारी वटाउ जो, आव्यो रे मुझ आगल ए केम एकलो रे लो ॥ हांरे साह सोहे हर्षी बहु स्नेहे ए देख जो, हावे रे नहि कर्णीतो हुं थयो ते काको रे लो ॥ १३ ॥ हांरे ते आव्यो तासं गुणवंतोनी पास जो, गुंजे रे

नृप पासे धणिधर कोण ठे रे लो ॥ हांरे शुं एवडुं एहने राय तणुं सन्मान जो, के सुकृती के तेमां कांईं नूतन गुण ठे रे लो ॥ १४ ॥ हांरे तिणे मांकी दाख्यो सघलो तस अवदात जो, धनद सही मन मांहे तस निश्चे थयो रे लो ॥ हांरे हवे चिंते डुष्ट हियामां हलुइ वात जो, धननो रे अति लोजी नीचमति हुओ रे लो ॥ १५ ॥ हांरे नवि बीजे खंडे राग अखंडे पद जो, जाखी रे ए वीशमी ढाल सोहामणी रे लो ॥ हांरे श्री सुमति सुगुरुनो रामविजय कहे आम जो, जग मांहे डुःखदायी लोजदशा घणी रे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर राजाननो, गायक गीतरति नाम ॥ आव्यो जाणी सार्थपति, तेणे कस्यो प्रणाम ॥ १ ॥ गीत गाये ऊंचे स्वरे, रीज्यो आपे दान ॥ तेमी एकांते तेहने, जाखे शेठ अजाण ॥ २ ॥ जो मुफ एक कारज करो, तो आपुं बहु धन ॥ ते कहे कर जोमी अमे, करशुं तुम्ह वचन ॥ ३ ॥ राय धणिधरने जइ, बोलावो करी बंधु ॥ रुठे राजा तेहने, जेम थाये प्रतिबंध ॥ ४ ॥ वचन कबूल करी तिहां, पहोतो नृपनी पास ॥ धनहुंती सवि संपजे, सहुए धनना दास ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ फानुडो हवे वेण वजावे रे ॥ ए देशी ॥ गायक जइ दरबारे ऊना, गावे गीत रसाल ॥ मादल ताल नफेरी जेरी, रमफम वीण विशाल ॥ गाय० ॥ १ ॥ गुण गावे सहुने मन जावे, ऊंची लेइ टेक ॥ राजन् तुफ विण कोइ अवरने, नवि जाचुं सुविवेक ॥ गा० ॥ २ ॥ तुगो राजा धन मणि माणिक, आपे हर्ष धरीने ॥ ते नवि इडे पान अपावो, अमने महेर करीने ॥ गा० ॥ ३ ॥ कर ऊंचो करी पान अपावे, राजन रंग रसालो ॥ सहुको लोक कहे गायकने, राजा सबल वसीलो ॥ गा० ॥ ४ ॥ मत्स्योदर आव्यो जब पासे, रोइ वलग्यो कंठे ॥ हा बंधव तुं केम रीसाइ, जाये एम पड्येे लंठे ॥ गा० ॥ ५ ॥ घर एम केम चाले रीसाणे, सुण तुं जननी जाया ॥ तुं मुफ बीजी बांह नगीना, हवे नवि मेलुं छाया ॥ गा० ॥ ६ ॥ एटला दिन अलगो तुं रहीयो, हवे में पुण्ये पायो ॥ चिरं जीव तु बंधव मोरा, आज अचिंत्यो आयो ॥ गा० ॥ ७ ॥ राजा आगल

मह मन विस्मय, पामीने एम बोले ॥ फट मूरख तें सबल विटाब्या, नहीं कोय तारे तोले ॥ गा० ॥ ८ ॥ रे रे शुं साचुं ए जाखे, के वली अथवा कूडुं ॥ मन्दोदर कहे सुणो महाराजा, ए सवि जाले रुडुं ॥ गा० ॥ ए ॥ जोजो हवे बुद्धि करी उत्तर, कहेवो कुंवर वाले ॥ बलपें बुद्धि कही बलवंती, जे उपजे तत्काले ॥ गा० ॥ १० ॥ राजन् एह नपरमां अमलो, जनक पिता मातंग ॥ प्रज्ञ आगम निस गुण गावाने, आवंतो मन रंग ॥ गा० ॥ ११ ॥ तेहने घेर दोय दयिता रुडी, ते बेहुना [illegible] जाया ॥ [illegible]मानीनी मुफ माता तेणे, मुफ वाणी न सुहाया ॥ गा० ॥ १२ ॥ पहनी मात हुती वहाली, ए पण वहाल गाढो ॥ एक दिन [illegible] लागी, गोत दीधो मुफ टाढो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पंच रयण [illegible], [illegible] जाणी ॥ वरस विषम वेलाए ए तुं, [illegible] हित आणी ॥ गा० ॥ १४ ॥ राजन् राखले अवयव पहने, [illegible] ॥ बेहू सुत पाणे प्रीति परंतर, कीधो सुमतिने रोषी ॥ गा० ॥ १५ ॥ जो नवि मानो तो मुफ परगट, जोवो नयण निहाली ॥ जंघा [illegible] ते, [illegible] गं[illegible] ॥ गा० ॥ १६ ॥ राय तणे मन [illegible] ए, सेवकने कहे जाबो ॥ अंग विदारी रयण लेइने, राघला मुफ [illegible] ॥ गा० ॥ १७ ॥ [illegible] गति [illegible], [illegible] ए मायानो ॥ [illegible] पहने, न [illegible] ए [illegible] ॥ गा० ॥ १८ ॥ [illegible] ते कहे मुफने मूको ॥ धन कारण मं [illegible] ए, [illegible] हुं चूक्यो ॥ गा० ॥ १९ ॥ [illegible] परदेशी, तेणे ए [illegible] ॥ [illegible] मुफने, [illegible] घणुं [illegible] ॥ गा० ॥ २० ॥ [illegible] जोड, पूछे वात ए साची ॥ ते [illegible] सुत हुं [illegible], ए पण कांई न काची ॥ गा० ॥ २१ ॥ [illegible] कहे दिन, कहे [illegible] मानुं ॥ मुफ मननो ए [illegible], [illegible] ॥ गा० ॥ २२ ॥ सुण [illegible] ए [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ते [illegible], तेहमां नहीं विनाण ॥ गा० ॥ २३ ॥ [illegible], [illegible] ॥ ते [illegible] ॥ गा० ॥ २४ ॥ वात सुणी

कवीशमी ढाले, हरख्यो नृप मन मांय ॥ त्रीजे खंडे रामविजय कहे, जूठे
बुद्धि न थाय ॥ गा० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७४ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मातंगगृहथी मगावीया, संघाटक नृप चार ॥ छिधा कराव्या भींतरे, धनद
नाम सुविचार ॥ १ ॥ रोपे चढ्यो राजा कहे, सेवकने तेणी वार ॥ वधभूमे
लइ जाइने, करो बेहुने गार ॥ २ ॥ कृपावंत कुमर वदे, लागी नृपने पाय ॥
मेलाव्या ते जीवता, उत्तम नीच न थाय ॥ ३ ॥ यदुक्तं ॥ न भवति
भवति च न वरं, भवति चिरं चेत्फलं विसंवदति ॥ कोपः सत्पुरुषाणां, तुल्यः
स्नेहेन नीचानाम् ॥ १ ॥ अंब न होवे लींबडे, लींबे न होय अंब ॥ सज्जन
दुर्जन नोहे, जो धरती होय आभ ॥ ४ ॥ सज्जन ऐसा कीजीये,
जैसा पाणी कोश ॥ पगहुंती जो ठेलीये, तोही नाणे रोष ॥ ५ ॥ सज्जन
जाइ मनावीये, यो रुसे सो वार ॥ सज्जननो एक क्षण भलो, मूरखनो
जमवार ॥ ६ ॥ जो रुठे गुणवंतने, तोहे जे दुःख मोट ॥ एक न देजे देव तुं,
दुर्जन साथे गोठ ॥ ७ ॥ संगति कीजे सज्जना, सेहथी भांजे भीरु ॥ उंठी
संगति नीचकी, नवि उपाइ पीरु ॥ ८ ॥ वाह वाह सहुको करे, महोटो ए
गुणवंत ॥ अवगुण उपर गुण करे, तेहज कहीये संत ॥ ९ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ देशी मृगनयणीना गीतनी ॥ ए वणिकने काठो कीधो राज, धन
माल उखालीने लीधो राज ॥ भवि पुण्य तणां फल जोजो ॥ माल सोंप्यो
धनदने हाथे राज, मनाव्यो ते नरनाथे राज ॥ भ० ॥ १ ॥ पूर्वे हतुं घणुं
मान राज, वली वाध्युं बहु सन्मान राज ॥ भ० ॥ जग उखाणो कहेवाये
राज, गुण केडे पूजा थाये राज ॥ भ० ॥ २ ॥ कहे राजन वात प्रकाशो राज,
मांनो मुझशुं सोहाशो राज ॥ भ० ॥ कहे कुमर सुणो भूमीश राज, भाखुं
मुझ चरित जगीश राज ॥ भ० ॥ ३ ॥ हुं तुम नयरनो वासी राज, रत्न-
सारनो सुत सुविलासी राज ॥ भ० ॥ नामे हुं धनद कुमार राज, बहु
मात पितानो प्यार राज ॥ भ० ॥ ४ ॥ एक दिन एक गाथा लीधी राज,
देइ सहस दीनार में लीधी राज ॥ भ० ॥ मुझ ताते दीधी गाल राज, काढ्यो
घरथी ततकाल राज ॥ भ० ॥ ५ ॥ तेथी चाल्यो परदेश राज, वींध्यो
व्याधे पगदेश राज ॥ भ० ॥ भारंडे उपाडी मूक्यो राज, सोवन द्वीपे जइ

नहीं एहने नरक विण ठोर राज ॥ ज० ॥ २० ॥ सुणी मन सजवाणो राणो राज, बोले बहु रोष भराणो राज ॥ ज० ॥ तुफ आशय लेवा माटे राज, हुं बोल्यो बोल ए घाटे राज ॥ ज० ॥ २१ ॥ कुण ए तुफ एहवुं भाखे राज, मुफ आगे कहो सहु साखे राज ॥ ज० ॥ कहे सुंदरी सुणो सहु कोइ राज, ए जेहवो नीच न कोइ राज ॥ ज० ॥ २२ ॥ नवि एहनुं मुख जोइजे राज, परद्रोही दूर करीजे राज ॥ ज० ॥ जरदरिये मुफ पति नाख्यो राज, में जिम तिम आपो राख्यो राज ॥ ज० ॥ २३ ॥ कहे जगमां केम रहेवाय राज, एम मंडाणो अन्याय राज ॥ ज० ॥ ते माटे मुफ मूकावो राज, एहने रुडे समजावो राज ॥ ज० ॥ २४ ॥ एम निसुणी रहीया केइ राज, दश अंगुल मुहमां देइ राज ॥ ज० ॥ जुठ साहुकार कहाइ राज, करे एहवी कर्मकमाइ राज ॥ ज० ॥ २५ ॥ एम बीजे खंडे गाइ राज, ढाल बावीशमी सुखदायी राज ॥ ज० ॥ कहे राम करो कोइ यानुं राज, पण कीधुं न रहे छानुं राज ॥ ज० ॥ २६ ॥ स० ॥ ६१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिलकसुंदरी भूपने, भाखे बे कर जोडी ॥ नृप आदेशे ताहरुं, कथन करीश मन कोड ॥ १ ॥ एहवुं में भाख्युं हतुं, राखण शील रतन्न ॥ ते में महारुं जाळव्युं, सूधुं करी जतन्न ॥ २ ॥ ते माटे करवो हवे, अनल शरण मुफ देह ॥ शुं वालम विण जीववुं, शो धन उपर नेह ॥ ३ ॥ कहे नृपति मरवा तणुं, साहस म कर सुजाण ॥ परख्यो प्रीतम तुफ तणो, देखाडुं इण ठाण ॥ ४ ॥ वळतुं बोले सा सती, तुमे पृथिवी प्रतिपाल ॥ खेल परे हसता हुता, नवि शोनो परवाल ॥ ५ ॥ राजन कहे हसवुं किस्युं, तुं मुफ बेटी तुल्य ॥ पण देखाडुं तुफने, इहां निज कंथ अमूल्य ॥ ६ ॥ किहांथी ते मुफ वल्लहो, जे नाख्यो जलधि मफार ॥ अनुमति द्यो मुफ अनलनी, करुं प्रवेश निर्धार ॥ ७ ॥ राजहुकमथी छत्रीयो, धीमो देवा काज ॥ सुंदरी नजरे निरखजे, ए महारो भर्तार ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ करहलनानी देशी ॥ तिलकसुंदरी निरखीने, निरखीने मन मांहे एम विमासे ॥ हो राज ॥ ए प्रीतम होवे माहरो, माहरो पण इहां आव्यो होवे केम तमासे ॥ हो राज ॥ १ ॥ धनद कहे स्वामी एहनो, एहनो

स्वामी होशे जेह शूने मंदिर आव्यो ॥ हो० ॥ निज वीतकनी वातकी, वातकडी निज केरी कहीने जस समजाव्यो ॥ हो० ॥ २ ॥ खड्ग दीयो एणे जेहने, जेहने एणे शान करी मंदिर मांहे राख्यो ॥ हो० ॥ जेणे वशीये राक्षस जणी, राक्षसने रंजामी हणीने दूरे नाख्यो ॥ हो० ॥ ३ ॥ परणी जेणे ए पद्मिनी, पद्मिनीने परणीने रंगे वातो कीधी ॥ हो० ॥ इत्यादिक अंतरंगनी, सहिनाणी सघली साची दीधी ॥ हो० ॥ ४ ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, उल्लसीयां अंतरनां कूंपल हैडे हरखी ॥ हो० ॥ दुःख दोहग दूरे गयां, दूरे गयां सवि दुःखनां जोवे निरखी निरखी ॥ हो० ॥ ५ ॥ नृप आदेशे उन्नी रही, उन्नी रही जइ जोडे प्रेमदा गुणनी खाणी ॥ हो० ॥ धन धन दंपती जोमली, जोमी ए घणुं जीवो सुंदर रूप समाणी ॥ हो० ॥ ६ ॥ राजहुकम हुर्ज एहवो, एहवो जेणे कीधुं तेहने तुरत खपावो ॥ हो० ॥ उपकारी नर आवीयो, आव्यो ते उजाइ दृणतां वचमां आमो ॥ हो० ॥ ७ ॥ धन धन तेहनी मावडी, मावडीए जेणे जायो नरमां रयण समाणो ॥ हो० ॥ अपराधी गेमावीयो, गेडाव्यो जन मांहे सघले शहेर गवाणो ॥ हो० ॥ ८ ॥ सज्जन अतिहि दूहव्यो, दूहव्यो पण नाणे हियडे डंस केवारे ॥ हो० ॥ ठेद्यो सेद्यो वंशने, वंशनो स्वर मीठो बोले वायु जेवारे ॥ हो० ॥ ए ॥ अगर अग्निमां खेपीयो, खेप्यो पण शुन गंधे सहुकोने संतोषे ॥ हो० ॥ चंदन जो घसीये घणुं, घणुंए तोपण सहेजे शीतलताने पोषे ॥ हो० ॥ १० ॥ वस्तु लीये सहु आपणी, आपणली केम होवे जे परनी लीध उधारी ॥ हो० सहु कहे धर्मे जय हुवे, जय हुवे परयुवती मुख न जोवे जारी ॥ हो० ॥ ११ ॥ हुं बलिहारी तेहने, तेह तणी परतरुणी परधनश्री जे न्यारा ॥ हो० ॥ ते सज्जन मन माहरे, सदारा ते मन मांहे लागे अतिहि प्यारा ॥ हो० ॥ १२ ॥ यतः ॥ परदारपरद्रव्य,-परद्रोहपराङ्मुखः ॥ गंगाऽप्याह कदाऽन्येत्य, मामयं पावयिष्यति ॥ १ ॥ यः परवादे मूकः, परनारीवक्त्रवी-क्षणेऽप्यंधः ॥ पंगुः परधनहरणे, स जयति लोके महापुरुषः ॥ २ ॥ रहे नृपदत्त आवासमां, आवासे दोय रहेतां एक दिवस बहु नेहे ॥ हो० ॥ आद सही नरवर तणी, नरवरना सेवकशुं आवे जनकने गेहे ॥ हो० ॥ ॥ १३ ॥ दीठे मंदे प्रवीशमी, प्रवीशमी ए डाबे धन रमणी सवि

पामी ॥ हो० ॥ रामविजय कहे पुण्यथी, पुण्यथी सुख मांहे न रहे कांइ खामी ॥ हो० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६४१ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नसारने मंदिरे, आव्यो कुमर सुजाण ॥ राज्यमान जाणी करी, शेठ दीये बहु मान ॥ १ ॥ मांड्युं आसन बेसवा, आगत स्वागत कीध ॥ तुम आवे आ दिवसमां, सबलो लाहो लीध ॥ २ ॥ धन्य हुउं हुं धन्यमां, तुम आवे महाराज ॥ प्रगट्यां पूरव जव तणां, पुण्य अमारां आज ॥ ३ ॥ चिंते मन कारण किस्युं, अंगण आव्यो एह ॥ केम समाये बाथलो, मुज डोकरने गेह ॥ ४ ॥ शेठ कहे फरमावीये, जे मुज लायक काम ॥ कुमर कहे तुम तातजी, केम डुर्बल तनु आम ॥ ५ ॥ निशासो नाखी कहे, शेठ सबल दिलगीर ॥ अंगज अमे रीसावीयो, गयो विदेशे वीर ॥ ६ ॥ तुम दीठे ते सांजस्यो, अम जीवित आधार ॥ एम कही रुदन करे घणुं, नयण न खेंचे धार ॥ ७ ॥ कारण मांजीने कह्युं, धुरिंहुंती समजाय ॥ जाणुं तुमे तेहज सही, पण में केम कहेवाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आवो आवो रे शामलीया कांइ चालो ॥ ए देशी ॥ रहो रहो रे पिताजी कांइ रडो, ते हुं तुम अंगज जड्यो ॥ तुम शीख न मानी में निगुणे, एम कहीने पाय पड्यो सुगुणे ॥ १ ॥ आवो आवो रे सुतजी नानकमा, ॥ ए आंकणी ॥ तुम पाखे सहीयां बहु डुःखमां ॥ एम कहीने पुत्र पिता मलीया, बहु दिवस तणा विरहा टलीया ॥ आ० ॥ २ ॥ जइ जननीने हेजे मलीयो, कहे आज मनोरथतरु फलीयो ॥ में नयणे दीठी मुज मामी, मोरी आंख कमल जिम उघाडी ॥ आ० ॥ ३ ॥ जननी पगे लाग्यो सोजागी, कहे मा मुज आज दशा जागी ॥ घणे दिवसे तुम दर्शन पायो, महारो आज दिवस लेखे आयो ॥ आ० ॥ ४ ॥ बेसारे खोले सुतने, न्हवरावे आंसु जल हेतने ॥ मायमी मन नेहे घणुं जीनुं, मुख निरखे फरी फरी सुतजीनुं ॥ आ० ॥ ५ ॥ वत्स वात कहो तुमची सघरी, अम डुःखमां दूर गयां विसरी ॥ तिहां संक्षेपे सवि वात कही, सुत सहामुं मायमी जोइ रही ॥ आ० ॥ ६ ॥ करो विनति नृप पासे जाउं, मुज सत्रधूने तेमी लावो ॥ जइ राजडुवारे अरज करी, सुत तेमी लावे हर्ष धरी ॥ आ०

॥ ७ ॥ गजवरने खंधे बेसारी, नृप साथे कीधी असवारी ॥ बहु लोक खलक मलीयो जोवा, वलगामी वस्त न रहे दोवा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कोइ कामिनी पिरसंती धाइ, उमंते अंबर उजाइ ॥ परचाल चढावीने केडे, कोइ कामिनी जोवाने दींके ॥ आ० ॥ ए ॥ एक आवे जूठे हाथे धसी, उजातां ढंढण जाय खसी ॥ एक आवे उमंती कबरी, मनुं मुखकज उपर ए भ्रमरी ॥ आ० ॥ १० ॥ एक अलते रंजीते करणा, पहेरे साफी ढंढे चरणा ॥ एक कुंकुम बिंदी दे गाले, काजलनो बिंडु दीये जाले ॥ आ० ॥ ११ ॥ रही रजसपणे पीयुनी जोडे, कर उंचा करी आलस मोडे ॥ एक सुंदरी सामुं हेज धरी, मत्स्योदरने जोवे फरीय फरी ॥ आ० ॥ १२ ॥ तिहां मलीया बहु माणसवृंदा, वाजे वाजिंतर नवनव ठंदा ॥ शेठ महाजन आगे रंग नरीया, अंगे पहेख्या वाघा केसरीया ॥ आ० ॥ १३ ॥ सहु बोले मुख जय जय वाणी, धन धनदकुमर ए धणीयाणी ॥ धन्य जननी जेणे कुंवर जायो, कुल अंबर ए दिनमणि आयो ॥ आ० ॥ १४ ॥ एम आमंबरे निज घर आया, सहु साजन जन मनमें नाया ॥ बहु साथे नृपति रंग रली, मंदिर मांहे बेठा सुजन मली ॥ आ० ॥ १५ ॥ करे सेवा शेठ नरेश्वरनी, मुज करुणा थइ परमेश्वरनी ॥ मुज आंगण जे नृपति आयो, नरी मोती थाल ए वधायो ॥ आ० ॥ १६ ॥ एहवे आव्यो मालाकार, नृप आगल फूल धर्यां सार ॥ उत्संगे राजकुमर बेठो, लीये फूल करी निज कर हेठो ॥ आ० ॥ १७ ॥ जब नाके वास लीये सारी, तब कुंवर उठ्यो पोकारी ॥ जुउ जुउ रे सेवक थइ वहेला, ए फूल मांहे शुं रे बला ॥ आ० ॥ १८ ॥ तब जोवे सूक्ष्म नजरे करी, मांहे देखे इयल अति निसरी ॥ ए राजसर्प सहु एम बोले, एहनुं विष नहीं कोइने तोले ॥ आ० ॥ १९ ॥ इणे दीसे राजकुमर मस्यो, नृप मन मांहे दुःख जोरे वस्यो ॥ धाउ धाउ रे तेडो गारुमी, एम बोल्यो राजा आरमी ॥ आ० ॥ २० ॥ कहे गारुमी ए असमी न वसे, ए मस्यो कुंवर अहि सवसे ॥ जोतां तनखण मूर्ग आवी, न टसे जे टाल्युं कोइ नावी ॥ आ० ॥ २१ ॥ कहे धनद करो तुमे शी चिंता, महाराज रहो थइ निश्चिंता ॥ तिहां ठांट्युं देवीदत्त मणि नीर, तब उठ्यो कुंवर वम्वीर ॥ आ० ॥ २२ ॥ राय कीधी दूरे वधामणी, वधी प्रीति मत्स्योदरशुं घणी ॥ निज मंदिर

आव्यो नरवरु, सुख विलसे धरी जेम सुरवरु ॥ आ० ॥
मत्स्योदर विलसे जोगा, निज नारीशुं लही शुभ योगा ॥
दुःखीने अनुकंपा, शुभ रीते विचरे निःकंपा ॥ आ० ॥ २४ ॥ ढाल
चोवीशमी, कहे रामविजय साकर समी ॥ शुभ उदय यदा आ
तव एणी परे सवि चिंतित फले ॥ आ० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६७४ ॥ श्लो

॥ दोहा ॥

॥ राजकुमर यौवन लह्युं, सकल कलानो जाण ॥ मत्स्योदर साथे
राखे नेह सुजाण ॥ १ ॥ जाणे एणे जीवित दीयुं, उपकारी शिर
मत्स्योदर आवे यदा, तव आधुं चाले काम ॥ २ ॥ एक दिन रथ
चढ्यो, गज वेसी नृपनंद ॥ पुर मांहे एक धवल गृह, दीठुं नयन
॥ ३ ॥ शूरराजनी पुत्रिका, श्रीपेणा इति नाम ॥ कुमरे दीठी क्रीडती,
गवाक्षे ताम ॥ ४ ॥ रूपे रति दासी करी, चंचल गति सुकुमार ॥
नयणी मनमोहनी, फूली सुरतरु माल ॥ ५ ॥ गति भूली गयो कुमर
सुरति रही न लगार ॥ मन वेध्युं मन्मथ सुभट, नयणबाण सविव
॥ ६ ॥ गौरंगी ते गोरडी, कालेजानी कोर ॥ कोरीने पेठी वचे, जुल
करे ते जोर ॥ ७ ॥ मन विण जड पाछो वल्यो, वनछुती नृपजात ॥
आव्यो पण कोइनो, न गमे तस संघात ॥ ८ ॥ कुमरीना मनमां नही
ते उपर लवलेश ॥ पण ते मूरख एकलो, रागे सहे कलेश ॥ ९ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ महेतोजी खणावे वावडी ॥ ए देशी ॥ लही मित्रमुखे ते वातडी,
पति मंत्री बोलावे रे ॥ शूर समीपे मोकल्यो, जइ वात सवे समजावे रे
१ ॥ जगत मोह्यो विपयनी वासना ॥ ए आंकणी ॥ सवि जीव विपयना
सो रे ॥ सुर नर पण करे अहोनिश, मन मांहे विपयनी आशो रे
ज० ॥ २ ॥ शूर कहे सवे स्वामीनुं, तुमे ए आवी शुं दाख्युं रे ॥ राज-
म शिर उपरे, अमे वयण तुमारुं राख्युं रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कहे कुमरी जो
आपशो, तो पलकमां प्राणने काढी रे ॥ नाखीश पण हुं नहीं वरुं, ए राज-
एम त्राडी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मंत्रीने मन मांहे उपन्यो, ए वात सुणीने
वपादो रे ॥ कुमरी तो इछे नहीं, जुउ राजकुमर उन्मादो रे ॥
५ ॥ मंत्री कहे महाराजने, नहीं ते ...

में एहवुं, जेहथी उपजे वेरागो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ राय कहे नृपनी कनी, परणावुं अपार सुकुमारी रे ॥ शुं निर्मोही उपरे, मोही रह्यो अंग निहाली रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ कुमर न माने वातडी, कामिनीए कामण कीधुं रे ॥ मांहि पेसी माहरुं, एणे तन मन चोरी लीधुं रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ विण परणे अन्न न वावरुं, पालव साह्या विण पाणी रे ॥ पीवुं नहीं पण में कह्युं, नहीं उपर चोखो वाणी रे ॥ ज० ॥ ए ॥ जुर्ड वात सबल बांधे पनी, बेहु पासे हठीलां एह रे ॥ पासे रही पीलाइये, सुण मंत्रीश्वर गुणगेह रे ॥ ज० ॥ १० ॥ कन्या नवि माने बापनुं, मुज कहण न माने पुत्र रे ॥ एम हठ लीधे आकरे, केम मंगाशे घरसूत्र रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ एहवे मरूपोदर आवीयो, कहे स्वामी सचिंता दीसो रे ॥ शे कारण मुज आगले, प्रकाशो ते अवनीशो रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ समजावो जइ तुम मित्रने, एणीये हठ लीधो गाढो रे ॥ शीखामण देइ करी, एहनी खटक हैयेथी काढो रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ धनद कहे सुणो मित्रजी, श्यो एकपखो ए नेह रे ॥ ए चंचल तरुणी कारणे, कांइ सबल दकाडो देह रे ॥ ज० ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोइ पंखीयां ॥ ए देशी ॥ सांजल मित्र कहुं, तुज आगल विनति ॥ रखे मन राखो राग, रमणीनो एक रति ॥ ए रमणी रमणीय, देखाडी जातिने ॥ चोरी ले चित्तमाल, लजावे जातिने ॥ १ ॥ नाखे मुख निःश्वास, न आवे निंदडी ॥ उलस वासल थाय, के ऊक नहीं एक घनी ॥ मन्न रहे मलवाने, रात्रि दिवस रुनी ॥ उंघ मांहि तस ध्याने, उठे आरनी ॥ २ ॥ पामे अवस्था कंप, अने श्रम स्वेदनी ॥ मूर्छा ग्लानि पलहाय, लघुता मेदनी ॥ अवगुण एम अनेक, देखीना उपजे ॥ ते तरुणीनी संगते, गुण श्यो नीपजे ॥ ३ ॥ जण जण सेंनी प्रीति, न कीजे प्रेमनी ॥ निग्चर कसोटी एह के, आतम हेमनी ॥ आदरनो ठापासुन, वेणो तेहने ॥ पररमणीनी लालच, लागी जेहने ॥ ४ ॥ नावे मन विश्वास, न इजन स्वकर्मे ॥ परियागतनुं पाणी, उतारे पल-कर्मे ॥ रात्रि दिवस गलीर्उमां, हींडे हेरतो ॥ हियकामां कुध्यांननी, माला फेरतो ॥ ५ ॥ रात्री देखावे रंग ज्युं, कणयरनी कली ॥ विफरी करे विपरीत,के वायस ज्युं घली॥ व्याधि महा निर्नाम के,मदिरा हटिकी ॥ तेहवुं

ते छे काम, रीति महा कष्टकी ॥ ६ ॥ संकट विषम सम राज, हुंती पंथ
जाणीये ॥ त्रिक तजवा एक पंथ, मांहे मन आणीये ॥ पर विनता
विधवा निज, गणिका नारीथी ॥ पंथ होवे धन्य तेह जे, विरम्या चारथी
॥ ७ ॥ सात व्यसनमां दोय, कह्यां छे नारीनां ॥ पंथ मांहे वली चार,
नरकनां वारणां ॥ ते मांहे पण बीजुं, एह कह्युं सही ॥ एम जोतां
ए वातनी, सघले ना कही ॥ ८ ॥ धनद कहे सुण कुमर, कनकप्रज
नृपना ॥ मूकी थो हठ एह, घटे नहीं रूपना ॥ राम कहे भवि शील,
सुणीये इकमना ॥ मूको विषयनी टेव, जिहां अवगुण घणा ॥ ए ॥
इति शीखामण फक्की ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे राजकुमर उत्तर हवे, सुणो
मत्स्योदर मन राखी रे ॥ दोष नहीं ए वातमां, जे परणीजे सहु साखी रे
॥ ज० ॥ १५ ॥ वहेला थइ हवे मुजने, परणावो ए कनी सारी रे ॥ वारं-
वार शुं दाखवुं, तुमे महोटा छो उपकारी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ मति
आरत जाणी तेहनी, मणिसमरणथी ततकाल रे ॥ चित्त फर्युं कुमरी
तणुं, वरवाने थइ उजमाल रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ तव शूर कहे नृप
आगले, तुम सुत उपर रलीयातो रे ॥ स्वामी सुता थइ माहरी, सुणी
हरख्यो साते धातो रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ लग्न लेइ उतावलां, विवाह कर्यो
मनरंगे रे ॥ धन बहुलुं राये तिहां, खरच्युं मन धरी उत्तरंगे रे ॥ ज० ॥
॥ १ए ॥ कहे धनदकुमरने राजवी, तुमे उपकारी शिरताजो रे ॥ जीवित
आप्युं पुत्रने, सार्यां अम वांछित काजो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे
खंडे पचवीशमी, ए ढाल कही मुनि रामे रे ॥ सज्ञान ते जगमां सही,
… अवसर आवे कामे रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१२ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपने शिरे, शूलव्यथा अति जोर ॥ थइ आवी तेणे अति
…, करे महीपति सोर ॥ १ ॥ रोग निवारण मणि थकी, धनदे कर्यो
…र ॥ नृप मान्यो सुतथी अधिक, जाणी तस उपकार ॥ २ ॥ इण
…सर तिण नयर वन, शीमंधर अभिधान ॥ मुनिवर आवी समोसर्या,
… सुणी राजान ॥ ३ ॥ बहु परिवारे वांदवा, आवे धनद समेत
…हीने बेठा सवे, मुनि कहे संकेत ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ आज सखी शामलीयो ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ राग मारु ॥ कहे मुनिवरजी हितकारी, तुमे धर्म करो नर नारी ॥ ए तो प्रवहणनी परे तारे, जवसायर पार उतारे ॥ १ ॥ एहनी बांहे वलग्या जेह, सुख सादि अनंत लह्यां तेह ॥ जे ए सुखमां रह्या माता, ते नरने बेहु जवे शाता ॥ २ ॥ सागार अने अणागार, बिहुं नेदे कह्यो निर्धार ॥ कारण शिवपदनां दोय, परंपर अनंतर जोय ॥ ३ ॥ मन साथे कलंक लगावे, तो दुःख मिश्रित सुख पावे ॥ महणाक परे ते माटे, निःकलंक करो सुख साटे ॥ ४ ॥ कहो स्वामी कवण महणाक, तुमे जाखो अनोपम वाक ॥ गुरु कहे जरते शुज ठाम, एक रत्नपुराजिध गाम ॥ ५ ॥ निवसे शुनदत्त व्यवहारी, तस नारी वसुंधरा सारी ॥ तस कूख सरोवरे जायो, महणाजिध पुत्र सुहायो ॥ ६ ॥ ते आव्यो यौवन रंगे, परण्यो रमणी सुख संगे ॥ रहे जामिनीशुं नित्य जीनो, जाये यौवन पूर नदीनो ॥ ७ ॥ एक दिन रयनी असवारी, पहोतो उद्यान मकारी ॥ तिहां रंग रसे बहु रमीया, मंमप बेसीने जमीया ॥ ८ ॥ फरी चाल्या वन जोवाने, मुनि उजो दीगे ध्याने ॥ रह्यो चंपक तरुनी ठाया, मुनि कंचनवरणी काया ॥ ए ॥ प्रजुशुं एक तान लगाया, नहीं मन ममता ने माया ॥ मन आनंद अधिको पाया, वंद्या मुनिवरना पाया ॥ १० ॥ मुनि ध्यान संपूरण कीधो, उपदेश यथोचित दीधो ॥ शुद्ध देव धर्म गुरु तत्त्व, समकित मारग ए सत्व ॥ ११ ॥ समकित सुरवृक्ष अमूल, वैमानिक सुख जस फूल ॥ शिवपद फल आपे साचो, समकित गुणमां जवि राचो ॥ १२ ॥ नहीं ए उपरांत रतन्न, एहना घणा करजो यतन्न ॥ नहीं एहथी बंधव दूजो, दरिसण गुणने जवि पूजो ॥ १३ ॥ क्षयोपशम विचार, वेदक क्षायिक गुण सार ॥ सास्वादन पंचम जाणुं, समकितना नेद वखाणुं ॥ १४ ॥ मिश्र समकित मिथ्या मोह, अणाचार सबल बली जोह ॥ ए सातना क्षय उपशमथी, क्षायिक उपशम सद्दहंती ॥ १५ ॥ वेद कह्यो ए चरम प्रदेशे, सास्वादन वमने देशे ॥ प्रदेशे वेदन हुंते, खयोवसम कह्युं जगवंते ॥ १६ ॥ ए सहित योगीन्द्री धर्म, आराध्यो दे शिवशर्म ॥ महणाक सुणी प्रतिबुझ्यो, समकित श्रावकव्रत लीधो ॥ १७ ॥ गुरु वांदी आव्यो निज पुरमां, जिन

धर्म वस्यो निज उरमां ॥ मंमाव्यो जिनप्रासाद, खरचे धन मन आह्लाद ॥ १८ ॥ बहु धननो व्यय थयो जाणी, कर्मे तस मति मुंजाणी ॥ जाएयुं घोडे थाशे आठुं, खरचंतां न जोयुं पाठुं ॥ १९ ॥ जाग्यो उत्साह टरीने, बेठो संतोष करीने ॥ वली लोकामहथी कदापि, प्रतिमा जिननी लेइ स्थापी ॥ २० ॥ स्थापीने प्रतिष्ठा करावी, लीधो लाहो धनने वावी ॥ वली एक दिन चिंते हीणो, मन ध्यान शुद्धमां लीणो ॥ २१ ॥ धन चोथो भाग ए धर्मे, करवो एम कह्युं शास्त्रमें ॥ ए तो अधिक इहां खरचाणुं, फलशे के नहीं शुं जाणुं ॥ २२ ॥ एम संशय मनमां धरतो, जिनपूजादिक आदरतो ॥ एक दिन मुनियुग घर आव्युं, उठीने तेणे पमिलान्युं ॥ २३ ॥ वलीया वलतुं मन नाव्युं, फल दीतुं नहीं कांइ फाव्युं ॥ मले मेलुं देखी भील, तेणे कीधी डुगंछा अवील ॥ २४ ॥ हा हा माह्या पण चूके, कोइने कर्म न मूके ॥ वली कीधो पश्चात्ताप, मुज महोटुं लाग्युं पाप ॥ २५ ॥ ए निर्मल अंग सदाइ, मुजने माठी मति धाइ ॥ एम अशुभ ने शुभ बेहु बांधी, ऋद्धि भुवनपतिनी लाधी ॥ २६ ॥ चवीने थयो धनदकुमार, जेम बांध्युं तिम लह्युं सार ॥ मन ऊहापोह करंत, लह्युं जातिसमरण तंत ॥ २७ ॥ कहे मुनिने जोमी हाथ, जग तुंही अनाथनो नाथ ॥ मुज वीतक सघली वात, तुमे परकाशी भली भांति ॥ २८ ॥ तुम ज्ञान तणी बलिहारी, भव फरतो राख्यो उपगारी ॥ लेशुं दीक्षा तुम पासे, माय तायने पूठी उल्लासे ॥ २९ ॥ मुनि वंदी आव्यो गेह, ढाल छवीशमी कही एह ॥ रामविजय कही खंम बीजे, धन्य जे गुरुवचने रीझे ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ७७७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्स्योदर आवी कहे, पितर भणी कर जोमी ॥ अनुमति आपो मुजने, संयम लहुं मन कोमि ॥ १ ॥ मात पिता कहे जातने, जिहां तुं तिहां अमे साथ ॥ वाट जोवंतां आवीयो, घणे दिहाडे हाथ ॥ २ ॥ नृपति पण निसुणी कहे, वाहाला विण श्यो वास ॥ हे उपगारी ताहरो, हुं घमी न महेलुं पास ॥ ३ ॥ कनकध्वज निज कुमरने, बेसाड्यो नृप राज ॥ पोते सज्ज थइ नीसर्यो, संयम लेवा काज ॥ ४ ॥ धनद धनावह पुत्रने,

सोंपी घरनो भार ॥ मात पिता नारी सहित, वरवा निर्वृति नार ॥ ५ ॥ बहु परिवारे परवस्था, आव्या श्रीगुरु पास ॥ उभा कर जोमी कहे, दीक्षा द्यो गुणराशि ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ ऋषजदेव मोरा हो ॥ ए देशी ॥ अब मोहि तारो हो, दयानिधि पार उतारो हो ॥ जवजयथी हुं उजग्यो, आव्यो तुम नेरो हो ॥ अ० ॥ दयानि० ॥ ॥ १ ॥ नाथ मुनि पटूकायना, कीजे मुने चेरो हो ॥ तारक जाणीने सही, मन मान्यो मेरो हो ॥ द० ॥ २ ॥ स्वामी अनादिनी मूढता, हुंती हुं घेस्यो हो ॥ अब तो विण ए वंदीने, कुण राखे अनेरो हो ॥ द० ॥ ३ ॥ काज विचारी कीजीये, न पमे ज्युं फेरो हो ॥ कहे गुरु विलंब न कीजीये, होये कर्म निवेरो हो ॥ द० ॥ ४ ॥ चिहुं जण साथे पंचमे, श्री धनदकुमारे हो ॥ दीक्षा गुरु पासे मही, रहे उग्र विहारे हो ॥ द० ॥ ५ ॥ चारित्र चोखुं पालतां, मुनि निरतिचारे हो ॥ साथे साधु तणी क्रिया, प्रमाद निवारे हो ॥ द० ॥ ६ ॥ थिविर मुनि पासे जएया, आगम आचारे हो ॥ वृषन परे धोरी थया, धुरा धर्मनी धारे हो ॥ द० ॥ ७ ॥ करी अणसण आराधना, शुक्लध्याननी धारे हो ॥ काल करीने उपन्या, सुरलोक मकारे हो ॥ द० ॥ ८ ॥ सुख वैमानिक देवनां, इणी परे पाले हो ॥ वरस असंख्य खगे तिहां, वलतां अवतारे हो ॥ द० ॥ ९ ॥ तिहांथी विदेहे पंचमे, उत्तम कुल सारे हो ॥ मनुजपणे संयम मही, पहोता शिवठारे हो ॥ द० ॥ ॥ १० ॥ ए मत्स्योदरनी कथा, मुनि कही मनोहारे हो ॥ अमिततेजाए सांजली, मनने सुविचारे हो ॥ द० ॥ ११ ॥ ते माटे तुमने कहुं, खेचर अवधार हो ॥ धर्म निरंतर कीजीये, शिवसुख दातार हो ॥ द० ॥ १२ ॥ गुरुआणा शिर उपरे, राय धारी ते वारे हो ॥ साचे दिल अरिहंतनी, जक्ति सवाइ धारे हो ॥ द० ॥ १३ ॥ नवमंगल मुनि चालीया, जिहां जैनविहार हो ॥ अमिततेज श्रीविजयजी, सुख विलसे अपार हो ॥ द० ॥ १४ ॥ ढाल यह सत्यावीशमी, खंम बीजे उदार हो ॥ रामविजय कहे से नवा, जे राखे आचार हो ॥ द० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ श्लोक २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमिततेज श्रीविजयजी, ए बेहु राजान ॥ राजनीति इणी परे,

पाले सुगुणनिधान ॥ १ ॥ यात्र करे जिनवर तणी, बेहु प्रकारे तेह ॥
नंदीश्वर वैताढ्यनी, सीमा नगनी जेह ॥ २ ॥ वरस प्रत्ये महोटी करे,
त्रण यात्र गुणवंत ॥ दोय नंदीश्वर द्वीपनी, एक सामानिक संत ॥ ३ ॥
चैत्र मास उज्ज्वल पखे, तेम वली आसो मास ॥ नंदीश्वर उत्सव करे,
आठ दिवस उल्लास ॥ ४ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ अष्टापद गिरि यात्र करणकुं ॥ ए देशी ॥ नंदीश्वर वर द्वीप अनोपम,
जिहां जिनगृह बावन ॥ तेह तणो संबंध संक्षेपे, कहुं सुणो सहु साजन
॥ १ ॥ भविका भाव धरीने सार, जिनवर यात्र करीजे ॥ टाली मिथ्या
मति निर्धार, नरभव लाहो लीजे ॥ ए आंकणी ॥ एक शत कोमी अने वली
त्रेसठ, कोमी चोराशी लाख ॥ योजन नंदीश्वर वर पहोलो, ए आगमनी
साख ॥ भ० ॥ २ ॥ तेह तणे मध्ये अति महोटी, चिहुं दिशे चिहुं चिहुं
वापी ॥ जंबूद्वीप प्रमाण ए भाखी, ऊंडी नहींय कदापि ॥ भ० ॥ ३ ॥
एकेकी वापीने अंतरे, दधिमुख एक गणीजे ॥ दधिवरणा सोले एक सरिखा,
आगम मांहे भणीजे ॥ भ० ॥ ४ ॥ एकेकी वापीने अंतर, रतिकर दो दो
कहाइ ॥ वर्णे कनक सरिखा सुंदर, बत्रीश चिहुं दिश लहीये ॥ भ० ॥ ५ ॥
वावोनी बचमां चिहुं दिशे एक एक, अंजनगिरि एम चार ॥ सहस्र चोराशी
योजन ऊंचा, अंजन जिम आकार ॥ भ० ॥ ६ ॥ एवं बावन पर्वत
उपरे, बावन जिनप्रासाद ॥ चोबारां ध्वज वापी विराजित, दीठडे
होय आह्लाद ॥ भ० ॥ ७ ॥ शत योजन आयाम कहीजे, पचास योजन
पहोलां ॥ बहोंतेर योजन ऊंचां जिनघर, यात्र करे पुण्य बहुलां ॥ भ०
॥ ८ ॥ चारे द्वार विराजे सुंदर, ऊंचा योजन सोल ॥ मुखमंमप रंग-
मंमप रुमा, दीठे होवे रंगरोल ॥ भ० ॥ ए ॥ पूर्व दिशे ऋषभानन
स्वामी, दक्षिणे जिन वर्धमान ॥ पश्चिम दिशे चंद्रानन उत्तर, वारिषेण भग-
वान् ॥ भ० ॥ १० ॥ चोसठसें ने वली अमतालीश, प्रतिमा संख्या
कहीये ॥ पंच शत धनुष प्रमाण ऊंची, जिनआणा शिर वहीये ॥ भ०
॥ ११ ॥ मूल गंभारे एकेक पासे, पमिमा सत्यावीश ॥ चैत्यथुभ चिहुंनी
गणशुं, एम एकसो चोवीश ॥ भ० ॥ १२ ॥ ते बावन गुणी तव

मारग चाले चतुराइ, नहीं मन मांहे खोटा रे ॥ रं० ॥ ४ ॥ परपरिवादे मूक सरिखा, परगुण लेवा शूरा रे ॥ पंगु परस्तुं धन हरवाने, परमैश्वर्यना पूरा रे ॥ रं० ॥ ॥ ५ ॥ तिण नगरीमां स्तिमितसागर इण, नामे नृपति गाजे रे ॥ सज्जन जन रंजन उपकारी, दुःखीयानां दुःख जांजे रे ॥ रं० ॥ ६ ॥ न्याये साजो यशश्री ताजो, सबलो जेहनो आजो रे ॥ पट् गुण जाणे सवि सुख माणे, न खहे कोइ तस माजो रे ॥ रं० ॥ ७ ॥ शीयलगुणे पूरी वली वच नूरी, रमणी दोय अति रूमी रे ॥ मोहनगारी रमजम करती, हाथे सोवन चूमी रे ॥ रं० ॥ ८ ॥ एक वसुंधरा बीजी अनुधरा, चाले पतिने छंदे रे ॥ धर्म लीणी देव गुरुने, नित्य उठीने वंदे रे ॥ रं० ॥ ए ॥ हवे प्राणतथी अमिततेजानो, जीव चवीने अवतरीयो रे ॥ वसुंधरानी कूखे धाम, नाग्यवशे गुण दरियो रे ॥ रं० ॥ १० ॥ सूतां मध्यरयणीने समये, दीग अति श्रीकारो रे ॥ गजवर पद्मसरोवर शशिधर, वृषन वली ए चार रे ॥ रं० ॥ ११ ॥ हलधर जनम तणां ए सूचक, दीगं रमणी रुमां रे ॥ कंत कहे तुऊ उज्ज्वल वर्णे, सुत होशे नहीं कूमा रे ॥ रं० ॥ १२ ॥ प्रसव्यो सुत तेणे पूरण मासे, उत्सव कीधा सबला रे ॥ सुत सोनागी कुलनो दीवो, चिरं जीवो कहे अबला रे ॥ रं० ॥ १३ ॥ हर्ष धरीने "अपराजित" रुडुं, नाम उव्युं निज ताते रे ॥ वाधे उज्ज्वल बीज तणो जिम, अहोनिश रयणीकांत रे ॥ रं० ॥ १४ ॥ बीजो ते सुरलोकथी चवीयो, मणिचूलामर नामे रे ॥ राणी अनुधरा कुखे आव्यो, रत्न ए पूरण कामे रे ॥ रं० ॥ १५ ॥ सिंह तरणी पूर्णकुंज लक्ष्मी, रयणसमुदय दरियो रे ॥ निर्धूम अग्नि ए साते देखे, जब कूखे अवतरीयो रे ॥ रं० ॥ १६ ॥ प्रीतमने परकाशे पद्मिनी, साच कहो मुऊ स्वामी रे ॥ वहालेश्वर राते में दीठां, सुहणां नहीं कांइ खामी रे ॥ रं० ॥ ॥ १७ ॥ स्तिमितसागर नरवरे बोलाव्या, शास्त्र तणा बहु जाण रे ॥ वासुदेव सुत होशे बलीयो, प्रकट्यो पुण्यनिधान रे ॥ रं० ॥ १८ ॥ दान देइने तेहने बोलाव्या, अनुक्रमे सुत सोनागी रे ॥ मध्यनिशा प्रसव्यो पुण्यवंतो, नाग्यदशा एम जागी रे ॥ रं० ॥ १ए ॥ नाम "अनंतवीर्य" तस स्थापे, हियडे हर्ष धरीने रे ॥ बेहु सुतने उत्संगे माता, तेडे लाम करीने रे ॥ रं० ॥ २० ॥ पुत्र तणो उदरे अम आवी, हर्ष घणा उपजाव्या रे ॥

सुतजी तुम मुख देखी थमचां, दुःख सवि दूर नसाव्यां रे ॥ रं० ॥ ११ ॥ सकल कला शीखी लघु वयथी, अनुक्रमे योवन आयो रे ॥ सुख विलसे परणी नृपकन्या, दिन दिन चढत सवायो रे ॥ रं० ॥ १२ ॥ त्रीजे खंमे पहेली ढाले, रामविजय कहे वाणी रे ॥ वेहु बंधव सुख विलसे बहुलां, नेह निविम गुणखाणी रे ॥ रं० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१ ॥ श्लोक गाथा मलीने ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिण नयरीए, उपशमजले अगाध ॥ शमदमवंता आवीया, नामे स्वयंप्रन्न साध ॥ १ ॥ समवसस्या वनन्नूमिका, मुनि महंत महनीय ॥ शूरा थइ सूधा सहे, जे जे ठे सहनीय ॥ २ ॥ एहवे रयवामी चढ्यो, स्तिमितसागर राजान ॥ वलतां विशामा नणी, आव्यो तिण उद्यान ॥ ३ ॥ दीठो मुनि कंकेली तरु, नीचे निश्चल ध्यान ॥ साधे योगदशा नली, मुनि रहीयो एक तान ॥ ४ ॥ वंदी कर जोमी कहे, धन्य धन्य गुणपात्र ॥ धन्य धरामां ते नरा, जे करे तुम्हारी यात्र ॥ ५ ॥ तुम पेखे पावन थयां, मुफ लोचन महाराज ॥ कृपा करी द्यो देशना, गिरुआ गरीब निवाज ॥ ६ ॥ काउस्सग पारी प्रेमशुं, वेग उत्तम गम ॥ कहे उपदेश सोहामणो, शमरसगुणना धाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नणंद हठीली ॥ ए देशी ॥ सुण सुण रे राजन् रढीयाला, कडुआ ए कषायना चाला रे ॥ सुण राजन् रढीयाला ॥ ए आंकणी ॥ सुवसन ने वली फूल, माणसने मेले धूल रे ॥ सु० ॥ इह नव परनव दुःखदायी, एह साथे अनादि सगाइ रे ॥ सु० ॥ १ ॥ दोष नामे जग धंधोल्यो, तव स्तिमितसागर नृप बोल्यो रे ॥ सु० ॥ प्रन्नु कहो एहना कति न्नेद, केम ाम्यो एहथी खेद रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कहे मुनिवर दोषथी हुवा चार, ाष्यो एहनो विस्तार रे ॥ सु० ॥ पहेलो क्रोध ने बीजो मान, माया त्रीजी लोन्न थमान रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जुर्ज क्रोध थकी शुं थावे, अहोनिश तम अवटावे रे ॥ सु० ॥ एह मान थकी मति जावे, अठता पण गुण रावे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ माया विषवेली समाणी, ते गुण ढंकण सुपरे जाणी रे सु० ॥ लोन्न नवि टकवा दे मनने, जाणे मेलुं मेलुं बहु धनने रे ॥ सु० ॥ एकेकना न्नेद ठे चार, कहे मुनि करुणाजंमार रे ॥ सु० ॥ क्रोध

पहेलो अनंतानुबंधी, न टले जेहनी केइ संधि रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ करे समकित गुणनो घात, एहथी होय नरकनिपात रे ॥ सु० ॥ कह्यो पथ्थर रेख समाणो, वर्जे एह ते धन्य जाणो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ बीजो क्रोध अप्रत्याख्यान, पृथिवीरेखा उपमान रे ॥ सु० ॥ रहे वरस लगे ए जाणो, श्रावकव्रत वेलाए आणो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तिर्यंचगतिमां पहोंचाडे, पछे बहु जव मांहे जमाडे रे ॥ सु० ॥ प्रत्याख्यानावरणीय ए त्रीजो, हणे साधुना गुणनुं हेजो रे ॥ सु० ॥ ए ॥ वेलुनी रेखा सरिखो, आपे मनुज तणी गति निरखो रे ॥ सु० ॥ जलरेखा सम संज्वलणो, चोथो रोध करे ज्युं वलनो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ न आवन दे यथाख्यात गुणने, सूधा पण समण माहणने रे ॥ सु० ॥ गति नापे देवनी सारी, म करो ए क्रोधशुं यारी रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ चारेनो एकज ढंग, विरुउं ए साथे प्रसंग रे ॥ सु० ॥ जन्म वर्ष अने चोमासी, पक्ष स्थिति अनुक्रमे जाषी रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ स्थंज पाषाण अस्थि ने काष्ठ, तृण सम चिहुं मान अनिष्ट रे ॥ सु० ॥ वंशमूल वली मींढसिंग, गोमूत्रा वलेह सुचंग रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ माया चिहुं जेदे जाखी, सुणो लोज उपम चित्त राखी रे ॥ सु० ॥ कृमिराग अने वली पंक, अंजन हरिद्रानो रंग रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ एम थाये जेद ए सोल, एह वरजे ठाकमठोल रे ॥ सु० ॥ अति आदरथी जे सेवे, तेहने बहु जव दुःख देवे रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ ते माटे कषाय न करवा, शिवनारी उपाय ए वरवा रे ॥ सु० ॥ थोडा पण ए सेव्या माठा, नजरे जोतां केइ नाठा रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ मित्रानंदादिक नडीया, कषाय तणे वश पडीया रे ॥ सु० ॥ कहे स्तिमितसागर मुनिराया, कुण तेह जे तुमे गाया रे ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ कहे मुनि महानुजाव सुणीजे, सुणी ज्ञान तणुं फल लीजे रे ॥ सु० ॥ मित्रानंदादिक वात, कषाय उपर अवदात रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ त्रीजे खंडे बीजी ढाल, जाखी ए रंगरसाल रे ॥ सु० ॥ कहे रामविजय जवि प्राणी, सुणजो सद्गुरुनी वाणी रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

वंता, कहे मुनि इण जरते जलुं, अमरतिलक पुर सार ॥ अमरपुरी सम स्थापे, दिजिहां धन धान्य अपार ॥ १ ॥ सुखीयां लोक सहु वसे, दुःखी ॥ रं० ॥ २० जम ॥ मकरध्वज नामे जलो अनिराम ॥ २ ॥ मदन-

सेना तस सुंदरी, राणी रूपनिधान ॥ सकल कलाए शोजती, प्रीतमु
बहु मान ॥ ३ ॥ गुणवंती गोरी निपुण, चाले गजगति मत्त ॥ मानवती
पण कंथने, चाले अनुदिन चित्त ॥ ४ ॥ यडुक्तं ॥ दोहो ॥ माणिणी तित्तउ
माण करे, जीत्तउ कंत सुहाय ॥ जे लाखीणी वाणही, तोहि पहेरीजे पाय
॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ एम सागर कछप समी, सुखमां वाहे काल ॥ पण ते सबली
चोरटी, पीयुचित्त चोरणहार ॥ ५ ॥ सही ए चोर ते मानीये, जे हुवे चित्तह
चोर ॥ धण कण कंचन जे हरे, चोर नहीं ते ढोर ॥ ६ ॥ तेहनी कुखे उपन्यो,
पद्मकेसर अजिधान ॥ राजकुमर रलीयामणो, सोहे सुगुणनिधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ अंबरीयोने हूजे रे जटियाणी राणी वरु चूवे ॥ ए देशी ॥ एक दिन योगे
हो राजेश्वर राणी महोलमे, वेठा रंग विलास ॥ केश समारे हो सुकुलिणी
निज वासम तणा, धरती हियडे उल्लास ॥ १ ॥ जग मांहे जोजो
हो जोरावर आणा मोहनी ॥ ए आंकणी ॥ दिलजर दंपती दोय ॥ रंगे
रमाने हो न जगाने सूता जीवने, नाखे डुर्गति सोय ॥ ज० ॥ २ ॥
पलीयुं निहाली हो एक जामा जाखे नृपने, स्वामी दूत निहाल ॥
आव्यो अलवेसर हो आजुनो ए उतावलो, जोयुं चिहुं दिशे जाल ॥
॥ ज० ॥ ३ ॥ दूत को न आवे हो अलवेली एणे मंदिरे, चिहुं पासे रे
जूआर ॥ रहीया ठे चोकी हो ठेलाठेले माहरा, हाथ महीं हथियार ॥
॥ ज० ॥ ४ ॥ हांसुं न कीजे हो रंगीली राणी रंगमें, उपजावी मुफ ज्रांति ॥
तुं जो निहाले हो तो मुफ नजरे केम आवे नहीं, सबली कौतुकवात ॥
॥ ज० ॥ ५ ॥ हेजे हरिणाक्षी हो हांशीली हरखीने कहे, पीयुं शुं बोल्याजी
घोल ॥ कहिए तुम आगल हो वालमजी में कीधी नहीं, कूमी हांसी निटोल
॥ ज० ॥ ६ ॥ राय विमासे हो तमासे वात किसी कहे, तव राणी शुज वेश ॥
लइ देखाड्यो हो मननो संशय वारवा, शिरनो उज्ज्वल केश ॥ ज० ॥ ७ ॥
दूत जरानो हो स्वामीजी ए आव्यो सही, कहेवा करणनी पास ॥
हुशियार रहेजो हो हुं आवुं हुं उतावली, सुणी नृप चिंते विमासी
॥ ज० ॥ ८ ॥ धिक् धिक् मुफने हो में पूर्वज रीति न आदरी,
...तें सांजी मांहे लीह ॥ पलीयाची पहेलां हो जे ऋद्धि मूकीने नीसर्या,
...जावुं हवे जीह ॥ ज० ॥ ए ॥ राजा चिंतवति ॥ हाप सुपने न

पसाय ॥ हे मंत्रीश्वर ताहरुं, फलीयुं भाग्य सहाय ॥ ५ ॥ वात लही दैवज्ञथी, सुतहुंती ए कष्ट ॥ राखी पेटीमां तनय, कर्युं काम में इष्ट ॥ ६ ॥ श्रीजिनधर्मप्रभावथी, थइ विघ्न उपशांति ॥ अयश टव्युं वेला वली, वाधी वमणी कांति ॥ ७ ॥ आव्यो एह निमित्तथी, मन वैराग्य अपार ॥ सुत स्थापी निज पद विन्हे, लीधो संयमभार ॥ ८ ॥ सुगते गया बेहु मुनि, साध्युं आतम काज ॥ अमरदत्त कहे मित्र एम, व्यंतर आणो बाज ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हांरे मोरा वालमा ॥ ए देशी ॥ कहे अमरदत्त सुण मित्रानंद, करशुं काम विमास ॥ मोरा वालमा, हांरे मोरा बांधवा, हांरे मोरा साजना ॥ ए आंकणी ॥ कलीया वलीया आगले रे जाइ, जाये व्यंतर नासी ॥ मो० ॥ १ ॥ तुफ उगारण काजे आपण, जाशुं बे परदेश ॥ मो० ॥ तुफ मुफ प्रीति बनी अति गाढी, जिहां तुं तिहां सही देश ॥ मो० ॥ २ ॥ जाइ ठेह न देवो तुफने, जिहां लगे घटमां प्राण ॥ मो० ॥ शी चिंता चित्तमां धरो रे जाइ, मोजी तुं महेराण ॥ मो० ॥ ३ ॥ सात फगलानी प्रीतफी रे राखे, साजन जीवित सीम ॥ मो० ॥ नेह करी दीये नेहजो रे वालमा, मित्र नहीं ते गनीम ॥ मो० ॥ ४ ॥ मित्रानंद सुणी बोलीयो रे ॥ बंधवा ॥ तुं सुकुमार शरीर ॥ मो० ॥ सुख मूकी परदेशफे रे ॥ बं० ॥ केम सहेवाशे पीफ ॥ मो० ॥ ५ ॥ कहे अमर जे प्रीतिना रे ॥ बं० ॥ बोल्या बहु परे बोल ॥ मो० ॥ मुफ घटमां तुफ नेहलो रे ॥ बं० ॥ बेठो जेम रंगचोल ॥ मो० ॥ ॥ ६ ॥ ए अवसर आवी पड्ये रे ॥ बं० ॥ केम रहुं नेहने नाखी ॥ मो० ॥ तुफ विण सवि शून्युं इहां रे ॥ बं० ॥ तुं तो मोरी आंख ॥ मो० ॥ ७ ॥ एकमना थया ते बन्ने रे ॥ बं० ॥ जुठे जुठे नेहनी वात ॥ मो० ॥ नेह निवेडे ते भला रे ॥ बं० ॥ जननीजाया सुजात ॥ मो० ॥ ८ ॥ काम पडे कूदी चले रे ॥ बं० ॥ कलिमां जूबो कुजात ॥ मो० ॥ कामवेला आवी मले रे ॥ बं० ॥ खाये मारी लात ॥ मो० ॥ ए ॥ माखण साजन बेहुमां रे ॥ बं० ॥ सज्जन अति सुकुमाल ॥ मो० ॥ तापे माखण बीघरे ॥ साजनां ॥ प्रतापे ततकाल ॥ ॥ मो० ॥ १० ॥ सोनुं सुपुरुष चंदना रे ॥ सा० ॥ आपण पीफ खमंत ॥ ॥ मो० ॥ कुल कसवटे जाणीये रे ॥ सा० ॥ परउपकार करंत ॥ मो० ॥ ॥ ११ ॥ तुंब कटुक तंती निरसा रे ॥ सा० ॥ दारुक सूकुं तेम ॥ मो० ॥ खर

आलापे मीठमा रे ॥ सा० ॥ संयोगे गुण एम ॥ मो० ॥ १२ ॥ नावेशुं हवे सांजलो रे ॥ सा० ॥ त्रीजे पंचमी ढाल सुजाति ॥ मो० ॥ रामविजय कहे रंगशुं रे ॥ सा० ॥ जगमां जोइ लीजे जाति ॥ मो० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १४७ ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ करी विचार मनशुं खरो, चाल्या बंधव दोय ॥ ठाना मात पिता थकी, कर्म करे सो होय ॥ १ ॥ जोतां पुर वन वाटिका, नव नव ख्याल विनोद ॥ अनुक्रमे बेहु आवीया, पाटलीपुरे प्रमोद ॥ २ ॥ नाही पुष्करिणीजले, पावन कीधां अंग ॥ पुर पेसंता पेखीयो, एक प्रासाद सुचंग ॥ ३ ॥ दंम कलश ध्वज कोरणी, सुंदर शोजा सार ॥ जिनप्रासाद करावीयो, धन्य तेहनो अवतार ॥ ४ ॥ धर्मठामे धन वावरे, तो पाम्युं परमाण ॥ पामीने खरचे नहीं, तस जीव्युं अप्रमाण ॥ ५ ॥ जोतां शोजा तेहनी, अमरदत्ते एक दीठ ॥ पांचाली पाषाणनी, मनडुं जाय वइठ ॥ ६ ॥ रूप देखी रामा तणुं, चित्रे लखीयुं तेह ॥ अहो अजब गति मोहनी, मनमां लाग्यो नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥ मन लोजाणुं तेहनुं, जोइ रह्यो अनिमेष ॥ अंग अवयव निरखतो, नवि लाज गणंतो रेख रे ॥ १ ॥ बंधव माहरा ॥ शुं थयो मूढ अजाण रे, देवघर साहरा ॥ शा ढंग चतुर सुजाण रे, दीसे ताहरा ॥ ए आंकणी ॥ पाषाण केरी पूतली रे, दीसे ते सुंदर रूप ॥ ए मांहे शुं मोही रह्यो रे, में लह्युं ताहरुं रूप रे ॥ बं० ॥ २ ॥ आज मोह्यो तुं पूतली रे, काले मोहीश नारी ॥ तो केम पूरुं ताहरुं रे, में पडे मित्र विचार रे ॥ बं० ॥ ३ ॥ परदेशे पंथे चालतुं रे, पग पग सुंदर नारी ॥ मित्र नजर न मांमीये रे, ए आपणो आचार रे ॥ बं० ॥ ४ ॥ तुं चाल महारा मित्रजी रे, एक वार नगर मकार ॥ तुने रूप जोवुं सांजरे रे, मुने जूख लागी अपार रे ॥ बं० ॥ ५ ॥ पंथ सम नहीं को जरा रे, दारिद्र सम नहीं कष्ट ॥ मरण सम जय को नहीं रे, वेयणा जूख अनिष्ट रे ॥ बं० ॥ ६ ॥ कहे अमर सुण मित्रजी रे, में एह नवि मूकाय ॥ इहां थकी पग उपाकतां रे, महारुं मन अकलाय रे ॥ बं० ॥ ७ ॥ जोइ कमल सरिखुं मुखडुं रे, एहना अधर लाल गुलाल ॥ एह जम्मर अणियाली जली रे,

अहो जुर्ज एहनुं चाल रे ॥ वं० ॥ ८ ॥ तुने जूख लागी वाल्हा रे, जूख नागी जोइ ॥ क्षण एक एहनो संग न तजुं रे, मुजने न कहेशो रे ॥ वं० ॥ ए ॥ हुं देखी मोह्यो एहने रे, मह्यारे ए जीवनप्राण ॥ मित्र मनमां फुःख धरे रे, ए हुर्ज कवण विन्नाण रे ॥ वं० ॥ १० ॥ चिंता मह्यारी विसरी रे, ए थइ सवली पीर ॥ एम हृदय जिंतर फुःख धरे जरे ते नयणे नीर रे ॥ वं० ॥ ११ ॥ वेहु गाढ स्वरशुं रुवे रे, सवि सांज घरवार ॥ वैरागरंग विना नहीं रे, कोइ मोहनो उपचार रे ॥ वं० ॥ १ तेह वेलामां आवीयो रे, प्रासादकारक शेठ ॥ रोइने कांइ थार्ज फुःखीय कोण करशे तुम वेठ रे ॥ वं० ॥ १३ ॥ हुं रत्नसारा निध जलो रे, तुमे दाग फुःख मुज ॥ वात विण जाखे हुंते रे, केम जणाये अगुज रे ॥ वं १४ ॥ हवे वात कहेशे चित्तनी रे, सुणो खंन त्रीजे ढाल ॥ राम कहे फुःखनंजन रे, धन्य धन्य जे उजमाल रे ॥ वं० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा १६ए श्लो

॥ दोहा ॥

॥ मित्र कहे सुण तातजी, ए मुज मित्र अजाण ॥ शुं जाणुं ए शुं थयुं, मोह्यो रूप पहाण ॥ १ ॥ शेठे समजावी कह्युं, पण नवि राग ॥ शेठ सचिंतो चिंतवे, आणी मन वैराग ॥ २ ॥ कामणगारी कामि मोह्यो सघलो लोक ॥ सुर नर किन्नर जोलव्या, ए जग महोटो श ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ तावन्मौनी यतिर्ज्ञानी, सुतपस्वी जितेंड्रियः ॥ यावन्न योषि दृष्टि,-गोचरं याति पुरुषः ॥ १ ॥ दोहो सोरठो ॥ तप जप संयम त नर साधे निरतां घणां ॥ हिये न लागे जाम, नयणबाण नारी त ॥ ४ ॥ मित्रानंद कहे शेठजी, शो करशुंज उपाय ॥ कुण रमणीनुं ए, मुजने कहो समजाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नयण सलूणा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ शेठ कहे सुणो जाइल लो, खरा दीसो गे रे कालिया रे लो ॥ खबर नहीं ए अमने रे लो, क रमणी कहुं तुमने रे लो ॥ १ ॥ अढे कारीगर एहनो रे लो, सोपारक जेहनो रे लो ॥ शूर नामे सूत्रधार ठे रे लो, ते एहनो करनार वे लो ॥ २ ॥ मित्रानंद कहे एहनी रे लो, सार करो जो देहनी रे लो ॥ ख लेइ आवुं सही रे लो, शेठजी उत्तर द्यो वही रे लो ॥ ३ ॥ शेठ

सुणो नावीया रे लो, परदेशी तुमे आवीया रे लो ॥ आवो अमारे घेर
प्राहुणा रे लो, मत मन मांहे राखो मणा रे लो ॥ ४ ॥ करशुं तुम्हारी
चाकरी रे लो, जे अमथी थाशे खरी रे लो॥शेठे वात अंगीकरी रे लो,
अमरने मित्र कहे फरी रे लो ॥ ५ ॥ जो तुमो आपो जी आगना रे
लो, तो जइ जोइ आवुं अंगना रे लो ॥ अमर कहे परदेशडे रे लो, केम
मूकाय इण वेशडे रे लो ॥ ६ ॥ तुक डुःख वातज सांजली रे लो, चूकी
जाय मोरी कागली रे लो ॥ मूकुं तुक अलगो परो रे लो, ते उंघ वेचीने
उजागरो रे लो ॥ ७ ॥ तुकथी अलगो हुं नवि रहुं रे लो, सुख डुःख वात
कोने कहुं रे लो ॥ जेम जीवाय तेम जीवशुं रे लो,श्वास तिहां लगे शीव-
शुं रे लो ॥ ८ ॥ मित्र कहे जाख्युं खरुं रे लो, पण तुक डुःख टाखुं म्हरुं
रे लो ॥ पण मैं तुक पासे रही रे लो, आरत न खमाये सही रे लो
॥ ए ॥ आवीश हुं दो मासमां रे लो, मत मन पामो विमासमां रे
लो ॥ तुक पासे मुक जीवको रे लो, तुं मुक हृदयनो दीवडो रे लो ॥
॥ १० ॥ कष्टे समजाव्यो घणुं रे लो, हा कही मन करी हमणुं रे लो ॥
अमरने सोंपी शेठने रे लो, पोते चल्यो पुर ठेठने रे लो॥ ११ ॥ जुर्ठ प्रीति
ए थाकरी रे लो, परदेशमां एम चाकरी रे लो ॥ प्रीति ए चंदर दीवनुं रे
लो, प्रीति परम सुख जीवनुं रे लो ॥ १२ ॥ पहोतो तेह सोपारके रे
लो, फूठंतो फरी घर पारके रे लो ॥ ढुंढता शूरने सांजल्यो रे लो, चिंत
मनोरथ सही फल्यो रे लो ॥ १३ ॥ करनी वेची मुद्रकी रे लो, वेश
अपस शिर पाघकी रे लो ॥ ठाठ बनायो दीपतो रे लो, देवकुमरने
जीपतो रे लो ॥ १४ ॥ आव्यो रे उन्नट आपणे रे लो, शूर सुतारने
आंगणे रे लो ॥ उठीने ते उजो थयो रे लो, सान आठ पग साहामो
थयो रे लो ॥ १५ ॥ जाग्य जे राज पधारीया रे लो, काज कहो उपगा-
रीया रे लो ॥ मित्र कहे हवे आदरे रे लो, देवकुल काज ठे मादरे रे
॥ १६ ॥ तुमे कोइ ठाम कारीगरी रे लो, करी होय तो कहोने खरी
लो ॥ कहे कारीगर ताननां रे लो. पालसीपुर उद्यानमां रे लो ॥
७ ॥ देवल मैं कर्युं मोहतुं रे लो, देव दानव मन मोहतुं रे लो ॥
शोले तुमे कादरे रे लो, कुमर कहे हा सांजरे रे लो ॥ १८ ॥ पण
एक पंचालिका रे लो ॥ उपम पर्मी ए कोनी पालिका रे लो ॥

शूर कहे मद्दसेननी रे लो, पुत्र अवंतीना ईशनी रे लो ॥ १९ ॥ र
मंजरी कुंवरी जसी रे लो, तस अनुसारे करी पूतली रे लो ॥ सुणी कहे अ
ह्मा घर्ची रे लो, देवकुल मंमावा तणी रे लो ॥ २० ॥ अवसर तुम
तेमावशुं रे लो, एम कही चाल्यो सजावशुं रे लो ॥ हर्षे धरीने आवीय
रे लो, नयरी अवंती मन जावीयो रे लो ॥ २१ ॥ सांजलो साह
वास्ता रे लो, जे इहां निपजशे कथा रे लो ॥ त्रीजे खंडे ढाल सातमी
लो, माजन जन मन संक्रमी रे लो ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १९६ ॥ श्लोक

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] आवीयो, नगरी अवंती मझार ॥ पोल तणी रखव
लिश, देखीने दरबार ॥ १ ॥ पंथीना देवल शरण, के सरोवरनी पाल
[illegible] कोइ [illegible], जेम जेम पडे विचाल ॥ २ ॥ मन मांहि चिंते माहर
[illegible] जो [illegible] ॥ थाये तो सूधी रहे, माहारी महोटी माम ॥ ३
[illegible] जिहां रातनो, पहरो आव्यो एक ॥ पूछे दोवारिक प्रत्ये, पग
[illegible] विवेक ॥ ४ ॥ ते कहे सांजल पंथीया, ए नगरीनी वात
[illegible] छे घणो, निश न रहे जब रात ॥ ५ ॥ ईश्वर शेठ त
[illegible], मांड मने पाखोक ॥ पहोंनी पोल जमी तदा, मन मांहि ध
[illegible] ॥ ६ ॥ रावने राखे रात्रिमां, माहरिक शिरदार ॥ देशे सहु
दीनार सम, [illegible] नर्णो ए विचार ॥ ७ ॥ मित्रानंद मन चिंतवे, ध
विण काज न होय ॥ तिण कारण अंगीकरुं, अवसर एहवो जोय ॥ ८

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी [illegible] ॥ मित्रानंद कहे माहरे रे लाल, मोले पा
धन ॥ मन [illegible] रे ॥ चार पहोर रयणी तणा रे लाल, रायना क
[illegible] ॥ म० ॥ १ ॥ माहरमथी मनि मंदने रे लाल, माहरा गुणनुं गे
॥ म० ॥ काने कुंडल [illegible] रे लाल, आंखे आंजण रेह ॥ म० ॥ सा०
॥ २ ॥ [illegible] तम आपीयुं रे लाल, ईश्वरे नाणुं आथ ॥ म० ॥ पे
घरी [illegible] रे लाल, मित्रानंद निराबाध ॥ म० ॥ मा० ॥ ३ ॥ न
[illegible] जिहां रे लाल, [illegible] रयणी मझार ॥ म० ॥ हाकहुंनी र
[illegible] रे लाल, न [illegible] कोइनो मार ॥ म० ॥ मा० ॥ ४ ॥ कायरने कर
[illegible] रे लाल, न [illegible] कोइ ॥ म० ॥ दक्षि न दीठे [illegible]

रे लाल, वागे जगमां कोय ॥ म० ॥ सा० ॥ ५ ॥ रयणी गइ रवि ऊगीयो रे लाल, शबनो कर्यो संस्कार ॥ म० ॥ शेष रह्युं जाडुं न दे रे लाल, ईश्वर खल शिरदार ॥ म० ॥ सा० ॥ ६ ॥ मित्रानंद कहे जो हशे रे लाल, एणे नगरी कोइ राय ॥ म० ॥ तो माहरुं रहशे नहीं रे लाल, लेशुं हाक वजाय ॥ म० ॥ सा० ॥ ७ ॥ ऊठी चाल्यो चहुवटे रे लाल, सत्यदाता रे सार ॥ म० ॥ उन्नट वेश बनावीयो रे लाल, गयो गणिका घरबार ॥ म० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तिलकमंजरी उठी थइ रे लाल, दीधुं बहु सन्मान ॥ म० ॥ आप्युं आसन बेसवा रे लाल, उठी जोडी पाण ॥ म० ॥ सा० ॥ ९ ॥ राज पधार्या आंगणे रे लाल, आज फली मोरी आश ॥ म० ॥ खीजमत करशे ए सुता रे लाल, वसंततिलका खास ॥ म० ॥ सा० ॥ १० ॥ आवो मंदिर माहरे रे लाल, साची सुरतरु जेम ॥ म० ॥ रंगे रमो इण मालीये रे लाल, जेम मन माने तेम ॥ म० ॥ सा० ॥ ११ ॥ आपे मनमोदे करी रे लाल, चारसें तस दीनार ॥ म० ॥ धन देखी रीझी घणुं रे लाल, धन मोहन संसार ॥ म० ॥ सा० ॥ १२ ॥ भक्ति युक्ति कीधी भली रे लाल, ढाली सुंदर सेज ॥ म० ॥ पुत्री पासे मोकली रे लाल, सांझ समय धरी हेज ॥ म० ॥ सा० ॥ १३ ॥ उठी आगल आवीने रे लाल, सुररमणी अनुहार ॥ म० ॥ मधुर स्वरे बोले हसी रे लाल, मानिनी करे मनोहार ॥ म० ॥ सा० ॥ १४ ॥ नयणविलासे चालवे रे लाल, सुर नर असुरनां चित्त ॥ म० ॥ जल जोलाव्या भामिनी रे लाल, ले हरी तन मन वित्त ॥ म० ॥ सा० ॥ १५ ॥ जोर करी युवती घणां रे लाल, नाखे नयननां बाण ॥ म० ॥ पण कुंवर भेदे नहीं रे लाल, चिंते एम सुजाण ॥ म० ॥ सा० ॥ ॥ १६ ॥ विषयासंगे वाहीया रे लाल, काम न थाये सिद्ध ॥ म० ॥ मन राख्युं हटकी घणुं रे लाल, कहे उत्तर धरी बुद्धि ॥ म० ॥ सा० ॥ १७ ॥ समरण करवुं माहरे रे लाल, लावो आसन एक ॥ म० ॥ सोवनपट मांड्यो तिहां रे लाल, बेठो तिहां सुविवेक ॥ म० ॥ सा० ॥ १८ ॥ ओढण उंढी उपरे रे लाल, बेठो जपवा जाप ॥ म० ॥ भाव देखाडे भामिनी रे लाल, पण नवि डोल्यो आप ॥ म० ॥ सा० ॥ १९ ॥ एम रयणी बोली गइ रे लाल, प्रमदा हुइ निराश ॥ म० ॥ धन्य ते जगमां साहसी रे लाल, न पडे रमणीपाश ॥ म० ॥ सा० ॥ २० ॥ ढाल भणी ए आठमी रे लाल, त्रीजे खंडे रसाल ॥ म० ॥ रामविजय कहे सांभलो रे लाल, आगल थइ उजमाल ॥ म० ॥ सा० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥मा आगल पुत्री कहे,रात तणो विरतंत ॥ मुक सामुं जाल्युं नहीं, ध्यान धर्युं एकांत ॥ १ ॥ कहे अक्का उलट धरी, पुत्री एह रतन्न ॥ खटपट मांकी वश करो, एहना घणा यतन्न ॥ २ ॥ बीजे दिन तिमहीज कह्युं, पण नवि सोच्यो तेह ॥ अक्का रीसाणी कहे, इयो पाखंम नित्य एह ॥ ३ ॥ राजकुमरने जेहनुं, दरिसण देव डुर्लंन ॥ ए मुक तनुजा उतरी, स्वर्ग थकी मनु रंज ॥ ४ ॥ ते साहामुं निरखो नहीं, शी तुम मनमां आश ॥ मन सुधी वातो करी, किम थइ रह्या उदास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥पासे पेपे थावरी नानी ॥ ए देशी ॥ कुमर कहे सवि रुडुं थाशे, जे तुमे फरेशो ते फरशुं रे ॥ पण पूछुं ते वात प्रकाशो, बोल थकी नवि फरशुं ॥ १ ॥ सोदागण नाखोने, तुमे नृपकुमरीने जाणो के, ना मुक दाखोने ॥ ए आंकणी ॥ ते साथे एक काम छे माहरे, कागलीयो छे देवो रे ॥ कांइक संदेशो जाणीने, पाछो पडुत्तर लेवो ॥ सो० ॥ २ ॥ कहे अक्का मुक पुत्री साथे, तेहने प्रीति छे जाकी रे ॥ कहो ते वात कहीने आवुं, ए कामे हुं राजी ॥ ३ ॥ कुमरजी नाखोने ॥ अम साथे जीवनजी आज, अंतर मन राखोने ॥ ए आंकणी ॥ ते आगल जइने एम कहेवुं, गुण जेहना मुखी छत्रुसी रे ॥ तें जेहने कागल लखीयो तस, आव्यो मित्र छे सिखरी ॥ कु० ॥ ४ ॥ अक्का राजकुमरीनी पासे, आवे राग धरीने रे ॥ कल्याण आदर देइ बोलावी, बोले प्रीति करीने ॥ कु० ॥ ५ ॥ तुज वासे· सरनो संदेशो, हुं कहेवाने आवी रे ॥ विस्मित राजकन्या मन चिंते, ए शुं बोले चावी ॥ सो० ॥ ६ ॥ कुण मुक वचन कुमरी नाखे, तव अक्का तिहां बोली रे ॥ मित्रानंद कह्याव्युं सघलुं, नाख्युं मनडुं खोली ॥ सो० ॥ ७ ॥ कुमरी विमासे हुं कोण ते कोण, नाम अमरदत्त जेहनुं रे ॥ पण कांइ कूडी रचना दीसे, नाम न जाणुं तेहनुं ॥ सो० ॥ ८ ॥ पण जेणे कूड रचना कीधी, तेहने नजर निहाळुं रे ॥ एम विमासी अक्काने नाखे, वाळ वचन रसाळुं ॥ सो० ॥ ९ ॥ जेणे मुक वचन वात प्रकाशी, तेहने तेडी आवो रे ॥ गोख तणे मार्गे रंगीलो, माहरे तेहनुं दावो ॥ सो० ॥ १० ॥ सुणी हरखी अक्का गइ गेहे, वात कुमरशुं कीधी रे ॥ रात समे तेडी

कुंवरने, आवी गोखे सीधी ॥ सो० ॥ ११ ॥ वप्रवलय जिहां सात विराजे, राजमंदिर अति रुडुं रे ॥ तिहां ए कन्यामंदिर सुंदर, दीसे मोरनुं इंडुं ॥ सो० ॥ १२ ॥ तेहने गोख अछे मनमोहन, इहां जो तुमथी जवाये रे ॥ तो वहेला जावो मनोवांछित, कारिज सहेजे थाये ॥ सो० ॥ १३ ॥ कुट्टिनीने बोलावी चलतो, प्लवंग परे देइ फाल रे ॥ राजभुवनना कोट उलंघी, पहोतो जइ ततकाल ॥ सो० ॥ १४ ॥ चिंते अक्का कोइ अतुल बल, पुरुषप्रधान ए दीसे रे ॥ एम चिंतवती गेहे आवी, धरती हियडे जगीश ॥ सो० ॥ १५ ॥ कन्यामंदिर आव्यो कुंवर, देखीने विसय पामी रे ॥ कोइ सबल शूरीनो जायो, नहीं बल मांहे खामी ॥ सो० ॥ १६ ॥ निद्रा कपट करीने सूती, तस चर्याने धारे रे ॥ निद्रावश देखी नामांकित, कंकण करनुं उतारे ॥ सो० ॥ १७ ॥ छुरिका लेइ दक्षिण जंघे, व्रण करी तेणे रेख रे ॥ जेम आव्यो तेम पाछो वलीयो, हियडे हर्ष अलेख ॥ सो० ॥ ॥ १८ ॥ कुमर ते नहीं सामान्य ए, पण में जावा दीधो रे ॥ डाही हती पण सबली चूकी, नवि बोलाव्यो सीधो ॥ सो० ॥ १९ ॥ मित्रानंद जइ देवकुलमां, राते सुखमां सूतो रे ॥ कुमरी नयणथी निद्रा नाठी, दिल ते मांहे खूतो ॥ सो० ॥ २० ॥ आवे जंघ करावे सबली, थये प्रभाते जाग्यो रे ॥ हीसे हर्ष धरी हियडामां, पासो पड्यो मुह माग्यो ॥ सो० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंडे नवमी ढाले, वात रसिक सुणो साची रे ॥ रामविजय कहे मित्रता न कही, काम पडे जे काची ॥ सो० ॥ २२ ॥ २५२ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चिंते मित्रानंद ते, अर्ध दाम अवशेष ॥ ईश्वर मुझ दीधा नहीं, पण लेवा मीन न मेष ॥ १ ॥ जुवो ते ठग मुझने मल्यो, जांग्या जेणे मुझ दाम ॥ पण दरबारे जाइने, करवुं ए में काम ॥ २ ॥ चिंती चल्यो उतावलो, आव्यो राजदुवार ॥ रुदन करे महोटे स्वरे, ऊभो ते दरबार ॥ ३ ॥ राय सुणी तेडावीयो, कां एम रडे अपार ॥ न्याय नहीं इण नयरीए, मुझ धूत्यो निर्धार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ देशी ॥ कहे राजा सुण पंथी वापडा रे, केम रुवे छे आम ॥ शुं धूतीने लीधुं ताहरुं रे, कहे मुझ तेहनुं

नाम ॥ १ ॥ सुण राजेश्वर माहरी विनति रे, कहुं तुम आगल वाच ॥ मात पिता नृप देव गुरु आगले रे, निश्चे जाखवुं साच ॥ सु० ॥ २ ॥ लोकपाल ताहरी नवि लेखवी रे, आणा जेणे उतार ॥ देश तणो इहां ईश्वर वाणीयो रे, ते सवलो धूतार ॥ सु० ॥ ३ ॥ राख्युं राते तेहना ताननुं रे, मडकुं में महाराज ॥ जांग्युं अरधुं जाकुं माहरुं रे, वेद्य वैरी हुवे काज ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुकम करो आरक्षक नर जणी रे, बांधी आणो आज ॥ दीयो शिखामण सूधी तेहने रे, जिण लोपी मुज लाज ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ तेहवे निसुणयुं तेणे वाणीये रे, फरीयादी हुई तेह ॥ लेइ दीनारने दोमी आवीयो रे, साहमो नृपने गेह ॥ सु० ॥ ६ ॥ आप्या हाथोहाथ तेहने रे, कहे नृपने कर जोमी ॥ ते दिवसे कारजनी व्यग्रता रे, नापी शक्यो ए खोम ॥ सु० ॥ ७ ॥ दिवस बे त्रण लगे लोकाचारमां रे, थीला ए मुज वांक ॥ लोक सहु कहे शाहुकारमां रे, आमो वाल्यो आंक ॥ सु० ॥ ८ ॥ राये खुशाल थइ बोलावीयो रे, ते पहोतो निज घेर ॥ नृप पूछे तव मित्रानंदने रे, शव राख्युं शी पेर ॥ सु० ॥ ९ ॥ कहे स्वामी सुण ते रयणी समे रे, शव रक्षणने हेत ॥ बेठो छुरिका लेइ हाथमां रे, प्रथम प्रहर संकेत ॥ सु० ॥ १० ॥ दारुण फेरी शिव तव सांजल्यो रे, जिणे फूटे ब्रह्मांम ॥ प्रगटी पिंगलरोम शियालिणी रे, हुं रह्यो धीर अखंम ॥ सु० ॥ ११ ॥ बीजे प्रहरे प्रगटी राक्षसी रे, कृष्णवर्ण अति घोर ॥ मुज पासे बीहाणां चिहुं दिशे रे, पण न चल्यो तस जोर ॥ सु० ॥ ॥ १२ ॥ त्रीजे प्रहरे आवी शाकिनी रे, रे रे कुण तुं रंक ॥ मं हांकी टशांकी ते गइ रे, जाणुं कोइ निःशंक ॥ सु० ॥ १३ ॥ चोथे यामे यत्र-विजूषिता रे, दिव्याजरण अमूल्य ॥ छूटे केशे कर कातो ग्रही रे, धीरज मेरु तूल्य ॥ सु० ॥ १४ ॥ में मन जाण्युं ए मारी सही रे, जेहनो पुरमां सोर ॥ छुरिका लेइ हुं साहमो धस्यो रे, करयुं माही जोर ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ नासत लागी कर लोलावीने रे, तस कंकण मुज हाथ ॥ आव्यो प्रत्र रेखा जांघे करी रे, छुरिकाए में नाथ ॥ सु० ॥ १६ ॥ नाठी सूरज उग्यो एहवे रे, हुं आव्यो तुम पास ॥ वचन सुणी अनरिजनुं राजीयो रे, बोल्यो चित्त विमास ॥ सु० ॥ १७ ॥ धीर पुरुष मुज देखाडो तुमो रे, कंकण देवीनुं मित्त ॥ निज नामांकित देखीने तदा रे, राय

हुर्ड चलचित्त ॥ सु० ॥ १८ ॥ शुं मुज पुत्री दीसे मारिका रे, तस कंकण सही एह ॥ देहचिंतामिषे करीने आवीयो रे, नृप पुत्रीने गेह ॥ सु० ॥ ॥ १९ ॥ सूती दीठी विण कंकण बालिका रे, हा हा प्रगट्युं पाप ॥ तिम वृणस्थानक पाटो देखीने रे, उपन्यो मन संताप ॥ सु० ॥ २० ॥ हा हा कुल निर्मल मेलुं कीयुं रे, इण पापिणीए आज ॥ लोक सहु मार्यां हत्यारीए रे, खोवरावी मुझ लाज ॥ सु० ॥ २१ ॥ ते माटे वहेली बाहार करुं रे, नहींतर सघलां लोक ॥ मारे ए चंमालिणी आकरी रे, श्यो हवे एहनो शोक ॥ सु० ॥ २२ ॥ राजसनाए पाठो आवीयो रे, बेठो नृप उदास ॥ जोजो नवियण तुमे जावे करी रे, करुर्ड कर्मविलास ॥ सु० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंडे दशमी ढालमां रे, चित्त फरीयुं नरराज ॥ रामविजय कहे धूर्त्तकला थकी रे, विहि पण आवे वाज ॥ सु० ॥ २४ ॥ स० ॥ २०० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति ते वेसारीयो, मित्रानंद नजीक ॥ शुं साहस के मंत्रबल, जाखो वचन तहकीक ॥ १ ॥ कुलक्रमागत माहरे, मंत्र अछे वली एक ॥ पण साहस विण नवि फले, सुण राजन् सुविवेक ॥ २ ॥ सना विसर्जावी तदा, बेहु बेठा एकांत ॥ नृप कहे महारी पुत्रिका, मारी सही नहीं भ्रांति ॥ ३ ॥ हवे उपकारी तुं मल्यो, तेहनो कर निस्तार ॥ कहे कुंवर तुम कुल तणी, किम एहवी होय नारी ॥ ४ ॥ नृप जणे संशय किस्यो, जलद उपनी जोय ॥ जलधारा जनने हणे, कहो कुण कारण सोय ॥ ५ ॥ हिम सहेजे शीतल हुवे, पण बाले वनराइ ॥ ए अंतरनी वारता, कोणे कली न जाय ॥ ६ ॥ जाणुं कुलमां उपनी, कल्पवेली उपमान ॥ पण जनमूल उछेदवा, थइ कुहाडी समान ॥ ७ ॥ मित्र कहे महाराजजी, म करो फिकर लगार ॥ नजरे देखाको मुने, करशुं तस उपचार ॥ ८ ॥ राय कहे जाइ जुर्ड, कन्या मंदिर मांहे ॥ सूती उठी सा जुए, आवंतो उत्साह ॥ ॥ ९ ॥ जेणे मुज कंकण हर्युं, हुरीप्रहार ए दीध ॥ ते ए नर होवे सही, एम मन निश्चय कीध ॥ १० ॥ राजहुकम विण इण समे, आवे नहीं निःशंक ॥ आसन मांड्युं बेसवा, मूकी मन निःशंक ॥ ११ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ देशी हमीरियानी ॥ कुमारी कहे कर जोमीने, कुण काजे तुमे आज

॥ कुमरजी ॥ मंदिर आव्या माहरे, महेर करी महाराज ॥ कु० ॥ १ ॥ वात कहो मुऊ मन तणी॥ ए आंकणी ॥ राते आव्या तुमे रंगशुं, वल फोरवी आवास ॥ कु० ॥ कंकण लीधुं माहरुं, काम कीधुं ए खास ॥ कु० ॥ वा० ॥ २ ॥ मत जाणो ऊंघी हती, हुं कपटे रही एम ॥ कु० ॥ पण परमंदिर पेसीने, काम कर्युं ए केम ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जडे में तुऊने दीयो, कूडो एह कलंक ॥ कु० ॥ दोष सहु ए माहरो, तुं सूधो निःकलंक ॥ रसीली ॥ वा० ॥ ४ ॥ राजा आपशे तुऊ जणी, महारे हाथ सुजाण ॥ रसीली ॥ जो तुऊने गमतुं होवे, तो लेइ जाउं गण ॥ र० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जो न रुचे तो तुऊने, करुं निःकलंक सनूर ॥ र० ॥ कहो मुऊ ए बेहु वातमां, गमती पुण्यपडूर ॥ ॥ र० ॥ वा० ॥ ६ ॥ सांजली कन्या चिंतवे, तद्गुण रंजी तोर ॥ र० ॥ प्रेम अकृत्रिम एहनो, मुऊ उपर अति जोर ॥ र० ॥ वा० ॥ ७ ॥ अंगीकरीये दुःखने, पण नवि मूकुं एह ॥ र० ॥ राजलाज सोहलो कह्यो, डुल्लहो साजन नेह ॥ र० ॥ वा० ॥ ८ ॥ वलतुं बोले सुंदरी, सुजग सुणो अरदास ॥ कु० ॥ प्राण ए आधीन ताहरे, जिहां तुं तिहां मुऊ वास ॥ ॥ कु० ॥ वा० ॥ ए ॥ सिद्ध मनोरथ ते कहे, जडे ए अवधार ॥ र० ॥ तुऊ शिर जश वांडुं यदा, तव मूके फिटकार ॥ र० ॥ वा० ॥ १० ॥ ते पण कुमरीए आदर्युं, अहो अहो मोहनो बंध ॥ कु० ॥ नेह सहे एम दुःखकां, जगमां ए महोटो धंध ॥ कु० ॥ वा० ॥ ११ ॥ राय समीपे आवीयो, कहे कुमरी मुऊ साध्य ॥ राजनजी ॥ कहे नृप हवे उतावला, काढो एह असाध्य ॥ साजनजी ॥ वा० ॥ १२ ॥ वाहन आणो एहवुं, जाय निशा परदेश ॥ रा० ॥ जो बचे सूरज उगशे, तो आवशे फरी देश ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ राजा जय पाम्यो घणो, वायुवेगा इण नाम ॥ रा० ॥ जातीली वमता दीये, असवारीने काम ॥ रा० ॥ ॥ वा० ॥ १४ ॥ संध्यासमये नृपसुता, आणी केरो काली ॥ रा० ॥ नृपआदेशे सेवके, मोरी तेहने तत्काल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ सरसर वांटे तेहने, सामो करे फिटकार ॥ र० ॥ जय पाम्यो नरवर तिहां, भांजे अंग अपार ॥ र० ॥ वा० ॥ १६ ॥ गाढ स्वरे हांकी तिहां, सर्वे शांत स्वभाव ॥ र० ॥ मंत्रशक्ति कोइ आकरी, सबलो एहनो प्रभाव ॥ र० ॥ वा० ॥ १७ ॥ शान करे राजा तिहां, एह न अवशी

धात ॥ र० ॥ वाहाली पण वैरिणी थइ, सवली कर्मनी वात ॥ र० ॥ वा० ॥ १८ ॥ वरुवा उपर हाथशुं, बेसारी ते बाल ॥ र० ॥ साथ संभ्रेकण चालीयो, पोल सुधी भूपाल ॥ र० ॥ वा० ॥ १९ ॥ हवे चाढयो लेइ चोंपशुं, मित्रानंद कुमार ॥ र० ॥ मन मांहे चिंते माहरो, सफल थयो अवतार ॥ र० ॥ वा० ॥ २० ॥ वरुवा चाले उतावली, सा कहे वेसो आवी ॥ कु० ॥ कुमर कहे सीम लंघीने, बेसीश दिल तुं लाव ॥ र० ॥ वा० ॥ २१ ॥ इण एक परवली कुंवरी, लंघी देशनी सीम ॥ र० ॥ फरी कहे वेसो इहां हवे, केम लेइ रह्या नीम ॥ कु० ॥ वा० ॥ २२ ॥ कुमरी कहे कारण जे अछे, प्रकाशो हवे तेह ॥ कु० ॥ अंतर में राख्यो नहीं, तो शियो पटंतर एह ॥ कु० ॥ वा० ॥ २३ ॥ में तुमने आण्या सही, मूकावी कुललाज ॥ लालजी ॥ मुक अर्थे मत जाणजो, लाइ अमरदत्त काज ॥ र० ॥ वा० ॥ २४ ॥ वात समग्र कही तिहां, मित्रानंद उदार ॥ ला० ॥ मत चिंता करजो मने, करशुं घणी मनोहार ॥ ला० ॥ वा० ॥ २५ ॥ ते माटे एक आसने, बेसवुं न घटे मुक ॥ ला० ॥ वात सुणी विस्मित थइ, समजी सघलुं गुह्य ॥ ला० ॥ वा० ॥ २६ ॥ मृगनयणी मन चिंतवे, अहो अहो पुरुषरतन्न ॥ देवरजी ॥ लाग्ये मल्यो मुकने सही, उत्तम एहनुं जतन्न ॥ कु० ॥ वा० ॥ २७ ॥ जे तरुणीने कारणे, मात पिता वली बंधु ॥ कु० ॥ बंधीने बांछे कामने, पुरुष घणा कामंध ॥ कु० ॥ वा० ॥ २८ ॥ घूक न देखे दिवसमां, रात न देखे काक ॥ कु० ॥ कामी न देखे अहोनिशे, चीकणो विषयनो वांक ॥ कु० ॥ वा० ॥ २९ ॥ मनोहर रूप ए माहरुं, नवयौवन ए वेष ॥ कु० ॥ देखे पण डोले नहीं, हुं जइ पाय पडेश ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३० ॥ स्वार्थे सहु को दुःख सहे, पण परमारथ कोय ॥ कु० ॥ परदुःखे दुःखीया होये, ते जग विरला जोय ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३१ ॥ यतः ॥ विरला जाणंति गुणाः० ॥ १ ॥ धन्य धन्य ए जग प्रीतडी, जेहवी दूध ने नीर ॥ ॥ कु० ॥ आप छतां निज बंधुने, उपजावे नहीं पीर ॥ कु० ॥ वा० ॥ ॥ ३२ ॥ यदुक्तं ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः, क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा ह्यात्मा कृशानौ हुतः ॥ गंतुं पावकमुन्मनस्तदभवद्दृष्ट्वा तु मित्रापदं, युक्तं तेन जलेन शाम्यति पुनर्मैत्री सतामी-

देशी ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ वात करे मनमोदशुं, धन्य धन्य मुज अवतार ॥ ॥ कु० ॥ जे तुमे मुज आवी मल्या, ते त्रूठ्यो किरतार ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३३ ॥ रत्नमंजरी साथे हवे, चालतां अनुक्रमे सोय ॥ कु० ॥ पाडलीपुर निरख्युं तिहां, नयणां हर्षित होय ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३४ ॥ त्रीजे खंडे अग्यारमी, रामविजय कही ढाल ॥ रंगीली ॥ अमर तणो हवे हर्षशुं, सुणो संबंध रसाल ॥ रं० ॥ वा० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२५ ॥ श्लोक ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमरदत्ते इण अवसर, प्रतिदिन जोइ वाट ॥ पण बंधव आव्यो नहीं, मनमां सबल उचाट ॥ १ ॥ चिंते चित्तमां माहरो, मित्र गयो परदेश ॥ कागल कोइ आव्यो नहीं, वली नाव्यो संदेश ॥ २ ॥ हा हा शुं होशे थयुं, नाव्यो मित्र अमूल्य ॥ वेग में पेदा कर्युं, पेटने मशली शूल ॥ ३ ॥ हुं जेहवो मूरख नहीं, जगमां को वेशुद्ध ॥ आगलबुद्धि कुब उपन्यो, पण थयो पाछलबुद्धि ॥ ४ ॥ जोष तुमे जुउं जोषीया, आवे किवारे मित्र ॥ आज काल सहु एम कहे, पण न पडे खरी रीत ॥ ५ ॥ मास दोय पूरा हुवा, रत्नसारने आम ॥ अमर कहे हवे माहरे, जीव्यानुं नहीं काम ॥ ६ ॥ शेठ कहे वत्स शुं कहुं, तुजने वयण अनिष्ट ॥ वहेलो मलशे ताहरो, मित्रानंद अभीष्ट ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ राउल कहे उभी रहो ॥ ए देशी ॥ अमर कहे सुण तातजी, मुज मित्र न आव्यो ॥ पूछ्या पंथे पंथीया, पण केणे न बताव्यो ॥ अम० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शुं ते राह भूल्यो हशे, किहांनो क्यांहीं जाशे ॥ मंदिर मारा प्रेमनो, मन घणुं अकलाशे ॥ अ० ॥ २ ॥ में सुखकारण मूकीयो, दुःख लीधुं उदेरी ॥ ते मुज काजे विदेशमां, देतो हशे फेरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ सार्थ कीधो बावहो, पण मित्र न कीधो ॥ पण ए देव ठे पाधरो, वमणो दुःख दीधो ॥ अ० ॥ ४ ॥ नीसर्यो हुं जस दुःखना, विसारण माटे ॥ साहमो पाड्यो ते मित्रने, सबले उचाटे ॥ अ० ॥ ५ ॥ हवे वहेली विरचो चिता, काष्ट भक्षण करवुं ॥ मुज माटे मूउं ते सही, माहरे पण मरवुं ॥ अ० ॥ ६ ॥ शेठे घणी ना ना कही, हठीए हठ लीधो ॥ अति आग्रह देखी करी, तव आक्रंद कीधो ॥ अ० ॥ ७ ॥ लोक मल्यां बहुलां

तिहां, सहुए एम वारे ॥ पण राख्यो न रहे किमे, कुंवर ते तिवारे ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ वन मांहे काष्ठचिता रची, बहु नागर साथे ॥ चाल्यो चिता पासे आकरो, काल्यो न रहे बाथे ॥ अ० ॥ ए ॥ लोक कहे आज अवधिनो, ठेल्लो दिन रहीने ॥ काले पठी करजो तुमे, जाणो तिम वहीने ॥ ॥ अ० ॥ १० ॥ मान्युं कहण ए लोकनुं, हरख्यो सहु कोइ ॥ ते बेहु जण आवतां, रह्यां तिण दिशे जोइ ॥ अ० ॥ ११ ॥ मित्रानंद उतावलो, आव्यो तेनी पासे ॥ लोक कहे कोइ पंथीओ, धस्यो आवे उल्लासे ॥ अ० ॥ ॥ १२ ॥ अमर सुणी साहमुं जुवे, दीठो अलगेथी ॥ चाल दीसे माहरा मित्रनी, के होशे कोइ पंथी ॥ अ० ॥ १३ ॥ क्यांथी आवे ते वालहो, जोइतो आज ॥ ऊवक नजीक आव्यो जिस्यो, निरख्यो सवि साज ॥ ॥ अ० ॥ १४ ॥ उलखी सामो आवीयो, बेहु बंधव मलीया ॥ घणा दिवसरा विरहरा, आंसु तव गलीयां ॥ अ० ॥ १५ ॥ अहो बंधव तें आवते, मुऊ जीवतो राख्यो ॥ तुऊ दीठे ऽुःखपुंज ए, सवि अलगो नाख्यो ॥ ॥ अ० ॥ १६ ॥ कहे मित्रानंद बांधवा, जोवो ए सारी ॥ रत्नमंजरी लावीयो, चित्त चोरणहारी ॥ अ० ॥ १७ ॥ अमर कहे तें साचवुं, तुऊ नाम निपायुं ॥ मित्रने आनंद जेहथी, मित्रानंद गायुं ॥ अ० ॥ १८ ॥ लोक कहे एहना रूपने, मोह्यो ते न्यायी ॥ मधुकर मालती मोहीयो, नवि बावल जाइ ॥ अ० ॥ १ए ॥ पुण्यउदय थयो बारमी, ढाले सुणो लोका ॥ रामविजय कहे सांजलो, हवे पुण्यशलोका ॥ अ० ॥ २० ॥ ३५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहुने आनंद उपन्यो, देखी अचरिज वात ॥ मित्र मल्यो विरहो टल्यो, रोम रोम सुखशात ॥ १ ॥ तिहां उछाह थया पठी, अमरदत्त तिण वेल ॥ जाग्य जोगे जे निपन्युं, ते निसुणो मन मेल ॥ २ ॥ तेह नयरनो राजीयो, अपुत्रीयो तिण काल ॥ मरण लह्यो मंत्री प्रमुख, करे राज्यनी जाल ॥ ३ ॥ पंच दिव्य अधिवासीयां, मल्यां लोकनां वृंद ॥ केइ रूवे केइ हसे, महामोहनो फंद ॥ ४ ॥ त्रिक चतुष्कने चाचरे, वेगा बहु गुणवंत ॥ हस्ती हिंडे हर्षशुं, चिहुं पासे निरखंत ॥ ५ ॥ जब जोये जे साहमुं, तब ते दिशिनां लोक ॥ निरखे गज हरखी हिये, जेम सूरजने कोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ कह्यो कुण ए आवे छे ॥ ए देशी ॥ पुर बाहिर गज आवीयो, अतुलीबल मलपंतो रे ॥ लोक मल्यां जिहां सामटां, तिहां आवे उल्लसंतो रे ॥ १ ॥ अहो अहो पुण्यनी प्रबलता, पुण्य थकी दुःख नासे रे ॥ पुण्ये सुर नर संपदा, आवे सघली पासे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ बंधव बेहु जोडे रह्या, साहसीया शिरदारो रे ॥ सिंह परे साहमा थया, गज आव्यो तिण वारो रे ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमर कुमर शिर उपरे, ढाल्यो कलश सुचंगो रे ॥ करे गलगाट ए द्विपनो, हेषा ताम तुरंगो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ आतपवारण शिर धर्युं, चामर तिहां वींजाणां रे ॥ वाजां वाजित्र रंगनां, धवल मंगल मंगाणां रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपाडी निज सुंढथी, गज आरोपे खंधे रे ॥ राज लह्युं अणचिंतव्युं, मागध गाये प्रबंधे रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ चिरं जीवो तुमे राजीया, कोडा कोडी वर्षों रे ॥ कर जोडी आवी नमे, राजकुली छत्रीशो रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ बहु आडंबरे नृप करे, नयरी मांहे प्रवेशो रे ॥ वधावे गज मोतीए, सोहव सुंदरवेषो रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ कोइ रमणी कहे मातने, मा ए कुण अभिरामो रे ॥ कुण गुणवंतीनो नाहलो, रूपे जेहवो कामो रे ॥ अ० ॥ ए ॥ मात कहे महोटे स्वरे, रयणमंजरीनो कंत रे ॥ मित्रानंदनो बंधवो, एह अमर नूकंतो रे ॥ अ० ॥ १० ॥ धन्य जननी जेणे जनमीयो, ए नररयण सरीसो रे ॥ चिरं जीवो एह जोडली, एम दीये आशिषो रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ कोइ कहे धन्य एहनो, बंधव मित्रानंदो रे ॥ जेणे मेली मृगलोचना, नाग्य परे अमंदो रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ कोइ कहे धन्य शेठने, पुत्र परे जेणे पाल्यो रे ॥ अणजाएया नेहो आणीने, निज घर मांहे घाल्यो रे ॥ अ० ॥ १३ ॥ एम श्रवणे सुणतो थको, पुरप्रमदानी वाणी रे ॥ प्रीत मने धन वरसतो, आवे ते गुणखाणी रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ स्तंबेरमथी हो उतरी, पेठो मंदर मांहि रे ॥ करे उत्सव अभिषेकनो, नृपमंगल सघलां त्यांहि रे ॥ अ० ॥ १५ ॥ रयणमंजरी स्थापी तिहां, पट्टराणी गुणगेहो रे ॥ मित्रानंदने सोंपीयो, सहु अधिकार सनेहो रे ॥ अ० ॥ १६ ॥ स्थाप्यो जनकने स्थानके, शेठ नगी गुणवंतो रे ॥ कीधुं यथोचित एम सहु, पाळे राज्य महंतो रे ॥ अ० ॥ १७ ॥ मांडी वात कही सवे, मित्रानंद मनोहारी रे ॥ सुणी राजेश्वर रंजीयो, तुज साहस बलिहारी रे ॥

॥ अ० ॥ १० ॥ मित्र जणी माने घणो, जाणे जीव समानो रे ॥ राणी पण तेहने सदा, आपे बहु सन्मानो रे ॥ अ० ॥ १९ ॥ बेहु बंधव सुख जोगवे, राज्य रमणी रस राता रे ॥ ईति गइ निज देशथी, सहुने वरती शाता रे ॥ अ० ॥२०॥ ढाल जणी ए तेरमी, त्रीजे खंडे विचारी रे॥ राम कहे तस सहु नमे, पुण्यदशा जस सारी रे ॥ अ० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५९॥

॥ दोहा ॥

॥ अमरदत्त सुख जोगवे, निज नारीनी साथ ॥ दोगुंदक सुरनी परे, न लहे दिवस ने रात ॥ १ ॥ मन मान्याशुं गोठडी, पुण्य विना नवि होय॥ जे दिन सज्जन मेलापको, जग जीवित फल सोय ॥ २ ॥ आण अखंड वहे सबल, सीमाडा राजान ॥ सस अंग शोजे जलां, दिन दिन चडते वान ॥ ३ ॥ मित्रानंद तणे मने, शबवाणीनी खटक ॥ पलक एक नहीं विसरे, अहोनिश एह अटक ॥ ४ ॥ अहोनिश रहे उदासमां, न गमे कोइ विलास ॥ मरण समो जय को नहीं, जीवित सम नहीं आश ॥ ५ ॥ कहे अमरने साहिबा, मुज मन महोटी जीति ॥ रखे आवे व्यंतर इहां, उपजावे अप्रीति ॥ ६ ॥ जूमिपति कहे मित्र तुं, जय न करे मन मांहि ॥ दूर रह्या व्यंतर किस्युं, करशे आवी आंहीं ॥ ७ ॥ मित्रानंद कहे खरुं, पण नजीक ए देश ॥ ते माटे मुज बंधवा, मूको कोइ परदेश ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सुण बहेनी पीयुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥ सुण बंधव जय तुं परदेशी, तव मुज केम सरेशी रे ॥ क्षण क्षण तोरो विरह दहेशी, केम मुज ठोमी बलेशी रे ॥ सु० ॥ १ ॥ नयण जरे आंसुनी धारा, सुण सुण मारा प्यारा रे ॥ तुं मुज आतमना आधारा, म म करो एह विचारा रे ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ मित्र कहे गमतुं नथी मुजने, जे मूकी जाउं तुजने रे ॥ पण शबवयण दहे मुज तनने, सबल विमासण मनने रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ रयणमंजरी कहे अमने वर्जी, किम जाशो देवरजी रे ॥ सुख दुःख वात करेशुं केवी, मनडाशुं मन मेली रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पण तस मनमां वात न आवी, टाल्युं टले किम जावी रे ॥ वात करे जन सहस बनावी, पण कर्म न मेले बचावी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ राय कहे सुण मित्र सोजागी, सेवकशुं बम-जागी रे ॥ वसंतपुर जाउं गुणरागी, तिहां रहेजो अनुरागी रे ॥ सु० ॥

॥ ६ ॥ सेवक मोकलजो मुज पासे, देवा खबर उल्लासे रे ॥ जिहां लगे नहीं आवो आवासे, तिहां लगे ऊंचे श्वासे रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ बंधव चित्त-हुंती न विसरशो, क्षण क्षणमां सांजरशो रे ॥ मंगलकमलाने तुमो वरशो, कांइ फिकर न करशो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ राय चल्यो संप्रेरण साथे, वेहु जण वलग्या हाथे रे ॥ वलतां कहे नृप मलीने बाथे, कां एम कखुं जगनाथे रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ नृप वोलावी पाछो वलीयो, आव्यो गृह कलकलीयो रे ॥ मित्रविरह दुःखदधि उछलीयो, चाप थइ नीकलीयो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ न गमे राजविनोदनी लीला, सांजरे मित्रनी पीमा रे ॥ जे साथे करी बहु सुखक्रीमा, केम ते विसरे लखीमा रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ मंत्रीश्वर आदे सहु मलीया, कहे नृपने तुमे वलीया रे ॥ एम नवि थाइ जे प्रजु गलीया, कर्म न जाये कलीयां रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ कांइक शोच निवारी राज्ये, वेगा आवी समाजे रे ॥ सुख संपत्ति विलसे सवि साजे, पण दुःख मनमां दाजे रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ दिवस थया बहु चर कोइ नाव्यो, तव बीजो दोमाव्यो रे ॥ ते पण तिहां जइ पाछो आव्यो, कहे तस खबर न पायो रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ एम निसुणी संत्रांत थइने, कहे राणीने जइने रे ॥ आव्यो चर पाछो पण वहीने, खबर न पामी तेहने रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ कहे राणी अवधारो कंता, ए वातनी महोटी चिंता रे ॥ जो ज्ञानी आवे गुणवंता, तो सवि नांजे ज्रंता रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ थान करी नृप बाहिर आव्यो, तव वनपालो जायो रे ॥ नृपति पासे श्वास जरायो, अवल वधामणी लायो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ साहिब जीवो कोमी वरीसां, दिन दिन चढती जगीशा रे ॥ तुम वन समवसख्या मुनि इस्या, श्रीधर्मघोष सूरीशा रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ अशोकतिलक उद्यानमां क्रिरिया, गुणरयणे करी जरीया रे ॥ प्रासुक जूमि आवी समोसरीया, अतिशय ज्ञानना दरिया रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शम संवेगादिक आदरीया, बहु मुनिशुं परवरीया रे ॥ दूर कख्या रागादिक अरिया, ताख्या जिण निज परिया रे ॥ सु० ॥ २० ॥ समयागमन सुणी चित्त गरीयां, नरवर जाव जरीया रे ॥ राणी संघाते तेणे वरीया, गुरुवंदन नीसरीया रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ मावत्री पंचाजिगम उल्लासे, आव्यो नृप गुरु पासे रे ॥ देइ प्रदक्षिण पछी परे जासे, तुमे न पज्या ज्ञवपासे रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ श्रीजि मंद

चौदमी जाणो, ढाल ए दिलमां आणो रे ॥ कहे गुरु नृप निसुणे सपराणो, करी निज आतम शाणो रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥ श्लोक ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्मघोष मुनिवर कहे, देशन अमृतरूप ॥ जे निसुणी देखे प्रकट, घटमां सकल स्वरूप ॥ १ ॥ अतिशय नाणी कर्मनो, जाखे सवि विस्तार ॥ बंध हेतु दाखे वली, तिम तेहनो निस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ राग मलार ॥ चेतन कर्मकी चाल विजावे ॥ नरक निगोद तिरिय गतिमें, रमो नहीं कबहुं सजावे ॥ चे० ॥ १ ॥ धनी अधनी अकुलीन कुलीनो, रूप कुरूप गिणावे ॥ ईश्वर दास सुखी तिम असुखी, नाम अनेक धरावे ॥ चे० ॥ २ ॥ आठ नाम उनके गुन जूदे, सत्त्वकुं आण मनावे ॥ हे रूपी पण अकल सरूपी, नजरे कोउ न पावे ॥ चे० ॥ ३ ॥ चार चारके थोक बने दो, घाति अघाति फिरावे ॥ उनमें मोह सबल मतवालो, जीउंकों जोर करावे ॥ चे० ॥ ४ ॥ मिथ्या अविरति योग कपाया, चउ बंध हेउ कहावे ॥ पंच डुवालस पनर पणवीसा, जेद सत्तावन थावे ॥ चे० ॥ ५ ॥ लहु दीसे ए बंधनकाले, बहु डुःखकों उपजावे ॥ जीवकों रोकी रखी पंजरमें, उलटी चाल चलावे ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाब्यो जर्म मर्म न पीठाणे, उनको गायो गावे ॥ जिनकुं करी जाणे जीउ मेरो, उही नरक पगवे ॥ चे० ॥ ७ ॥ तुं नहीं तेरो नहीं ए कोइ, युं मन मांहे नावे ॥ फिरत फरे मतवाला जेसो, कहा सद्गुरु बतलावे ॥ चे० ॥ ॥ ८ ॥ निज गुण त्यागी मोहके रागी, उनकों शीख सुणावे ॥ देखत ख्याल ए मोह नटावो, तुमको परसें रे लरावे ॥ चे० ॥ ए ॥ निजकुं निज जातो तुम चेतन, और गीनो परजावे ॥ जात इंदीन पर नोहे अपने, बहुरी कहा तुं कहावे ॥ चे० ॥ १० ॥ सुण गुरुकी वानी जविप्राणी, मोहकी ठाक मिटावे ॥ रामविजय कहे तेही जगतमें, साचा पुरुष सुहावे ॥ चे० ॥ ११ ॥ इति गुरूपदेशगीतं ॥ दोहा ॥ वचन सुणी गुरुजी तणां, समज्या चतुर सुजाण ॥ मोह मब्यो मनथी परो, मानी सद्गुरु आण ॥ १ ॥ अशोकदत्त इण अवसरे, व्यवहारी कर जोमी ॥ पूछे मुज पुत्री तने, केम आवी ए खोम ॥ २ ॥ सकल अंग रोगे जरी, नहीं विचिकित्सा

साध्य ॥ कुण कर्मे मुंज दाखवो, विरुइ वलगी व्याधि ॥३॥ गुरु उपयोगे जाणीने, नाखे तस अवदात ॥ राजादिक सवि सांजले, विस्मयवाली घात ॥ ४ ॥ ज्ञुवनसुंदरी, जयसुंदरी, श्यामा रे लो ॥ ए देशी ॥ कहे सद्गुरु वाणी, सुणो जविप्राणी, कर्म कहाणी रे लो ॥ जविका सुणीये जी रे लो ॥ जूतशाला गामे, जूतदेव नामे, शेठ सहु कामे रे लो ॥ १ ॥ करजुं न जणीये जी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ क्रूरमति तस नारी, देवमती सारी, वहू सुविचारी रे लो ॥ ज० ॥ एक दिन मंजारी पीधुं धारी, दूध निर्धारी रे लो ॥ क० ॥ २ ॥ कहे सासु जूंमी, दुर्मति कूंमी, क्रोधे उंमी रे लो ॥ ज० ॥ शुं शाकिनी काली, जेह् बिडाली, ते नवि मारी रे लो ॥ क० ॥ ३ ॥ एम कहेतां तरक्षण, वहू जयजीपण, मही कोइ शाकणी रे लो ॥ ज० ॥ तस पयणे वलगी, न रहे अलगी, आग ज्युं सलगी रे लो ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ सासु चिंतातुर, तेडे आतुर, वैद्य निरंतर रे लो ॥ ज० ॥ पण न थइ साजी, कर्मनी बाजी, आवी वाजे रे लो ॥ क० ॥ ५ ॥ एक आव्यो योगी, अग्निनियोगी, तेमी मातंगी रे लो ॥ ज० ॥ कहे किहां तुं पहने, वलगी देहने, मूक सनेहने रे लो ॥ क० ॥ ६ ॥ कहे सासु वाणी, बीहीनी आणी, में मही ताणी रे लो ॥ ज० ॥ खलजिह्वा सासु, लोक तमासु, कहे अविमासु रे लो ॥ क० ॥ ७ ॥ वहूअर नीरोगी, कीधी योगी, थइ सुख रोगी रे लो ॥ ज० ॥ सासु रंजाडी, इज्ञात पाडी, खरीय जवाडी रे लो ॥ क० ॥ ८ ॥ संयतिनी पासे, सासु विमासे, व्रत लेवासी रे लो ॥ ज० ॥ चारित्र पालेइ, अणआलोइ, गइ सुरलोइ रे लो ॥ क० ॥ ॥ ए ॥ तिहां देव यइने, चलीय चवीने, इहां आवीने रे लो ॥ ज० ॥ तुऊ पुत्री रुडी, चवीने कूमी, थइ सासुमी रे लो ॥ क० ॥ १० ॥ करजुं जे जाख्युं, मनमां राख्युं, गुरुने न आख्युं रे लो ॥ ज० ॥ नजदेवी रोषे, पूरव दोषे, एहने जोडे रे लो ॥ क० ॥ ११ ॥ कन्या इहां लावो, सवि समजावो, पूरव जावो रे लो ॥ ज० ॥ जातिस्मरण लहेशे, मुख सवि कहेशे, आण वहेशे रे लो ॥ क० ॥ १२ ॥ गुरुचरणे आणी, देवी उजाणी, ब रही शाणी रे लो ॥ ज० ॥ थइ साजी कुमरी, निज जव समरी, सूधी समरी रे लो ॥ क० ॥ १३ ॥ कहे तन रोमांचु, स्वामी साचुं, ज्ञान तुमारुं रे लो ॥ ज० ॥ करी कर्मपरीक्षा, लेशुं दीक्षा, लहेशुं शिक्षा रे लो ॥ क० ॥

॥ १४ ॥ कहे गुरु उपगारी, सुण तुं सारी, वात अमारी रे लो ॥ ज० ॥ सुख जोगने कर्मे, रहे तुं घरमें, इमणां शरमे रे लो ॥ क० ॥ १५ ॥ पछी थाइश श्रमणी, वात ए गमणी, निसुणी समणी रे लो ॥ ज० ॥ वच तहत्त करीने, पाछी फरीने, आवी घरमें रे लो ॥ क० ॥ १६ ॥ देखीने नृपति, थयो विस्मित, तेवे समये रे लो ॥ ज० ॥ मुज मित्र न आयो, खबर न पायो, किणे जरमायो रे लो ॥ क० ॥ १७ ॥ पन्नरमी पूरी, ढाल सनूरी, वात अधूरी रे लो ॥ ज० ॥ त्रीजे खंडे सूरि, दुःख सवि चूरी, कहेशे पूरी रे लो ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे गुरु सांजल नृपति, विषम कर्मनी वात ॥ अणचिंती आवी नडे, कोणे कली न जात ॥ १ ॥ एह कर्मनी आगले, जोरावर नहीं कोय ॥ मान म करशो मानवी, कर्म करे सो होय ॥ २ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ छोडी हो प्रिया, छोडी चल्यो वनवास ॥ ए देशी ॥ सांजल हो राजा सांजल ते तुज मित्र, चाल्यो हो राजा चाल्यो शीख मागी करी जी ॥ लंघी हो राजा लंघी हो जलनो दुर्ग, पहोतो हो राजा पहोतो स्थल दुरग तरी जी ॥ १ ॥ तिहां एक हो राजा तिहां गिरि नदीने प्रपात, रहीया हो राजा रहीया हो जोजन कारणे जी ॥ आवी हो राजा आवी हो जिल्लनी धाम, नाठा हो राजा नाठा सेवक न रह्या रणे जी ॥ २ ॥ ताहरो हो राजा ताहरो बंधव तेह, एकण हो राजा एकण दिशि उजाइयो जी ॥ लाज्यो हो राजा लाज्यो हो सेवक तुज, पाछो हो राजा पाछो फरी कोइ नावीयो जी ॥ ३ ॥ मित्रे हो राजा मित्रे उजातां एक, दीठुं हो राजा दीठुं सरोवर जल जखुं जी ॥ पीधुं हो राजा पीधुं शीतल नीर, वम तले हो राजा वम तले शयन तेणे कखुं जी ॥ ४ ॥ पमते हो राजा पमते पमतुं होय, कोटरे हो राजा कोटरेथी अहि नीसस्यो जी ॥ डंस्यो हो राजा डंस्यो तेहने अंग, तापस हो राजा तापस एके विष हस्यो जी ॥ ५ ॥ पूछे हो राजा पूछे तापस कोण, जाखी हो राजा जाखी यथारथ वारता जी ॥ तापस हो राजा तापस गयो निज ठाण, चिंते हो राजा चिंते हो मित्र थइ आरता जी ॥ ६ ॥ हठीयो हो राजा हुं हठीयो थयो जोर, मान्युं हो राजा मान्युं हो कहण न मित्रनुं जी ॥ आतम हो राजा आतम उपरे आज, कीधुं हो राजा

कीधुं काम शत्रुनुं जी ॥ ७ ॥ जाउं हो राजा जाउं हो मित्रनी पास, सुखीयो हो राजा सुखीयो थाइश तस संगे जी ॥ चिंती हो राजा चिंती हो चाल्यो उठी, पमीयो हो राजा पमीयो चोर कुसंगते जी ॥ ८ ॥ काली हो राजा काली गया निज पास, जोजो हो राजा जोजो एम जावी नडे जी ॥ सांजरे हो राजा सांजरे ताहरो प्रेम, मनमां हो राजा मनमां महोटे खरे रहे जी ॥ ए ॥ वेच्यो हो राजा वेच्यो हो जिह्ने तेह, लीधो हो राजा लीधो एक व्यवहारीए जी ॥ आपद् हो राजा आपद् पमी तस एम, निगुणी हो राजा निगुणी हिये नवि हारीये जी ॥ १० ॥ कीधां हो राजा कीधां न बूटे कोप, जाणी हो राजा जाणी कर्म न कीजीये जी ॥ साचो हो राजा गाणो एक जिनधर्म, जेहथी हो राजा जेहथी शिवसुख लीजीये जी ॥ ११ ॥ तिहांथी हो राजा तिहांथी हो पारसकूल, चाल्यो हो राजा चाल्यो वदिक तग लेइने जी ॥ वचमां हो राजा वच मांहे आवी उजेण, राते हो राजा राते रह्यो सुख वेइने जी ॥ १२ ॥ बंधण हो राजा बंधण ठोमी तुज, नाठो हो राजा नाठो हो मित्र नयरी जणी जी ॥ खासे हो राजा खासे पढने तेह, पेसे हो राजा पेसे होंश घरनी घणी जी ॥ १३ ॥ सुणजो हो राजा सुणजो हो तेणे प्रस्ताव, नयरमां हो राजा नयरमां चोरनो जय घणो जी ॥ ठानो हो राजा ठानो फरे कोटवाल, करडो हो राजा करमो हो अमल तेह तणो जी ॥ १४ ॥ काढ्यो हो राजा काढ्यो ते तनकाल, जाण्युं हो राजा जाण्युं हो चोर ए आकरो जी ॥ बांध्यो हो राजा बांध्यो मयूरने बंध, कीधो हो राजा कीधो प्रहारे जाजरो जी ॥ १५ ॥ सोंप्यो हो राजा सोंप्यो शेठने ताम, कीधो हो राजा कीधो हो हुकम महोटो घणो जी ॥ शिप्रा हो राजा शिप्रातटे वमरूख, बांधी हो राजा बांधी ए अपराधी हणो जी ॥ १६ ॥ काढ्यो हो राजा कासी चढया नर तेह, चिंते हो राजा चिंते हो मनमां निज रमे जी ॥ साचुं हो राजा साचुं वचन थयुं तेह, नाम्युं हो राजा नाम्युं शर्म जे पूरवे जी ॥ १७ ॥ जाणी हो राजा जाणी जिहां तिहां जाउं, नावी हो राजा नावी किहां बूटे नहीं जी ॥ कीजे हो राजा कीजे हो कोमी उपाय, करतां हो राजा करतां हो कर्म नहे महीं जी ॥ १८ ॥ यदुक्तं ॥ विनयो निर्धनत्वं च, बंधनं मरणं तथा ॥ येन यत्र यदा लब्धं, तस्य तत्र तदा नयेत् ॥ १ ॥

याति दूरमसौ जीवः, पापस्थानाङ्गयद्रुतः ॥ तत्रैवानीयते भूयो-ऽजिनव-प्रौढकर्मणा ॥ २ ॥ ढाल पूर्वनी ॥ म म कर हो जीव म म कर रोष लगार, उपरे हो जीव ए अपराधी उपरे जी ॥ ए सहु हो जीव ए सहु तादृरो दोष, परजवे हो जीव परजवे सुख तुं नवि करे जी ॥ १९॥ आव्यो हो राजा आव्यो हो एम शुज नाव, वांध्यो हो राजा वांध्यो वडे विण वांकशुं जी ॥ आवे हो राजा आवे हो साहमे पूर, अनीयुं हो राजा अनीयुं अशुज नृप रांकशुं जी ॥ २० ॥ एक दिन हो राजा एक दिन रमतां हो गोप, मोह हो राजा मोह पमी मुख उछली जी ॥ तादृरा हो राजा तादृरा बंधवनी वात, निपनी हो राजा निपनी कर्म महाबली जी ॥ २१ ॥ सोलमी हो जवि सोलमी त्रीजे खंम, जाखी हो राजा जाखी ढाल ए कर्मनी जी ॥ साखी हो राजा साखी होवे एक धर्म, धर्मथी हो राजा धर्मथी प्राप्ति शर्मनी जी ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६९ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरुमुखथी एम सांजली, अमरदत्त जूपाल ॥ प्रेम तणे वश वलवले, पड्यो मोहनी जाल ॥ १ ॥ गुण संजारे तेहना, निर्मल गंगा नीर ॥ हृदय फूटण लागी हिये, नयणे चाल्यां नीर ॥ २ ॥ परउपगारी शिरोमणि, हा बंधव हा भ्रात ॥ वहेला आवो वाल्हा, करवा मोशुं वात ॥ ३ ॥ में तुजने वार्यो घणुं, मित्र म जाउं विदेश ॥ पण तें कह्युं न मानीयुं, किहांथी हवे संदेश ॥ ४ ॥ सज्जनीया साले घणुं, संजारो सो वार ॥ जे विण घमी न चालतुं, केम चलशे जमवार ॥ ५ ॥ हियमा हवे तुं शुं रह्युं, गयो ते तुज आधार ॥ मित्रानंद मले किहां थकी, जीवनो जंजणहार ॥ ६ ॥ पहवा बंधव दोहिला, जेहनी शीतल छाय ॥ काम पडे विहडे नहीं, बंधव बीजी थांहि ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥ रत्नमंजरी सुणी एहवुं रे, मूर्छागत थइ ताम ॥ हा हा ए शुं निपन्युं रे, अणचिंत्युं थयुं आम रे ॥ १ ॥ देवर माहरा ॥ एम नवि दीजे छेह रे, गुण बहु ताहरा ॥ ए आंकणी ॥ तुं मुजने घणो वाल्हो रे, आतमनो आधार ॥ एम किम उवेखी रह्या रे, द्यो दर्शन एक वार रे ॥ दे० ॥ एम० ॥ २ ॥ जब मुजने आणी इहां रे, तब कीया केइ उपाय ॥ आप विपत्तिवेला सही रे, किहां गइ मति निर्माय रे

॥ दे० ॥ ए० ॥ ३ ॥ तुमे अमने विसारीयां रे, वसीया तुमे अम्ह चित्त ॥ अधवचे मूकी प्रीतमी रे, नहीं ए उत्तम रीत रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ४ ॥ हा हा दैव अटारमो रे, सुखमां उपायुं शूल ॥ हरे एवा गुणवंतने रे, पडो तेहने मुख धूल रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ५ ॥ एम विलाप करे घणा रे, नयणे नीर प्रवाह ॥ हियडुं धीर धरे नहीं रे, ते केम विसरे दाहो रे ॥ दे० ॥ ॥ ए० ॥ ६ ॥ राय राणी एम फुःख धरे रे, फुःखीयो सहु परिवार ॥ गुरु कहे शोक न कीजीये रे, ए संसार असार रे ॥ ७ ॥ सुण सुण प्राणीया, परिहर मोहविकार रे, शुज गुण गणीया ॥ ए आंकणी ॥ स्थिर न रह्यो कोइ इण जगे रे, नागेंड इंड ने चंद ॥ परमारथ सहु कारिमुं रे, महोटो ए मोहनो फंद रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ७ ॥ सुख निरंतर किहां थकी रे, फूल्युं ते करमाय ॥ जे उगे ते आथमे रे, जे जायुं तेह जाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ॥ ए ॥ अनित्यपणे जाएवा होवे रे, जो पुजल परजाव ॥ शाने रडे एम जीवमो रे, नित्य एक आप स्वजाव रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १० ॥ मात पिता जगिनी सुता रे, कामिनी सुत अवतार ॥ वार अनंत ए ताहरे रे, तुं एहने निर्धार रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ११ ॥ जीव जिके षट्कायना रे, ते थया ताहरा रे बंधु ॥ मायाकल्पित ए सवे रे, जग मांहे संबंध रे ॥ सु० ॥ ॥ प० ॥ १२ ॥ कोइ न एवो जगतमां रे, मरण न पाम्यो रे जेह ॥ राज-मारग एह जाणीये रे, केहो शोक सनेहो रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १३ ॥ शोक हरो उद्यम करो रे, धर्म करो तुमे राय ॥ जिम जनमंतर एहवुं रे, फुःख फरी नवि थाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १४ ॥ राजा कहे में संग्रह्यो रे, धर्म करेवो सार ॥ पण कहो मारा मित्रनो रे, कोण थयो अवतार रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ॥ १५ ॥ कहे गुरु तुऊ रमणी तणी रे, कुखे ते उत्पन्न ॥ शुज जावना योगथी रे, थाशे पुत्ररतन्न रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १६ ॥ कमलपत्र लोचन जलां रे, होशे महाबलवंत ॥ राजधुरंधर ताहरो रे, थाशे ते गुणवंत रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १७ ॥ वात सुणी हरख्यो घणुं रे, धन्य प्रजु तुमचुं रे ज्ञान ॥ देशना देइ उठ्यो रे, मुऊ जेहवो अज्ञानो रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १७ ॥ वली तुमने पूछुं प्रजो रे, किम देवीने कलंक ॥ बंधुवियोग ए किम थयो रे, कहो कारण निःकलंक रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १ए ॥ निरपराध पण वंचता रे, किम पाम्यो जेम चोर ॥ संशय टालो माहरो रे, श्यां ए कर्म कठोर रे ॥ सु० ॥ प० ॥ २० ॥

त्रीजे सत्तरमी ढालमां रे, कह्यो बंधव अधिकार ॥ रामविजय कहे जाणजो रे, महोटो गुरुउपगारो रे ॥ सु० ॥ प० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥ श्लोक ॥ ११

॥ दोहा ॥

॥ पूरव जव गुरु उपदिशे, योगत्रिके बंधाय ॥ कर्म कटुक फलने दीये, एम बोले जिनराय ॥ १ ॥ आ जवथी त्रीजे जवे, बांध्यो जिम तुमे बंध ॥ ते आ जवे आवी मल्यो, सहु सरिखो संबंध ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ पूरव जव कौटुंबिक तुं हतो, क्षेमंकर इण नामे जी ॥ सत्यश्री घरणी गुण धारिणी, धरणीप्रतिष्ठित ग्रामे जी ॥ १ ॥ वयण विचारी रे प्राणी उच्चरो ॥ ए आंकणी ॥ जो वांछो सुख सारुं जी ॥ अविचार्युं बोलंतां जीवडो, फरे चउगति संसारो जी ॥ व० ॥ २ ॥ सकल क्रियापटु सेवक तेहने, चंद्रसेनाभिध एको जी ॥ कारज सोंप्युं रे तेहने क्षेत्रनुं, रखवाले सुविवेको जी ॥ व० ॥ ३ ॥ एक दिन परने रे क्षेत्रे पंथीयो, रींवा महतो देखी जी ॥ कहे लंबावो रे जाडे एहने, पण तेणे मूक्यो उवेखी जी ॥ व० ॥ ४ ॥ तिण वयणे डुहवाणो पंथीयो, कर्म करे तिण वेला जी ॥ डुष्ट वचनथी रे बांध्युं आकरुं, न करो एम अवहेला जी ॥ व० ॥ ५ ॥ सत्यश्रीनी रे वहूअर एकदा, महोटो कवल उपाडी जी ॥ महोमां मूक्यो रे ते वलग्यो गले, तव सासु एम भाडी जी ॥ व० ॥ ६ ॥ शुं एम जुंजे रे पापी निशाचरी, लघु कवले जम सोइ जी ॥ जेम नहीं वलगे रे कंठे ताहरे, बांध्युं कर्म विगोइ जी ॥ व० ॥ ७ ॥ एक दिन क्षेमंकर कहे भृत्यने, मूके गामे उजाड जी ॥ जा वहेलो कारज करी आव तुं, देशुं पछी वधाइ जी ॥ व० ॥ ८ ॥ ते कहे बंधवने मलवे करी, में न जवाये स्वामी जी ॥ क्षेमंकर कहे गत मलशो तुने, स्वजन केवारे हरामी जी ॥ व० ॥ ९ ॥ सहेजे एम बंधाये बोलतां, कर्म कठिन एम केइ जी ॥ पण रस चीकण बंध प्रदेशथी, विणसे विपाकने देइ जी ॥ व० ॥ १० ॥ एक दिन आव्या रे मुनिवर विहरता, गोचरीए गुणगेहो जी ॥ क्षेमंकर सूधा संयमी, गुण संपूरण देहो जी ॥ व० ॥ ११ ॥ पीयर सूधा रे मुनि षट्कायना, धूंसर दृष्टि निहाले जी ॥ आंगण आवी रे जंगम सुरतरु, दंपती दिलजर जाले जी ॥ व० ॥ १२ ॥ कहे क्षेमंकर पक्षि-

लाचो प्रियें, पात्र युगल ए आव्युं जी ॥ हर्ष धरीने रे तेणे पडिलाजीया, ऋत्ये एम मन नाव्युं जी ॥ व० ॥ १३ ॥ धन्य अहो दंपती दोये जणां, दीधुं मुनिवर दानो जी ॥ पुण्याइ विण पात्र किहां थकी, एम मलेय निदानों जी ॥ व० ॥ १४ ॥ बेहु जण नावे रे दीधुं साधुने, त्रीजो तिम अनुमोदे जी ॥ त्रिहुं जण उपरे तव चपला पमी, हुंती जे अंजोदे जी ॥ ॥ व० ॥ १५ ॥ पहेले सुरलोके थया देवता, मित्रपणे नवरंगे जी ॥ सुख विलसे वैमानिकनां घणां, लीलालहेर अनंगे जी ॥ व० ॥ १६ ॥ क्षेमंकर चवी तुं नरवर थयो, सत्यश्री तुझ नारी जी ॥ सुर त्रीजो चवी आवी उपन्यो, मित्रानंद मनोहारी जी ॥ व० ॥ १७ ॥ जेणे बांध्युं रे जेवुं पूरवे, तिम पाम्युं तेणे सीधुं जी ॥ राजन् आवे रे उदये एणी परे, करुवे वयणे कीधुं जी ॥ व० ॥ १८ ॥ गुरुनी वाणी रे निसुणी ते सवे, मन पाम्यां वैरागो जी ॥ कर्म कमाइ रे केडे आपणी, धारो धर्मशुं रागो जी ॥ व० ॥ १९ ॥ ऊहापोह विचारे आपणी, पूर्वजात संजारी जी ॥ कहे गुरुजीने नृप चरणे नमी, जाउं तुम बलिहारी जी ॥ व० ॥ २० ॥ मुझ पतितने रे प्रजु पावन करो, देइ यथोचित धर्मो जी ॥ गुरु कहे चारित्रनी नहीं योग्यता, हजी बहु जोगनुं कर्मो जी ॥ व० ॥ २१ ॥ तनय थया पठी संयम आवशे, हमणां गृहिव्रत वारु जी ॥ तहत्ति करीने रे श्रावकव्रत लीये, गुरु पासे गुणकारु जी ॥ व० ॥ २२ ॥ पुनरपि पूछे रे वात शबे कही, ते कुण कारण स्वामी जी ॥ सवि ग्रही रे गुरु कहे पंथीयो, नूरि नवे गति पामी जी ॥ व० ॥ २३ ॥ वम पासे थयो व्यंतर ते मरी, मित्रानंदने देखी जी ॥ वैर संजारी रे पूरव नव तणुं, थयो ते उपर द्वेषी जी ॥ व० ॥ २४ ॥ शबना मुख मांहे तेणे संक्रमी, वात एणी परे दाखी जी ॥ संशय वारण नवजल तारिणी, धर्मकथा मुनि नाखी जी ॥ व० ॥ ॥ २५ ॥ प्रतिबूज्या केइ निसुणी प्राणीया, मुनिवर कीध विहारो जी ॥ ॥ मुनि वांदीने मंदिर आवीयों, नृपति समकित धीरो जी ॥ व० ॥ २६ ॥ पाले राज्य जली परे आपणुं, एह अढारमी ढालो जी ॥ त्रीजे खंडे रे रामविजय कहे, धर्मे सुख विशालो जी ॥ व० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गर्न वधे हवे अनुक्रमे, युवती हर्ष धरंत ॥ जे जे दोहला उपजे,

ते ते पूरे कंत ॥ १ ॥ शुज वेला शुज दिन घमी, शुज मुहूर्त्त संयोग ॥ रत्नमंजरीए सुत जएयो, सुंदर तन नीरोग ॥ २ ॥ राय करे उत्सव घणो, खरचे द्रव्य अपार ॥ धवलमंगल गावे जलां, वेठी सोहव नार ॥ ३ ॥ पंच धाव पाली जतो, नाम कमलपत्राक्ष ॥ शैशव वय लंघी करी, पाम्यो यौवन दक्ष ॥ ४ ॥ राज्यजार धोरी थयो, सघली वाते सकज्ञ ॥ हवे राजा मन चिंतवे, लहुं संयम तजी रज्ञ ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाघ, सोनारो ठोगलो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिन तेह मुनीश्वर, आव्या सांजली ॥ राजाजी ॥ सोंपी पुत्रने राज्यनो जार, चल्यो वनमां रुली ॥ रा० ॥ महे गुरुजीने हाथे दीक्ष, प्रिया साथे वली ॥ रा० ॥ लीयो शुद्ध महाव्रतजार, थया अतुली बली ॥ रा० ॥ ॥ १ ॥ तेउने दढ करवा काज, कहे श्रुतकेवली ॥ रा० ॥ तुमे चालजो सूधे पंथ, मूकी मद आवली ॥ रा० ॥ जवअंबुधि तारण एह, प्रव्रज्या ठे जली ॥ रा० ॥ ते माटे मूकी राग, ते पालजो साचली ॥ रा० ॥ २ ॥ लेइ दीक्षा विषयने वांठे, जे मुनि कायरा ॥ वारुजी ॥ नवि कहीये ते जवजलना, संयम वाहरा ॥ तारुजी ॥ ते विषये नेह न करे, जी हेजाहरा ॥ वा० ॥ ते मुनि परमार्थ सुखना, दरिया माहरा ॥ वा० ॥ ३ ॥ जिनरक्षित जिनपालनो, इहां जावजो ॥ मुनीवरजी ॥ संबंध अनोपम उपनय, मनमां लावजो ॥ सुखकरजी ॥ तव कहे राजर्षि मनमां, हरखी ते कहो ॥ सद्गुरुजी ॥ जावी ते वात कहुं, सघली तुमे सद्दहो ॥ मु० ॥ ४ ॥ चंपानयरीमां माकंदी, नामे महाधनी ॥ मु० ॥ जद्रा नामे तस नारी, जली सुगुणी बनी ॥ मु० ॥ जिनपालित ने जिनरक्षित, सुत ठवि कांचनी ॥ मु० ॥ करे वहाणनो रोजगार, वरी लछी घणी ॥ मु० ॥ ५ ॥ ते वारे विचार मनोरथ, वहाणनो करे ॥ मु० ॥ घणुं वारे तेहने पितर, कह्युं चित्त नवि धरे ॥ मु० ॥ चढीया करियाणुं लेइ, जोइ वहाण शिरे ॥ मु० ॥ जरदरिये जांग्युं वहाण, फलकने आशरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ त्रिहुं दिवसे रयणनो द्वीप, लही ते नीसर्या ॥ मु० ॥ जख पीधुं फल नालियेर, जखीने ते ठर्या ॥ मु० ॥ एहवे ते द्वीपनी देवी, देखीने थरहर्या ॥ मु० ॥ कहे मुफ साथे तुमे सेवो, विषयसुख कां मर्या ॥ मु० ॥

७ ॥ तो थाशे प्राणने कुशल, मानो कह्युं माहरुं ॥ मु० ॥ नहींतर पण ए सहू, छेदीश हुं शिर याहरुं ॥ मु० ॥ जयजीत कहे परमाण, कह्युं एम ताहरुं ॥ मु० ॥ कहे मत वीहो तुमे अंश, हुं छुं तुम वाहरु ॥ मु० ॥ ८ ॥ सुख विलसंतां ते साथे, गया बहु वासरा ॥ मु० ॥ एक दिन आवी कहे ते, रहेजो तुमे पांसरा ॥ मु० ॥ हुं सुस्थितने आदेशे, शोधवा सायरा ॥ मु० ॥ जाउं तुं कारण माटे, म थाशो कायरा ॥ मु० ॥ ए ॥ खाजो फल फूल तुमे, रमजो पूरव वने ॥ मु० ॥ न साय तो उत्तर पश्चिम, जाजो कामने ॥ मु० ॥ वारुं तुं दक्षिण वन, रखे धरता मने ॥ मु० ॥ तिहां छे दृष्टिविष नाग, देशे दुःख तुमने ॥ मु० ॥ १० ॥ गइ देवी कुमर बेहु, निजु वनमां रमे ॥ मु० ॥ फल फूल घणां जली जांते, तिहां पण नवि गमे ॥ मु० ॥ चिंते मन मांहे न जाये, वासर ए किमे ॥ मु० ॥ सांजरे मनमां निज ठाण, हेरान थया श्रमे ॥ मु० ॥ ११ ॥ वली वली निरखीये दक्षिण, वारियें नेहशुं ॥ मु० ॥ चिंते जइ चलो जाइ, तिहां दिल ठारशुं ॥ मु० ॥ हमणां दोधीने तमासो, जोइ आवशुं ॥ मु० ॥ चिंता ए टलशे दूर, अमत चेन पामशुं ॥ मु० ॥ १२ ॥ गया ते दिशे जाम, असत्र गंध उछली ॥ मु० ॥ वस्त्रे आछादी नाक, जोइ आघा वली ॥ मु० ॥ देखी नर त्यां एक रंक, थया मन व्याकुली ॥ मु० ॥ पहवे शूलागत मनुज, दीठो थया कलकली ॥ मु० ॥ १३ ॥ पूछ्युं तेहने जइ कुण, कमाइ शी करी ॥ मु० ॥ ते बोल्यो सांजलो मित्र, दशा महारी फरी ॥ मु० ॥ मुऊ महापाप लाग्युं कर्म, ए लाग्युं नीसरी ॥ मु० ॥ रत्ना अनुरागे कांइक, सेवा विसरी ॥ मु० ॥ १४ ॥ मुऊ दुःख पण दीधुं, माहारुं कीधुं में लह्युं ॥ मु० ॥ तेणे नर विणसाड्या कहे, पाड्या हुं शुं कहुं ॥ मु० ॥ कहो वात तुम्हारी मुऊने, मारी सहहुं ॥ मु० ॥ धुरिलुंनी मारी कांइ न, राखी ए सहु ॥ मु० ॥ १५ ॥ करी करुणा कांइ उपाय, कहो जीव्या तणो ॥ मु० ॥ कहे ते नर नैवक पहु, इहां सोहामणो ॥ मु० ॥ करे अश्वनुं रूप ए पर्व, दिने शोधे घणो ॥ मु० ॥ कहो कुणने राखुं कुणने, पाखुं में घणो ॥ मु० ॥ १६ ॥ नमे जाउं तेहनी पास, करो सेवा जली ॥ मु० ॥ हे आव्या पर मर्मी र. सहु आशा फली ॥ मु० ॥ उगणीशमी ढाल कही, ... मांडे रली ॥ मु० ॥ जे विरह थकी रह्या दूर, तेहनी सुदशा वली ॥ मु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यक्ष तणी सेवा करे, कुसुमे पूजे पाय ॥ राख राख स्वामी हवे, तुं अम माय ने ताय ॥ १ ॥ पर्वदिने बोल्यो यदा, यक्ष तेह उजमाल ॥ बंधव कर जोनी कहे, राख राख अम्ह पाल ॥ २ ॥ यक्ष कहे ते बेहुने, निस्तारुं निर्धार ॥ पण निश्चल थइ सांजलो, महारो एक विचार ॥ ३ ॥ तुम जातां ते आवशे, पापिणी पूठे सोय ॥ कहेशे तुमने ते घणुं, सुनजरे साहामुं जोय ॥ ४ ॥ ते उपर धरशो तदा, जो अनुराग लगार ॥ तो उलाली तुमने, नाखीश समुद्र मजार ॥ ५ ॥ जो रहेशो निरपेक्षथी, तो तुमने ततकाल ॥ पहोंचाडीश चंपापुरी, लहेशो सुख रसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ मजरो ल्योने जालम जाटनी ॥ ए देशी ॥ कुमर कहे तस संगनुं, फल दीठुं महाराज ॥ ए साहामुं निरखुं नहीं, सो वातां करे आज ॥ ॥ १ ॥ हवे अम तारो जी साहिया ॥ ए आंकणी ॥ पडग्या तुमारे जी पाय ॥ शरण ग्रह्युं एक ताहरुं, अवर नहीं को उपाय ॥ ह० ॥ २ ॥ खंधे चढा-वीने चालीयो, दरियामां यक्षराज ॥ बे बांधव हरख्या घणुं, फलीयां वांछित काज ॥ ह० ॥ ३ ॥ हवे देवीए निज मंदिरे, नवि दीठा दोय बंधु ॥ जाण्युं ज्ञाने ते यक्ष जी, जाय चढावीने खंध ॥ ह० ॥ ४ ॥ खड्ग लेइने केडे पडइ, क्रोध भराणी जी जोर ॥ आवो वांछो जी जीववुं, एम कहे करती जी सोर ॥ ह० ॥ ५ ॥ नहींतर एणे खड्गे सही, करशुं तुम शिरछेद ॥ यक्ष कहे रहो रंगशुं, अंश न करशो जी खेद ॥ ह० ॥ ६ ॥ जाण्युं न कृपा ए चित्तथी, मांगी माया जी क्रूर ॥ मुज मूकीने एकाकिनी, केम जाउं छो जी दूर ॥ ह० ॥ ७ ॥ वाहालपणुं तुम किहां गयुं, एम नवि दीजे जी छेह ॥ रंगरले रम्या मंदिरे, ते विसार्यो जी नेह ॥ ह० ॥ ८ ॥ चित्त चख्यां नहीं तेहनां, खेद धरी मन मांहे ॥ कहे जिनरक्षितने घणुं, पाहालो जीवितप्राण ॥ ह० ॥ ९ ॥ हृदय मान आलापनी, क्रिया सरखी जी होय ॥ चित्ताल्हादक प्रेमनी, गति न्यारी छे जी जोय ॥ ह० ॥ १० ॥ तुज साथे मुज गोठनी, छे अंतरनी जी सार ॥ ते जाणे मन माहरुं, नहीं तुज छेह लगार ॥ ह० ॥ ११ ॥ आशे मत्रो मुज वाल्हा, थो संगमनुं जी सुख ॥ नहींतर प्राण तजीश हुं माहरा, दोहिलुं विरहनुं

दुःख ॥ ह० ॥ १२ ॥ नाथ अनाथ परे मुने, मरती देखीने कंत ॥ कां करुणा नथी आवती, निरखो नयणे संत ॥ ह० ॥ १३ ॥ कूमो मोह देखामी कामिनी, प्रगट पाड्यो जी पाश ॥ जिनरक्षित अवलोकीयुं, मुख दुर्गति जिम तास ॥ ह० ॥ १४ ॥ यक्षे नाख्यो जी पूठथी, पमतां वींध्यो त्रिशूल ॥ फल पाम्यो मुक वंचना, खङ्गे हणीयो जी मूल ॥ ह० ॥ १५ ॥ यइ केडे जिनपालने, बोले मीठा जी बोल ॥ गति होशे जेम बंधुनी, जो चित चुर्ड कमकोल ॥ ह० ॥ १६ ॥ कूरु सही तेहनुं रह्यो, निश्चल चित्त विचार ॥ यक्ष संघाते आवीयो, चंपावनह मकार ॥ ह० ॥ १७ ॥ पाठी वली गइ व्यंतरी, यक्ष पण वलीयो जी तेह ॥ खम्यो कर जोमी जिनपालने, आणी नक्ति सनेह ॥ ह० ॥ १८ ॥ घरे आव्यो मलीयो निज तातने, एक दिन वीर जिणंद ॥ आव्या पुत्र पिता गया वांदवा, थया प्रनु पासे मुणींद ॥ ह० ॥ १९ ॥ जिनपालित मुनिवर नलो, कीधो उग्र विहार ॥ तप तपीयां अति आकरां, कस्यो आतमनो उद्धार ॥ ह० ॥ २० ॥ पाम्यो संबंध मुनीश्वरे, अमर मुनिने हो काम ॥ कहे उपनय हवे एहनो, ते निसुणो मन गम ॥ ह० ॥ २१ ॥ ढाल कही ए वीशमी, त्रीजे खंडे रसाल ॥ रामविजय कहे धन्य मुनि, ठेदी विषयनी जाल ॥ ह० ॥ २२ ॥ ५७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दोय वणिक जिम जीवमा, सवि संसारी जाण ॥ रत्ना देवी जेम वली, अविरति वार वखाण ॥ १ ॥ अविरतिथी जे उपन्यो, दुःख तणो समुदाय ॥ शवशूलागत नर इहां, जाणो मनमां न्याय ॥ २ ॥ जेम स्वरूप तेणे कह्युं, निज अनुनूत अशेष ॥ तेम अविरति दुःख दाखे, गुरुउपगार विशेष ॥ ३ ॥ जेम शेलक तारक थयो, तेम संयमगुण सार ॥ दुःखीयानां दुःख उद्धरे, उतारे नवपार ॥ ४ ॥ जेम देखीने वश पड्यो, जिम रहिन दुःख दीन ॥ तेम अविरतिवश जीवमो, देखे दुःख अनीन ॥ ५ ॥ दूर रह्यो देवी थकी, नवी खोयो यक्षथाण ॥ कुशले आव्यो निज पुरी, ते जिनपाल सुजाण ॥ ६ ॥ अविरतिथी विरम्यो रहे, न विराधे चारित्र ॥ निःकर्मा थइ निरजे, मुनि शिवसुख पवित्र ॥ ७ ॥ ते माटे वरम सांनलो, विरुओ विषय विलास ॥ सुणीये मनमां नाणजो, जो शिवपुरनी आश ॥ ८ ॥ सुधा संयमधर थया, निसुणी गुरु उपदेश ॥ शुद्ध आचारे संचरे, नहीं कषाय लवलेश

! ॥ रत्नमंजरी साधवी, वेहु जण सुमनोजाव ॥ घातिकर्मक्षय ऊपन्यो,
ल शुद्ध स्वजाव ॥ १० ॥ मुगते गयां ते दो जणां, जिहां अनंत सुख-
ा ॥ प्रणमुं प्रेमे सिद्ध प्रजु, अनुजव लीलविलास ॥ ११ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जय सुरपादप जंतुना ॥ ए देशी ॥ स्वयंप्रज मुनिमुखथी सुणी, सबली
ा वैराग्य ॥ स्तिमितसागर नरवर कहे, पाम्यो धर्मनो राग ॥ १ ॥ बलिहारी
ज्ञानने ॥ ए आंकणी ॥ तुमे महोटा मुनिराज ॥ सबल कषाय वशे कस्या,
शुं त्रिजुवनराज ॥ ब० ॥ २ ॥ राज्य वेसारी रे पुत्रने, लेइ अनुमति तास ॥
पासे जवतारिणी, लेशुं दीक्षा उल्लास ॥ ब० ॥ ३ ॥ घरे आवीने हो
ीयो, अनंतवीर्यने पाट ॥ अपर कुमारपदे ठवे, मूकी मननो उचाट
॥० ॥ ४ ॥ चारित्र लीधुं रे मुनि कने, पाले पंचाचार ॥ समिति गुप्ति
ी धरे, मार्ग खांमानी धार ॥ ब० ॥ ५ ॥ कांइक अंते विराधीयो, मन
ये मुनिधर्म ॥ असुर अधिप चमरेंद्र जी, ते थया जिहां बहु शर्म ॥ ब० ॥
६ ॥ हवे बंधव अपराजिता, अनंतवीर्य अजिधान ॥ राजलीला सुख
गवे, दिन दिन चढते रे वान ॥ ब० ॥ ७ ॥ खेचर कोइ आवी मल्यो,
; दिन पुण्यसहाय ॥ प्रीति बनी तेहशुं घणी, उदये अचिंतित थाय ॥
॥० ॥ ८ ॥ गगने जवाय हो जेहथी, विद्या दीधी रे सार ॥ विधि सघली
साधन तणी, तेणे दाखी सुप्रकार ॥ ब० ॥ ए ॥ नामे चिलाती ने बर-
ी, नाट्यकलानी रे जाण ॥ तेउने दोय दासी जली, रूप कला गुण-
ण ॥ ब० ॥ १० ॥ एक दिन राजसजा मली, निरखे नाटक ख्याल ॥
चे चिलाती ने बरबरी, यौवन रूप रसाल ॥ ब० ॥ ११ ॥ कोकिल-
ी रे कामिनी, कामकलानी रे धाम ॥ जाव देखाडे हो अति जला,
ाया महीपति ताम ॥ ब० ॥ १२ ॥ रंगरसे जीना सवे, नाद तणा
ह जाण ॥ नाद निसुणी जे रीज्यो नहीं, ते जग मांहे अजाण ॥ ब० ॥
१३ ॥ यडुक्तं ॥ सुजाषितेन गीतेन, युवतीनां च लीलया ॥ मनो न
यते यस्य, स योगी ह्यथवा पशुः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ ब्रह्मचारी कलहागरो,
रद मुनि नजचार ॥ आव्यो पण रहेव्यो नहीं, महोटो मोहविकार ॥ ब० ॥
१४ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो, अवगणीयो मुने आज ॥ चेटीने नाटके
ोहीया, राखी नहीं मुज लाज ॥ ब० ॥ १५ ॥ ए गुणवंती रे गोरमी,

जीवनप्राण आधार ॥ मुंज्या हो एहना मोहमां, न लहे एह व्यवहार ॥ व० ॥ १६ ॥ हरण कराचुं हो एहनुं, कोइ वलवंतनी पास ॥ जेम एहनो मद उतरे, जंडुं हो एम विमास ॥ व० ॥ १७ ॥ त्रिहु खंम केरो हो राजीयो, विद्याधरनो रे नाथ ॥ प्रतिहरि दमितारि अठे, वलीयो जेहनो रे साथ ॥ व० ॥ १७ ॥ तास सन्ना मांहे आवीयो, उठी दे बहु मान ॥ नले आव्या रे पावन कस्या, तुम आवे वह्यो वान ॥ व० ॥ ॥ १ए ॥ कहो कांइ अद्भुत वारता, ते कहे सुण रे राजेंड ॥ सुनगापुरीना रे राजीया, तेजे जाणे दिणंद ॥ व० ॥ २० ॥ अनंतवीर्य अपराजिता, तस घर दासी रे दोय ॥ नामे चिलाती ने वरवरी, जगमां जोम न कोय ॥ ॥ व० ॥ २१ ॥ नाव्यकलाकुशली घणुं, ते नाचंती रे आज ॥ दीठी हो विस्मयकारिणी, ते विण शुं तुऊ राज ॥ व० ॥ २२ ॥ एम कही मुनि उतपत्यो, प्रतिहरि मोह्यो नाम ॥ मोहनगारी रे मानिनी, मोह तणुं ए धाम ॥ व० ॥ २३ ॥ नाम सुणी रे आरति करे, दीठी हरी ले रे चित्त ॥ स्पर्शी हुंती हो वल हरे, संगमे वीरज वित्त ॥ व० ॥ २४ ॥ पण नावी न टले किमे, आव्यो संवंध नजीक ॥ चित्त चह्युं रे लेवा नणी, मूके दूत अन्नीक ॥ व० ॥ २५ ॥ हवे नवियण तुमे सांनलो, एह संवंध रसाल ॥ त्रीजे खंडे एकवीशमी, रामविजय कही ढाल ॥ व० ॥ २६ ॥ ६१३ ॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ दूत चाव्यो दमितारिनो, सुनगापुरी संपत्त ॥ साहिब वल वलीयो यको, पहोतो सन्ना तुरत्त ॥ १ ॥ रयण योग्य मुऊ स्वामीने, नहीं तुम लायक एह ॥ द्यो चेटी अम ईशने, वाधे सवल सनेह ॥ २ ॥ वे वंधव वलतुं कहे, करशुं काम विमासी ॥ जा सीताव स्वामी कने, दीयो वधाइ तास ॥ ३ ॥ दूत वोलावी चिंतवे, वे वंधव मन मांहे ॥ करे परानव ए सही, नवि मोकलीये त्यांहि ॥ ४ ॥ ते माटे जइ साधीये, विद्या खेचरे दीध ॥ दर्प टले जो एहनो, तो याये कारिज सिद्ध ॥ ५ ॥ पूर्वजन्म साधित तिसे, आगे उन्नी आय ॥ विद्या सिद्ध यइ कहे, म करो चिंता कांय ॥ ६ ॥ कारिज सिद्ध होशे सवे, जे चिंतवशो चित्त ॥ नक्ति करे विद्या तणी, गंध माल्य सुपवित्त ॥ ७ ॥ इण अवसरे फरी आवीयो, दमितारिनो दूत ॥ कोपे धमधमतो कहे, वनो जाणे यमदूत ॥ ८ ॥ रे चेटी नवि

मोकली, कां मरवानी हुंश ॥ रुव्यो स्वामी न मूकशे, जूठ कहुं तो सूंस ॥ ए ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ करेलमां घम दे रे ॥ ए देशी ॥ कहे बंधव दोय ले चलो, दासीरूप निधान ॥ एहनी स्वामी उपरे, प्राण करे कुरबान ॥ १ ॥ वचन अम सुण ले रे ॥ ए आंकणी ॥ रूप करी दासी तणुं, विद्यावल बलवान ॥ तुरत जइ पहोता तिहां, जिहां प्रतिहरि राजान ॥ व० ॥ २ ॥ कर जोमी उन्नी रही, मृगनयणी मनोहार ॥ दमितारि देखी कहे, अहो अहो अद्भुत नारी ॥ व० ॥ ३ ॥ नाटक मांड्युं मानिनी, मोह्यो नरशिरदार ॥ हाव नाव दाखे नला, लटपटाइ लीयो नारी ॥ व० ॥ ४ ॥ देखी कलाकुशलीपणुं, बोल्यो एहवा बोल ॥ रूप सुगुण नारी इसी, नहीं कोइ जगमां अमोल ॥ व० ॥ ५ ॥ कनकसीरीके मंदिरे, जाइ रहो मनमोद ॥ राग कला सवि शीखवो, नव नव नांति विनोद ॥ व० ॥ ६ ॥ ज्युं पयन्नाजन नाजवे, हर्षित होय विशाल ॥ तेम नृपनी लही आगना, थया मन मांहे खुशाल ॥ व० ॥ ७ ॥ देखी ते रंना जिसी, रूपवंत अनिराम ॥ कुमरी गुणनी उरमी, मोही रह्या गुणधाम ॥ व० ॥ ८ ॥ गीतकला गुण केलवे, नाटक नव नव नांति ॥ प्रीति घनी पासे रहे, ते दासी दिन रात ॥ व० ॥ ए ॥ ले वीणा निज हाथमां, तंती चढावी धून ॥ बिच बिच गाये तानमें, अनंतवीर्यके गुन ॥ व० ॥ १० ॥ मुख पूनम मानुं शशी, अर्धचंड्र सम नाल ॥ लोचन पंकजपांखडी, अधर ते लाल गुलाल ॥ व० ॥ ११ ॥ अहो विधिना ए नर घड्यो, दीठे नांजे रे नूख ॥ मानुं मही पर ए फल्यो, कल्पतरुको रुंख ॥ व० ॥ १२ ॥ कहे दासी प्यासी नइ, देखन उन दीदार ॥ अनंतवीर्यके उपरे, तन मन धन ए उवार ॥ व० ॥ १३ ॥ जिणे उनको देख्यो नहीं, मुखपंकजको फूल ॥ सो नारी लेखे नहीं, जीवित तिनकुं कबूल ॥ व० ॥ १४ ॥ अपराजित रूपे रही, कहे दासी गुण एम ॥ सुणत नइ ते रागिणी, वाध्यो विषयनो प्रेम ॥ व० ॥ १५ ॥ त्रीजे खंडे बावीशमी, ढाल नली सुरसाल ॥ राम कहे जग को नहीं, प्रेम समो कोइ साल ॥ व० ॥ ॥ १६ ॥ राग नेरव ॥ मुने कांइ न गमे ॥ ए देशी ॥ मुझकुं आय मिलावो, मनमोहनतें राजन ॥ मुझ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कनकसीरी कहे सही-पर मोरी, मोही रखुं मोरुं मन ॥ मु० ॥ १ ॥ अनंतवीर्य रजपूत रंगीलो,

अणीयालां लोचन ॥ मु० ॥ २ ॥ गुण निसुणी जइ व्याकुल विनता, नरसें मोहे मन ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ प्राण करुं कुरवान ए उपर, साचो ए साजन ॥ मु० ॥ ४ ॥ दिन रयणी दिल ध्याने लीनो, आवे एह सुपन ॥ मु० ॥ ५ ॥ सागरजल सम तिहां मुज नेहो, सुरसरिता ज्युं धन्य ॥ मु० ॥ ६ ॥ कहुं कर जोमी सयानी मोरी, वात सुणो एक तन ॥ मु० ॥ ७ ॥ स्तिमितसागर कुल शुचि वयरागर, उपन्युं एह रतन ॥ मु० ॥ ८ ॥ मुज दुःखितने आपो आणी, नहींतर शरण अगन ॥ मु० ॥ ९ ॥ जइ प्यासी उनको मुख देखन, चातक चाहे ज्युं घन ॥ मु० ॥ १० ॥ उन बिण ठेर रहे मन मेरे, जनक सहोदर सन ॥ मु० ॥ ११ ॥ लगन लगी मोहे उनके गुनकी, कहा रे कहुं हुं वनत ॥ मु० ॥ १२ ॥ में मोन्युं मति मईीयर पहने, माहरूं तन मन धन ॥ मु० ॥ १३ ॥ जो न मिले मनमोहन मेरो, जाउंगी होय योगन ॥ मु० ॥ १४ ॥ कनक मतिनो पूरण पेमी, प्रगट हुवे परसन ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर जोमी कहे शाहर बंदी, अब में तुम आधीन ॥ मु० ॥ १६ ॥ राग त्रिकलुना कारक एमो, नाख्यो श्री जगवन्न ॥ मु० ॥ १७ ॥ वात सुणो अब आगे रसीली, कान धरी सुरि जन्न ॥ मु० ॥ १८ ॥ सर्व० ॥ ६५६ ॥ श्लोक ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे हरि जो मुज उपरे, तुज मन मान्युं एम ॥ चालो जइये निज पुरी, देवी विमाने क्षेम ॥ १ ॥ कनकमीरी वचनुं कहे, करे माहरा तात ॥ तुमने दगाबज अति घणो, तेणे मुज मन संकात ॥ २ ॥ थोडया ते वेंहु तणा, मन बीहे मन मांहे ॥ अम आगल जो आशगे, ए कुण गणती त्यांहे ॥ ३ ॥ वचन सुणी विस्मित हुउ, पमी प्रेमके पाश ॥ हर खोये गुण मोहिता, मांधे चली उल्लास ॥ ४ ॥ विद्यावंते कीधुं नवुं, सुंदर एक विमान ॥ कंचनमणि नूर शोभते, उंचा रही अगमान ॥ ५ ॥ जो जो मार्ग निरखते, मस्तक नेन कुमार ॥ हरी जाउं हुं नृपसुता, धीज कीजो बाहार ॥ ६ ॥ सुणी नरवीर कोप चड्यो, कहे अतिहरि दसिमारि ॥ रे रे सुनर मिरजहे, जाल न पावे गमार ॥ ७ ॥ कनकमीरी ले चड्यो, सुगन विमान उपर ॥ कुंवरे शाहर पमी, बांसो शेठ अब जाउ ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ कंदर्पनां शर रे कांइ करे, कटके सुगुण राण सधीर ॥ ए देशी ॥ वालम देख रे कांइ चढ्यो कटकाइ, जनक राण सधीर ॥ मारशे तोकुं आइ अनीयो, सबल मोकूं पीर ॥ वालम० ॥ १ ॥ चढ्यो दल चिहुं पासेहुंती, मेघ ज्युं गंजीर ॥ गाजे घन नीशान गाजे, तीर वरसत नीर ॥ ॥ वा० ॥ २ ॥ कुंत चमके अणी ऊबके, निगुण नणदल वीर ॥ मानुं चपला चलत चिहुं दिशि, आइ पहुंचे वीर ॥ वा० ॥ ३ ॥ सुनट सूर उड्डीप दइने, हाकशे ज्युं हमीर ॥ देखी निज नट हटत पीछे, आव्यो प्रतिहरि पीर ॥ वा० ॥ ४ ॥ रे रंक तुं कित जात लेके, सुता रुचिर शरीर ॥ मारके चकचूर करसी, घटे पद अमीर ॥ वा० ॥ ५ ॥ भुजंती तव देखे घर थर, कहे हरि सुण नारी ॥ सिंह अंके फिकर तनकी, कांइ करत विचार ॥ वा० ॥ ६ ॥ देइ आश्वासन एणी परे, सैन्य सज्जीयुं जोर ॥ दोनी चिहुं दिशि वीर धाये, तव मच्यो रणशोर ॥ वा० ॥ ७ ॥ नट कट तव उठली, दमितारि सेना साथ ॥ देखी निज बल मंद चिंते, शोचशुं हरि नाथ ॥ ॥ वा० ॥ ८ ॥ प्रगट हुए रत्न ततक्षण, शंख धनु वनमाल ॥ गदा मणि उर खड्ग देखत, हुए दोय उजमाल ॥ वा० ॥ ए ॥ शंख लेइ करी पूरीयो तव, जोरसें नरसिंह ॥ सैन्य मूर्छित नइ रिपुकी, आप फोज अबीह ॥ वा० ॥ १० ॥ प्रतिहरि तव आइ ढुक्यो, वैर लेण विचार ॥ रथ चढी रणखेत दोडे, दोय बंधु तिवार ॥ वा० ॥ ११ ॥ नजरे नजरे मल्या दुशमन, चढ्यो क्रोध कराल ॥ रंगे रणमेदान ऊटपट, लडे दोनुं व्याल ॥ वा० ॥ १२ ॥ शस्त्रनी जलधार वरसे, रोषशुं दमितारि ॥ शस्त्र तो सब नये निःफल, खले ज्युं उपकार ॥ वा० ॥ १३ ॥ शस्त्र खूटे फरीय पूछे, देखी प्रतिहरि दीन ॥ चक्र समलुं आय वेतुं, करे कहे सुण हीन ॥ वा० ॥ ॥ १४ ॥ देइ तनुजा पाउं पर अब, काहे मरत अकाल ॥ मर दिखावत लोहखंडे, थको तुं कंगाल ॥ वा० ॥ १५ ॥ कनकसीरी तव कंपती सुं, धरत मनमां खेद ॥ हा कंत प्राणाधार केरो, करेगो शिरछेद ॥ वा० ॥ ॥ १६ ॥ म मर मनमां कंत बोले, देख तुं क्या होय ॥ चक्र गोद्युं तेणे हरिकर, आय वेतुं सोय ॥ वा० ॥ १७ ॥ कहे हरि दमितारि सुण तुं, म मर जोगव राज ॥ कनकसीरी कुतात उल्लसी, गइ कीनी आज ॥

॥ वा० ॥ १८ ॥ मान धरी करवाल ले कर, दोमीयो आकाश ॥ आवतो देखी चक्रसें हरि, छेदीयुं शिर तास ॥ वा० ॥ १९ ॥ हुर्ड जयजयकार गगने, कुसुमको वरसात ॥ अनंतवीरय स्वामी तेरो, प्रबल पुण्यसंघात ॥ वा० ॥ ॥ २० ॥ विजयअर्धे वासुदेवो, अपर ए बलदेव ॥ चिरं जीवो कोमी खेचरा, करण लागे सेव ॥ वा० ॥ २१ ॥ जीत हुइ तब अनंतवीरय, उदय ए बलवान ॥ ढाल त्रेवीशमी त्रीजे खंडे, सुणो सुगुण निधान ॥ वा० ॥ २२ ॥ ६०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकसीरी मन चिंतवे, नाठो मुज आचार ॥ ठानी आवी तातथी, में कीयो कुलसंहार ॥ १ ॥ धिक् धिक् म्हापण माहरुं, धिक् धिक् माहरुं रूप ॥ जोतां मुज आगल इस्युं, कारिज थयुं विरूप ॥ २ ॥ कुलखंपण हुं कुंवरी, कां अवतरी जग मांय ॥ जनक अने वली बंधुनो, कस्यो विनाश इण ठाय ॥ ३ ॥ बे बांधव चाल्या तुरत, बेसी विमान मजार ॥ कनकसीरीकों साथ लइ, बहु खेचर परिवार ॥ ४ ॥ निज नगरी जणी चालतां, विच कनकाद्रि उदार ॥ आव्यो तब खेचर कहे, इहां छे जैनविहार ॥ ५ ॥ चैत्य जुहारी जिन तणां, वलतां दीठो साध ॥ कीर्तिधर नामे जलो, गुणमणि जस्यो अगाध ॥ ६ ॥ वरसी तपसी पामीयो, उज्ज्वल केवलनाण ॥ दोय नरेश्वर पद नमी, करे मुनि तणां वखाण ॥ ७ ॥ धरापीठ बेठा विहु, कर जोमीने ताम ॥ जविक जीव प्रतिबोधवा, कहे मुनि देशन आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर वात मीठी, सांजलो जविवृंद रे ॥ पामीयो ए डुल्लह नरजव, करो धर्म अमंद रे ॥ क० ॥ १ ॥ प्रथम चुल्लक अने पाशक, धान्य द्यूत विचार रे ॥ रयण सुमिण ते चक्र जाणो, कूर्म युग तिम धार रे ॥ क० ॥ २ ॥ दशमे परमाणु वखाणो, एह दश दृष्टांत रे ॥ जाणी डुर्लज एह जुगते, मनुजजवनी वात रे ॥ क० ॥ ३ ॥ देश आरिज कुल अरोगी, जाव डुल्लह सद्दाव रे ॥ लही योग ए बंध कारण, दूर ठांमु विजाव रे ॥ क० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व अविरति डुष्ट योगा, तिम कषाय प्रमाद रे ॥ कह्या पंच ए बंधहेतु, तजो मन उन्माद रे ॥ क० ॥ ५ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म केरा, संगसें मिथ्यात

रे ॥ पाप विरमण नहीं तिल जर, कही अविरति जात रे ॥ क० ॥
६ ॥ क्रोध मानो माय लोजो, मूल चार कषाय रे ॥ खंति आर्जव मुक्ति
मार्दव, ए विपर्यय थाय रे ॥ क० ॥ ७ ॥ कहुं मदिरा विषय निद्रा, तिम
कषाय निवार रे ॥ पंचमी विकथा ठांम परही, ए प्रमाद म वधार रे ॥
क० ॥ ८ ॥ योग मन वच काय केरा, जाणवो तुमे सार रे ॥ तेरमा गुण-
गण सुधी, जे रहे निर्धार रे ॥ क० ॥ ९ ॥ हेतु छूटे गुण प्रगटे, करो तास
उपाय रे ॥ कहे केवली धर्मनी मति, करो जिम सुख थाय रे ॥ क० ॥
१० ॥ जव स्वरूपे अंधकूपे, मोह चूपे पाश रे ॥ विषय नामे मांहे पमीया,
होय गति मति नाश रे ॥ क० ॥ ११ ॥ एक विषय विलासहेते,
जे हणे घहु लोक रे ॥ तेहनां फल दोहिलां ते, सहे परजव रोक रे ॥
क० ॥ १२ ॥ शैव्य सरिखा कह्या विष सम, कामिनीना जोग रे ॥ सुख
माने मूढ न लहे, अनादिनो रोग रे ॥ क० ॥ १३ ॥ एह सुख मधुबिंदु
सरिखुं, अंते कटुक विपाक रे ॥ धन्य एहथी रह्या अलगा, जाणी फल किंपाक
रे ॥ क० ॥ १४ ॥ कनकसीरी कर जोमी जंपे, कहो सत्य अवदात रे ॥
विषय चिंतन थकी दुःख दे, सेवीया शी वात रे ॥ क० ॥ १५ ॥ पण कहो
कुण कर्म हुउं, पितर बंधु वियोग रे ॥ कहे नाणी सुणो प्राणी, कर्म सबलो
रोग रे ॥ क० ॥ १६ ॥ ढाल चोवीशमी त्रीजे खंडे, रंगे दाखी एह रे ॥
रामविजय कहे सुणो हवे, पूर्व जव सस्नेह रे ॥ क० ॥ १७ ॥ ७११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे कीरतिधर केवली, शुरू नाण उपयोग ॥ देवाणुप्पिय सांजलो,
पूरव कृतनो जोग ॥ १ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ प्रथम अहिरावण दीठो ॥ ए देशी ॥ पूरव धातकीखंडे, शंखपुर जरते
खंडे ॥ उछिन्नवंश एक नारी, श्रीदत्ता निर्धारी ॥ १ ॥ परघरे करे
व काम, अवला दुःखनुं ए ठाम ॥ कर्म कमाइनो योग, न मले वांछित
॥ २ ॥ एक दिने मुनिवर मलीया, मनह मनोरथ फलीया ॥ कहे
ी हित दाखो, मुजने जीवती राखो ॥ ३ ॥ कहे मुनि धर्मचक्र-
तप करो थइ उजमाल ॥ प्रथम अठम दोय करीये, सामत्रीश चोथ
ीये ॥ ४ ॥ देव गुरु जक्ति अति सारी, पूजा सत्तर प्रकारी ॥ धन

होय तो एम कीजे, दान संपत्ति सारुं दीजे ॥ ५ ॥ गुरु दीधुं तप लीधुं, माने कारिज सीधुं ॥ धन्य गुरु मुज समजावी, सूधी राह बतावी ॥ ६ ॥ गुरु वंदी घरे आवी, कहे पाम्नोशण जावी ॥ तप करे मन हित आणी, लोके उत्तम जाणी ॥ ७ ॥ पारणे खबर ले सारी, ए शुं करशे विचारी ॥ तप महोटुं जिन साध्युं, आतम गुणथी ए वाध्युं ॥ ८ ॥ सात्विक राजसी जोय, तामस त्रीजुं ए होय ॥ दोय तजी एक करीये, सहेजे शिवसुख वरीये ॥ ए ॥ तपस्वी घणी थइ नारी, एक दिन चिंत मजारी ॥ जोतां कंचन पायो, हियडे हेज न मायो ॥ १० ॥ वाधी तपनी प्रतीति, उजमणुं करे रीति ॥ जिनवर पूजा रचावे, साहामी तेमी जिमावे ॥ ११ ॥ तप उजमणुं ए कीधुं, मणुजजन्म फल लीधुं ॥ तप उजमणाथी वाधे, निज उत्साहे जो साधे ॥ १२ ॥ तपथी होवे व्यवदान, तप ए मुक्ति निदान ॥ तप तपीयुं ए निराशी, प्रगटे निज गुणराशि ॥ १३ ॥ यडुक्तं ॥ यद्दूरं यडुरा० ॥ १ ॥ मासखमण उपवासी, समगुणनो जलराशि ॥ एहवे एक मुनि आव्यो, श्रीदत्ता मन जाव्यो ॥ १४ ॥ उठी गइ तस सामी, पाउ धारो मुज स्वामी ॥ पतितने पावन कीजे, आहार निरवद्य लीजे ॥ १५ ॥ पम्लिाजे मुनि जावे, अशनादिक वहोरावे ॥ कहे कृतकृत्य हुं आज, संतोष्या मुनिराज ॥ १६ ॥ धर्म कह्यो मुज मीठो, फल जस नयणले दीठो ॥ पाठली पोरसी आइ, सुणजो धर्म सखाइ ॥ १७ ॥ मुनिवरे कीधो आहार, मासखमण चोविहार ॥ धाख्यो दिवस बीजाथी, सूधो मुक्तिनो साथी ॥ १८ ॥ श्रीदत्ता तिहां आवे, मुनिवर वांदा ते ए जावे ॥ मुनि कहे जिनवर धर्म, निसुणो एहनो मर्म ॥ १ए ॥ त्रीजा मित्र समान, आपे शिवसुखदान ॥ एहना तीन प्रकार, सुणजो ते निर्धार ॥ २० ॥ प्रथम त्वचागत कहीये, दिल मांहे वहीये ॥ बीजो अस्थिगत साचो, पण परमारथ काचो ॥ २१ ॥ त्रीजो मज्जामां जेदो, धर्म न जाये उछेद्यो ॥ प्राणांते नवि मूके, कष्ट पडे नवि चूके ॥ २२ ॥ एह अर्थ एम ध्यावे, परअनर्थ मन लावे ॥ केम अमूरत धर्मे, अस्थि मज्जा कह्यो मर्मे ॥ २३ ॥ इहां उपनय वतलावे, मुनि हवे एम समजावे ॥ कही पचवीशमी ढाल, त्रीजे खंडे रसाल ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३६ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे मुनि उपनय एहवो, नयरी उज्जेणी नाम ॥ नृप जितरिपु
धारिणी तनय, नरसिंह सुत अनिराम ॥ १ ॥ सकल कला पूरण शशी,
ौवनरूप रसाल ॥ कन्या परणावी पिता. द्वात्रिंशत् सुकुमार ॥ २ ॥
ग्तुली घल सुख नोगवे, मनोवांछित संयोग ॥ मात पिता मन वल्लहो,
ासे विपयिक नोग ॥ ३ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

॥ मगध देशको राज राजेश्वर ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते पुरने परिसरे,
आव्यो हो वननो हाथी ॥ उज्ज्वल वर्णे गज तिम उंचो, नृपने कह्युं कोइ
साथी के ॥ १ ॥ राजन् अरज सुणो एक मोरी ॥ हुं वलिहारी तोरी ॥ वाले-
सर ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ गज कोप्यो जन विप्लव करतो, राख हो अमचा
स्वामी ॥ अमो अनाथ अशरण कोण आगे, कहीये जइ शिर नामी के
॥ रा० ॥ २ ॥ सुणी राजा सेना दोमावी, सबल राणीना जाया ॥ देखी
गज मदमत्त मदोद्धत, दीन थइ फरी आया के ॥ रा० ॥ ३ ॥ आप
थयो असवार नरेश्वर, पहेरी सन्नाह ते शूरो ॥ आवी नमे नरसिंह कुम-
रजी, बोले एम गुणपूरो के ॥ रा० ॥ ४ ॥ राज बिराजो महोले
ठाजो, हुकम करो अब अमने ॥ फुरमावो तेहने बांधीने, गुजरावुं लेइ
स्थाने के ॥ रा० ॥ ५ ॥ हुकम हुवो गज लावो हो जाली, दोड्यो थइ
असवार ॥ केसरीया रजपूत रढीयाला, साथे सबल परिवार ॥ रा० ॥
॥ ६ ॥ दीठो गज नव हाथनो लांबो, सात उन्नत त्रण पहोलो ॥ दीर्घ
दंत.कर पिंगल नयणे, दरिसण जेहनो न सोहिलो के ॥ रा० ॥ ७ ॥
चारसें चालीश लक्षणे पूरो, दीठो गयंद कुमारे ॥ सिंधुर राजकुमर नणी
धसीयो, लोक सहुको वारे ॥ ८ ॥ कुमरजी ए गज काल्यो न जाय ॥
देखी ततखेव ए यमना सरिखो, ए पासे जाय बलाय ॥ कुम० ॥ ए० ॥
कुमर कहे तुमे दूरे रहो सवि, ए गजने नसाडुं ॥ तो जितरिपु कुलनो
हुं जायो, गज आणुं महीं चाडुं के ॥ रा० ॥ ९ ॥ चक्र परे गजने
फरवीयो, थकव्यो हो तेहने गाढो ॥ चरणे खेदाणो श्वासे नराणो,
जो रह्यो थइ टाढो के ॥ रा० ॥ १० ॥ जइ बेठो उपर लघु कलशुं,
ीयो राजकुमार ॥ विस्मय पाम्या आलाने आण्यो, वरत्यो जयजय-

कार के ॥ रा० ॥ ११ ॥ जनक समीपे आव्यो कर जोमी, विनये नामे शीश ॥ सहु आशिष दीये चिरं जीवो, कुंवर कोटी वरीस के ॥ रा० ॥ १२ ॥ चिंतवे नरवर राजधुरंधर, पुत्र सुकुल मुह आगे ॥ न घटे मुजने राज्यमां रहेवुं, आव्युं मन वैराग्ये के ॥ रा० ॥ १३ ॥ यडुक्तं ॥ जारं खमे वि पुत्ते, जो नियजारं ठविज्जु निच्चंतो ॥ न य साहेइ सकज्जं, सो मुरकसिरोमणि जणिर्ड ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ सही सम्मति सुत राज्ये थापी, नृप जयंधर मुनि पासे ॥ लोच करी मन शोष हरीने, चारित्र पाले उल्लासे के ॥ रा० ॥ ॥ १४ ॥ चंपकवरणी काया हो कोमल, कीधो उग्र विहार ॥ पंच समिति त्रण गुप्ति संजाले, पाले पंचाचार के ॥ रा० ॥ १५ ॥ हवे नरसिंह नरेसर रुडे, पाले प्रजाने प्रेमे ॥ न्यायमार्ग नवि चूके कोइ, सहुको व्रते देम के ॥ रा० ॥ १६ ॥ अन्य दिवस अतिमायी प्रकट्यो, आकरो चोर प्रचंम ॥ नगर मूष्युं सघलुं तिण धूर्ते, कोइ न देइ शके दंम के ॥ रा० ॥ १७ ॥ महाजन लोक मलीने आवे, राजन् किम रहेवाये ॥ धोले दहाडे धूते हो धूरत, राते बाहार न जाय के ॥ रा० ॥ १८ ॥ देइ दिलासो महाजन वास्यो, आरक्षक रखवाले ॥ पुनरपि महाजन फरीयाद कीधी, कां नृप अम नवि पाले के ॥ रा० ॥ १९ ॥ नहींतर स्थानक आपो अलगुं, तिहां जइने अमे वसीये ॥ तिहां आरक्षक काठो कीधो, बोलाव्यो राये रसीये के ॥ रा० ॥ २० ॥ कहे महाजन राजन् इहां एहनो, वांक न कांइ दीसे ॥ वहूअर बेटी जाय उफेटी, धूरत रात न दीसे के ॥ रा० ॥ २१ ॥ ए कोइ बलीयो ने वली ठलीयो, कोइ प्रपंचे जीताये ॥ कहे राजा करीश हुं रुडुं, महाजन कीधुं विदाय ॥ रा० ॥ २२ ॥ कहे सुव्रत श्रीदत्ता सुण हवे, अस्थि मज्जानी वात ॥ त्रीजे खंडे ढाल ठवीशमी, सांजलो मूकी वात के ॥ २३ ॥ ७६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेशवेष धरी नीसर्यो, राते ते राजान ॥ सघले शंका स्थानके, भ्रमण करे धरी शान ॥ १ ॥ रात्रि मांहे बाहार दिने, फरे अहोनिश ते जूप ॥ पण किहांये दीठुं नहीं, तस्कर तणुं स्वरूप ॥ २ ॥ अन्य दिवस संध्या समय, बेठो तरुतले राय ॥ वस्त्र कषाय त्रिदंमीयो, दीठो मारग मांय ॥ ३ ॥ निज समीप आव्यो यदा, नम्यो नरेश्वर ताम ॥ कुण तुं किहांथी आवीयो, तिणे पण पूठ्युं आम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ देशी ऊकरनीनी ॥ सुण योगींदा वे, वात कहुं अब मेरी ॥ धनके
कारण वे, बहुत देश में फेरी ॥ श्रू० ॥ फेरी दीधी देश विदेशे, बहुत दिवस
हुआ मोकुं ॥ भूख्या तरष्या धन मेलणकुं, बहुत क्या में कहुं तोकुं ॥
पण उपगारी कोउ न मलीया, जासुं टले ए डुःखदंदा ॥ थाका आया देखी
ऊठाया, सुख पाया सुण योगींदा ॥ सुण योगींदा वे ॥ १ ॥ धन मन
ानुं वे, और कहा जग मांये ॥ धनसें इजात वे, जिहां जावे उहां पावे ॥
० ॥ पाइ इजात दोलत डुनिया, धन विण काज न कोइ सरे ॥ निर्धन उर
त दोउ बरोबर, कवि ग्रंथांतर युं उच्चरे ॥ परणी घरणी ते पण उंडे, फरे
ीन पण अणमान्युं ॥ न गणे कोइ प्रतीति ते नरनी, ते माटे धन
मन मान्युं ॥ ध० ॥ २ ॥ अब तुं पाया वे, भाग्यदशा मुफ जागी ॥ कर
सुपसाया वे, हो मुफ उपर रागी ॥ श्रू० ॥ रागी होइ करो मुफ करुणा,
करणी तुमची अति सारी ॥ अवधूत कहावो अलक जगावो, डुनियामें
तुम गति न्यारी ॥ आलसुआ घर आवी गंगा, रंग भया मोरे मन भाया ॥
दरिड्र डुःख ठेहा जोय नमेहा, ताप टले अब तुं पाया ॥ अ० ॥ ३ ॥ कहे
ते दरखी वे, कुण कुण देश तें देखे ॥ कहो मुफ आगे वे, वात विचार
शुं लेखे ॥ श्रू० ॥ लेखे वात विचारी पंथी, कहे चोराशी फरी आयो ॥ कुण
कुण तेह बताव ते मोकुं, भाखे उलट मन पायो ॥ मेंजी देखे देश बहुत
हे, उनकी रीति मिले सरखी ॥ तामें जाणुं तरत पीठाणुं, साची ते कहे
ते दरखी ॥ क० ॥ ४ ॥ सोरठ देख्यो वे, चतुर जिहां नर नारी ॥ मधुरं
घोले वे, मानुं सुर अवतारी ॥ श्रू० ॥ सुर अवतारी जिहां दो तीरथ, शत्रुं
जय गढ गिरनारी ॥ आदीश्वर अबवेसर स्थाप्या, जाउं उनकी बलिहारी ॥
कोमाकोमी अनंता सिद्धा, जिहां मुनिवर सो में पेख्या ॥ बहु दिन उहां
ऊरीया बहु नीसरीया, योगीश्वर सोरठ देख्या ॥ सो० ॥ ५ ॥ कुंकण देश
ी, जिहां पग पग पनवानी ॥ नालियेर फदली वे, भोजन सुंदर शाली
श्रू० ॥ शाली भोजन चतुर विचक्षण. लोक सहुको नहीं डुःखीयो ॥ गयो
नरान करन उन देशे, तोजी में न भयो सुखीयो ॥ कानपट्टमणवाले
से, सबही मोकुं उवेख्यो ॥ कहुं अवधूता सुण तुं मित्ता, एसो में
ण देख्यो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ युं बहुतेरे वे, अंग तेलंग कलिंगा ॥ लाट

उघाडी आवीयो रे, निज मंदिर रे नृप उत्साह रे ॥ चो० ॥ २१ ॥ प्रातः थयो रवि ऊगीयो जी, पुरजन साथे राय ॥ आवे तिहां उतावलो रे, कहे सहुने रे जोवो आय रे ॥ चो० ॥ २२ ॥ जे जेहनुं होय ते ग्रहो जी, नारी अने धनराशि ॥ लेइ सहु पुर आवीया रे, नृप वाध्यो रे सुजसविलास रे ॥ चो० ॥ २३ ॥ जे नारी आणी घरे जी, ते रति न लहे लगार ॥ दस्यु उपर मोही रही रे, दोमी जावे रे चोरके ठार रे ॥ चो० ॥ ॥ २४ ॥ जन आवी कहे रायने जी, राये बोलाव्या वैद्य ॥ कहे उपचार ते कीजीये रे, गुटिकादि करे वलि नैवेद्य रे ॥ चो० ॥ २५ ॥ ते कहे कामण चूरणे जी, थइ परवश ए बाल ॥ निज चूरण आपी करी रे, करुं साजी रे हुं ततकाल रे ॥ चो० ॥ २६ ॥ राजहुकम वैद्ये करी जी, ते सवि मूल स्वभाव ॥ एक रही कांगडुं परे रे, नवि छांडे रे तेह विभाव रे ॥ चो० ॥ २७ ॥ विस्मय पाम्यो राजीयो जी, पूछे हो कारण तेह ॥ वैद्य कहे सुण साहिबा रे, कहुं कारण रे हुं ससनेह रे ॥ चो० ॥ २८ ॥ ढाल भली अड्यावीशमी जी, त्रीजे खंडे विचार ॥ कहेशे राजा आगले रे, पूर्णनो रे हवे अधिकार रे ॥ चो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ८१० ॥ श्लोक १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चूर्णथी रे वाली त्वचा, कोढकनी महाराज ॥ मांस रुधिर कोढक तणां, वाल्यां गरीब निवाज ॥ १ ॥ ते में सवि प्रतिचूर्णथी, करी नीरोगी काय ॥ पण एहनी अस्थिमज्जा, वाली छे महाराज ॥ २ ॥ ते माटे दस्यु तणां, अस्थि घसीने पाय ॥ तो राजन् ए कामिनी, सहेजे साजी थाय ॥ ३ ॥ ते तिम राय करावीयुं, निर्विकार थइ ताम ॥ सकल लोक आनंद भयो, चिरं जीवो ए स्वामी ॥ ४ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥

॥ राजुल चेली भावीये ॥ ए देशी ॥ इण अवसरे तिहां आवीया, निज जनकना हे दीक्षागुरुराज के ॥ श्रीजयंधर नामे भला, भवजलनिधि हो तारणना जहाज के ॥ १ ॥ नरसिंह नृप वैरागीयो, गुणसागर हे सुजस हे राज के ॥ पोते संयम आदर्यो, गुण गिरुआ हे निज आतम काज के ॥ न० ॥ २ ॥ पंचाचार विचारना, गुण पाले हो चाले शुद्ध पंथ के ॥ मारग मुनिवरनो भलो, आराधे हो नहीं कोइ पलिमंथ के ॥ न० ॥

॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, हारवतां हे वाजे वली हाम के ॥ सहे परिषह आकरा, जूख तृषा हे वली ताप ने टाढ के ॥ न० ॥ ४ ॥ घाती- कर्म क्षयथी लह्या, नाण पंचम हे पंचम गति वास के ॥ करुं कर जोमी वंदणा, सिद्धरूपी हे थया लीलविलास के ॥ न० ॥ ५ ॥ कहे सुव्रत जेम योगीने, चूरणे करी हे वासी तस मीज के ॥ तेम धर्मे ए आतमा, वासीजे हे आणी शुद्ध रीऊ के ॥ न० ॥ ६ ॥ एम उपदेश सुणी जली, श्रीदत्ता हे ग्रहे श्रावकधर्म के ॥ मुनि वंदी मंदिर वली, मन मांहे हे जाएया व्रतमर्म के ॥ न० ॥ ७ ॥ सामायिक पोसह करे, उठ अठम हे आंबिल उपवास के ॥ नित्ये विगय न वावरे, शुज जावना हे जावे उल्लास के ॥ न० ॥ ८ ॥ एक दिन कर्म तणे वशे, मन मांहे हे आव्युं तस एम के ॥ शुं फल होशे के नहीं, पाळुं हुं हो सूधो धरी प्रेम के ॥ न० ॥ ए ॥ विचिकित्सा एहवी करी, चवी तिहांथी हे जिहां उनपन्न के ॥ कहे कीर्त्तिधर केवली, ते दाखुं हे सुणो राजन् के ॥ न० ॥ १० ॥ इण विजये वैताढ्यमां, सुरमंदिरे हे नगरे गुणवंत के ॥ कनकपूज्य राजा जलो, वायुवेगा हे राणीनो कंत के ॥ न० ॥ ११ ॥ कीर्त्तिधर सुत तेहनो, जरयौवन हे आव्यो जूपाल के ॥ अनिलवेगा मुऊ कामिनी, गुणवंती हे रूपे रतिबाल के ॥ न० ॥ १२ ॥ कुंज वृषन गजराजने, स्वप्ने हो सूचित सुत सार के ॥ प्रसव्यो आगल ते थयो, जोरावर हे प्रतिहरि दमितारि के ॥ न० ॥ १३ ॥ बहु कन्या परणावीयो, में सोप्युं हो तेहने निज राज्य के ॥ गुरु पासे अणगारता, में लीधी हो लेवा शिवराज के ॥ न० ॥ १४ ॥ ते दमितारिनी वल्लजा, मदिरानी हो कुखे सजात के ॥ कनकश्री पुत्री जली, तुं हुइ हे इहां गुण विख्यात के ॥ न० ॥ १५ ॥ करी विचिकित्सा पूर्वे, ते माटे हे थयो बंधुवियोग के ॥ सकल कमाइ आपणी, जग महोटो हे ए कर्मनो रोग के ॥ न० ॥ १६ ॥ निज पूरव जव सांजली, मुनिमुखथी हो पामी वैराग्य के ॥ धिक् धिक् विषयी जीवने, विषयाथी हे नावे जवताग के ॥ न० ॥ १७ ॥ बेहु बंधवने विनवे, जो अनुमति हे आपो मुऊ आज के ॥ तो दीक्षा जिनराजनी, ग्रही सारुं हे आतमनां काज के ॥ न० ॥ १८ ॥ अनंतवीर्य अपराजिता, कहे सुनगे हे सुनगापुरी जाय के ॥ स्वयंप्रज जिन पासे तुमे,

लेइ दीक्षा हे करजो शुचि काय के ॥ न० ॥ १९ ॥ तेह तपोधनने नमी,
बेहु बंधव हे कनकश्री साथ के ॥ बेसी विमाने चालीया, सुनगापुरी हे
आव्या नरनाथ के ॥ न० ॥ २० ॥ लाख चहुंतालीश गज जला, तेता
वली हे रथ तुरग वखाण के ॥ सोल सहस सेवे जला, अतुलीबल हे
मह्रोटा राजान के ॥ न० ॥ २१ ॥ बे बांधव धरा जोगवे, अतुलीबल हे ते वासु-
देव के, बत्रीश सहस्र अंतेउरी, हरिने घर हे सुर सारे सेव के ॥ न०
॥ २२ ॥ हवे कनकसीरीनो सुणो, शुभ जावे हे दीक्षाधिकार के ॥
प्रीते [illegible]त्रीशमी, ढाल जाखी हे रामविजय उदार के ॥ न० ॥ २३ ॥ ०३७॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे स्वामी समोसर्या, श्रीस्वयंप्रभ जिनराज ॥ चउविह देवे परवर्या,
साथे बहु मुनिराज ॥ १ ॥ पावन करता पाउले, गुण अनंत अरिहंत ॥
समवसरण देवे रच्युं, नामंगल जयवंत ॥ २ ॥ वेगे दीधी वधामणी,
वनपालक तेणी वार ॥ दाधो साडा वार लाख, सोवननो अंबार ॥ ३ ॥
बे बंधव वंदन चाल्या, कनकसीरी सुरंग ॥ सेना लइ चतुरंगिणी, आव्या
श्रीजिनचंद ॥ ४ ॥ समवसरण दीठुं तिहां, वाध्या मनना कोड ॥ बेहु
बंधव स्वामी कही, वंदे बिहुं कर जोडी ॥ ५ ॥ जिन देखीने उल्लस्या, जिम
कोकिल सहकार ॥ करे स्तवन जिनराजनुं, मनमां धरे आनंद ॥ ६ ॥ अथ
श्रीजिनस्तुतिः ॥ भुजंगी छंद ॥ जगन्नाथने ते नमे हाथ जोडी, करे विनति
चक्रिहुं मान मोडी ॥ कृपानाथ संसारकूप तारनार, लह्युं पुण्यथी आज दीदार
त्हारं ॥ १ ॥ मोहिलो मिले राजदेवादि जोगो, परं दोहिलो एक तुझ
दर्शनजोगो ॥ [illegible] कामधेनुं [illegible] स्वामी मीठो, प्रजो पारगामी गइ
दुःख नीठो ॥ २ ॥ चिदानंदरूपी परब्रह्म लीला, विरागी विना लक्ष्मामाहि
[illegible] ॥ [illegible] नेता अनागी, जय रुं [illegible] मोक्ष-
धारी ॥ ३ ॥ न दीठी [illegible] धागमुद्रा, [illegible] गत [illegible] महा
मोहनिद्रा ॥ [illegible] मति ज्ञानसिंधो, नमंता बने हे जगदीश
बंधो ॥ ४ ॥ [illegible] दर्शन [illegible], [illegible] जिनो जन्म
[illegible] ॥ [illegible] विश्व मांहे, [illegible] एक मांहे
॥ ५ ॥ जिनेश्वर [illegible] [illegible] समरे
[illegible] ॥

कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा बार बेठी नलेरी॥ सुधांनोद-
धारा समी ताप टाले, घेहु बंधवा सांजले एक ढाले ॥ ७ ॥ सुणे वाणी
वैराग्यनी चित्त चंगे, कहे सोवनश्री दीयो दीक्षा रंगे॥ हतो जावचारित्र
अभ्यास पूरो, हवे साधशे योग करी चित्त शूरो॥ ८॥ ग्रही आगना श्री
हरि शौरि पासे, वरे उत्सवे साधुधर्म उल्लासे॥ नमी नाथने तेह निज गेह
आव्या, जिनध्यानथी पूर्ण आनंद पाव्या॥ ए॥ करे एक चित्ते तपस्या
अमाया, शुज्ञ ध्यानथी कर्म घाती खपायां॥ चढी श्रेणिमां केवलज्ञान पाया,
नमुं साहुणी सोवनश्री सुहाया॥ १०॥ लहे मोक्षनां सौख्य लीला अनंती,
वर क्षायिक ज्ञान जावे लसंती ॥ चिदानंद चित्ते धरो ध्येय जाणी, कहे
राम नित्ये जपो जैनवाणी ॥ ११ ॥ इति श्रीजिनस्तुतिसंदर्जित कनकश्री
स्तुतिः ॥ पूर्व दोहा ॥ वल अपराजितने घरे, विरता नामे नारी॥ गुणवंती
गुण आगली, गुणमणिनो जंमार ॥ ७ ॥ सुमति इस्ये नामे हुइ, तेहने
पुत्री एक॥ नामे परिणामे समी, जाणे सयल विवेक ॥ सद्गुरुनी संगति
लहे, तत्त्वाऽतत्त्व विचार ॥ तप करवे शूरी घणुं, बालपणाथी सार ॥
॥ ए ॥ जैनग्रंथ जाणे जला, सूधी समकितवंत ॥ जूषण पंच समाचरे,
टाले दूषण तंत ॥ १० ॥ आवश्यक विहु टंकनां, साचवती शुज्ञ चित्त ॥
सामायिक सूधां धरे, जाणे सहु जग मित्त ॥ ११ ॥ दूषण टाले तेहनां,
बोल्यां जे बत्रीश ॥ कामिनी चिंते पर तणां, न धरे मनमां रीस ॥ १२ ॥
एक दिन चोथने पारणे, आव्यो मुनि तस गेह॥ उठीने उन्नी थइ,
आणी धर्मसनेह ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ देशी चांदलीयानी ॥ इण आंगणीये पाउ धारो, साधुजी मुज साधारो,
जवजलनिधि पार उतारो रे॥ मुनिवरजी॥ १॥ जरी थाल उपामीने लावी,
मांड्यो पमघो समजावी, कहे जावे जीनी आवी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ मुज
पतितने पावन कीजे, प्रजुजी आहार ए लीजे, तुम दीठे दिलडुं रीजे रे
॥ मु० ॥ ३ ॥ आज जाग्यदशा मुज जागी, तुज दर्शननी थइ रागी ॥
करो पावन वरु वैरागी रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ दीये उलट जावे दान, करती
तपसी गुणगान, हियडे धरे हर्ष असमान रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ तस दान
प्रजावे आव्या, पंच दिव्य करे सुर जाव्या, अहो महोटा मुनि पमिलाज्या

रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ निर्ग्रंथ पधार्‍या वनमां, हरखी सुमति कनी मनमां, उलट नवि माये तनमां रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ वल केशव निसुणी वात, चिंते धन्य कुमरी जात, नरयौवन आवी भ्रात रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ महानंद मंत्री सुविचारी, मांड्यो स्वयंवर गुण धारी, आव्या भूमिपति नारी रे ॥ मु० ॥ ए ॥ नामांकित आसन उली, वेसे नरवरनी टोली, वाघा कस्या केशर घोली रे ॥ मु० ॥ १० ॥ कन्या लेइ वरमाला, सखी साथे आइ सुकुमारा, घनमां मनुं ए जलवाला रे ॥ मु० ॥ ११ ॥ पूरव नव सासु जीव, एहवे आवे तिहां देव, पहेलां संचित हेव रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ सहु सांजलतां ते आवी, कहे कुमरीने समजावी, जीव ए विषयानो जावी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ जोगवीया वार अनंत, तृप्तो न थयो ए जंत, विषयामिष जोग डुरंत रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ हुं पहेला नवनी सासु, आराध्युं संयम पासुं, पद पाम्युं वैमानिक खासुं रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुमरी निसुणी कहे साचुं, ए सुख सांसारिक काचुं, हवे हुं एहथी नवि राचुं रे ॥ मु० ॥ ॥ १६ ॥ कहे जूपने आणा आलो, संयम लेतां मत वालो, हवे मूकीश काकमालो रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ वलजड मुरारि विचारी, कहे तनया तुज मति सारी, धन्य धन्य तुं वालकुमारी रे ॥ मु० ॥ १८ ॥ अनुमति आपी निज ताते, पंचशत कुमरी संघाते, ग्रह्युं संयम सुव्रता हाथे रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ तप तपती ते अति सारां, वाधी निर्मल ध्याननी धारा, कीधा तेणे उग्र विहारा रे ॥ मु० ॥ २० ॥ करी घातीकर्म क्षय पामी, केवललीला सुख कामी, अनुक्रमे हुइ शिवगतिगामी रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ खंम त्रीजे त्रीशमी ढाल, गुण गाया सतीना रसाल, रामविजय कही उजमाल रे ॥ मु० ॥ २२ ॥ ७७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मुरारि ऋद्धि जोगवे, खंम त्रिहुंनी सार ॥ रणरसमां बांधी घणां, चीकण कर्म अपार ॥ १ ॥ यडुक्तमागमे ॥ चत्तारि सूरा पन्नत्ता तं जहा, खंतिसूरा तवसूरा जुधसूरा दाणसूरा खंतिसूरा अरिहंता नगवंता तवसूरा अणगारा जुद्यसुरा वासुदेवा दाणसूरा वेसमणा ॥ इति॥ पूर्व दोहा॥ प्रीति घणी वेहु बंधुने, रमतां रंगे काल ॥ घणो गयो जाएयो नहीं, मोह वमो जंजाल ॥२॥ चोराशी लख पूर्वनुं, पाली पूरण आय॥ ते हरि नवीयो अवतरुया, पहेली नरके जाय॥३॥ सहस वहेंतालीश वर्षनुं, मध्यम आयु उप्पन्न ॥

पराजित तस विरहथी, मनमां घणुं विखिन्न ॥ ४ ॥ शोक धरे मनमां
णो, बंधव तणे वियोग ॥ गीत गान न गमे किस्युं, न रुचे रमणीजोग॥
५ ॥ नीतिचतुर मंत्री घणो, समजाव्यो सुविवेक ॥ मोहपिशाच ठले
किस्युं, तुम जेहवाने ठेक ॥ ६ ॥ वचन सुणी कांइक थयो, गतशोको
पाल ॥ नाम यशोधर गणधरा, आव्या तिहां तिण काल ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ आंगी अवल बनी ठे रे ॥ ए देशी ॥ गणधर आव्या ठे जी रे,
नमां वंदनने जइये ॥ यशोधर नामे ठे जी रे, पावन देखीने थइये॥ ए
आंकणी ॥ सोल सहस्र राजेश्वर साथे, गणधरने वांदेवा रे ॥ आव्यो
ीन प्रदक्षिणा देइ, प्रणमी सारे सेवा॥ ग० ॥ १ ॥ देशन निसुणे मुनि-
र केरी, करसंपुटने मेली रे ॥ अपराजित शोचे मन मांहे, गयो मुज
धव वेली ॥ ग० ॥ २ ॥ योगीश्वर कहे इष्टवियोगे, शोक हुवे जग मांहे रे॥
ण परिहरवो माहे पुरुषे, जाणी रूप उत्साहे ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रगट मेल
पेशाच परो ए, नामांतर नीपायो रे॥ तरुणपणो विषयानो विरुर्ड, जगमां
रह गवायो ॥ ग० ॥ ४ ॥ इष्टवियोगे रोगे नडीया, कीजे औषध साचुं
॥ सुश्रुत भाख्युं किरिया राख्युं, धर्मऔषध ए साचुं॥ ग० ॥ ५ ॥ शोक
ोग आवे नहीं नेडो, जो मन शुद्ध करीये रे ॥ जिनवर वैद्य तणी आणाए,
तहेजे शिवसुख वरीये ॥ ग० ॥ ६ ॥ मुनिवर वाणी मंत्र महातम, शोक-
पेशाच पणास्यो रे ॥ शुज जावन फूले बहु मूले, निज आतमने वास्यो
॥ ग० ॥ ७ ॥ घर आवी सुत राज्य जलावी, व्रत लेवा नीसरीयो रे ॥
नृपमंगल संघाते महोटो, संयमव्रत आदरीयो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ खंती दंता
बहु गुणवंता, उपशम रसना दरिया रे॥ जयणाए मुनिमारग पाले, चोखी
जेहनी किरिया ॥ ग० ॥ ए ॥ सिंह परे लेइ व्रत पहेलां, सिंह परे ते
पाले रे ॥ समिति गुप्ति सूधी संजाले, व्रतमां दूषण टाले ॥ ग० ॥ १० ॥
धन्य मुनि जे ए गुण साधे, आतमवीरज वाधे रे ॥ मनमां नो हे ऊणो
इणो, अन्न पाणी अणलाधे ॥ ग० ॥ ११ ॥ तप तपीयां डुस्तर बहुतेरां,
गुण रयणागर गिरुआ रे ॥ उंयंसी तेयंसी जसंसी, विषय कषायथी नि-
रुआ ॥ ग० ॥ १२ ॥ अणसण अंते करीने अच्युत, कल्पे सुरना स्वामी
रे ॥ अपराजित मुनिवरजी हुवा, पुण्ये प्रभुता पामी ॥ ग० ॥ १३ ॥

त्रीजे खंडे रामविजय कहे, सुणो एकत्रीशमी ढाले रे ॥ धन्य प्राणी एम शोक तजीने, धर्मे मनडुं वाले ॥ ग० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०४ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो वेहु बंधव तणो, कहुं संयोग संबंध ॥ वीजे नवे जेहवा थया, सुणो तेह प्रबंध ॥ १ ॥ जंबुद्वीपे नरतमां, नगर वैताढ्य उदार ॥ दक्षिण श्रेणे दीपतुं, गगनवल्लनपुर सार ॥ २ ॥ मेघवाहन विद्याधरो, मेघमालिनी नारी ॥ दंपती दोय सुख नोगवे, दोगुंदक अवतार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगुस्या जी ॥ ए देशी ॥ अनंतवीर्यनो जीव हवे चवी जी, पहेली नरकहुंती ते ताम रे ॥ आव्यो मेघवाहन मेघमालिनीने जी, वंशे उपन्यो मेघनाद नाम रे ॥ १ ॥ अनंतवीर्यनो जीव हवे चवी जी ॥ ए आंकणी ॥ पाम्यो यौवन वय रलीयामणुं जी, जेहवो रति रमणीनो कंत रे ॥ परणाव्यो कुमरी खेचर तणी जी, पाट पिताए थाप्यो संत रे ॥ अ० ॥ २ ॥ संयम लीधो मेघवाहन नृपे जी, पाले मुनिवर पंचाचार रे ॥ करे रे क्रिया ते सूधी साधुनी जी, नित्य नित्य जश्ये तस वलिहार रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रेणी वेहुनो स्वामी ते हुर्ज जी, महोटो खेचर ते नृप मेघनाद रे ॥ देश देशांतर सत्य ने दया जी, मन मांहे धरीने आह्लाद रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ एक दिन मेरुवने यात्रा गयो जी, पूजे जिनपडिमा शुन नाव रे ॥ तेम वली विद्या प्रज्ञप्ति नणी जी, महोटो जेहनो जग प्रनाव रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ एहवे आव्या सुर सर्वे कल्पना जी, जिनयात्रा नंदनवन मांहे रे ॥ दीठो अच्युत इंद्रे जिन पूजतो जी, बोलाव्यो धरी मन उत्साहे रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ मनमां विस्मय तेहने उपन्यो जी, केम बोलावे मुजने एह रे ॥ कां मेघनाद तुं मुजने न उंलखे जी, तुज मुज पूर्व नवनो नेह रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ नाखी पूर्व नवनी वारता जी, निसुणी पाम्यो मन वैराग्य रे ॥ इंद्र गया जिन पूजी स्थानके जी, वेहु मनमां वस्यो अनुराग रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आव्यो अपर वली निज मंदिरे जी, मन संनारे बंधव वात रे ॥ मुनि थया जश्ने अमर मुनि कने जी, उत्तम तेहनां कुल जात रे ॥ अ० ॥ ए ॥ नंदनवनमां तप तपे आकरुं जी, रह्या एक रयणी पडिमा तेह रे ॥ मेरुशिखर परे न चले चालव्यो जी, नहीं निज देह उपर

जस नेह रे ॥ अ० ॥ १० ॥ एहवे असुरकुमार निकायनो जी, अश्वग्रीवना सुतनो जीव रे ॥ अमर आवीने पूरव वेरथी जी, करे उपसर्ग मुनिने अतीव रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ ए ए धीरपणुं मुनिवर तणुं जी, न चल्या ध्यान थकी तिलमात्र रे ॥ प्रगटे पुण्य जो पूरव जव तणां जी, तो मले एहवा मुनिनी यात्र रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ थये रे प्रजाते प्रतिमा पारीने जी, विचख्या जगतीतल अणगार रे ॥ चरण आराधी साधी ध्यानने जी, अंते अणसण कीध उल्लास रे ॥ अ० ॥ १३ ॥ पहोता ते पण अच्युत कल्पमां जी, सुर सामानिक इंद्र समान रे ॥ विलसे बेहु बंधव ते सुख घणां जी, जगमां जोजो पुण्य प्रधान रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ सुखजर बावीश सागर आउखुं जी, बावीश सहस वरस एकवार रे ॥ ले आजोग निवर्तित ते जलो जी, शुज चिंतित पुजल आहार रे ॥ अ० ॥ १५ ॥ बहु सुख पाम्या जव एम सातमे जी, सुणतां आतम निर्मल थाय रे ॥ ए खंम त्रीजे ढाल बत्रीशमी जी, रामविजय जिनना गुण गाय रे ॥ अ० ॥ १६ ॥

॥ कलश ॥

॥ तूठो तूठो रे मुज साहिब जगमां तूठो ॥ ए देशी ॥ गावो गावो रे जिनराज तणा गुण गावो ॥ शांति प्रजु पूरव जव सुणतां, घर घर होवे वधावो रे ॥ जि० ॥ १ ॥ जिनगुणनी स्तुति मंगल जणतां, कीर्त्तिस्थंज रोपावो ॥ शुं करे दोषी डुशमन तेहने, जस शिर ए प्रजु चावो रे ॥ जि० ॥ २ ॥ ज्व्य जाव बेहु जेदनी जक्ति, होवे सुजश जमावो ॥ अच्युत शिवलीला सुख पदवी, पद उत्कृष्टे पावो रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ हृदय मांहे प्रजुपदने ध्यावो, प्रजुपदे हृदय लगावो ॥ जिहां लगे मुक्ति नहीं त्यां लगे ए, माहरे प्रजुशुं दावो रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ कामित पूरण संकट चूरण, प्रजुगुण ध्यान सुहावो ॥ एह अतींड्रिय सुखनुं कारण, अहोनिश दिलमां जावो रे ॥ ॥ जि० ॥ ५ ॥ चिरसंचित अघटालणहारी, जिनकथा मांहे मावो ॥ एह रसायण पामी प्रमादे, कां जव हारी जावो रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ शांति प्रजु गुणजास सुणंतां, मंगलमाल उपावो ॥ त्रीजो खंम थयो संपूरण, जंगी ढोल बजावो रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ छठे जवे अपराजित स्वामी, सातमे इंद्र जणाव्यो ॥ ज्व्यनिक्षेप अध्यातम जावे, जणतां जार जगावो रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ राजनगर मांहे पास चिंतामणि, प्रजुशुं तान मिलावो ॥ हुं

तस सान्निध्य त्रीजे खंडे, पूरण कलश चढावो रे ॥ जि० ॥ ए ॥ संवत् सत्तर पंचाशीया वर्षे, कीधो ढाल बनावो ॥ शांति जिनेश्वररासने अवसर, परिगल वित्त ए पावो रे ॥ जि० ॥ १० ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय कवि सान्निध्य, चिंतित सघलां गावो ॥ रामविजय कहे शांति प्रजुजी, मुक मनमंदिर आवो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ८३४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १५ ॥ सर्व ढाल ॥ ३१ ॥ खंम त्रय गाथा ॥ २०ए९ ॥ खंम त्रय प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ७६ ॥ खंम त्रय ढाल ॥ ७ए ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबंधे प्राकृतबंधे द्वादशजवनिबंधे सत्यार्थसंधे कृतसुकृतानुसंधे अमरदत्तमित्रानंदचरित्रानुविद्धपष्ठसप्तमजववर्णनो नाम तृतीयः खंमः समाप्तः३

॥ अथ चतुर्थः खंमः प्रारच्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ चउविह चउमुह जिन कह्यो, दान शील तप जाव ॥ धर्म ए चार प्रकारनो, प्रणमुं जवजल नाव ॥ १ ॥ ज्ञान अजय अन्न औषधे, चिहुं जेदे होय दान ॥ ज्ञानवंत निर्जय हुवे, सुखी नीरोगी निदान ॥ २ ॥ प्रथम दान प्रजुए कह्युं, अर्थ लह्यानुं सार ॥ ते जो पात्रे दीजीये, तो हुवे जव निस्तार ॥ ३ ॥ तत्वविचार ए बुद्धिफल, फलव्रतधारण देह ॥ पात्रदान ए अर्थफल, वचन प्रीतिकर जेह ॥ ४ ॥ शील कुलक्रम आतमगत, त्रिविध होय जग मांहि ॥ बेहुथी यश सुख संपजे, त्रीजो मोक्ष उपाय ॥ ५ ॥ सात्विक राजस तामसी, तप त्रिहुं जेदे होय ॥ दोय जेद किंचित् होइ, सात्विकमां गुण जोय ॥ ६ ॥ जाव तणा बहु जेद ठे, शुज अशुज विस्तार ॥ शुज आदरवा जिन कह्या, अशुज तणो परिहार ॥ ७ ॥ चिहुं जेदे शुद्ध धर्मने, हुं नित्य करुं प्रणाम ॥ खंम कहुं चोथो हवे, सुणो मन राखी गम ॥ ८ ॥ देवलोक सुख जोगवे, श्री अपराजित इंद ॥ हवे जिहां आवी अवतरे, ते निसुणो जविवृंद ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ राणो पूठे रायने ॥ ए देशी ॥ पूर्वविदेहे जंबू तणो जी, सती नदीनी रे पास ॥ मध्यविजय मंगलावती जी, जिहां बहु सुगुणिनिवास ॥ १ ॥

नवि सुणो नव जिन शांतिनो जी ॥ ए आंकणी ॥ जिम हुवे लीलविलास ॥
डुरित दूरे टले नव तणां जी, संपजे वांछित आश ॥ न० ॥ २ ॥ तीर्थं-
कर आदि नररयणनो जी, जिहांकणे संचय सार ॥ सूत्रविख्यात नयरी
कही जी, रयणसंचय गुणधार ॥ न० ॥ ३ ॥ चोरनुं जोर तिलनर नहीं
जी, वली नहीं विट तणो वास ॥ नयरीए न्याय वरते घणो जी, धन
कण ऋद्धि निवास ॥ न० ॥ ४ ॥ वारे डुर्नीतिने जे सदा जी, सकल
प्रजा करे क्षेम ॥ नूप क्षेमंकर जिन तणी जी, आण माने सहु प्रेम ॥
॥ न० ॥ ५ ॥ मइ सुई लही त्रण ज्ञानना जी, धारक त्रिहुं जगमित्त ॥ पण
निज कर्मने काढवा जी, रहे गृहवास शुन चित्त ॥ न० ॥ ६ ॥ तास घरे
शीलगुण शोनती जी, लंपती पुण्यनी राशि ॥ रत्नमाला रलीयामणी जी,
कामिनी गुण आवास ॥ न० ॥ ७ ॥ जीव अपराजितनो चवी जी, उपन्यो
तेहनी कुख ॥ सुपन तेणे चौद दीगं नलां जी, तेहीज राते गतडुःख ॥ न० ॥
॥ ८ ॥ प्रहसमे पीयु कने आवीने जी, नाखीयुं सयल विरतंत ॥ पुत्र
होशे सही ताहरे जी, दीपतो वहु गुणवंत ॥ न० ॥ ९ ॥ कंत क्षेमंकर मुख थकी
जी, सांनली थइ सुप्रसन्न ॥ सकल होजो पीयु तुम कह्युं जी, विकसीयां
नयण तन मन्न ॥ न० ॥ १० ॥ गर्न वाधे हवे अनुक्रमे जी, पूरण मासे
सुत सार ॥ जन्मीयो दीधी वधामणी जी, दासीए हर्ष अपार ॥ न०
॥ ११ ॥ आपीयुं धन वहु तेहने जी, सात पेढी लगे जेह ॥ खरचंतां
केमे खूटे नहीं जी, राखीयो अविहड नेह ॥ न० ॥ १२ ॥ जन्मउत्सव
करे अति नलो जी, पन्नरमुं वज्र आयुध ॥ स्वप्न दीठुं माए तेणे धर्युं जी,
नाम "वज्रायुध" शुद्ध ॥ न० ॥ १३ ॥ शुक्ल पक्ष बीजनो चंद्रमा जी,
दिन प्रत्ये जेम वाधंत ॥ सकल जननां मन मोहतो जी, अनिनव
मानुं रतिकंत ॥ न० ॥ १४ ॥ रंगे रमाडे उत्संगमां जी, मायने मन
घणी आश ॥ सुतमुख देखी मन हरखती जी, बोलती एणी परे नाव
॥ न० ॥ १५ ॥ सुत चिरं जीव रहो माहरा जी, ताहरा डुशमन दूर ॥ दिन
दिन कल्पतरु परे फलो जी, अम मनोवांछित पूर ॥ न० ॥ १६ ॥ अनु-
क्रम अंगे लक्षण धरे जी, अनहिय सहस उदार ॥ वय थयो वरस ए
...ठनो जी, शिखीयो शास्त्रविचार ॥ न० ॥ १७ ॥ जाण बहोंतेर कलानो
...यो जी, सवि लहे जीवना नेद ॥ शुद्ध नयरी ते व्यवहारनी जी,

जगमें हितकार ॥ जिणंदजी ॥ सुर नर असुर मळ्या तिहां हो लाल, ले प्रनु संयमनार ॥ जि० ॥ १ ॥ क्षेमंकर जिन वंदीये हो लाल ॥ वांदे शिव सुख थाय ॥ जि० ॥ दोहग डुरित दूरे टळे हो० ॥ दर्शन दोलत दाय ॥ ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ २ ॥ सर्व सामायिक उच्चरे हो० ॥ सिद्धने करे प्रणाम ॥ जि० ॥ मनःपर्यव तिहां उपन्युं हो० ॥ जाणे मन परिणाम ॥ जि० ॥ ॥ क्षे० ॥ ३ ॥ विचरे जिन पुहवीतले हो० ॥ उपशम रसना सिंधु ॥ जि० ॥ चाले ईर्या शोधता हो० ॥ निरुपम जग जनबंधु ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ४ ॥ घातिकर्मक्षये उपन्युं हो० ॥ उज्ज्वल केवलरूप ॥ जि० ॥ लोकालोक प्रकाशतुं हो० ॥ क्षायिक नाव स्वरूप ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ५ ॥ वीश जुवनपति आवीया हो० ॥ बत्रीश व्यंतर इंद्र ॥ जि० ॥ दश वैमानिक ज्योतिषी हो० ॥ दोय चोसठ मळी इंद ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ६ ॥ समवसरण देवे रच्युं हो० ॥ रचीया त्रण प्राकार ॥ जि० ॥ रौप्य कनक मणिरत्नना हो० ॥ ऊबके तेज अपार ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ७ ॥ पूर्व द्वारे पेसीने हो० ॥ सिंहासन वेसंत ॥ जि० ॥ क्षेमंकर अरिहंतजी हो० ॥ देखी नवि उल्लसंत ॥ ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ८ ॥ रयणसंचय पुरी परिसरे हो० ॥ उत्सव अति मंमाण ॥ जि० ॥ आव्या वज्रायुध वांदवा हो० ॥ नमे प्रनुचरण सुजाण ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ए ॥ क्षेमंकर जिनदेशना हो० ॥ नय उपनय अद्भुत ॥ नविक जीव ॥ कर जोमीने सांजले हो० ॥ सवि सुर नर पहुत्त ॥ ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १० ॥ कल्पतरु सुरधेनुथी हो० ॥ अधिक महोदय हेतु ॥ न० ॥ मूकी निद्रा मोहनी हो० ॥ धर्मशुं राखो हेत ॥ न० ॥ क्षे० ॥ ॥ ११ ॥ करीये परीक्षा एहनी हो० ॥ चिहुं नेदे श्रुत शील ॥ न० ॥ तप करुणा शुद्ध सेवतां हो० ॥ आपे शिवसुख लील ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १२ ॥ जेम आयुर्वेदे कह्युं हो० ॥ करवुं पयनुं पान ॥ न० ॥ अविचारे अर्कादिनुं हो० ॥ पीतां होवे गुणहानि ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १३ ॥ बुध विचारे वेयतुं हो० ॥ वायक पीवे तेह ॥ न० ॥ बलपुष्टिकर धेनुनुं हो० ॥ पय मूकी संदेह ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १४ ॥ तेम आदरीये धर्मने हो० ॥ ए वायक अविचार ॥ न० ॥ माने निज कुल चालने हो० ॥ धर्म करी निर्धार ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १५ ॥ धर्म अहिंसा लक्षणे हो० ॥ आतम शुद्ध स्वनाव ॥ न० ॥ परखी लीजे प्रेमथी हो० ॥ सहज गुणे सन्नाव ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १६ ॥

अविचार्युं करतां थका हो० ॥ होवे दोष महंत ॥ न० ॥ काज विचार
जे करे हो० ॥ तेहीज कहीये संत ॥न०॥ क्षे० ॥१७॥ आम्रनिपाति नृपादिन
हो० ॥ इहां सुणवा दृष्टांत ॥ न० ॥ तव पर्षद पूछे तिहां हो० ॥
ते कुण कहो नगवंत ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १८ ॥ केम अविचारित कामथी
हो० ॥ श्यो तेहोनो हुउं दोष ॥ न० ॥ पूछे परिषद नावशुं हो० ॥ कहे
प्रनुजी गतदोष ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १९ ॥ ढाल ए चोथा खंमनी हो० ॥
ए संख्याए जाण ॥ न० ॥ रामविजय कहे सांजलो हो० ॥ कहेशे प्रनु
हित आण ॥ न० ॥ क्षे० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १०५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ क्षेमंकर जिनराज, नाखे नविचण हित नणी ॥ सुणीये आतम काज,
साधेवा सवि प्राणीया ॥ १ ॥ उत्तम सुखनी वात, उत्तम कारज उपरे ॥
सुणतां दिन ने रात, धर्म तणी दृढता हुवे ॥ २ ॥ परखी करतां धर्म, नर्म
रहित नावे करी ॥ लहीये शिवपद शर्म, मर्म लहेवो दोहिलो ॥ ३ ॥ जेम
सुतने निज तात, अशुरू रयण शंखा दीया ॥ जाणी अशुरू शुरू वात, दृष्टि-
परीक्षा जब हुइ ॥ ४ ॥ अविमास्युं कोइ काम, करतां पस्तावो घणो ॥ आम्र-
निपाति ताम, आदि तणो उपनय सुणो ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सांजल सनतकुमार हो ॥ राजेश्वर ॥ ए देशी ॥ देश अवंती मांहे
हो ॥ नवि प्राणी ॥ नयरी उज्जेणी नाम वखाणीये ॥ तिहां जितशत्रु राय
हो ॥ न० ॥ वैरिगज कंठीरव जाणीये ॥ १ ॥ तस घर राणी अदंन हो
॥ न० ॥ नामे विजयसीरी सोहामणी ॥ कीधी दासी रंन हो ॥ न० ॥
रूपे मंथरगति रखीयामणी ॥ २ ॥ सुखसागरमां दोय हो ॥ न० ॥ रंगे रमे
ते कछपनी परे ॥ एक दिन हर्षित होय हो ॥ न० ॥ बेठो सनामां नृप
आडंबरे ॥३॥ दोवारिक तेणी वार हो ॥ राजेश्वर ॥ अर्ज करे आवी नृप
आगले ॥ आव्या रायडुवार हो ॥ न० ॥ ॥ कोइक चार पुरुष रूपे नले
॥ ४ ॥ तुम मलवानी आश हो ॥ रा० ॥ हुकम होवे तो आवे अंदरे ॥
कहे नृप तेमो तास हो ॥ दौवारिक ॥ आदर दीजे आव्या मंदिरे ॥ ५
कम हुवो नृप जाम हो ॥ रा० ॥ चार ते चतुर सनामां आवीया ॥
खी आकृति ताम हो ॥ रा० ॥ सकल सनाना मनमां नावीया ॥ ६ ॥

जाएयो उत्तम वंश हो ॥ रा० ॥ तांबूलादिक देइ सन्मानीया ॥ ठाना न रहे हंस हो ॥ रा० ॥ वगर कह्याथी सहुए जाणीश ॥ ७ ॥ तोपण पूछे तास हो ॥ कुंवरजी ॥ कहो कुण कारण किहांथी पधारीया ॥ सुण स्वामी अरदास हो ॥ रा० ॥ देश अवंतीप्रज्ञु उपगारीया ॥ ८ ॥ कहे तेहमां अनुजात हो ॥ रा० ॥ उत्तरपंथे अति रलीयामणुं ॥ कनकतिलक विख्यात हो ॥ रा० ॥ पुर अवनीमां उंपे अति घणुं ॥ ए ॥ रिपुमर्दन तिहां राय हो ॥ रा० ॥ पाले निज प्रजा रंगे करी ॥ सबलो वरते न्याय हो ॥ रा० ॥ रूपवती तस राणी सुंदरी ॥ १० ॥ दंपती दोय रसाल हो ॥ रा० ॥ सुख विलसंतां सुत सोहामणा ॥ चार थया सुकुमार हो रा० ॥ राये कीधां वहुत वधामणां ॥ ११ ॥ प्रथम हुर्ज देवराज हो ॥ रा० ॥ वरस ने फुर्लज कीर्त्तिथी वली ॥ जोमीजे पद राज हो ॥ रा० ॥ एम निहुं सुत देखी आशा फली ॥ १२ ॥ सकल कला अन्यास हो ॥ रा० ॥ जनके शिखवीया यत्ने करी ॥ नवयौवनमां नूप हो ॥ रा० ॥ चारे परणाव्या नृपदीकरी ॥ १३ ॥ इण अवसरे निज तात हो ॥ रा० ॥ अंगे आनवर्त्तक रोगे पीमीयो ॥ राज्य प्रथम सुत हाथ हो ॥ रा० ॥ सोंपीयुं ते परजव हिंमीयो ॥ १४ ॥ राज्य लही देवराज हो ॥ रा० ॥ पाले रूमी रीते आपणुं ॥ वलीया अम महाराज हो ॥ रा० ॥ गोत्रीए जोरो पहोंचाड्यो घणो ॥ १५ ॥ पुण्यदशा अम हीण हो ॥ रा० ॥ देश हुवा वश सहु दायादने ॥ नीसरीया थइ दीन हो ॥ रा० ॥ कीधा शुं हुवे ए विखादने ॥ १६ ॥ दिन पलटे सवि लोक हो ॥ रा० ॥ पाणी वलमां सहु ए पारकुं ॥ केहो कीजे शोक हो ॥ रा० ॥ धर्म समो नहीं कोइ तारकु ॥ १७ ॥ विहडे सुत ने वंधु हो ॥ रा० ॥ विहडे वहाली परणी कामिनी ॥ पमीया कर्मने वंध हो ॥ रा० ॥ एक न विहडे धर्म ए सुरमणि ॥ ॥ १८ ॥ ते माटे सुण राज हो ॥ रा० ॥ आव्या तुम पासे उतावला ॥ वंधव ए देवराज हो ॥ रा० ॥ सेवा कारण हवे समाकुला ॥ १९ ॥ देव्या तुझ गुण हूत हो ॥ रा० ॥ वांहे प्रयाने तुं तारे सही ॥ जो उत्तम कुल पुत हो ॥ रा० ॥ प्रारंजीया माजण पीडे नहीं ॥ २० ॥ यतः ॥ परपठपारस्सं, मा जयणि जणेसि एरिसं पुत्तं ॥ मा उयरेवि धरिज्जासु, पत्थणजंगो कडे जेस ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे जिनशत्रु नरिंद हो ॥ रा० ॥

चिंता मत करजो चित्त मांहे तुमे ॥ रहो अम पासे आनंद हो ॥ रा० ॥ सेवा थाशे ते करशुं अमे ॥ २१ ॥ तुम जेवा गुणवंत हो ॥ कुमरजी ॥ आव्या आंवे ज्युं वाये कोकिला ॥ शरण ए संतने संत हो ॥ कु० ॥ चंचल कमला स्थिर न रहे इला ॥ २२ ॥ मत थाउं दिलगीर हो ॥ कु० ॥ वीर विराजो सुंदर मालीये ॥ अशन वसन वर चीर हो ॥ कु० ॥ ल्यो तुमे सुख मांहे दिहा गालीये ॥ २३ ॥ बहुत करी सुपसाय हो ॥ कु० ॥ सेवक थाप्या चोकी अंगनी ॥ बहु सन्मान्या राय हो ॥ कु० ॥ सुजश वाध्यो वेला उठरंगनी ॥ २४ ॥ चोथे खंडे रसाल हो ॥ नवि प्राणी ॥ ढाल नणी ए रंगे पांचमी ॥ राम कहे उजमाल हो ॥ न० ॥ धर्म करीजे परखी उद्यमी ॥ २५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ रात तणा चिहुं याम, चिहुं बंधव चोकी करे ॥ अनुक्रमे अनुक्रमे काम, राय नलाव्युं आदरे ॥ १ ॥ आप आपणे याम, तिलजर को उंघे नहीं ॥ दोहिली सेवा श्याम, देव म देजे तुं सही ॥ २ ॥ यतः ॥ आहारयति न स्वस्थो, विनिद्रो न प्रबुध्यते ॥ वक्ति न स्वेछया किंचित्, सेवकः किं नु जीवति ॥ १ ॥ कष्टं नो सेवकानां तु, परछंदानुवर्त्तिनाम् ॥ स्वयं विक्रीतदेहस्य, सेवकस्य कुतः सुखम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ जोमक सोनैया दीये, तोही न कर सेवाकर्म ॥ नर ने नारी एम नणे, शुं जीवितनुं शर्म ॥ ३ ॥ यतः ॥ मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा, क्षांत्या नीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः ॥ धृष्टः पार्श्वे वसति च सदा दूरतश्चाप्रगल्नः, सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ ३ ॥ सोरठी दोहो ॥ मूकाव्युं निज राज, वेठ वलगाकी पापीए ॥ दुष्ट देवथी आज, राखे तिम रहीये सही ॥ ४ ॥

॥ ढाल उठी ॥

॥ धारा महोला उपर मेह, फबूके बीजली ॥ हो राज ॥ क० ॥ ए देशी ॥ लही नृपनो आदेश, के कोइक कामने ॥ हो लाल के ॥ को० ॥ गयो एक दिन देवराज, नजीकने गामने ॥ हो० ॥ न० ॥ करी कारज मध्याह्न, समय पाठो वल्यो ॥ हो० ॥ स० ॥ विच मांहे चढीयो जोर, पवन घनशुं मल्यो ॥ हो० ॥ प० ॥ १ ॥ वाये वाउलीया उडे, धूल धोरण चढी ॥ हो० ॥ ॥ धू० ॥ कंकर तृण तिम पत्र, दोमी जाय उपमी ॥ हो० ॥ दो० ॥ चिहुं

दिशहुंती ताम, उठी कादंबिनी ॥ हो० ॥ उ० ॥ करे कमाको जोर, झबूके दामिनी ॥ हो० ॥ झ० ॥ २ ॥ वरसे वरसलो बिंदु, धरोपरि मोटका ॥ हो० ॥ ध० ॥ क्षण मांहे रही जाय, रमाडे गोटका ॥ हो० ॥ र० ॥ वली आवे देइ दोट, लपेटे जूमिने ॥ हो० ॥ ल० ॥ कां रमे प्रीयम साथ, विसाख्यो तें मुने ॥ हो० ॥ वि० ॥ ३ ॥ वायु शीतल वाय, जलदधारा घणी ॥ हो० ॥ ज० ॥ थर थर धूजे अंग, विछूटे कंपनी ॥ हो० ॥ वि० ॥ तव देवराज कुमार, विचारी वरु तले ॥ हो० ॥ वि० ॥ आवी उनो ठेला, ठंडी निश्वसे ॥ हो० ॥ ठं० ॥ ४ ॥ वरु उपरथी वाक्य, सुणयुं तव निद्राकणे ॥ हो० ॥ सु० ॥ मन मांहे चिंते एम, इहां ए कुण नणे ॥ हो० ॥ इ० ॥ निसुणुं मांमी कान, जोउं शुं उच्चरे ॥ हो० ॥ जो० ॥ सुणे पैशाची वाचे, पिशाच वातो करे ॥ हो० ॥ पि० ॥ ५ ॥ लांवी पगीने पांह, गाहा एक कहे ॥ हो० ॥ गा० ॥ बीजो मांमी कान, के साथी सद्दहे ॥ हो० ॥ के० ॥ त्रीजो चिंते ताम, रह्यो हेठल थकी ॥ हो० ॥ ॥ र० ॥ जोयुं अचरिज एह, कहेशे शी वकी ॥ हो० ॥ क० ॥ ६ ॥ अत्र परिभोक्तं गाथाद्वयं ॥ को को जाणसि किंची, सो पनणदिनो कहेहि मह कि सं ॥ जंपइ इमोवि अज्ञं, लहीए सो नरिंदोत्ति ॥ ४ ॥ बीएण तउ पुठो, केण निमित्तेण कीइ वेलाए ॥ सो जंपइ सप्पाउ, पढमे पहरंमि संती-ए ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ जाणे पिशाची वाणीनो, अर्थ ते आपथी ॥ हो० ॥ ॥ आ० ॥ हा हा माहारो स्वामी, मरशे सापथी ॥ हो० ॥ म० ॥ पहेला प्रहर मझार, देवे शुं कीधलुं ॥ हो० ॥ दे० ॥ अथवा नसुं लखुं एह, में कारिज सीधलुं ॥ हो० ॥ में० ॥ ७ ॥ करीश हुं एह उपाय, माहिय उगारशुं ॥ हो० ॥ ॥ सा० ॥ दश करीने मरवुं, विघ्न निवारशुं ॥ हो० ॥ वि० ॥ आशुं नहीं दुरचोर के, ढोर परे हुवे ॥ हो० ॥ ढो० ॥ स्वामी जनक समान, सहु कवि इम स्तवे ॥ हो० ॥ स० ॥ ८ ॥ यतः ॥ अन्नदः प्राणदश्चैव, स्थानदो नय-रक्षकः ॥ ज्ञानदो जनकश्चैव, पंचैते पितरः स्मृताः ॥ ६ ॥ पूर्व ढाल ॥ एम चिंतवतो चित्त, आव्यो नृप अंतिके ॥ हो० ॥ आ० ॥ पर्यो ढाल उरंद, धरतो शिर चिंतके ॥ हो० ॥ ध० ॥ सांऊ समयमां राजाने, विसर्जी राजवी ॥ हो० ॥ वि० ॥ वादल घोर घटा घन, रहीयो गाजवी ॥ हो० ॥ र० ॥ ॥ ए ॥ आवी निज आवास, नरेश्वर पोढीयो ॥ हो० ॥ न० ॥ सांभो

सोको ताणी, उपर पट छंडीयो ॥ हो० ॥ उ० ॥ पासे रही पट्टराणी, वळी ते सेजमां ॥ हो० ॥ व० ॥ नीमी निहु भुजबंध, ते सूतां हेजमां ॥ हो० ॥ ते० ॥ १० ॥ आव्यो पहेले पहोर, चोकीने कारणे ॥ हो० ॥ चो० ॥ जोवे ते देवराज, रह्यो गुह्य बारणे ॥ हो० ॥ र० ॥ अथ उपरे ते वास, भुवन निहालतो ॥ हो० ॥ भु० ॥ बारी जाळी गोंख, विवर सवि न्हालतो ॥ हो० ॥ वि० ॥ ११ ॥ खड्ग महीं निज हाथ, रह्यो एकण मने ॥ हो० ॥ र० ॥ चंद्रोदयने विवरे, अहि संचित तने ॥ हो० ॥ अ० ॥ देखी महीयुं एक, करे मुख साहसी ॥ हो० ॥ क० ॥ बीजे करे दोय खंड, कस्या महीने असि ॥ हो० ॥ क० ॥ १२ ॥ गोपवीया एक ठोर, जइ ते खंडने ॥ हो० ॥ ज० ॥ मन चिंते थयुं कारज, हणीयो लंठने हो ॥ ह० ॥ निद्रा विवसन देवी, उरःस्थल उपरे ॥ हो० ॥ उ० ॥ देखी पडीयां बिंदु, रुधिरनां डुःख धरे ॥ हो० ॥ रु० ॥ १३ ॥ रखे विषसंक्रम होय, इस्युं मन चिंतवे ॥ हो० ॥ इ० ॥ लूंछे स्वामीभक, कलाने अ० ॥ कुच उपर कर देखी, शंक्यो नृप हृदयथी ॥ हो० ॥ क्रोध धरी मन चिंते, मारुं एहने ॥ हो० ॥ मा० ॥ अशुभना उदयथी ॥ हो० ॥ शं० ॥ १४ ॥ नित प्रत्ये जेहने ॥ हो० ॥ नि० ॥ कीधुं एणे हराम, सवि ते माहरुं ॥ हो० ॥ स० ॥ कीधुं कर्म कठोर, थइने बाहरु ॥ हो० ॥ थ० ॥ १५ ॥ हुं एहने विश्वास, रहुं रयणी समे ॥ हो० ॥ र० ॥ करे ए एहवुं काम, हवे मुख नवि गमे ॥ हो० ॥ ह० ॥ प्रीति तणुं जिहां ठाम, तिहां त्रण टालीये ॥ हो० ॥ ति० ॥ अर्थसंबंध विवाद, रमणी न निहालीये ॥ हो० ॥ र० ॥ १६ ॥ यतः ॥ यदीछेद्विपुलां प्रीतिं, त्रीणि तत्र निवारयेत् ॥ विवादं चार्थसंबंधं, परोक्षे दारदर्शनम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ ब्रह्महत्या ने प्रवास, (प्रवासशब्देन साधारणं द्रव्यं) दरिद्र धन देवकुं ॥ हो० ॥ द० ॥ गुरुपत्नी वळी तेम, ए पातकनारकु ॥ हो० ॥ ए० ॥ नवि पामे ते स्वर्ग, नरक अधिकारीया ॥ हो० ॥ न० ॥ ठगो जाणो कृतगुण, जेणे विसारीया ॥ हो० ॥ जे० ॥ १७ ॥ वळी नृप चिंते एह, जोरा[illegible] ठे घणुं ॥ हो० ॥ जो० ॥ कोण जाणे हणे एह, के हुं एहने हणुं ॥ हो० ॥ [illegible] ॥ माटे कोइ उपाय, करीने मारशुं ॥ हो० ॥ क० ॥ वैरीने विषवेल, [illegible]ी न वधारशुं ॥ हो० ॥ न० ॥ १८ ॥ जोजो गुणनो दोष, थइने निपन्यो [illegible]हो० ॥ थ० ॥ जलनालेरकपूर, थकी विष उपन्यो ॥ हो० ॥ थ० ॥

सूतो फरीने राय, के निद्राभिष करी ॥ हो० ॥ के० ॥ पहेलो पहोर व्यतीत, पूरी थइ चाकरी ॥ हो० ॥ पू० ॥ १ए ॥ आव्यो तव वत्सराज, कहे बंधव तुमे ॥ हो० ॥ क० ॥ राज पधारो गेह, हवे रहेशुं अमे ॥ हो० ॥ ह० ॥ निज मंदिरे देवराज, पहोंच्यो जइ तिहां ॥ हो० ॥ प० ॥ नृप पूछे पहोरायत, कोण अछे इहां ॥ हो० ॥ को० ॥ २० ॥ कहे स्वामी वत्सराज, हुं सेवक राजनो ॥ हो० ॥ हुं० ॥ उनो हुं सेवा मांहे, के पूरो साजनो ॥ हो० ॥ के० ॥ छही चोथे ढाल, सीरादे ए चढी ॥ हो० ॥ सी० ॥ राम कहे क्रोधांध, न राखे प्रीतडी ॥ हो० ॥ न० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १६० ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कहे नरवर एक काम, वरस करीश तुं माहरुं ॥ कहे शिर जोरे स्वामी, वचन न लोपुं तुम्ह तणां ॥ १ ॥ द्यो आदेश सुजाण, शी शंका मुजथी करो ॥ प्रनु तुम वचन प्रमाण, शेष परे शिरे धरुं ॥ २ ॥ प्रेषण भूत्य परीक्ष, व्यसने बंधव परखीये ॥ आपत्तिकाल सरिख, विजवहाय घणी भारजा ॥ ३ ॥ कहे राजा जो एम, तुम मनमां आवे अछे ॥ कर कारज तजी प्रेम, हण बंधव देवराजने ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां के ॥ उडे० ॥ ए देशी ॥ तहत्ति करी नृपथाण, सुजाण ते नीसस्यो के ॥ सु० ॥ मंदिरथी वत्सराज, हृदयथी थरहस्यो के ॥ हृ० ॥ चिंते कोप्यो जोर, राजन देवराजने के ॥ रा० ॥ विरुई करे निर्धार, ए वयणे आजने के ॥ ए० ॥ १ ॥ तनु दारा धन ज्योही, उपरे एहवो के ॥ उ० ॥ कोप होय जग मांहे, ए दीसे तेहवो के ॥ ए० ॥ पण मुज बंधव मांहे, न को अवगुण अछे के ॥ न० ॥ जे उत्तम होय तास, अकारिज नवि रुचे के ॥ अ० ॥ २ ॥ सज्जन जन अपवाद, थकी रहे बीहना के ॥ थ० ॥ जेह जितेंद्रिय तेह, अकाज न ईहता के ॥ अ० ॥ मरण करे हुंकारे, न चाले उतपथे के ॥ न० ॥ सज्जायंत सुशील, सुजदाण संकथे के ॥ सु० ॥ ३ ॥ यतः ॥ मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा,-स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयंतः ॥ परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं, निजहृदि विकसंतः संति संतः कियंतः ॥ १ ॥ विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ॥

यशसि चाजिरतिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुफ बांधव देवराज, ए सज्जन जातिनो के ॥ ए० ॥ न मले एहमां कोइ, विचार कुजातिनो के ॥ वि० ॥ केम कोप्यो नरराज, निवाजने स्थानके के ॥ नि० ॥ सबल विमासण उपनी, श्राज श्रचानके के ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ पण कुपरीक्षक राय, श्रज्ञाने श्रावस्यो के ॥ श्र० ॥ विण परमारथ जाणे, हुकम एणे कस्यो के ॥ हु० ॥ पण इहां काल विलंब, करुं शुज्ञ कारणे के ॥ क० ॥ जाख्यो ग्रंथमां एहज, श्रशुज्ञ निवारणे के ॥ श्र० ॥ ५ ॥ चिंतवी राय समीप, वही श्राव्यो वली के ॥ व० ॥ कां रे न लाव्यो तस शिर, शुं तुफ मति गली के ॥ शुं० ॥ कहे वत्सराज नरेश्वर, ते जागे सही के ॥ ते० ॥ जागंतां देवराज, हणाये नहीं सही के ॥ ह० ॥ ६ ॥ मारीश हुं निद्राजर, ते थाशे यदा के ॥ ते० ॥ नृपतिए पण वात, हृदय धारी मुदा के ॥ हृ० ॥ स्वामी विनिद्र जणी के ॥ नि० ॥ ७ ॥ वात विनोद विना ए, न जाये यामिनी के ॥ न० ॥ राय कहे तुं दाख, कथा मुफ कामनी के ॥ क० ॥ सुण नृपवर कहो कोइ, वात सोहामणी के ॥ वा० ॥ वत्स कहे श्रहवा, निसुणो महारी के ॥ चा० ॥ ८ ॥ सुजगा सुजगा नामे, राणी तस वालही के ॥ रा० ॥ बहु नरवर, पाटलीपुरमां के ॥ पा० ॥ पृथ्वीराज नरेश्वर, चावो शत्रुमां रतिरमणी श्रनुहार के, रूप गुणे सही के ॥ रू० ॥ शेठ तिहां रत्नसार, वसे एक गुणनिलो के ॥ व० ॥ सहु व्यवहारी मांहे के, सोहे शिरतिलो के ॥ सो० ॥ ए ॥ तस घर नारी सलज्जा, नामे रत्नुका के ॥ ना० ॥ गौरंगी रतिग्रंथ, विचारनी पंजिका के ॥ वि० ॥ धनदत्त नामे एक, तनय तस कुलनो के ॥ त० ॥ मात पितानो जक्त, न रागी दोषनो के ॥ न० ॥ १० ॥ एक दिन कृतश्रृंगार, सुमित्रशुं परवस्यो के ॥ सु० ॥ श्राव्यो चहुटा मांहे, ते धनमदशुं जस्यो के ॥ ते० ॥ कोइ प्रशंसे धन्य ए, जोगी प्राणीया के ॥ जो० ॥ विलसे लछी विलास, सोजागी जाणीया के ॥ सो० ॥ ११ ॥ तव बीजो कहे एह, जणी न वखाणीये के ॥ ज० ॥ श्राप तणी उपराजी न, श्राथ ए वाणीए के ॥ श्रा० ॥ बाप तणे प्रसाद, करे ठे साहिबी के ॥ क० ॥ वेगो करे ठे तान, घनी तननी ठवि ॥ व० ॥ १२ ॥ वात सुणी मन मांहे, शोचे ते इस्युं के ॥ शो० ॥

विण भुजबल उपराजण, मुफ जीव्युं किस्युं के ॥ मु० ॥ धन लावी करुं धर्म, सुगमे वावरुं के ॥ सु० ॥ जइ परदेशे कलंक, ए उतारुं परुं के ॥ ए० ॥ १३ ॥ कमलउदधि हरिउरमां, वसे ए वारता के ॥ व० ॥ पण व्यवसाय उदधि मांहे, दीसे शाश्वता के॥ दी० ॥ ते माटे व्यापार, करी श्री जोमशुं के ॥ क० ॥ एह तणुं सवि कहेण, एणी परे मोमशुं के ॥ ए० ॥ १४ ॥ यतः ॥ या श्रीः सरोरुहांजोधि, विष्णोर्वक्षसि सा श्रुतिः ॥ या पुनर्व्यवसायाब्धौ, लक्ष्मीः साध्यक्रमीक्षते ॥ ३ ॥ व्यापारे वसते लक्ष्मीः, किंचित् किंचिच्च कर्पणे ॥ अस्ति नास्तीव सेवायां, भिक्षायां नैव संजवः ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ तेणे कह्यो निज आशय, मित्रनी आगले के ॥ मि० ॥ ते पण कहे सुण साच, लख्युं एम कागले के ॥ ल० ॥ निज गुणथी विख्यात, कह्या उत्तम गुणी के ॥ क० ॥ बापगुणे विख्यात, कीर्त्ति मध्यम तणी के ॥ की० ॥ १५ ॥ यतः ॥ उत्तमाः स्वगुणैः ख्याताः, मध्यमाश्च पितुर्गुणैः॥ अधमा मातुलैः ख्याताः, श्वशुरैश्चाऽधमाऽधमाः॥५॥ पूर्व ढाल ॥ घरे आवी निज तातने, वात सवे कही के॥ वा०॥ जाइश हुं परदेश, रजा मुफ द्यो वही के ॥ र० ॥ जनक हिये धरे दुःख, कहे वत्स शुं कह्युं के॥ क० ॥ ल्यो ए धन भंमार, में ताहरुं मन लह्युं के ॥ मं० ॥ ॥ १६ ॥ विलसो वांछित जोग, रमो रंग मालीये के॥ र० ॥ चित्तहुंती परदेशनी, चिंता टालीये के॥ चिं०॥ ढाल कही ए चोथे, खंडे सातमी के॥ खं०॥ कहे वत्स वात सुणो नृप, आगल मन गमी के ॥ आ० ॥ १७ ॥ १०१ ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनद कहे सुणो तातजी, तुमे उपराजी लाठ ॥ न घटे जोगवत्री प्रभु, जेम विणसे सवि साच ॥ १ ॥ इण वचने जाण्युं पिता, न रहे राख्यो एह ॥ शिख समर्पी पुत्रने, सिद्ध करो गुणगेह ॥ २ ॥ त्यागी कृपण थजो तुमे, निर्दय वली दयाल ॥ परदेशे होजो सही, शूर अने उजमाल ॥ ३ ॥ शिक्षा दीधी पुत्रने, चाल्यो सबले साथ ॥ करियाणुं लीधुं बहु, चित्त समरी जिननाथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी हुहारीनी ॥ हवे साथ संघाते हो, कुंवर हर्ष धरी ॥ परदेशे चाल्यो हो, माले शकट जरी ॥ केतएक दिवसे हो, श्रीपुर नयर लही ॥

परिसर उतरीया हो, सरोवर पास सही ॥ १ ॥ सारथपति वसीया हो, के उज्ज्वल वसन कुटी ॥ ध्वजनी सहिनाणी हो, के सोहे श्वेत पटी ॥ तिण वेला कोइक हो, के भूजंतो धायो ॥ जये चंचल लोचन हो, के शरणागत आयो ॥ २ ॥ मुज राखो राखो हो, के करुणा स्वामी करो ॥ हुं नाठो आव्यो हो, के शरणे महेर धरो ॥ मत बीहे बोले हो, के सारथवाह इस्यो ॥ मुज आगल जाखो हो, के ठे अपराध किस्यो ॥ ३ ॥ एहवुं जव पूठे हो, के तावत् तुरत धस्या ॥ हणो हणो बोलंता हो, के आव्या सुजट कस्या ॥ धनदत्तने जाखे हो, के मूको एह जणी ॥ अपराधी नृपनो हो, के महोटो ठे अगुणी ॥ ४ ॥ ठे दास ए घरनो हो, के नृपआजरण हरी ॥ जूवटने काजे हो, के रामत नहीं सखरी ॥ ए व्यसनज जूंडुं हो, के सातेमां राजा ॥ एहने सेवंतां हो, के अंगे नहीं साजा ॥ ५ ॥ नृप वात ए जाणी हो, के जूआरी तेमी ॥ लीधुं तिण वेला हो, के कान करी जेमी ॥ हणो स्वामिद्रोही हो, के व्यसनी दास जणी ॥ मूको मत एहने हो, के रायने रीस घणी ॥ ६ ॥ करुणा मन आणी हो, के कहे मंत्री स्वामी ॥ कारा मांहे राखो हो, के कहुं तुम शिर नामी ॥ मंत्रीश्वर वयणे हो, के ताला मांहे जड्यो ॥ मूक्यो चर चोकी हो, के ठो रह्यो मांहे पड्यो ॥ ७ ॥ जांजी कारागृह हो, के सेवकने निहणी ॥ नाठो तुम पासे हो, के आव्यो वात जणी ॥ ते माटे काढी हो, के आपो चोर जलो ॥ नहींतर इण माटे हो, के थाशे सहीय कलो ॥ ८ ॥ कहे सारथवाहो हो, के वात खरी तुमची ॥ शरणागत आपुं हो, के शान नहीं अमची ॥ कहे सेवक नृपना हो, के अमे आदेशकरा ॥ जो लोपुं आणा हो, के कोपे अम उपरि ॥ ए ॥ धनदत्त उपगारी हो, के कहे नृपति पासे ॥ चालो हुं आवुं हो, के नृपति आवासे ॥ आवी नृप आगे हो, के उजो कर जोमी ॥ जेटे एक मूकी हो, के रत्नावली रुमी ॥ १० ॥ कोण देशथी आव्या हो, के निरुपम व्यवहारी ॥ कहो कांइ अपूरव हो, के वात सयल सारी ॥ धुरहुंती मांडी हो, के निज वृत्तांत कह्यो ॥ राजेश्वर रुडो हो, के मानव तेह लह्यो ॥ ११ ॥ सुण साहिब मोरा हो, के तोरा चरण ग्रहुं ॥ करुं सहस नीहोरा हो, के चोरने मान लहुं ॥ आजरण तुमारुं हो, के तुम हाथे आव्युं ॥ शरणागत स्वामी हो, के चोरने हुं पाउं ॥ १२ ॥ कहो राजा मूकण

हो, के जोगो एह नहीं ॥ पण केम लोपाये हो, के तें जे वात कही ॥ में जा ए मूक्यो हो, के तुऊ वक्षीश कस्यो ॥ सुणी धनदत्त बोले हो, के हियडे हेज नस्यो ॥ १३ ॥ महोटो ए मुऊने हो, के तुमे सुपसाय कस्यो ॥ एम कही लइ आव्यो हो, के स्थानक तेह रुस्यो ॥ संतोष्यो तेहने हो, के नोजन देइ नलो ॥ चोरने शिखामण हो, के आपे सुगुण निलो ॥ ॥ १४ ॥ राग आशावरी ॥ क्या करुं मंदिर क्या करुं दमरा ॥ देशी ॥ व्यसन विचार सुणो मेरे नाइ, इहनव परनव हे पुःखदायी ॥ दोय नेद द्रव्य नाव हे उनके, पार न पावे रे कोउ उंगुनके ॥ व्य० ॥ १ ॥ द्यूत मांस मदिरा उंर वेश्या, करत आहेको फिरत वन देसा ॥ चोरी परनारीसें यारी, द्रव्यसें सातो विसन कहे नारी ॥ व्य० ॥ २ ॥ द्यूत वमो कुलखंपण कहीये, उनसें इज्जत कबहु न लहीये ॥ हे सबहुमें ए सिरदारा, सोइ उत्तम जो इनसें न्यारा ॥ व्य० ॥ ३ ॥ करे जीववध उंर मांसको चाहे, सो फरी फरी चिहुं गति अवगाहे ॥ जो मद्यपाने रहे मतवालो, उनकुं लग्यो मनुं व्यंतर चालो ॥ व्य० ॥ ४ ॥ सब जग धूते जो गणिका निगुरी, उनसें मिले तिनकी गति विगरी ॥ जो मृगजीव हनत वन पेठे, उनको माटीपनो जाउ हेठे ॥ व्य० ॥ ५ ॥ परके बाहिर प्रानको लेवे, अपने अंतरप्रानको देवे ॥ कह्यो डहुं लोक विराधक उनको, चोरी करे सोही धिक् धिक् जनको ॥ व्य० ॥ ६ ॥ देखत परनारी रहे फिरते, जानत नांही कहेरसें मरते ॥ पर निज नारी देखे पुःख पावे, तो काहेकुं तुं परघर जावे ॥ व्य० ॥ ७ ॥ ए सातोसें जे रहे अलगे, तुरत जइ सुरपदसों वलगे ॥ जो उनको नावे करी उंडे, तो सहजानंद सुखशुं मंडे ॥ व्य० ॥ ८ ॥ सोगठ सोल कपाय निवारो, राग द्वेष दोउ पासा मारो ॥ आरत ध्यान चोपाइ उपारो, अपने आनंद महोल सीधारो ॥ व्य० ॥ ए ॥ परवरिवाद ए कबहु न कीजे, को पूठे पीठमांस नखीजे ॥ धन रमणी पर प्रेम न धारो, मोहमदिरा दिलमें न संनारो ॥ व्य० ॥ १० ॥ कुमति वमी धूतारी हे वेश्या, उनको मत कोउ करहो वेसासा ॥ जिण कीया सोइ बहु पुःख पाये, बहु रिनह ज्युं उंचे न आये ॥ व्य० ॥ ११ ॥ मनमें आहट हे आहेरो, इनको निवारे में उनको चेरो ॥ चउविह अदत्त निवारो चोरी, पर आशा परचंचल गोरी ॥ व्य० ॥ १२ ॥ ए सातों कहे नाव विचारी,

जो वर्जे तिनकी वलिहारी ॥ रामविजय कहे एसे जगतमें, तुरत चढी वेसे ध्यानतखतमें ॥ व्य० ॥ १३ ॥ इति सप्तव्यसनोपरि अध्यात्मगीतं ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे धनदत्त प्यारा हो, के वारुं तुं तुजने ॥ चोरी मत करजे हो, के लाज दीधो मुजने ॥ पगे लागी पयंपे हो, के धन तुं उपगारी, तें गुण मुज कीधो हो, के लीधो उगारी ॥ १५ ॥ जग दोय विशामा हो, के संसारे नारी ॥ अर्थीने वीजो हो, के सत्संगति सारी ॥ धार्यां तुम वयणां हो, के रयण करी मनमां ॥ न धरुं वंकाइ हो, के आज थकी तनमां ॥ १६ ॥ यतः ॥ पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितम् ॥ मूढैः पाषाणखंडेषु, रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ हवे तुं मुज स्वामी हो, के दास अछुं तोरो ॥ कहुं कर जोमीने हो, के वचन करो मोरो ॥ छे एक मुज पासे हो, के मंत्र सयल काजु ॥ करे जून पराजय हो, के शुं जाखुं जाजुं ॥ १७ ॥ तस आग्रह जाणी हो, के मंत्र लीयो कुमरे ॥ तस्कर निज स्थानक हो, के पहोतो तस समरे ॥ ढाल चोथे खंडे हो के आठमी एह कही ॥ जे व्यसन न सेवे हो, तेणे नव निधि लही ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सार्थवाह त्यांथी चल्यो, जातां अनुक्रमे एक ॥ अटवी लही कादंवरी, उतरीयो सुविवेक ॥ १ ॥ जलस्थानक जोइ चतुं, करे रसोइ तेह ॥ एहवे आव्यो पारधी, कृष्णवर्ण जस देह ॥ २ ॥ धनुष वाण हाथे ग्रह्यां, सारमेय दश पांच ॥ रुदन करे दुःखीयो घणुं, धनदत्त कहे एम वाच ॥ ३ ॥ केम दीसे एम दूमणो, कहे मुज आगल आज ॥ ते कहे मुज स्वामी दुःखे, रोवुं हुं महाराज ॥ ४ ॥ शामाटे तव ते कहे, गिरिकुरंगिका पाली ॥ तिहां पल्लीपति शूर छे, सयल शत्रु कंगाल ॥ ५ ॥ सिंहचंद्र नामे भलो, सिंहवती तस नारी ॥ जीवितपें अति वालही, रमणी गुणभंमार ॥६॥ भूतदोष तेहने नमी, तस विरहे अम नाथ ॥ मरशे तस दुःख दुःखीयो, हुं रुदन करुं छुं नाथ ॥ ७ ॥ सार्थवाह कहे तेहने, एक वार मुज दृष्टि ॥ आपो तेहने सज्ज करुं, मंत्र सयल मन इष्ट ॥ ८ ॥ तेणे पल्लीपतिने कह्युं, आपी तेह तुरत ॥ मंत्रवले साजी करी, अहो उपगार विचित्र ॥ ९ ॥ जीवितदान मुजने दीयो, वली जीवाडी एह ॥ चरण नमीने आवीयो, पल्लीपति निज गेह ॥ १० ॥ धनदत्त तिहांथी चालीयो,

गुणगिरुउं गंजीर ॥ वेलाकूल गत पामीयो, पाटण पुर गंजीर ॥ ११ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ साथ निवेश करी तिहां रे, वसीयो ते पंच रात ॥ धनरा रागी ॥ वस्तु लीये वेचे बहु रे, पुर मांहे हुइ ख्याति॥ ध० ॥ १ ॥ जूउं जूउं रे सुजाण ॥ बमजागी ॥ नहीं धन जेहवुं प्रिय कोइ॥ सहु धनरागी ॥ ए आंकणी ॥ तिहां मन मान्यो नवि थयो रे, व्यापारे धनलाज ॥ ध० ॥ तृष्णा अनंती जिन कही रे, जेम जग मांहे आज ॥ ध० ॥ जू० ॥ २ ॥ यडुक्तमागमे ॥ सुवष रुप्पस्स उपवया जवे, सयाहु केलास समा असंखया ॥ नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इछाहुं आगास समा अणंतया ॥ १ ॥ दोहो ॥ तनकी तृष्णा सही लहे, सवाशेरके शेर ॥ मनकी तृष्णा नवि मटे, जो आपे घर मेर ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ पश्चिम रयणीए चिंतवे रे, करुं हवे जलनिधियात्र ॥ ध० ॥ ड्रव्य घणुं लावुं रली रे, हर्षे चढी यानपात्र ॥ ध० ॥ जू० ॥ ३ ॥ थये प्रजाते आवीयो रे, जोवा जलनिधिवेल ॥ ध० ॥ जलकल्लोल जिहां घणा रे, उछलता करे केल ॥ ध० ॥ जू० ॥ ४ ॥ सार्थपति सरितापति रे, देखी लह्यो आनंद ॥ ध० ॥ चिंते ए सुप्रसन्न हुइ रे, दूर टले दुःखदंद ॥ ध० ॥ जू० ॥ ५ ॥ गुणगणनो आधार जे रे, धीवर सेवित जेह ॥ ध० ॥ संसारांवुधि तारकु रे, नैगमयुत गुणगेह ॥ ध० ॥ ॥ जू० ॥ ६ ॥ देव अधिष्ठित सित पटे रे, स्फीत इस्युं एक यान ॥ ध० ॥ जैनवाक्य परे संग्रह्युं रे, धन देइ असमान ॥ ध० ॥ जू० ॥ ७ ॥ जांम सवे जरीयुं तिहां रे, जे देशांतर योग्य ॥ ध० ॥ वहाण चढी चाल्यो सुखे रे, सवल पवन अनुकूल ॥ ध० ॥ जू० ॥ ८ ॥ उदधि घणो उल्लंघीयो रे, सढ पूरया पवणेण ॥ ध० ॥ वहाण चाले वेगशुं रे, जोयण जाय क्षणेण ॥ ध० ॥ जू० ॥ ए ॥ मार्ग वचे एक सूयडो रे, मुख ग्रही अंबफल सार ॥ ध० ॥ जमंतो अंबर लमथडे रे, थाक्यो तेह अपार ॥ ध० ॥ जू० ॥ १० ॥ धनदत्त धीवरने कही रे, तेह अणाव्यो पास ॥ ध० ॥ पंख उपर कर फेरीयो रे, क्षण एक करी आश्वास ॥ ध० ॥ जू० ॥ ॥ ११ ॥ फल हेतुं मूकी कहे रे, मनुज परे शुक वाणी ॥ ध० ॥ हुं उशिंगण तादृशो रे, किमही न थाउं सुजाण ॥ ध० ॥ जू० ॥ १२ ॥ तुमे जीवित मुजने दीयुं रे, कीधो बहु उपगार ॥ ध० ॥ मुज जीवे दोय जीवीयां रे, वृद्ध पितर निर्धार ॥ ध० ॥ जू० ॥ १३ ॥ ते माटे कांइक करुं रे, तुमने हुं प्रत्यु-

पकार ॥ ध० ॥ गुण कीधो जाणे नहीं रे, ते सही मूढ गमार ॥ ध० ॥ ॥ जू० ॥ १४ ॥ नेट करुं फल ए ग्रहो रे, साहिब चतुर सुजाण ॥ ध० ॥ शुं अमे कीजे एहने रे, जक्ष्य ए तुज गुणखाण ॥ ध० ॥ जू० ॥ १५ ॥ लीयो अवर तुज जे रुचे रे, तव कहे शुक सुण स्वामी ॥ ध० ॥ बहु गुणकारक एह छे रे, एहनुं अमृतफल नाम ॥ ध० ॥ जू० ॥ १६ ॥ सुण कारण एहनुं कहुं रे, विंध्य महीधर पास ॥ ध० ॥ विंध्या अटवी द्रुम वसे रे, कीरमिथुन एक खास ॥ ध० ॥ जू० ॥ १७ ॥ सुत हुउं हुं तेहने रे, नेत्र मूक हुयां तेह ॥ ध० ॥ वृद्धपणाथी आणीने रे, जक्ष्य आपुं सस्नेह ॥ ध० ॥ जू० ॥ १८ ॥ अन्य दिवस एक आवीयुं रे, अटवीए मुनियुग मीठ ॥ ध० ॥ आम्रतरु तले आवीने रे, बेठुं में नयणे दीठ ॥ ध० ॥ जू० ॥ १९ ॥ देखी विजन मुनिजन कहे रे, आम्र उपर एक वात ॥ ध० ॥ पादशैल दरिया विचे रे, तिहां एक तरु विख्यात ॥ ध० ॥ जू० ॥ २० ॥ ते सहकार सदा फले रे, तस फल खाये जे एक ॥ ध० ॥ रोग पणासे अंगना रे, जाय जरा पण छेक ॥ ध० ॥ जू० ॥ २१ ॥ तेज रूप सौजाग्यना रे, गुण वाधे अति जोर ॥ ध० ॥ निसुणी हुं हर्षित हुवो रे, ज्युं चकवा हुवे जोर ॥ ध० ॥ जू० ॥ २२ ॥ मुनिवचन न होवे मृषा रे, फल आणीयुं तेह ॥ ध० ॥ दिव्य लोचन होवे माहरां रे, तरुण पितर गुणगेह ॥ ध० ॥ जू० ॥ २३ ॥ फल लेवा कारण गयो रे, आवतां विचमां आज ॥ ध० ॥ तें राख्यो मुज जीवतो रे, जीव तुं गरीबनिवाज ॥ ध० ॥ जू० ॥ ॥ २४ ॥ हुं बीजुं फल आणीने रे, देइश मुज मावित्र ॥ ध० ॥ फल राखो अनुग्रह करी रे, करो मुज जन्म पवित्र ॥ ध० ॥ जू० ॥ २५ ॥ फल देइने उमीयो रे, कीर विचारे शेठ ॥ ध० ॥ धन्य पक्षी पण एहवो रे, गुणवंत दीठो ठेठ ॥ ध० ॥ जू० ॥ २६ ॥ सार्थपतिए गोपव्युं रे, बहु उपगारीने हेत ॥ ध० ॥ देशुं कोइएक जूपने रे, धारी मन संकेत ॥ ध० ॥ जू० ॥ २७ ॥ अनुक्रमे जातां पामीयो रे, दिन केते परकूल ॥ ध० ॥ लेइ नेटण जइ मिल्यो रे, ते पुर नृप अनुकूल ॥ ध० ॥ जू० ॥ २८ ॥ फल आप्युं तस गुण कह्यो रे, राये मूक्युं दाण ॥ ध० ॥ महाप्रसाद कही आवीयो रे, सार्थपति निज ठाण ॥ ध० ॥ जू० ॥ २९ ॥ लाज अधिक तिहांकणे लह्यो रे, नवमी ढाल रसाल ॥ ध० ॥ राम कहे नर ते जला रे, जस उपगारनो ढाल ॥ ॥ ध० ॥ जू० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ २५७ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेची क्रियाणक वली अवर, ग्रही तेह धनदत्त ॥ पाठो फरी केते दिने, पुर गंभीर पहुत्त ॥ १ ॥ साथ लेइ तिहांथी चल्यो, निज पुर ते उजमाल ॥ विच अटवी कादंबरी, आवी ते विकराल ॥ २ ॥ रात रह्या सहुको तिहां, सुजट बहु परिवार ॥ रह्या चिहुं दिशि मोरचे, ग्रही विविध हथियार ॥ ३ ॥ पाछले पहोरे रयणीने, हृत हृत करती धाम ॥ आवी पल्ली उतावली, अटवी जिहां उजाम ॥ ४ ॥ धनदत्त सजी साहामो थयो, साहसिक शिरदार ॥ वंदी कहे जय जय चिरं, श्रीधनदत्त कुमार ॥ ५ ॥ धाड स्वामी पल्लीपते, धनदत्त निसुएयुं नाम ॥ रखे होइ उपगारीयो, जेणे सार्‍युं मुज काम ॥ ६ ॥ शस्त्र रहित जट वारीने, साहामो पल्लीनाथ ॥ आव्यो तव बेहु उलखी, मलीया घाली बाथ ॥ ७ ॥ पूछे तव प्रेमे करी, कुशल क्षेम विरतंत ॥ अहो बहु दिवसे वालहा, मलीया तुमे महंत ॥ ८ ॥ तुमशुं अज्ञाने इहां, कीधी घणी अयुक्त ॥ खमो अपराध ए माहरो, घणी करी प्रणपत्य ॥ ९ ॥ तेमी लाव्या मंदिरे, कीधी जक्ति जुगत्त ॥ जोजन वस्त्रादिक तणी, करी मनुहार विचित्र ॥ १० ॥ तत आणा लेइ चालीयो, निज पुर आव्यो क्षेम ॥ मात पिता परिवारशुं, मलीयो बहुले प्रेम ॥ ११ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग केदारो ॥ सुखदायी रे सुखदायी रे ॥ ए देशी ॥ पुर आवी रे पुर आवी रे, बहु यश कीर्त्ति उपजावी रे ॥ परिगल घरे संपद लावी रे, धन वावे सुक्षेत्रे हो जावी रे ॥ पु० ॥ १ ॥ जिनजुवन ते नवीन करावे रे, बहु जीरणने समरावे रे ॥ जिनपडिमा अनेक जरावे रे, एम पाप अशुज क्षय जावे रे ॥ पु० ॥ २ ॥ करे ज्ञाननी जक्ति विशाला रे, होवे दूर अज्ञानतमजाला रे ॥ विरचे मुनिजक्ति रसाला रे, प्रगटे गुणमंगलमाला रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ वली अजावगुण संजाली रे, पडिलाजे अशन शुद्ध चाली रे ॥ साहामी साहमिणी संतोषे रे, क्षेत्र साते सूधां पोषे रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ हीण दीन प्रत्ये उद्धारे रे, दुःखीयानां दुःख सवि वारे रे ॥ जिनवयण हियामां धारे रे, जे सहेजे जवजल तारे रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ नृप दीधी नगरशेठाइ रे, थइ प्रगट सबल पुएयाइ रे ॥

एक दिन पुर उपवन आइ रे, मुनि समवसस्या सुखदायी रे ॥ पु० ६ ॥ मुनि वांदीने देशन निसुणी रे, वधी वात वैराग्यनी घमणी रे ॥ तजी कंचन कोमी ने रमणी रे, मुनि हुउं महातम सुगुणी रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ धनदत्त मुनि चारित्र पाली रे, कर्म कोमी सवे परजाली रे ॥ घनघाति-कर्म तपे गाली रे, शिवरमणी वरी लटकाली रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ कहे राम-विजय कर जोमी रे, तेहना पाय नमुं मद मोमी रे ॥ जेणे कंचन कामिनी गेमी रे, तस शिवसुख हाथ करोमी रे ॥ पु० ॥ ए ॥ इति सप्तक्षेत्रनाम स्तुतिः ॥ ढाल ॥ काहानजी मेहलोने कांवली रे ॥ ए देशी ॥ हवे ते फल लेइ राजवी रे, चिंते हो एम विचार ॥ ए फल खाधे रे शुं होवे रे, कीजे हो परउपगार ॥ १ ॥ राजन् सांजलो वातमी रे ॥ ए आंकणी ॥ कहे वत्सराज कुमार ॥ काज विचारीने जे करे रे, ते नर लहे सुख सार ॥ रा० ॥ २ ॥ फल उपजावुं बहु एहथी रे, आवे बहुने रे जोग ॥ तो महोटो गुण निपजे रे, संजारे बहु लोग ॥ रा० ॥ ३ ॥ सेवक तेमीने एम जणे रे, ए फल वावो सुगम ॥ चोकी करो नित्य एहनी रे, एह तुमारडुं काम ॥ रा० ॥ ४ ॥ वाव्युं उत्तम वामीए रे, जतन करंतां रे तास ॥ दिन केतेइक निपन्यो रे, सुंदर आंबो रे खास ॥ रा० ॥ ५ ॥ वात सुणी फल फूलनी रे, रीज्यो राय अपार ॥ दान दीये रखवालने रे, रहेजो तुमे हुशियार ॥ रा० ॥ ६ ॥ रात दिवस रहे पोषता रे, केम न मूके लगार ॥ दैववशे रे एक रातमां रे, जूमि पड्युं फल सार ॥ रा० ॥ ७ ॥ दीठुं प्रजाते ते सेवके रे, फल परिपक्व रसाल ॥ नजरे कखुं जइ रायने रे, जूपे लीधुं ततकाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ तेमी पुरोहितने दीधुं रे, थयो मन मांहे खुशाल ॥ घर जइ तेणे ते चाखखुं रे, ते पहोतो तब काल ॥ रा० ॥ ए ॥ वात सुणी विलखो थयो रे, राये धस्यो मन शोच ॥ हा हा अकार्य केम थयुं रे, करे मन मांहे आलोच ॥ रा० ॥ १० ॥ ए विषवृक्ष छे सही रे, कोइ वैरी मुफ काज ॥ मूक्युं प्रपंच करी इहां रे, राखेवुं नहीं आज ॥ रा० ॥ ११ ॥ छेदो रे तुरत उतावला रे, काढो एहनो कंद ॥ कोपीयो राय हुकम करे रे, हुवो सवलो मतिमंद ॥ रा० ॥ १२ ॥ सेवक लेइ कुठारने रे, धाया हो तेणे रे स्थान ॥ मूल उछेदी पामीयो रे, हा हा कीधुं अकाम ॥ रा० ॥ १३ ॥ इण समे रोगी कोढी नरा रे, जीवितथी निर्वेद ॥ विप-

फल जाणीने आवीया रे, मृत्युने काजे आसन्न ॥ रा० ॥ १४ ॥ पक्क अपक्क ते वावरे रे, केइ फल फूल ने पान ॥ मंजर केइ भक्षण करे रे, रोग गयो वल्यो वान ॥ रा० ॥ १५ ॥ अद्भुत रूपधारी थया रे, देखीने चिंते हो भूप ॥ अहो विपरीत सहकारनुं रे, दीसे ए कांइ स्वरूप ॥ रा० ॥ १६ ॥ जन सामान्यने गुण थयो रे, वेदनो जाण विपन्न ॥ एम चिंती चर तेडीयो रे, पूछे हो तेह राजन्न ॥ रा० ॥ १७ ॥ शुं फल चूंट्युं ए हाथथी रे, के पडीयुं स्वयमेव ॥ स्वामी पड्युं अमे लावीया रे, साच कहुं नरदेव ॥ रा० ॥ १८ ॥ वात सुणी राय चिंतवे रे, भूइ पडे विषजाव ॥ कोइक जीव तणो थयो रे, तेणे धिक् जाति अजाव ॥ रा० ॥ १९ ॥ हा हा में अविचारीने रे, कीधुं अकारिज एह ॥ रोपे अमृततरु छेदीयो रे, मूर्ख मांहे हुं रेह ॥ रा० ॥ २० ॥ यतः ॥ सुगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं० ॥ शोच घणो मनमां धरे रे, जेम जेम सांजरे वात ॥ विण परीक्षे क्रिया करे रे, तेहने एह दृष्टांत ॥ रा० ॥ २१ ॥ ढाल जणी दशमी सही रे, चोथे खंडे रे एह ॥ राम कहे नर ते जला रे, काज विचारी करे जेह ॥ रा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २९९ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जेम अपरीक्षित काजथी, शोच लह्यो तिण राय ॥ तेम अपरे करवुं नहीं, कहे वत्स सुण नरराय ॥ १ ॥ कथा कहेतां जली, बीजो पहोर व्यतीत ॥ वत्स वल्यो आव्यो तदा, दुर्लजराज विनीत ॥ २ ॥ चिंते राजा चित्तमां, वत्स कही मुज वात ॥ पण इणे कारिज नवि कर्युं, आव्यो एहनो भ्रात ॥ ३ ॥ तेहने पण तिमहीज कर्युं, हा कही उठ्यो ताम ॥ आघो जइ पाछो वल्यो, नृपने करे सलाम ॥ ४ ॥ कां रे कारज नवि कर्युं, ते कहे बंधव दोय ॥ जागे छे महाराज मुज, किहांथी चिंतित होय ॥ ५ ॥ ते माटे कांइ कहो, वेला निर्गम थाय ॥ नहींतर सांजल साहिवा, कहुं कथा सुखदाय ॥ ६ ॥ राजहुकम हुवे जलो, कहो कथा सुविवेक ॥ दुर्लज अवसर जाणी तव, कहे कथा धरी टेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ सहीयो मोरी राउलीयो जीम वधाइ ले ॥ ए देशी ॥ वाहाला स्वामी ॥ क्षेत्र जरतमां उपनुं, राजपुर नयर महंत रे ॥ वा० ॥ पर्वत उपरे

अति जलुं, लोक वसे धनवंत रे ॥ १ ॥ वा० ॥ वात विचारी कीजीये,
जेम लहीये यशोवाद रे ॥ वा० ॥ अविचार्युं कारज करे, जनमां लहे अप-
वाद रे ॥ २ ॥ वा० ॥ वा० ॥ शत्रुदमन नामे जलो, नरपति अति विकराल
रे ॥ वा० ॥ रत्नमाला रलीयामणी, राणी अति सुकुमार रे ॥ ३ ॥ वा० ॥ वा० ॥
एक दिवस बेगे सजा, राजकुली ठत्रीश रे ॥ वा० ॥ एक बटुक आव्यो तिहां,
ऊजो देइ आशिष रे ॥ ४ ॥ वा० ॥ वा० ॥ व्यग्रपणे जाल्यो नहीं, सजा विसर्जी
ताम रे ॥ वा० ॥ श्रमहर स्नान कर्युं नृपे, गयो देवसेवा काम रे ॥ ५ ॥
वा० ॥ वा० ॥ फूल आणी मुइ आगले, बटुके कर्यां तिहां जेट रे ॥ वा० ॥
देवसेवाने कारणे, राये नीहाल्यो मीट रे ॥ ६ ॥ वा० ॥ वा० ॥ पूठे जडक
तुं कोण ठो, ते कहे सुण अवनीश रे ॥ वा० ॥ नामे शुजंकर विप्र डुं, यज्ञ-
दत्त सुत ईश रे ॥ ७ ॥ वा० ॥ वा० ॥ वासी अरिष्टपुरनो सही, नव नव देश
विनोद रे ॥ वा० ॥ जोतो इहां आव्यो प्रजु, देखी पाम्यो प्रमोद रे ॥ ८ ॥
वा० ॥ वा० ॥ देखी विनीत सोहामणो, दिल मांहे रीज्यो राय रे ॥ वा० ॥
निज पासे ते राखीयो, गुणथी आदर थाय रे ॥ ९ ॥ वा० ॥ यतः ॥
शूरस्त्यागी विनीतश्च,—कृतज्ञो दृढसौहृदः ॥ विज्ञानी स्वामिजक्तश्च, सर्वत्र
लजते यशः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ वा० ॥ गुण देखी गौरव कर्यो, अंतेउर आदेश रे
॥ वा० ॥ विश्वासी जाणी करी, अंतर नहीं लवलेश रे ॥ १० ॥ वा० ॥
॥ वा० ॥ एक दिवस पुर उपवने, आव्यो एक मृगराज रे ॥ वा० ॥ व्याध
कहेणथी नीसर्यो, नृप चतुरंग लेइ साज रे ॥ ११ ॥ वा० ॥ वा० ॥ फोज
चढी चिहुं दिशि खरी, चढी कुंजर नरसिंह रे ॥ वा० ॥ बेगे शुजंकर आगले,
अंकुश लेइ अबीह रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ वा० ॥ आव्यो उद्यान उतावलो, नरपति
मृगपति पास रे ॥ वा० ॥ नृप उपर हरि आवीयो, उठलतो आकाश रे ॥ १३ ॥
वा० ॥ वा० ॥ ताम शुजंकर चिंतवे, रखे करे स्वामिविनाश रे ॥ वा० ॥ अंकुश
सुखमां रूपीने, कीधो सिंहनो नाश रे ॥ १४ ॥ वा० ॥ वा० ॥ नृप शुजंकरने
कहे, रुडुं न कीधुं एह रे ॥ वा० ॥ मुफ चिंतित ए सिंहने, वचमां हणीयो
जेह रे ॥ १५ ॥ वा० ॥ वा० ॥ ए हणतां तें माहरो, सहु नृपमां यशवाद
रे ॥ वा० ॥ कीधो कमी तो एम सही, बटुक कहे तज विखवाद रे
॥ १६ ॥ वा० ॥ वा० ॥ राजयत्नने कारणे, में निहण्यो हरि एह रे ॥ वा० ॥
निज उत्कर्ष न चिंतव्यो, सुण साहिब गुणगेह रे ॥ १७ ॥ वा० ॥ वा० ॥ तुम

प्रभाव ए जाणवो, जे अंकुशे हरिघात रे ॥ वा० ॥ कहेशुं हो सैनिक आगले, नृपे टाल्यो उत्पात रे ॥ १७ ॥ वा० ॥ वा० ॥ कोप म कर विण कारणे, नहीं बीजो इहां कोय रे ॥ वा० ॥ चउकन्नी ए वातनुं, भेदन किमही न होय रे ॥ १९ ॥ वा० ॥ यतः ॥ षट्कर्णो भिद्यते मंत्र,—श्चतुःकर्णो न भिद्यते ॥ द्विकर्णस्य च मंत्रस्य, ब्रह्माप्यंतं न गछति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ वा० ॥ राय कहे जो मंत्र ए, भेदाशे जन मांय रे ॥ वा० ॥ तो मुज मुखकलंक ए, विस्तरशे इण ठाय रे ॥ २० ॥ वा० ॥ वा० ॥ कहे शुभंकर साहिबा, सज्जन सांप्युं गुज रे ॥ वा० ॥ बाहिर भेद लहे नहीं, प्राण जते पण बुज रे ॥ २१ ॥ वा० ॥ वा० ॥ वात सुणी राय हर्षीयो, मही हरिशव तेणी वार रे ॥ वा० ॥ सैन्य समीपे आवीयो, वरत्यो जयजयकार रे ॥ २२ ॥ वा० ॥ वा० ॥ ढाल भणी अग्यारमी, शोभे रंगे उदार रे ॥ वा० ॥ जे निज गुण भाखे नहीं, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ २३ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२९ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे शुभंकर सुभटने, प्रभुनो प्रबल प्रताप ॥ परगट पंचानन हणी, टाल्यो सबल संताप ॥ १ ॥ वात सुणी चित्त चमकीया, मांडलिक सामंत ॥ अहो अहो भुजबल स्वामीनुं, सहु वखाणे संत ॥ २ ॥ नृप आव्या मंदिर भणी, वाजंते वाजित्र ॥ पुर मांहे यश विस्तर्यो, भूप तणो सुपवित्र ॥ ३ ॥ नगर मांहे उत्सव हुई, चोके चोक ए वात ॥ सिंह सबल नरपति हण्यो, रहेशे जग आख्यात ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी आज सावनी ॥ मना विमर्जी हो राय, आव्यो अंतेउर मांय ॥ आज साव ॥ पटराणी पाये पडे जी ॥ १ ॥ आवो जी प्राणआधार, साहिब नर सिरदार ॥ आ० ॥ वात कहो हेजे हरी जी ॥ २ ॥ हवे उत्सव महाराज, नगर मांहे बहु आज ॥ प्यारि लाल ॥ सांभलया अलजो घणो जी ॥ ३ ॥ कहे वालम सुण नार, साचुं कहुं निर्धार ॥ मीठे लाल ॥ आज में हरि हणीयो नहीं जी ॥ ४ ॥ कूडपणामें एह, लोक करे सस्नेह ॥ मीठे लाल ॥ को न करे ते में कर्युं जी ॥ ५ ॥ मुज जेहवो [illegible] कोइ नहीं इणविध ॥ [illegible] ॥ [illegible] आव्यो

॥ सब रंगमाणी हो नारी [illegible] वार [illegible] ॥

शुं अविचार्युं उच्चरो जी ॥ ७ ॥ उत्तमवंश उत्पन्न, तुमे महोटा राजन्न॥ मोजी लाल ॥ लाजो नहीं केम ए कहे जी ॥ ७ ॥ उत्तम आप वखाण, न करे हो चतुर सुजाण ॥ धीठे लाल ॥ मांमी प्रशंशा न कीजीये जी॥ ॥ ए॥ हणीयो शुजंकर सिंह, तुमे जूठा मांहे लीह ॥ प्रीतम लाल ॥ फोगट फूले शुं हुवे जी ॥ १० ॥ अबला हो आगल वात, कूडी न चीनो ख्यात ॥ फीके लाल ॥ एह वचन मुज नवि गमे जी ॥ ११ ॥ राय सुणी चढ्यो रोप, होठे पडे तब शोप ॥ चिंते लाल ॥ वात शुजंकरे ए कही जी ॥ १२ ॥ कोइ आगल ए गुज, नहीं परकाशुं तुज ॥ जाख्युं लाल ॥ पण वचने ए नवि रह्यो जी ॥ १३ ॥ जापक मर्मनो एह, पहोंचाडुं यम-गेह ॥ ठाने लाल ॥ काज करेवुं में सही जी ॥ १४॥ आवी हो नृप एकांत, तेमीया रक्षक तंत ॥ आ० ॥ एह शुजंकरने हणो जी ॥ १५ ॥ ठल जोइ ततकाल, कीधुं ए कर्म चांमाल ॥ धिक् धिक् लाल ॥ जे हएयो एम गुणवंतने जी ॥ १६ ॥ अन्य दिवस पट्टराणी, कहे साहिब गुणखाणी ॥ प्यारे लाल ॥ वटुक शुजंकर किहां गयो जी ॥ १७ ॥ कहे राजा तस नाम, लीजे नहीं ए हराम ॥ पूठे लाल ॥ राणी हो कुण कारण कहो जी ॥ १७ ॥ अंतर केम करो आज, मुज आगल महाराज ॥ जाखो लाल ॥ जो जाणो ठो तो वारता जी ॥ १ए ॥ राये कह्युं सवि रूप, राणी कहे ए विरूप॥ नीके लाल ॥ एणे मुज आगल नवि कह्युं जी ॥ २० ॥ सातमी जूमि आवास, ऊंची चढी उल्लास ॥ नीके लाल ॥ ए सवि जोयुं में सही जी ॥ २१ ॥ नहीं तस दोप लगार, ए तुम जक्त उदार ॥ प्यारे लाल ॥ ते जीवे ठे के नहीं जी ॥ २२ ॥ शोकातुर थइ राय, वात कही समजाय ॥ हा हा लाल॥ सबल अकारज में कर्युं जी ॥ २३ ॥ शोक करे ते दोय, जेम जेम सांजरे सोय ॥ प्यारे लाल ॥ एम अविचार्युं दुःख होये जी ॥ २४ ॥ एणी परे ते नर नारी, दुःख लह्युं मन मांय ॥ नीके लाल ॥ एम कोइ करता रखे जी ॥ २५ ॥ चोथे खंडे ढाल, बारमी सुणो उजमाल ॥ प्यारे लाल ॥ काज विचारीने कीजीये जी ॥ २६ ॥ यतः ॥ सहसा विदधीत न क्रियाº ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५ए ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात कही विरम्यो जिस्ये, त्रीजो दुर्लजराज ॥ त्रीजो प्रहर व्यतीत

तव, न थयुं नृपनुं काज ॥ १ ॥ निज मंदिर जणी चालीयो, आव्यो कीर्त्तिराज ॥ कर जोमी आगल रह्यो, तव बोले नरराज ॥ २ ॥ कीर्त्तिराज सुण माहरुं, होशे तुजथी काम ॥ ते कहे हुं सेवक किस्यो, जो न करुं काज तुज स्वामी ॥ ३ ॥ लेइ आव उतावलो, देवराजनुं शीश ॥ हुकम चढावी शिर चल्यो, दीये नृपति आशिष ॥ ४ ॥ कालविलंब करी पछे, आव्यो नरपति पास ॥ कर जोमी उजो रही, एम करे अरदास ॥ ५ ॥ मुज बंधव जागे अछे, प्रणे समरथ धीर ॥ केम हणाये माहरो, देवराज ग्रह्वीर ॥ ६ ॥ तिणे प्रस्तावे कीजशुं, ए तुमचो आदेश ॥ पण हमणां मुजने कहो, कोइ संबंध उपदेश ॥ ७ ॥ नृपति कहे कोइक तुमे, करो अपूरव वात ॥ कीर्त्तिराज कहे सांजलो, स्वामिन् एक अवदात ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ काया कामिनी विनवे ॥ ए देशी ॥ कीर्त्तिराज कहे सुणो, जरते महापुर नाम रे ॥ शत्रुंजयानिध राजीयो, राणी नाम प्रियंगु अजिराम रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा एक वातकी ॥ ए आंकणी ॥ अवधारो अंतर्यामी रे ॥ साव करीने जाणजो, मोरा साहिब कहुं शिर नामी रे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक दिन ते नृपनी सजा, देशांतरथी नर आव्यो रे ॥ अश्वरयण आगल धर्यो, देखी राय तणे मन जाव्यो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ चिंते नृप सोजागीयो, ए वारु तुरंगम दीसे रे ॥ रूप जिसी गति जो हुवे, तो महारुं मनडुं हींसे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ यतः ॥ जवो हि सप्तेः परमं विभूषणं, त्रपांगनायाः कृशता तपस्विनः ॥ द्विजस्य विद्येव मुनेरपि क्षमा, पराक्रमः शस्त्रबलोपजीविनाम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ राय तुरंगम सज्ज करी, पलाण उपर मंमावी रे ॥ गति विज्ञानने जोयवा, गयो बाहिर ते दोमावी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सैन्य सहु पूंठल रह्युं, नृप अदृश्य थयो क्षण मांय रे ॥ सामंत चिंतातुर थया, कहे ते नर आवी त्यांय रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ वक्रशिक्षित ए अश्व छे, मुजने कहेवुं विसर्युं रे ॥ ह्रदय जलादिक खेद करी, नृप पूंठे सैन्य नीसर्युं रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ वेग जोइने वाववा, वलगा सैंगी नरनाथे रे ॥ तव पवन परे दोमीयो, गाव्यो न रहे जोर माथे रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ उल्लंघी बहु भूमिका, नृप थाकशे वलगा महेर्षी रे ॥ अश्व उजो रह्यो ततक्षणे, थयो शांत जमावे बेठी रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ नृपे पलाण उतारीयुं, हय शोग ग्रही भूमि

पाम्यो रे ॥ नृप जमतो तरप्यो घणुं, वम हेठल जइ विशाम्यो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ मनमां इछे नीरने, वमशाखाहुंती हेठे रे ॥ झरतां जलबिंडु लहुं, मनमां एम चिंत्युं बेठे रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ शाखाविच काविल जस्युं, वर्षाऋतुनुं जल एह रे ॥ जाजन करीय पलाशनुं, जरी पान करुं सस्नेह रे ॥ ॥ सु० ॥ १२ ॥ तिम करी जल पीवा जिस्ये, थयो नृपति उजमाल रे ॥ वट पंखी एक आवीने, करथी ढोल्युं ततकाल रे॥ सु० ॥ १३ ॥ थइ विलखो नरराजीयो, फरी जरीयुं ते जलपात्र रे ॥ तेम वली ढोल्युं पंखीए, नृप चिंते एह कुपात्र रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोप्यो राय कशा ग्रही, मन चिंते त्रीजी वार रे ॥ आवे तो मारुं सही,न करुं हवे ढील लगार रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ जलअर्थे जाजन धखुं, कर एके पंखी विमासे रे ॥ कोप्यो राय ए मारशे, नवि मूके विशवावीशे रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ पण मुऊ मरण जलुं इहां, नहीं मरण जलुं नृपालो रे ॥ ए जीव्ये बहु जीवशे, मुऊ जेवा केइ कंगालो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ धन्य धरा जिहां एहवा, पंखी पण वे उपकारी रे ॥ प्राण उगारे पारका, ते जीव तणी बलिहारी रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ पत्रजाजन जरी जब पीये, तब आवते नाख्युं उमाली रे ॥ पंखी कशाघाते हणी, नृप रीज्यो हेगो पाली रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ फरी पलाशनो पुट धस्यो, जलबिंडु तिहांथी आगे रे ॥ पमतां देखी चिंतवे, ए कौतुक सरिखुं लागे रे ॥ सु० ॥ २० ॥ वटशाखा जोउं चढी, तरुकोटर अजगर मागो रे ॥ सूतो गरल मुखथी गले, ते जोइ तिहांथी नागो रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ ए में पीधुं होत जो, तो मरत सही इण गमो रे ॥ जूउं पंखी उपगारीए, अहो शुं कीधुं ए कामो रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ प्राण कस्या अखखामणा, पण मुऊने एणे उगास्यो रे ॥ शान करी आवी घणी,पण मूढ हुं न रह्यो वास्यो रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ हा हा महोटुं पाप ए, मुऊ पापीने आवी लाग्युं रे ॥ एह हवे केम छूटशुं, क्रोधे मुऊ मन थयुं कागुं रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम मन शोक करे घणो, तस पूंठल सेना आवी रे ॥ हर्षित थइ पति देखीने, सवि वात कही समजावी रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ स्वस्थ थइ नरवर चल्यो, पंखीशब साथे लेइ रे ॥ पुरउद्याने चंदने, तस तनसंस्कार करेइ रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ देइ जलांजलि आवीयो, नृप मंदिर अति दिलगीरो रे ॥ नृप कहे विसरशे नहीं, ए निःकारण मुऊ वीरो रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ प्राण

पोताना अवगुणी, मुज जीवित वहालुं कीधुं रे ॥ ते वहालो नवि विसरे, मुज चित्तडुं चोरी लीधुं रे ॥ सु० ॥ २८ ॥ एहवा उपकारी जणी, में प्राण थकी चूकाव्यो रे ॥ एम वलवलतां रायने, मंत्रीश्वर मली समजाव्यो रे ॥ सु० ॥ २९ ॥ शोच किशो गतवस्तुनो, एम ग्रंथांतर प्रकाश्युं रे ॥ चित्त विषाद मटे नहीं, पंखी गुण मनडुं वास्युं रे ॥ सु० ॥ ३० ॥ एम अविमास्यार्थी घणो, ते नृप पड्यो पस्तावे रे ॥ तेम अवर पण एहवा, कारजर्थी सही दुःख पावे रे ॥ सु० ॥ ३१ ॥ चोथे खंडे तेरमी, ढाल रामविजये परकाशी रे ॥ सुयश महोदय ते लहे, जग जे करे काम विमासी रे ॥ सु० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३९९ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कीर्त्तिराज जय कही रह्यो, तव प्रजातनां तूर ॥ वाज्यां अति आनंदभर, प्रह उगमते सूर ॥ १ ॥ बंदिजन जय जय कहे, मंगल पाठ जणंत ॥ चिरं जीव तुं साहिबा, महोटा महीपति संत ॥ २ ॥ कीर्त्तिराज मंदिर गयो, मन चिंते महाराज ॥ एकचित्त चारे सही, चिंतित न कर्युं राज ॥ ३ ॥ जल लेइ दासी तदा, आवी दातण काज ॥ पावन करी शुन वेष धरी, बेठो आवी समाज ॥ ४ ॥ मो आगल आवी कहे, कर जोमी देवराज ॥ हुकम होय तो हुं कहुं, वात अपूरव आज ॥ ५ ॥ रीस जरयो राजा तदा, कीधी मुखनी शान ॥ नृप कोप्यो दीसे अठे, समज्या सहु अनुमान ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ झुंगाकी लकरी हो रसीया गांठ गंठीली ॥ ए देशी ॥ हो रहीयाला राजन् रीस न कीजे ॥ रीस न कीजे लालन रीज धरीजे ॥ हो रही० ॥ ए आंकणी ॥ गुण ठोमी अवगुण नवि लीजे, वात सुणीने शाबाशी हो दीजे ॥ हो० ॥ १ ॥ बांहे ग्रह्यानी प्रजुजी लाज धरीजे, अवगुण होय तो एकांत कहीजे ॥ हो० ॥ साहिबकुं रे हम दास न खीजे, सेवा हो करतां दिलमां कांइ न गीजे ॥ हो० ॥ २ ॥ नेह न तोमो साहिब वात न ताजी, मो पर रीस इतनी क्युं इनराजी ॥ हो० ॥ गुनह न कोइ कीयो में तुमचो, चारे बांधव मांहे दोष न अमचो ॥ हो० ॥ ३ ॥ वात कही रे सवि मांमी मंमाणे, वात विशालनी निमुणी राणे ॥ हो० ॥

राजन् सर्पना खंम ठे दोय, जो नवि मानो तो नजरेजी जोय ॥ हो० ॥ ४ ॥ आणी देखाड्या रे आह दोय नाग, रायना मनमां रे उपन्यो राग ॥ हो० ॥ राजन् विषसंक्रम जय जाणी, तन फरस्युं रे मुऊ मात ए राणी ॥ हो० ॥ ५ ॥ टलीया अंतर भ्रमतमजाला, विकस्यां रे हृदय-कमल ततकाला ॥ हो० ॥ तूगे राय विचारे मनशुं, एह उत्तम नर राखुं यतनशुं ॥ हो० ॥ ६ ॥ अहो उपकारी उपर थयो रोषी, मुऊ जेवो जग कोइ न दोषी ॥ हो० ॥ अहो एहना बांधव गुणवंता, कहेवा कह्या मुऊने दृष्टांता ॥ हो० ॥ ७ ॥ एह न मार्यो ते थयुं घणुं सारुं, राज देइ व्रत लेइ सधारुं ॥ हो० ॥ कहे परिवारने चार ए बंधु, गुणमणि रयण अगाध ए सिंधु ॥ हो० ॥ ८ ॥ कुलदेवीए एह अंगज दीधा, मुऊ अपुत्रीयानां वांछित सीधां ॥ हो० ॥ राज्य स्थापी रे देवराज कुमार, सूधो हुं लेइश संयमजार ॥ हो० ॥ ए ॥ कहे परिवार पऊखो पंच रात, चारित्र दोहिलुं वय कोमल जात ॥ हो० ॥ कहे राजा मुऊ पूर्वज पहेला, पलित थया विण निसरया वहेला ॥ हो० ॥ १० ॥ पाम्या हो शिवपद हुं मंदजागी, कटुक विषय उपर रह्यो रागी ॥ हो० ॥ हवे निश्चे मुऊ संयम लेवो, राज्य कुंवर देवराजने देवो ॥ हो० ॥ ११ ॥ तद-नंतर शुज दिन निर्धारी, राज्य ठव्यो देवराज विचारी ॥ हो० ॥ पद युवराज वत्सराजने दीधुं, पुण्ये वांछित कारज सीधुं ॥ हो० ॥ १२ ॥ एहवे अवसरे नंदन वनमां, श्रीदत्त सूरि आव्या वाह्लाला रे मनमां ॥ हो० ॥ वनपालक जइ राय वधाव्यो, मन मानी ते वधामणी पायो ॥ हो० ॥ १३ ॥ लेइ परिवारने वंदण चाल्यो, मुनि नमवानी वेला मन मांहे माल्यो ॥ हो० ॥ धन्य दिवस मुऊ आजनी वेला, प्रजु तुम दर्शनथी लही लीला ॥ हो० ॥ १४ ॥ गुरु वंदी बेगे मन शांते, मुनिदेसण निसुणे रे एकांते ॥ हो० ॥ चोथे हो खंडे ढाल चौदमी सारी, रामविजय कहे सुणो नर नारी ॥ ॥ हो० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२० ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ योग्य जाणी ते पर्षदा. दीये गुरुजी उपदेश ॥ जविक जीव हरखे हिये, जांजे सकल कलेश ॥ १ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रंग ठेजी रंग ठे जी रंग ठे जी राज ॥ ए देशी ॥ रहो ज्ञान मांहे रंग रली रंग रली रे, धर्मध्यान मांहे रंग रली रंग रली रे ॥ ए आंकणी ॥ डुर्लन ए नरजव तुमे पायो, हार्यो किहां लहेशो वली रे ॥ लहेशो वली रे ॥र०॥ ॥ १ ॥ पुज्गलजाव विजाव ए टालो, साधो ए सहज दशा जली रे ॥ द० ॥ र० ॥ २ ॥ क्लेशे हो वासित मनडुं रे वाली, करो किरिया गुणशुं मली रे ॥ गु० ॥ र० ॥ ३ ॥ एक दिवस संयम गुण साधे, अशुज कर्म जाये टली रे ॥ जा० ॥ र० ॥ ४ ॥ ते परिणाम अशुरूने त्यागे, थाउं गज- माल महाबली रे ॥ म० ॥ र० ॥ ५ ॥ साधनयोगे ए साध्यने लहेवा, पुन्ययोगे पाम्यो रली रे ॥ पा० ॥ र० ॥ ६ ॥ थाउं साधक हवे बाधक मूकी, पांच प्रमाद ए निर्दली रे ॥ अव नि० ॥ र० ॥ ७ ॥ कुमति कुनारी संग निवारी, सुमति वधू वरो निर्मली रे ॥ व० ॥ र० ॥ ८ ॥ होवो पटकापना पीयर सूधा, कांइ जव खोवो ठो अली रे ॥ खो० ॥ र० ॥ ए॥ श्रीदत्त मुनि वाणी सुणी रीज्यो, मुनिपदकमल नमे लली रे ॥ न० ॥ र० ॥ १० ॥ कहे नृप दीक्षा दीयो अव मुजने, योगदशा सूधी कली रे ॥ सू० ॥ र० ॥ ११ ॥ रामविजय कहे धन्य ते मानव, मोह न जाये जेहने ठली रे ॥ जे० ॥ र० ॥ १२ ॥ दोहो ॥ कर जोमी मुनिने कहे, जितशत्रु नृपाल ॥ न थयुं वचन पिशाचनुं, कारण कोण कृपाल ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ सायुनामां मोतीडो वन रहीयो ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर सुण नृप रे ॥ सूरिजन ॥ वैर न कीजे कोइशुं ॥ वैश्यने वंशे उपनी, रूपवती सुकुमाल रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १ ॥ गोरी तुज घरणी हुइ, यौवन रूप रसाल रे ॥ सु० ॥ तुज मन माननी घणुं, सहु मांहि शिरदार रे ॥ सु० ॥ अवर अदे- खाइ करे, पण ताहरो बहु प्यार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २ ॥ हरि कोइक कर्मना दोषथी, थइ दोनागण तेह रे ॥ सू० ॥ दीठी हो न गमे तुजने, मूक्यो तेहशुं नेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३ ॥ मन मांहे चिंते माननी, मुज मूकी जरतार रे ॥ सू० ॥ अवर सहुने आदरे, धिक् माहरो अवतार रे ॥ ॥ सू० ॥ वै० ॥ ४ ॥ मन वैराग्ये वालीयुं, जइ निज बापने गेह रे ॥ सू० ॥ तप अज्ञानन्तो करी, मरी थइ व्यंतरी तेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ५ ॥ जव मंतरी आपणो, संक्रमी सर्प शरीर रे ॥ सू० ॥ पेठी हो तहारा उ-

नमां, करवा तुजने पीर रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ६ ॥ मारुं ए पूरव कंतने, परहरी पापीए एणे रे ॥ सू० ॥ वैर ने ऋण जूनां नो हे, मत बांधो ए तेण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ७ ॥ एहवे तुज कुलदेवीए, करीय पिशाचनुं रूप रे ॥ सू० ॥ तुज कल्याणने कारणे, जणाव्युं ए स्वरूप रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ८ ॥ वात सुणी देवराजजी, टाल्यो तुज अपाय रे ॥ सू० ॥ नाठी हो देवी तेजथी, सबलो पुण्य सखाय रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ए ॥ वात सुणी नरराजीयो, कहे मुनिने कर जोमी रे ॥ सू० ॥ कष्ट गयुं मुज जाग्यथी, हवे संयमनो कोम रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १० ॥ कहे मुनि देवाणुप्पिया, क्षण लाखेणो जाय रे ॥ सू० ॥ गयो पाठो आवे नहीं, धर्मे ढील न खटाय रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ११ ॥ यतः ॥ अज्जं कल्लं परं परारि, पुरिसा चिंतीय अच्छ संपत्तिं ॥ अंजलिगयं व तोयं, गलंतमाउं न पिछंति ॥ १ ॥ मासुअ अह ज० ॥ २ ॥ लोच कीधो बेहु जेदथी, ग्रहे संयमव्रतजार रे ॥ सू० ॥ धन्य धन्य सहु मुख उचरे, ए महोटो अणगार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १२ ॥ गुरु शिक्षा दीये तेहने, संघ चतुर्विध साख रे ॥ सू० ॥ व्रत लीधां विस्तारजो, अनुजव रस मन राख रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १३ ॥ जावी कथानक तेहने, जाखे गुरु हितकार रे ॥ सू० ॥ मगधे राजगृही वसे, शेठ धनावह सार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १४ ॥ धारिणी तस घरणी तणा, कुंवर चार सुजाण रे ॥ सू० ॥ धनपाल धनदेव धनपति, धनरक्षित तेम जाण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १५ ॥ ते चिहुंने परणावीया, चारे वहू सुविचार रे ॥ सू० ॥ शेठ विचारे चित्तमां, कुण ग्रहेशे गृहजार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १६ ॥ तास परीक्षा कारणे, स्वजन जमामी संच रे ॥ सू० ॥ सहु साखे चिहुंने दीया, शालि तणा कण पंच रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १७ ॥ मागुं ते चारे आपजो, वहूीए विचार्युं ताम रे ॥ सू० ॥ ससरोजी घेला थया, शुं राख्यानुं ए काम रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १८ ॥ उठाली नाखी दीया, बीजीए खाधा तेह रे ॥ सू० ॥ त्रीजीए यत्ने गोपव्या, चोथीए वंधवगेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १९ ॥ वाव्याथी वाध्या घणा, पंचम वर्षे शेठ रे ॥ सू० ॥ पुनरपि ते कण मागीया, विलखी वहू अर जेठ रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २० ॥ नाख्याथी नाखण तणुं, काम जलाव्युं तास रे ॥ सू० ॥ खाधा तिण रांधण थइ, काम करे उल्लास रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २१ ॥ यत्ने हो राख्या तेहने, सोंप्यो

हो सघलो माल रे ॥ सू० ॥ वृद्धि करी तेणे सहु शिरे, थइ चोथी सुकुमार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २२ ॥ उज्झिया नोगिया रक्षिया, चोथी रोहिणी नाम रे ॥ सू० ॥ एह उपनय मुनि उपरे, गुरुजीए दीधो ताम रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २३ ॥ शेठ सुगुरु दीक्षित वहू, कण पंचक व्रत जाण रे ॥ सू० ॥ संघ स्वजन मिलावको, नाख्या ते दुःखखाण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २४ ॥ केइ करे आजीविका, व्रत ठंले अविनीत रे ॥ केइ व्रत पाले उजलां, प्रतिबोधी न शकंत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २५ ॥ बुज्या वहुने बुजवे, रोहिणी सम मतिमंत रे ॥ सू० ॥ तेह परे विस्तारजो, व्रत गिरुआ गुणवंत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २६ ॥ श्रीजिन वीर तणे समे, होशे एइ संबंध रे ॥ सू० ॥ धन ज्ञानी परकाशीयो, सुणी थया सहु दृढ संध रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २७ ॥ शीख लेइ देवराजनी, मुनि विचरे उजमाल रे ॥ सू० ॥ संयम साधी अति नलो, कर्म कीयां विसराल रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २८ ॥ अनुक्रमे केवल पामीने, नृप साध्युं अरिहंत रे ॥ सू० ॥ सिद्ध थयां जिहां सहजनां, शाश्वत सुख अनंत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २९ ॥ श्री क्षेमंकर जिनवरे, नाख्यो ए अवदात रे ॥ सू० ॥ परखी लीजे हो प्राणीया, धर्मरयण एकांत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ॥ ३० ॥ प्रथम अहिंसा तिम मृषा, स्तेय विषयनो त्याग रे ॥ सू० ॥ परिग्रहविरमण जाणीने, जे करे ते महानाग रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३१ ॥ जिनवाणी निसुणी घणां, प्रतिबुज्यां नविवृंद रे ॥ सू० ॥ संयम देशविरति धरे, नद्रक गुण आनंद रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३२ ॥ वज्रायुध जिन वांदीने, धर्म तणो लेइ लान रे ॥ सू० ॥ निज नयरीए आवीया, पाले राज्य अदंन रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३३ ॥ चोथे खंडे पन्नरमी, ढाल कही जिनवाणी रे ॥ सू० ॥ रामविजय कहे सांनली, करो आतमहित जाणी रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६८ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संघ चतुर्विध स्थापीयो, वहु साधु परिवार ॥ क्षेमंकर अरिहंतजी, पुहवी करे विहार ॥ १ ॥ हवे वज्रायुध राजीयो, न्यायरीते चालंत ॥ वैरी वश कीधा सवे, गुणमणि रोहण संत ॥२॥ अन्य दिन आयुधशालामां, चक्र उपन्युं सार ॥ अठाही उत्सव करी, साध्या षट् खंम सार ॥ ३ ॥ विजय नत्युं मंगलावती, वरती सघले आण ॥ लाख चोराशी गज तुरी,

लख चोराशी निशाण ॥ ४ ॥ चोसठ सहस अंतेउरी, रूपे रंज समान ॥ जनपद सहस बत्रीश पति, बत्रीश सहस राजान ॥ ५ ॥ श्री वज्रायुध चक्रधर, बेठा सजा मझार ॥ तिण अवसर जे निपन्युं, ते निसुणो अधिकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ वृंदावनमां रे नाथ पधारीया जी ॥ ए देशी ॥ इण अवसर रे तिहां एक आवीयो जी, खेचर ध्रूजते अंग ॥ सुण मंगलावती विजयना साहिबा जी, शरण ग्रह्युं तुऊ चंग ॥ १ ॥ प्रजुजी मुऊ अनाथने उद्धरो जी, कहे नजचर कर जोमी ॥ मरण समो जय जगमां को नहीं जी, हवे मुऊ बंधन ठोम ॥ प्र० ॥ २ ॥ एहवे आवी रे पूठे खेचरी जी, खड्ग ग्रही कर मांहे ॥ वली तस पूठे विद्याधर परवडो जी, आव्यो गदा करे साही ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कहे विद्याधर चक्रायुध सुणो जी, ए पापीनी वात ॥ सुकछ विजयमां वैताढ्ये वसे जी, शुक्लापुरी शुज ख्यात ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ दत्त नरेश्वर विद्याधर तिहां जी, तेहनो हुं सुत वायुवेग ॥ मुऊ सुकांता कुखनी उपनी जी, शांतिमती गुणदेग ॥ प्र० ॥ ५ ॥ एक दिवस में विद्या दीधली जी, प्रज्ञप्ति इण नाम ॥ गइ मणिसागर पर्वत साधवा जी साधे करी मन ठाम ॥ प्र० ॥ ६ ॥ विद्या साधन करतां आवीयो जी, ए विद्याधर ताम ॥ रूपे मोह्यो पुत्री मुऊ हरी जी, जोजो उष्टनां काम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ पुत्रीजक्तिए रीजी देवता जी, तुष्ट थइ तेणी वार ॥ नाठो रे तिहांथी ए उतावलो जी, आव्यो इहां निर्धार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिहां नवि दीठी में पुत्री तदा जी, केडे धायो हुं आज ॥ राजन् मूको अपराधी जणी जी, नहीं मूकुं महाराज ॥ प्र० ॥ ९ ॥ अजिलाषी पुत्रीशीलजंगनो जी, करवो एहनो में अंत ॥ अवधि नीहाले रे वज्रायुध विजु जी, पूरव जव विरतंत ॥ प्र० ॥ १० ॥ कहे प्रतिबोधने कारण तुमे सुणो जी, तुऊ पुत्री हरी जेह ॥ पूरव जवनो नेह नड्यो इहां जी, सांजलो सहु जन एह ॥ प्र० ॥ ११ ॥ निज प्रजु ज्ञानी जाणी हरखीया जी, थया सुणवा सावधान ॥ देइ उपयोगने वज्रायुध कहे जी, सुणो तुमे मांमीने कान ॥ प्र० ॥ १२ ॥ चोथे खंडे रे ढाल थइ

सोलमी जी, नवि सुणो वात रसाल ॥ रामविजय कहे धन्य उपगारीया जी, वज्रायुध रे नूपाल ॥ प्र० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०७ ॥ २१ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मरुं रे सुहावा नयणडे ॥ ए देशी ॥ वात सुणो वैरागनी, कहे वज्रायुध नरदेव ॥ वाहाला ॥ पूरव नव संबंधथी, होवे राग वैरागनी टेव ॥ वा० ॥ १ ॥ वात सुणो वैरागनी ॥ ए आंकणी ॥ ऐरवते जंबुद्वीपमां, एक बंधपुर नामे गाम ॥ वा० ॥ बंधदत्त राजा नलो, करे धर्म तणां शुन काम ॥ वा० ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी सुलक्षणा कुखनो, एक तनय नलिनकेतु सार ॥ वा० ॥ मावित्रने वहालो घणुं, नरयौवन कांति अपार ॥ वा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ तेहज नयर मांहे वसे, एक धनमित्र सारथवाह ॥ वा० ॥ श्रीदत्ता नारी नली, दत्त सुत जनम्यो उत्साह ॥ वा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ यौवन वय परणावीयो, तेह मनोहर रूपनिधान ॥ वा० ॥ कन्या नामे प्रनंकरा, सबली अति सुंदर वान ॥ वा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ नरयौवन नामिनी थइ, मन्मथ वसवानुं धाम ॥ वा० ॥ प्रीतम साथे प्रेमनी, करे क्रीडा अति अनिराम ॥ वा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ एक दिन मास वसंतमां, लेइ नारी प्रनंकरा साथ ॥ वा० ॥ दत्त ते वन मांहे आवीयो, करे क्रीडा जल संघात ॥ वा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ देवकुंवर देवांगना, मानुं उतरीयां आकाश ॥ वा० ॥ दंपती दोय दिलशुं मल्यां, विरुई एह विषयनो पाश ॥ वा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ तव राजकुंवर तिहां आवीयो, तेह नलिनकेतु तिण ठाय ॥ वा० ॥ देखी प्रनंकरा मोहीयो, मन अटकी रह्युं तिहां जाय ॥ वा० ॥ वा० ॥ ९ ॥ मृगनयनी मनमोहनी, मन मांहे वसी ते आय ॥ वा० ॥ शुद्धि बुद्धि सवि नूली गयो, रह्यो कुमर त्यां लगन लगाय ॥ वा० ॥ वा० ॥ १० ॥ कामातुर सबलो थयो, तेणे लज्जा मूकी दूर ॥ वा० ॥ विकल करे माणस नणी, ए प्रेमपयोनिधि पूर ॥ वा० ॥ ॥ ११ ॥ यडुक्तं ॥ विकलयति कलाकुशलं, हसति शुचिं पंक्तितं विडंवयति ॥ अधरयति धीरपुरुषं, क्षणेन मकरध्वजो देवः ॥ १ ॥ कुशः काणः० ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ यौवनगर्वित राजशुं, कुल शील न कीध विचार ॥ वा० ॥ तेह प्रनंकरा अपहरी, आव्यो एह राजकुमार ॥ वा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ पीयु तस टलवलतो रह्यो, अहो अहो जुर्ज जोरनी वात ॥ वा० ॥ धींगो परधन ...गवे, संठ खाये देइ लात ॥ वा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ जुलम इस्यो जाणी करी,

बहु लोक थयां दिलगीर ॥ वा० ॥ जोर न चाले रायशुं, तस विरहे कंत अधीर ॥ वा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ हा हा प्रजंकरा कामिनी, तें अघटतुं कीधुं केम ॥ वाहाली ॥ विरहव्यथामां नाखीयो, विसाख्यो नव रस प्रेम ॥ वा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ एक दिन दत्त उद्यानमां, मुनि केवलज्ञान दिणंद ॥ वाहाला ॥ वांदीने निसुणी देशना, मन पाम्यो परमानंद ॥ वा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ देशन सुणी घरे आवीयो, करी दानादिक शुज्ज धर्म ॥ ॥ वा० ॥ आयुःक्षये चवी उपन्यो, कछ विजय मांहे निज कर्म ॥ वा० ॥ ॥ वा० ॥ १७ ॥ महेंद्रविक्रम वैताढ्यमां, खेचर जूपति बलवंत ॥ वा० ॥ तास तणे कुले उपन्यो, नामे अजितसेन गुणवंत ॥ वा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ कमला हो तस कामिनी थइ, हवे नलिनकेतु कुमार ॥ वा० ॥ पितरनुं राज्य लही करी, करे क्रीमा अनेक प्रकार ॥ वा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ प्रजंकराशुं रंगशुं, सुख माणे रात ने दिस ॥ वा० ॥ वेगां सातमी जूमिका, एक दिन मन धरीय जगीश ॥ वा० ॥ वा० ॥ २० ॥ पंच वरण वादल थयां, सोहे वावती रंग बनाव ॥ वा० ॥ नजरे नीहाले दोय जणां, थयो कौतुक ख्याल जमाव ॥ वा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ थयां विसराल ते ततक्षणे, पवने दल नाख्यां दूर ॥ वा० ॥ स्वप्नोपम एम देखीने, मने आव्युं वैराग्यनुं पूर ॥ वा० ॥ ॥ वा० ॥ २२ ॥ धन यौवन सवि कारिमुं, जेवुं वादलनुं सरूप ॥ वा० ॥ अहो जुर्ड एहने कारणे, इयां इयां करे प्राणी विरूप ॥ वा० ॥ वा० ॥ ॥ २३ ॥ पुजल ए सवि कारिमां, सवि अस्थिर ए तन धन जोग ॥ वा० ॥ साचा करीने सद्दह्या, हुं जीनो जामिनी जोग ॥ वा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ में मलिन कस्यो निज आतमा, परतरुणी केरे राग ॥ वा० ॥ क्षणिक ए सुखने कारणे, बहु पाप कर्युं निर्जाग्य ॥ वा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ पतित घणो मुक जेहवो, कुण तारे विणु जिन माग ॥ वा० ॥ हवे संयम तप आदरुं, तरवा जवसिंधु अताग ॥ वा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ निज सुत राज्य ठवी करी, क्षेमंकर प्रजुने हाथ ॥ वा० ॥ नलिनकेतु व्रत आदस्यो, विचस्यो मही थइ मुनिनाथ ॥ वा० ॥ वा० ॥ २७ ॥ शम दमवंतो साधुजी, गिरुर्ड गुणमणि जंमार ॥ वा० ॥ दोष रहित आहार ले, मुनि पाले पंचाचार ॥ वा० ॥ वा० ॥ २८ ॥ नहीं ममता निज देहनी, षट्काय तणा गोवाल ॥ वा० ॥ घातिकरम क्षय केवली, थइ मुक्तिए गया ततकाल

॥ वा० ॥ वा० ॥ २ए ॥ नलिनकेतु सिद्धने नमुं, हुं कर जोमीने जाल ॥ वा० ॥ कर्मनो कचरो काढीयो, धरीए तस ध्यान त्रिकाल ॥ वा० ॥ वा० ॥ ॥ ३० ॥ चोथे हो खंडे सत्तरमी, कही रामविजये एह ढाल ॥ वा० ॥ बलिहारी गुणवंतनी, जे राखे हो मनडुं वाली ॥ वा० ॥ वा० ॥ ३१ ॥ ५१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली वज्रायुध नृप कहे, प्रजंकरा जे नारी ॥ सुव्रता गुरुणी संगते, चांड्रायण तप सार ॥ १ ॥ शुज्ज जावे तप आदरी, मरण लही ते नारी ॥ शांतिमती हुइ ताहरी, पुत्री गुणजंमार ॥ २ ॥ पूरव जव जरतार ए, अजितसेन जजचार ॥ दीठी विद्या साधती, प्रगट्यो मोहविकार ॥ ३ ॥ तिण कारण इण अपहरी, पवनवेग सुण साच ॥ कोप म कर ए उपरे, साचे मारग राच ॥ ४ ॥ शांतिमती तुं पण निसुणी, मूक कोप विण काज ॥ वैर नेह जीरण नहीं, एम बोले मुनिराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ म्हाने दीधो आइ जी आदेश के, हुं वनी रामतमें रम्यां हो राज ॥ ए देशी ॥ निसुणी निसुणी वज्रायुधनी वात के, बिहुं विद्याधर चिंतवे हो राज ॥ धन्य धन्य एहनुं ज्ञान अपूरव जाति के, कर जोमीने विनवे हो राज ॥१॥ मलीया मलीया थें अमने महाराज के, दिन वलीया हवे माहरा हो राज ॥ टलीया टलीया जरम गरीबनिवाज के, में सेवक ठां थाहरा हो राज ॥२॥ जाखे जाखे शांतिमती तजी रीस के, पूरव जवना नाथने हो राज ॥ खमजो खमजो गुनहो मुऊ जूमीश के, जे मूक्यो तुम साथने हो राज ॥ ३॥ कीधो कीधो बिहुं राजवीए मेल के, श्री वज्रायुध आगले हो राज॥ सीधां सीधां मन कीधां जेलसेल के, साजन न रहे आमले हो राज ॥ ४ ॥ बोले बोले श्री वज्रायुध राय के, सजा सहु उद्देशीने हो राज॥ ए तो एहनो पूरव जव कह्यो जाय के, हवे सुणो आगल वेसीने हो राज॥ ५ ॥ लेशे लेशे शांतिमती ए दीख के, बिहुं विद्याधरशुं मली हो राज ॥ करशे करशे अवगुणने उवेखी के, निर्मल तप रत्नावली हो राज ॥ ६ ॥ पाली पाली अणसण सायक दोष के, सागर आठ ईशानमां हो राज ॥ होशे होशे इंद्र वली सुरलोक के, गुण गाशे सुर तानमां हो राज ॥ ७ ॥ तेणे अवसरे वायुवेग मुणींद के, अजितसेन मुनिने वली हो राज ॥ परगट होशे केवलनाण

दिणंद के, आवशे इंद्र ए मन रली हो राज ॥८॥ करशे करशे उत्सव विविध प्रकार के, ईशानेंद्रजी लली लली हो राज ॥ लेइ लेइ लाज अपार के, सुरलोके जाशे वली हो राज ॥ ९ ॥ इंद्र तिहांथी उत्तम कुल अवतार के, लहीने दीक्षा साधशे हो राज ॥ करतां करतां उग्र विहार के, शुभ गुणठाणे वाधशे हो राज ॥ १० ॥ शोधी शोधी कर्म तणो करी अंत के, शिवलीलाने पामशे हो राज ॥ धरशे धरशे एहनुं ध्यान सुचिंत के, ते सवि दुःखने वामशे हो राज ॥ ११ ॥ दाख्युं दाख्युं पट्ट खंड केरे नाथ के, अवधिज्ञाने वालहे हो राज ॥ सांजली सांजली सयलनो साथ के, हर्ष हियडले बहुलो लहे हो राज ॥ १२ ॥ साचुं साचुं तुम्ह तणुं ज्ञान के, कालत्रय दीपक जिस्युं हो राज ॥ कीजे कीजे तास गुणज्ञान के, अवर कोइनुं नहीं इस्युं हो राज ॥ १३ ॥ शांतिमती ने वायुवेग महीश के, अजितसेन त्रीजो सही हो राज ॥ प्रणमी प्रणमी पाय चक्रीश के, निज स्थानक पहोता वही हो राज ॥ १४ ॥ रुडे रुडे राज्य हवे नरदेव के, पाले नित्य चढती कला हो राज ॥ कुंवर रुडा सहस्रायुध करे सेव के, विनय गुणे करी आगला हो राज ॥ १५ ॥ सहस्रायुध घरे नाम जयंती नारी के, तेनी कुखे उपन्यो हो राज ॥ रुडो रुडो कनकशक्ति कुमार के, नवयौवन वय निपन्यो हो राज ॥ १६ ॥ परणावी तस कामिनी दोय रसाल के, कनक वसंत जोडीये हो राज ॥ माला सेना पद सुकुमार के, रंजा न आवे होडीये हो राज ॥ १७ ॥ सुख विलसंतां रात ने दिस के, काल गयो केतो वही हो राज ॥ ढाल अढारमी चोथे खंडे जगीश के, रामविजय जाखी सही हो राज ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५४१ ॥ २२ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कनकशक्ति कुमार, स्त्री संघाते एकदा ॥ पहोतो गहन मकार, क्रीडा करतो अजिनवी ॥ १ ॥ पतनोत्पतन करंत, कोइ नर दीठो कुंवरे ॥ तिहां जइने पूछंत, कहो मुज ए कारण किस्युं ॥ २ ॥ तेह कहे वैताढ्य, वासी हुं नजचारीयो ॥ पण सुण गुणरयणाढ्य, विद्यापद एक जूलीयो ॥ ३ ॥ उडी न शकुं आकाश, उंचेथी नीचो पडुं ॥ कुमर कहे परकाश, पद पूरुं तुज परवडुं ॥ ४ ॥ पद लब्धि अनुसार, पूर्युं प्रेम लह्यो घणो ॥ तिण खेचर तिण वार, विद्या दीधी कुमारने ॥ ५ ॥ तेण प्रकाशी रीति, विद्या

साधी कुंवरे ॥ वेहु स्त्रीशुं शुभ चित्त, मन मानी मोजे फरे ॥६॥ भमतो हिमगिरि ठाम, गयो कुमर ते अन्यदा ॥ दीठ विपुलमति नाम, मुनि विद्याधर वंशना ॥ ७ ॥ तास चरण प्रणमेवि, प्रिया सहित बहु प्रेमशुं ॥ वेसे कर जोडेवि, कनकशक्तिं बहु विनयशुं ॥ ८ ॥ धर्म तणो उपदेश,मुनिवरजी भाखे भलो ॥ दूरे होय किलेश, शिवसुखनो दायक सही ॥ ए ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ रे जीव जगत सुपनो जाण ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर निसुण प्राणी, कारिमो संसार ॥ ए रूप यौवन पूर जलनुं, विणसतां नहीं वार ॥ मन मांहे आशा बहुत धरतो, फरत देश विदेश ॥ धन काज सारो दिवस धावे, धर्म नहीं लवलेश ॥ १ ॥ रे जीव चेत चतुर सुजाण ॥ ए आंकणी ॥ आण माने मोह केरी, जिण कीयो हेरान ॥ प्रपंच पुद्गल खेलन लहे, ए अनादि पुराण ॥ संयोग एह वियोग साथे, नित्य माने सोय॥ भ्रमजाल फसीयो प्राणीया, तुंही गयो भव खोय ॥ रे जी० ॥ २ ॥ हे शुद्ध चेतन रूप तेरो, अनंत गुण पर्याय ॥ ऋद्धि घटमें प्रगट दीसे, करे सोइ उपाय ॥ निरावरण समाधि भोगी, योगसें चित्त लाय ॥ आनंदघन उपगार तेरो, तुंही एक सहाय ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ करी धर्म वस्तु सभाव जाणी, मोहमिथ्या दूर ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकी, भावथी सुखपूर ॥ नूर प्रगटे विषय विघटे, भेद जाये नासी ॥ युं शुद्ध धर्मे साध्य साधन, सहज लील विलास ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ परभाव पुद्गल उंच कुलमां, रूप लछी विलास ॥ वर कामिनीके भोग सुंदर, बहुरी दासी दास ॥ ठकुराइ चिंतित काम होवे, सवही माने आण ॥ धर्मसाधन करत ए फल, आनुषंगिक जाण ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ ज्युं पुण्यसार कुमार पायो, सर्व चिंतित भोग ॥ वर ऋद्धि लाधी कीर्त्ति वाधी, कामिनी संयोग ॥ कहे कनकशक्ति कुमार मुनिको, कहो उनकी वात ॥ कहे ज्ञानी सुन हो प्रानी, पुण्यसें सुखशात ॥ रे जी० ॥ ६ ॥ ढाल ॥ त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे ॥ए देशी॥ गोपालक पुर क्षेत्र,भरत मांहे दीपतुं रे के॥ भरत मांहे दीपतुं॥ सुंदर शोभा सार, सवि पुर जीपतुं रे के ॥ स० ॥ तिहां धर्मी शिरदार, पुरंदर नामथी रे के ॥ पु० ॥ शेठ वसे गुणवंत, प्रसिद्धो दामथी रे के ॥ प्र० ॥ १ ॥ तस घर पुण्यसीरी इण, नामे पद्मिनी रे के ॥ नामे० ॥

प्रीतमशुं बहु नेह, सुरूप सोहागणी रे के ॥ सु० ॥ गुण सघला संतान, नहीं एक तेहने रे के ॥ न० ॥ एहीज महोटी खोट, चाहे जग जेहने रे के ॥ चा० ॥ २ ॥ पुत्र तणी बहु आश, स्वजन प्रेरे घणुं रे के ॥ स्व० ॥ नवि परणे रखे थाय, प्रिया दिल डूमणुं रे के ॥ प्रि० ॥ कुलदेवी आगल जइ, बेहु एम उचरे रे के ॥ बे० ॥ स्वामिनि सुतनी चिंता, क्षण क्षण सांजरे रे के ॥ क्ष० ॥ ३ ॥ कोण करशे तुज जक्ति, विमासण छे घणी रे के ॥ वि० ॥ जूवो ज्ञान प्रयुंजी, मया करो अम जणी रे के ॥ म० ॥ देवी कहे सुण शेठ, होशे सुत सुंदरु रे के ॥ हो० ॥ पुण्य करंतां गुणमणि, रोहण जूधरु रे के ॥ रो० ॥ ४ ॥ हर्षित हुउ शेठ, घणुं मनमां रली रे के ॥ घ० ॥ चिंते माहरी आजथी, जाग्यदशा वली रे के ॥ जा० ॥ पुण्य तणां करे काज, दयागुण आदरे रे के ॥ द० ॥ दीन डुःखी जे लोक, तेहने उद्धरे रे के ॥ ते० ॥ ५ ॥ पुण्यसीरी कुलदेवी, संजारी हेजमां रे के ॥ सं० ॥ एक दिन रयणी मजार के, सूती सेजमां रे के ॥ सू० ॥ दीठो सोल कला, संपूरण चंदलो रे के ॥ पू० ॥ विनवीयो जइ शेठ के सुपन लह्यो जलो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ होशे पुत्ररतन्न, मनोरथ पूरशे रे के ॥ म० ॥ शेठ कहे सुत आव्यो, संकट चूरशे रे के ॥ सं० ॥ हर्ष लही मन मांहि, गर्ज प्रतिपालना रे के ॥ ग० ॥ काले जनम्यो पुत्र, करे बहु लालना रे के ॥ क० ॥ ७ ॥ उत्सव कीध अपार, अनेक वधामणां रे के ॥ अ० ॥ नाम धर्युं पुण्यसार, मली साजन घणां रे के ॥ म० ॥ फलीया मनोरथ सार के, मात पिता तणा रे के ॥ मा० ॥ देखी सुतमुख चंद के, हर्षनी नहीं मणा रे के ॥ ह० ॥ ८ ॥ पंच धाव सुत केडे, वींटाइ रहे रे के ॥ वीं० ॥ चिरं जीवो सुत एम, सहु मुखथी कहे रे के ॥ स० ॥ पंच वरस थयां ताम, निशाले पाठव्यो रे के ॥ नि० ॥ सकल कला अन्यास, करे नित्य अजिनवो रे के ॥ क० ॥ ९ ॥ रत्नसार एक शेठ, तणी तिहां दीकरी रे के ॥ त० ॥ रत्नसुंदरी इण नाम, जणे तिहां गुणजरी रे के ॥ ज० ॥ ते बिहुं जोडे हांगा, होडे जणे जलां रे के ॥ हो० ॥ मांहो-मांहे विवाद, करे ते गुणनिलां रे के ॥ क० ॥ १० ॥ चपलपणाथी जोरे के, बोडे आकुली रे के ॥ बो० ॥ पुण्यसार संघाते, कयडे व्याकुली थी रे के ॥ क० ॥ शास्त्र तणो रे विवाद, करे अमरष चढी रे के ॥ क० ॥

तिल नवि सांखे घोल के, वोले चक्रवर्त्ती रे के ॥ वो० ॥ ११ ॥ रीसाणो पुण्यसार, कुमार कहे इस्युं रे के ॥ कु० ॥ रे मुग्धा मुज साथ, विवाद करे किस्युं रे के ॥ वि० ॥ यद्यपि तुं गुणवंत, कलावंत पत्रवत्ती रे के ॥ क० ॥ आखर परण्या पूठे, पुरुष पग मोजत्ती रे के ॥ पु० ॥ १२ ॥ पुरुष पनोता सार, कह्या संसारमां रे के ॥ क० ॥ दासी परे घरकाज, करीश परिवारमां रे के ॥ क० ॥ चटकी वोले वोल, चढावी रीसने रे के ॥ च० ॥ कोइक जाग्यविशालने, वरीश हुं ईशने रे के ॥ व० ॥ १३ ॥ तुज जेवा कंगाल, घणा जगमां फरे रे के ॥ घ० ॥ मुज जेवी गुणवंती, किमही न आदरे रे के ॥ कि० ॥ वोल्यो ताम कुमार, वरुं जो तुजने रे के ॥ व० ॥ जो करुं किंकरी तुज तो, माने मुजने रे के ॥ मा० ॥ १४ ॥ वोली चटकी चंच रे, मूरख शुं लवे रे के ॥ मू० ॥ जोरे अनन्य प्रीति, दंपती केम संजवे रे के ॥ दं० ॥ थयो बहु वार विवाद, हैयाना रोषशुं रे के ॥ है० ॥ कुंवर चिंते रीस ए, अवसरे पोषशुं रे के ॥ अ० ॥ १५ ॥ जोजो वोले वोल, किहांनी किहां थइ रे के ॥ कि० ॥ विद्यावादनी वाते, वात हाडे गइ रे के ॥ वा० ॥ ते पुण्यसार कुमार, आव्यो निज घर जणी रे के ॥ आ० ॥ मुखपंकज थयुं म्लान, आरति मनमां घणी रे के ॥ आ० ॥ १६ ॥ सूतो त्रूटी खाट, जइ एकण दिशे रे के ॥ ज० ॥ शेठ पुरंदर जोजन, काज आव्या तिस्ये रे के ॥ का० ॥ देखी पुत्रने सूतो, ठेकाणे शून्यमां रे के ॥ ठे० ॥ पूठे कारण कोण, शुं चिंतो मन्नमां रे के ॥ शुं० ॥ १७ ॥ वात कहे वत्स आज, विचार जे ताहरे रे के ॥ वि० ॥ जीवन प्राणाधार, तुं एकज माहरे रे के ॥ तुं० ॥ पूछ्युं आमह जोरे, तदा कहे तातजी रे के ॥ त० ॥ रत्नसुंदरी परणावो, मुज ए वातजी रे के ॥ मु० ॥ १८ ॥ रत्नसार व्यवहारी,-नी ए अंगजा रे के ॥ नी० ॥ ए परणावे पुत्र, होशे महारी मज्जा रे के ॥ हो० ॥ तात कहे सुण पुत्र, हजी तुं बाल छे रे के ॥ ह० ॥ तो हमणां शी वात, जण्यानो काल छे रे के ॥ ज० ॥ १९ ॥ यौवन समये तास, करेशुं विवाहलो रे के ॥ क० ॥ परणाव्यानो अम्ह, घणो छे उमाहलो रे के ॥ घ० ॥ परणवा माटे आम, थाये कां काहलो रे के ॥ था० ॥ जाग्यवती ते नारी, थइश जस नाहलो रे के ॥ थ० ॥ २० ॥ पुण्यसार कहे वात, न मानुं ए सही रे के ॥ न० ॥ ते साथे

विवाह, मेलो इमणां जइ रे के ॥ मे० ॥ पछे तुम साथे जोजन, करशुं हुं वही रे के ॥ क० ॥ कहे पुरंदर उठ, जमीजे हा कही रे के ॥ ज० ॥ २१ ॥ चोथे खंडे ढाल, कही ठंगणीशमी रे के ॥ क० ॥ बालपणानी वात, कही साकर समी रे के ॥ क० ॥ बुध श्रीसुमतिविजय कवि, सेवक विनवे रे के ॥ से० ॥ रामविजय कहे धन्य, विचारी जे लवे रे के ॥ वि० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जोजन करी उठ्या पठी, लइ साथे परिवार ॥ शेठ पुरंदर आवीयो, रत्नसार घरबार ॥ १ ॥ आदरमान दीये घणां, मांडे आसन सार ॥ स्वामी पधाख्या आंगणे, धन्य अमचो अवतार ॥ २ ॥ कहो स्वामी कारण किस्युं, कहे पुरंदर वात ॥ रत्नसुंदरी तुम सुता, पुण्यसार अम जात ॥ ३ ॥ जोमी जली जुगती अठे, मेलीजे विवाह ॥ इण कारण आव्या अहुं, मनमां धरी उत्साह ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे शेठजी, ए तो महारुं काज ॥ तुमे कस्युं करुणा करी, सीधां वांठित राज ॥ ५ ॥ देवी तुम सुतने सुता, रत्नसुंदरी सार ॥ पुण्य विना किहांथी मले, पुण्यसार जरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ ठेनो नांजी ॥ ए देशी ॥ तात समीपे बेठी कन्या, बोले इण परे चावी ॥ ना ना नहीं परणुं हुं एहने, वात ए मुफ न सुहावी ॥ १ ॥ नाथ कहो जी ॥ हां रे तुमे शीदने समजावो, अलगा रहो जी ॥ ए आंकणी ॥ जे जाणो ते अवर कोइने, तातजी मुफ परणावो ॥ वरकुंवारी रहीश ते वारु, पण पुण्यसार न गावो ॥ नाथ० ॥ २ ॥ शेठ पुरंदर चिंते मनमां, शुं बोले शुं बाला ॥ मुफ सुत आशा करे परणवा, पण खोटा एहना चाला ॥ ना० ॥ ३ ॥ बालपणे ए एहवुं बोले, यौवनमद मतवाली ॥ आगल मुफ सुतने ए साथे, न मले सुखनी ताली ॥ ना० ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे मुग्धा बाला, ए शुं बोली जाणे ॥ पीत बाल विटनुं जे बोल्युं, ते कुण मनमां आणे ॥ ना० ॥ ५ ॥ एहने हुं समजावीश सूधी, तुम सुतने परणेशे ॥ ए कुलवंती कन्या महारी, साहामो जवाप न देशे ॥ ना० ॥ ६ ॥ वचन सुणीने पाठो वलीयो, परिजनशुं घरे आव्यो ॥ सुत पुण्यसार उत्संगे

तेमी, भेद सहु समजाव्यो ॥ ना० ॥ ७ ॥ वत्स तुजने ए योग्य न कन्या, वालपणे वाचाली ॥ आगल थापे ए शिर गाणां, एहवी नजरे भाली ॥ ना० ॥ ८ ॥ यदुक्तं ॥ कुदेहां विगतस्नेहां, लज्जाशीलकुलोज्झिताम् ॥ अतिप्रचंडां दुस्तुंडां, गृहिणीं परिवर्जयेत् ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ पुण्यसार पुनरपि एम बोले, तात कह्युं ए साचुं ॥ पण परण्या विण मुज पिताजी, वचन थाय ते काचुं ॥ ना० ॥ ए ॥ बुद्धिमंत मन मांहे विचारे, वांक न कांई पितानो ॥ अवर उपाय करी परणेशुं, एम चिंती रह्यो ठानो ॥ ना० ॥ १० ॥ एक दिन जनकवयणथी जाणी, सचोवाइ कुलदेवी ॥ कुसुम धूप नैवेद्य करीने, बहु आदरशुं सेवी ॥ ना० ॥ ११ ॥ कर जोडी आगल मद मोडी, उभो तन संकोडी ॥ मा हुं ते पुण्यसार पनोतो, वर दीधो तें कोडी ॥ ना० ॥ १२ ॥ माटे मुज तरुणीनुं वांछित, जब पूरेशो माता ॥ तव उठीश हुं इहांथी अलगो, थाशे मुज सुखशाता ॥ ना० ॥ १३ ॥ करी प्रतिज्ञा अन्न जल त्यागे, वेठो धरी एकतारी ॥ कहे देवी हलवे तुज होशे, कारजसिद्धि विचारी ॥ ना० ॥ १४ ॥ चिंता म म कर मनमां कुंवर, कर पारण पुण्यसार ॥ भोजन करी लेइ तातअनुज्ञा, गयो निशाले तिवार ॥ ना० ॥ १५ ॥ थइ निश्चिंत करे अवशेषित, सकल कला अभ्यास ॥ बालपणुं वीत्युं तव यौवन, पाम्यो लीलविलास ॥ ना० ॥ १६ ॥ चोथे खंडे वीशमी ढाले, रामविजय कहे वाणी ॥ जे संबंध होवे ते न टले, सांजलो श्रोता प्राणी ॥ ना० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०१ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यसार कुंवर भलो, सकल कलानो जाण ॥ दैवयोग वांछित हुउं, द्यूतव्यसन सहिनाण ॥ १ ॥ लाग्यो रंग कुसंगनो, जिम उज्ज्वल पट नील ॥ वासित आतम दुर्व्यसने, विणसंतां नहीं ढील ॥ २ ॥ दुर्जन संग न कीजीये, जो लहीये लक्ष दीनार ॥ कीर्त्ति जाये कुल तणी, मेलो होय अवतार ॥ ३ ॥ वार्युं मात पिता तणुं, न करे लेह लगार ॥ व्यसन विलुद्धो ते घणुं, धिक् धिक् कर्मविकार ॥ ४ ॥ लक्ष मूल्यनुं एकदा, नृप आभरण अमूल्य ॥ निज गृहथी लेइ नीसर्यो, पुण्यसार प्रतिकूल ॥ ५ ॥ द्यूतकारनुं लाख धन, माथे चढीयुं तास ॥ ते मांहे जइ सोंपीयुं,

आनूपण उल्लास ॥ ६ ॥ एम धन विणसाड्युं घणुं, न गणे कोइनी लाज ॥ द्यूत समुं नहीं जगतमां, व्यसन कोइ शिरताज ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ मात पिता घणुंए कहे रे, पण वार्यो न रहे सोय ॥ धिक् धिक् कर्मने रे ॥ उलंजा आवे घणा रे, अहोनिश फूरे दोय ॥ धि० ॥ १ ॥ जीवहुंती वाहालो घणो रे, पण थयो वेरी समान ॥ धि० ॥ साजन बोलावे नहीं रे, न लहे आदरमान ॥ धि० ॥ २ ॥ एक दिवस नृपे मागीयुं रे, नूपण शेठनी पास ॥ धि० ॥ जइ जोयुं आवासमां रे, न लह्युं चिंते विमासी ॥ धि० ॥ ३ ॥ पुण्यसारे ग्रह्युं ए सही रे, नहीं बीजो लेवणहार ॥ धि० ॥ गृह वली अन्य वस्तुनो रे, एह विनाशणहार ॥ धि० ॥ ४ ॥ ए राखण योगो नहीं रे, पुत्ररूपे रिपु एह ॥ धि० ॥ घरहुंती हवे काढवो रे, इयो एह साथे नेह ॥ धि० ॥ ५ ॥ यतः ॥ यदर्थं ख्रियते लोके यत्नश्च क्रियते महान् ॥ सोऽपि संतापदा एवं, दुःपुत्रा हा जयंत्यहो ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ हाटे पुरंदर आवीयो रे, तिहां आव्यो पुण्यसार ॥ धि० ॥ पूठी खबर अलंकारनी रे, जिम तिम लव्यो तेणी वार ॥ धि० ॥ ६ ॥ कोप्यो शेठ कहे इस्युं रे, जा जा दुष्ट गमार ॥ धि० ॥ ते नूपण लाव्या विना रे, नावीश मुज घर-बार ॥ धि० ॥ ७ ॥ वचने तरज्यो ते घणुं रे, निर्दय जाली कंठ ॥ धि० ॥ वाहालो पण वेरी थयो रे, काढ्यो ते उत्कंठ ॥ धि० ॥ ८ ॥ तातवचन सुणी नीसर्यो रे, पुर बाहिर तेणी वार ॥ धि० ॥ सांज पडी दिन आथम्यो रे, करे मन मांहे विचार ॥ धि० ॥ ९ ॥ हवे किहां जाउं एकलो रे, न लहुं मारगनी शुद्धि ॥ धि० ॥ अहो कुकर्म में शुं कर्युं रे, किहां गइ महारी बुद्धि ॥ धि० ॥ १० ॥ एहवे एक वड देखीयो रे, कोटर बहु विस्तार ॥ धि० ॥ निर्जय जाणी जायगा रे, पेठो तेह मजार ॥ धि० ॥ ११ ॥ शेठ पुरंदर आवीयो रे, सांज समे घरबार ॥ धि० ॥ जामिनी पूछे कंथने रे, किहां पुण्यसार कुमार ॥ धि० ॥ १२ ॥ राजनूपणनी वारता रे, सवि भाखी आमूल ॥ धि० ॥ में शिक्षाने कारणे रे, काढ्यो ते प्रतिकूल ॥ धि० ॥ १३ ॥ वात सुणी विलखी थइ रे, आव्युं हृदय जराय ॥ धि० ॥ शुं सुत देखाडो मुने रे, सुत काढी गंवाय ॥ धि० ॥ १४ ॥ मन अनुसार ए बालुडो रे, सी गति होशे नाम ॥

धि० ॥ वल्लज केम लाजो नहीं रे, ते सुतने निष्कासी ॥ धि० ॥ १५ ॥ जो तुम्हे काढ्यो पुत्रने रे, तो तुम्हे केडे जावो ॥ धि० ॥ ते तेहीनेमाइ-रा रे, मंदिर मांहे आवो ॥ धि० ॥ १६ ॥ एम निर्जत्स्यो नारीए रे, पुत्र संजारी चित्त ॥ धि० ॥ पुरमां जोवा नीसस्यो रे, विरुइ मोहनी रीति ॥ धि० ॥ १७ ॥ पीयु अंगज घर को नहीं रे, एकलमी रही नारी ॥ धि० ॥ मंदिर शून्नुं देखीने रे, चाली आंसुनी धार ॥ धि० ॥ १८ ॥ हा घरहुंती नाहलो रे, काढ्यो में रीसाल ॥ धि० ॥ कंते कोप करी घणो रे, काढ्यो बाल वियाल ॥ धि० ॥ १९ ॥ एम अचिंत्युं शुं थयुं रे, चिंतातुर चित्त मांहि ॥ धि० ॥ जजी उंबर आवीने रे, जोउं आवंतो नाह ॥ धि० ॥ २० ॥ चोथे खंडे एकवीशमी रे, राम-विजय कही ढाल ॥ धि० ॥ हवे संबंध पुण्यसारनो रे, सांजलो जवि उजमाल ॥ धि० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६२९ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यसार तिण रातमां, वम उपरे दोय सार ॥ देवी दीठी अति जली, तेज तणो नहीं पार ॥ १ ॥ मांहोमांहे वातो करे, निसुणे मांमी कान ॥ साहसिकमां शिरतिलो, पुण्यसार बलवान ॥ २ ॥ एक कहे बीजी प्रत्ये, सुण बहेनी गुणवंत ॥ राते एह रमवा तणी, वेला छे एकांत ॥ ३ ॥ बीजी बोले शुं हुवे, व्यर्थ जमे जू मांहि ॥ कौतुक देखीजे किहां, तो जइये उत्साही ॥ ४ ॥ ते बोली सांजल बहेनी, वल्लजीपुर परधान ॥ तिहां निवसे व्यवहारीयो, धनप्रवर अजिधान ॥ ५ ॥ धनवती तेहनी जारजा, तस पुत्री छे सात ॥ धर्मसुंदरी नयसुंदरी, कामसुंदरी विख्यात ॥ ६ ॥ मुक्तिसुंदरी मनमां वसी, जाग्यसुंदरी जाण ॥ सौजाग्य-सुंदरी सातमी, गुणसुंदरी गुणखाण ॥ ७ ॥ कन्या वरने कारणे, धन शेठे बहु मान ॥ लंबोदर आराधीयो, देइ मोदकदान ॥ ८ ॥ प्रत्यक्ष थइ बोल्यो निपुण, आजथी सतम दिस ॥ लग्नवेलाए रातमां, धरतो अधिक जगीश ॥ ९ ॥ वेहु स्त्री पूठे आवशे, शेठ तणो एक नंद ॥ ते परणेशे ताहरी, कन्या धरी आनंद ॥ १० ॥ आज दिवस सही सातमो, जइये जोवा काज ॥ कौतुक होशे अति जखुं, बहेनी तिहांकणे आज ॥

११ ॥ ए तरु उपर वेसीने, चालीजे आकाश ॥ जीव्यापें जोयुं नलुं, पूरीजे मन आश ॥ १२ ॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

॥ जोली नावजजी नावज महारी जात रंधाव, सेसे मारुजी हो जात मंगावीयो जी ॥ ए देशी ॥ सुणी वाणी जी वाणी सुणी ते पुण्यसार, मनमानी मांहे हो अति हर्षित हुउं जी ॥ गुणखाणी जी गुणखाणी ए देवी रे दोय, जाग्ये मली मुजने अचरिज जुउं जी ॥ १ ॥ हवे जोउं जी जोउं रे हवे कौतुक वात, तेह जोउं वल्लनीपुर केहवो जी ॥ जोउं शेठने जी शेठ किस्यो धनवंत, कुमरे विचार कस्यो मन एहवो जी ॥२॥ दोय देवी जी देवीए कीध हुंकार, तेह वमपादप चाल्यो अंबरे जी ॥ वडकोटर जी वमकोटर पुण्यसार, रह्यो रे प्रज्ञुजीनुं समरण करे जी ॥ ३ ॥ जो इहांथी जी जो इहांथी पमुं रे निर्धार, तो रे चेतन ताहरी गति शी हुवे जी ॥ शी चिंता जी रे शी रे चिंता एह योग, मले तस जव प्रज्ञुजी सहामुं जुवे जी ॥ ४ ॥ क्षण मांहे जी रे क्षण मांहे ततकाल, ते वल्लनीपुर वन वम आवीयो जी ॥ दोय उतरी जी रे दोय उतरी देवी सुरंग, नवल निरुपम वेष बनावीयो जी ॥ ५ ॥ दोय चाली जी रे चाली हो रमजम रात, वात करंती हो हसी हसी प्रेमनी जी ॥ तस पूठे जी रे तस पूठे पुण्यसार, चाल्यो हो ठानो अजब तनु ठवी बनी जी ॥ ६॥ लंबोदर जी रे लंबोदर शेठघार, वेदिका उपर मंमप तिहां रच्यो जी ॥ सहु मलीयां जी रे मलीयां हो साजनवृंद, नव नव रंगे हो रस सबलो मच्यो जी ॥ ७॥ तिहां कुमरी हो जी तिहां कुमरी हो सोहे रे सात, मनुं सुरलोकथी अमरी उतरी जी॥ तिहां सोहव हो जी सोहव गाये सोहलारां गीत, हर्षेशुं हेज हिये वहुलो धरी जी ॥ ७ ॥ मंमपनी हो जी मंमपनी रे पास, ते नारी जाती देखी रे दिलकुं उल्लस्युं जी ॥ तस पूठे रे पूठे दीठो तेह कुमार, निरखे हो रढ लागे मनडे तिस्यो जी ॥ ए॥ तुम्हे आवो जी रे आवो रे महारे आंगणे आज, अरज करां तुमने कर जोमीने जी ॥ हसी बोलो जी रे हसी बोलो अम साथ, वात करो कुंवर मद मोमीने जी ॥ १० ॥ वेसारी जी हो वेसारी वहु मान, शेठ करे एम कुंवरने विनति जी ॥ लंबोदर जी हो लंबोदरे तुम्ह दीध, परणो सुता माहरी रूपे रति जी ॥ ११ ॥ एम कहीने हो जी एम

कहीने शुभ चीर, वसनयुगल तेहने पहेरावीयां जी ॥ लख मूल्यने हो जी लख मूल्यने अलंकार, सोहे कुंवर सहुने मन भावीया जी ॥ १२ ॥ शुभ वेला जी हो शुभ वेला रे मंडाण, धवल मंगल गाये सुंदर गोरडी जी ॥ करमेलो हो जी करमेलो तिहां कीध, परएयो कन्या साते गुण ठेरडी जी ॥ १३ ॥ मुज ताते जी हो मुज ताते भलुं कीध, रीस करी जे मुज उपर अति घणी जी ॥ नहींतर मुज जी हो नहींतर मुज एह लाभ, होत किहांथी अचिंत्यो सुखणी जी ॥ १४ ॥ करी विवाह जी हो करी विवाह मनरंग, वधू सहित ते शेठने मंदिरे जी ॥ बहु उत्सव हो जी बहु उत्सव करे इभ्य, प्रेमशुं पधराव्या सौध उपरे जी ॥ १५ ॥ सिंहासन हो जी सिंहासन निज कंथ, रही मुख आगल उभी कामिनी जी ॥ कहो वालम हो.जी कहो वालम अम आज, सकल कला शीखी जेह स्वामीनी जी ॥ १६ ॥ सुणो भोली हो जी भोली सुणो मोरी वात, एह कला मुज मनडे नवि गमे जी ॥ यडुक्तं ॥ अत्यंतविडुषां नैव, सुखं मूर्खनृणां न हि ॥ अर्जनीयाः कलाविज्ञिः, सर्वथा मध्यमाः कलाः ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ एह पद्यनो हो जी पद्यनो अरथ विचार, करवा हो लागी कामिनी तिण समे जी ॥ १७ ॥ मन चिंते हो जी मन चिंते पुएयसार, वृक्ष रखे जाये गगने वही जी ॥ जो थाशे हो जी थाशे जी कालविलंब, तो ते देवी उभी जाशे सही जी ॥ १८ ॥ करे कुंवर हो जी दिशि अवलोक, तव गुणवंती बोली गुणसुंदरी जी ॥ शुं स्वामी हो जी देहचिंता उपन्न, जे एम जूवो ठो चिहुं दिशि फरी फरी जी ॥१९॥ कहे एमहीज हो जी एमहीज मुज मन मांहि, वात सुणी कहे ते निज स्वामीने जी ॥ हुं आवुं हो जी प्रीतमजी तुम्ह साथ, प्रेमशुं पाउधारीजे हो कामने जी ॥ २० ॥ अधभूमिए हो जी रही अबला एक पास, मनमां करे पुएयसार विचारणा जी ॥ लेइ खटिका हो जी एक लखीयो तिहां श्लोक, बारवटे करी सूधी धारणा जी ॥२१॥ यतः ॥ दोहो ॥ किहां गोवालो किहां वल्लही, किहां लंबोदर देव ॥ आव्यो वेटो विहिवसीए, गयो सत्त य परणेवि ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ भामिनीने हो जी कुमर कहे रहो दूर, देहचिंता जिम मुज सुखथी हुवे जी ॥ गुणसुंदरी हो जी उभी रही तिण ठाय, वाट तिहां वालमनी घणी जोवे जी ॥२२॥ चोथे खंडे हो जी ए बावीशमी ढाल, रामविजय कहे भवि भावे सुणो जी ॥पुएय उपरे

हो जी ए संबंध रसाल, आगल वात तणो रस ठे घणो जी ॥ २३ ॥६६५॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यसार उतावलो, आव्यो वटतरु पास ॥ कोटरमां पेठो जइ, पाम्यो चित्त उल्लास ॥ १ ॥ एहवे ते पण देवता, आवी जाग्यवशेण ॥ वड उपर उंची चमी, बेठी रंगरसेण ॥ २ ॥ देवशक्तिए ते उमीयो, वम अंबर अजिराम ॥ तुरत क्षेत्र जइ उतस्यो, पुर गोवाल वन गाम ॥ ३ ॥ एहवे शहेर जमी घणुं, तेह पुरंदर शेठ॥थये प्रजाते आवीने, विशाम्यो वम हेठ॥४॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ आज रहो रंगमहोलमें केसरीया ॥ ए देशी ॥ रयणी विहाणी रवि उगीयो ॥ हुं वारी ॥ पुहवीए थयो प्रकाश रे॥ हुं वारी लाल ॥ बोलण लाग्यां पंखीयां ॥ हुं० ॥ गयो अंधकार सवि नाश रे ॥ हुं वा० ॥ १ ॥ वटकोटरथी नीसस्यो ॥ हुं० ॥ तव पुण्यसार कुमार रे ॥ हुं० ॥ वस्त्राजरण विराजतो ॥ हुं० ॥ देवकुमर अवतार रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ सुत देखी दिल उल्लस्युं ॥ हुं० ॥ वत्स वत्स कहेतो तात रे ॥ हुं० ॥ दोमीने आवी मल्यो ॥ हुं० ॥ हरखी साते धात रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वत्स तुज विण ए यामिनी ॥ हुं० ॥ वेरिणी गइ विकराल रे ॥ हुं० ॥ सूरज परे तुने देखीने ॥ हुं० ॥ मुज मनकज उजमाल रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ वत्स आव्यो तुं वालहो ॥ हुं० ॥ फलीयां वांछित आज रे ॥ हुं० ॥ में तुज रीस करी घणी ॥ हुं० ॥ तुज शिखामण काज रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ पठी मन पस्ताणो घणु ॥ हुं० ॥ सुत विना शून्य संसार रे ॥ हुं० ॥ तुम शुद्धि लेवा नीसस्यो ॥ हुं० ॥ जमतां प्रहर गया चार रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ सुत कर जोमी विनवे ॥ हुं० ॥ सयल ए महारो वांक रे ॥ हुं० ॥ अपराधी मांहे में सही ॥ हुं० ॥ आगो वाल्यो आंक रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ गुनो खमोजी हवे माहरो ॥ हुं० ॥ सुतवत्सल तुमे संत रे ॥ हुं० ॥ पुत्र कुपुत्र जगमां हुवे ॥ हुं० ॥ मावित्र नवि विहरंत रे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ पुत्र पिता बेहु आवीया ॥ हुं० ॥ हियडे हर्ष न माय रे ॥ हुं० ॥ जननीने सुत जइ मिल्यो ॥ हुं० ॥ आव्यां आंसु जराय रे ॥ हुं० ॥ ए ॥ सुत खोले बेसारीने ॥ हुं० ॥ नेहे पेखी माय रे ॥ हुं० ॥ सुत शोजा तुम्ह पद्दवी ॥ हुं० ॥ किहां हुइ कहो समजाय रे ॥ हुं० ॥ १० ॥ मात पिता बेहु सांजले ॥ हुं० ॥ कहे

मांभी सवि वात रे ॥ हुं० ॥ विस्मय मनमां उपन्यो ॥ हुं० ॥ अहो अहो सुत अवदात रे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ भाग्य जुर्ज सुततनुं वडुं ॥ हुं० ॥ एहवी ऋद्धि विशाल रे ॥ हुं० ॥ रात मांहे आवी मली ॥ हुं० ॥ फलीयो पुण्य रसाल रे ॥ हुं० ॥ १२ ॥ कहे पुण्यसार तुम्ह शिखनी ॥ हुं० ॥ कल्पतरुनी वेल रे ॥ हुं० ॥ वांछितदायक ए हुइ ॥ हुं० ॥ मूकी में व्यसननी हेल रे ॥ हुं० ॥ १३ ॥ आजूषण लक्ष मूल्यनुं ॥ हुं० ॥ तनःहुंती उतार रे ॥ हुं० ॥ देइ यूतकारने लावीयो ॥ हुं० ॥ नृपजूषण तेणी वार रे ॥ हुं० ॥ १४ ॥ लइ नृपने ते सोंपीयुं ॥ हुं० ॥ शेठ पुरंदरे ताम रे ॥ हुं० ॥ हवे पुण्यसार समाचरे ॥ हुं० ॥ गृहीनां उत्तम काम रे ॥ हुं० ॥ १५ ॥ व्यसन निवार्यां वेगलां ॥ हुं० ॥ थयो सूधो शाहुकार रे ॥ हुं० ॥ पितर हैये हरख्या घणुं ॥ हुं० ॥ सोंप्यो सवि व्यापार रे ॥ हुं० ॥ १६ ॥ चोथे खंडे त्रेवीशमी ॥ हुं० ॥ ढाल कही नित्यमेव रे ॥ हुं० ॥ राम कहे नर ते जला ॥ हुं० ॥ वारे व्यसननी टेव रे ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ६७६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे निसुणो नारी तणो, पूंठल जे अधिकार ॥ गुणसुंदरी पाछी वली, आवी कहे विचार ॥ १ ॥ गयो मूकीने नाहलो, धूरत जिम धूतेवि ॥ खोटारे खोडुं कर्युं, चूंकी एहनी टेव ॥ २ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे ॥ ए देशी ॥ सुणी वात सहु विलखाणी रे, टोले मली श्वास जराणी ॥ फट चूंकी ए शुं कीधो रे, कंथने तें जावा दीधो ॥ १ ॥ केम कामणगारानी मूकी रे, इण वाते सवली चूकी ॥ तुं तो हती घणुं माही रे, केम गइ एम एणे वाही ॥ २ ॥ कहे बहेनम हुं तो जोली रे, में जाण्यो रंग छे चोली ॥ नवि जाशे वाहालो छवेली रे, हुं तो रही सामुं देखी ॥ ३ ॥ अहो आपणी शी गति थाशे रे, कंथ विण केम दिहा जाशे ॥ विरहातुर रोवे गाढी रे, ते नवपरिणीता लाडी ॥ ४ ॥ थयो शोर ते महोल मकारे रे, माय ताय आव्यां तिण वारे ॥ कही वात घणुं दिलगीर रे, मूकी गयो नणदल वीर ॥ ५ ॥ तेह नाखंती घणां आंसु रे, योले पुण्यसारनी सासु ॥ में गुणवंत जाणी आपी रे, परणीने

तें संतापी॥६॥ रामत रसमां रंगीलो रे,पीयुशुं मेल्यो तुम्हे मेलो ॥ तुमे कां न कह्युं कर जाली रे,कंथ जाउं उत्तर आली ॥७॥ लंबोदर देवे दीधो रे,पण लक्षण ए नहीं सीधो ॥ व्यसनी दीसे ए मागे रे, आजूपण लेइ नागे ॥ ८ ॥ कोण आगल वात ए कहीये रे,प्रनु जेम राखे तेम रहीये ॥ कहे जनक सुणो तुम्हे बेटी रे, सघली चूकी गुणपेटी ॥ ९ ॥ पण वात करंतां मीठी रे, सहिनाणी कांइ तस दीठी ॥ नाम गाम तुमे कांहीं जाणो रे, मुक आगल तेह वखाणो ॥ १० ॥ कहे गुणसुंदरी गुण जाची रे,तात वात सुणो मुक साची॥इण दीप तणे परकाशे रे,लख्युं जारवटे उल्लासे ॥ ११ ॥ परजाते वांचशुं जोइ रे, जावी होवे ते होइ ॥ लखीयो ते लेख न चूके रे, अणचिंत्यां आणी मूके ॥ १२ ॥ नवि जाये वेरिणी रात रे, डुःखणी थइ बेठी सात ॥ जुवो सुखमां शूल उपायुं रे,कह्युं आपणुं उदये आव्युं ॥ १३ ॥ प्रजातसमय थये वांची रे, कहे ते गुणसुंदरी राची ॥ गोपालयपुरथी आवी रे, परणी गयो ते फरी जावी ॥ १४ ॥ सुणो तात ए देवने योग रे, आवी मलीयो ए जोग ॥ वेष नरनो मुकने आपो रे, बहु साथ संघाते थापो ॥ १५ ॥ ते नगर जणी हुं जावुं रे, पीयुकने खोली लावुं ॥ षट् मास मांहे करुं काम रे, नहींतर मुक वह्निनुं ठाम ॥ १६ ॥ सुणी वात पिता मन जाची रे, कन्या नरवेष बनावी ॥ बोलावी सबले साथ रे, हियडे समरी जगनाथ ॥ १७ ॥ गुणसुंदर सारथवाह रे, एम नाम धराव्युं उत्साह ॥ गोपालयपुरने मार्गे रे, चाल्या हियडे धरी राग ॥ १८ ॥ केतेइक दिवसे आवी रे, उतर्या डेरा देवरावी ॥ लइ जेटणुं अति बहु माल रे, जेट्यो पुरनो जूपाल ॥ १९ ॥ राय रीज्यो दे बहु मान रे, अपावे बीडां पान ॥ जले आव्या तुमे व्यवहारी रे, दीसो छो माणस सारी ॥ २० ॥ रहो अम नगरीमां आंहीं रे, व्यापार करो उत्साही ॥ न करे तुम को तुंकार रे, तुम्ह साथे बन्यो अम प्यार ॥ २१ ॥ एक वार इहां आवेवुं रे, जे काज होये ते कहेवुं ॥ रहे ते नगरीमां रंगे रे, व्यापार करे उछरंगे ॥ २२ ॥ पुण्यसार सुणी गुणवंत रे, आव्यो मलवाने संत ॥ गुणसुंदर ने पुण्यसार रे, मलीया बिहु हर्ष अपार ॥ २३ ॥ थइ मांहोमांहे मिथाइ रे, प्रगटी पूरव पुण्याइ ॥ थासा मन मांहे हरखी रे, प्रीतम जेहवुं मुख निरखी ॥

२४ ॥ चोवीशमी चोथे खंडे रे, ढाल पूरण राग अखंडे ॥ कही रामविजय सुविचारी रे, धन्य ए गुणसुंदरी नारी ॥२५॥ सर्व गाथा ॥७१३॥ श्लोक ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ रात्रि दिवस जेलां रहे, प्रीति परस्पर जोर ॥ मुख हरखे देखी नजरे, जेणी परे चंद चकोर ॥ १ ॥ अम नयरे जले आवीया, सज्जन तमो सुजाण ॥ तुम उपर रीजे घणुं, अहो अमारा प्राण ॥ २ ॥ शाहुकार तुमे सही, नाम धरावयुं नित्य ॥ पण अम चित्त चोरी लीयुं, चोर परे तुमे मित्त ॥ ३ ॥ मित्र तुमे इहांकणे रहो, मत जाशो निज धाम ॥ फरमावो अम चाकरी, जे तुम होये काम ॥ ४ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ राजेंद्र मुने महाशा लागो ॥ ए देशी ॥ एणे अवसरे हवे सांजलो रे, रत्नसुंदरीनी वात ॥ योवन आवी अति जली ॥ योवन आवी अति जली ॥ ए तो कामरमणी साक्षात ॥ १ ॥ पिताजी हो वात सुणो मुज सार ॥ ए तो गुणसुंदर जरतार ॥ पिता० ॥ महारे अवर नहीं निर्धार ॥ पि० ॥ मह्रारुं जलुं रे कीधुं किरतार ॥ पि० ॥ मुने न गमे ए पुण्यसार ॥ पि० ॥ घणुं शुं कहुं वारंवार ॥ पि० ॥ एहनी वाइश खिजमतगार ॥ पि० ॥ मुज न फरे एह विचार ॥ पि० ॥ वा० ॥ ए आंकणी ॥ जाय सही तनया तणी रे, गुणसुंदरनी पास ॥ रत्नसार आव्यो वही ॥ र० ॥ ए तो धरी मनमां उल्लास ॥ पि० ॥ २ ॥ उठी आसन आपीयुं रे, पूछ्युं कहो मुज काज ॥ केम करुणा कीधी इहां ॥ के० ॥ अम उपर एवडी आज ॥ पिता० ॥ ३ ॥ रत्नसार कहे शेठजी रे, तुमशुं हो तनया रे मुज ॥ परणवा इछे अछे रे ॥ प० ॥ ए तो करवा वातनुं गुज ॥ पिता० ॥ ४ ॥ गुणसुंदर चित्त चिंतवे रे, खोटी हो एहनी रे आश ॥ बिहु नारी विवाहथी रे ॥ बि० ॥ ए तो केम पामे घरवास ॥ वि० ॥ ५ ॥ यत्किंचित् उत्तर देउं रे, वारुं हो एहने विमास ॥ नहीतर जे गति माहरी रे ॥ न० ॥ ए तो होशे ते गति तास ॥ वि० ॥ ६ ॥ एम चिंती कहे शेठने रे, जे तुमे कह्यो रे विचार ॥ विण पूछे मावित्रने रे ॥ वि० ॥ ए तो न होय कुल आचार ॥ वि० ॥ ७ ॥ वासी हुं देशांतरी रे, नवि जाणयुं मुज नाम ॥ तो गुणवंती नंदिनी रे ॥ तो० ॥ ए तो केम आपो छो आम ॥ वि० ॥ ८ ॥ यतः ॥ कुमाम-

वासिष्टरस्य,–शूरमोद्दानिशाविणाम ॥ त्रिगुणाधिकवर्षाणां, नैव देया सुक-न्यका ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ रत्नसार कहे तुं सही रे, पुत्रीए धार्यो चित्त ॥ अवरनुं नाम न सांजले रे ॥ अ० ॥ ए तो मानो वात ए मित्त ॥ पि० ॥ ए ॥ यतः ॥ शत्रुर्जियंधुरूपैः सा, प्रक्षिप्ता दुःखसागरे ॥ या दत्ता हृदयानिष्ट,–रमणाय कुलांगना ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ आग्रहथी तेणे मानीयुं रे, सबल जावीनो योग ॥ माला रे महापण करे रे ॥ मा० ॥ ए तो आवी मले ते योग ॥ पि० ॥ १० ॥ उत्सव कीधो अति घणो रे, रत्नसारे तेणी वार ॥ परणावी निज पुत्रिका रे ॥ प० ॥ ए तो गुणसुंदरने सार ॥ ११ ॥ सुणो जवि, नियति वमी संसार ॥ मत करजो को अहंकार ॥ सु० ॥ तमे बोलो बोल विचारी ॥ सु० ॥ इहां न चले हो कोइ उपचार ॥ सु० ॥ एहना अवर सखाइ चार ॥ सु० ॥ नि० ॥ ए आंकणी ॥ पुण्यसार ते जाणीने रे, गयो कुल-देवी पास ॥ मात जुउं ए शुं थयुं रे ॥ मा० ॥ मुज महोटी हती तुज आश ॥ सु० ॥ १२ ॥ हवे महारे नहीं जीववुं रे, शिर ठेदी दीयुं तुज ॥ बोल गयो हवे शुं रह्युं रे ॥ बो० ॥ मुने कांइ पडे नहीं सुज ॥ सु० ॥ १३ ॥ देवी कहे कां आकलो रे, तुं वत्स थाये एम ॥ रत्नसुंदरीशुं ते कहे रे ॥ रत्न० ॥ मुज चिंतित न हुउं प्रेम ॥ सु० ॥ १४ ॥ देवी कहे दीधी जिका रे, तेहमां नहीं संदेह ॥ सही ए जाव्री ताहरी रे ॥ स० ॥ म म कर मन साहस एह ॥ सु० ॥ १५ ॥ पुण्यसार कहे नवि घटे रे, संग्रहवी परनारी ॥ परणी ए गुणसुंदरे रे ॥ प० ॥ नहीं इहां कोइ विचार ॥ सु० ॥ १६ ॥ देवी कहे वली एहवुं रे, शुं समजे नहीं शान ॥ ए सही तहारी वल्लजा रे ॥ ए० ॥ मुज साख दीये एम ज्ञान ॥ सु० ॥ १७ ॥ माथे चढावीने देवीनुं रे, कहण उठ्यो उजमाल ॥ मन चिंते पुण्यसारजी रे ॥ म० ॥ मुक फलशे मनोरथ सार ॥ सु० ॥ १८ ॥ चोथे खंडे पंचवीशमी रे, ढाल सुणो एक चित्त ॥ राम कहे पीयु नारीनी रे ॥ रा० ॥ हवे परगट होशे प्रीति ॥ सु० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणसुंदरी चित्त चिंतवे, परगट न लह्यो नाथ ॥ दुःख न खमाये विरहनुं, में हवे रह्युं न जात ॥ १ ॥ पूर्णावधि खट् मासनी, संपूरण पर-पंच ॥ काष्ठचिता महोटी रची, मेल्यो सघलो संच ॥ २ ॥ पुर बाहिर

आवी तिहां गुणवंत ॥ १ ॥ सासु ससराने नमी, बे कर जोमी बाल ॥ मंदिर आवी कंतने, पाय पडे ततकाल ॥ २ ॥ मोहनगारा नाहजी, बांधी श्रम निर्धार ॥ कोण जरोंसे मूकीने, इहां आव्या आधार ॥ ३ ॥ जाणी प्रीति तुमारमी, नर कोइना नवि थाय ॥ अमे घहेली गोरमी, जे रहीये एम श्रवटाय ॥ ४ ॥ पण पीयु साथे रूपणुं, कीधे केही सिद्धि ॥ शुं डहापण तुम आगले, अमे अबला निर्बुद्धि ॥ ५ ॥ दोहा सोरठी ॥ पीयु तुम साथे मान, अमने करवुं नवि घटे ॥ पग पहेरीजे निदान, लाखेणी पण पानही ॥ ६ ॥ रत्नसुंदरी मन मांहे, चिंते इणे साचुं कह्युं ॥ पुरुष वश जग मांहि, गर्व कस्यो घेली थइ ॥ ७ ॥ महोटा बोल म बोल, कव न पडे ए कर्मनी ॥ माणस फूटा ढोल, ताणी वात करे जिके ॥ ८ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ देशी चंद्रावलानी ॥ पुण्यसार माने घणुं रे, आठे नारी पनोती ॥ प्रीतम साथे प्रेमनी रे, वात करे मुख जोती ॥ त्रू० ॥ वात करे मुख जोती रे श्यामा, हेज घणुं हैये धरती वामा ॥ दोगुंदक परे ते सुख माणे, जग्यो आथम्यो दिह न जाणे ॥ १ ॥ जी वालेसरजी रे ॥ ए आंकणी ॥ कवही रमे रंगमहोलमें रे, कवही वामी जाय ॥ कवही जलक्रीडा करे रे, जामिनीशुं मन लाय ॥ जामिनीशुं मन लाइ रे जाइ, देखो पूरवली रे कमाइ ॥ आवी ते वारे अचिंती आइ, क्षणमां दोलत डुनिया पाइ ॥ जी० ॥ २ ॥ पुरमां नामीचो थयो रे, पुण्य थकी पुण्यसार ॥ दोलतना दोरा तणो रे, वाध्यो वहु विस्तार ॥ वाध्यो वहु विस्तार कमाइ, करतां कंचन कोमि उपाइ ॥ शहेर तणी पामी शेठाइ, लीधी इज्जत वहुत जलाइ ॥ जी वा० ॥ ३ ॥ इण अवसरे जूमंडले रे, वुजवता जवि जीव ॥ जवसायरमां वूमतां रे, जेह असंदीन दीव ॥ जेह असंदीन दीवनी सरिखा, सूधी जीवाजीव परीक्षा ॥ ज्ञानसागर मुनि वनमां आवे, राजादिक सहु वांदण जावे ॥ ४ ॥ जी मुनीश्वरजी रे ॥ ए आंकणी ॥ शेठ पुरंदर आवीयो रे, साथे लेइ पुण्यसार ॥ गुरु वांदी सुणे देशना रे, आणी जाव अपार ॥ आणी जाव अपार रे प्राणी, ए संसारने खोटो जाणी ॥ कूडी काया कूडी माया, आखो आवे ए धर्म सहाया ॥ जीरे मुनी० ॥ ५ ॥ विहडे सुत तन उपन्यो रे, विहडे बंधव साचो ॥ विहडे अर्थ ए संचीयो

रे, धर्म न विहडे जाचो ॥ साची धर्म तणी ए सगाइ, इह
बहु सुखदायी ॥ मित्र जुहार समो ए कहीये, रात्रि दिवस
रहीये॥ जी वा०॥ ६ ॥ ते बेहु जेदे जाखीयो रे, श्रावक ने श्रण
परंपर हेतु ले रे, बीजो अनंतर सार ॥ बीजो अनंतर कार
अंतरमुहूरतमां शिव लहीये ॥ उत्कर्षे करे जव सात आठ, ए
आगमपाठ ॥ जी वा० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सहुको कहे रे, पण
तस मर्म ॥ आतमधर्मने आदरे रे, नवि बंधाये कर्म ॥ न
कर्म ए नामे, स्थापनाद्रव्ये सहु जग कामे ॥ जावनिक्षेपा ना
ते मुनि मारग मांहे साचो ॥ जी वा० ॥ ८ ॥ पूछे सुणी
रे, शेठ पुरंदर साचुं ॥ कहो पुण्यसारे शुं कर्युं रे, पूरव जव पु
पूरव जवनुं पुण्य प्रकाशो, कहे मुनिवर मत राखो सांसो ॥
कोइ कुलपूत, पहेले जवे हुतो गतसुत ॥ जी वा० ॥ ९ ॥ खे
संसारथी रे, चरण ग्रह्युं गुरु पासे ॥ लइ दीक्षा शिक्षा सहे रे, सं
अभ्यासे ॥ संयमपंथे सूधो चाले, पंच समिति त्रण गुप्तिने
कायगुप्ति दृढता नहीं तेहवी, मुनिमारगमां दाखी जेहवी ॥ जी
॥ १० ॥ डंश मशादि परीषहे रे, कायोत्सर्ग मकार ॥ स्थिरता न
देहनी रे, वली वली वहेलो पारे॥ पारे वली वली वहेलो जे वारे, जाखे
शिख ते वारे ॥ आवश्यक खंमन नवि कीजे, प्राण जते पण नवि मू
॥ जी वा० ॥ ११ ॥ यतः ॥ वरमग्गिम्मि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्म
मरणं ॥ मा गहिय व्वयजंगो, माजीयं खलिय सीलस्स ॥ १ ॥ पूर्वे टा
फरी फरी मारग दोहिलो रे, हाथ्यो न आवे हाथे ॥ ज्ञाता गारव
पड्यो रे, लहे दुःख कह्युं जिननाथे ॥ कह्युं साचुं जिननुं सद्दहीये, जि
लीधुं ते तिम निर्वहीये ॥ व्रत पालंतां बीक न धरीये, तो लहेजे शि
पुरमां जइये ॥ जी वा० ॥ १२ ॥ पापजीरु जय पामीयो रे, हुतो असद
पणे पासे ॥ निर्वहे त्रणे गुप्तिने रे, वेयावच्च संजासे ॥ वेयावच्च क
गुरुजीनी, धर्मे अंतर मांजी जीनी ॥ मरण लही थयो सुर सौधर्मे,
तिहांथी चवी कुल नुन थयो कर्मे ॥ जी वा० ॥ १३ ॥ प्रवचनमाता
सातने रे, पाली सुखे तिण हेते ॥ सात प्रिया परणी सुखे रे, पूरव पुण्य
संकेते ॥ पूरवे पाली एक देशे थइ, आठमी नारी लही इण

माटे परमाद निवारी, संपूरण पालो सुविचारी ॥ जी वा० ॥ १४ ॥ शेठ पुरंदर सांभली रे, मन पाम्यो वैराग्य ॥ मह्ले दीक्षा गुरुजी कने रे, आणी अनुभव राग ॥ अनुभव वात हैयामां राखी, पुण्यसार श्रावक मुनि साखी ॥ वंदी जनक मुनि घर आया, रात दिवस तेहना गुण गाया ॥ जी वा० ॥ १५ ॥ श्रावकव्रत आराधतो रे, पाले शुद्ध आचार ॥ दान सुपात्रे दे भलां रे, पुण्य करे पुण्यसार ॥ पुण्यसार करे पुण्य कमाइ, आठ रमणी साथे उत्साही ॥ अनुक्रमे पुत्रने सोंपी भार, सद्गुरु पासे थया अणगार ॥ जी वा० ॥ १६ ॥ चारित्र पाली रुयडुं रे, भाव धरी उजमाल ॥ मुक्ते गयो मुनिराजीयो रे, वंदुं हुं त्रण काल ॥ वंदु वात मुनीश्वरे भाखी, कनकशक्ति आगल हित राखी ॥ चोथे सत्यावीशमी ढाल, रामे मुनि गुण गाया रसाल ॥जी वा०॥१७॥ इति पुण्यसारसंबंधः ॥७०७॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ निसुणी श्री गुरुदेशना, कनकशक्ति नृपनंद ॥ संयम सूधुं आदरे, मनमां धरी आनंद ॥ १ ॥ विपुलमति मुनि तेहने, दे हितशिक्षा सार ॥ संयममारग दोहिलो, जेहवी खंभाधार ॥ २ ॥ निरतिचारपणे तुमो, पालेजो निर्धार ॥ व्रत लेइ पाले खरां, धन्य तेहनो अवतार ॥ ३ ॥ प्रतिनी विमलमति कने, दोय नारी लीये दिक्ख ॥ तजी संसार विराग भजी, चाले रुमी शिख ॥ ४ ॥ कनकशक्ति मुनि विचरतो, सिद्धपर्वते आय ॥ एक रात पमिमा रह्यो, शिला उपर शुभ ठाय ॥ ५ ॥ पूरव भवनो मत्सरी, हेमचूलाभिध देव ॥ करे उपसर्ग तिहां घणा, वैरभावनी टेव ॥ ६ ॥ मुनि निश्चल ध्याने रह्यो, जाणे सुरगिरि टूंक ॥ विद्याधर मली वारीयो, देव गयो मुनि मूक ॥ ७ ॥ अहसमे प्रतिमा पारीने, विचरंतो भूपीठ ॥ रत्नसंचया, आवीयो, गिरुडं सुगुण गिरिठ ॥ ८ ॥ सूरिनिपात उद्यानमां, काउस्सग्ग रहीयो सोय ॥ मुनिध्यान लीनो सबल, घातिकर्म मल धोय ॥ ९ ॥ उज्ज्वल केवल उपन्युं, कलहल जाणे दिणंद ॥ सुर नर विद्याधर मली, उत्सव करे अमंद ॥ १० ॥ वज्रायुध करी भक्ति बहु, धन्य धन्य तुम्हो मुणींद ॥ कर्मकटक जीत्युं सबल, निर्मल ज्ञान दिणंद ॥११॥ देशन सुणी घेर आवीया, वज्रायुध नरदेव ॥ अहोनिश सारे जेहनी, सहस यक्ष सेव ॥ १२ ॥

॥ ढाल अट्यावीशमी ॥

॥ गुण गिरुआ गुण गिरुआ गोडी पास हो ॥ ए देशी ॥ गुण भरीया
गुण भरीया दरियानी परे, मुनिजनने मुनिजनने बहु परिवार हो ॥ जय-
वंता जयवंता हो जिनवर आवीया जी ॥ घणुं प्यारा घणुं प्यारा सहु मन
भावीया जी ॥ १ ॥ नव कमले नव कमले कनकने पद धरे, वर अतिशय वर
अतिशय गुणभंडार हो ॥ जगवहाला जगवहाला जिणंद पधारीया
जी ॥ २ ॥ तिण नयरीए तिण नयरीए तिण उद्यानमां, तिण वेला तिण
वेल त्रिभुवन भाण हो ॥ जगनायक जगनायक आवी समोसर्या जी ॥
३ ॥ सुर मलीया सुर मलीया चार निकायना, वर डुंडुहि वर डुंडुहि गयण
घुरंत हो ॥ जगवहाला जगवहाला जिणंद पधारीया जी ॥ ४ ॥ क्षेमं-
कर क्षेमंकर जिननी वधामणी, वनपालक वनपालक दीधी निवार हो ॥
मनमोहन जगसोहन श्रीजिन आवीया जी ॥५॥ धन आपी धन आपी
बहु वनपालने, नृप चाल्यो नृप चाल्यो वंदन काज हो ॥ मनमोहन जगसोह-
न श्रीजिन आवीया जी ॥ ६ ॥ प्रदक्षिणा प्रदक्षिणा त्रण देइ करी, पर-
मेश्वर परमेश्वरने परणाम हो ॥ कर जोडी कर जोडी एम स्तवना करे
जी ॥७॥ त्रिगुणातम त्रिगुणातम त्रिगुण व्यतीत छो, त्रिभुवनना त्रिभुवनना
नायक त्रिहु काल हो ॥ त्रिकरणशुं त्रिकरणशुं हो मैं हियमें धर्या जी ॥८॥
आज पावन आज पावन थइ मुज देहडी, भले भेट्या भले भेट्या श्रीजिन-
चंद हो ॥ मुज दोहग मुज दोहग सवि नासी गयां जी ॥ ९ ॥ आज
जाणुं आज जाणुं फल्यो मुज आंगणे, सुरपादप सुरपादप तुज दीदार
हो ॥ शुभ योगे शुभ योगे हो तुं प्रभु भेटीयो जी ॥ १० ॥ स्तवी जिनने
स्तवी जिनने हो बेठा आगले, वज्रायुध वज्रायुधजी कर जोडी हो ॥ प्रभु
भाखे प्रभु भाखे हो सुललित देशना जी ॥ ११ ॥ भवकूपे भवकूपे हो मोहकूपे
पड्यो, नवि जाणे नवि जाणे विषयनो पाश हो ॥ घणुं राता घणुं राता
हो मोहमां प्राणीया जी ॥ १२ ॥ अवसंवे अवसंवे हो विषयशिला जिस्या,
भवजलमां भवजलमां बूडतां जीव हो ॥ धर्मबाहण धर्मबाहण दूर छवे-
खीने जी ॥ १३ ॥ शुं कहीये शुं कहीये हो रूप केइ नड्या, सुर किन्नर
सुर किन्नर नरवर फांदि हो ॥ जग मोहनो जग मोहनो हो जाणे सबल
फलो जी ॥ १४ ॥ फला तेरे फला तेरे हो धर्मना फावीया, तेहनां ए

तेहमां ए अतिहि अवल्ल हो ॥ मोह राजा मोह राजा ए रागरूपे रह्यो जी ॥ १५ ॥ कह्यो पहेलो कह्यो पहेलो हो आलस नामथी, मोह बीजे मोह बीजे हो त्रीजे अवर्ण हो ॥ दंज चोथो दंज चोथो हो क्रोध ए पांचमो जी ॥ १६ ॥ ठांमीजे ठांमीजे प्रमाद उठो सही, वली सत्तम वली सत्तम कृपणनो जाव हो ॥ जय अष्टम जय अष्टम शोक नवम कह्यो जी ॥ १७ ॥ वली दशमुं वली दशमुं अज्ञानपणुं कह्युं, अग्यारमो अग्यारमो कह्यो व्याक्षेप हो ॥ द्वादशमो द्वादशमो कुतूहल वारीये जी ॥ १८ ॥ सहुथी ए सहुथी ए वलीयो कह्यो तेरमो, विषयानो विषयानो सघले चांक हो ॥ कामजोगे कामजोगे ए दोय शबद जजे जी ॥ १९ ॥ यदुक्तमागमे ॥ जीवाणं जंते कामी जोगी गो० जीवा कामीवि जोगीवि से केणठाणं जंते एवं वुचइ जीवा कामीवि जोगीवि सोतिंदिय चरिकंदियाइ पडुच्चकामी जिप्निंदिय घाणिंदिय फासिंदियाइ पडुच्च जोगी नेरइयाणं जंते कामी जोगी गो० नेरइया कामीवि जोगीवि एवं असुरकुमाराणं जीव थणयकुमाराणं पुढवीकाइयाणं जंते कामी जोगी गो० नोकामी जोगी नेरइया एवं जाव तेइंदियाणं चउरिंदियाणं कामीवि जोगीवि एवं जीव वेमाणियाणं इत्यादि ॥ पूर्व ढाल ॥ कही देशन कही देशन क्षेमंकर विजुजी, विषयाने विषयाने निवारो दूर हो ॥ तो शिवसुख तो शिवसुख पामी शाश्वतां जी ॥ २० ॥ प्रजुजीए प्रजुजीए प्रकाशी देशना, अक्वीशमी अक्वीशमी चोथे खंम हो ॥ ढाल निसुणी ढाल निसुणी हो हृदयमां राखजो जी ॥ २१ ॥ ७३० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर पूढे तिहां, सहस्रायुध नृपनंद ॥ कर जोमी चरणे नमी, जाखे नयनानंद ॥ १ ॥ जगवन् ताते केम लही, पूर्व अपर जववात ॥ वायुवेगादि खेचर तणी, ते जाखो अवदात ॥ २ ॥

॥ ढाल ठंगणत्रीशमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो आवशे ॥ ए देशी ॥ कहे एम क्षेमंकर जगधणी, सांजल सहस्रायुध जूप ॥ सुगुण प्राणी जी ॥ ज्ञानरयण जगमां वडुं ॥ तुऊ ताते हो अवधिज्ञानथी, जाण्युं ए जवनुं स्वरूप ॥ १ ॥ सुगु० ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ प्रजु कहो केना जेद छे तेहना, करी करुणा जगदाधार ॥ जिणंद राय जी, बलिहारी प्रजुनामनी ॥ कहे जेद

अठे पंच एहना, मति श्रुत ने अवधि मन धार ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ तिम मनःपर्यव चोथुं सही, पंचम केवल निःकलंक ॥ सु० ॥ दोय भेदे परोक्ष ए जाणीये, प्रत्यक्ष त्रिहुं भेदे निःशंक ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ दोय विकल्प एक संकल्पथी, प्रत्यक्ष मांहे विहुं भेद ॥ सु० ॥ भेद अहावीश प्रथमना, श्रुत चउदस जाणो अखेद ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ षट् भेद अवधि मन आणीये, मनःपर्यव दोय विकल्प ॥ सु० ॥ क्षायिक ज्ञान ते पांचमुं, तेहमां नहीं कोय संकल्प ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ एम भेद एकावन ज्ञानना, मतिना तेहमां बहु होय ॥ सु० ॥ मतिपर्याय घणा अठे, बुद्धि स्मृति प्रज्ञा जोय ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ मति कहीये हो भावी कालनी, बुद्धि संप्रति कालनी जाण ॥ सु० ॥ स्मृति लहीये काल अतीतनी, प्रज्ञा त्रिहुं काल वखाण ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ वली ए चिहुं भेदे जाणीये, औत्पातिकी पहेली बुद्धि ॥ सु० ॥ वैनयिकी बीजी वली, कार्मणकी त्रीजी विशुद्ध ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ चोथी कही पारिणामिकी, बुद्धि ए चिहुं भेद विचार ॥ सु० ॥ अणदीठुं अणसांजल्युं, उपजे ते पहेली सार ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ९ ॥ ए उपर रोहा तणो, प्रभु प्रकाशे संबंध ॥ सु० ॥ निसुणे सघली ए पर्षदा, मति उपर ए प्रबंध ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ अथ रोहकसंबंधः ॥ नयरी अवंती मांहे वसे, अरिकेशरी नामे नरेश ॥ सु० ॥ ते नयरीनी समीप ठे, एक महोटी शिला सुविशेष ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ तास समीपे हो नट तणुं, एक गाम अठे ऋद्धिवंत ॥ सु० ॥ नट रंगशूर वसे तिहां, सवल गुणी कलावंत ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ तस घर पुत्र सोहामणो, रोहक नामे एक बाल ॥ सु० ॥ लघुवयमां माता मुइ, मन उपन्युं डुःख असराल ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ रुक्मिणी नामे बीजी वरी, तस जनके हो तरुणी सार ॥ सु० ॥ यौवन मद उन्मत्त हुइ, न गणे रोहकने लगार ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ शोक्य अने वली शोक्यनां, जग मांहि कुनाहलां होय ॥ सु० ॥ बालपणे माता मरे, जग ए सम डुःख न कोय ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ रोहक चिंते हो माहरी, जो माय मुइ इण गार ॥ सु० ॥ ए रुक्मिणी गणती नथी, मुज मानवी मात्र लगार ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १६ ॥ रोहक कोप्यो एम कहे, न करे तुं मुज संजाल ॥ सु० ॥ पण आगल हुं नहीं, जोजे हवे रुठे निहाल ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १७ ॥ सा नटकी बोली हां, अरे शुं शिशु तुजथी थाय ॥ सु० ॥ तुज रूठे तूठे किस्युं, तुज

इज नर दीठ के ॥ र० ॥ १७ ॥ रंगशूर मन चिंतवे जी, हा हा बालक बुद्धि ॥ विण वांके विनता तजी जी, सबल थयो निर्बुद्धि के ॥ र० ॥ १८ ॥ रोष शम्यो मन मांहिलो जी, थयो रमणी अनुकूल ॥ चूक्यो सबल अजाणते जी, में कीधुं प्रतिकूल के ॥ र० ॥ १९ ॥ गुणमां जांग्यां रूपणां जी, जामिनी ने जरतार ॥ सुख विलसे संसारनां जी, सफल गणे अवतार के ॥ र० ॥ २० ॥ रुक्मिणी रहे कर जोमीने जी, जक्ति करे जरपूर ॥ तुं वत्स मारे वालहो जी, तुज अलावला रहो दूर के ॥ र० ॥ २१ ॥ पण न करे वेसासमो जी, माय तणी जे शोक्य ॥ जो धीरुं हुं पहने जी, तो फल पामुं रोक के ॥ र० ॥ २२ ॥ जोजन करवाने समे जी, वेसे जनकनी साथ ॥ पण मरती ते अहोनिशे जी, राखे सुतने हाथ के ॥ र० ॥२३॥ चोथे खंडे त्रीशमी जी, ढाल कही मन रंग ॥ हवे श्रोता निसुणो तुम्हे जी, आगल बहु उछरंग के ॥ र० ॥ २४ ॥ ८८२ ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोहक साथे एकदा, रंगशूर निज काम ॥ गयो उज्जेणी नयरीए, जोवा सरिखुं गाम ॥ १ ॥ चोराशी चहुटां जलां, दीपे अति मंडाण ॥ देवजुवन रलीयामणां, निरखे तेह सुजाण ॥ २ ॥ क्षिप्रातट वेसारीने, रोहकने रंगशूर ॥ काज निमित्ते नयरमां, पहोता आनंदपूर ॥ ३ ॥ बुद्धिमंत रोहो तदा, नगरी तणुं सरूप ॥ आलेखे निज अकलथी, क्षिप्रातटे अनूप ॥ ४ ॥ तस पोले थइ पोलीयो, ऊनो रहीयो आप ॥ रेणुमयी नगरी जोइ, मनमां नहीं संताप ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ आख्याननी देशी ॥ तिण अवसर नयरीनो नरपति, आव्यो अल्प परिवारे ॥ अश्व उपर चढीयो असवेसर, जोतो ख्याल ते वारे ॥ १ ॥ नयरी अवंती जिहां आलेखी, तिहां दोमीने आवे ॥ तव रोहो आवीने आमो, नरपतिने समजावे ॥ २ ॥ हा हा किहां जाय ठे धणीयो, कां नगरीने जांजे ॥ वाल तुरंगम वहेलो पाछो, गइ फरं तुं लाजे ॥ ३ ॥ चित्त चमक्यो नरपति इम बोले, वाग तुरंगम केरी ॥ जो साचे तो निरखी जोउं, नयरी उज्जेणी नेरी ॥ ४ ॥ ते कहे हुं नहीं ताहरो चाकर, जा चालो इण वाटे ॥ पनुं जे मारुने जगमां, ते मीगाइमाटे ॥ ५ ॥

खुशी थइ नृपति एम पूछे, अहो केहनो ए जायो ॥ सेवक कहे रंगशूर नटावो, तस सुत रोहक गायो ॥ ६ ॥ बाले वेशे बहु बुद्धिमंतो, सकल कलानो ज्ञाता ॥ वात सुणी नरपति मन मांहे, पाम्यो सवली शाता ॥ ७ ॥ घेर आवी नरपति एम चिंते, बुद्धिपरीक्षा कीजे ॥ जो मन माने तो रोहकने, मंत्रीश्वरपद दीजे ॥ ८ ॥ कहेवाव्युं एक नर संघाते, तिण गामे राजाए ॥ बहु द्रव्ये तुम एक द्रव्य केरो, करो प्रासाद उत्साहे ॥ ९ ॥ गामलोक मलीयां सहु भेलां, वात विचार ए उंडो ॥ जो नवि कहेवा-मीशुं उत्तर, मानशे नृपति भूंडो ॥ १० ॥ पण कोइने मति एह न सूजे, चिंतातुर थइ रहीयां ॥ रोतो रोहक कहे जनकने, भूख न जाये सही आ ॥ ११ ॥ कहे रंगशूर पकल वत्स इमणां, विषमो नृप आदेश ॥ आव्यो छे तस चिंता महोटी, कहे रोहक कहो लेश ॥ १२ ॥ वात कही सहु ए तव बोल्यो, एह मांहे शुं गूढ ॥ उगो जाउं भोजन काजे, वेग शुं दिग्मूढ ॥ १३ ॥ पछे कहीश हुं उत्तर एहनो, सहु भोजन करी आव्या ॥ रोहा पासे तिणे नृपनरने, सहु साखे समजाव्या ॥ १४ ॥ जा कहेजे तुझ नरपति आगल, महोटी शिला इहां एक ॥ तेणे नृपयोग्य मंदिर निपजशे, द्रव्य मूको सुविवेक ॥ १५ ॥ सुणी हरख्यां सहुए नृप आगल, जइ तिण सेवक भाख्यो ॥ कहे राजेश्वर एह प्रत्युत्तर, तुजने केणे आख्यो ॥ १६ ॥ दीधो उत्तर बालक रोहे, वात सुणी नृप हरख्यो ॥ जेहवो दीठो तेहवोहीज में, इण वाते ए परख्यो ॥ १७ ॥ एक दिवस नृप एक बस्तने, मेहलीने संभलावे ॥ साचवजो ए चारे ने पाणी, मत मत्त दुर्बल थावे ॥ १८ ॥ रोहकने वली पूछे सघला, कहे वृक पास ए बांधो ॥ अधिक नजीके न जाणे दूरे, जतन करी ए साधो ॥ १९ ॥ ते आदेश प्रमाण कस्याथी, राय घणुं रीजाणो ॥ एक दिन एक कुर्कुटने मूकी, कहे नृपति सपराणो ॥ २० ॥ एकला एहने युद्ध करावो, कहे रोहक सहु पहेलो ॥ एहना मुख आगल आणीने, मूको दर्पण वहेलो ॥ २१ ॥ तेम कीधुं प्रतिबिंबने निरखी, कुर्कुट जूजण लागो ॥ नृप आदेश प्रमाण कस्यो इम, सहुनो संशय भांग्यो ॥ २२ ॥ तदनंतर तिल शकट भरीने, मोकलीयुं नृप गामे ॥ जिण माने तिल तेहीज माने, तेल देवुं अम कामे ॥ २३ ॥ कहे रोहक आरीसा पूछे, तिल लीजे ए तोली ॥ सम

आगीमे तेल समर्प्यो, मांसली सहुए तोली ॥ २४ ॥ ते निम [illegible]
कारिज सीधुं, राय तणुं दिल उल्लस्युं ॥ वली मगावे वाट वेलुनी [illegible]
बंधन करजुं ॥ २५ ॥ रोहे कहाव्युं राजनुं कारिज, करवुं अमे शि[illegible]
पण प्रमाण जोवा एक जीरण, मोकलो कटको कोर ॥ २६ [illegible]
प्रत्युत्तर दीधो पुनरपि, जीरण गज मोकलीयो ॥ कहेवाव्युं थ[illegible]
वजो, ए हाथी कुशलीयो ॥ २७ ॥ एहनी हकीगत मुक[illegible]
पण मुओ नवि कहेवो ॥ पालनां मुओ नव चिंते, लोक गो उ[illegible]
॥ २८ ॥ रोहे कहाव्युं ए तुम हस्ती, न लीये जल ने चारो ॥ [illegible]
जोवे नृप कहे शुं मुओ, जन कहे तुम [illegible] ॥ २९ ॥ नृप क[illegible]
मोकलजो, ग्राम तणो एक मीठो ॥ रोहो कहे [illegible]
मारग नवि दीठो ॥ ३० ॥ नृप कह्युं [illegible]
[illegible]

॥ दुहा ॥

॥ बुद्धिवंत जाणी तथा नृप [illegible]
आवजे, सहु का पुण [illegible]
॥ धान चढी नवि आवजे [illegible]
आवजे, नव शिर [illegible]
एक न होय ॥ ३ ॥ नवि [illegible]
तुं बुद्धिवंती थजे, एम मुक आवी [illegible]
कृतव धरतो थाय ॥ नाही चंदन [illegible]
दक्षे दिन चालणी, शिर परि [illegible]
धरी टटरंग ॥ ६ ॥ नृपवरंद ने आवीने कर नूरने प[illegible]
मूक्युं आगडे, माटीमय अतिराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौवीशमी ॥

॥ जालम कारिज करने जी ॥ ए देशी ॥ नृप पुत्र रो[illegible]
शुं मूक्युं रे एह ॥ ते कहे जगनां नायक जी ए माटी[illegible]
सुणो नर बुद्धि तणां ए काम, बुद्धि तग माने घणुं जी,

दाम ॥ सुणो० ॥ ए आंकणी ॥ स्वागत पूछी नृप घणुं जी, दीधुं बहु सन्मान ॥ पर्षद मांहे प्रशंसीयो जी, सबलो बुद्धिनिदान ॥ सु० ॥ २ ॥ बहुरत्ना वसुधा कही जी, तेहमां नहीं संदेह ॥ नीतिशास्त्रमां एहवुं जी, वचन कह्युं धरी नेह ॥ सु० ॥ ३ ॥ यतः ॥ दाने तपसि शौर्ये च, विज्ञाने विनये नये ॥ विस्मयो नैव कर्त्तव्यो, बहुरत्ना वसुंधरा ॥ १ ॥ वाजिवारणलोहानां, काष्ठपाषाणवाससाम् ॥ नारीपुरुषतोयाना,–मंतरं महदंतरम् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ अंगरक्षक करी थापीयो जी, रोहाने तिण रात ॥ नृप कपटे सूतो तदा जी, ते सूतो साक्षात ॥ सु० ॥ ४ ॥ पहेले पहोरे जगाडीयो जी, रोहा ऊंघे रे केम ॥ चिंतुं हुं कहो कुण करे जी, बकरी लींडी एम ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ कहे रोहा मुज आगले जी, जो जाणी होय वात ॥ कहे राजन इम जाणीये जी, पहने कोठे वात ॥ सु० ॥ ॥ ६ ॥ बीजे पीपलपाननो जी, आदि अंत गुरुजाव ॥ नृप पूछे निर्णय कर्यो जी, ए बेहु सरखे जाव ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिमहीज त्रीजा याममां जी, खिल्लहनी संदेह ॥ श्वेत श्याम तनु पुछनो जी, सम पण कहे गुणगेह ॥ सु० ॥ ८ ॥ चोथे प्रहरे कंटके जी, विंध्यो बोले रे ताम ॥ पूछुं कहो मुज केटला जी, जनक तुम्हारा स्वामी ॥ सु० ॥ ९ ॥ रे पापी शुं बोलीयो जी, केता जनक हवंत ॥ सत्य कहुं हुं ताहरे जी, पंच जनक छे संत ॥ सु० ॥ १० ॥ ते केहा कहे राजवी जी, धनद रजक अलि होय ॥ कहुं हुं मातंग पांचमो जी, एहमां जूठ न कोय ॥ सु० ॥ ११ ॥ कहे नृप तें केम जाणीया जी, तुज गुणथी राजिंद ॥ ते गुण केहा तव कहे जी, रोहो धरी आनंद ॥ सु० ॥ १२ ॥ परजा पाले नृप सही जी, धनद घणे धनदान ॥ रजक रुष्ट धनने हरे जी, कंटक अलिनुं निदान ॥ सु० ॥ १३ ॥ गाढ कोप करवा थकी जी, कहुं चंमाल नरेश ॥ निश्चय करवा मायने जी, आवी पूछे महीश ॥ सु० ॥ १४ ॥ माय कहे नाला पछी जी, सम कासे दोष दीठ ॥ रजक अलि सुणी समजीयो जी, ए बुद्धिमंत गरिष्ठ ॥ सु० ॥ १५ ॥ राये सन्मान्यो घणुं जी, शत मंत्री मांहे मुख्य ॥ तेहने कीधो बुद्धिथी जी, पाम्यो इण परे सुख ॥ सु० ॥ १६ ॥ बुद्धि पहेली उपर कह्यो जी, रोहकनो दृष्टांत ॥ चोथे खंडे षष्ठीशमी जी, ढाल सुणो सहु संत ॥ सु० ॥ १७ ॥ ७४२ ॥ सर्व गाथा ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजी वैनयिकी कही, गुरुविनये जे हुंत ॥ थोडी पण दीसे घणी, गुरु उपकार महंत ॥ १ ॥ यतः ॥ शुचिर्भूपय० ॥ विनय वडुं कारण कह्युं, विद्याने अधिकार ॥ शोभे विनय थकी जएयुं, शास्त्र मांहे ए सार ॥ २ ॥ यतः ॥ पुस्तकं प्रत्ययाधीतं, नाधीतं गुरुसन्निधौ ॥ सत्रामध्ये न शोभंते, जारगर्भा इव स्त्रियः ॥ १ ॥ यडुक्तमागमे ॥ विणयार्ड नाणं हि, नाणार्ड दंसणं दंसणार्ड चरणं॥चरणेहिंतो मोस्को,मोस्के सुस्कं अणाबाहं॥२॥ करिणीपद गायक तणा, ठात्र तणो उपदेश ॥ ए बुद्धि उपर जाणजो, शास्त्र थकी सुविशेष ॥ ३ ॥ घट चित्रादि क्रिया जली, शिल्पी तणुं विज्ञाण॥ कर्म थकी जे उपजे, सा कार्मिकी वखाण ॥ ४ ॥ सर्ववस्तुकृत निश्चया, जे परिणाम वशेण ॥ बुद्धि होय पारिणामिकी, वयरस्वामी परे जेण ॥ ५ ॥ सघली बुद्धि उपर कह्या, आगमर्मा संबंध ॥ ग्रंथ तणुं गौरव हुवे, न कह्या तस परबंध ॥ ६ ॥ मति आव्ये सहचारीयुं, प्रगटे श्रुत घट मांहि ॥ वस्तु त्रैकालिक जे जणे, वेदीजे जग मांहि ॥ ७ ॥ काल असंख्य तणा लहे, अतीत अनागत जाव ॥ अवधि सहित चिहुं दिशि हुवे, अवधिनाण सन्नाव ॥ ८ ॥ जाव मनोगत जाणीये, संज्ञी तणा अशेष ॥ जिने मनःपर्यव ते कह्युं, चोथुं ज्ञानविशेष ॥ ९ ॥ जासक लोकालोकनुं, निरावरण निरुपाधि ॥ प्रगटे केवल पांचमुं, विलसे सहज समाधि ॥ १० ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ क्षेमंकर जिनजी कहे, सुण सहस्रायुध सार रे ॥ ज्ञान अवधियी रे जाणीया, वज्रायुधे अवतार रे ॥ तहत्ति करी तेणी वार रे, चरण नमे सुखकार रे, वज्रायुध हितकार रे, जवजल पार उतार रे ॥ १ ॥ सहज सुंहालो रे राजवी ॥ ए आंकणी ॥ प्रनु वांदी घरे आवीयो, वज्रायुध नरराय रे ॥ पट्ट गंधकेरो रे राजीयो, ठवे सुतने निज ठाय रे ॥ सहस्रायुध सुखदाय रे, पोते थयो निर्माय रे, समता साथे सहाय रे, संयम लेवा उत्साह रे ॥ सहज० ॥ २ ॥ चार सहस राणी जली, राजन चार हजार रे ॥ साथे भूप रे नीसस्या, धन्य तेहना अवतार रे ॥ तव ए जाख्यो अमार रे, सातसें पुत्र परिवार रे,

आव्या वनह मझार रे, देव करे जयकार रे ॥ स० ॥ ३ ॥ प्रभुचरणे कर जोमीने, कहे वज्रायुध नृप रे ॥ तारो त्रिभुवन तात जी, तहारुं अकल स्वरूप रे ॥ पमीया जवजलकूप रे, तुं अवलंबनरूप रे ॥ केवलज्ञान अनूप रे, टाल्यो मोह विरूप रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ले दीक्षा प्रभुजी कने, वज्रायुध नरदेव रे ॥ राज्य तजी समता जजी, थया ततक्षण धर्मदेव रे ॥ सारे सुर नर सेव रे, नवि राखे अहमेव रे, साची जेहनी टेव रे, अहोनीश चरणनी हेव रे ॥ स० ॥ ५ ॥ शम दमवंता रे साधु जी, विचरे मही ततकाल रे ॥ उग्र विहारने आदरी, पाले मुनि उजमाल रे ॥ षट्कायना प्रतिपाल रे, विषय थकी मन वाल रे, मदने मीण ज्युं गाल रे, वयण न नाखे आल रे ॥ स० ॥ ६ ॥ एक दिन मुनिवर आवीया, वज्रायुध ऋषिराय रे ॥ सिद्धगिरिनी हो उपरे, रहीया काउस्सग्ग ठाय रे ॥ वज्र परे दृढकाय रे, टाल्या दुरित अपाय रे, एकाकी असहाय रे, ध्यान धर्म चित्त लाय रे ॥ स० ॥ ७ ॥ एक वरस पमिमा तणो, अजिग्रह मन मांहे धार रे ॥ मेरुशिखर जेम स्थिर रह्या, वज्र मुनि गुणधार रे ॥ सूधा श्रीअणगार रे, वंडुं हुं वारो वार रे, धन्य तेहनो जमवार रे, गुणमणिरयण भंमार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ एहवे हयग्रीव सुत हुंता, मणिकुंज मणिध्वज नाम रे ॥ बहु जव जमता रे ते हुवा, सुर अनुपम तनु धाम रे ॥ तिण दीठो मुनि ताम रे, रह्यो निश्चल एक ठाम रे, जाग्युं वेर निकाम रे, करे उपसर्ग उद्दाम रे ॥ स० ॥ ए ॥ तीखी दाढे फामता, मुख जीषण विकराल रे ॥ एक सिंह हुओ रे वाघज्रो, थइ आव्या ततकाल रे ॥ पमीया मुनिने स्याल रे, दंते उखेडे खाल रे, मुनि चिंते उजमाल रे, रखे जीव थाये सुकुमाल रे ॥ ॥ स० ॥ १० ॥ मुनिवर धारा हो ध्याननी, तिम तिम वाधे रे जोर रे ॥ हाथी थइ वली आवीया, साथे निहु करे शोर रे ॥ गुंदे दंतनी कोर रे, जीव तुं थाजे कठोर रे, दुःख सह्यां नरके घोर रे, कीधां कर्म ए दोर रे ॥ स० ॥ ११ ॥ थया वली सापने सापिणी, फण मांमी फुफूआम रे ॥ आवी समीपे हो साधुने, पग वींटे जिम जाम रे ॥ करु कम भांजे हो हाम रे, मुनि रह्या ध्यानशुं मांम रे, नाखे कर्म उपाम रे, पूरे मनहरुहाम रे ॥ स० ॥ १२ ॥ धन्य वज्रायुध साधु जी, नहीं मन रागनो अंश रे ॥ दूर कर्यो तिम क्रोधने, दीपायो निज वंश रे ॥ सकल मुनि अव-

तंस रे, गुण उज्ज्वल जिम हंस रे, नहीं प्रमादनो अंश रे, करे सहु जग प्रशंस रे ॥ स० ॥ १३ ॥ राक्षस ने वली राक्षसी, रूप करी अति चंग रे ॥ पासे आवी हो साधुने, बीवरावे परचंड रे ॥ रोष चड्या दोय संढ रे, साधु चिंते घमंड रे, निमित्त मल्युं उदंड रे, कर्म कयुं शत खंड रे ॥ स० ॥ १४ ॥ एहवे आवी तिलोत्तमा, रंजा दोय रसाल रे ॥ इंद्र तणी रे इंद्राणीउं, रूपे काकजमाल रे ॥ वज्रायुध मुनि नाल रे, कर जोमी निज नाल रे, वंदन काज विशाल रे, आवी ते ततकाल रे ॥ स० ॥ १५ ॥ बीहीना देवी रे देखीने, नासण लाग्या रे ताम रे ॥ तरजणा देवीए अति घणा, कां रे दुष्ट अठाम रे ॥ कीधुं तुमे कांइ काम रे, खोइ निज नव माग रे, जाशो दुर्गति ठाम रे, देवां जाउं तुम नाम रे ॥ स० ॥ १६ ॥ पांडी मुनिवर पाउला, उनी जोमीने हाथ रे ॥ जय वज्रायुध मुनीश्वरा, रामना नारी नाथ रे ॥ क्रोध कस्यो जिण मात रे, साचा शिवपुर साथ रे, मद कीधो तुमे हाथ रे, तरीया जवजल पाथ रे ॥ स० ॥ १७ ॥ मुनिगुण गाये रे गानिनी, नाटक करे बहु रंग रे, वीणा वंश ने वांसली, वाये बहु उत्तरंग रे ॥ वालीने निज अंग रे, मुनि मुख जोती सुचंग रे, वज्रायुधजी निःसंग रे, रहीया ध्यान अनंग रे ॥ स० ॥ १८ ॥ मुनि स्तवना करी वंदीने, समकित निर्मल कीध रे ॥ ते देवी निज स्थानके, पहोती कारज सिद्ध रे ॥ वज्रायुध सुप्रसिद्ध रे, त्रिहु जगने यश लीध रे, अनुजवरस बहु पीध रे, दान अजय जग दीध रे ॥ स० ॥ १९ ॥ एक वरस पमिमा रही, पारी विचरे मुनीश रे ॥ श्रीवज्रायुध साधु जी, नहीं केहने मन रीस रे ॥ दिन दिन चडती जगीश रे, सेवे सुर नर ईश रे, साधु तणा अडोनिश रे, गुण धारे मनधीश रे ॥ स० ॥ २० ॥ नोमे खंडे ते बीशमी, ढाल कही अनिराम रे ॥ धन्य मुनि जे एहवा, तेहनां लीजे नाम रे ॥ निन्य उठी लीजे नाम रे, करो प्रजाते प्रणाम रे, शांति प्रजु गुणगान रे, इम कहे मुनि राम रे ॥ स० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ... श्लोक ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री क्षेमंकर जिनवरु, श्रम योगनी सेव ॥ पुरव पाली आउखुं, सिद्ध थया गुरुदेव ॥ १ ॥ सिद्ध बुद्ध परमातमा, पारंगत पगठि ॥ परमज्योति पावन पुरुष, प्रजु प्रणमुं ते उठ ॥ २ ॥ चिदानंद चेतनघणी,

एम अनेक जस नाम ॥ प्रह उठी नित्य समरतां, सीझे वांछित काम ॥ ३ ॥ विहिताश्रव नामे भला, ते प्रभुना गणधार ॥ एक दिन आवी समोसस्या, चरण करण गुणधार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

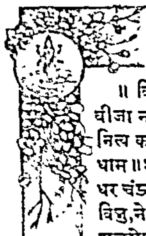
॥ आज हुं तो अलजड रे वहेनी ॥ ए देशी ॥ श्रीसहस्रायुध रे स्वामी, तुम्हने अरज करुं शिर नामी ॥ श्री स० ॥ ए आंकणी ॥ वनपालक उजाणो आवी, दीधी हर्षे वधामणी लावी ॥ श्री स० ॥ १ ॥ आज मुज वनमां रे आव्या, श्रीविहिताश्रव गणधर जाव्या ॥ श्री० ॥ २ ॥ उपशम रसना रे दरिया, मुनि षट् काय तणा पीयरीया ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जोतां मुज मन रे वसीया, सांजली भूरमणीना रसीया ॥ श्री० ॥ ४ ॥ राज्य सहु छे रे सारुं, पण ए मुनिनुं दरिसण प्यारुं ॥ श्री० ॥ ५ ॥ वात सुणी सहस्रायुध राया, करवा निर्मल आपणी काया ॥ श्री० ॥ ६ ॥ बहु जन साथे रे आया, वांदण श्री गणधरना पाया ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तीन प्रदक्षिण रे देवे, वांदी बेसे मुनिपद सेवे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ कहे गणधर गुण धरीये अंगे, परहरीये परमाद असंगे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पंच ने आठनी संख्याए कहीये, क्षेमंकर जिनवाणी सद्दहीये ॥ श्री० ॥ १० ॥ एहने सेव्ये बहु थया दुःखीया, जिणे ए मूक्या ते सहु सुखीया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ यतः ॥ प्राणीनामंतरस्थायी, न हालस्य समो रिपुः ॥ नास्त्युद्यमसमं मित्रं, यं कृत्वा नावसीदति ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ रहे अनादिनो विषयनी वगमां, तेहनुं कारण कामिनी जगमां ॥ श्री० ॥ १२ ॥ यदुक्तं ॥ स्मितेन भावेन च लज्जया भिया, पराङ्मुखैरर्धकटाक्षवीक्षितैः ॥ वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया, समस्तभावैः खलु बंधनं स्त्रियः ॥ २ ॥ सत्यं जना वच्म न पक्षपाता,-ल्लोकेषु सर्वेष्वपि तथ्यमेतत् ॥ नान्यन्मनोहारि नितंबिनीभ्यो, दुःखैकहेतुर्न च कश्चिदन्यः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ इण परे निसुणी गणधरवाणी, सहस्रायुध कहे जोडी पाणी ॥ श्री० ॥ १३ ॥ तुं मुज तारक रे मलीयो, आजथी मदारो दारिद्र्य पलीयो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ प्रभु मुजने दीक्षा दीजे हवे वेगो, राज्य भाहरो पुत्रनो देगो ॥ श्री० ॥ १५ ॥ अनुक्रमे तात साधुने मलीया, मनना सघला मनोरथ फलीया ॥ श्री०

॥ १६ ॥ शतबल सुतने राज्य भलावी, ले सहस्रायुध संयम भावी ॥ श्री० ॥ १७ ॥ थइ गीतारथ विचरे वसुधा, मुखथी बोले वाणी न मुधा ॥ श्री० ॥ १८ ॥ श्रीवज्रायुध साथे विचरे, संवेगरंगमां हैयकुं पसरे ॥ श्री० ॥ १९ ॥ करता विविध तपस्या सारी, प्रतिबोधंता बहु नर नारी ॥ ॥ श्री० ॥ २० ॥ आव्या नगर ईषत्प्राग्भार, मुनिवर करता दोय विहार॥ श्री० ॥ २१ ॥ चोथे खंडे चोत्रीशमी ढाले, राम कहे धन्य जे एम पाले ॥ श्री० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १००० ॥ श्लोक तथा गाथा मलीने ॥ ४२ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ धन्य धन्य ए मुनिवर वडभागी ॥ श्रीवज्रायुध ने सहस्रायुध, शुद्ध किरिया गुणरागी ॥ ध० ॥ १ ॥ चोराशी लख योनि खमावी, सुमति दशा मति जागी ॥ दुष्कृत पाप आलोइ सघलां, चउशरणां करे त्यागी ॥ ध० ॥ २ ॥ अणसण पादपोपगम आराधे, मुनिवर दोय वैरागी ॥ अष्टम भव एम योग विलासी, कीर्ति जइ जग वागी ॥ ध० ॥३॥ काल करी नवमे ग्रैवेयके, ऋद्धि बहुली कर लागी ॥ एकत्रीश सागर आयु उपना, बेहु थया सोभागी ॥ ध० ॥ ४ ॥ सुख विलसे अति सुंदर वांछित, भव नवमे अनुषंगी ॥ द्रव्य जिनेश्वरके गुण गावो, दरिसण गुणके प्रसंगी ॥ ध० ॥ ५ ॥ ते प्रभुके गुणराशिकी रचना, रास कीयो में उमंगी ॥ चोथो खंड संपूरण कीनो, सुणजो सहु एकरंगी ॥ ध० ॥ ६ ॥ मंगलमाला कामजमाला, सुणतां होवे सुचंगी ॥ श्री सुमतिविजय गुरु चरण पसाये, कीर्त्ति कमला अभंगी ॥ ध० ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥ १००७ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ४२ ॥ प्रथम खंड गाथा ॥ ४३७ ॥ द्वितीय खंड गाथा ॥ ८२८ ॥ तृतीय खंड गाथा ॥ ८३४ ॥ चतुर्थ खंड गाथा ॥ १००७ ॥ चारे खंडनी गाथा ॥ ३१०६ ॥ चारे खंडना प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ११८ ॥ खंड चारनी ढाल ॥ ११३ ॥ इति श्रीशांतिनाथप्रबंधे रासबंधे द्वादशभवनिबंधे श्राम्रनिपात्यायनेकाविमृष्यकारिनृपचरित्रानुविद्धपुण्य-साराधिकारसंबंधोऽष्टमनवमभववर्णनो नाम चतुर्थः खंडः संपूर्णः ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमः खंमः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ विहरमान जिन वंदीये, सीमंधर जगवंत ॥ युगंधर बीजा नमुं, अतुली बल अरिहंत ॥१॥ त्रीजा बाहु जिणंदने, हुं नित्य करुं प्रणाम ॥ श्री सुजात स्वयंप्रज वली, रूषजानन गुणधाम ॥२॥ अनंतवीर्य सूरि प्रजो, श्री विशाल जिनराज ॥ वज्रधर चंद्रानन नमो, चंद्रबाहु शिवकाज ॥३॥ श्री जुजंग ईश्वर विन्नु, नेमिप्रज्ञ वीरसेन ॥ महाजद्र देवजस जयो, अजितवीर्य शुजसेण ॥४॥ ए वीशे वंदी विजु, रचशुं पंचम खंम ॥ कान देइ श्रोता सुणो, ए संबंध अखंम ॥५॥ जव दशमो श्री शांतिनो, सुणतां मंगलमाल ॥ निज्ञा विकथा परहरी, निसुणो थइ उजमाल ॥६॥ जिनगुण सांजलतां थका, जन्म होय सुपवित्र ॥ बोधिबीज निर्मल करे, मुनिजन कहे महंत ॥७॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ माली केरे बागमां, दोय नारिंग पके लो ॥ हो० ॥ ए देशी ॥ जंबु पूर्वविदेहमां, पुष्कलावइ विजया लो ॥ अहो पुष्कलावइ विजया लो ॥ नयरी तिहां पुंमरीगिणी, दीपे अति विजया लो ॥ अहो० ॥ ही० ॥ १ ॥ लाज वसे वासो जिहां, सुख संपत्ति सघली लो ॥ अ० ॥ सु० ॥ चोराशी बाजारनी, दीपे शृति सबली लो ॥ अ० ॥ दी० ॥ २ ॥ तिहां राजे राजेश्वरू, घनरथजी नामे लो ॥ अ० ॥ घ० ॥ अरिहंतपदवीए ऊपन्या, सुर नर शिर नामे लो ॥अ०॥सु०॥ ॥ ३ ॥ अगहिय सहस लखण धरे, अंगे अति बाह लो ॥ अ० ॥ अं० ॥ अंतर बहु गुण अति घणां, दीपे दीदार रे लो ॥ अ० ॥ दी० ॥ ४ ॥ नव ऋद्धि होय सुंदरी, प्रीतिमती पहेली लो ॥ अ० ॥ प्री० ॥ बीजी मनोहरी मानिनी, पांचु नेहे पहेली लो ॥ अ० ॥ पी० ॥ ५ ॥ हवे वज्रायुधजी चवी, प्रीतिमतीनी कूखे लो ॥ अ० ॥ प्री० ॥ नेघसुपन सूचित सहो, अवतरीया सुखे लो ॥ अ० ॥ अ० ॥ ६ ॥ रथसुपने सूचित जलो, सहस्रायुध आयो लो ॥ अ० ॥ ॥ स० ॥ मनोहरी उदरमां ऊपन्यो, पुण्यवंत सुहायो लो ॥ अ० ॥ सु० ॥ ७ ॥

पूरण काले पुत्र दो, दोय राणीए जाया लो ॥ अ० ॥ दो० ॥ उत्तम लक्षणे उंपता, कंचनवर्ण काया लो ॥ अ० ॥ कं० ॥ ८ ॥ मात तणां मन मोहता, रूपे रंगीला हो ॥ अ० ॥ रू० ॥ मुख पूरण शारद शशी, रतिकांत छबीला लो ॥अ०॥र०॥ ए ॥ नाम धरे उत्सव करी, "मेघरथ" "दृढरथजी" लो ॥अ०॥मे०॥ सज्जन सहुने वालहा, टाले अनरथ जी लो ॥ अ० ॥ टा० ॥ १० ॥ गिरि चंपक परे वाधता, पंच धावे पालीता लो ॥अ०॥पं० ॥ योग्य कला अभ्यासने, सुखमां लालिता लो ॥ अ० ॥ सु० ॥ ११ ॥ अध्यापक पासे वळी, जणवाने मूक्या लो ॥ अ० ॥ ज० ॥ सकल कला शिखे तिहां, कोइ वात न चूक्या लो ॥ अ० ॥ ॥ को० ॥ १२ ॥ पुरुष तणी बहोंतेर कला, रुमी अभ्यासे लो ॥ अ० ॥ रु० ॥ लिखित गणित आलेख्यनी, नाट्य गीत सरासे लो ॥ अ०॥ना०॥१३॥ वादित स्वर तिम द्यूत ए, अन्न पान विधि जाणे लो ॥ अ० ॥ अ० ॥ शयन आजूपणविधि जली, आर्या गाथा वखाणे लो ॥ अ० ॥ आ० ॥ १४ ॥ गीति प्रहेलिका श्लोक ए, गंधयुक्तिने कहीये लो ॥ अ० ॥ गं० ॥ तरुणीप्रसाधन लक्षणे, नर स्त्री हय लहीये लो ॥ अ० ॥ न० ॥ १५ ॥ गजलक्षण बावीशमी, गोलक्षण रुमां लो ॥ अ० ॥ गो० ॥ ताम्रचूड लक्षण जलां, मीढनां नहीं कूंमां लो ॥ अ० ॥ मी० ॥ १६ ॥ चक्र छत्र मणि दंडनां, काकिनी असि केरां लो ॥ अ० ॥ का० ॥ चर्मलक्षण ए ग्रंथमां, दाख्यां छे जलेरां लो ॥ अ० ॥ ॥ दा० ॥ १७ ॥ चंद्र सूरज ग्रह राहुनां, लहे चरित्र विचारा लो ॥ अ० ॥ ल० ॥ सूपकार विद्याकार बे, मंत्रगत निर्धारा लो ॥ अ० ॥ मं० ॥ १८ ॥ रहगत व्यूह प्रतिव्यूहने, लहे चार प्रतिचारा लो ॥ अ० ॥ ल० ॥ परिणाम स्कंधा चोरनुं, पुर वास्तु स्कंधावारा लो ॥ अ० ॥ पु० ॥ १९ ॥ निवेश वली ए त्रणना, हय गजनी शिक्षा लो ॥ अ० ॥ ह० ॥ तत्त्ववाद नयशास्त्रमां, धनुर्वेद दक्षा लो ॥अ०॥ध०॥२०॥ तेम मणि सोवननी कला, धातुर्वादे माह्या लो ॥ अ० ॥ धा० ॥ बाहुदंड दृष्टि मुष्टिने, युद्धे जाये न वाह्या लो ॥ अ० ॥ यु० ॥ २१ ॥ नियुद्ध वली वाग्युद्धमां, वेहु बांधव कुशला लो ॥ अ० ॥ बे० ॥ सर्प वह्नि जल स्थंजनं, अंतर केणे न कह्या लो ॥ अ० ॥ अं० ॥ २२ ॥ पत्रछेद वेदक तणी, कृषि वाणिज्य कर्मनी लो ॥ अ० ॥ कृ० ॥ वली पलितनाशनकरी, कला कारक शर्मनी लो ॥ अ० ॥ क० ॥ २३ ॥ अथवा पक्षीरुत तणी, बहोंतेरमी कहीये लो ॥ अ० ॥ व० ॥ कला बहोंतेर नर तणी, आगमथी ए लहीये लो ॥अ०॥आ०॥२४॥ जाण थया एहना घणुं, योवन वय पाया लो ॥ अ० ॥ यो०॥

मनमोहन मनवालहा, सहुने मन भाया लो ॥ अ० ॥ स० ॥ २५ ॥ सुमंदिर-
पुरनो धणी, निहतारि नरिंदनी लो ॥ अ० ॥ नि० ॥ प्रियमित्रा ने मनोरमा,
मेघरथ वरया सुकनी लो ॥ अ० ॥ मे० ॥ २६ ॥ तेहज नृपनी लघु कनी, दढर-
थने आपी लो ॥ अ० ॥ द० ॥ सुमति नामे सुखदायिनी, रतिरसनी वापी लो
॥ अ० ॥ र० ॥ २७ ॥ सुख विलसत संसारनां, मेघरथजीनी जाया लो
अ० ॥ मे० ॥ सुत नंदिषेण मेघसेन ठे, प्रसव्या सुखदाया लो ॥ अ० ॥ प्र० ॥
२८ ॥ दढरथने एक सुत थयो, रथसेन विचारी लो ॥ अ० ॥ र० ॥ ते
त्रणे जणे एकठा, बुद्धि सहुनी सारी लो ॥ अ० ॥ बु० ॥ २९ ॥ सुख संपत्ति
विलसे घणी, अहो पुण्यनी लीला लो ॥ अ० ॥ पु० ॥ नेह घणो बेहु बंधवने,
रहे अहोनिश भेला लो ॥ अ० ॥ र० ॥ ३० ॥ पहेली हो पंचम खंडनी, ढाल
रुडी वखाणी लो ॥ अ० ॥ ढा० ॥ श्री सुमति सुगुरु सेवक कहे, धन्य
एह कमाणी लो ॥ अ० ॥ ध० ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ घनरथ राजा एकदा, पुत्र पौत्र परिवार ॥ तखते बेठा आवीने,
सुंदर शोभा सार ॥ १ ॥ मेघरथ भाखे तिण समे, निज पुत्रोने आम ॥
वत्स कला मुज आगले, परकाशो गुणधाम ॥ २ ॥ प्रश्नोत्तर पूछे तुमो,
कहो तस उत्तर सार ॥ जनकवचन सुणी बोलीयो, लघु बंधव तेणी वार
॥३॥ तद्यथा ॥ श्लोक ॥ कथं संबोध्यते ब्रह्मा, दानार्थे धातुरत्र कः ॥ कः पर्यायश्च
वाक्यानां, को वाऽलंकरणं सताम् ॥ १ ॥ ज्येष्ठ कहे सुण बांधवा, एहनो उत्तर
खास ॥ "कलान्यास" इति वली, कहे लघु बंधव उल्लास ॥ ४ ॥ श्लोक ॥
द्वितीयः प्रश्नः ॥ दंमनीतिः कथं पूर्वे, महाखेदे क उच्यते ॥ कोऽचलानां
…तिर्लोक,-पालः कः पंचमो मतः ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे ए शुभ कह्युं, "महीपति" एवुं
…ाम ॥ हवे हुं पूछुं ते कहो, मेघसेन अभिराम ॥ ५ ॥ तद्यथा तृतीयः प्रश्नः ॥
…श्लोक ॥ किमाशीर्वचनं राज्ञां, का शंभोस्तनुमंडनं ॥ कः कर्त्ता सुखदुःखानां,
…त्रं च सुकृतस्य किम् ॥ ३ ॥ ए उत्तर देवा भणी, अणजाण्या सहु कोय ॥
…रथजी तव कहे, "जीवरक्षाविधि" जोय ॥ ६ ॥ पुनरपि मेघरथेनोक्तं ॥
…ोक ॥ सुखदा का शशांकस्य, मध्ये च भुवनस्य कः ॥ निषेधवाचकः को वा,
संसारविनाशिनी ॥ ४ ॥ कहे घनरथजी "भावना", पद चिहुं प्रश्न
… ॥ उत्तर एवो सांभली, सहु हरख्या मन मांहि ॥ ७ ॥ क्षण विनोद एहवो
…ी, प्रश्नोत्तरनो सार ॥ इण अवसर जे निपन्युं, ते निसुणो नर नारी ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ चूरुले जोबन फल रह्यो ॥ ए देशी ॥ हो राजन् ॥ गणिका एक आवी तिहां, कुर्कुट लेइ एक ॥ राजन् ॥ हारे न महारो कूकडो, कोइ आगल सुविवेक ॥ राजन् ॥ १ ॥ वात सुणो वारु परे, न करो कोइ गुमान ॥ रा० ॥ जो कोइ गर्व करे मने, तो आणो कूकम इण ठाण ॥ रा० ॥ वा० ॥ २ ॥ हो राजन् ॥ जो हारे मुज कूकडो, तो आपुं धन लक्ष ॥ रा० ॥ जो कोइ हारे अवरनो, तो लक्ष लहुं प्रत्यक्ष ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हो० ॥ गर्व घणो करती तदा, निसुणी मनोरमा नारी ॥ रा० ॥ नृपहुकमथी मोकल्यो, निज कुर्कुट तेणी वार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ हो० ॥ जूजण लाग्या कूकडा नृप आगल दरबार ॥ रा० ॥ उलट पालट थाये बंने, चंचू चरण प्रहार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ हो० ॥ अरुण नयण ततक्षण थयां, आथमीया जेम योध ॥ रा० ॥ वार्या पण न रहे केमे, वैर थकी दुर्बोध ॥ रा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ हो० ॥ त्रिहुं ज्ञाने शोजित प्रजु, श्रीघनरथ राजान ॥ रा० ॥ कहे मेघरथ कुंवर जणी, सुण वत्स सुगुणनिधान ॥ रा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ हो० ॥ ए बे पंखी मांहिलो, नहीं हारे कोइ एक ॥ रा० ॥ कहे मेघरथ कारण किस्युं, कहे नृप वैर एठेक ॥ रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ हो० ॥ ऐरवताजिध क्षेत्रमां, रत्नपुरे दोय सार ॥ रा० ॥ धनद सुदत्त नामे वसे, वणिक करे व्यापार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ए ॥ हो० ॥ मित्राइ बेहुने बनी, पण घरना मसकीन ॥ रा० ॥ गंत्रीए जोमी बलदने, जाय पर गामे दीन ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ हो० ॥ जार जरे अतिही घणो, जूख तृषा वली तेम ॥ रा० ॥ बलद बिचारा शुं करे, सहे निज कृतने एम ॥ रा० ॥ वा० ॥ ११ ॥ हो० ॥ मिथ्यात्वे मोह्या घणुं, कूम तोलां ने मान ॥ रा० ॥ करे अन्याय उपार्ज्युं, धन मेल्युं ए निदान ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ हो० ॥ एक दिवस धन कारणे, वढीया ते बेहु जोर ॥ रा० ॥ अन्योन्ये एकेकने, दीध प्रहार कठोर ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ हो० ॥ आरतध्याने ते मुआ, धन अनरथ करनार ॥ रा० ॥ नेह तोमावे पलकमें, हुवे प्रत्यक्ष संहार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ हो० ॥ नरजव हारी ते हुवा, स्वर्णकूलाने कूल ॥ रा० ॥ दोय हस्ती सोहामणा, लोज वशे प्रतिकूल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ हो० ॥ कंचनकलश पहेलो थयो,

ताम्रकलश अनिधान ॥ रा० ॥ बीजो वेहु निज गुरूना, थया स्वामी बलवान ॥ रा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ हो० ॥ एक दिवस तटिनीतटे, अटता दोय अमल्ल ॥ रा० ॥ पमीया गुरूनी लालचे, जमीया ते जेम मल्ल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ हो० ॥ पूरव वैरे प्रेरीया, रोष चढ्या मदवंत ॥ रा० ॥ विंधाणा दंतोशले, वेहु ते पाम्या अंत ॥ रा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ हो० ॥ नयरी अयोध्या उपन्या, दोय सेरन उद्दंम ॥ रा० ॥ नांदिमित्रने मंदिरे, शिंगाला परचंड ॥ रा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ हो० ॥ राजकुमरे ते संग्रह्या, वेहु लमाव्या ताम ॥ रा० ॥ मरण लह्युं रोपे नख्या, जोजो वैरनां काम ॥ रा० ॥ वा० ॥ २० ॥ हो० ॥ तेहीज नयरमां उपन्या, दोय घेटा दृढकाय ॥ रा० ॥ जमता ते शृंगाग्रशुं, निधन लह्यां तिण गय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ हो० ॥ कुर्कुट ए वेहु थया, पूरव नवने वैर ॥ रा० ॥ रोषारुण नयणां करी, युद्ध करे एणी पेर ॥ रा० ॥ वा० ॥ २२ ॥ हो० ॥ ते माटे वेहु मांहिथी, कोइ न जीत्या जाय ॥ रा० ॥ वैर वधार्यां नव नवे, आवी आमा थाय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ यतः ॥ वैरं विश्वानरो व्याधि,–र्विषया व्यसनानि च ॥ महानर्थाय जायंते, वकाराः पंच वर्धिताः ॥ ५ ॥ हो० ॥ पंचम खंडे सोहामणी, बीजी ढाल विचार ॥ रा० ॥ वैर न कीजे कोइशुं, समजानो ए सार ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ ७० ॥ ५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कहे मेघरथजी कुमार, घनरथजीने आदरे ॥ तात कह्युं ते सार, बीजुं पण कारण इहां ॥ १ ॥ दोहो ॥ केवल वेर नहीं इहां, छे बीजुं पण हेत ॥ कहुं पिताजी सांजलो, ते तुम्हने संकेत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥ इह नरते हो वरते वैताढ्य के, नयर सुवर्णनाज नामथी ॥ श्रेणि उत्तरे हो खेचर शिरदार के, गरुमवेग छे शुनमति ॥ १ ॥ तस अंगज हो चंद सूरथी दोय के, तिलक पदे सोहामणा ॥ जिनपमिमा हो सुरगिरिने टूक के, नमवा चाल्या दो जणा ॥ २ ॥ मुनि दीठा हो तिहां सागरचंद के, चारणश्रमण गुणे नख्या ॥ प्रणमीने हो बेठा जइ पास के, सकल कलाए अलं-

कह्या ॥ ३ ॥ कर जोडी हो निसुणे मुनिवाणी के, पूरव भव पूछे किस्यो॥ कहे नाणी हो सुणो धातकीखंम के, ऐरवते वज्रपुर इस्यो ॥ ४ ॥ तिहां अजयथी हो घोषाभिध राय के, हेमतिलकानो नाहलो ॥ दोय कुंवर हो जय विजयनो तात के, सोभागी महिमानिलो ॥ ५ ॥ शंख नृपति हो पुर एहवे सुवर्ण के, तस पृथिवी राणी भणी ॥ एक तनया हो ते कंचनवर्ण के, पृथ्वीसेना बहु गुणी ॥ ६ ॥ आवी साहमी हो स्वयंवर थइ तेह के, परणी अजयघोष कंथने ॥ मृगनयणी हो मनोहर सुकुमार के, मन मानी घणुं संतने ॥ ७ ॥ वन मांहे हो अन्य दिवस वसंत के, नृप चाल्यो रमवा भणी ॥ शत राणी हो साथे उद्यान के, वनशोभा जोवे घणी ॥ ८ ॥ तिहां जोती हो वनतरुवरराजि के, पृथ्वीसेना पदमिणी ॥ मुनि देखे हो दांतमदन महंत के, धन्य घमी मुऊ आजनी ॥ ए ॥ सुणी देशन हो पामी प्रतिबोध के, आए लही भरतारनी ॥ ग्रहे दीक्षा हो शिक्षा धरे अंग के,समभावे भवतारिणी ॥१०॥ अनुमोदी हो वलीयो भूपाल के, निज पुर मांहे आवीयो ॥ पमिलाभे हो एक दिन श्री अनंत के, जिन छद्मस्थनो भावीयो ॥ ११ ॥ नृप आंगण हो प्रगट्यां पंच दिव्य के, जय जय सुर मुख उच्चरे ॥ लह्युं केवल हो भगवंत अनंत के, अनुक्रमे सुर सेवा करे ॥ १२ ॥ तस पासे हो बेहु तनय संघात के, दीख अजय-घोष आदरे ॥ वीश स्थानक हो सेवे मुनिराय के, जिनपद निकाचित करे ॥ १३ ॥ सुत मुनिशुं हो अच्युत सुरलोक के, अजयघोष सुरवर थया ॥ तिहांथी चवी हो श्री अजयघोषजीव के, राजा घनरथजी हुवा ॥ १४ ॥ जय विजयना हो चवीया दोय जीव के, तुम्हे बंधव बेहु अवतस्या ॥ एम भाख्युं हो सागरचंद साधु के, पूरव भव सुणी चित्त ठस्यां ॥ १५ ॥ कहे मेघरथ हो ते खेचर दोय के, पूरव भव नेहे करी ॥ तुम नमवा हो मल-वाने काज के, आव्या इहां चित्त हित धरी ॥ १६ ॥ चरणायुध हो भूजता देखी के, बेहु जण बेहु अहिठिया ॥ निज आतम हो गोपवीने आंहीं के,विद्यावलशुं पइठीया ॥१७॥ सुणी एहवुं हो मेघरथजीनुं वयण के, ते खेचर परगट थइ ॥ कर जोमी हो घनरथजीना पाय के, प्रणमे हियडे गह-गही ॥ १८ ॥ अम्ह पूरव हो भवचा तुम्हे तात के, भाग्यबले प्रभु भेटीया ॥ थयां लोचन हो सफलां जगनाथ के, दुःख दोहग सवि मेटीयां

॥ १९ ॥ नमी नेहे हो पहोता निज गेह के, गुरु पासे व्रत आदरी ॥ तप डुष्कर हो करे किरिया सार के, चरण नृपतिनी चाकरी ॥ २० ॥ घनघाती हो क्षय कीधां चार के, उज्ज्वल केवलसीरी वस्या ॥ सुख पाम्या हो शिवपदनां सार के, पलक मांहे नवजल तस्या ॥ २१ ॥ चरणायुध हो हवे ते निज वात के, पूरव नवनी सांजली ॥ मन मांहे हो कीधां निज पाप के, निंदे दोय वली वली ॥ २२ ॥ प्रणमीने हो घनरथ प्रजु पायके, अरज करे निज वाणीए ॥ अपराधी हो स्वामी अम्हे जोर के, पाप प्रचुर कस्यां प्राणीए ॥ २३ ॥ घनरथजी हो कहे समकित शुद्ध के, धर्म अहिंसा लक्षणे ॥ नावपूर्वक हो सदहीने दोय के, काल करे तिहां ततक्षणे ॥ २४ ॥ नूताटवी हो मांहे ताम्रचूल के, स्वर्णचूल नामे नला ॥ देवयोनिमां हो थया ते नूतदेव के, अद्भुत रूपे उजला ॥ ॥ २५ ॥ उपयोगी हो ज्ञाने ते जोय के, वेसी विमाने आवीया ॥ प्रणमीने हो घनरथना पाय के, कर जोमी कहे नावीया ॥ २६ ॥ धन्य स्वामी हो तुं जगदाधार के, अम्ह अनाथने उद्धस्या ॥ तुम्हे कीधो हो महोटो उपकार के, ध्येयपणे हवे आदस्या ॥ २७ ॥ लही आणा हो पहोता निज ठाय के, पांचमे त्रीजी ढालमां ॥ शुन संगति हो करतां निशदिस के, फल लहीये ततकालमां ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ १०० ॥ श्लोक तथा गाथा ५

॥ दोहा ॥

॥ हवे घनरथजी राज्यने, पालतां एक दिस ॥ जव असारता मन वसी, चिंते एम जगदीश ॥ १ ॥ विषय अनंता कालना, वलग्या ए जीव केम ॥ चेत चेत चेतन चतुर, टेव विषयनी फेम ॥ २ ॥ लोकांतिक सुर आवीया, इण अवसर उजमाल ॥ बुक बुक त्रिजुवन धणी, विषय थकी मन वाल ॥ ३ ॥ तीरथ स्थापी नविकने, करो क्षेम कल्याण ॥ जय जय प्रजु चिर नंद तुं, कहे सुर जोमी पाणी ॥ ४ ॥ दान देइ संवत्सरी, थापी मेघरथ पाट ॥ घनरथजी संयम लीये, मूकी सवि उचाट ॥ ५ ॥ केते काले पामीयुं, उज्ज्वल केवलनाण ॥ नव्य जीव प्रतिबोधता, विचरे श्रीजिनजाण ॥ ६ ॥ मेघरथजी सुख जोगवे, नयरी पुंकरीगिणीराज ॥ दृढरथ जाइशुं नलां, करे धर्मनां काज ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वामी फूली अति नली ॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ एक दिन नृप

मेघरथजी ॥ आणंदा रे ॥ बंधु रमणी परिवार ॥ घणुं सुखकंदा रे ॥ देवरमण उद्यानमां ॥ आणं० ॥ आव्यो अवनी आधार ॥ घणुं० ॥ १ ॥ शोके रहित अशोकने ॥ आ० ॥ नीचे बेठो राय ॥ घ० ॥ तारकमां जेम चंद्रमा ॥ आ० ॥ तिम शोभे समुदाय ॥ घ० ॥ २ ॥ एहवे नूते आवीने ॥ आ० ॥ मांम्युं नाटक सार ॥ घ० ॥ चर्म वसन आयुध धर्यां ॥ आ० ॥ नाचे विस्मयकार ॥ घ० ॥ ३ ॥ ते नाचंतां आवीयुं ॥ आ० ॥ एक विमान उत्तंग ॥ घ० ॥ सुंदर एक नर नारीनुं ॥ आ० ॥ ते मांहि युगल सुचंग ॥ घ० ॥ ४ ॥ नारी पूछे पीयु कोण ए ॥ आ० ॥ कहे मेघरथ मनरंग ॥ घ० ॥ सुण वैताढ्यथी उत्तरे ॥ आ० ॥ नयरी अलकापुरी चंग ॥ घ० ॥ ५ ॥ विद्युतरथ कुल उपन्यो ॥ आ० ॥ ए खेचर सिंहरथ ॥ घ० ॥ वेगवती एहनी नारजा ॥ आ० ॥ धर्मकरण समरत्न ॥ ॥ घ० ॥ ६ ॥ धातकीखंडे जिन वांदवा ॥ आ० ॥ गयां ए दंपती दोय ॥ घ० ॥ वांदी पाछां वलतां इहां ॥ आ० ॥ गति प्रतिघातने जोय ॥ ॥ घ० ॥ ७ ॥ सहसा ए केम निपन्युं ॥ आ० ॥ दीठो मुजने एण ॥ ॥ घ० ॥ सामान्य ए नरपति नहीं ॥ आ० ॥ चिंते एम हर्षेण ॥ घ० ॥ ॥ ८ ॥ विमान तणी खलना हुइ ॥ आ० ॥ एहने प्रनावे आज ॥ घ० ॥ नूत रूप कीधां घणां ॥ आ० ॥ नाटक करवा काज ॥ घ० ॥ ए ॥ पूछे राणी इण पूरवे ॥ आ० ॥ शुं कीधुं पीयु पुण्य ॥ घ० ॥ जे एहवी रुद्धि पामीयो ॥ आ० ॥ कहो गुणरयण अगण्य ॥ घ० ॥ १० ॥ नृप कहे सिंहपुरे पुरी ॥ आ० ॥ कुलपुत्रक राजगुप्त ॥ घ० ॥ शंखिका नारी तेहनी ॥ ॥ आ० ॥ निर्धनताए विलुप्त ॥ घ० ॥ ११ ॥ करे परघरनी चाकरी ॥ ॥ आ० ॥ एक दिन काठने काज ॥ घ० ॥ गयां वनमां दुःखीयां बन्हे ॥ आ० ॥ तिहां दीठो मुनिराज ॥ घ० ॥ १२ ॥ नमी बेठां रुषि आगले ॥ आ० ॥ कहे मुनिवरजी धर्म ॥ घ० ॥ आराध्यो सुरतरु परे ॥ ॥ आ० ॥ दे मनोवांछित शर्म ॥ घ० ॥ १३ ॥ कहे दंपती कर जोमीने ॥ ॥ आ० ॥ प्रनु कहो कांइ उपाय ॥ घ० ॥ जिम सुखीयां थाइये अमे ॥ ॥ आ० ॥ करो करुणा सुपसाय ॥ घ० ॥ १४ ॥ नवसंचित अघनाशनो ॥ आ० ॥ तप बत्रीश कल्याण ॥ घ० ॥ चोथ बत्रीशे कीजीये ॥ आ० ॥ अष्ठम दोय गुणखाणी ॥ घ० ॥ १५ ॥ गुरुदत्त तप ए आदरे ॥

॥ आ० ॥ पारणे एक दिन साध ॥ घ० ॥ प्रासुक अन्न ने पाणीए ॥ आ० ॥ पडिलाभ्यो निराबाध ॥ घ० ॥ १६ ॥ काले ग्रहे अणगारता ॥ आ० ॥ नारी ने ते नाह ॥ घ० ॥ राजगुप्त गुरुथी सुणे. ॥ आ० ॥ तप अधिकार उत्साह ॥ घ० ॥ १७ ॥ तप कह्यां विविध प्रकारनां ॥ आ० ॥ बोल्यां शक्ति विशेष ॥ घ० ॥ पण आंबिल वर्धमाननो ॥ आ० ॥ महिमा अधिको रेष ॥ घ० ॥ १८ ॥ एकेक वधते आंबिले ॥ आ० ॥ शत संख्या लगे सार ॥ घ० ॥ उंलीने ठेहडे करे ॥ आ० ॥ पारणुं निरतिचार ॥ घ० ॥ १९ ॥ उंली उंलीने ठेहडे ॥ आ० ॥ एकेक कह्यो उपवास ॥ घ० ॥ मन चढते अंतर विना ॥ आ० ॥ नहींतर पारण खास ॥ घ० ॥ २० ॥ सहस पंच आंबिल कह्यां ॥ आ० ॥ तेम उपरे पंचास ॥ घ० ॥ शत उपवास उंली तणा ॥ आ० ॥ ए तप कीजे उल्लास ॥ घ० ॥ २१ ॥ चौद वरस त्रण मासनी ॥ आ० ॥ उपरे दिन वली वीश ॥ घ० ॥ मान कह्युं ए तप तणुं ॥ आ० ॥ सूत्र मांहे जगदीश ॥ घ० ॥ २२ ॥ राजगुप्त ऋषि आदरे ॥ ॥ आ० ॥ ए तप आनंद पूर ॥ घ० ॥ शमतारसमां झीलतो ॥ आ० ॥ दिन दिन चढते नूर ॥ घ० ॥ २३ ॥ काल करी सुर उपन्यो ॥ आ० ॥ ते पंचम सुरलोक ॥ घ० ॥ तिहांथी चवी सिंहरथ थयो ॥ आ० ॥ इण भवे ए गतशोक ॥ घ० ॥ २४ ॥ शंखिका पण तिहां अवतरी ॥ आ० ॥ वेगवती थइ नारी ॥ घ० ॥ सिंहरथने वल्लभ घणुं ॥ आ० ॥ पूरव नेह विचार ॥ घ० ॥ २५ ॥ मेघरथना मुखथी सुणी ॥ आ० ॥ निज पूरव अवदात ॥ घ० ॥ प्रतिबुझ्यो सिंहरथ तदा ॥ आ० ॥ धन्य धन्य उत्तम जाति ॥ घ० ॥ २६ ॥ मेघरथने वांदी वल्यो ॥ आ० ॥ सिंहरथ निज घर आवी ॥ घ० ॥ तनयने राज्य बेसारीने ॥ आ० ॥ ग्रहे संयम समभाव ॥ घ० ॥ २७ ॥ श्रीघनरथ जिनवर कने ॥ आ० ॥ तप तपीयां असराल ॥ घ० ॥ कर्म खपी केवल लही ॥ आ० ॥ मुक्ति गया ततकाल ॥ घ० ॥ ॥ २८ ॥ हवे मेघरथ नृप आवीया ॥ आ० ॥ वनहुंती निज धाम ॥ घ० ॥ जीवदया पाले भली ॥ आ० ॥ करे शुभ धर्मनां काम ॥ घ० ॥ २९ ॥ ढाल चोथी खंड पंचमे ॥ आ० ॥ भव दशमो अधिकार ॥ घ० ॥ रामविजय कहे सांभलो ॥ आ० ॥ आगल बहु विस्तार ॥ घ० ॥ ३० ॥ १३७ ॥ ५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे एक दिन मेघरथ, पोषध व्रत लेवा नणी ॥ नूपण मूकी गरथ, आवे पौषधशालमां ॥ १ ॥ बेठो आसन योग, योगीश्वर जिम मन रली ॥ मूकी इंडिय नोग, पोषध व्रत लेइ करी ॥ २ ॥ धर्म कहे एकचित्त, राजेश्वर आगे तदा ॥ एहीज बे जगमित्र, अवर न को उगारशे ॥ ३ ॥ जोतां ए संसार, लाग्युं जेवुं पलेवडुं ॥ कोइ न तारणहार, जीवदया विण जीवने ॥ ४ ॥ मानी लीधुं सुख, मुज मनमां माने नहीं ॥ जस अंते होय दुःख, ते सुख केहा कामनुं ॥ ५ ॥ सुख सहजे जे होय, जे उपाधि ते सुख नहीं ॥ ए गति न्यारी कोय, सुख दुःख पुजलथी लह्युं ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥ एणे अवसर एक पंखीयो रे, थरथर धूजते अंग ॥ पारावत आवी पड्यो रे, नृप मेघरथने उत्संग ॥ १ ॥ राजेश्वर राखीये रे ॥ तुं शरणागत साधार, घणुं शुं नाखीये रे ॥ ए आंकणी ॥ मनुजवाणी एम बोलतो रे, तरल नयन नयजीत ॥ मत बीहे तुं बापमा रे, नृप संतोषे हित रीत ॥ रा० ॥ २ ॥ एम नरपति बोलावीयो रे, खेचर थयो निर्जीक ॥ तावत् त्यां एक आवीयो रे, पंखी सिंचाणो नजीक ॥ रा० ॥ ३ ॥ सुण राजन् तुज कोलमां रे, बे पंखी मुज नक्ष ॥ मूक मूक पारेवमो रे, हुं नूख्यो तुं घणुं दक्ष ॥ रा० ॥ ४ ॥ कहे मेघरथ ए माहरे रे, शरणागत थयो जेह ॥ युक्त न काढी आपतां रे, जीवंतां ए देह ॥ रा० ॥ ५ ॥ क्षतहुंती राखे तेणे रे, क्षत्र कह्युं जग मांहि ॥ ते पद जो हुं न जालवुं रे, तो नामे शुं थाय ॥ रा० ॥ ६ ॥ यतः ॥ दोहो ॥ केशरीकेश भुजंगमणि, शरणां ए सुहमांह ॥ सतीपयोधर कृपणधन, चढशे हाथ मुवांह ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ पर प्राणे निज प्राणनुं रे, पोषण न घटे तुज ॥ नरक कारण हिंसा कही रे, कारज म कर अबुज ॥ रा० ॥ ७ ॥ एक पिछ बेदे ताहरे रे, अंगे होय असमाधि ॥ तेम बीजाने पण सही रे, हिंसा ए महोटो व्याधि ॥ रा० ॥ ८ ॥ पण नखंतां एहनुं रे, तृप्ति होशे तिलमात्र ॥ पण पंखीना प्राणनी रे, शी गति होशे भ्रात ॥ रा० ॥ ए ॥ वध पंचेंडियनो करे रे, महापरिग्रह आरंन ॥ मांस तणा आहारथी रे, नरकायुनो प्रारंन ॥ रा० ॥ १० ॥

॥ यडुक्तमागमे ॥ कहृणं नंते नेरइया उयत्ताए कम्मं पकरंति गो० चउहिं कारणेहिं नेरयिया उयत्ताए कम्मं पकरंति तं महारंजयाए महापरिग्गहियाए पंचिंदियवहेणं कुणपाहारेणं ॥ २ ॥ इति जगवत्यां ॥ पूर्व ढाल ॥ हिंसा थकी निसुणो सही रे, नरके गयो रे निषाद ॥ जीवदयाथी वानरी रे, स्वरग गइ रे आह्लाद ॥ रा० ॥ ११ ॥ कहो स्वामी ते कोण हुआ रे, तव मेघरथ जूपाल ॥ श्येन पंखी प्रतिबोधवा रे, कहे उपदेश रसाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ हरिकांता नामे जली रे, नयरी निरुपम गम ॥ त्यां हरिपालाजिध जलो रे, राजेश्वर गुणधाम ॥ रा० ॥ १३ ॥ तिण नयरी परिसर घणां रे, शाखामृगनां रे वृंद ॥ वन मांहे क्रीमा करे रे, फल फूल खाइ आनंद ॥ रा० ॥ १४ ॥ निर्दय ने कृतघ्नी घणो रे, यमकिंकर उपमान ॥ घातक नाम निषाद ठे रे, ते नयरीमां अजाण ॥ रा० ॥ १५ ॥ व्यसन आहेमानुं घणुं रे, लाग्युं पूर्वनुं पाप ॥ नित्य प्रते जीव हणे घणु रे, उपजावे परिताप ॥ रा० ॥ १६ ॥ ज्यों मृगयामां दोष ठे रे, ते बोले एम आल ॥ निज आतमने पोषवा रे, डुष्ट घणुं उजमाल ॥ रा० ॥ १७ ॥ यडुक्तं मृगयाविलापुके: ॥ अवलस्वकुलाशिनो जपान्, निजनीमडुमपीमिनः खगान् ॥ अनवद्यतृणार्दिनो मृगान्मृगयाजूल हि जूलतां गताम् ॥३॥ पूर्व ढाल ॥ तेहमां हरिप्रिया नामथी रे, वानरी जडक एक ॥ मांसविरत नाही घणुं रे, मन मांहे वस्यो रे विवेक ॥ रा० ॥ १० ॥ हवे ते निषाद एकण समे रे, शस्त्र ग्रही निज पाणि ॥ वन मांहे मृगया आवीयो रे, करवा जीवनी हानि ॥ रा० ॥ १ए ॥ आगल जातां देखीयो रे, वाघ सबल विकराल ॥ जय पामी वृद्धे चढ्यो रे, ते घातक ततकाल ॥ रा० ॥ २० ॥ पादप उपर पूरवे रे, रही कपिवनिता तेह ॥ वाघजये मुख फामीने रे, थरथर ध्रुजे देह ॥ रा० ॥ २१ ॥ ते देखी बीहीनो बली रे, तब वानरी निज रूप ॥ घइ तस पासे आवीयो रे, तेह निषाद विरूप ॥ रा० ॥ २२ ॥ विश्वासे तस वानरी रे, जोवे शिरना केश ॥ मस्तक मूकी उत्संगमां रे, सूतो विटप सन्निवेश ॥ रा० ॥ २३ ॥ पाप जोइ नीचो रह्यो रे, निडा मांहे निषाद ॥ वानरीने वाघे इस्युं रे, सुण मुग्धा गतसाद ॥ रा० ॥ २४ ॥ शुं उपकार कर एहनो रे, नहीं कोइ नग जाय ॥ जे उपकारने ठंडखे रे, पाकरी नाम प्रनाय ॥ रा० ॥ २५ ॥ पर्खी

विशेषे मानवी रे, जग मांहे गुणचोर ॥ सांजल हुं कहुं तुजने रे, माण-
सथी जलां ढोर ॥ रा० ॥ २६ ॥ पंचम खंडे पांचमी रे, ढाल कही मन-
रंग ॥ वातज कहेशे वाघलो रे, माणस उपर चंग ॥ रा० ॥ २७ ॥ १७० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वाघ कहे सुण वानरी, एकण ग्राम मजार ॥ शिवस्वामी नामे
वसे, ब्राह्मण वेदविचार ॥ १ ॥ एक दिवस ते नीसस्यो, करवा तीरथयात्र
॥ जमतां अटवीमां पड्यो, सूधो हुवो तृषार्त्त ॥ २ ॥ जल खोलंतां चिहुं
दिशे, जीरण दीगे कूप ॥ जल कारण आव्यो तिहां, ब्राह्मण आतुररूप
॥ ३ ॥ रज्जु करी तृणमय तदा, करपत्रक तिहां बांधी ॥ जल कारण
मांहे धस्यो, ब्राह्मण रुमी संधि ॥ ४ ॥ तिण दोरे वलगी तदा, कूप थकी
कपि एक ॥ बाहिर आव्यो ते तदा, चिंते द्विजवर ठेक ॥ ५ ॥ सफल
थयो आयास मुज, थयुं एहने आशान ॥ कूप पड्यो में उद्धस्यो, महोटुं
जीवितदान ॥ ६ ॥ बीजी वारे नीसस्या, वाघ जुजंग संज्रांत ॥ दोडी
ब्राह्मण पग पड्या, हरख्यां मन अत्यंत ॥ ७ ॥ उपगारी जाणी नमे, ते त्रिहुं-
मां कपि ताम ॥ जातिस्मृति अक्षर लखी, द्विजने जणावे श्याम ॥ ८ ॥
अहो मथुरा नगरी वसुं, अछुं तुम्हारे वश ॥ एक वार तिहां आवजुं, करशुं
जक्ति अवश्य ॥ ए ॥ वली तमने एक विनवुं, एहमां अछे मनुष्य ॥
ते मत काढो तुम्ह जणी, करशे अहित प्रत्यक्ष ॥ १० ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ काया कामिनी वे लाल ॥ ए देशी ॥ ते एम जाखी वे लाल, निज स्थानक
गया ॥ द्विज एम चिंते वे लाल, ए उत्तम हुया ॥ त्रूटक ॥ ए हुया उत्तम
मनुज सत्तम, सकल जीव मांहे शिरे ॥ मुज पास हुंता एह मानव, कहोने
ते केम मरे ॥ १ ॥ कीजे सहुने वे लाल, शक्तिए उपकारमो ॥ मानो
बहुने वे लाल, जीवित प्यारमो ॥ त्रू० ॥ प्यारमो जीवित जगतजननें,
तिहां नहीं संदेह ए ॥ ते माटे एहने करुं उपकृति, सफल होवे एह ए ॥ २ ॥
काढ्यो तेहने वे लाल, दोरी मूकी करी ॥ पासे आव्यो वे लाल, प्रणमे
हित धरी ॥ त्रू० ॥ हित धरी प्रणमे चरण तेहना, पूछीयुं तुं कोण ठे ॥
ते कहे मथुरा नयरीवासी, स्वर्णकार अछुं रुचे ॥ ३ ॥ काज उद्देशी वे
लाल, आव्यो इहांकणे ॥ तुं परदेशी वे लाल, कूपे जीरणे ॥ त्रू० ॥

जीरण कूपे जलह काजे, पड्यो तृष्णातुर थयो ॥ उगीयो कूपक मांहे तरुवर शाखा अवलंबी रह्यो ॥ ४ ॥ एहवे तरण्या वे लाल, अहिमुख आवीया ॥ जल पीवाने वे लाल, कूप लंबावीया ॥ त्रू० ॥ लंबावीया सम दुःख माटे, वैर वामीने रह्या ॥ उगारीया तें सुगुण आवी, एह वीतक सवि कह्यां ॥ ५ ॥ सुण उपकारी वे लाल, मथुरा आववुं ॥ अहोनिश तुम्हचुं वे लाल, समरण जाववुं ॥ त्रू० ॥ आववुं अमचे नयर द्विजवर, जक्ति करशुं तुम तणी ॥ इम कही चाल्यो तेह सोवन,-कार नयरी आपणी ॥ ६ ॥ तीरथ करतां वे लाल, ते द्विज अनुक्रमे ॥ केते दिवसे वे लाल, मथुरा संक्रमे ॥ त्रू० ॥ संक्रमे मथुरावन मांहि, आवीयो तव उंलख्यो ॥ वानरो हरख्यो हृदय मांहे, तेह अनुमाने लख्यो ॥ ७ ॥ चरणे नमीयो वे लाल, फल आगल धर्यां ॥ कहे उपशमीयो वे लाल, तुम गुण सांजर्या ॥ त्रू० ॥ सांजर्या तेहवे वाघने पण, करे जक्तिजावे जर्यो ॥ अज्ञानथी वन राजसुतने, हणी जूषण दग कर्यो ॥ ८ ॥ जुर्ज तिर्यंचे वे लाल, गुण नवि उंलख्यो ॥ वाचा पाली वे लाल, धिक् नरनो लख्यो ॥ त्रू० ॥ जुर्ज नरनो लख्यो हवे तुम्हे, देइ आशिष पुर गयो ॥ करी तीरथयात्र पूठे, किहां नार्मिधम रह्यो ॥ ९ ॥ खोली काढ्यो वे लाल, तेह कलादने ॥ नयणे निरखी वे लाल, लह्यो आह्लादने ॥ त्रू० ॥ आह्लाद लहीयो द्विजे पण तिणे, निरखी नीचुं चालीयुं ॥ मन मांहि चिंते रखे मागे, हेज सघलुं गालीयुं ॥ १० ॥ चांजण बोल्यो वे लाल, नार्मिधम गुणी ॥ शुं नवि जाणो वे लाल, माया अवगुणी ॥ ॥ त्रू० ॥ अवगुणी माया हवे जाया, अटवी तुम जूली गइ ॥ सुणी उठ्यो तुरत प्रणमे, सुरत मुजने नवि रही ॥ ११ ॥ कहे कर जोमी वे लाल, परकाशो मुने ॥ कारज वहालुं वे लाल, जे होये तुने ॥ त्रू० ॥ ते कहे मुजने एह जूषण, किणही दीधुं दक्षिणा ॥ एहनुं मुज मूल्य आपो, सुणी कलाद विचक्षणा ॥ १२ ॥ तेहने सोंपी वे लाल, गयो तटिनीजले ॥ स्नान करेवा वे लाल, तन मेलो मले ॥ त्रू० ॥ मले मेलो स्नान करवा, गयो हवे इण अवसरे ॥ वाजतो पमहो देखी पासे, कान ते उंचा धरे ॥ १३ ॥ किणहीक मार्यो वे लाल, नृपअंगज जलो ॥ जूषण काजे वे लाल, ए कुल चांदलो ॥ त्रू० ॥ चंदला सम ते होय दीगे, जेणे ते सवि दाखजो ॥ वध्य नर होशे नहींतर, हियामां मत राखजो ॥ १४ ॥ मोमी

चिंते वे लाल, ए महारुं घड्युं ॥ कर्मसंयोगे वे लाल, कर आवी चड्युं ॥ त्रू० ॥ आवी चड्युं मुज तेह महारो, नहीं गोत्री नहीं सगो ॥ तिण कारण कां करुं अनरथ, एम थयो मन उजगो ॥ १५ ॥ गुण विसारी वे लाल, जइ पम्हो ठव्यो ॥ भूपण देइ वे लाल, नृप आगे लव्यो ॥ त्रू० ॥ लव्यो ब्राह्मण वात दाखी, नृपे बांधी मगावीयो ॥ पूठीया पौराणिक घणा, स्यो दंम इण शिर आवीयो ॥ १६ ॥ ते कहे स्वामी वे लाल, ज्ञाता वेदनो ॥ करता महोटो वे लाल, वंश उछेदनो ॥ त्रू० ॥ वंशनो उछेद करता, हण्या नहीं कोइ दोप ए ॥ रासनारोहण कस्यो ततक्षण, नृप चड्यो घण रोप ए ॥ १७ ॥ राजादेशे वे लाल, बाहिर काढीयो ॥ चंदन लेपी वे लाल, बांध्यो गाढीयो ॥ त्रू० ॥ गाढीयो बांध्यो वध्य भूमि, लेइ जाता चिंतवे ॥ मुज कस्यां पूरव उदय आव्यां, रोये शुं होवे हवे ॥ १८ ॥ मुजने मलीयो वे लाल, कृतघ्न ए वडो ॥ वानर वाघे वे लाल, कह्यो मुज परवडो ॥ त्रू० ॥ परवडुं कह्युं में न कीधुं, अचिंती आपद नमी ॥ कहे द्विजवर श्लोक दोय तिहां, सुणे रक्षक तिहां रमी ॥ ॥ १९ ॥ तद्यथा ॥ व्याघ्रवानरसर्पाणां यन्मया न कृतं वचः ॥ तेनाहं दुर्विनीतेन, कलादेन विनाशितः ॥ १ ॥ वेश्याऽक्षा राजचौराश्च, नीरमार्जा-रमर्कटाः ॥ जातवेदाः कलादश्च, न विश्वास्या इमे कचित् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ दोय पद्य जणतां वे लाल, श्रवणे सांजल्यां ॥ वाम विचाले वे लाल, जुजगे अट-कल्यां ॥ त्रू० ॥ अटकल्यां जुजगे एह द्विजवर, जिणे अमने उद्धस्या ॥ हा हा ते गुणवंत महोटा, आज एम कष्टे नस्या ॥ २० ॥ उक्तं च ॥ उपकारिणि विश्रब्धे, साधुजने यः समाचरेत्पापम् ॥ तं जनमसत्यसंधं, जगवति वसुधे कथं वहसि ॥ ३ ॥ अशनमात्रकृतज्ञतया गुरोर्न पिशुनोऽपि शुनो लजते तुलाम् ॥ अपि बहूपकृते सखिता खले, न खलु खेलति खेलतिका यथा ॥ ४ ॥ रूपवंत गुणहीन० ॥ पूर्व ढाल ॥ अहि मन चिंतवे वे लाल, बहु गुण जेहनो ॥ कांइक थाउं वे लाल, उरण एहनो ॥ त्रू० ॥ थाउं उरण मन विमासी, गयो वामी क्षीमती ॥ तिहां राजकन्या रुसी ततक्षण, पमी धच देइ दोमती ॥ २१ ॥ दासीमुखथी वे लाल, नृप ए सांजल्युं ॥ हा हा जाखे वे लाल, मन थयुं व्याकुलुं ॥ त्रू० ॥ व्याकुलुं मन करी चित्त चिंते, दुःख समकाले नड्युं ॥ हजी एकनो मुज पार नाव्यो, बीजुं एम

आवी पड्युं ॥ २२ ॥ नृपे बहु तेड्या चे लाल, तिहांकणे मांत्रिका ॥ जा
ने जोषी वे लाल, बहुला तांत्रिका ॥ त्रू० ॥ तांत्रिका कोइथी पार नाव्यो
कहे एम मंत्रवादीउ ॥ मुफ अछे निर्मल ज्ञान सूधुं; नहीं हुं उन्मा
दीउ ॥ २३ ॥ जेहने निहणे घे लाल, ते निकलंक छे ॥ इणे कांतारे
घे लाल, उछरीया अछे ॥ त्रू० ॥ उछरया एणे व्याल वानर, वाघ नाकिं-
धम वली ॥ ते इहां आव्यो पूर्जीयो फल, फलशुं कपि मन रली ॥ २४ ॥
तेम वली वाघे वे लाल, एहनी नक्तिने ॥ तुफ सुत हणीयो घे लाल,
घलीए शक्तिने ॥ त्रू० ॥ शक्ति वलीए एह नृपण, थापीयुं लेइ एहने ॥ ते माटे
राजन् कहुं तुफने, म मारीश गुणगेहने ॥२५॥ इण द्विज जोसे वे लाल. मोहि-
कने कह्युं ॥ ते कृतघनथी वे लाल, तें सघळुं लह्युं ॥ त्रू० ॥ लह्युं सघळुं
उइ जाणी, हुकम मारणनो कीयो ॥ विच मांहि जातां तेह भुजगे,
एह द्विज अवलोकीयो ॥ २६ ॥ मूकावणने वे लाल, तुफ पुत्री
कसी ॥ जो ए मूको वे लाल, तो जीवे हसी ॥ त्रू० ॥ हसी जीवे राय
पूछे, कोण प्रत्यय ए सही ॥ अवतारीयो जिण मंत्रवादीए, ते नुजंगम
तिहां वसी ॥ २७ ॥ तिणे सवि मान्युं वे लाल, द्विज नृपे मेलीयो ॥ सर्प
सुती घे लाल, विष पाछो लीयो ॥ त्रू० ॥ लीयो विष सा हुइ निर्विष,
हर्ष सहु कोइ लहा ॥ कहे मंत्रवादी निसुणी वाहव, धन्य अहि जाते
कहा ॥ २८ ॥ पंचम खंडे वे लाल, छठी ढालमां ॥ प्रत्युपकारी वे लाल,
एहवी चालमां ॥ त्रू० ॥ चाल एहवी जेह राखे, गुण कर्यो न विसारे ए ॥
मुनि रामवाणी सुणो प्राणी, जइये तस बलिहार ए ॥ २९ ॥ २०९ ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्रूर जीव कृतगुण लहे, न लहे मनुष्य कृतघ्न ॥ उगाय्यो अहिए घने,
...स्युं फसाद विघन ॥ १ ॥ दान सकल मांगी कही, नृप आगल द्विजराज ॥
...इपित राजा थइ. दीधुं देशनुं राज ॥ २ ॥ शिवस्वामी द्विज देश निज,
...जा नागविधान ॥ नागपंचमी पर्वनुं, वरनाव्युं मंडाण ॥ ३ ॥ एह कथा
...पे कही, वानरी आगे सार ॥ मायस जेहवो को नहीं, कृतघ्न घणो
...ार ॥ ४ ॥ जेम डंस दीधुं मोनीए, माणसने निर्धार ॥ तेम तुफ
...स देशे सही, एह निषाद विचार ॥ ५ ॥ जइ महेल ए माहरुं, शुं
धारोगार ॥ हरिप्रिया हर्षे करी, निज जीवित उगार ॥ ६ ॥ कनि-

नारी सारी घणुं, मूके नहीं निषाद ॥ विश्वासे रह्यो माहरे, उंघ्यो मन आह्लाद ॥ ७ ॥ जो नाखुं हुं एहने, तो लागे मुऊ पाप ॥ चिंती अणबोली रही, नहीं मनमां संताप ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीरमाता प्रीतिकारिणी ॥ ए देशी ॥ वाघ वेसी रह्यो तरुतले, मन एम विमासे ॥ धन्य तिर्यंच पण एहवी, धरे प्रीति उल्लासे ॥१॥ धन्य धन्य तेह जग प्राणीया, मल्या तेह जे नापे ॥ दुर्जन डुष्ट नूंमा सही, प्रीति अधविच कापे ॥ ध० ॥ २ ॥ तेह निषाद जब जागीयो, तब वानरी सूती ॥ देइ उत्संग शिर तेहने, सुवे पुण्यपनोती ॥ ध० ॥ ३ ॥ व्याघ्र आवी समीपे कहे, सुण व्याध तुं वात ॥ म कर विश्वास वानरी तणो, सही लहीश उपघात ॥ ध० ॥ ४ ॥ तुं सुखे जीव दीये मुऊने, एह वानरी वाला ॥ सप्त दिन क्षुधित आजीविका, शमे अग्निनी ज्वाला ॥ ध० ॥ ५ ॥ नहीं दीये तो तुऊने सही, थशे डुःखनुं हेतु ॥ वानरजाति कोइनी नोहे, जिम नूत ने प्रेत ॥ ध० ॥ ६ ॥ निसुण न सुएयुं पुररायने, हएयो वानरे मूढे ॥ कहे रे निषाद मुऊ आगले, कहो वात ए रुडे ॥ ध० ॥ ७ ॥ ते कहे नागपुर नयरमां, नृप पावक नामे ॥ एकदा वक्र तुरगे चढी, गयो केलि आरामे ॥ ध० ॥ ८ ॥ अश्व दोमावतां अपहारी, गयो रायने लेइ ॥ नमतां वनमां तृषातुर थयो, उदये अशुन्न आवेइ ॥ध०॥ए॥ एक वानर मल्यो तेहने, फल उत्तम दीधां ॥ वारिसर तास देखामीयुं, नृप कारज सीधां ॥ ध० ॥ १० ॥ वारिपान फलनक्षण करी, तरु शीतल ठांही ॥ राय वेगे तदा पूठथी, सहु आवीयुं धाइ ॥ ध० ॥ ११ ॥ सैन्य साथे नृप पुर वल्यो, ग्रही वानर साथे ॥ जाणी उपकार आपे नला, फल मोदक हाथे ॥ ध० ॥ १२ ॥ पासे राख्यो नृपे तेहने, अंगसेवना काज ॥ मास वसंतमां एकदा, गयो वनंतर राज ॥ ध० ॥ १३ ॥ केलिघर पुष्पक्रीमा करी, नृप शांत थइ सोवे ॥ अंगरक्षक कपि पासे ते, रह्यो चिहुं दिशि जोवे ॥ ध० ॥ १४ ॥ न्रमर गुंजित आव्यो तदा, नृप अंग पर वेगे ॥ खड्गधारी तदा वानरे, निज नयणले दीठो ॥ ध० ॥ १५ ॥ स्वामीनी नक्ति करते थके, कपिबुद्धि उछेदी ॥ न्रमर मारण मिषे रायनी, मूढे कंधरा छेदी ॥ ध० ॥ १६ ॥ जे हुतो अति हितकारीयो, थयो अतिही डुःखकारी ॥ जाति

ए मूढ वानर तणी, किसी एहशुं यारी ॥ ध० ॥ १७ ॥ वात निसु
निपाहे करी, तव वानरी नाखी ॥ वाघ आगल पमी वापमी, धिक् एह
साखी ॥ ध० ॥ १८ ॥ वाघ कहे खेद नवि कीजीये, कस्यो जेह
संग ॥ तेहवुं फल तुफने हुवुं, नहीं नीचथी रंग ॥ ध० ॥ १९ ॥ यडुक्तं
॥ चोपाइ ॥ नीच तणो नव कीजे संग, जो कीजे तो होवे भंग ॥ हाथ
अंगारो महे जे कोय, कां दाके कां कालो होय ॥ १ ॥ दोहो ॥ संगति
कीजे साधुकी, हरे उरकी व्याधि ॥ उंठी संगति नीचकी, आठे पहोर उपाधि
॥२॥श्लोक॥ गुणिनः समीपवर्त्ती, पूज्यो लोकेषु गुणविहीनोऽपि ॥ विमलेक्षण-
प्रसंगा,–दंजनमाप्नोति काणाक्षि ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ तव उत्पन्नमति
वानरी, जणावे निज शाने ॥ हित कहुं प्राण छे माहरा, एह पुछने ठाणे
॥ ध० ॥ २० ॥ आगलथी महो एहने, पछे अंग तुफ हाथे ॥ तेम कस्युं तेणे
देइ पुछने, चडी वृक्षने माथे ॥ ध० ॥ २१ ॥ वाघ विलखो थइने वल्यो,
ययो अदृश्य तिण वेला ॥ उतस्यां वृक्षथी ततक्षणे, नर वानरी भेलां ॥
ध० ॥ २२ ॥ निज लतावास लेइ गइ, अवगुण न संभास्यो ॥ धन्य जगत
जिहां एहवां, करे पशु उपकारो ॥ ध० ॥ २३ ॥ निज शिशु पास मूकी करी,
गइ फूल फल लेवा ॥ डुष्ट भूखे भस्यां वाल ते, जुर्ज नीचना हेवा ॥
ध० ॥ २४ ॥ यडुक्तं ॥ गाथा ॥ अलमेव विहुआणं, सुहमेव अहीण
तहय मंदस्स ॥ दिठ वियं पिसुणाणं, सचं सवस्स जयजणयं ॥ ४ ॥
खंमीकउवि पजालीउवि चुणीकउवि चुण व ॥ जीहाफलाइउवि हु, जणेइ
दाहं अहो पिसुणो ॥ ५ ॥ दोहो ॥ जहा भूप भुयंगमह, ए मुइ डुहिवा
हुंति॥वेरी वींठी वाणीयो,पूठे दाह दीयंत ॥६॥ पूर्व ढाल ॥ फल लेइ आवी ते
वानरी, सूतो ते नर देखी ॥ पासे निज वाल दीठां नहीं, पमी भ्रांति विशे-
शेष ॥ ध० ॥ २५ ॥ तोहि ठगमी तेहने दीयां, फल अति घण
मीठां ॥ वाल जोवा भणी नीकली, तिण साथे नवि दीठां ॥ ध० ॥ २६ ॥
वृक्षशालाहुंती पूरवे, जुर्ज पापीए पाकी ॥ वाल भक्षण कस्यां पण तदा, न
लीली किस्युं आमी ॥ ध० ॥ २७ ॥ जुवो गुणवंत तिर्यंचमां, कह्या सातमी
खे ॥ धन्य जेह कष्ट आवी पडे, एम निज मन वाजे ॥ ध० ॥ २८ ॥२४५॥१८॥
॥ दोहा सोरठी ॥
॥ चिंते डुष्ट विचार, मनमां खेदाकुल थको ॥ अहो महारो व्यापार.

आज सकल निष्फल थयो ॥ १ ॥ खाली केम जाउं गेह, वीजो को मलीयो नहीं ॥ एम चिंती हणी तेह, वानरी खंधे लेइ चढ्यो ॥ २ ॥ जाये घर भणी जाम, प्रगट थइ कहे वाघलो ॥ नीच कर्युं शुं काम, विण वांके हणी वानरी ॥ ३ ॥ पुत्र तणी परे जेण, पापी तुजने पालीयो ॥ हणतां केम करेण, तुज हियडुं चाल्युं इहां ॥ ४ ॥ रे पापीया अजाण, मुह लेइने जा परो ॥ कृतघ्नी तुज समान, अवर कोइ दीठो नहीं ॥५॥ एम निर्भ्रंठी वाघ, विटने मूकीने गयो ॥ कुकर्मजलधि अताग, घेर आव्यो ते पापीयो ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ वात सुणी जनमुख थकी, पुरनाथ कोप्यो ततकाल ॥ जग कर्वां कर्म न कीजीये ॥ ए आंकणी ॥ हुं वानर प्रतिपालना, करुं ए थयो वानरकाल ॥ ज० ॥ १ ॥ आण लोपी एणे माहरी, ग्रही लावो बांधी मुज पास ॥ ज० ॥ काम कर्युं एणे आकरुं, नवि जोयुं रे कांइ विमासी ॥ ज० ॥ २ ॥ यदुक्तं ॥ आज्ञाभंगो० ॥ राजसेवके जइ आणीयो, मार्यो महोकम तेणी वार ॥ ज० ॥ हुकम कर्यो मारवा तणो, लेइ चाल्या ते निर्धार ॥ ज० ॥ ३ ॥ वाघ मल्यो मारग कहे, एहनुं मारण नहीं युक्त ॥ ज० ॥ सेवके जइ नृपने कर्युं, आव्यो कौतुकथी सुणी उक्ति ॥ ज० ॥ ४ ॥ वाघ कहे पापी घणुं, मत मारो एहने राय ॥ ज० ॥ पापी पापे हो आपणे, लेवाये रे एम कहेवाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ विस्मय लही राजा कहे, तुम्हे पशुरूपी नरवाणी ॥ ज० ॥ मुज मन ए कौतुक घणुं, परकाशो तुम्हे गुणखाणी ॥ ज० ॥ ६ ॥ कहे वाघ उद्यानमां आवीया, मुनि भाखशे माहरी वात ॥ ज० ॥ एम कही गयो वाघलो, हरख्यो नृप सुणी अवदात ॥ ज० ॥ ७ ॥ देश थकी काढ्यो परो, नरपतिए ते निषाद ॥ ज० ॥ बहु लोक निर्भ्रंछ्यो अति घणुं, गयो धरी मनमां विखवाद ॥ ज० ॥ ८ ॥ आगमन सुणी गुरुराजनुं, नृप आव्यो वंदन काज ॥ ज० ॥ बेठो आवीने आगले, गुरु देशन दे घनगाज ॥ ज० ॥ ए ॥ गुरु कहे द्रोह न कीजीये, कोइ उपर सुण नरचंद ॥ ज० ॥ वली विश्वासीनो द्रोह जे, सहु पातक मांहे इंद ॥ ज० ॥ १० ॥ नृप अंजलि जोडी कहे, प्रभु भाखो निर्मल

ज्ञान ॥ ज० ॥ कपिनारी मरी किहां गइ, मुफ दाखो मागुं मान
ज० ॥ ११ ॥ कहे गुरु सुण सावधानशुं, मरी तेह गइ सुरलोक ॥ ज०
यडुक्तमागमे ॥ गाथा ॥ तव संजम दाण जुउं, पगईए नद्दउं किवाजूउं ॥ गुरु
यणरउं निच्चं, मरीउं देवेसु जायेइ ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे पुनरपि नृ
गुरु नणी, नाखो मुफने गतशोक ॥ ज० ॥ १२ ॥ त्रिहु नेदे नीच निपाद
ते, कुण गति लहेशे नगवंत ॥ ज० ॥ कहे मुनि नरक विना नहीं, एहने
अन्य स्थानक संत ॥ ज० ॥ १३ ॥ पंचाश्रवने सेवतो, विपये विवशीकृत
जेह ॥ ज० ॥ कृतघ्न निर्दय पापीयो, परद्रोहकारीमां रेह ॥ ज० ॥ १४ ॥
डुर्ध्यानी क्रूराशयी, नर नरक तणो अधिकारी ॥ ज० ॥ कहे मुनिवर
प्रस्तावथी, वीजी दोय गति विस्तार ॥ ज० ॥ १५ ॥ माया नियमीने सेव-
तो, शठतारत होय सदाय ॥ ज० ॥ आर्त्तध्यान मांहे मरी, जीव तिर्यंच-
गतिमां जाय ॥ ज० ॥ १६ ॥ मार्दव आर्जव गुणजर्यो, गतदोष ने अल्पकषाय
॥ ज० ॥ न्यायी गुणग्राही जीवडो, मरीने ते मानव थाय ॥ ज० ॥
१७ ॥ कहे नृप मुनिवरने वली, केम वाघ वोल्यो नरवोल ॥ ज० ॥
सुण नृप कारण एहनुं, पहेले सुरलोके अमोल ॥ ज० ॥ १८ ॥ सामा-
निक सुरनी प्रिया, चवी आवी मनुज मझार ॥ ज० ॥ देवी रखवाल
सुरे मली, पूछ्युं देवी नरतार ॥ ज० ॥ १९ ॥ स्वामिन् एह विमानमां, कुण
देवी होशे इण वार ॥ ज० ॥ कहे ते वननी एक वानरी, लहेशे आवी अवतार ॥
॥ ज० ॥ २० ॥ ते मांहेलो एक देवता, आव्यो करी वाघनुं रूप ॥ ज०
॥ तास परीक्षा कारणे, बोल्यो नरवाणी अनूप ॥ ज० ॥ २१ ॥ निपाद
अने वली वानरी, तेह साथे बहुत विवाद ॥ ज० ॥ कह्यो वली दृष्टांत
कह्यां घणां, मन मांहे धरी आह्लाद ॥ ज० ॥ २२ ॥ वापलरूप गुरुए
कह्युं, नृप निसुणी लह्यो वैराग्य ॥ ज० ॥ निज सुतने राज्य नलावीने, नृप
चरण महे वरुनाग्य ॥ ज० ॥ २३ ॥ राजऋषि हरिषाडजी, पाली संयम-
मत सार ॥ ज० ॥ सौधर्म सुरलोकमां, पाम्यो सुरनो अवतार ॥ ज० ॥
२४ ॥ पंचमे आठमी ढालमां, कही ए मेघरथजी वान ॥ ज० ॥ राम-
विजय कहे सांजलो, हवे श्येन तणो अवदान ॥ ज० ॥२५॥ इति निषाद-
वानरीकथा समाप्ता ॥ सर्व गाथा ॥ २७६ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवहिंसाथी जिम लह्यो, नरक तणो अवतार ॥ ते निषाद परे पंखीया, कां जाये भव हारी ॥ १ ॥ पापकरमथी पामीयो, पंखीभव भव मांहि ॥ वली कुकर्म करवा थकी, दीसे नरकनी चाहि ॥२॥ तव सिंचाणो बोलीयो, तुं सुखीयो राजन्न ॥ धर्माधर्म विचारमां, वरते तहारुं मन्न ॥३॥ मुऊ नक्ष तुऊ शरणुं ग्रह्युं, पण हवे शी मुऊ पेर ॥ क्षुधा राक्षसी हुं ग्रह्यो, जाउं कोने घेर ॥ ४ ॥ सुण वली शाह पुरुष तुं, वांछे नहीं विरूप ॥ राख्यो भूख्यो मुऊने, सघले संत स्वरूप ॥ ५ ॥ भूख्याने सूजे नहीं, कृत्याकृत्य विचार ॥ सांभल शुं जाणे नहीं, नीतिशास्त्र अधिकार ॥ ६ ॥ यडुक्तं ॥ विवेको ह्रीर्दया धर्मो, विद्यास्नेहश्च सौम्यता ॥ सत्त्वं च जायते नैव, क्षुधार्त्तस्य शरीरिणः ॥ १ ॥ प्रतिपन्नमपि प्रायो, लुप्यते क्षुन्निपीमितैः॥ इत्यर्थे नीतिशास्त्रोक्तो, दृष्टांतः श्रूयतां प्रजो ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाह रे अमने रेंटीयडे मंभाण्यां ॥ ए देशी ॥ सुण मेघरथ राजेश्वर वाहला, जीवदयाना रागी रे ॥ भूख उपर एक नीतिशास्त्रनी, वात कहुं वैरागी रे ॥ १ ॥ रायजी मुऊने भूखऊली संतापे रे ॥ भूखऊली निठुरतानुं कारण रे, भूखऊली नेहनुं निवारण रे ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ निर्जल मरुमंऊलमां कूउं, प्रियदर्शन अहि निवसे रे ॥ नीर समीपे बिलमां रहेतां, अहोनिश दिलमां उल्लसे रे ॥ रा० ॥ २ ॥ भेकादिक बहु जीवनुं भक्षण, करतो तिहां सुखे रहेतो रे ॥ एक गंगदत्त दर्दुर संघाते, प्रीति घणी ते वहेतो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ कूपमध्यवासी वली तिहांकणे, एक चित्रलेखा नामे रे ॥ सारिका सुगुणा साथे अहिजी, वहालपणुं घणुं कामे रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ एम करतां कोइ काले द्वादश, वार्षिक हुइ अनावृष्टि रे ॥ जल नीठुं कूपकनुं जलचर, जीव तणी नहीं सृष्टि रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ वृत्तिछेद अहिनो तव हुउं, गंगदत्त पंक खाइ रे ॥ वेला निर्गम करे एक दिन ते, भुजग कहे सुण भाइ रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मित्र घणी पीका छे मुऊने, ते कहे शुं मुऊ भाखो रे ॥ वहालेसर मन मलीयुं तिहांकण, छाना छानी म राखो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ क्षुधावेदना गाढी मुऊने, मित्र तुमे छे जाणो रे॥ मरण समान नहीं जय महोटो, पराजव दलिद्र समाणो रे ॥ रा० ॥८॥

पंथ समान जरा नहीं जगमां, भूख समी नहीं वेयण रे ॥ ते माटे वाल्लेश्वर तिम करी, जिम थिर रहे मुझ चेयण रे ॥ रा० ॥ ए ॥ गंगदत्त चिंते इण कूपक, सघला जीव विणास्या रे ॥ ए डुष्टातमनी मुझ उपर, हणवा दीसे आशा रे ॥ रा० ॥ १० ॥ करी उपाय ए डुष्टातमथी, आप जणी उगारुं रे ॥ स्वारथ साधीजें आपणनो, नीतिवचन संजारुं रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ यतः ॥ स्वार्थं च साधयेद्धीमान्, स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता ॥ नास्त्युपायः स कोऽप्यत्र, येन सर्वोऽपि रज्यते ॥ ३॥ पूर्व ढाल ॥ कहे प्रियदर्शनने ते गंगदत्त,सुण स्वामी तुझ काज रे॥महानदी ड्रहना ललचावी,जल-घर खावुं आज रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ पण तिहां जावा शक्ति नहीं मुझ, चंचुपुटे जित्रलेखा रे ॥ जो उपाडी तिहां पहोंचाडे, करुं उपगार विशेषा रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ थइ प्रसन्न भुजग आदेशे, चित्रलेखा लेइ उडी रे ॥ कोइक महोटा ड्रहमां महेली, वाट जोवे तट रुडी रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ कहे सारिका निसुणो गंगदत्त, कहो वेला केम कीजे रे ॥ स्वामी प्रियदर्शन भूख्या ठे, काज करी आवीजे रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ गंगदत्त कहे सुण चित्रलेखा, वात विचारी करीये रे ॥ भूख्या प्रियदर्शननी संगति, हवे केमही नादरीये रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ सारिकां प्रति गंगदत्तः कथयति ॥ श्लोक ॥ बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणा नरा निःकरुणा जवंति ॥ आख्याहि जद्रे प्रियदर्शनस्य, न गंगदत्तः पुनरेति कूपम् ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ ते माटे तुझने हुं वारुं, म करीश संगति एहनी रे ॥ भूख अने वली काकण वेहु, जगमां नोहे केहनी रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम समजी ते मनमां आठी, पाठी फरी गइ ठाणे रे ॥ श्येन कहे मेघरथजी भूख्यो, कृत्या-कृत्य न जाणे रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ ते माटे मुझने संतोषो, कहे मेघरथ सुण जाइ रे ॥ शामाटे तुं रहे ठे भूख्यो, देउं आहार मगाइ रे ॥ रा० ॥ १ए ॥ कहे पंखी आमिष विण मुझने, अन्य आहार न जावे रे ॥ कहे नृप ते मंगावी आपुं, एम कां आकुल थावे रे ॥ रा० ॥ २० ॥ मुझ नजरे प्राणी तन ठेदी, जो तुं आपे ताजुं रे ॥ तो मुझ आतम संतोषाये, न मले तुझ मुझ वाजुं रे ॥रा०॥२१॥ पंचम खंडे नवमी ढाले, आवी मलीयुं टाणुं रे ॥ हवे मेघरथजी सत्य राखशे, आगल तेह वखाणुं रे ॥ रा० ॥ २२ ॥ ३०४ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवहिंसाथी जिम लह्यो, नरक तणो अवतार ॥ ते निषाद परे पंखीया, कां जाये नव हारी ॥ १ ॥ पापकरमथी पामीयो, पंखीनव नव मांहि ॥ वली कुकर्म करवा थकी, दीसे नरकनी चाहि ॥२॥ तव सिंचाणो बोलीयो, तुं सुखीयो राजन्न ॥ धर्माधर्म विचारमां, वरते तहारुं मन्न ॥३॥ मुफ नक्षे तुफ शरणुं ग्रह्युं, पण हवे शी मुफ पेर ॥ क्षुधा राक्षसी हुं ग्रह्यो, जाउं कोने घेर ॥ ४ ॥ सुण वली शाह पुरुष तुं, वांठे नहीं विरूप ॥ राख्यो नूख्यो मुफने, सघले संत स्वरूप ॥ ५ ॥ नूख्याने सूजे नहीं, कृत्याकृत्य विचार ॥ सांनल शुं जाणे नहीं, नीतिशास्त्र अधिकार ॥ ६ ॥ यडुक्तं ॥ विवेको ह्रीर्दया धर्मो, विद्यास्नेहश्च सौम्यता ॥ सत्वं च जायते नैव, क्षुधार्त्तस्य शरीरिणः ॥ १ ॥ प्रतिपन्नमपि प्रायो, लुप्यते क्षुन्निपीमितैः॥ इत्यर्थे नीतिशास्त्रोक्तो, दृष्टांतः श्रूयतां प्रनो ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाह रे अमने रेंटीयडे मंफाव्यां ॥ ए देशी ॥ सुण मेघरथ राजेश्वर वाहला, जीवदयाना रागी रे ॥ नूख उपर एक नीतिशास्त्रनी, वात कहुं वैरागी रे ॥ १ ॥ रायजी मुफने नूखफली संतापे रे ॥ नूखफली निठुरतानुं कारण रे, नूखफली नेहनुं निवारण रे ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ निर्जल मरुमंफलमां कूउं, प्रियदर्शन अहि निवसे रे ॥ नीर समीपे बिलमां रहेतां, अहोनिश दिलमां उल्लसे रे ॥ रा० ॥ २ ॥ नेकादिक बहु जीवनुं नक्षण, करतो तिहां सुखे रहेतो रे ॥ एक गंगदत्त दर्डुर संघाते, प्रीति घणी ते वहेतो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ कूपमध्यवासी वली तिहांकणे, एक चित्रलेखा नामे रे ॥ सारिका सुगुणा साथे अहिजी, वहालपणुं घणुं कामे रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ एम करतां कोइ काले द्वादश, वार्षिक हुइ अनावृष्टि रे ॥ जल नीवुं कूपकनुं जलचर, जीव तणी नहीं सृष्टि रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ वृत्तिछेद अहिनो तव हुउं, गंगदत्त पंक खाइ रे ॥ वेला निर्गम करे एक दिन ते, नुजग कहे सुण नाइ रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मित्र घणी पीमा ठे मुफने, ते कहे शुं मुफ नाखो रे ॥ वहालेसर मन मलीयुं तिहांकण, ठाना ठानी म राखो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ क्षुधावेदना गाढी मुफने, मित्र दमे ठे जाणो रे ॥ मरण समान नहीं नय महोटो, पराजव दलिद्र समाणो रे ॥ रा० ॥८॥

पंथ समान जरा नहीं जगमां, नूख समी नहीं वेयण रे ॥ ते माटे वाक्षेश्वर तिम करी, जिम थिर रहे मुऊ चेयण रे ॥ रा० ॥ ए ॥ गंगदत्त चिंते इण कूपक, सघला जीव विणास्या रे ॥ ए डुष्टातमनी मुऊ उपर, हणवा दीसे आशा रे ॥ रा० ॥ १० ॥ करी उपाय ए डुष्टातमथी, आप नणी उगारुं रे ॥ स्वारथ साधीजें आपणनो, नीतिवचन संजारुं रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ यतः ॥ स्वार्थं च साधयेद्धीमान्, स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता ॥ नास्त्युपायः स कोऽप्यत्र, येन सर्वोऽपि रज्यते ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे प्रियदर्शनने ते गंगदत्त, सुण स्वामी तुऊ काज रे ॥ महानदी ऊहना लखचावी, जलचर खावुं आज रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ पण तिहां जावा शक्ति नहीं मुऊ, चंचुपुटे जिनलेखा रे ॥ जो उपाडी तिहां पहोंचाडे, करुं उपगार विशेषा रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ थइ प्रसन्न नुजग आदेशे, चित्रलेखा लेइ ऊनी रे ॥ कोइक न्होटा ऊहमां महेली, वाट जोवे तट रुनी रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ कहे सारिका निसुणो गंगदत्त, कहो वेला केम कीजे रे ॥ स्वामी प्रियदर्शन नूख्या ठे, काज करी आवीजे रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ गंगदत्त कहे सुण चित्रलेखा, वात विचारी करीये रे ॥ नूख्या प्रियदर्शननी संगति, हवे केमही नादरीये रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ सारिकां प्रति गंगदत्तः कथयति ॥ श्लोक ॥ बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणा नरा निःकरुणा नवंति ॥ आख्याहि नद्रे प्रियदर्शनस्य, न गंगदत्तः पुनरेति कूपम् ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ ते माटे तुऊने हुं वारुं, म करीश संगति एहनी रे ॥ नूख अने वली काकण वेहु, जगमां नोहे केहनी रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम समजी ते मनमां आठी, पाठी फरी गइ ठाणे रे ॥ श्येन कहे मेघरथजी नूख्यो, कृत्याकृत्य न जाणे रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ ते माटे मुऊने संतोषो, कहे मेघरथ सुण नाइ रे ॥ शामाटे तुं रहे ठे नूख्यो, देउं आहार मगाइ रे ॥ रा० ॥ १ए ॥ कहे पंखी आमिष विण मुऊने, अन्य आहार न नावे रे ॥ कहे नृप ते मंगावी आपुं, एम कां आकुल थावे रे ॥ रा० ॥ २० ॥ मुऊ नजरे प्राणी तन ठेदी, जो तुं आपे ताजुं रे ॥ तो मुऊ आतम संतोषाये, न मले तुऊ मुऊ वाजुं रे ॥ रा० ॥ २१ ॥ पंचम खंडे नवमी ढाले, आधी मलीयुं टाणुं रे ॥ हवे मेघरथजी सत्व राखशे, आगल तेह वखाणुं रे ॥ रा० ॥ २२ ॥ ३०४ ॥ २३ ॥

सुरदेव ॥ ३ ॥ तिण जव अम्हचो रिपु हतो, दमितारि इण नाम ॥ तस तनया अम्हे अपहरी, कीधुं नवलुं काम ॥ ४ ॥ ते जमी जवकांतारमां, जरताष्टापद पास ॥ तापस सुत तपी वालतप, थयो ईशान सुर खास ॥ ५ ॥ इंद्रप्रशंसा सांजली, असदहतो ताम ॥ इहां आवीने जे कह्युं, ते नहीं अजाण्युं काम ॥ ६ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ मोजां मारे सालूडावाली ॥ ए देशी ॥ मेघरथजीना मुखथी निसुणी, सजा सहु जन वाणी ॥ धन्य धन्य ए राजेश्वर गिरुआ, मलीया अमने नाणी रे ॥ १ ॥ ए सुत रुडो रे घनरथजी वालो ॥ प्राण देइ पोताना परगट, पारेवो कस्यो वहालो रे ॥ ए सुत० ॥ ए आंकणी ॥ जीवदया कीधी जेणे वहाली, धन्य जननीनो जायो ॥ अंतेउर पुरजन सहु मली मली, मेघरथजीने गायो रे ॥ ए० ॥ २ ॥ वात सुणी निज जव सुरजवनी, पंखी बेहु समजाणां ॥ जातिसमरण पामी ततक्षण, क्रोध तजी हुआ शाणां रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ कहे स्वामी अम्ह संवेग आव्यो, तुम्ह करुणाथी साचो ॥ हवे प्रकाशो आतमने हित, जाएयो जव करी काचो रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ कहे मेघरथ मदथी मन वालो, समकित सूधुं पालो ॥ पापनाशन अणसण संजालो, निज आतम अजुवालो रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ बेहु पंखी करे अणसण किरिया, उपशमरसना दरिया ॥ संजारे मन पंचम किरिया, सुरजुवने अवतरीया रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ पोषध पारीने कीधुं पारणुं, राज्यलीला सुख विलसे ॥ पण जाणे प्रजाव पोतानो, जाव मांहि दिल उल्लसे ॥ ए० ॥ ७ ॥ परीषह उपसर्गें नवि बीहे, संवेगवासी अदीणो ॥ एक दिन अष्टम करी पडिमाए, मुनि जेम ध्याने लीणो रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ अठ्ठावीश लाख विमाननो स्वामी, अड इंद्राणीनो कामी ॥ एंशी सहस सामानिक केरो, कहे अधिपति शिर नामी रे ॥ ए० ॥ ९ ॥ निज माहात्म्ये निर्जित सहु जग, गतकल्मष जितकामो ॥ जावी जिन तुमने कर जोडी, एह करुं परणामो रे ॥ ए० ॥ १० ॥ पासे रही निसुणी कहे देवी, कुण गुणवंत निहाली ॥ स्वामी तुमे प्रणाम ए कीधो, कहो अम उत्तर वाली रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ इंद्र कहे सुण त्रैलोक्यसुंदरी, नयरी पुंडरीगिणीस्वामी ॥ मेघरथ अष्टम तप रह्यो ध्याने, तास नम्यो शिर नामी रे ॥ ए० ॥

१२ ॥ ध्यानमां लीन रह्यो जेम योगी, कोइ चलावी न शके ॥ इंद्रादिक बहु देव मले पण, अंश न ध्यानथी चसके रे ॥ ए० ॥ १३ ॥ निसुणी सुरूपा ने अतिरूपा, इंद्र तणी इंद्राणी ॥ आवी चलावा मेघरथजीने, पासे ते उजाणी रे ॥ ए० ॥ १४ ॥ रूप करी रमणीनुं वारु, कामणगारी कांते ॥ सोल शृंगार करीने सुंदरी, आवी उन्नी एकांते रे ॥ ए० ॥ १५ ॥ तन सुकुमारी रूप रसाली, नमुह वनी अणियाली ॥ मेघरथजीने जोवे झाली, कामिनी घणुं लटकाली रे ॥ ए० ॥ १६ ॥ तन अंशुक परहुं करी कामिनी, उन्नी अंगने मोडे ॥ मेघरथजीने निरखे सहामी, पण ते नयण न जोडे रे ॥ ए० ॥ १७ ॥ अम्हे अमरी तुम उपर मोहन, आवी रूपनी मोही ॥ पूरो अम्हारो मनोरथ वहाला, एक वार साहामुं जोइ रे ॥ ए० ॥ १८ ॥ तुज दरिसणनी तरसी प्रीतम, उजाणी अम्हे आवी ॥ मूकी सुरपति जेवो स्वामी, तुम मुज्ज अम जावी रे ॥ ए० ॥ १९ ॥ नयण वयणना चाला करती, वली वली जोवे फरती ॥ मेघरथजीनी ध्यानदशा तव, नहीं तिलमात्र उसरती रे ॥ ए० ॥ २० ॥ भुजआलिंगन देती पासे, आवी कहे नहीं कूडुं ॥ कहे मुखचुंबन करती प्रीतम, ए मुखपंकज रुडुं रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ हाव ने जाव विलास ने विभ्रम, करी करीने ते थाकी ॥ कीधा अनेक उपाय चलाववा, कांई न राख्युं बाकी रे ॥ ए० ॥ २२ ॥ एम अनुकूल कस्या बहुतेरा, आखी रयण विहाणी ॥ पयो प्रजात कग्या नहीं ध्याने, तेह घणुं जंखाणी रे ॥ ए० ॥ २३ ॥ शांत थइ निज रूप देखाडी, स्तुति करवाने लागी ॥ धन्य धन्य मेघरथजी तुम जीवित, रागदशा नवि जागी रे ॥ ए० ॥ २४ ॥ अम चेष्टाए मोह-मयी पण, पुरुष गलीने जाइ ॥ पण लवलेश चल्युं नहीं तुमचुं, चित्त ए अधिक वडाइ रे ॥ ए० ॥ २५ ॥ धन्य तुम्हो कृतपुण्य तुम्हो गो, इंद्र वखाण्या तेहवा ॥ नृमंकुश आखंकल सुगुणा, कोइ नहीं तुम जेहवा रे ॥ ए० ॥ २६ ॥ खमो अपराध न करशुं एहवुं, पुनरपि काम कदापि ॥ मेघरथजी खमो घणुं पस्ताणी, तुमने इहां संतापी रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ ते अमरी पहोती निज स्थानक, मेघरथ पडिमा पारी ॥ करे पारण विधिशुं बहु साथे, देव गुरुने संजारी रे ॥ ए० ॥ २८ ॥ धन मनना थकीया दृढधर्मी,
॥

मेघरथजीने वंदो ॥ पंचम खंडे ढाल अग्यारमी, राम कहे चिर नंदो रे ॥ ए० ॥ १ए ॥ सर्व गाथा ॥ ३६ए ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राजसजा जोमी, बेठा मेघरथ राय ॥ वनपालक आवी करी, अरज करे सुखदाय ॥ १ ॥ स्वामिन् तुम मनवल्लहा, वनमां बहु परिवार ॥ समवसस्या घनरथ प्रजु, जगतीजन आधार ॥ २ ॥ देइ पारितोषिक घणुं, धन हिरण्यनी राशि ॥ मेघरथजी परिवारशुं, वंदण चल्या उल्लास ॥ ३ ॥ जिनवर वांदी जावशुं, बेठा मनने कोम ॥ दीये देशन प्रजु जवि जना, निसुणे बे कर जोमी ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी वणजारानी ॥ सुणो प्राणी जी ॥ कहे घनरथजी जगवान्, ध्यान धरो मन धर्मनो ॥ सुणो प्राणी जी ॥ सु० ॥ सहु आय ए अथिर निदान, फलपाक ए शुज कृतकर्मनो ॥ सु० ॥ १ ॥ सु० ॥ मेली अनंती वार, पुज्गल-राशि ए प्राणीए ॥ सु० ॥ सु० ॥ फरी फरी चाहे तास, शी मति तास वखाणीये ॥ सु० ॥ २ ॥ सु० ॥ नहीं कोइनुं जग कोय, स्वारथनुं सहुए सगुं ॥ सु० ॥ सु० ॥ जेहने मलीये आपणो जाणी, ते जाणे एहने ठगुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ नवि जाणे ठगातो आप, मायाविलुब्धो जीवको ॥ सु० ॥ सु० ॥ ए तो ज्ञाननयणे करी अंध, शुं करे सद्गुरु दीवमो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ दुलहां जे चउ अंग, तेहमां मूल तुम्हे लह्यो ॥ सु० ॥ सु० ॥ हाशुं न आवे हाथ, पठे कहेशो जे नवि कह्यो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ साथे न आवे कोय, धन रमणी नवि ताहरी ॥ सु० ॥ सु० ॥ जाणे तुं मूढ सजाव, में मेली ए माहरी ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ मान चढ्यो मद जोर, हुं करतां ए जावनो ॥ सु० ॥ सु० ॥ ए व्यवहारनी चाल, निश्चय आप सजावनो ॥ सु० ॥ ७ ॥ सु० ॥ जो सुखनां रे सरिख, तो दुःखकारण कां वहो ॥ सु० ॥ सु० ॥ ते सुखनुं एक हेतु, सार धर्म ते सद्दहो ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥ परहरीने परमाद, धर्म करे जे उम्मह्या ॥ सु० ॥ सु० ॥ आपद पण होय सुख, सूर तणी परे सुख लह्यां ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥ इण अवसर गणधार, पूठे सूर कवण हुउं ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहे घनरथजी अरिहंत, धर्म तणुं माहातम जुउं ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ जंबूद्वीप मकार,

मध्य खंममां जारते ॥ सु० ॥ सु० ॥ धरणीप्रतिष्ठित नाम, पुर गुणसमुदायांचिते ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ तिहां प्रजाप्रतिपाल, वीरसेन नामे जयो ॥ सु० ॥ सु० ॥ न्यायवंतमां लीह, धर्म करणने अलजयो ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ धारिणी नामे देवी, मनुं देवी धरणी गता ॥ सु० ॥ रायने वल्लज जोर, महीयलमां मोहनलता ॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ एक दिन सूती सेज, सुपनुं लहे सुरराजनुं ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहे पीयुने धरी नेह, धन्य विहाणुं मुफ आजनुं ॥ सुणो स्वामी जी ॥ १४ ॥ सुणो स्वामी जी ॥ में जातो दीठो इंड, मुह आगल फल शुं हशे ॥ सुणो स्वामी जी ॥ सुणो राणी जी ॥ तुम सुत होशे वलवंत, जाव पलाचल पामशे ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ राणी रे आवी धाम, नव मसवाडे सुत जएयो ॥ सु० ॥ सु० ॥ "देवराज" इति नाम, दीध महोत्सव अति घणो ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ ते वधते वली एक, रयणसमे सृप उजलो ॥ सु० ॥ सु० ॥ दीठो निज उत्संग, क्रीमा करतो अति जलो ॥ सु० ॥ १७ ॥ सुणो राणी जी ॥ निसुणी कहे नरइंद, तुफ सुत होशे सुंदरु ॥ सु० ॥ सु० ॥ सृपज्ञ परे वलवंत, होशे राजधुरंधरु ॥ सु० ॥ १८ ॥ सुणो प्राणी जी ॥ थयो जन्मसमय सुखकार, "वत्सराज" अजिधा ठवी ॥ सु० ॥ सु० ॥ वरत्यो जयजयकार, जाग्यदशा जागी नवी ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ वरस थयां जब आठ, तब निशाले मूकीयो ॥ सु० ॥ सु० ॥ सकल कला तिण सार, शिखी किहां नवि चूकीयो ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ पुण्य तणी ए वात, पुत्र सुगुण एहवा मले ॥ सु० ॥ सु० ॥ पंचमे खंडे बारमी ढाल, पुण्य थकी वांछित फले ॥ सु० ॥ २१ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७४ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरसेन नृप एकदा, दाघज्वरने रोग ॥ अति आतुर अंगे थयो, लवल कर्मनो जोग ॥ १ ॥ पृथिवीपति पीमित थयो, तस दुःखे परिवार ॥ दुःखीयो सवि एकत्र मली, एणी परे करे विचार ॥ २ ॥ वये वडो गुणे नानको, देवराज नृपनंद ॥ पण गुण महोटो वय लघु, वत्सराज सुखकंद ॥ ३ ॥ जगमां गुण दीसे वमा, गुण विण वमो न कोय ॥ वमो करंतां दीपने, जुवो घर कहेवुं होय ॥ ४ ॥ वत्सराज होय तो जलो, नरपति सकल सकज्ञ ॥ देवराज वयथी वडो, योग्य नहीं ए रज्ञ ॥ ५ ॥ देव-

राज एम सांजल्यो, लोक तणो आलोच ॥ रखे राजा वत्सराज हुवे, मनमां धरे संकोच ॥ ६ ॥ मंत्रीश्वर हाथे कर्यो, देइ बहु सन्मान ॥ सैन्य गजादिक वश करी, आप थयो राजान ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ पंच सयां धण परहरी ॥ ए देशी ॥ नृप वीरसेनजी सांजल्युं, पुरपति हुओ देवराजो रे ॥ आधि ने व्याधि निपीमीयो, कहे ए कीधुं अकाजो रे ॥ १ ॥ धिक् धिक् राजनी मोहनी ॥ ए आंकणी ॥ न गणे बंधव साजो रे ॥ नेह न राखे रे बापशुं, एम कहे नरराजो रे ॥ धि० ॥ २ ॥ गुरुवंशी ए वैरी रह्यो, अगुणी आगल कीधो रे ॥ पण मुज कांइ चले नहीं, निंगिन काज न सीधो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ राज लही देवराजीयो, थयो दर्पीयो सरराणो रे ॥ सहु सामंतने वश करी, देश मांहे गवराणो रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ जन अनुराग न को धरे, सहु वत्सराज वखाणे रे ॥ एक माताना रे उदरना, पण अंतर बहु जाणे रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ राजसजामां रे नित्य प्रते, आवे वत्सराज कुमारो रे ॥ विनयी थका बंधव तणो, विनय न चूके लगारो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ कुण आंजे नयन मृगांगना, कोण चितरे मोरनां पिंछो रे ॥ उत्पलदल गंधि कुण रचे, एम उत्तम विनयने प्रीछो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ सहज विनयगुण देखीने, सकल प्रजा धरे रागो रे ॥ कहो वत्सराज समोवडे, नहीं नृपसुत वडनागो रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दुष्ट हृदयनो रे चिंतवे, मंत्रीशुं देवराजो रे ॥ गुणे वधतो जन वालहो, वैरी ए वत्सराजो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥ राज्य हरशे रे आपणुं, बांधव एह म जाणो रे ॥ शत्रु वध्यो गुण नवि करे, नीतिनुं वचन प्रमाणो रे ॥ धि० ॥ १० ॥ वेहु मळ्या दुर्बुद्धिया, वायु अनल जेम होइ रे ॥ करे कुविकल्पनी कल्पना, कीजे उपाय ए कोइ रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ कहे मंत्री सुण साहिबा, जो इहां रहे वत्सराजो रे ॥ तो नहीं हित तुजने सही, एम जाणो महाराजो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ काढो बाहिर एहने, पुरथकी इण वारे रे ॥ करशे अनिष्ट कनिष्ट ए, पाम्युं राज म हारो रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ नृप मनमां वसी वातडी, निर्बुद्धि थइ निर्जोगे रे ॥ बंधव तेहने हकारीओ, बेठो वयण कठोरे रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ तेडी कहे वत्सराजने, जा तुज नगरने मूकी रे ॥ कुबजी खड्या रे चोरीने, पोठो मीतिने मूकी

रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कहे वत्सराज विचारीने, बांधव आण प्रमाणो रे ॥ आव्यो मंदिर मातने, नमवा संत सुजाणो रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ चरण नमी आगल रह्यो, बोले सुण गुणवाडी रे ॥ सगे रे सहोदरे काढीयो, देशहुंती मुने मात्मी रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ वात सुणी दुःखणी थइ, नयण झरे बहु नीरो रे ॥ हृदय जराइ रे आवीयुं, लूहे आंसुमां चीरो रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ सुण वत्स तुज विण माहरा, प्राण घणुं अकलाये रे ॥ जीवन जाया रे तुज विना, घनी वरसां सो थाये रे ॥ धि० ॥ १९ ॥ तुज विण मंदिर मालीयां, ए मुज खावा धायो रे ॥ तुज विण रयणी वेरण थइ, मुजने केमही न जायो रे ॥ धि० ॥ २० ॥ माटे वत्स सुण माहरा, आवीश तहारी हुं साथे रे ॥ सुख दुःख सहेशुं रे एकठां, मात ग्रही रही हाथे रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ वत्स कहे सुण मावडी, अति विषमो परदेशो रे ॥ तुम्हे इण मंदिरमां रहो, द्यो मुजने आदेशो रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ माय कहे सुण बालुडा, शी ए वात प्रकाशो रे ॥ इहां रहेवुं मुज नवि गमे, तुज श्वासे मुज श्वासो रे ॥ धि० ॥ २३ ॥ अरथ नहीं देवराजशुं, जे तुजने अपकारी रे ॥ वहेन संघाते रे आवशुं, तुज साथे निर्धारी रे ॥ धि० ॥ २४ ॥ सुत मात्मी मासी वली, कीध विचार विमासी रे ॥ राम कहे खंड पंचमे, तेरमी ढाल ए जाषी रे ॥ धि० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोषे चढ्यो तव राजीयो, देवराज तेणी वार ॥ वाहन सवि खोंची लीयां, माय तणां निर्धार ॥ १ ॥ वत्सराज वहालो कीयो, इण मूक्यो मुज आज ॥ स्यानी ए मुज मावडी, अंश न राखुं लाज ॥ २ ॥ जे कोइ जाशे पहोनी, साथे सेवक आज ॥ तेहने में हणवो सही, एम बोले देवराज ॥ ३ ॥ नहीं आजूषण तेहवां, नहीं वसन शुज पास ॥ उदाली लीधां सवे, अहो अहो कर्मविलास ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ दुःखनी मारी हे, सूतीथी सरोवरीयारी पाल हे, कागदीयो न आयो महारा राज, विण परदेशारो ॥ ए देशी ॥ दुःखनी मारी हे, मायनी नयण झरंते नीर हे, सुतने रे स्नेहने बहेनी साथ, बाहेर नीसरी ॥ पुरना वासी हे, निसुणीने वात मल्यां नरवृंद हे, हा हा ए हुवो कवण प्रकार, सुध

राज एम सांजल्यो, लोक तणो आलोच ॥ रखे राजा वत्सराज हुवे, मनमां धरे संकोच ॥ ६ ॥ मंत्रीश्वर हाथे कस्यो, देइ बहु सन्मान॥ सैन्य गजादिक वश करी, आप थयो राजान ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ पंच सयां धण परहरी ॥ ए देशी ॥ नृप वीरसेनजी सांजल्युं, पुरपति हुउं देवराजो रे ॥ आधि ने व्याधि निपीमीयो, कहे ए कीधुं अकाजो रे ॥ १ ॥ धिक् धिक् राजनी मोहनी ॥ ए आंकणी ॥ न गणे बंधव लाजो रे ॥ नेह न राखे रे बापशुं, एम कहे नरराजो रे ॥ धि० ॥ २ ॥ गुणवंतो ए वेगलो रह्यो, अगुणी आगल कीधो रे ॥ पण मुज कांइ चले नहीं, चिंतित काज न सीधो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ राज लही देवराजीयो, थयो बलीयो सपराणो रे ॥ सहु सामंतने वश करी, देश मांहे गवराणो रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ जन अनुराग न को धरे, सहु वत्सराज वखाणे रे ॥ एक माताना रे उदरना, पण अंतर बहु जाणे रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ राजसजामां रे नित्य प्रते, आवे वत्सराज कुमारो रे ॥ विनयी वमा बंधव तणो, विनय न चूके लगारो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ कुण आंजे नयन मृगांगना, कोण चितरे मोरनां पिंठो रे ॥ उत्पलदल संधि कुण रचे, एम उत्तम विनयने प्रीठो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ सहज विनयगुण देखीने, सकल प्रजा धरे रागो रे ॥ अहो वत्सराज समोवडे, नहीं नृपसुत वमजागो रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ डुष्ट हृदयनो रे चिंतवे, मंत्रीशुं देवराजो रे ॥ गुणे वधतो जन वालहो, वैरी ए वत्सराजो रे ॥ धि० ॥ ए ॥ राज्य हरशे रे आपणुं, बांधव एह म जाणो रे ॥ शत्रु वध्यो गुण नवि करे, नीतिनुं वचन प्रमाणो रे ॥ धि० ॥ १० ॥ बेहु मल्या डुर्बुद्धिया, वायु अनल जेम होइ रे ॥ करे कुविकल्पनी कल्पना, कीजे उपाय ए कोइ रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ कहे मंत्री सुण साहिबा, जो इहां रहे वत्सराजो रे ॥ तो नहीं हित तुजने सही, एम जाणो महाराजो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ काढो बाहिर एहने, पुरहुंती इण वारो रे ॥ करशे अनिष्ट कनिष्ठ ए, पाम्युं राज म हारो रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ नृप मनमां वसी वातमी, निर्लज्ज थइ निठोरो रे ॥ बंधव तेहने अवगुणी, बोले वयण कठोरो रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ तेमी कहे वत्सराजने, जा मुज नयरने मूकी रे॥ कुलनी लज्जा रे लोपीने, बोल्यो नीतिने चूकी

रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कहे वत्सराज विचारीने, बांधव आण प्रमा
रे ॥ आव्यो मंदिर मातने, नमवा संत सुजाणो रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ चर
नमी आगल रह्यो, बोले सुण गुणवाडी रे ॥ सगे रे सहोदरे काढीयें
देशहुंती मुने मामी रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ वात सुणी दुःखणी थइ
नयण ऊरे बहु नीरो रे ॥ हृदय जराइ रे आवीयुं, लूहे आंसुमां चीरो रे
॥ धि० ॥ १८ ॥ सुण वत्स तुऊ विण माहरा, प्राण घणुं अकलाये रे ॥
जीवन जाया रे तुऊ विना, घमी वरसां सो थाये रे ॥ धि० ॥ १९ ॥
तुऊ विण मंदिर मालीयां, ए मुऊ खावा धायो रे ॥ तुऊ विण रयणी
वेरण थइ, मुऊने केमही न जायो रे ॥ धि० ॥ २० ॥ माटे वत्स सुण
माहरा, आवीश तहारी हुं साथे रे ॥ सुख दुःख सहेशुं रे एकठां, मात
मही रही हाथे रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ वत्स कहे सुण मावमी, अति विषमो
परदेशो रे ॥ तुम्हे इण मंदिरमां रहो, थो मुऊने आदेशो रे ॥ धि० ॥
२२ ॥ माय कहे सुण बालुमा, शी ए वात प्रकाशो रे ॥ इहां रहेवुं मुऊ
नवि गमे, तुऊ श्वासे मुऊ श्वासो रे ॥ धि० ॥ २३ ॥ अरथ नहीं देवरा-
जशुं, जे तुऊने अपकारी रे ॥ बहेन संघाते रे आवशुं, तुऊ साथे निर्धारी
रे ॥ धि० ॥ २४ ॥ सुत मामी मासी वली, कीध विचार विमासी रे ॥ राम
कहे खंम पंचमे, तेरमी ढाल ए जासी रे ॥ धि० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोषे चढ्यो तव राजीयो, देवराज तेणी वार ॥ वाहन सवि खोंची
लीधां, माय तणां निर्धार ॥ १ ॥ वत्सराज वहालो कीयो, इण मूक्यो मुऊ
आज ॥ इयानी ए मुऊ मावमी, अंश न राखुं लाज ॥ २ ॥ जे कोइ जाशे
एहोनी, साथे सेवक आज ॥ तेहने में हणवो सही, एम बोले देवराज
॥ ३ ॥ नहीं आजूषण तेहवां, नहीं वसन शुज पास ॥ उदासी लीधां सवे,
अहो अहो कर्मविलास ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ दुःखनी मारी हे, सूतीथी सरोवरीपारी पाल हे, फागटीयो न थायो
महारा राज, विण परदेशरो ॥ ए देशी ॥ दुःखनी मारी हे, मायमी नयण
ऊरंते नीर हे, सुतने रे लेइने बहेनी साथ, बाहेर नीसरी ॥ पुरना वासी
, निसुणीने बात मल्यां नरवृंद हे, हा हा ए हुवो कवण प्रकार, सुण

बुध विसरी ॥ १ ॥ धिक् धिक् सुतने हे, नेहभखो ठांमीने दीधो छेह हे नफट निहेजो महारा राज, राजा ए हुवो ॥ कांहीं न चाले हे, जोरावर जे आपण कीधां कर्म हे, उदये एम आवे महारा राज, प्रत्यक्ष ए जुउ ॥ २ ॥ कोइ न करशो हे, कोइ न करशो गर्व गुमान हे, साथे ते कमाइ महारा राज, आवे थाहरी॥सहु स्वारथना हे, स्वारथना सहुए छे जगमां मित्त हे, पमती रे वेलामां महारा राज, न कोइ पाहरी ॥३॥ रोयण लाग्यां हे, पुरवासी साजननां वृंद हे, फट फट रे अन्यायी महारा राज, देव तें शुं कखुं॥ वत्स सारीसा हे, वत्सने सारीसा कुमर सुजाण हे, वनमां रे काढतां थारुं राज, काज किस्युं सखुं ॥ ४ ॥ साजन महारा हे, में तां थाहारा पगनी रजने तोल हे, प्रजा पोकारे उजी राज, जीवनजी रहो ॥ साहिब महारा हे, ए हुउं कवण विचार हे, उना रे रहीने महारा राज, वातमली कहो ॥५॥ कुंवर बोले हे, सहुने छे महारो जुहार हे, गुनह खमेजो महारा राज, जे कीधो होय थाहरो ॥ कुंवर बोले हे, वहेलां मिलस्यां आवी कहेस्यां वात हे, हमणां रे न टकाये महारा राज, वीरो कोप्यो माहरो ॥ ६ ॥ पुरशुं चाल्यां हे, साथे माता ने मासी दोय हे, आगल चालतां वाटे राज, सबल वेला पमी ॥ कुंवर नानो हे, साथे घरमी डोकरमी दोय नारी हे, मारग मांहे भूलां महारा राज, एम आपद नमी ॥ ७ ॥ कोने कहीये हे, कोने कहीये सुख दुःखमांनी वात हे, एवो रे नहीं कोइ महारा राज, कान देइ सुणे ॥ त्रिहु जण चाले हे, त्रिहु जण किहांइक सरोवरीयारी पाल हे, उनां रे न राखे महारा राज, कोइ घर आंगणे ॥ ८ ॥ डोशी महारी हे, दीसो छो सबल सुंहाली जाति हे, कहोने किण कारण महारा राज, सुत लेइ नीसस्यां ॥ दुःखनी मारी हे, धारिणी राणी कहे ताम हे, अमे दोय मोशी महारा राज, परमेश्वरनां विसस्यां ॥ ए ॥ दुःखनी मारी हे, कंथ विहूणी सुत लेइ साथ हे, चाल्यां रे वतेश महारा राज, अमे परदेशमां ॥ उत्तर देवे हे, उत्तर देवे लोक जणी ते थाम हे, कोइ नथी रे महारो राज, एवा वेशमां ॥ १० ॥ अनुक्रमे आयां हे, देश अवंती मांहे नयरी उज्जेणी हे, वामीमां वमजाया महारा राज, विशामो लीयो ॥ धारिणी चिंते हे, फट फट रे तें देव कीशुं ए कीध हे, मुने वीरसेनवधूने कष्ट सबल दीयो ॥ ११ ॥ भविका सुणजो हे, कहे धनरथजी अरिहंत हे, कीधी रे

कमाइ महारा राज, एम आवे उदे ॥ पंचम खंडे हे, राग अखंडे चोदमी ढाल हे, कठिण न कीजे महारा राज रामविजय वदे ॥ १२ ॥ ४४२ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विमलाने कहे धारिणी, जाउ नयर मजार ॥ जोइ आवो कोइ आशरो, बहेनी प्राणाधार ॥ १ ॥ तुं मुज जीवननी जमी, घइ दुःखनी साखि ॥ साची तुं मानी जणी, जली कनूडी जिख ॥ २ ॥ विमला आवी नयरमां, इत उत जोवे ठाम ॥ पण कोइ बोलावे नहीं, बाइ आवो आम ॥ ३ ॥ एक लक्ष्मी बाइ विना, धाइ न दे कोइ मान ॥ जख्या शहेरमां जामिनी, फिरे विहूणी शान ॥ ४ ॥ सोमदत्तने मंदिरे, जामिनी जमती जूर ॥ पहोती प्रेमे पारखी, दीसे कोइ सनूर ॥ ५ ॥ तात विदेशी तुं थमो, मुज जगिनी जाणेज ॥ वसवानी कोइ जायगा, बतलावो धरी हेज ॥ ६ ॥ कहे शेठ आ उरमी, वसवानी ठे खास ॥ पण जाडुं देशो किस्युं, आगलथी परकाश ॥ ७ ॥ विमला कहे शुं आपीये, जाटक नहीं कांइ पास ॥ पण स्वामी घर ताहरे, घइ रहेशुं दास ॥ ८ ॥ जोजन अमने आपजो, शेठ तमे शिरदार ॥ कुंजरमुखथी कण गिरे, कीमीने आधार ॥ ए ॥ बात कबूल करी तेणे, आवी बहेनी पास ॥ तेमी लावी धारिणी, अंगज सहित उल्लास ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ एण कुंगरीये मन मोहीयुं ॥ ए देशी ॥ धारिणी विमला वत्सराजशुं, तिहां आवी रही शुज ठामो ॥ करे सोमदत्त शेठनी चाकरी, जुउ कर्म तणां ए कामो ॥ १ ॥ जग कीधां हो कर्म न छूटीये ॥ ए आंकणी ॥ एम जाखे हो त्रिजुवननाथ ॥ सुर असुर नरादिक सांजले, सहु सांजले मुनिवर साथे ॥ ज० ॥ २ ॥ जीहो उदरजरण अति दोहिलुं, करे परघर केरुं काजो ॥ वत्सराज चिंते चित्तमां घणुं, हा हा किहां गयुं महारुं राजो ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीहो मुज मारी मासी वली, करतां जेहनी बहु सेवो ॥ ते पाणी जरे परघर रही, अहो अहो ए शुं कखुं देवो ॥ ज० ॥ ४ ॥ वत्सराज चरावे हो वाठरु, जेम तेम चाले गुजरानो ॥ वनमां जमतां एकण दिने, विशमीयो शुज तरुठाणो ॥ ज० ॥ ५ ॥ राजकुंवरना शब्द सुण्या तिहां, करे शस्त्र तणो अज्यास ॥ धेनु चरती हो मूकीने वत्सजी, तिहां पहोतो

धरी उल्लासो ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेह मांहे जइ ऊनो रह्यो, जोवे लक्कनो वेध सुजाणो ॥ यदि चूके समीपग नर तदा, तव थाये वस्न मलाणो ॥ ज० ॥ ७ ॥ जेह विंध्य न चूले हो तेहने, प्रशंसे थइने खुशालो ॥ तेह देखी कलाचार्य चिंते, कोइ दीसे कोविद् वालो ॥ ज० ॥ ८ ॥ तव पूछं कलाचारज तिहां, वत्स तुं कोण किहांथी रे आव्यो ॥ वत्सराज कहे हुं तातजी, देशांतरी एम समजाव्यो ॥ ज० ॥ ए ॥ कहे आचारज हर्षे करी, वत्स लेइ करे धनु तीरो ॥ देखाम कलाकुशलपणुं, अम आगल साहसधीरो ॥ ज० ॥ १० ॥ अवसर जाणीने कला तणो, अतिशय प्रकाशे वीरो ॥ जोइ कुंवर सहु चित्त चमकीया, अहो गुणजलनिधि गंनीरो ॥ ज० ॥ ११ ॥ जीरे नोजन आव्यां हो नावतां, राजकुंवरने काजे रसालो ॥ गुणी जाणीने पासे बेसारीयो, जमाड्यो नाग्यविशालो ॥ ज० ॥ १२ ॥ यतः ॥ कला कलौ कामगवी समाना, सर्वार्थसंसाधनसावधाना ॥ कला विदेशे परमं हि मित्रं, कला समं नास्त्यमृतं पवित्रम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ जीरे संगति सरखानी मली, मन पाम्यो हो प्रीति अपारो ॥ गुणीने हो गुणीशुं गोठमी, सहु जाणे रे एह विचारो ॥ ज० ॥ १३ ॥ यतः । मृगा मृगैः संगमनुव्रजंति, गावश्च गोनिस्तुरगास्तुरंगैः ॥ मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीनिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ॥२॥ पूर्व ढाल॥ दिन वशे वही गयो वातमां, रखवाल विना वरस तेहो ॥ समकाले वली तेह आवीयो, पुरमां सोमदत्तने गेहो ॥ ज० ॥ १४ ॥ कहे शेठजी विमलाने तिहां, आज वहेलां केम वत्सरूपो ॥ रखवाल पहनो वयां गयो, वत्सराज ए कवण सरूपो ॥ ज० ॥ १५ ॥ वाल नावे ए साथे रहुं नहीं, एम वात करंतां तेहो ॥ वत्सराज आव्यो संध्यासमे, मळयो मायने अधिक सनेहो ॥ ज० ॥ १६ ॥ वत्स वेला केम थइ एवमी, कहे कांइक वात विचारी ॥ गुरु टंच आवी वनमां घणी, रह्यो मूइ निद्रां निर्धारी ॥ ज० ॥ १७ ॥ कोइक आवीने जगाडीयो, हमणां हुं आव्यो मारी ॥ [illegible] न क [illegible]
विमला हो प्रीति जाकी ॥ ज० ॥ १८
प्रीति दिन एमज कीधुं ॥ तेने
मीठुं ॥ ज० ॥ १९ ॥ कहे [illegible]
ठामो ॥ परमं विस्काम प [illegible]

जीरे कर्मकरीनुं आकरुं, मुज माथे कलंक असारो ॥ वली ठेलंजा ए
ताहरा, न समाये वत्सकुमारो ॥ ज० ॥ २१ ॥ जीरे वयण सुणी मामी तणां,
घोल्यो वत्सराज कुमारो ॥ माय वाछरुआं चारीश नहीं, नहीं महारो
वंश गमारो ॥ ज० ॥ २२ ॥ ढाल ॥ नहीं चारुं रे नव लख घेनु ॥ ए
देशी ॥ नहीं चारुं रे मोरी माय, ना रे मा नहीं चारुं ॥ महारे केडे
कोण उजाय ॥ ना० ॥ हांरे ए तो दोमीने अलगां जाय ॥ ना० ॥ हांरे ए तो
अटवुं उपवन मांय ॥ ना० ॥ ए आंकणी ॥ श्री वीरसेन नरेश्वर
महारो, सबल पिता गुणधार रे ॥ धारिणी माता तहारो जायो, न करुं
ए काम गमार ॥ ना० ॥ १ ॥ कण बांधी लइ लाकमी हाथे, आखो
दिन केम करवी रे ॥ वर भूख्यो रहीश पण मामी, ए सेवा नादरवी
॥ ना० ॥ २ ॥ कला बहुतेरी महारी शिखी, सघली भूली जवाय रे ॥
सुणो मामी मासी वली महारी, ए मुजने न सोहाय ॥ ना० ॥ ३ ॥
कहेवुं ए सोमदत्तने अमचो, सुत वाछरुआं न चारे रे ॥ मन माने
तेहने ए सोंपो, ठेलंजो न देशो लगारे ॥ ना० ॥ ४ ॥ घणुं करशो तव
घर राखेशो, जेम सो तेम पचास रे ॥ मामी मनमां चिंता न करशो, शी करवी
परआश ॥ ना० ॥ ५ ॥ कहे मामी सुण वत्स वाल्हा, भोजन किहांथी
भरशो रे ॥ जो एहना मुख सामुं जोशो, तो कोइ दिन उदरने भरशो ॥
ना० ॥ ६ ॥ वत्स कहे हुं आजथी भोजन, मन माने त्यां करशुं रे ॥
पण एहनी ठशीयाल न राखुं, जेम तेम करी निर्वहशुं ॥ ना० ॥ ७ ॥
नित्य प्रत्ये राजकुमरनी पासे, भोजन करवा जाय रे ॥ वत्स अवेलो
कां एम आवे, घर तुं कां नवि खाय ॥ ना० ॥ ८ ॥ वत्स एम किम
रीसाणे सरशे, के अथवा जमे क्यांही रे ॥ वात कही मामीने मांनी,
हर्ष लही मन मांहि ॥ ना० ॥ ९ ॥ ढाल विचाले मात ने सुतनी, वत्स चरावण
वात रे ॥ भाखी रे निसुणो भवियण भावे, धन्य धन्य एहनी जाति ॥
ना० ॥ १० ॥ ढाल पूर्वनी ॥ जीरे एक दिन आव्यो हो आंगणे, देखे माय
घणुं दिलगीर ॥ तव पूछे हो शी तुम एवडी, दिल मांहे दीठे पीर ॥ ज०
॥ २३ ॥ वत्स तुं घरचिंता नवि करे, नहीं [illegible] [illegible] को आधार ॥ रखुं
अन्य सर्वे अलगुं इहां, नहीं घर मांहे [illegible] ज० ॥ २४ ॥ जीरे [illegible]
[illegible]नो वास ए सांकडो, तवि [illegible] [illegible] ॥ हांरे [illegible] [illegible]

११

दोहिलां, दोहिलानी न पूगे आश ॥ ज० ॥ २५ ॥ जीरे कहे वत्स साहसि
शिरे, जइ लावुं इंधणजार ॥ मुज एक अपावो कुठारिका, कावाक
तिम सुविचार ॥ ज० ॥ २६ ॥ प्रजात थये सवि तेम कह्युं यश, !
ए पन्नरमी ढाल ॥ खंम पंचमे रामविजय कहे, हवे आगे संबंध रस
॥ ज० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०ए ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खांधे कुहामी लेइ चव्यो, वनह जणी वत्सराज ॥ नानां
जोतो थको, वन गहर तरुराज ॥ १ ॥ जो देखुं कोइ सरल तरु,
छेदी तस खंम ॥ कावा जरीने पूरुं हुं, मनोरथ माय अखंम ॥ २ ॥ ति
एक दीवुं देवकुल, मांहे विराजे यक्ष ॥ जक्ति करे नागरजना, महि
जास प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ तस आगल एक सरल छे, चंदनतरु सुगंध
कुंअर विचारे वासना, चंदननो ए गंध ॥ ४ ॥ तस अनुसारे ति
गयो, साहसथी अहिराज ॥ नासीने दूरे गया, कुमरनां सीध्यां का
॥ ५ ॥ यक्षनुं कानन जाणीने, किणे नवि छेद्यो पूर्व ॥ ते तरु छेदी
लीया, काष्टना खंम अपूर्व ॥ ६ ॥ कावा जरीने चालीयो, निज घर
उजमाल ॥ पुरपोले आव्यो तदा, पोल जमी ततकाल ॥ ७ ॥ ते नगर
मांहे थछे, शाकिनीनुं जय जोर ॥ पुर कपाट नवि उघडे, रवि प्रगट्या
विण कोर ॥ ०॥ रात पमी पाछो वव्यो, आव्यो यक्षने ठाम ॥ कावा त
अवलंबीने, मांहे पेठो ताम ॥ ए ॥ देइ कपाट आमा तदा, मूकी कुहामी
पास ॥ एक देशे सूतो जइ, वत्सराज सुविलास ॥ १० ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ आवे रे उंबगाणा तइारी कांकणीने कुंचे ॥ ए देशी ॥ इण अव-
सर वैताट्यथी रे, मध्यरात्रि मनोहार रे सोहे ॥ आव्यो रे तिहां खेच-
रीनो वृंद मन मोहे ॥ १ ॥ रम्य विमानथी उतरी रे, आवी मंमप मांहि रे
जामा ॥ यौवनना पुर मांहे शोजती ते श्यामा ॥ २ ॥ करी शृंगार टोले मली
रे, करे विनोदनी वात रे वयोली ॥ सहीउं रे आजनी ए यामिनी रंगीली
॥ ३ ॥ रस जरी रमीये रातमां रे, मनमां धरी आणंद रे टोली ॥ नृत्य
कीजे अंग वाली आज जातनोली ॥ ४ ॥ धम धम धमके घूघरी
रे, उम उम ठवती पाय रे बाला ॥ हाथे वीणा ताल लेइ किन्नरी रसाला

॥ ५ ॥ उर कंचुक कसीया जला रे, उंढण नवरंग चीर रे रुमी ॥ कर दीपे कंकणां ने सोवननी चूनी ॥ ६ ॥ थेइ थेइ करती नाचती रे, लीये घुमणली घेर रे माती ॥ विच विच जीणे स्वरे वांसलीने वाती ॥ ७ ॥ कुंचिकाविवरे देखतो रे, मन हरखे वत्सराज रे वारु ॥ जलुं थयुं आज दीठो नाच में दीदारु ॥ ८ ॥ रमी रमी रंग जरी रातमां रे, खेदे जीनां चीर रे धामी ॥ दाण एक कामिनी ते जूतले विशामी ॥ ए ॥ नूतन पहेरी वस्त्रने रे,मूकी जीनां चीर रे दोनी ॥ रात थोमी जाणीने उजाणी लेम घोमी ॥ १० ॥ रजसपणे रयणे जड्यो रे, पमीयो कंचुक एक रे दीपे ॥ जूमितल शोजतो ए इंडुबिंब जीपे ॥११॥ वार उघामी उतावलो रे दोनी लीधो तेणे रे रंगे ॥ मांहे पेठो हार देइ यह्नने प्रसंगे ॥ १२ ॥ आगल जातां सांजल्युं रे, मांहे प्रजावती ताम रे वोली ॥ सहीयरो वारवाण माहरो हुं जूली ॥ १३ ॥ ते कहे जा उतावली रे, - वेगवती लेइ साथ रे चाली ॥ वहेनी तुं चाल वेगे मीली लेइ आवी ॥ १४ ॥ आवी तिहां जोवे घणुं रे, नव दीठो तिण ठाण रे चिंते ॥ किहां गयो नहीं कोइ मानवी एकांते ॥ १५ ॥ शुं थयुं केणे लीधो हशे रे, तेह अमूलक माल रे तहारो ॥ प्राणजीवन महारो ए कंचुउ घणुं प्यारो ॥ १६ ॥ कोण लीये एटली वारमां रे, लागी वेला नहीं कांइ रे आली ॥ प्राणप्रिय देशे मुने आज घणी गाली ॥ १७ ॥ कहे सखी आतुर शुं हुवे रे, नहीं इहां प्राहक कोइ रे धार्यो ॥ तें पण सही इहां कंचुउ विसार्यो ॥ १८ ॥ खोली हमणां काढशुं रे,उट्यो वायुथी डूर रे दीसे ॥ धर मन धीरज विशवाविशे ॥ १९ ॥ जोती ताम विहुं जणी रे, देखी विहंगिका एक तरुडाले ॥ नर इहां गूट कोइ देवसे नीहाले ॥ २० ॥ हार देखी हठ गर्जनां रे, वोली अबला दोय रे प्राली ॥ आप अम कंचुउ तुं हारने उघाडी ॥ २१ ॥ मूरख कांइ मरवा तणी रे, होंश थइ तुज आज रे पापी ॥ किहां हवे जाइश अमने तुं संतापी ॥ २२ ॥ वयण सुणी पण एहवां रे, न घस्यो चित्त लगार रे वीगे ॥ वीरलेन वंशजान साहसिक धीरो ॥ २३ ॥ पक्ष तपो जय आपीने रे, नवि उघाडे हार रे वेइ ॥ आवी दुवन पहार ते मंत्रणुं करेइ ॥ २४ ॥ चालो नयरमां जोइये रे, एहनो लगो कोइ होय रे मीठो ॥ तेहनो घोडाव्यां ए दोडे सही धीठो ॥२५॥ चिंतीने

चाली खेचरी रे, नयरमां सुणवा साद रे उजाणी ॥ कर्मयोगे आवी जिहां धारिणी छे राणी ॥ २६ ॥ सुतविरहे रोवे घणुं रे, धारिणी विमला दोय रे राणी ॥ निकमी हराम हुइ कुःखडे नराणी ॥ २७ ॥ हा वीरसेन नृपवंशना रे,साहसिया शिरदार रे जाया ॥ कोण कष्ट थयुं तुने मेली केम माया ॥ २८ ॥ राज्य तजीने नीसस्यां रे, देशांतर परगेह रे वासे ॥ एह सवे आदस्यां अमे ताहरे नरोंसे ॥ २९ ॥ वत्स इंधणने मोकल्यो रे,अम्हे पापिणीए आज रे जोरे ॥ मन धसुं कुःख अमे नेहडे रे तोरे ॥ ३० ॥ नाम सुणी वत्सराजनुं रे, खेचरी आवी दोय रे पाठी ॥ देवकुले मातरूपे एम बोले आठी ॥ ३१ ॥ हा वत्स जोतां तुं मल्यो रे, खोल्युं सारुं शहेर रे जाइ ॥ मुखडुं देखाम आवी अम्हने उजाइ ॥ ३२ ॥ वत्स विमासे चित्तमां रे, न घटे आणी वेल रे मामी ॥ किम आवे वेरू मांहि आवमी उजामी ॥ ३३ ॥ मुज मामी मासी नोहे रे, ए सही मायारूप रे जाणी ॥ बोलतां में एहनी रे विक्रिया पिछाणी ॥ ३४ ॥ धैर्य धरी बोले नहीं रे, शुं करे एह कंगाल रे पाडी ॥ वाज आवी आफरडी जायशे रे थाडी ॥ ३५ ॥ आण न लोपाइ यक्षनी रे, बोली बोलीने ताम रे थाकी ॥ कथन रह्युं नहीं कहेणनुं रे बाकी ॥ ३६ ॥ रवि उग्यो रजनी गइ रे, खेचरी गइ निज ठाम रे रोइ ॥ जुर्ज एम जाइर्ज कर्मगति कोइ ॥ ३७ ॥ एम संबंध आवी मले रे, शुजनो उदय होवे जाम रे जोते ॥ साहसिक नर वरे लाछ एम पोते ॥ ३८ ॥ यतः ॥ दोहो ॥ साहसियां लछी मिले, नहु कायर पुरिसेह ॥ काने कुंमल रयणमय, आंखे अंजन-रेह ॥ १ ॥ श्लोक ॥ उद्यमः साहसं धैर्यं, बलबुद्धिपराक्रमम् ॥ षडेते यस्य विद्यंते, तस्माद्देवोऽपि शंकते ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ पंचम खंडे सोलमी रे, ढाल कही सुखकार रे राची ॥ वात कहे श्री जिन धनरयजी साची ॥ ३९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ थयुं प्रनात रवि प्रगटीयो, विवर कुंचिका सच्च ॥ सूर्य रुचि नेदी तदा, कुमर लही तव संधी ॥ १ ॥ देवमंदिरथी नीसस्यो, ते कूर्पासक लेइ ॥ श्रीमंड नक्कोटर विचे, मूके रत्न करेइ ॥ २ ॥ कावम लइ खंधे धरी, काष्टखंध लेइ हाथ ॥ निज पुर जणी उनायलो, चाल्यो जिम मृग-

नाथ ॥ ३ ॥ देइ प्रतोलीपालने, काष्ठखंम ततकाल ॥ नयर मांहे
संचस्यो, मलपंतो गजचाल ॥ ४ ॥ जातां परिमल उछल्यो, दिशि अव
लोके लोक ॥ गंध किहांथी एहवो, एम चिंते गतशोक ॥ ५ ॥ ए कोइ
इंधणवाहकु, जाये एम अवहील ॥ कोइ तस बोलावे नहीं, ते पण
चाल्यो सलील ॥ ६ ॥ निज मंदिर आव्यो वही, हरख्यां मासी मात ॥
वत्स जोवरावी वाटमी, एम केम मोरा जात ॥ ७ ॥ वात कही कंचुक
विना, भारो मूकी घर मांहि ॥ खंड एक मासीकरे, दीधो तिण उत्साही
॥ ८ ॥ तस अनुमतथी वेचीयो, गांधीआपण तेह ॥ द्रव्य आणीने
आपीयुं, वत्स हाथ ससनेह ॥ ९ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मुरली सांभलवा जइये ॥ ए देशी ॥ वत्स कहे सुणो मामली, ए
धन ल्यो तुमे सार ॥ न कीजे चाकरी ॥ ए नीठे वली अवरना, करजो
दाम विचार ॥ न कीजे चाकरी ॥१॥ भाडुं आपजो शेठने, मत रहेजो आ-
धीन ॥ न की० ॥ हुं तो सेठाए क्रीडशुं, नयरमां आखो दिन ॥ न० ॥ २ ॥ घेर
आवीश सूवा कारणे, म करशो फिकर लगार ॥ सलूणी मातजी ॥ शी
चिंता तुमने हवे, आव्यो आपद पार ॥ स० ॥ ३ ॥ एम कहीने आवीयो,
राजकुंवरनी पास ॥ सलूणा साहिबा ॥ ते कहे काले कहो किस्युं,
नाव्या अम आवास ॥ सलूणा साहिबा ॥ ४ ॥ ते कहे मुफ शरीरमां,
कांइक हुती आधि ॥ स० ॥ तेणे तुम पासे नावीयो, आज टली अस-
माधि ॥ स० ॥ ५ ॥ कहे पाठक वत्स ताहरुं, कुण स्थानक मुने दाख
॥ स० ॥ कवण जनक माता हुवां, मुफशुं भेद म राख ॥ स० ॥ ६ ॥
कुंवर कहे सुणो तातजी, हमणां म पूछशो वात ॥ स० ॥ प्रस्तावे
सवि माहरो, भाखीश हुं अवदात ॥ स० ॥ ७ ॥ भाव जाणीने तेहनो,
ताणी न पूछ्युं तास ॥ स० ॥ कुंवर ते आपे तेहने, वसन ने भोजन
ग्रास ॥ स० ॥ ८ ॥ पुण्यदशा जागी भली, मान लहे सवि ठाम
॥ स० ॥ पर पण पातानां थयां, अहो अहो पुण्यनां काम ॥ स० ॥ ९ ॥
एक दिवस पाठकवरु, लेइ सवि छात्र संघात ॥ स० ॥ वत्सराजशुं
आवीयो, नृप समीप विख्यात ॥ स० ॥ १० ॥ करी प्रणिपात यथो-
चिते, बेठो तेह कुमार ॥ स० ॥ वत्सराज दीठो तदा, देवकुमर अवतार

॥ स० ॥ ११ ॥ मन रीज्यो राजा घणुं, देखी तास दीदार ॥ स० ॥ अहो पावक कुण बाल ए, रूप कला भंडार ॥ स० ॥ १२ ॥ राजन् एह कुमारनुं, नहीं मुऊ वंशविज्ञान ॥ स० ॥ पण विज्ञाने एहनुं, भूमि नहीं उपमान ॥ स० ॥ १३ ॥ धन्य जननी जेणे उर धस्यो, धन्य पिता कुल वंश ॥ स० ॥ सकल कलाकुशली घणुं, नर मांहे अवतंस ॥ स० ॥ १४ ॥ ज्ञान करे राजा तिहां, कहो निज ज्ञानविचार ॥ स० ॥ कुंवर कलाना सागरु, बोल्या मति अनुसार ॥ स० ॥ १५ ॥ यतः ॥ एकेन पृष्टं ॥ दोहो ॥ कामिनी दो अक्षर तणी, कामणगारी जाण ॥ जेह थकी सवि ऊलखे, अक्षर भेद विनाण ॥ १ ॥ वत्सेनोक्तं ॥ कीकी ॥ अपरेण पृष्टं ॥ कुण मुखमंमण नारीनुं, कुण जग जीवाडंत ॥ कुण सोलम शृंगारमां, एकण शब्दे हुंत ॥ २ ॥ वत्सेनोक्तं ॥ तिलकं ॥ अन्येन पृष्टं ॥ छप्पय ॥ त्रिहु अक्षरनुं नाम, प्रथम अक्षर मुनिपेखे ॥ बीजो लेहे जोय, वर्ण त्रीजो त्रिहु मध्ये ॥ पद पिहुं अक्षर पूर्व, सयल नारीलम कहीये, बीजुं पद दोय वर्ण, तास गुण पार न लहीये ॥ एम विहुं पद त्रिहुं अक्षरे, मली नाम जे नीपजे ॥ ते तूठे पुहवीतले, तो सकल मनोरथ संपजे ॥ ३ ॥ वत्सेनोक्तं ॥ महीश ॥ अपरेण पृष्टं ॥ दोहो ॥ निज बोले पहेलो शब्द, बीजो बोले नाश ॥ ए बिहु शब्दे नीपजे, ते राखीजे पास ॥ ४ ॥ वत्सनोक्तं ॥ स्वन ॥ वत्सेन पृष्टं ॥ चोपाइ ॥ प्रथमक्षर विणु कामिनी वहाली, मध्यमाक्षर विणु राख नीहाली ॥ अंत्याक्षर विणु सरिखुं नाम, त्रिहु अक्षरने करुं प्रणाम ॥ ५ ॥ नृपेणोक्तं नृपतिरिति ॥ पूर्व ढाल ॥ अवर विशेषे नरकला, देखाडे नृपनंद ॥ स० ॥ वत्स सवाइ तेहथी, नृप लह्यो आनंद ॥ स० ॥ १६ ॥ हर्षित थइ राजा कहे, वत्स कहो तुऊ वंश ॥ स० ॥ ढांकयां माती नवि रहे, अर्थ वली परसंस ॥ स० ॥ १७ ॥ वत्स विचारे चित्तमां, अवसर मलीयो आज ॥ स० ॥ अवसर जोइने जे कहे, तेहनी वाधे लाज ॥ स० ॥ १० ॥ यतः ॥ छप्पय ॥ गइ भूमि हुंवे, गइ संपत्ति फिर आवे ॥ जग मूकी पलवे, अवधि फरी फरी फल पावे ॥ विसरी विद्या विकट, गोय पढके फिर लीजे ॥ जो कबु कीयो अधर्म, सो फिरके धर्म कीजे ॥ जीव मरी फरी अवतरे, जीवे जिहां जस गाइये ॥ कवि गंग कहे वे गुणिपणो, पण अवसर कबहु न पाइये ॥ १ ॥ तात कही निज मूवरी, मांनीने वत्सराज ॥ स० ॥ कर्मकथा सुणी

सहु कहे, अहो अहो जुउं महाराज ॥ स० ॥ १ए ॥ राजमहोल उ
रही, कमलश्री सुणी ताम ॥ स० ॥ मासी वत्सकुमारनी, भ्रांति प
कहे श्याम ॥ स० ॥ २० ॥ हे वत्स विमला धारिणी, इहां आव्यां
साच ॥ स० ॥ स्वामिनी आवी रह्यां इहां, कहे सुणी कंतने वाच
स० ॥ २१ ॥ वालेसर महारी बनी, दोय बहेन गुणवंत ॥ स० ॥ मलवा-
ने जाउं तेहने, हुकम करो मुज कंत ॥ स० ॥ २२ ॥ हर्षेशुं हुकम कीयो
नृपे, तेने जइ तेमी लावो ॥ सलूणी सुंदरी ॥ बहेन सगी मानी जणी, जाग्ये
मिल्यो ए बनाव ॥ स० ॥ २३ ॥ वाल्लेसर इण शहेरमां, दोहिला एटला
दिह ॥ स० ॥ ठानां रह्यां जाण्यां नहीं, कहेवाये किम दुःख जीह
॥ स० ॥ २४ ॥ राणी चढी वर हाथणी, साथे बहु परिवार ॥ स० ॥
आवी ठत्र धरावती, शेठ तणे दरबार ॥ स० ॥ २५ ॥ संभ्रममां बव्यो शेठजी,
करे उपचार अनेक ॥ स० ॥ पंचम खंडे सत्तरमी, ढाल सुणो सुविवेक
॥ स० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ए ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हलफल मांहे शेठजी, भक्तियुक्त बहु जाव ॥ राणी आव्यां मुज घरे,
सबलो भाग्य बनाव ॥ १ ॥ वत्सराज आगल जइ, तुरत वधाइ दीध ॥
मासी आव्यां आपण घरे, वांछित कारज सीध ॥ २ ॥ ए नयरीनो राजीयो,
पहनेवी तुम तास ॥ राणी तुम बहेनी मिलण, आव्यां ए उल्लास ॥
३ ॥ जाणुं हुं वत्स ए सही, लाजे एता दिस ॥ निज आतम गोपवी
रह्यां, पहनी सबल जगीश ॥ ४ ॥ मंदिरहुंती नीसरी, महेलां चीत्र
अंग ॥ अनुसारे तस उलली, पालटीयो तस रंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ सरोवरीयानी पाल, जकाके लाग्यो नयणां ॥ ए देशी ॥ हाथणी-
हुंती उतरी रे, कंठे वलगी धाय ॥ कमलश्री रोती कहे रे, कांइ ए शुं थयुं
...री माय ॥ १ ॥ सुणो सुणो बहेनी रे वयणां ॥ कांइ बोले गद्गद कंठ,
...राइ आव्यां रे नयणां ॥ कांइ मलीयां भाग्य संयोग, आवीने अमने रे
...यणां ॥ ए आंकणी ॥ बहेनी बनी तुम हो माहरी रे, निज माताने
...म ॥ एम अवस्था केम हुइ, कांइ कोप कर्मनां काम ॥ सु० ॥ २ ॥
...वया दुःख न कीजीये रे, सहु बोले एम न्याय ॥ आपद होवे संतने रे,

कांइ संपइ वली तेम थाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ पण आवी तुमेज इहां रे, रहीयां गोपवी आप ॥ ते जेम जेम मुऊने सांजरे रे, कांइ तेम तेम होवे संताप ॥ सु० ॥ ४ ॥ आवे व्यसन एह देवथी रे, नहीं इहां संतने लाज ॥ न वह्यां नयरीमां रह्यां रे, कांइ ए में कीध अकाज ॥ सु० ॥ ५ ॥ हा परघरनी चाकरी रे, तुमे कीधी निर्धार ॥ गाल सबल शिर माहरे रे, कांइ वेठी ए जमवार ॥ सु० ॥ ६ ॥ जेम जेम तुम्ह दुःख सांजरे रे, तेम तेम हृदय जराय ॥ पण सहु ए वश कर्मने रे, कांइ आपणुं कीधुं न थाय ॥ सु० ॥ ७ ॥ किं बहुना हवे हाथणी रे, बहेनी वेसो आवी ॥ कर जोमी करे विनति रे, कांइ शेठ सोमदत्त सद्भाव ॥ सु० ॥ ८ ॥ में अविनय कीधो घणो रे, हीन कराव्युं काम ॥ ते खमजो मुऊ स्वामिनी रे, हुं तुं तुमारे नाम ॥ सु० ॥ ए ॥ ते कहे वांक नहीं किस्यो रे, तुमचो इहांकणे शेठ ॥ फेडे खाव्युं पापीयुं रे, कांइ पेट करावे वेठ ॥ सु० ॥ १० ॥ शहेरमां फरतां अम्ह तणी रे, दीधो तुमे आश्रम ॥ दोहिला दिन बोलावीया रे, कांइ दीयुं अमे आशिष तुम ॥ सु० ॥ ११ ॥ अहित थयुं होय अम्हथी रे, ते खमजो अपराध ॥ तुम्हे गिरुआ गुणवंत छो रे, कांइ उपगारी वली साध ॥ सु० ॥ १२ ॥ खमी खमावी एणी परे रे, आवे नृप आवास ॥ मिलु बहेनी वत्सराजशुं रे, कांइ आनंद अधिक उल्लास ॥ सु० ॥ १३ ॥ नृप उतरवा आपीयुं रे, मंदिर सुंदर एक ॥ सामग्री संयुत करी रे, कांइ राख्यो सबल विवेक ॥ सु० ॥ १४ ॥ सुखे रहेतां वत्सने रे, कहे नृप शी तुऊ चाह ॥ जे मागे ते तुऊने रे, कांइ आपुं धरी उत्साह ॥ सु० ॥ १५ ॥ ते कहे मुऊने ताहरी रे, सेवानो छे कोड ॥ रात दिवस तुम आगले रे, कांइ रहेशुं वे कर जोडी ॥ सु० ॥ १६ ॥ संध्यासमये मुऊने रे, मोकलजो मुऊ गेह ॥ एम कहीने करे चाकरी रे, कांइ हियडे धरी बहु नेह ॥ सु० ॥ १७ ॥ मान घणुं महीपति तणुं रे, माने सघलां लोक ॥ कमठथी पण नित्य प्रते रे, कांइ मयर लीये तजी शोक ॥ सु० ॥ १८ ॥ एक दिवस महीनाथजी रे, विण मोकले वत्सराज ॥ सूतो वासघरे जइ रे, कांइ सुपनमां नर शिरताज ॥ सु० ॥ १ए ॥ यामिक चिहुं दिशे आवीने रे, रहीया तिहां हुशियार ॥ रहा महीं वत्सराजजी रे, पण रहीया घरने वार ॥ सु० ॥ २० ॥ चंदन खंड अढारमी रे, ढाल थइ सुविचार

॥ रामविजय कहे वत्सना रे, कांइ पुण्य तणो नहीं पार ॥ सु० ॥ २१ ॥ ६०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनयवंत उभो रह्यो, सेवक परे वत्सराज ॥ मध्यरात्रि वोली जिस्ये, तव जाग्यो नरराज ॥ १ ॥ श्रवणे निसुणुं दुःखनुं, कामिनीरुदन अपार ॥ मन चिंते महाराजजी, होशे कवण प्रकार ॥ २ ॥ घोलाव्या यामिक भणी, नरपति उंचे साद ॥ पण कोइ वोव्या नहीं, उंध्या निंद प्रमाद ॥ ३ ॥ वत्सराज वोल्यो तदा, थो कारिज आदेश ॥ नृप कहे हजी वेठो अछे, केम न गयो गृहदेश ॥ ४ ॥ विण हुकमे जाउं नहीं, नृप कहे जा निज धाम ॥ प्रेष्यपणुं न घटे तुने, कहीश ए अवरने काम ॥ ५ ॥ वत्स कहे महाराजजी, फरमावो मुज आज ॥ शिर जोरे करशुं सही, नहीं इहां मुज लाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ कहे सखी पीयुडे शुं कयुं ॥ सही मोरी रे ॥ ए देशी ॥ कहे नृप सुण वत्स माहरा ॥ गुणधोरी रे ॥ पलक मांहे मुज आज ॥ खीधुं चित्त चोरी रे ॥ तुज विण कुण रयणी समे ॥ गुणधोरी रे ॥ पविवजो दुष्कर काज ॥ लीधुं० ॥ १ ॥ वत्स जाउं उतावला ॥ गुण० ॥ कोण रोवे ए नारी ॥ ली० ॥ हुकम प्रमाण करी चव्यो ॥ गुण० ॥ साहसिक शिरदार ली० ॥ २ ॥ शब्द तणा अनुसारथी ॥ गु० ॥ करी उल्लंघन वप्र ली० ॥ गयो स्मशाननी नूमिका ॥ गु० ॥ सत्व संघाते क्षिप्र ॥ ली० ॥ ३ ॥ एक प्रदेशे सीमंतिनी ॥ गु० ॥ वसनाजरण विशेष ॥ ली० ॥ शोजे ते सुकुमारिका ॥ गु० ॥ दीठी सुंदर वेश ॥ ली० ॥ ४ ॥ पण रोती अतिही घणुं ॥ गु० ॥ पूछे जइने कुमार ॥ ली० ॥ वहेन रोवे किण कारणे ॥ गु० ॥ कहे मुज दुःख विचार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चाल्यो जा परदेशीया ॥ गु० ॥ शुं तुज पूछण काज ॥ ली० ॥ शक्ति विना उपकारने ॥ गु० ॥ इच्छे मूर्खशिरताज ॥ ली० ॥ ६ ॥ वत्स कहे तुं दुःखिणी ॥ गु० ॥ में मूकी न जवाय ॥ ली० ॥ परदुःखे दुःखीया कह्या ॥ गु० ॥ सज्जन जन जग मांय ॥ ली० ॥ ७ ॥ सा कथयति ॥ यस्य कस्याप्यमे दुःखं न कथ्यते ॥ यडुक्तं ॥ जो नवि दुक्खं पत्तो, जो नवि दुक्खस्स निग्गहसमत्थो ॥ जो नवि दुहिए दुहिउं, ता किस कहिज्जाए दुक्खं ॥ १ ॥ वत्सराजे-

नोकं ॥ जडे श्रृणु ॥ अहमवि डुक्कं पत्तो, अहमवि डुक्खस्स निग्गह-समछो ॥ अहमवि डुहिए डुहिउं,ता अम्ह कहिजाए डुक्कं ॥२॥ पूर्व ढाल ॥ सा कहे सज्जन ते जुदा ॥ गु० ॥ तुं कोण गणती मांहे ॥ ली० ॥ आज्य सुगंध घणो हुवे ॥ गु० ॥ पण तेलने शो गुण थाय ॥ ली० ॥ ८ ॥ केम मुज तुं नवि लेखवे ॥ गु० ॥ श्यो अवगुण तें दीठ ॥ ली० ॥ ते कहे बालक वेशमां ॥ गु० ॥ शुं तुजथी होवे इठ ॥ ली० ॥ ए ॥ कहे वत्स शुं न हणे भरा ॥ गु० ॥ तम उगंतो सूर ॥ ली० ॥ नहानो पण हरिनो शिशु ॥ गु० ॥ भांजे मातंगपूर ॥ ली० ॥ १० ॥ शुं चिंतामणि नानमो ॥ गु० ॥ न करे दारिद्र दूर ॥ ली० ॥ दीपक दीसे वालुउं ॥ गु० ॥ पण करे तम चकचूर ॥ ली० ॥ ११ ॥ एम नहानामां गुण घणा ॥ गु० ॥ तेम मुजने पण जाण ॥ ली० ॥ बोली हसीने जामिनी ॥ गु० ॥ सांजल चतुर सुजाण ॥ ली० ॥ १२ ॥ ए नयरी मांहे वसे ॥ गु० ॥ मुज पीयु पुरुष-रतन ॥ ली० ॥ विण अपराधे नरेश्वरु ॥ गु० ॥ शूलीए विंध्युं ए तन ॥ ली० ॥ १३ ॥ लेइ आवी घृतपूरने ॥ गु० ॥ पीयुमुख देवण काज ॥ ली० ॥ हाथ न पहोंचे माहरो ॥ गु० ॥ रोउं तिण कारण आज ॥ ली० ॥ १४ ॥ कहे वत्स संतशिरोमणि ॥ गु० ॥ चढ मुज उपर खंध ॥ ली० ॥ पूर समीहित ताहरुं ॥ गु० ॥ मुज उपकारनी संधि ॥ ली० ॥ १५ ॥ वाली कछोटो उपरे ॥ गु० ॥ उंची चढी विकराल ॥ ली० ॥ छेदे आमिषपिंमने ॥ गु० ॥ हाथ लइ ते पाली ॥ ली० ॥ १६ ॥ ऊर्ध्व विलोके वत्सजी ॥ गु० ॥ दीठुं कुचेष्टित तास ॥ ली० ॥ खड्ग खेंची कहे रंकिके ॥ गु० ॥ किहां जाइश हवे नासी ॥ ली० ॥ १७ ॥ उंची उर्कतां लेहनां ॥ गु० ॥ परिधान चीवर हाथ ॥ ली० ॥ रहीशं ते नासी गइ ॥ गु० ॥ पापिणी जेम अनाथ ॥ ली० ॥ १८ ॥ घनरथ जिनने एहवे ॥ गु० ॥ पूछे प्राणी कोय ॥ ली० ॥ जगवंत कुण ए कामिनी ॥ गु० ॥ कर्म करे गुण खोय ॥ ली० ॥ १९ ॥ कहे प्रनु देवी डुष्ट ते ॥ गु० ॥ नर ठववाने अधर्म ॥ ली० ॥ करे अहोनिश शंक नहीं ॥ गु० ॥ करती एहवां कर्म ॥ ली० ॥ २० ॥ कहे प्रनु जदण नवि करे ॥ गु० ॥ मांस एह सुर जान ॥ ली० ॥ पण क्रीमा ए तेहोनी ॥ गु० ॥ जाणे नर साक्षान ॥ ली० ॥ २१ ॥ वत्सराज लेइ वस्त्र ते ॥ गु० ॥ आव्यो निज

आवास ॥ ली० ॥ शयन कर्युं सुखीयो थयो ॥ गु० ॥ आनंद लीलविलास ॥ ली० ॥ २२ ॥ पंचम खंडे उंगणीशमी ॥ गु० ॥ ढाल कही ससनेह ॥ ली० ॥ रामविजय कहे रंगशुं ॥ गु० ॥ वरस जयो गुणगेह ॥ ली० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ६३४ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वस्त्र लेइ ते आवीयो, नृप पासे परजात ॥ करी प्रणाम उनो रह्यो, कुंवर कुलविख्यात ॥ १ ॥ नृप आगल सवि रातनो, जाण्यो तेणे विरतंत ॥ वात सुणी विसमय लह्यो, भाखे ते नृकंत ॥ २ ॥ वसन तेह देवी तणुं, आप्युं नरपति हाथ ॥ रयणजडित देखी करी, हरख्यो ते नृनाथ ॥ ३ ॥ राणीने ते सोंपीयुं, हरखी मन अत्यंत ॥ पहेरुं पण कंचुक विना, शोभा ते न लहंत ॥ ४ ॥ राणी कहे प्रीतम सुणी, ए सरिखो कूर्पास ॥ आणी आपो मुजने, प्राणेश्वर सुविलास ॥ ५ ॥ राय कहे वत्सराजने, पहेरण वस्त्र समान ॥ जो कंचुक आणी दीये, तो हुवे हर्ष अमान ॥ ६ ॥ वचन प्रमाण कर्युं तदा, जइ वन चंदनवृक्ष ॥ कोटरथी खेचरी तणुं, आणी आपे दक्ष ॥ ७ ॥ पहेरी सा परसन थइ, भाखी दे आशिष ॥ वत्सराज चिरं जीव तुं, पूरी मनह जगीश ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर ॥ ए देशी ॥ लाजे लोभ घणेरो वाधे, तृष्णा नवि उंलाय रे ॥ जेम जेम पूरणने धन सिंचे, तेम तेम वहुली थाय रे ॥ १ ॥ लाजे० ॥ ए आंकणी ॥ ते वेहु चीवरने अण-सरिखुं, निज उत्तरीय नीहाली रे ॥ कमलश्री करे मन मांहे आरति, कर देह निज जाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥ आरति धरती नृपति नीहाली, पूछ्युं आवी ताम रे ॥ श्याममुखी केम दीसे कामिनी, इयो तुज मन मांहे काम रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ सुणो वालम कहेतां हुं लाजुं, कहे नृप शी मुज लाज रे ॥ सुण सुंदरी ते लाज न कीजे, जेहथी विणसे काज रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ राणी कहे उत्तरीय मले जो, ए सरिखुं अवनीश रे ॥ तो मुज मन संतोष लहे एम, कहे नामी निज शीश रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ नृपति चिंते लोभ तणो ए, थोभ न दीसे कोय रे ॥ कामिनी जाते अवगुण भाये, जगमां वहुलो होय रे ॥ ला० ॥ ६ ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया,

मूर्खत्वमतिलोजता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वजावजाः ॥ १ ॥
पूर्व ढाल ॥ कहे राजन तुज सम नहीं कोइ, अविवेकीण अविचारी रे॥
व्यर्थ मनोरथ वस्तु असत्ता, ए मति नहीं तुज सारी रे ॥ ला० ॥ ७ ॥
कहे राणी प्रीतम ए साचुं, पण मुज आणी आपो रे ॥ प्राणजीवन
मनोवंछित पूरण, तुम उपर अम दापो रे ॥ ला० ॥ ८ ॥ जोजनहठ
लेइ रही राणी, नृप मन चिंता महोटी रे॥ कोपमंदिरमां पेठी कामिनी,
लोजनी जाति ए खोटी रे ॥ ला० ॥ ए ॥ मूरख बाल अने वनितानो,
हठ सबलो जग होवे रे ॥ घरनी चिंता चित्त न आणे, निज सुख साहामुं
जोवे रे ॥ ला० ॥ १० ॥ कहे राजा वत्सराजने तेमी, साहसिया शिर-
दार रे ॥ दिव्य वसन आपीने मुजने, अनरथ कीध विचार रे ॥ ला०
॥ ११ ॥ ए तुज मासी लोजे प्यासी, नहीं संतोष लगार रे॥ उंढणी काज
लीयो हठ सबलो, नहीं कोइ पूरणहार रे ॥ ला० ॥ १२ ॥ कहेण न माने
मानिनी माहरुं, लोजथी लक्षण नाठां रे ॥ सात न पूराये ए नीतिनां,
वयण न दीसे माठां रे ॥ ला० ॥ १३ ॥ यतः ॥ अग्निर्विप्रो यमो राजा,
समुद्र उदरं गृहम् ॥ सप्तैतानि न पूर्यंते, याचंति दिने दिने ॥ २ ॥
॥ पूर्व ढाल ॥ वत्स विचारी कहे सुणो स्वामी, पूरवी मासी आशा रे॥
षटमासाभ्यंतर जो न पूरुं, तो करुं अग्नि प्रवेशा रे ॥ ला० ॥ १४ ॥ कहे
राजन वत्स एम न कीजे, आकरी एह प्रतिज्ञा रे ॥ न कलाये विधि
विविध कलाइ, नियति न चोले विज्ञा रे ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते कहे तुम
प्रसादे रुडुं, राजन् सघलुं थाशे रे ॥ पण मुजने तुमे आपो आणा,
जावी जाव जणाशे रे ॥ ला० ॥ १६ ॥ लेइ नृपआणा मंदिर मांहे,
जननी नमेवा आव्यो रे ॥ कर जोमी रही आगल उजो, सयल विचार
सुणाव्यो रे ॥ ला० ॥ १७ ॥ मोहवशे मामी कहे तें वत्स, दुष्कर अंगी
कीधो रे ॥ वत्स कहे हवे वात ए न फरे, वयणे बोल जे दीधो रे
॥ ला० ॥ १८ ॥ कहे मामी मासी सुण अंगज, तुं अम्ह प्राणाधार रे ॥
केम परदेश जणी मूकाये, मारग विषम अपार रे ॥ ला० ॥ १९ ॥ कहे
वत्स सघलुं रुडुं थाशे, द्यो आशिष पसाय रे ॥ चिंता मत करशो कोइ
महारी, साथे पुण्य सखाय रे ॥ ला० ॥ २० ॥ धीर वीर जाणी कहे
जननी, होजो तुम कल्याण रे ॥ वहेला काज करी वत्स वलजो, सुण

श्रम जीवनप्राण रे ॥ ला० ॥ २१ ॥ मायकी तिलक कर्युं कुंकुमनुं, दीधुं श्रीफल सार रे ॥ दधिजोजन करीने सिद्धि कीधी, श्री वत्सराज कुमार रे ॥ ला० ॥ २२ ॥ कांइक संबल लेइ साथे, पग पालो ते चाल्यो रे ॥ खड्ग खेटक संयुत दक्षिण दिशि, हींडे हर्षेशुं माल्यो रे ॥ ला० ॥ २३ ॥ नव नव जाति विनोदने जोतो, फरतो बहु पुर ग्रामे रे ॥ श्रागल एक श्रटवी तिहां श्रावी, नहीं मानवनुं नाम रे ॥ ला० ॥ २४ ॥ तिहां जातां प्राकारविराजित, लघु पत्तन एक दीठुं रे ॥ देखी विजन वत्सराज विमासे, ए कांइ कौतुक मीठुं रे॥ ला० ॥ २५ ॥ पंचम खंडे ढाल वीशमी, राम मुनि एम जाखे रे ॥ धन्य एहवे गामे जे तिलजर, जय मनमां नवि राखे रे ॥ ला० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६० ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूत प्रेत राक्षस तणुं, दीसे पुर कोइ एह ॥ श्रथवा ए चिंता किसी, जइ जोउं ससनेह ॥ १ ॥ नयर मांहि जोवे जइ, महोटुं मंदिर एक ॥ लघु बीजां तस पांखती, निरखे ते सुविवेक ॥ २ ॥ सजा मांहि बेठो तिहां, दीठो पुरुषप्रधान ॥ तस परिवारने पूठीयुं, ए कोण सुगुणनिधान ॥ ३ ॥ कुण नामे दीसे नगर, कुण स्वामी ए पास ॥ नर बोले ए नहीं नगर, नहीं नरपतिनो वास ॥ ४ ॥ पण इहांथी नहीं ढुकडुं, नहीं वेगलुं सार ॥ जूतिलकाजिध पुर श्रछे, जूरमणी उरहार ॥ ५ ॥ वैरसिंह नामे जलो, वैरी गज पंचास्य ॥ रूपवती राणी तणो, प्रीतम लीलविलास ॥ ६ ॥ तिण पुरमां रंगे रहे, दत्त नामे एक शेठ ॥ दोलतने दोरे करी, सहुए जेहथी हेठ ॥ ७ ॥ श्रीदेवी नामे निपुण, नारी निरुपम रूप ॥ रति दासी कीधी जेणे, मोहनवेली श्रनूप ॥ ८ ॥ तेहनी कुखे उपनी, तनया श्रति सुविनीत ॥ श्रीदत्ता नामे जली, मात पिताने चित ॥ ए ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ जर यौवन श्रावी जली, बाला तन सुकुमाल ॥ लाल रे ॥ रूप कला गुण शोजती, चाले गजगति चाल ॥ लाल० ॥ १ ॥ जुवो विषम गति कर्मनी ॥ ए श्रांकणी ॥ कोणे कली न जाय ॥ ला० ॥ कर्मवशे सहु जीवमा, लहे सुख डुःख समुदाय ॥ ला० ॥ जुवो० ॥ २ ॥ श्रीदत्ता हुइ कर्मथी, दोषाक्रांत शरीर ॥ ला० ॥

मूर्खत्वमतिलोजता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वज्ञावजाः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे राजन तुऊ सम नहीं कोइ, अविवेकीण अविचारी रे ॥ व्यर्थ मनोरथ वस्तु असत्ता, ए मति नहीं तुऊ सारी रे ॥ ला० ॥ ७ ॥ कहे राणी प्रीतम ए साचुं, पण मुऊ आणी आपो रे ॥ प्राणजीवन मनोवंछित पूरण, तुम उपर श्रम दापो रे ॥ ला० ॥ ८ ॥ जोजनहठ लेइ रही राणी, नृप मन चिंता महोटी रे॥ कोपमंदिरमां पेठी कामिनी, लोजनी जाति ए खोटी रे ॥ ला० ॥ ए ॥ मूरख बाल अने वनितानो, हठ सबलो जग होवे रे ॥ घरनी चिंता चित्त न आणे, निज सुख साहामुं जोवे रे ॥ ला० ॥ १० ॥ कहे राजा वत्सराजने तेकी, साहसिया शिरदार रे ॥ दिव्य वसन आपीने मुऊने, अनरथ कीध विचार रे ॥ ला० ॥ ११ ॥ ए तुऊ मासी लोजे प्यासी, नहीं संतोष लगार रे॥ उंढणी काज लीयो हठ सबलो, नहीं कोइ पूरणहार रे ॥ ला० ॥ १२ ॥ कहेण न माने मानिनी माहरुं, लोजथी लक्षण नाठां रे ॥ सात न पूराये ए नीतिनां, वयण न दीसे माठां रे ॥ ला० ॥ १३ ॥ यतः ॥ अग्निर्विप्रो यमो राजा, समुद्र उदरं गृहम् ॥ सप्तैतानि न पूर्यंते, याचंति दिने दिने ॥ २ ॥ ॥ पूर्व ढाल ॥ वत्स विचारी कहे सुणो स्वामी, पूरवी मासी आशा रे॥ षटमासाभ्यंतर जो न पूरुं, तो करुं अग्नि प्रवेशा रे ॥ ला० ॥ १४ ॥ कहे राजन वत्स एम न कीजे, आकरी एह प्रतिज्ञा रे ॥ न कलाये विधि विविध कलाइ, नियति न बोले विज्ञा रे ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते कहे तुम प्रसादे रुडुं, राजन् सघलुं थाशे रे ॥ पण मुऊने तुमे आपो आणा, जावी जाव जणाशे रे ॥ ला० ॥ १६ ॥ लेइ नृपआणा मंदिर मांहे, जननी नमेवा आव्यो रे ॥ कर जोमी रही आगल उजो, सयल विचार सुणाव्यो रे ॥ ला० ॥ १७ ॥ मोहवशे माकी कहे तें वत्स, दुष्कर अंगी कीधो रे ॥ वत्स कहे हवे वात ए न फरे, वयणे बोल जे दीधो रे ॥ ला० ॥ १८ ॥ कहे माकी मासी सुण अंगज, तुं अम्ह प्राणाधार रे ॥ केम परदेश जणी मूकाये, मारग विषम अपार रे ॥ ला० ॥ १ए ॥ कहे वत्स सघलुं रुडुं थाशे, द्यो आशिष पसाय रे ॥ चिंता मत करश्रो कोइ महारी, साथे पुण्य सखाय रे ॥ ला० ॥ २० ॥ धीर वीर जाणी कहे जननी, होजो तुम कल्याण रे ॥ वहेला काज करी वत्स वलजो, सुण

थम जीवनप्राण रे ॥ सा० ॥ २१ ॥ मायकी तिलक कर्युं कुंकुमनुं, दीधुं श्रीफल सार रे ॥ दधिजोजन करीने सिद्धि कीधी, श्री वत्सराज कुमार रे ॥ सा० ॥ २२ ॥ कांइक संबल लेइ साथे, पग पालो ते चाल्यो रे ॥ खड्ग खेटक संयुत दक्षिण दिशि, हींडे हर्षशुं माल्यो रे ॥ सा० ॥ २३ ॥ नव नव जाति विनोदने जोतो, फरतो बहु पुर गामे रे ॥ आगल एक अटवी तिहां आवी, नहीं मानवनुं नाम रे ॥ सा० ॥ २४ ॥ तिहां जातां प्राकारविराजित, लघु पत्तन एक दीठुं रे ॥ देखी विजन वत्सराज विमासे, ए कांइ कौतुक मीठुं रे ॥ सा० ॥ २५ ॥ पंचम खंडे ढाल वीशमी, राम मुनि एम जाखे रे ॥ धन्य एहवे गमे जे तिलजर, जय मनमां नवि राखे रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६७ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूत प्रेत राक्षस तणुं, दीसे पुर कोइ एह ॥ अथवा ए चिंता किसी, जइ जोउं ससनेह ॥ १ ॥ नयर मांहि जोवे जइ, महोटुं मंदिर एक ॥ लघु बीजां तस पाखती, निरखे ते सुविवेक ॥ २ ॥ सजा मांहि बेठो तिहां, दीठो पुरुषप्रधान ॥ तस परिवारने पूछीयुं, ए कोण सुगुणनिधान ॥ ३ ॥ कुण नामे दीसे नगर, कुण स्वामी ए पास ॥ नर बोले ए नहीं नगर, नहीं नरपतिनो वास ॥ ४ ॥ पण इहांथी नहीं ढुकडुं, नहीं वेगलुं सार ॥ जूति-लकानिध पुर अछे, जूरमणी उरहार ॥ ५ ॥ वेरसिंह नामे जलो, वेरी गज पंचास्य ॥ रूपवती राणी तणो, प्रीतम लीलविलास ॥ ६ ॥ तिण पुरमां रंगे रहे, दत्त नामे एक शेठ ॥ दोलतने दोरे करी, सहुए जेहथी हेठ ॥ ७ ॥ श्रीदेवी नामे निपुण, नारी निरुपम रूप ॥ रति दासी कीधी जेणे, मोहनवेली अनूप ॥ ८ ॥ तेहनी कुखे ऊपनी, तनया अति सुविनीत ॥ श्रीदत्ता नामे जली, मात पिताने चित ॥ ९ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ महाविदेह देश सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ जर योवन आवी जली, बाला तन सुकुमाल ॥ लाल रे ॥ रूप कला गुण शोजती, चाले गजगति चाल ॥ लाल० ॥ १ ॥ जुओ विषम गति कर्मनी ॥ ए आंकणी ॥ कोणे कली न जाय ॥ लाल० ॥ कर्मवशे सहु जीवना, वहे सुख दुःख समुदाय ॥ लाल० ॥ जुओ० ॥ २ ॥ श्रीदत्ता हुइ कर्मथी, रोगाक्रांत शरीर ॥ लाल० ॥

जनक उपाय करे घणा, पण न टली तस पीर ॥ ला० ॥ जु० ॥ ३ ॥ मात पिता डुःखीयां थयां, चिंते मन मांहे एम ॥ ला० ॥ दोपी दैव ए रयणनो, कहो हवे कीजे ए केम ॥ ला० ॥ जु० ॥ ४ ॥ यतः ॥ चंद्रे लांछनता हिमं हिमगिरौ क्षारं जलं सागरे, रुक्षाश्चंदनपादपा विपधरैरंजोरुहं कंटकैः ॥ स्त्रीरत्नेपु जरा कुचेपु पतनं विद्वत्सु दारिद्र्यता, सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं डुर्वेधसा निर्मितम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ मूके नरने पाहरु, कुमरी सेवा काज ॥ ला० ॥ रात मांहे सही ते मरे, महोटुं एह अकाज ॥ ला० ॥ जु० ॥ ५ ॥ जो न रहे कोइ पाहरु, ते कन्यानी पास ॥ ला० ॥ तो ते रयणीमां हुवे, सात पुरुपनो नाश ॥ ला० ॥ जु० ॥ ६ ॥ वात सुणी नरराजीये, तेडाव्यो ते दत्त ॥ ला० ॥ तुज कन्या कुलखंपिणी, वात सुणी में मित्त ॥ ला० ॥ जु० ॥ ७ ॥ जा मूकी मुज नयरने, कोइक अटवी मझार ॥ ला० ॥ तुज कन्यादोपे रखे, थाये बहु जन संहार ॥ ला० ॥ जु० ॥ ८ ॥ थइ दिलगीर ते नीसस्यो, लेइ निज परिवार ॥ ला० ॥ आवी अटवीमां रह्यो, घर करी सप्राकार ॥ ला० ॥ जु० ॥ ए ॥ सेवक राख्या अति घणा, देइ बहुला दाम ॥ ला० ॥ नाम सखी गोला जस्या, करे चिठी वधकाम ॥ ला० ॥ जु० ॥ १० ॥ नामुं आवे जेहनुं, ते रहे चोकीदार ॥ ला० ॥ करे कन्यानी चाकरी, थाये तस संहार ॥ ला० ॥ जु० ॥ ११ ॥ पण लोजे सहुको पडे, सहुने वहाला दाम ॥ ला० ॥ दाम थकी जगमां सही, डुष्कर पण करे काम ॥ ला० ॥ जु० ॥ १२ ॥ यडुक्तं ॥ यहुर्गामटवीमटंति विकटं क्रामंति देशांतरं, गाहंते गहनं समुद्रमतनुक्लेशां कृपिं कुर्वते ॥ सेवंते कृपणं पतिं गजघटासंघट्टडुस्संचरं, सर्पंति प्रधनं धनांधितधियस्तल्लोजविस्फूर्जितम् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ ते नर मांहेथी सही, एकेको मरे नित्य ॥ ला० ॥ अवर कोइ न रहे इहां, सघली वरते ईति ॥ ला० ॥ जु० ॥ १३ ॥ ते माटे वारुं तुने, पंथी म जा इण गाम ॥ ला० ॥ जिण स्थानक नय उपजे, तिहां जइये शो काम ॥ ला० ॥ जु० ॥ १४ ॥ वात सुणी वत्सराजजी, उपगारी शिरदार ॥ ला० ॥ धैर्य धरीने आवीयो, दत्त समीपे उदार ॥ ला० ॥ जु० ॥ १५ ॥ उत्तम नर जाणी करी, बेसास्यो आसन्न ॥ ला० ॥ पानवीमां आगल धस्यां, शेठ थइ सुप्रसन्न ॥ ला० ॥ जु० ॥ १६ ॥ मुख देखी

रीज्यो घणुं, पूठीयुं कुण तुमे संत ॥ सा० ॥ परकासो अम आगले, तुमे महोटा महंत ॥ सा० ॥ जु० ॥ १७ ॥ वासी हुं उज्जेणीनो, आव्यो कारण माट ॥ सा० ॥ तुम दीठे आज माहरे, दूरे गया उचाट ॥ सा० ॥ जु० ॥ १८ ॥ वात करे दत्त आगले, जेहवे ताम पुमान ॥ सा० ॥ एक आव्यो रलीयामणो, सुंदर रूप जुवान ॥ सा० ॥ जु० ॥ १९ ॥ आवी ऊभो रह्यो आगले, मनमां घणुं विछाय ॥ सा० ॥ शेठ जणी पूठे तदा, केम ए नर कुमलाय ॥ सा० ॥ जु० ॥ २० ॥ नाखी निशासो तव कहे, सुण शा पुरुष विचार ॥ सा० ॥ कर्म कठिन आव्यां उदे, धिक् महारो जमवार ॥ सा० ॥ जु० ॥ २१ ॥ गोपनीय पण ताहरी, आगल कहुं अवदात ॥ सा० ॥ गुरु तनयानी आकरी, कर्मकथानी वात ॥ सा० ॥ जु० ॥ २२ ॥ रयणीए यामिक जे रहे, आकरो कोइक दोष ॥ सा० ॥ रात समयमां ते मरे, अशुन तणो ए पोप ॥ सा० ॥ जु० ॥ २३ ॥ आज ठे वारक एहनो, तेणे जंखाणी काय ॥ सा० ॥ मरण समो जय को नहीं, एम जाखे जिनराय ॥ सा० ॥ जु० ॥ २४ ॥ वात सुणी वत्सराज बोलीयो, परउपकारने काज ॥ सा० ॥ मुजहुंती ए उगरे, तो लहुं त्रिजुवनराज ॥ सा० ॥ जु० ॥ २५ ॥ कहे वत्स मत बीहे मने, ताहरे साटे हुं जाइ ॥ सा० ॥ करीश कन्यानी सेवना, तुं रहे आनंद मांइ ॥ सा० ॥ जु० ॥ २६ ॥ शेठ कहे तुं प्राहुणो, करवुं घटे सन्मान ॥ सा० ॥ तुजने देवाये नहीं, मरण तणुं अपमान ॥ सा० ॥ जु० ॥ २७ ॥ यतः ॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ॥ पतिरेव गुरुः स्त्रीणां, सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ वत्स कहे तात ए में सही, कीधुं अंगीकार ॥ सा० ॥ परउपगारी नरे सही, एम कह्युं शास्त्र मकार ॥ सा० ॥ जु० ॥ २८ ॥ यतः ॥ कृतोपचारः सर्वोऽपि, करोत्युपकृतिं जनः ॥ विनोपचारं यत्राता, विपदः सोऽत्र सज्जनः ॥४॥ धन्यास्ते पशवो नून,-मुपकुर्वंति ये त्वचा ॥ परोपकारहीनस्य, धिग्मनुष्यस्य जीवितम् ॥५॥ क्षेत्रं रक्षति चंचा, सद्मगतकोष्ठीस्थितान् कणान् रक्षा ॥ दंताग्रतृणं प्राणा,-न्नरेण किं निरुपकारेण ॥ ६ ॥ किं तेन सुतजातेन, येनात्मा दुर्जरः सदा ॥ समर्थो नोपकाराय, मातुर्जातेन तेन किम् ॥ ७ ॥ पूर्व ढाल ॥ पंचम खंम एकवीशमी, धन्य एहवा गुणवंत ॥ सा० ॥ रामविजय कहे तेहने, नित्य उठी नमो संत ॥ सा० ॥ जु० ॥ २९ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दत्त आणा लही, उपर भूमि वत्सराज॥ कन्या पासे आवीयो, साहसिक शिरताज ॥ १ ॥ वत्स देखी चित्त चिंतवे, अहो रूप अद्भुत ॥ ए कोइक राजा तणो, दीसे कुंवर पहुत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ चतुर चोमासुं इण डुंगरीये न जइये रे ॥ ए देशी ॥ देखी कुंवर मन चिंते सा बाली रे ॥ नारी नहीं पण मारी हुं भाली रे ॥ धिक् धिक् रे तुजने चांमाली, मुज माथे महोटी ए गाली॥ चतुर विचारी एहवां पातकर्मा न करीये रे, पातकर्मा न करीये, वहाला मनमा मांहे मरीये रे॥ धि० ॥ १ ॥ ए नररयण तणी हत्यारी रे, कां मुजने इण कुले अवतारी रे ॥ धि० ॥ २ ॥ शां कस्यां कर्म कठिन में भूंमां रे, के कस्यां कोइशुं वेर में ऊंमां रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ शाने धरी मुज कुखे तें माभी रे, एहवी थइ में तुजने लजाभी रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ थइ मावित्रने हुं डुःखदायी रे, शे काम आवी मुज चतुराइ रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ पाम्यो मानवजव लेखे न आयो रे, कर्मे ए महोटो दोष लगायो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ हा हवे केम वूटीश ए पापो रे, राखो रे मुजने कोइ माय बापो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ एम चिंतवती हो अबला ते फुरे रे, नयणे वहे आंसुडांने पूरे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ आव्यो कुंवर तव वेगे बीजी शय्या रे, कुमरी बोलावे तब मूकीने लज्जा रे ॥ धि० ॥ ए ॥ हुं आव्यो आज तुज रखवालो रे, कुंवरी श्रीदत्ता मुजने उत्तर वालो रे ॥ धि० ॥ १० ॥ वात करे मनमा मांहे रीजी रे, वेहुनी नेदाणी कांइ हैमानी भींजी रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रीजाणी चिंते एम घाटे रे, एहने उगारुं महारा जीवित साटे रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ एम चिंतवतां हो तत्क्षण आवी रे, निंदरमी वैरण जेम कुंवरी घेरावी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ ऊंची जाणीने वत्स अधोभूमि जाइ रे, काष्ट लेइ आव्यो एक बुद्धि सखाइ रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ काष्ट सुवाडयुं पुरुष जेम दीसे रे, ग्रही तरवार रह्यो एकण दिशे रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ दीप तणी ठाया रह्यो वलीयो रे, धारिणीजायो नवि जाये कोनो ठलीयो रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ एणे अवसरे वातायन विवरे रे, मुख एक पेसंतुं दीठुं तव कुमरे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ थइ सचेतो कुमर तव रहीयो रे, वज्र तणी

परे काठो करी हैयो रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ तेणे मुखे वासघरने नीहाली रे, पेठो पठे तिहां कर ततकाली रे ॥ धि० ॥ १९ ॥ मुद्रा अलंकृत अंगुलि मोहे रे, ओपधिवल्लीए मंत्रित घणुं सोहे रे ॥ धि० ॥ २० ॥ फूंक थकी धूम पसर्यो अटारो रे, वासभुवन मांहे व्याप्यो अंधारो रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ कर फरसे जइ यामिक सेजे रे, तव कुंवरे हएयो खड्ग सुतेजे रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ देवप्रभावे तस कर नवि पडीयो रे, ओपधियुग पछ्या कुंवरने जमीयो रे ॥ धि० ॥ २३ ॥ एक धूमोपधि तेह मांहे ताजी रे, बीजी व्रणसंरोहणी साजी रे ॥ धि० ॥ २४ ॥ थइ वेदना हाथ लीधो खंची रे, देवी बोली हा हा मुकने वंची रे ॥ धि० ॥ २५ ॥ कहे कुंवर देवीने सुण दासी रे, हवे मुक आगे किहां जाइश नासी रे ॥ धि० ॥ २६ ॥ खड्ग उपाडीने केडे उजाणो रे, नाठी देवी तस ताप न खमाणो रे ॥ धि० ॥ २७ ॥ पुएयवलीया आगल कोण मंडे रे, पुण्य प्रबल वैरिदल खंडे रे ॥ धि० ॥ २८ ॥ पाठो वली आव्यो वत्सराजो रे, पुण्यपसाये सवि सीधलां काजो रे ॥ धि० ॥ २९ ॥ आवी वेगा जव कुंवर सवाया रे,रयणी विहाणी तव वाहणलां वायां रे ॥ धि० ॥ ३० ॥ पंचम खंडे बावीशमी ढाले रे, उग्यो सूरज वत्स मुखडुं नीहाले रे ॥ धि० ॥३१॥ ७३९ ॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर ते कन्यका, जागी जुवे जाम ॥ अक्षतांग दीठो कुंवर, हैडे हरखी ताम ॥ १ ॥ चिंतववा लागी चित्ते, ए कोइ पुरुपरतन्न ॥ सबल प्रभाव एहनो सही, दुष्ट थकी न विपन्न ॥ २ ॥ अथवा जाग्युं भाग्य मुज, मलीयो पुरुषप्रधान ॥ जो परणुं तो एहने, नहीं तो विषयपचखाण ॥ ३ ॥ एम चिंती कहे सुंदरी, व्यसन थकी केम आज ॥ मूकाणा ते मुज कहो, गिरुआ गरीवनिवाज ॥ ४ ॥ सयल वात मांमी कही, निसुणी हरखी बाल ॥ रोम रोम तन उल्लस्युं, मन विकस्युं ततकाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ वात करे बेहु तेह, हर्ष धरी ससनेह ॥ आज हो ॥ आवी रे जल लेइ दासी कनी कने जी ॥ १ ॥ देखी अक्षत अंग, पुरुप थयो मनरंग ॥ आ० ॥ दोडी रे आवी दत्त शेठनी आगले जी ॥ २ ॥ जय स्वामी मुझ आज, अरज सुणो महाराज ॥ आ० ॥

लावी रे वधामणी नर कुशला तणी जी ॥ ३ ॥ हर्ष हैये न समाय,
उठ्यो शेठ तव धाय ॥ आ० ॥ आव्यो रे ते पासे नयणे निरखतो जी ॥४॥
श्रीदत्ता गुणखाणी, उन्नी जोमी पाणी ॥ आ० ॥ आप्युं रे शुन्न
आसन जनकने वेसवा जी ॥ ५ ॥ कहे दत्त साहसधीर, सुण पुरुषोत्तम
वीर ॥ आ० ॥ राते रे व्यसनांबुधि कहो केम निस्तस्यो जी ॥ ६ ॥ सत्त
तणो आधार, मांमी कहे सुविचार ॥ आ० ॥ हरख्यो रे निसुणीने तेह
वातमी जी ॥ ७ ॥ कहे दत्त सुण नरसिंह, महिमावंत अबीह ॥ आ०
दीधी रे में पुत्री तुऊने माहरी जी ॥ ८ ॥ नहीं मुऊ पाम सुजाण, तु
गुणकीता जाण ॥ आ० ॥ तोपण रे व्यवहार ए मुऊ कहेवा त
जी ॥ ए ॥ कुंवर कहे सुणो स्वामी, न लहो मुऊ कुल गाम ॥ आ०
दीजे रे केम अणजाएयाने दीकरी जी ॥ १० ॥ दत्त नणे कुल ज
लक्षणथी लही वात ॥ आ० ॥ कलिमां रे कुण कुल कलहंस तणुं
जी ॥ ११ ॥ ठानो न रहे सूर, तेज प्रताप पडूर ॥ आ० ॥ पायो रे
पुरुषशिरोमणि पुएयथी जी ॥ १२ ॥ यतः ॥ आकृतिर्गुणसमृद्धिशंसि
नम्रता कुलविशुद्धिसूचिका ॥ वाक्क्रमः कथितशास्त्रसंक्रमः, सत्त
न्नवतो विवोधकः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ दीधुं कन्यादान, जे मुऊ
समान ॥ आ० ॥ आपुं रे शुं अधिकुं तुऊने एहथी जी ॥ १३ ॥
करुणा वरो एह, नहीं अम मन संदेह ॥ आ० ॥ जाणुं रे तुमे अम
चिंतामणि चढ्या जी ॥ १४ ॥ कुंवर कहे कह्युं साच, पण निसुणो
वाच ॥ आ० ॥ जावुं रे मुज गिरुवे कारज वेगशुं जी ॥ १५ ॥
आवीश आम, करशुं जे कहेशो काम ॥ आ० ॥ वोले रे दत्त वान
ते नवि मले जी ॥ १६ ॥ एक वार परणी एह, पठे मन माने
॥ आ० ॥ करजो रे कारिज ए अमची विनति जी ॥ १७ ॥
अंगीकार, दृढ जाणी निर्धार ॥ आ० ॥ परणी रे श्रीदत्ता तिण
पद्मिनी जी ॥ १८ ॥ हरख्यां साजनवृंद, उत्सव अति आनंद ॥
रहीया रे एक रात्रि तिहां आवासमां जी ॥ १९ ॥ दंपती
प्रेम, दोगुंडक सुर जेम ॥ आ० ॥ रमतां रे रंगेशुं वोली रात
॥ २० ॥ न्नर यौवन वय पूर, दंपती चढते नूर ॥ आ० ॥ परि
ए जोमी मली जी ॥ २१ ॥ वीजे दिन वत्सराज, कहे

सुण आज ॥ आ० ॥ महारे रे तुझ आणा सिर करवी सही जी ॥ २२ ॥
कहे श्रीदत्ता नारी, वहालेसर अवधार ॥ आ० ॥ तुमचो रे न खमाये
विरहो वालहा जी ॥ २३ ॥ विरहो मास वसंत, नवल नेह गुणवंत ॥ आ० ॥
नूतन वय पंचम शर ए पांचे मल्या जी ॥ २४ ॥ पंचम अग्नि महंत,
केम सहेवाये कंत ॥ आ० ॥ रमीये रे रंगीले रसभर मालीये जी ॥
२५ ॥ विलसो भोग विलास, पूरो वांछित आश ॥ आ० ॥ चिंता रे
शी मनमां तुमने ते कहो जी ॥ २६ ॥ पंचम खंडे ढाल, त्रेवीशमी सुरसाल
॥ आ० ॥ होवे रे साहसथी संपद सहेलमां जी ॥ २७ ॥ ७७१ ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे वत्स वनिता प्रत्ये, जावुं न गमे मुझ ॥ पण सांभल तुझ
आगले, कहुं माहरुं गुझ ॥ १ ॥ जो न जाउं देशांतरे, तो हुवे अग्नि-
प्रवेश ॥ इहांकणे कांइ संशय नहीं, माटे द्यो आदेश ॥ २ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ देशी जत्तीनी ॥ जत्ती ॥ कहे कामिनी जोडी पाणी, निसुणो प्रीतम गुणखा-
णी ॥ तुम विण मुझ मन अकलाय, क्षण वरस बरोबर थाय ॥ १ ॥ दोहो ॥
सज्जन तुमे सीधावशो, बहु गुणवंता नाह ॥ पण महारी गति शी होशे,
ऊंचो शोच अथाह ॥ २ ॥ यत्ती ॥ शोच म करे रे कामिनि कांहीं, तुझशुं
मुझ अंतर नांही ॥ में प्राण दीया तुझ हाथे, तुं रात दिवस मुझ साथे
॥ ३ ॥ दोहो ॥ साथ तुमारो वहलहा, में करवो निर्धार ॥ अबला उवेखी
जशो, शो तुम नेह विचार ॥ ४ ॥ यत्ती ॥ नेह नवल निवाहो वहाला,
दोहिलां मुझ विरहनां जालां ॥ कंत करुणा करो रसभीना, मुझ साथ
ल्यो वीर नणदीना ॥ ५ ॥ दोहो ॥ सांभल ससनेही प्रिया, वहेलो वलतो
आवी ॥ रमशुं रामत रंगभरी, नव रस नेह बनावी ॥ ६ ॥ यत्ती ॥ बनशे
तुझशुं प्रीति जाजी, दे आणा मुझ थइने राजी ॥ रहेतां विणसशे मुझ काज,
तुझशुं शी करवी लाज ॥ ७ ॥ दोहो ॥ लज्जा लोपीने कहे, नयण झरंते
नीर ॥ वहालेसर आव्या विना, नवल न पहेरुं चीर ॥ ८ ॥ यत्ती ॥ चीर
कुंकुम काजल रेहा, न लेउं तुम विण घण नेहा ॥ वली कुसुमाभरण तंबोला,
तुम आव्ये होशे रंगरोला ॥ ९ ॥ दोहो ॥ रंगीला वालम सही, ए
मुझ वेणीबंध ॥ तुम आवेहीज छूटशे, एह महीं में संधि ॥ १० ॥ यत्ती ॥

संधा समरेजो स्वामी, विनवुं हुं अंतरजामी ॥ रहेशुं तनशुं इण वेशे, पण हृदय पीयु जिण देशे ॥ ११ ॥ दोहो ॥ जिण देशे पीयु संचरो, तिण देशे होजो क्षेम ॥ अवसरे मुज संजारजो, मत विसारो प्रेम ॥ १२ ॥ यत्ती ॥ प्रेम मत विसारो पनोता, लही नवनवी नारी कंता ॥ वहेला वलजो हितवंता, कर जोमी कहे श्रीदत्ता ॥ १३ ॥ दोहो ॥ श्रीदत्ता कहे साहिबा, वहेलाही वलजोह ॥ कुंगरजीवी जीवजो, कुंवर ज्युं फलजोह ॥ ॥ १४ ॥ यत्ती ॥ फलजो तुम कहुं शिर नामी, नवि बोली जाणुं रतिकामी ॥ जाउं एम कहेतां कातुं, मत जाउं वयण ए मातुं ॥ १५ ॥ दोहो ॥ कातुं वयण न बोलीये, पीयु सीधावण वार ॥ जेम जाणो तेम युं कहे, नेह कवण जरतार ॥ १६ ॥ यत्ती ॥ नेहे आवुं संघाते ए वाणी, न चडे ए पीयुजी प्रमाणी ॥ माटे करी चिंतित काज, वहेलुं दरिसण देजो राज ॥ १७ ॥ दोहो ॥ रीज्यो निसुणी नारीनां, वयण अमीरस तोल ॥ विसरशे नहीं वालही, ए ताहरा मुज बोल ॥ १८ ॥ जत्ती ॥ बोल देइ लेइ शेठ आणा, कुमरे तव कीध प्रयाणा ॥ जातां एक आगल आवी, अटवी अति नीषण चावी ॥ १९ ॥ दोहो ॥ चावा नील घणा जिहां, पर्वत अति उत्तंग ॥ कांस काम उग्यां घणां, नहीं जिहां सज्जन संग ॥ २० ॥ यत्ती ॥ एहवी अटवी मांहे एक ठाम, दीठी एक नयरी अजिराम ॥ घर अभ्रंलिह जिहां दीसे, जोतां मानवमन हीसे ॥ २१ ॥ दोहो ॥ बाहिर सरोवर पेखीयुं, अति शीतल जल चंग ॥ चरणानन पावन करी, बेठो पाले मनरंग ॥ २२ ॥ यत्ती ॥ मनरंगे बेठो जइ पाले, चिहुं दिशे निरखीने नीहाले ॥ जल वहेती दीठी बहु नारी, पूछ्युं एकने जइ मतिसारी ॥ २३ ॥ दोहो ॥ मतिसारी पूछे तिहां, कुण नयरी कुण नूप ॥ हुं तुम पूछुं प्रेमशुं, जाखो सकल स्वरूप ॥ २४ ॥ यत्ती ॥ जाखो सकल स्वरूप विचारी, कहेशे हवे ते पनिहारी ॥ पंचमे चोवीशमी ढाल, कहे राम सुणो उजमाल ॥ २५ ॥ ३९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यंतर देवी वासीयुं, ते कहे ए पुर सार ॥ क्रीमा करवा कारणे, सांजल चतुर कुमार ॥ १ ॥ अन्य नहीं राजा इहां, नहीं कोइनो अधिकार ॥ ते देवी अम स्वामिनी, अमे तेहनो परिवार ॥ २ ॥ कुमर कहे साचुं कह्युं, जल वहो केणे काज ॥ ते कहे सांजल शा पुरुष, वयण माहरुं आज ॥ ३ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ शारद बुद्धिदायी ॥ ए देशी ॥ कहे ते देवनारी, सांजल साहस-
धीर ॥ जननीना जाया, गिरुआ गुणगंजीर ॥ पावन पुरुषोत्तम, अतुली-
बल वडवीर ॥ अम्ह स्वामिनी वेदन, हजीय न आव्यो तीर ॥ त्रूटक ॥
तीर न आव्यो एकण देशे, अम्ह स्वामिनी गइ हुती ॥ तिहां कोइ
पुरुषे खड्गप्रहारे, तेहने घणुं विगुती ॥ बांह तणी पीडा बहुतेरी, केमे
करार न थाय ॥ पीडा तेह निवारण काजे, नित्य जलथी सिंचाय
॥ १ ॥ तिण कारण जलने, वहीये ए सुंदर जाण ॥ हजी वेदन न
शमी,सयलुं ए कर्म विन्नाण ॥ वत्सराज विमासी, बोले एणी परे वाणी ॥
केम निज पीडाने, निवारण तेह अजाण ॥ त्रू० ॥ तेह अजाण थइ
केम बेठी, कहे देवी सुण साचुं ॥ ते प्रहारदायक अंगरक्षक, देव तणुं बल
जाचुं ॥ तस प्रजावे ए वेदन न शमे, मत मानेजो काचुं ॥ देवप्रजाव
थकी पण अधिको, मानवमहिमा राचुं ॥ २ ॥ वली औषधि युगल, हुतुं
एहने कर एक ॥ सप्रजाव मनोहर, दीधुं अम्हे सुविवेक ॥ व्यंतरपति
दीधुं, तुष्ट थइने छेक ॥ फल देवी आगल, जाख्युं तेणे अतिरेक ॥ त्रू० ॥
अतिरेके एके जग मोहे, बीजी बहु गुणकारी ॥ परघातोज्जव पीड निवा-
रण, ए बिहु औषधि सारी ॥ तेह पडी खड्गे जिहां ताडी, अम स्वामिनी
दुःख पाइ ॥ औषधि पाडी लाज गमाडी, कीधी कर्म कमाइ ॥ ३ ॥
वत्सराज पयंपे, हुं छुं मानुष्य वैद्य ॥ टालुं तस वेदन, एक साहित्य मांहे
सद्य ॥ पण शुं मुज देशो, बोले देवी वचन्न ॥ मन चिंतित पामीश, सांजल
पुरुषरतन्न ॥ त्रू० ॥ पुरुषरतन्न सुणो मुज वाणी, हुं जाउं उजाणी ॥
मुज स्वामिनी पूछी आवुं, इहां रहेजो गुणखाणी ॥ आवी वात कहे
स्वामिनीने, ते कहे तेडी लावो ॥ दासी आवी कहे सुण मानव, तुने
मुज साथे आवो ॥ ४ ॥ मारगमां जाखे, स्वामिनी अंग करार ॥ थये ते
इछशे, मुज उपर निर्धार ॥ तव मागजे आपो, मुज कन्यायुग सार ॥
प्रासाद उपरे, जे छे तुमचे आधार ॥ त्रू० ॥ तुम आधीन अछे रूप-
रूपे, एक एक सवगाणो ॥ चिंतित ठामे जे पहोंचाडे, तनरूपमां उजा-
वो ॥ वली तुम पासे अछे जे वारु, कान्तिदायक सार ॥ एक पल्यंक
मनोहर मुज ए, आपो वानां चार ॥ ५ ॥ एम शिखरी जाखे, लेइ

चाली तिण गाम ॥ आव्यो देवीनी, पासे गुण अभिराम ॥ आप्युं भद्रा-सन, बेसे धरी मनरंग ॥ कहे देवी जाणे, जो तुं वैदक अंग ॥ भू०॥जो वैदक जाणे तो महारी, हर पीमा थइ बहेलो ॥ वत्सराज आडंबर कारण, बोले वैदक पहेलो ॥ धूम्रौषधिए धूम्र करीने, अन्य थकी हरे पीमा ॥ वेदना सर्व शमी तस भुजनी, करवा लागी क्रीमा ॥ ६ ॥ तावत् ते बोली, भद्र तेहीज तुं होये ॥ मुफ घातनो दायक, बीजो नहीं इहां कोय ॥ कहे हा ते साचुं, हुइ हर्षित सुणी वाणी ॥ वत्स थइ हुं सुप्रसन्न, तुफ साहस गुणखाणी ॥ भू० ॥ गुणखाणी मागो मन मान्युं, जेह कहो ते आपुं ॥ वांछित पूरुं दारिद्र चूरुं, दुःख सघलुं तुफ कापुं ॥ पूर्वोदित माग्युं तेणे सघलुं, ते कबूल सवि कीधो ॥ देवी चिंते गृहभेद महारो, किणहीक एहने दीधो ॥ ७ ॥ सुण सुण तुं सुपुरुष, जा कन्यायुग दीध ॥ पण कहुं तस उत्पत्ति, सांभल तुं सुप्रसिद्ध ॥ मुफ पासे ए बहु, दिन राखी में एह ॥ पुण्यवंत ए ताहरे, जोग्य हशे ससनेह ॥ भू० ॥ ससनेहा सांभल तुफ आगल, वात कहुं अति मीठी ॥ पूर्व वैर तणी जग मांहे, करुइ करणी दीठी ॥ पंचम खंडे हुइ पंचवीशमी, ढाल सुणो नर नारी ॥ साहसिक नर संपत्ति पामे, वत्स परे सुविचारी ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ ८०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे व्यंतरी ज्ञानथी, निज कन्या अवदात ॥ वत्सराज हरखे सुणे, अचरिजवाली वात ॥ १ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ गिरि वैताढ्यनी उपरे, चमर-चंचा पुरी सार ॥ गंधवाहगति नामे राजीयो, विद्याधर शिरदार ॥ १ ॥ कर्म न छूटे रे जीवमा, जे जे बंध विचार ॥ नवि छूटे विण भोगव्यां, कीधां एह संसार ॥ क० ॥ २ ॥ नाम सुवेगा रे कामिनी, बीजी मदन-वेगा जोय ॥ प्रीतम छंदे रे चालती, रमणी रति सम दोय ॥ क० ॥ ३ ॥ पहेली कुखे रे उपनी, रयणचूला वर नाम ॥ बीजी सोवनचूलिका, जाइ गुणमणिधाम ॥ क० ॥ ४ ॥ यौवन आवी रे अति भली, मोहन गुण मणिगेह ॥ मात पिता मनमां धरे, वरचिंता अतिरेह ॥ क० ॥ ५ ॥

यतः ॥ जम्मंतीए सोगो, वढंतीए य वड्ढए चिंता ॥ परणीयाए

दंभो, जुवइ पिया डुक्खिउं निचं ॥ १ ॥ निय घरसोसा परगे, इमंकणी कुलकलंक कलिजुवणं ॥ जेहिं न जाया धूआ, ते सुहिया जीवलोगम्मि ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ एक दिन एक मुनि आवीया, विद्याधर गुणवंत ॥ प्रणमी पूछे रे जावशुं, मुज जाखो नगवंत ॥ क० ॥ ६ ॥ मुज पुत्री वर कोण होशे, कहे ज्ञानी अणगार ॥ होशे जर्ता रे वेहुनो, श्रीवत्सराज कुमार ॥ क० ॥ ७ ॥ जूचर वरशे रे एहने, पण नहीं तहारी रे पास ॥ नरपति कहे कोण एहनुं, कारण स्वामी प्रकाश ॥ क० ॥ ८ ॥ मुनि कहे सुण नृप ताहरुं, ठे एक मासनुं आय ॥ फरी पूछे रे विद्याहनो, हवे कहो कोण उपाय ॥ क० ॥ ९ ॥ मुनि कहे जगिनी रे ताहरी, जूचर शूर नरिंद ॥ परणी प्रेमे रे तेहशुं, अधिकी प्रीति अमंद ॥ क० ॥ १० ॥ अन्य वली हुइ तेहने, रमणी रूपनिधान ॥ चित्त हरी लीधुं रायनुं, तुज जगिनी अपमान ॥ क० ॥ ११ ॥ रंगे रमे राय तेहशुं, अहोनिश मंदिर मांय ॥ तूट पकी तुज वहेनशुं, आव्युं उदे अंतराय ॥ क० ॥ १२ ॥ दिलमें शोक्य साले घणुं, शोक्य समुं नहीं डुःख ॥ अहोनिश रहे ठल ताकती, नावे निंद ने जूख ॥ क० ॥ १३ ॥ आरति मनमां रे अति घणी, मुज उपर नहीं मान ॥ तप नवि कीधुं रे पूरवे, तो पामी अपमान ॥ क० ॥ १४ ॥ हवे तप करुं कांइ आवते, जवे पामुं कांइ सुख ॥ एम जाणी तप आदर्युं, कांइक शोक्यने डुःख ॥ क० ॥ १५ ॥ यतः ॥ आर्त्ता देवान्नमस्यंति, तपः कुर्वंति रोगिणः ॥ निर्धना विनयं यांति, वृद्धा नारी पतिव्रता ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ तप करी काल कर्यो तेणे, व्यंतरी जातिनी देव ॥ अटवी मांहे रे उपनी, करे वहु देवी रे सेव ॥ क० ॥ १६ ॥ शूर नरिंदनी गेहिनी, तेहनी शोक्य सुजाण ॥ दानादिक गुण आदरी, दत्त घरे गुणखाणी ॥ क० ॥ १७ ॥ थइ श्रीदत्ता रे नामथी, कन्या गुणह जंमार ॥ पूरव वेरथी व्यंतरी, दे तस डुःख अपार ॥ क० ॥ १८ ॥ यामिक नरने रे नित्य हणे, ठे अद्यापि ए रीति ॥ देवी पासे ए मूकजो, कन्या धरी मन प्रीति ॥ क० ॥ १९ ॥ रहेतां पासे रे तेहने, आवशे वत्सराज ॥ नरक्षय करती रे वारशे, वसशे सूधी रे लाज ॥ क० ॥ २० ॥ श्रीदत्ताने रे परणशे, तिहांथी निसरी तेह ॥ देवीस्थानके आवशे, थाशे कारज एह ॥ क० ॥ २१ ॥ एम कही मुनि उत्पत्या, खेचरनाथे रे चंग ॥ कन्या आणी मूकी इहां,

मुज पासे मनरंग ॥ क० ॥ २२ ॥ विद्याधर तप आदरी, मास मांहे सुखकार ॥ मरी थयो व्यंतर अधिपति, पाम्यो सुख श्रीकार ॥ क० ॥ २३ ॥ ज्ञाने जाणी रे मुजने, हयरूपे यक्ष एक ॥ किंकर मुजने रे आपीयो, वारु करीय विवेक ॥ क० ॥ २४ ॥ औषधियुगल पल्यंक ए, कामितदायक दीध ॥ ते में सघलुं रे तुज दीधुं, वांछित कारज सिद्ध ॥ क० ॥ २५ ॥ पंचम खंडे छवीशमी, ढाल कही ए उदार ॥ रामविजय कहे हेपनां, फल कहुवां निर्धार ॥ क० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७३६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात कही वत्सराजने, देवीए मांडी सर्व ॥ परणावी दोय कन्यका, मूकी मननो गर्व ॥ १ ॥ पुण्यपसाये सवि मिली, संपद् नारी सार ॥ सुख विलसे संसारनां, श्रीवत्सराज कुमार ॥ २ ॥ एक दिन रंगविलासमां, रमतां नारी साथ ॥ प्रेम सहित पूछे प्रिया, कहो अमने प्राणनाथ ॥ ३ ॥ किम इहांकणे थयुं आववुं, तव कुमरे निज वात ॥ करी प्रतिज्ञानी तिहां, सुणी हरखी ते धात ॥ ४ ॥ नारीए कह्युं देवीने, जाणी प्रतिज्ञा तास ॥ शिख दीधी वत्सराजने, आवण निज आवास ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ जीहो जाएयुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥ जीहो विरहो अणसहती थकी, जीहो पण दीयो देवी आदेश ॥ जीहो प्रिया सहित वत्सराजने, जीहो आवजो वली इण देश ॥ १ ॥ सुगुण नर, तुमशुं प्रीति अपार ॥ सुगुण नर, तुम्हे कीधो उपकार ॥ सु० ॥ मत मेलो विसार ॥ सु० ॥ धन्य जीव्युं तुम्ह सार ॥ ए आंकणी ॥ जीहो वेसी पल्यंकने चालीयां, जीहो नजमारग पुण्यवंत ॥ जीहो चाले विमान तणी परे, जीहो आव्यां तेह तुरंत ॥ सु० ॥ २ ॥ जीहो श्रीदत्ताने मंदिरे, जीहो आव्यां वही आकाश, जीहो उठी प्रजातसमे तिस्ये ॥ जीहो श्रीदत्ता सुविलास ॥ सु० ॥ ३ ॥ जीहो देखी तुरंग पल्यंकने, जीहो अति विस्मित थइ बाल ॥ जीहो केणे आएयो पर्यंक ए, जीहो हय चढे केम ए ढाल ॥ सु० ॥ ४ ॥ जीहो जोवे नजरे नीहालीने, जीहो दीठो तव निज कंत ॥ जीहो दोय नारीशुं भीलतो, जीहो शय्यागत गुणवंत ॥ सु० ॥ ५ ॥ जीहो जइ कह्युं जनकनी आगले, जीहो

पति उपर आवास॥ जीहो आव्यो ते इहां माहरो, जीहो उपन्यो संभ्रम त्रास ॥ सु० ॥ ६ ॥ शय्या तुरग तणी कही, जीहो वात सकल समजाइ ॥ जीहो हर्ष धरीने आवीयो, जीहो सप्तम भूमिए धाइ ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीहो आव्यो जाणी शेठने, जीहो उठयो ताम कुमार ॥ जीहो आदर-मान देइ घणुं, जीहो जाण्यो निज अधिकार ॥ सु० ॥ ८ ॥ जीहो चरित्र सुणी विस्मित थयो, जीहो भक्ति करे बहु भाव ॥ जीहो ते दिन राख्या मंदिरे, जीहो उत्तम जास स्वभाव ॥ सु० ॥ ९ ॥ जीहो बीजे दिन लेइ आज्ञा, जीहो त्रिहु नारी संघात ॥ जीहो शय्या उपर बेसीने, जीहो चाल्या थये प्रभात ॥ सु० ॥ १० ॥ जीहो ततक्षणमां ते आवीयां, जीहो निज नयरे नभचार ॥ जीहो मंदिर आव्यां आपणे, जीहो उतरीयां ततकाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो चिहुं जण सूतां सेजमां, जीहो आवी घर एकांत ॥ जीहो धारिणी विमला देखीने, जीहो चिंते कुण ए संत ॥ सु० ॥ १२ ॥ जीहो ए शय्या नही आपणी, जीहो कांइक ए विन्नाण ॥ जीहो चिंती पट परहो कर्यो, जीहो दीठो कुमर सुजाण ॥ सु० ॥ १३ ॥ जीहो त्रण तरुणी साथे तिहां, जीहो निज कुंवर निरखंत ॥ जीहो रोम रोम तन उल्लस्युं, जीहो हेडुं हेजे हसंत ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीहो लज्जाती पाठी वली, जीहो हसुवे हसुवे ताम ॥ जीहो इण अवसरे ते जागीयो, जीहो कुंवर गुणनुं ठाम ॥ सु० ॥ १५ ॥ जीहो माय मासीने पाउले, जीहो कुंवर करे प्रणाम ॥ जीहो पूछे विमला धारिणी, जीहो कुण कुण कीधां काम ॥ सु० ॥ १६ ॥ जीहो वात करे माय आगले, जीहो मांडी वत्स कुमार ॥ जीहो जुवो पुण्याइ पुत्रनी, जीहो पामी हर्ष अपार ॥ सु० ॥ १७ ॥ जीहो कामितदायी पल्यंकथी, जीहो लेइ उत्तरीय अमूल्य ॥ जीहो नरपति पासे आवीयो, जीहो वत्सकुमर अनुकूल ॥ सु० ॥ १८ ॥ जीहो राजेश्वर पूछे तदा, जीहो क्षेम कुशलनी वात ॥ जीहो वत्स भले तुं आवीयो, जीहो पाम्यां अमे सुख शात ॥ सु० ॥ १९ ॥ जीहो मासी चरणे नमी, जीहो करे उत्तरीयनी भेट ॥ जीहो कमल-श्री कहे तुझ विना, जीहो वत्स कोण दीये मुझ भेट ॥ सु० ॥ २० ॥ जीहो चिरं जीव तुं याबुथा, जीहो सुख कामितदातार ॥ जीहो मासीए सन्मान्यो घणुं, जीहो राजाए पण तेणी वार ॥ सु० ॥ २१ ॥

जीहो राये पूव्युं वत्सने, जीहो वत्स किहां लाध्युं एह ॥ जीहो वात कहे वीतक तणी, जीहो पर्यंक हय विण तेह ॥ सु० ॥ २२ ॥ जीहो देवीए दीधुं वस्त्र ए, जीहो सुणी हरख्या राजान ॥ जी० ॥ जीहो धन्य धन्य सहु को कहे, जीहो थलीयो सुगुणनिधान ॥ सु० ॥ २३ ॥ जीहो सुखे समाधे रहे तिहां, जीहो विलसे नव नव जोग ॥ जीहो निज नारीशुं रंगमां, जीहो सरिखो मल्यो संयोग ॥ सु० ॥ २४ ॥ जीहो पंचम खंडे सत्तावीशमी, जीहो ढाल कही मनरंग ॥ जीहो रामविजय कहे पुण्यथी, जीहो लहीये सुख अजंग ॥ सु० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७६६ ॥ श्लोक ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन कमलश्री तणे, अंगे उपन्यो व्याधि ॥ राय उपाय कस्या घणा, पण न टली असमाधि ॥ १ ॥ राणीदुःखे दुःखीयो, राय करे अति शोर ॥ नयण थकी आंसु ऊरे, सबलुं मोहनुं जोर ॥ २ ॥ कला घणी नृप केलवी, लेखे न आवी कांय ॥ राणी परलोके गइ, विरुइ कर्म बलाय ॥ ३ ॥ यतः ॥ सा नत्थि कला तं न,—त्थि उंसहं तं न किंपि विन्नाणं ॥ जे सा धरिज्जइ काया, खज्जंति कालसप्पेण ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ तास वियोगे राजवी, पड्यो शोकने पूर ॥ वत्सराज आवी कहे, शोक निवारो दूर ॥ ४ ॥ इण जग चिर नवि को रह्यो, सहु अनित्य संसार ॥ तन धन यौवन कारिमो, रमणी ऋद्धि परिवार ॥ ५ ॥ यतः ॥ कुसग्गे जह उंसबिंदुए, थोवं चिठइ लंबमाणए ॥ एवं मणुआण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए ॥ १ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ ठठी जावन मन धरो ॥ ए देशी ॥ वत्स कहे नृप सांजलो, एह अनित्यपणुं संसारे रे ॥ शुं धारे रे, अस्थिरने स्थिर करी चित्तमां ए ॥ १ ॥ जाव अनित्य संसारना, जलबिंदु विद्युत् सम जाणो रे ॥ शुं माणो रे, वर्ण गंध रस फरसमां ए ॥ २ ॥ उत्पाद व्यय ने ध्रुव तणी, सवि द्रव्ये त्रिजंगी जाखी रे ॥ ए राखी रे, न रहे स्थिति संसारनी ए ॥ ३ ॥ जिनवर चक्री जे हुआ, ते पण इहां स्थिर नवि रहीया रे ॥ शुं मोहीया रे, फूरे तुं परजावने ए ॥ ४ ॥ वार अनंत मल्यो सही, ते संबंधमां शुं राचे रे ॥ वली नाचे रे, तेहने वंदे नट परे ए ॥ ५ ॥ चंचल ए सही

आगखुं, जे धर्म मांहे सीदाय रे ॥ न कहाय रे, ते शा पुरुष शिरो-
मणि ए ॥ ६ ॥ जिन अगदंकारे कह्युं, शोक रोग निवारणहारु रे ॥ सारुं
रे, धर्मौषध करवुं बुधे ए ॥ ७ ॥ यतः ॥ उमिति पंमिताः कुर्युः, अश्रुपातं
च मध्यमाः ॥ अधमाश्च शिरोघातं, शोके धर्मविवेकिनः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥
इत्यादिक वचनामृते, वत्सराजे नृप समजाव्यो रे ॥ ए जाव्यो रे, मन
उपदेश सोहामणो ए ॥ ८ ॥ नारीशोक निवारीयो, वत्सराज वचनथी
वलीयो रे ॥ वलीयो रे, निज आतम तेणे कस्यो ए ॥ ९ ॥ सुखमां
वाहे कालने, वत्सराज सबल सोजागी रे ॥ रागी रे, त्यागी जोगी अति
घणो ए ॥ १० ॥ एक दिवस वत्स नारीशुं, मंदिर मांहि एम विमासे
रे ॥ जापे रे, सुणो सुंदरी सोहामणी ए ॥ ११ ॥ जोजनने नृप तेमीये,ए
प्रीतिनुं लक्षण लहीये रे ॥ कहीये रे, नीतिशास्त्र मांहे एहवुं ए ॥ १२ ॥
यडुक्तं ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृछति ॥ जुंक्ते जोजयते चैव,
षड्विधं प्रीतिलक्षणम् ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ नृप आपण अनुरागीये, तेमीजे
ए वमजागी रे ॥ जागी रे, जाग्यदशा ए आपणी ए ॥ १३ ॥ नारी
कहे सुण नाहला, ए वात विचारी कीजे रे ॥ न लीजे रे, नृपने निज
आवासमां ए ॥ १४ ॥ आश इहांरी कीजीये, पण नृप आसंग न
करीये रे ॥ तो वरीये रे, सहेजे सुख संसारमां ए ॥ १५ ॥ विष दाढे होय
सापने, विष खलनी जीने लहीये रे ॥ कहीये रे, तेम दृष्टिविष रायने ए
॥ १६ ॥ यतः ॥ वैरिनारीनरेंद्राणां, नागनीचनियोगिनाम् ॥ नखिनां च
न विश्वासः, कर्त्तव्यः शुजकांक्षिणा ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ ते माटे तुमने
कहुं, नृप घर जोजन मूकीजे रे ॥ चूकीजे रे, नवि एणी वाते कंथजी ए
॥ १७ ॥ वत्स कहे सुणो वालही, एणी वाते गौरव न वधे रे ॥ अवधे
रे, तेड्या विण चाले नहीं ए ॥ १८ ॥ आमह जाणी कंतनो, वलती ते
पोखी नारी रे ॥ सारी रे, वात सुणो तुम्हे वालहा ए ॥ १९ ॥ अमने मत
देखामजो, पठी जेम जाणो तेम करजो रे ॥ वरजो रे, स्वामी अमारा
साछीने ए ॥ २० ॥ पंचम खंम अमवीशमी, सुणो ढाल कही अति सारी
रे ॥ हितकारी रे, वयण हैयामां राखीये ए ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ८७२ ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामिनीए वार्‍यो घणुं, पण न रह्यो वत्सराज ॥ जोजनने नृप

नोतर्यो, वारु वयण समाज ॥ १ ॥ स्वामी पधारो आंगणे, करो पावन मुफ गेह ॥ अरज अमारी चित्त धरो, जो मुफ उपर नेह ॥ २ ॥ कहे राजन तुमशुं सदा, नहीं अंतर वत्सराज ॥ माटे नोजननो किस्यो, अवसर ठे घर आज ॥३॥ वत्सराज कहे साहिबा, ते शुन्न अवसर जाणी ॥ जिण दिन राज पधारशो, मुफ आंगणे गुणखाणी ॥ ४ ॥ कृपा करीने हा नणो, मुफ मन हर्षित होय ॥ हठहुंती नृप मानीयुं, निसुणी हरख्यो सोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठंगणत्रीशमी ॥

॥ गेंडुआनी देशी ॥ घरे आवी सवि वात प्रकाशी, मनमां धरी उत्साह ॥ अलवेलो रंगीलो नाह, अलवेलो हठीलो नाह, अलवेलो ठवीलो नाह ॥ अलवेलो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वाल्हुं अमारुं न करे वहालो, मनमां सुखरी चाह ॥ अलवेलो० ॥ २ ॥ नामिनीशुं नुवनोपरिनूमे, लाग्यो क्रीमा मांहि ॥ अल० ॥ ३ ॥ रमणी साथे रसनी वाते, तिहां वेला बहु वही जाय ॥ अल० ॥ ४ ॥ राजन चिंते हजी शुं न आव्यो, तेमण ए वत्स एण ठाय ॥ अल० ॥ ५ ॥ नृप चिंते चित्तमां एहने घर, शी सामग्री थाय ॥ अ० ॥ ६ ॥ जोवा कारण चर एक मूक्यो, पोतानो तेणे राय ॥ अ० ॥ ७ ॥ चर जोवे जइ घेर नीहाली, नवि देखे रसवती कांइ ॥ अल० ॥ ८ ॥ परकाशे नूपतिनी आगे, सेवक पाठो आइ ॥ अ० ॥ ९ ॥ पुनरपि बीजो नर तिहां आवी, जुवे सज्जाइ तास ॥ अ० ॥ १० ॥ कहे नृपने घर धूम न दीसे, शी नोजननी आश ॥ अ० ॥ ११ ॥ चिंते नृप जुठं कीध ठगाइ, मन मांहि एम उदास ॥ अ० ॥ १२ ॥ तव ते नोजन अवसर जाणी, वत्स आव्यो सुविलास ॥ अ० ॥ १३ ॥ कहे राजेश्वरने कर जोमी, पाउधारो मुफ आवास ॥ अ० ॥ १४ ॥ थाय हवे असुर नोजनने, उठोजी लीलविलास ॥ अ० ॥ १५ ॥ नृप कहे शी हांसी मुफ साथे, मांमी सुगुणनिवास ॥ अ० ॥ १६ ॥ विण सामग्री तेडे अमने, ए तुफने साबाश ॥ अ० ॥ १७ ॥ कोइ न मल्युं बीजुं हांसीने, नाग्यो तुफ विश्वास ॥ अ० ॥ १८ ॥ कहे वत्स तुं मुफ साहिब तहारो, हुं तुं चरणनो दास ॥ अ० ॥ १९ ॥ तुम हांसी करतां इहां महारी, कुललज्जा जाय नासी ॥ अ० ॥ २० ॥ शुं तुम रसवती केरुं कारण,

आवो घरे उल्लास ॥ अ० ॥ २१ ॥ नृप उठ्यो उत्साह धरीने, जे हुंता निज पास ॥ अ० ॥ २२ ॥ आव्या सवि वत्सराजने मंदिर, जोवे नयणे तपास ॥ अ० ॥ २३ ॥ देखी मंरूप अति रलीयालो, हैडे करेय विमास ॥ अ० ॥ २४ ॥ नहीं ए मानव माया दीसे, देव तणी सुप्रकाश ॥ अ० ॥ २५ ॥ पंचमे ओगणत्रीशमी ढाले, विरुर्ड मोहविलास ॥ अ० ॥ २६ ॥ स०॥ ए२३॥ ४७॥

॥ दोहा ॥

॥ यथायोग्य मांड्यां घणां, आसन ऊलाऊल ॥ नृप हरख्यो मनमां घणुं, देखी ठाकमठोल ॥ १ ॥ किम एणे एती वारमां, सवि कीधो सामान ॥ ए कांइ जोवा सारिखुं, मन चिंते राजान ॥ २ ॥ नृप आदि बेठा सहु, मांड्या सोवन थाल ॥ पीरसे बहु प्रेमे करी, जल पकान्न रसाल ॥ ३ ॥ सरस सवादे सालणां, खाटां खारां सार ॥ रायंतां कोले भर्यां, मरचालां मनोहार ॥ ४ ॥ चाखी चाखी स्वादने, पाम्या परमानंद ॥ अहो अपूरव रसवती, करे प्रशंस नरिंद ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ नागकुमर कहे रायजी ॥ ए देशी ॥ वत्स विचारे चित्तमां, उत्सव अति भारी ॥ विणु वनिता शोभे नहीं, ए रसवती सारी ॥ १ ॥ मोहनगारी मानिनी, विणु तेह अधूरुं ॥ भोजन ए शोभे नहीं, दीसे ठे ऊणुं ॥ २ ॥ चिंतवी मंदिर उपरे, चढीयो चोवारी ॥ आवतो देखी नाहने, उभी थइ नारी ॥ ३ ॥ प्राणजीवन पाउधारीये, धरा पावन कीजे ॥ नयण सलूणा नाहला, कांइ हुकम करीजे ॥ ४ ॥ वहाली हो वेगे आवीने, नृप गोरव सारो ॥ तुम विण ए शोभे नहीं, घर आंगण महारो ॥ ५ ॥ ते कुलवंती चिंतवे, स्त्रीने गुरु स्वामी ॥ वयण कहे जे कंतजी, करवुं शिर नामी ॥ ६ ॥ यडुक्तं ॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ॥ पतिरेव गुरुः स्त्रीणां, सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ निज पीयु आमह जाणीने, उठी अलबेली ॥ आणा हो आपणा नाथनी, नवि जाये ठेली ॥ ७ ॥ पण परिणामे रुडुं नहीं, शुं कीजे हो घहेनी ॥ आपणने निरखी करी, दृष्टि चलशे हो एहनी ॥ ८ ॥ मन पाखे ते मानिनी, शृंगार बनावे ॥ अनुपम रूप बनी रमा, जस उपमा नावे ॥ ए ॥ रमकम करती रंगशुं, पीरसणने हो आवी ॥ भामिनी देखी भूपनी, गति भांति

भूलावी ॥ १० ॥ अहो अहो रूपनी उरमी, भर यौवन माती ॥ कामातुर थयो देखीने, रमणी रंग राती ॥ ११ ॥ धन्य जीवित वत्सराजनुं, विलसे ए साथे ॥ मुफ घरे एहवी एके नहीं, शुं कखुं जगनाथे ॥ १२ ॥ भोजन जहेर समुं थयुं,तरुणीरंग लाग्यो ॥ उतास्यो नवि उतरे, ए प्रेमनो भाग्यो ॥ १३ ॥ कामराग सरिखो नहीं, जग कोइ अटारो ॥ पेसंतां दीसे नहीं, ए राग कटारो ॥ १४ ॥ भोजन करी नृप उठीयो, वत्से बहु सत्कास्यो ॥ काम वध्यो मन जेहने, ते न रहे वास्यो ॥ १५ ॥ मंदिर आव्यो भूपति, महिला मन ध्यातो ॥ आइट दोहटमां पड्यो, न गमे कांइ वातो ॥ १६ ॥ मंत्रीश्वर बोलावीने, वात मननी हो दाखी ॥ तुम्हे मुफ कदमी राजमां, सुख फुःखना सरिखी ॥ १७ ॥ मंत्रीश्वर पण तेहवा, नृप सरिखा हो विरुआ ॥ बाहिर मीठा भीतरे, कडुआ विषतरुआ ॥ १८ ॥ मंत्री आलोची मनमां, माठी मति रीफे ॥ राजन् ए वत्स जीवतां, तुम काम न सीफे ॥ १९ ॥ माटे कोइ उपायथी, वत्सराजने हणीये ॥ कारिज साधन कारणे, पुण्य पाप न गणीये ॥ २० ॥ हा हा एम करतां थका, जग नीच न लाजे ॥ प्राण हणे खल पारका, पोताने काजे ॥ २१ ॥ वहेला थाउं ए वत्सने, करी कोइ उपाय ॥ पहोंचाडो यममंदिरे, जेम मने सुख थाय ॥ २२ ॥ राये हुकम एहवो कस्यो, विषयारस वाहे ॥ काम कुमाणसनुं कस्युं, नरपतिए माहे ॥ २३ ॥ शो अनरथ नवि निपजे, विषयाथी हो वांको ॥ मति मूंफावे हो नर तणी, कुण राय ने रांको ॥ २४ ॥ पंचम खंडे त्रीशमी, ढाल रामे हो भाखी ॥ विषय थकी जय नवि लहे, सुणो साजन साखी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७३ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्री मली विचारीयुं, सिंह नामा सामंत ॥ ते जोरावर आजने, समये अति बलवंत ॥ १ ॥ तस थानक बेसारीये, सभा मांहे वत्सराज ॥ रूठ्यो हणशे एहने, सिंह सरेशे काज ॥ २ ॥ सभा जुडावी चोंपशुं, बेगे नृप ततकाल ॥ वत्सराज आव्यो तदा, नृप नमवा उजमाल ॥ ३ ॥ बेसाड्यो सिंहस्थानके, मंत्री मली महंत ॥ वत्सराज निर्भय थको, बेठो धीरजवंत ॥ ४ ॥ सिंह तदा आव्यो तिहां, बेठो वत्सने देखी ॥ हैयडे कोपे कलकल्यो, जोइ रह्यो अनिमेष ॥ ५ ॥ सभा मांहि बोल्यो नहीं, आवी

। आसंक ॥ नृप सना सरिखा सवे, कुण राजा कुण रंक ॥ ६ ॥ ना विसर्जी ततक्षणे, नृप मन मांहि न्यूक ॥ वत्सराजने मारवो, णे आज अनूक ॥ ७ ॥ वत्सराज मंदिर गयो, चाल्यो निर्जय थकी ॥ श्री मली पधारीयो, सिंह नणी नस पूत्र ॥ ८ ॥ सिंह नाम तुमचुं ही, पण माटी पण शीयाल ॥ स्थानक बेठो तुम तणे, वत्सराज प ल ॥ ९ ॥ जीवंता मृत सारिखा, तुम जेहवा चसवंत ॥ स्थानक ये आपणुं, ते कलि शुं जीवंत ॥ १० ॥ यडुक्तं ॥ माजीवाघः परा- ता,–डुःखदग्धोऽपि जीवति ॥ तस्याजननिरेवास्तु,जननीक्लेशकारिणः ॥ १ ॥ नाकनो खोज करेह, सीस सखोजो रखिजे ॥ तिण मानन जीवेह, सिमां पाहुं पीजसी ॥ २ ॥ पादाहतं यडुछाय, मूर्द्धानमधिरोहति ॥ स्थादेवापमानेऽपि, देहिनस्तद्वरं रजः ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ वासुपूज्य जिन वारमा जी ॥ ए देशी ॥ वात सुणी क्रोधे चढ्यो जी, सिंह सबल विकराल ॥ निज मेलापक खेह तदा, मलीयो वत्सने ततकाल १ ॥ होजी था सन्मुख शीयालीयाजी ॥ नहीं महेसुं तुऊ आज ॥ आसन बेसी माहरे, तें उतारी मुऊ लाज ॥ हो० ॥ २ ॥ केम रूठ्यो निज जीवने जी, शुं न सुण्युं मुऊ नाम ॥ एम अपदेसा तें करी, कोइ । करे ते कीधुं काम ॥ हो० ॥ ३ ॥ वल पाठो वल ताहरुं जी, जोइये णमेदान ॥ वत्स वद्यो वीरसेननो जायो, सुणी योध युवान ॥ हो० ॥ ४ ॥ जीम परे वेहु जड्या जी, अवसर लही वत्सराज ॥ नाख्यो उगाली सिंहने, मृगपति परे करतो अवाज ॥ हो० ॥ ५ ॥ पहोंचाड्यो यममंदिरे जी, जोतामां तेणी वार ॥ सुनट सवे नासी गया, हुउं सिंह तणो संहार ॥ हो० ॥ ६ ॥ परने चिंतवीये जिस्युं जी, तेहवुं आवे आप ॥ परठल ताके पापीया ते, पामे एम संताप ॥ हो० ॥ ७ ॥ सिंहसेना नाठी तदा जी, न खमाणो तस ताप ॥ जय पामी मुखे उचरे, कोइ राखो माय ने बाप ॥ हो० ॥ ८ ॥ नृपने शरणे आवीयो जी, राखो तुमे नृनाथ ॥ अम अशरणने उद्धरो, जाखे एम सिंहनो साथ ॥ हो० ॥ ९ ॥ वत्स आव्यो निज मंदिरे जी, वात कही मन मेली ॥ फल पाम्यो एह सिंहलो, जो कीधी मुऊ अवहेल ॥ हो० ॥ १० ॥ कहे विद्याधर वंशनी जी, नारी

सुगुणनिधान ॥ अम विद्या परभावथी, तुम्हे उतार्युं तस मान ॥ हो० ॥ ११ ॥ तुमे खोटुं कर्युं साहिबा जी, अमने देखाम्री दृष्टि ॥ कामवशे ए राजीयो, करशे तुमने ए अनिष्ट ॥ हो० ॥ १२ ॥ पण स्वामी मत धीरजो जी, किसीय न करशो चिंत ॥ अहि वश करवो सोहिलो, पण राय न होवे मित्त ॥ हो० ॥ १३ ॥ यडुक्तं ॥ काके शौचं द्यूतकारेषु सत्यं, सर्पे क्षांतिः स्त्रीषु कामोपशांतिः ॥ क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिंता, राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ हवे एक दिन ते मंत्रीशुं जी, राय करे आलोच ॥ काज न सीझ्युं आपणुं, सामो उपजाव्यो शोच ॥ हो० ॥ १४ ॥ सिंह गयो मुझ काजनो जी, रह्यो वैरी वत्सराज ॥ कहो मंत्री ए शुं थयुं, न थयुं कांइ चिंतित काज ॥ हो० ॥ १५ ॥ पण तुं मित्र जो माहरे जी, नहीं मुझ डुर्लभ कांय ॥ जेहने मित्र महोदधि, सुलभा तस लहेरी थाय ॥ हो० ॥ १६ ॥ सचिव कहे वाघण तणुं जी, डुध मगावो स्वामी ॥ मानधनी ए मानशे, सहेजे सरशे ए काम ॥ हो० ॥ १७ ॥ दरबारे वत्स आवीयो जी, कृत्य कर्युं नृप एह ॥ करी प्रणाम पाछो वल्यो, आव्यो चिंतातुर गेह ॥ हो० ॥ १८ ॥ नारी कहे तुमने दीयो जी, वाघण डुग्धादेश ॥ चित्तमां एहनी शोचना, शी शोचो छो प्राणेश ॥ हो० ॥ १९ ॥ कुमर कहे तमे केम लही जी, घर बेठां एह वात ॥ स्वामी अमे अंतरिक्ष थइ, नित्य आवुं तुमारी संघात ॥ हो० ॥ २० ॥ स्वामी अम्हे जाण्युं हतुं जी, करशे ए तुमशुं कूम ॥ पण निश्चय पीयु जाणजो, पमशे एहने मुख धूम ॥ हो० ॥ २१ ॥ कहेण सुणो अमचुं तुमे जी, दैवत तुरगारूढ ॥ अटवीमां जाउ तुमे, छे एक देवी तिहां गूढ ॥ हो० ॥ २२ ॥ माता अमारी देवता जी, तेहनी सखी ते देवी ॥ तुरगथी उलखशे सही, करशे तुमची बहु सेव ॥ हो० ॥ २३ ॥ कहेजो कारिज तेहने जी, थाशे वाघणरूप ॥ तुम साथे सही आवशे, देवीनां अकल स्वरूप ॥ हो० ॥ २४ ॥ आणी रायने सोंपजो जी, वधशे तुमारी लाज ॥ चढी तुरंगे चाल्यो वही, रमणी वयणे वत्सराज ॥ हो० ॥ २५ ॥ अटवी मांहे मूकीयो जी, जिहां देवीनुं धाम ॥ हय अहिनाणे उलखी, कीधुं तस चिंतित काम ॥ हो० ॥ २६ ॥ वाघण

.२ साथे चली जी, आवी नयरी मझार ॥ कान साहीने लावीयो

, तेहने वत्स नृपदरबार ॥ हो० ॥ २७ ॥ व्यंतरी वाघण उछली जी,
ई दोट ते वार ॥ कुमतिदायक मंत्री तणो, कीधो ततक्षण संहार ॥
० ॥ २८ ॥ नृप वीहीनो मनमां घणुं जी, हां हां हां वत्सराज ॥ कां
कने मारे इहां, नहीं महारे डुधनुं काज ॥ हो० ॥ २९ ॥ दीन वयण
णी रायनां जी, वाघण काने साही ॥ निज घरे लाव्यो तेहनी, करे
मिनी नक्ति उत्साही ॥ हो० ॥ ३० ॥ हर्षित थइ निज स्थानके जी,
ंतरी गइ ततकाल ॥ पंचम खंम एकत्रीशमी, कही काम उपर ए ढाल
हो० ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ ८८४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति मनमां चिंतवे, जय सवलो गयो नांजी ॥ साहसथी सवि
पजे, पण नाखीजे वाज ॥ १ ॥ पुनरपि मंत्रीशुं मली, नरपति करे
ाचार ॥ तेमी कहे वत्सराजने, जल्पतुं लावो वारि ॥ २ ॥ अंगरोग महारो
ले, वधे तेजनुं पूर ॥ तुज विण कुण आणे अवर, एक तुज मुख पर
र ॥ ३ ॥ कहे ते पाणी किहां अछे, वंध्याटवी मझार ॥ वेहु पर्वत
ंच कूप एक, तिहां जल्पतुं वारि ॥ ४ ॥ करे सर्वदा ते गिरि, संगम
ापगम नाव ॥ मीलन उन्मीलनपणे, जिम ते नयण स्वनाव ॥ ५ ॥
ञे तक जोइ पेसवुं, शीघ्र आणवुं वारि ॥ डुष्कर पण अंगीकखुं, कुमरे
ाम उदार ॥ ६ ॥ घर आवी नारी प्रत्ये, वात कही चित्त लाय ॥ ते
हे वात ए सहेल छे, चिंता म करो कांय ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ प्राणी गिरिवरशुं मन लावो ॥ ए देशी ॥ अश्व आरोही तिहां
ीयु जाउं, शकुनिकारूपे सारी ॥ छे एक देवी वहेन अमारी, वांछितनी
ातारी रे ॥ १ ॥ विरुइ विषयदशा जग दीठी ॥ करे अकारिज ए घट
ाकटी, काम अग्नि अंगीठी रे ॥ विरुइ० ॥ ए आंकणी ॥ अश्व चढी
ाहोतो तिण ठामे, श्री वत्सराज कुमार ॥ शकुनिका जाणी सखीनो
ाल्लन, पूछे सुख समाचार रे ॥ विरुइ० ॥ २ ॥ कुमर कलाथी तुंब
तरीने, दीधुं ढील न कीधी ॥ पाछो वलीयो जल लेइने, वांछित कारिज
सेद्धि रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ निज पुर आवी नृपने आप्युं, देव तणे पर-
ावे ॥ सहु सांजलतां बोलवा लाग्युं, तुंब मांहे सद्भावे रे ॥ वि० ॥ ४ ॥

कहे राजन् तुजने तुज मंत्री, कुमति तणो दातार ॥ वेहु मांहे कहे तेहनुं जक्षण, करुं एम बोले वारि रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ नीरवचन निसुणी सवि पर्षद, विस्मय पामी चिंते ॥ पापी ए केम बोले रे जाइ, ए तो कांइ विपरीत रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ म्लान थयो राजा एम चिंते, काज न सीज्युं महारुं ॥ कांइक वदन विकासी जंपे, धन्य वत्स धीरज तहारुं रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ घेर विसर्जी वत्सने विमासे, मंत्री साथे मलीने ॥ अहो असाध्य नहीं कांइ एहने, जुवनमां जाग्यबलीने रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ मंत्री धार मल्या नृप जेहवा, परघर जांजण लीणा ॥ कूड कपट बल उंडे हो जरीया, धिक् मानव जग हीणा रे ॥ वि० ॥ ए ॥ कहे राजन् मन शुं रह्या मुंजी, जुवो अमची बुद्धि केही ॥ एक घटे ए केडे न छोड, रमणी तुमची एही रे ॥ वि० ॥ १० ॥ देवी श्री कन्या विवाहनो, मिष करीने एक कीजे ॥ दक्षिण दिशि एक यमघर महोटुं, तिहां वत्स पेसारीजे रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यम निमंत्रण करवा काजे, राये वात थरापी ॥ तुमे सबला मुज चिंतना कारक, सेवक गुणमणिखाणी ॥ वि० ॥ १२ ॥ राये एक गर्त्ता निपजावी, दक्षिण दिशे अविचारी ॥ कामे अंध स्यो धंध न मांडे, काम कुगतिदातारी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ अग्नि प्रजावी तिहां नृप आव्यो, सुजट सहु तेडाव्या ॥ वत्स जणी बोलाव्यो ते पण, चोंप धरीने आव्या रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ नाम लेइ सुजटोने जाखे, तुमे कदमी मुज खासा ॥ काम कर्तुं जोइये एक इहांकण, जो करो अमची आशा रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ फरमावो सहु कहे कर जोमी, यम तेमवने जावुं ॥ श्रीदेवी विवाहनी उपरे, नृप कहे सुजटने धावुं रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ अग्निपूरित ए गर्त्तामार्गे, थइ यममंदिर जाय ॥ यमने निमंत्रण जे करी आवे, ते मुज साचो सखाय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ वात कठिन सहुए कहे स्वामी, ए अमथी नवि सीजे ॥ जाणो तेहवुं फुष्कर थीजुं, कारिज अमने दीजे रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ नृपे वरमराजनी महानुं जाख्युं, स्वामी हुकम मुज कीजे ॥ तुम आणा फुलमाल तणी परे, शिर उपर धारीजे रे ॥ वि० ॥ १ए ॥ जइ यमने तुमे नोतरी आवो, कीधुं अंगीकार ॥ घर आवीने कामिनी आगल, मांमी कह्यो ए विचार रे ॥ वि० ॥ २० ॥ कंचन मंमे दाउ धर्मीशनी, धिक् धिक् विषयविकार ॥ राम कहे

जे विषयमां राता, ते नर मूढ गमार रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥१०२२॥५२॥

॥ दोहा ॥

॥ कामिनी कहे तव कंतने, शुं कीधुं ए काम ॥ ए नृप तुम केडे थयो, मारणने सुणो स्वामी ॥ १ ॥ ठग साथे ठग थाइये, धूतारे धूतार ॥ इस्यो खलने उपकार ए, सुगुणा कंत विचार ॥ २ ॥ कहे वत्सराज खरुं कह्यो, पण कीधुं अंगीकार ॥ मिथ्या में थाये नहीं, इस्यो हवे एह विचार ॥ ३ ॥ यतः ॥ जिह्वेकेव सतामुक्ते० ॥ अन्यच ॥ वयणे जणियं सग्गं, कग्ग कज्जेण संधियं थाणं ॥ सुंदरि मुठं न काउं, मूआ ते वयण चुकइया ॥ १ ॥ अवसायं ते णवि स,—जाणेण जे अस्करा समुल्लविया ॥ ते पछरटंक किरि, य थ नहु अन्नहा हुंति ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ ते माटे अंगीकर्युं, पालेवुं में सार ॥ वचनचूक जीव्या तणो, स्वाद किस्यो संसार ॥ ४ ॥ कहे कामिनी आधार एम, चिरं जीवो महाराज ॥ एणे विराजो माखीये, उपकारी शिरताज ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ सांच्या तोडा तोड रे राज, सांची नदी रे वनास ॥ ए देशी ॥ कहे कामिनी विद्याधरी राज, अवसेर अम कंत ॥ सुख विलसो संसारनां राज, शी मनमां धरो चिंत ॥ १ ॥ साहिबो रे महारो, उपगारी शिरताज ॥ साहिबो रे महारो, गिरुओ गरीबनिवाज ॥ साहिबो रे महारो, मोजी वडो महाराज ॥ साहिबा रे जोवो, धणरो तमासो आज ॥ ए आंकणी ॥ किंकर-रूपे यक्षने राज, कहे तेडी एम वाणी ॥ कंतरूप धरी कारिसुं राज, जाओ नृप पासे सुजाण ॥ सा० ॥ २ ॥ जे कहे ते करजो तुम्हे राज, मत कहेजो नाकार ॥ साहिबरो पाणी रहे राज, वरतवुं तेम निर्धार ॥ सा० ॥ ३ ॥ रूप धरी वत्सराजनुं राज, आव्यो नरपति पास ॥ हुकम करो थें राजवी राज, म्हाने सुगुणआवास ॥ सा० ॥ ४ ॥ जावो थें महारी वती राज, यमने करी मनोहार ॥ मास मांहे इहां लावजो राज, कांइ कहां वारंवार ॥ सा० ॥ ५ ॥ लोक सहुको देखतां राज, अग्नि मांहे प्रवेश ॥ कीधो सहु हा हा करे राज, धिक् धिक् राय आदेश ॥ सा० ॥ ६ ॥ गुणरयणे गाढो भर्यो राज, वत्स सरीसो कुमार ॥ नृप निंदय हुवो घणो राज, मार्यो ए निर्धार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इण वाते रुडुं नहीं राज, आव्यो

कहे राजन् तुजने तुज मंत्री, कुमति तणो दातार ॥ बेहु मांहे कहे तेहनुं लक्षण, करुं एम बोले वारि रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ नीरवचन निसुणी सवि पर्षद, विस्मय पामी चिंते ॥ पापी ए केम बोले रे जाइ, ए तो कांइ विपरीत रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ म्लान थयो राजा एम चिंते, काज न सीज्युं मह्हारुं ॥ कांइक वदन विकासी जंपे, धन्य वत्स धीरज तह्हारुं रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ घेर विसर्जी वत्सने विमासे, मंत्री साथे मलीने ॥ अहो असाध्य नहीं कांइ एहने, भुवनमां नाग्यबलीने रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ मंत्री चार मल्या नृप जेहवा, परघर नांजण लीणा ॥ कूड कपट बल ठये हो नरीया, धिक् मानव जग हीणा रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ कहे राजन मन शुं रह्या मुंजी, जुवो अमची बुद्धि केही ॥ एक अठे ए केडे न छोड, रमणी तुमनी एही रे ॥ वि० ॥ १० ॥ देवी श्री कन्या विवाहनो, मिष करीने एक कीजे ॥ दक्षिण दिशि एक यमघर मह्होडुं, तिहां वत्स पेसारीजे रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यम निमंत्रण करवा काजे, राये वात जणावी ॥ तुमे सबला मुज चिंतना कारक, सेवक गुणमणिखाणी ॥ वि० ॥ १२ ॥ राये एक गर्त्ता निपजावी, दक्षिण दिशे अविचारी ॥ कामे अंध थयो अंध न मांडे, काम कुगतिदातारी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ अति प्रजाली तिहां नृप आव्यो, सुनट सहु तेडाव्या ॥ वत्स नणी बोलाव्यो ते पण, चोंप धरीने आव्या रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ नाम लेइ सुनटोने नाखे, तुमे कदमी मुज खासा ॥ काम कर्युं जोइये एक इहांकण, जो करो अमची आशा रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ फरमावो सहु कहे कर जोडी, यम तेडवाने जावुं ॥ श्रीदेवी विवाहनी उपरें, नृप कहे सुनटने चावुं रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ अग्निपूरित ए गर्त्तामार्गे, थइ यममंदिर जाय ॥ यमने निमंत्रण जे करी आवे, ते मुज साचो सखाय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ वात करे सबला कहे स्वामी, ए अमथी नवि सीजे ॥ जाणो तेहनुं दुष्कर थीजुं, कारिज अमने दीजे रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ नृप यमराजनी सह्हामुं जाइयुं, मानी हुकम मुज कीजे ॥ तुम आणा कुसमाव सरी पगे, शिर टपर धारीजे रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ जइ यमने तुमे नोतरी आवो, कीधुं अंगीकार ॥ घर आवीने कामिनी आगल, मांडी कह्यो ए विचार रे॥ वि० ॥ २० ॥ दंपन संडे डाउ मत्रीरामी, धिक् धिक् विषयविकार ॥ रान कहे

जे विषयमां राता, ते नर मूढ गमार रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥१०२२॥५२॥

॥ दोहा ॥

॥ कामिनी कहे तव कंतने, शुं कीधुं ए काम ॥ ए नृप तुम केडे थयो, मारणने सुणो स्वामी ॥ १ ॥ ठग साथे ठग थाइये, धूतारे धूतार ॥ श्यो सखने उपकार ए, सुगुणा कंत विचार ॥ २ ॥ कहे वत्सराज खरुं कह्यो, पण कीधुं अंगीकार ॥ मिथ्या में थाये नहीं, श्यो हवे एह विचार ॥ ३ ॥ यतः ॥ जिह्वेकेव सतामुक्त० ॥ अन्यच्च ॥ वयणे जणियं सग्गं, कग्ग कज्जेण संधियं याणं ॥ सुंदरि मुउं न कार्उ, मूढा ते वयण चुकइया ॥ १ ॥ अवसायं ते णवि स,—ज्जणेण जे अक्करा समुल्लविया ॥ ते पठरटंक किरि, प ध नहु अन्नहा हुंति ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ ते माटे अंगीकर्युं, पाखेवुं में सार ॥ वचनचूक जीव्या तणो, स्वाद किस्यो संसार ॥ ४ ॥ कहे कामिनी आधार एम, चिरं जीवो महाराज ॥ घणे विराजो माखीपे, उपकारी शिरताज ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ खांच्या तोका तोम रे राज, खांची नदी रे पनास ॥ ए देशी ॥ कहे कामिनी विद्याधरी राज, अवसेसर अम कंत ॥ सुख विलसो संसारनां राज, शी मनमां धरो चिंत ॥ १ ॥ साहिबो रे महारो, उपगारी शिरताज ॥ साहिबो रे महारो, गिरुउ गरीबनिवाज ॥ साहिबा रे जोवो, धणरो तमासो आज ॥ साहिबो रे महारो, मोजी वडो महाराज ॥ ए आंकणी ॥ किंकर-रूपे वहने राज, कहे तेडी एम वाणी ॥ कंतरूप धरी कारिसुं राज, जाउं नृप पासे सुजाण ॥ सा० ॥ २ ॥ जे कहे ते करजो तुम्हे राज, मत कहेजो नाकार ॥ साहिबरो पापी रहे राज, वरतवुं तेम निर्धार ॥ सा० ॥ ३ ॥ रूप धरी वत्सराजनुं राज, आव्यो नरपति पास ॥ हुकम करो धें राजवी राज, म्हाने सुखप्रवास ॥ सा० ॥ ४ ॥ जायो थें महारी वती राज, थमने करी मनोहार ॥ मास मांहे इहां आवजो राज, कांइ कहां वारंवार ॥ सा० ॥ ५ ॥ लोक सहुको देखतां राज, अग्नि मांहे प्रवेश ॥ कीधो सहु हा हा करे राज, धिक धिक राय आदेश ॥ सा० ॥ ६ ॥ गुणरयणे गाढो भर्यो राज, वत्स सरीखो कुंमार ॥ नृप निर्दय हुओ घणो राज, मार्यो ए निर्धार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इम पाते रहे नहीं राज, आव्यो

उपर आज ॥ तेडण मुजने मोकल्यो राज, पाउधारो महाराज ॥ सा० ॥ २३ ॥ घइ हर्षित मुजने तेणे राज, अंग आनूषण दीध ॥ कहेवाब्युं तुमने यमे राज, काज जसुं ए कीध ॥ सा० ॥ २४ ॥ तेमाव्या अमने तुमे राज, पण अमथी न अवाय ॥ इंद्रहुकमथी माहरे राज, फुरसद क्षणनी न थाय ॥ सा० ॥ २५ ॥ ते माटे तुमे आववुं राज, एक वार मिलणने काज ॥ मुज साथे ए मोकल्यो राज, निज दोवारिक आज ॥ सा० ॥ २६ ॥ देखी अनिमेष नयणने राज, राये मान्युं सवि साच ॥ व्यंतरपति तव बोलीयो राज, राय प्रत्ये एम वाच ॥ सा० ॥ २७ ॥ दंरूधरे फरमावीयुं राज, तुम सेवक मुज पास ॥ खासा होवे ते मूकजो राज, खचर देवाने उल्लास ॥ सा० ॥ २८ ॥ करशुं तेहनी चाकरी राज, अमथी थशे ते सार ॥ एम सुणी सेवक सहु राज, जावा थया हुशियार ॥ सा० ॥ २९ ॥ कहे प्रतिहार ते मोकलो राज, खासा जे होय तुम यार ॥ यमदह पासे आवीया राज, राजन सहु परिवार ॥ सा० ॥ ३० ॥ पंचम खंडे तेत्रीशमी राज, ढाल नणी सुविचार ॥ पाप तणां फल पामशे राज, हवे ते जोजो चार ॥ सा० ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५८ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेत्री कहे राजन् सुणो, विषमो अमचो स्वामी ॥ रीते तिहांकण जाइये, तो सीजे सवि काम ॥ १ ॥ मानीताने मोकलो, पहेलां महारी साथ ॥ पछे राजा केडे प्रजा, एम सहु आवो साथ ॥ २ ॥ चार सचिव तव चिंतवे, पहेलां गमने इष्ट ॥ फल होवे चिंतित सही, जोजन लहीये मिष्ट ॥ ३ ॥ यतः ॥ दाने याने शयने, व्याख्याने जोजने सजास्थाने ॥ क्रये विक्रयेऽतिथित्वे, राजकुले पूर्णफल आद्यः ॥ १ ॥ शून्येऽरण्ये जवने, ग्रामे तोये जये च संग्रामे ॥ आरोहेप्यवरोहे, पुरस्सरेत्स पथि रात्रौ च ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ वेत्री पेठो आगमां, सहु लोकनी साख ॥ पूठे पमीया चार ते, कही नरपतिने नाख ॥ ४ ॥ पमतखेव हुवा जस्मसय, निज अजिलाप समेत ॥ परलोके गया पापीया, पाप तणे संकेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ होरे लाल ॥ सरोवर पाणी पीवलो रे लाल ॥ ए देशी ॥ होरे लाल ॥ राजा पण रंगे चल्यो रे लाल, पतंगललित करे जाम ॥ हो० ॥

अग्नि जलंतमां आकरो रे लाल, मह्या वत्सराजे ताम ॥ १ ॥ होरे लाल ॥ काज विचारी कीजीये रे लाल ॥ सुण पृथिवीप्रतिपाल ॥ हो० ॥ नीरखी परखीने जे करे रे लाल, न हुवे तस जंजाल ॥ हो० ॥ काज वि० ॥ २ ॥ हो० ॥ मत जाणो ए मनमां रे लाल, मुर्ड न जीवे कोय ॥ हो० ॥ ए पटु नाटक में सही रे लाल, तुजने देखाड्युं जोय ॥ हो० ॥ काज० ॥ ३ ॥ हो० ॥ ए सचिव मंत्री कुबुद्धिया रे लाल, कूड तणा करनार ॥ हो० ॥ मुजने प्राणांत कष्टमें रे लाल, नाख्यो मही बहु वार ॥ हो० ॥ का० ॥ ४ ॥ हो० ॥ देव तणा परजावथी रे लाल, पुगाड्या में गेह ॥ हो० ॥ अग्निमांहि होमावीया रे लाल, रह्यो हुं अखंमित देह ॥ हो० ॥ का० ॥ ५ ॥ यतः ॥ कृते प्रतिकृतं कुर्यात्, लुंचिते प्रतिलुंचितम्॥ त्वया लुंचापिताः पक्षा, मया मुंमावितं शिरः ॥ ३ ॥ दोहो ॥ घुत्तह कीजे धूणिपा, आलह दीजे आल ॥ मित्तह कीजे मित्तमी, एम गमीजे काल ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ हो० ॥ मन जीवो जे जला थइ रे लाल, दीये परने कुबुद्धि ॥ हो० ॥ परद्रोहे परधन नारीने रे लाल, चाहे ते कुबुद्धि ॥ हो० ॥ का० ॥ ६ ॥ हो० ॥ नृप आरिज कह्यो शुं करे रे लाल, जिहां मंत्री होये कुजात ॥ हो० ॥ नृप जूंको पण शुं करे रे लाल, जिहां मंत्रीश सुजात ॥ हो० ॥ का० ॥ ७ ॥ हो० ॥ तुं स्वामी बे माहरो रे लाल, नाख्यो में नवि जाय ॥ हो० ॥ स्वामिद्रोहनुं मोटकुं रे लाल, जगमां पाप कहाय ॥ हो० ॥ का० ॥ ८ ॥ हो० ॥ जूंटो पण ओह अन्यनो रे लाल, दीपे दुःखनो संदोह ॥ हो० ॥ स्वामी मित्र गुरु तणो रे लाल, अति माठो कह्यो द्रोह ॥ हो० ॥ का० ॥ ए ॥ हो० ॥ वात सुणी नरराजीयो रे लाल, चित्तमां लाग्यो जोर ॥ हो० ॥ मुज चेष्टित एणे लह्युं रे लाल, में कर्युं कर्म कठोर ॥ हो० ॥ का० ॥ १० ॥ हो० ॥ एवंविध अपराधने रे लाल, शक्ति छते सह्या जेण ॥ हो० ॥ राज्य न लीधुं न काढीयो रे लाल, परउपकारी गुणेण ॥ हो० ॥ का० ॥ ११ ॥ यतः ॥ नयमदामः समर्थ, क्षमते क्षमया न शान्तिचान्दर्शिम् ॥ न नवं तनु क्षमताया,–मिदं हि लोकोत्तरं चरितम् ॥ए॥ अन्योन्यस्य परना, प्रकृतिः प्राणांतगतस्य न हि विषमा ॥ मलयाचमाचलोऽहं, कथननुवी भावमानोऽस्मि ॥ ६ ॥ पूर्व ढाल ॥ हो० ॥ इत्यादिक निज निंदतो रे लाल, प्रणमतो वत्सराज ॥ हो० ॥ बहुविध तणी परे रे लाल,

मंदिर गयो महाराज ॥ हो० ॥ का० ॥ १२ ॥ हो० ॥ लोक गयां सहु स्यानके रे लाल, धरतां विस्मय भूरि ॥ हो० ॥ एह निमित्तथी रायने रे लाल, वाध्युं वैरागनुं पूर ॥ हो० ॥ का० ॥ १३ ॥ हो० ॥ चिंते पाप घणुं कर्युं रे लाल, परदारानी आश ॥ हो० ॥ आतमलघुता में करी रे लाल, बांध्यो पापनो राशि ॥ हो० ॥ का० ॥ १४ ॥ हो० ॥ एम चिंती निज बालिका रे लाल, परणावे भूपाल ॥ हो० ॥ राज्य दीधुं करमोचने रे लाल, महेली मन ठक चाल ॥ हो० ॥ का० ॥ १५ ॥ हो० ॥ नृप ऋद्धि मूकी निसर्यो रे लाल, थयो तापस वन मांय ॥ हो० ॥ करे तप बहु अज्ञानथी रे लाल, नवि संजाले कांय ॥ हो० ॥ का० ॥ १६ ॥ हो० ॥ राजा थयो वत्सराजजी रे लाल, वीरसेन नृपनो नंद ॥ हो० ॥ सकल गुणे करी शोजतो रे लाल, दिन दिन अधिक आनंद ॥ हो० ॥ का० ॥ ॥ १७ ॥ हो० ॥ देश घणा साध्या तेणे रे लाल, वरती चिहुं खंम आण ॥ हो० ॥ भूप सवे आवी नम्या रे लाल, हुकम करे परमाण ॥ हो० ॥ का० ॥ १८ ॥ हो० ॥ चिहुं राणीशुं जोगवे रे लाल, इंद्रियसुख सुविलास ॥ हो० ॥ ईति निवारी वेगली रे लाल, पूगी मनमानी आश ॥ हो० ॥ का० ॥ १९ ॥ हो० ॥ कीर्त्ति पसरी चिहुं दिशे रे लाल, ढांकी ते न रहंत ॥ हो० ॥ वात विद्या कस्तुरिका रे लाल, आपेही प्रगटंत ॥ हो० ॥ का० ॥ २० ॥ यडुक्तं ॥ वार्त्ता च कौतुकवती विशदा च विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनाजेः ॥ तैलस्य बिंदुरिव वारिणि, दुर्निवारमेतत्त्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम् ॥ ७ ॥ हो० ॥ पंचम खंडे ए कही रे लाल, ढाल चोत्रीशमी रंग ॥ हो० ॥ रामविजय कहे हेजशुं रे लाल, कीजे पुण्य प्रसंग ॥ हो० ॥ का० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १००४ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर निज नयरीए, पसरी वात पडूर ॥ वत्सराज राजा थयो, उज्जयिनी वम नूर ॥ १ ॥ लख्यो लेख परजा मली, नृप वत्सराजने आम ॥ वहेला वलजो साहिबा, अम प्रतिपालन काम ॥ २ ॥ दूत लेख लेइ चल्यो, आव्यो नयरी उज्जेण ॥ नृप वत्सराजने सोंपीयो, आवी हर्ष जरेण ॥ ३ ॥

अग्नि जलंतमां आकरो रे लाल, अह्या वत्सराजे ताम ॥ १ ॥ होरे लाल ॥ काज विचारी कीजीये रे लाल ॥ सुण पृथिवीप्रतिपाल ॥ हो० ॥ नीरखी परखीने जे करे रे लाल, न हुवे तस जंजाल ॥ हो० ॥ काज वि० ॥ २ ॥ हो० ॥ मत जाणो ए मनमां रे लाल, मुउं न जीवे कोय ॥ हो०॥ एपटु नाटक में सही रे लाल, तुऊने देखाड्युं जोय ॥ हो० ॥ काज० ॥ ३ ॥ हो० ॥ एसवि मंत्री कुबुद्धिया रे लाल, कूड तणा करनार ॥ हो० ॥ मुऊने प्राणांत कष्टमें रे लाल, नाख्यो मली बहु वार ॥ हो० ॥ का० ॥ ४ ॥ हो० ॥ देव तणा परजावथी रे लाल, पूगाड्या में एह ॥ हो० ॥ अग्निमांहि होमावीया रे लाल, रह्यो हुं अखंडित देह ॥ हो० ॥ का० ॥ ५ ॥ यतः ॥ कृते प्रतिकृतं कुर्यात्, लुंचिते प्रतिलुंचितम्॥ त्वया लुंचापिताः पक्षा, मया मुंडापितं शिरः॥ ३ ॥ दोहो ॥ धुत्तह कीजे धूत्तिया, आलह दीजे आल ॥ मित्तह कीजे मित्तमी, एम गमीजे काल ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ हो० ॥ मम जीवो जे जला थइ रे लाल, दीये परने डुर्बुद्धि ॥ हो० ॥ परद्रोहे परधन नारीने रे लाल, चाहे ते डुर्बुद्धि ॥ हो० ॥ का० ॥ ६ ॥ हो० ॥ नृप आरिज कहो शुं करे रे लाल, जिहां मंत्री होये कुजात ॥ हो० ॥ नृप जूंमो पण शुं करे रे लाल, जिहां मंत्रीश सुजात ॥ हो० ॥ का० ॥ ७ ॥ हो० ॥ तुं स्वामी छे माहरो रे लाल, नाख्यो में नवि जाय ॥ हो० ॥ स्वामिद्रोहनुं मोटकुं रे लाल, जगमां पाप कहाय ॥ हो० ॥ का० ॥ ८ ॥ हो० ॥ जूंडो पण द्रोह अन्यनो रे लाल, दीये डुःखनो संदोह ॥ हो० ॥ स्वामी मित्र गुरु तणो रे लाल, अति मोटो कह्यो द्रोह ॥ हो० ॥ का० ॥ ९ ॥ हो० ॥ वात सुणी नरराजीयो रे लाल, चित्तमां लाग्यो जोर ॥ हो० ॥ मुऊ चेष्टित एणे लह्युं रे लाल, में कर्युं कर्म कठोर ॥ हो० ॥ का० ॥ १० ॥ हो० ॥ एवंविध अपराधने रे लाल, शक्ति वते सह्या जेण ॥ हो० ॥ राज्य न लीधुं न पालीयो रे लाल, परउपकारी गुणेण ॥ हो० ॥ का० ॥ ११ ॥ यतः ॥ सयमदामः समर्थ, दामते क्षमया न शान्ति चान्यर्द्धिम्॥ न नवं तनू दामतापा,-मिदं हि लोकोत्तरं चरितम् ॥ ५ ॥ अस्योत्तमस्य परमा, प्रकृतिः प्राणांतगतस्य न हि विरमा ॥ तस्याधमाय मोऽहं, कथमनृणी नावमातोऽस्मि ॥ ६ ॥ पूर्व ढाल ॥ हो० ॥ इत्यादिक निज निंदतो रे लाल, प्रशंसतो वत्सराज ॥ हो० ॥ नवनिर्मित तणी परे रे लाल,

मंदिर गयो महाराज ॥ हो० ॥ का० ॥ १२ ॥ हो० ॥ लोक गयां सहु स्थानके रे लाल, धरतां विस्मय भूरि ॥ हो० ॥ एह निमित्तथी रायने रे लाल, वाध्युं वैरागनुं पूर ॥ हो० ॥ का० ॥ १३ ॥ हो० ॥ चिंते पाप थएुं कर्युं रे लाल, परदारानी आश ॥ हो० ॥ आतमलघुता में करी रे लाल, बांध्यो पापनो राशि ॥ हो० ॥ का० ॥ १४ ॥ हो० ॥ एम चिंती निज बालिका रे लाल, परणावे भूपाल ॥ हो० ॥ राज्य दीधुं करमोचने रे लाल, महेली मन ढक चाल ॥ हो० ॥ का० ॥ १५ ॥ हो० ॥ नृप ऋद्धि मूकी निसर्यो रे लाल, थयो तापस वन मांय ॥ हो० ॥ करे तप बहु अज्ञानथी रे लाल, नवि संभाले कांय ॥ हो० ॥ का० ॥ १६ ॥ हो० ॥ राजा थयो वत्सराजजी रे लाल, वीरसेन नृपनो नंद ॥ हो० ॥ सकल गुणे करी शोभतो रे लाल, दिन दिन अधिक आनंद ॥ हो० ॥ का० ॥ ॥ १७ ॥ हो० ॥ देश घणा साध्या तेणे रे लाल, वरती चिहुं खंड आण ॥ हो० ॥ भूप सवे आवी नम्या रे लाल, हुकम करे परमाण ॥ हो० ॥ का० ॥ १८ ॥ हो० ॥ चिहुं राणीशुं भोगवे रे लाल, इंद्रियसुख सुविलास ॥ हो० ॥ ईति निवारी वेगली रे लाल, पूगी मनमानी आश ॥ हो० ॥ का० ॥ १९ ॥ हो० ॥ कीर्त्ति पसरी चिहुं दिशे रे लाल, ढांकी ते न रहंत ॥ हो० ॥ वात विद्या कस्तुरिका रे लाल, आपेही प्रगटंत ॥ हो० ॥ का० ॥ २० ॥ यडुक्तं ॥ वार्त्ता च कौतुकवती विशदा च विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनाभेः ॥ तैलस्य बिंदुरिव वारिणि, डुर्निवारमेतत्त्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम् ॥ ७ ॥ हो० ॥ पंचम खंडे ए कही रे लाल, ढाल चोत्रीशमी रंग ॥ हो० ॥ रामविजय कहे हेजशुं रे लाल, कीजे पुण्य प्रसंग ॥ हो० ॥ का० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ १००४ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर निज नयरीए, पसरी वात पडूर ॥ वत्सराज राजा थयो, उज्जयिनी बल भूर ॥ १ ॥ लख्यो लेख परजा मली, नृप वत्सराजने आम ॥ वहेला वलजो साहिबा, अम प्रतिपालन काम ॥ २ ॥ दूत लेख लेइ चल्यो, आव्यो नयरी उज्जेण ॥ नृप वत्सराजने सोंपीयो, आवी हर्ष भरेण ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ राग सिंधूओ ॥ तथा ॥ प्रबल काल तणो पयोनिधि, गाजतो गंजीर ॥ ए देशी ॥ लेख लीधो हाथ ततक्षण, दीध वांचक हाथ ॥ उखेलीने ते स्वयं वांचे, सांजले जूनाथ ॥ स्वस्ति उज्जयनी पुरी जिहां, नृप वसे वत्सराज ॥ क्षितिप्रतिष्ठित नगरहुंती, लखे लेख समाज ॥ १ ॥ वहेला आवजो रे, वार म लावजो रे, राजेश्वर जावजो रे, जग जश पावजो रे ॥ ए आंकणी ॥ ग्रीष्म-अर्दित मेघ चाहे, शीतपीमित आग ॥ जेम संजारे सहुनो, तेम तुऊशुं राग ॥ शीघ्र आवो थाउं अमचा, स्वामी तुम वमजाग ॥ अन्यथा अमने इहांकणे, नहीं रह्यानो लाग ॥ वहेला० ॥ २ ॥ देवराज ए ङुःखदायी, करे सबल अन्याय ॥ सुख नहीं ए नयर मांहे, जिहां एहवो राय ॥ शुं घणुं तुम दाखीये मत, ढील करजो कांय ॥ वत्स सघली वात निसुणी, मेलीयो समुदाय ॥ वहेला० ॥ ३ ॥ तिहां सुजट जट कोटि मलीया, वाजते निशाण ॥ सैन्यजार ए धरा न खमे, चढ्यो नृप वठराण ॥ परधानने निज राज्य सोंपी, साथे सबल मंमाण ॥ क्षितिप्रतिष्ठित नयर अनुक्रमे, आवीयो हुइ जाण ॥ व० ॥ ४ ॥ मोकल्यो देवराजने एक, दूत वत्से ताम ॥ जाणीयुं वत्सराज आव्यो, करणने संग्राम ॥ हुउं लमवा काज तत्पर, देवराज अनाम ॥ सैन्य लइ बाहेर आव्यो, वडो तेह हराम ॥ व० ॥ ५ ॥ सामंत सघला नहीं रागी, वत्स उपर प्रेम ॥ कोइ तन देवे नहीं तिहां, देवराजने तेम ॥ वदन फीके चित्त मांहि, तेह चिंते एम ॥ फरयुं सेना सहु लश्कर, रणे जीतीये केम ॥ व० ॥ ६ ॥ रात लेइ तेह नाठो, देवराज नरिंद ॥ वत्स सहामो चढी आव्यो, वीरसेन फरजंद ॥ हाथ जोमी पाय लागी, सचिव जृत्य अमंद ॥ चिरं जीवो स्वामी अमचा, सहु कहे आनंद ॥ व० ॥ ७ ॥ लोक हर्षित हुवां सघलां, महोत्सव बहु थाय ॥ वाजते निशाण पुरमां, करे परवेश राय ॥ बोले वंदिजन जयारव, हैडे हर्ष न माय ॥ आव्यो प्रजापाल नृपति, टल्या दूर अन्याय ॥ व० ॥ ८ ॥ तखत उपर आवी बेठा, वखत वलीयो सार ॥ सहु हाथ जोमी पाय लाग्या, हुउं जयजयकार ॥ राज्य बेहु जलां पाले, व्यसन सात निवार ॥ पुहवी वत्स नरेश आणा, वधी बहु विस्तार ॥ व० ॥ ए ॥ नारी चिहुं संघात विलसे, देवनी परे जोग ॥ पुण्यथी सवि आवी मलीया, सर्व

शुज्ञ संयोग ॥ राज्य साते अंग शोजित, अंग तेम नीरोग ॥ वाधीयो यशोवाद जगमां, इुठ धर्मने योग ॥ व० ॥ १० ॥ एहवे एक दिवस आव्या, वनह्मां गणधार ॥ धर्मरुचि मुनिराज रुना, करे किरिया सार॥ कर्म क्षीपण काज पाले, शुरू पंचाचार ॥ चारज्ञानी शुरूध्यानी, समोसख्या अणगार ॥ व० ॥ ११ ॥ आवी वनपालक वधामणी, दीधी तेणी वार॥ चिरं जीवो स्वामी मोरा,प्रजाना आधार॥ आवीया उद्यान मांहे, मुनि बहु परिवार ॥ निसुणी तेहने दान आपे, हरखी बार हजार ॥ व० ॥ १२ ॥ लेइ सवि परिवार आवे, वांदवा उजमाल ॥ वत्सराज नरिंद मोटो, ऋद्धि ऊकऊमाल ॥ आवी गुरुना चरण वंदे, खंड पंचमे ढाल ॥ पांत्रीशमी कही रामविजये, धन्य ए जूपाल ॥ व० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ११०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचाजिगम प्रणाम करी, वेठो शुरू जूजाग ॥ कहे मुनिवर हवे देशना, आणी अनुजव राग ॥ १ ॥ सुकृते रत नरपति प्रणत, उदेशी गुरुराज ॥ चाहे जवि धर्म करो तुमे, जेम लहो शिवपदराज ॥ २ ॥ तेह धर्म दोय जेद छे, सागार ने अणगार ॥ जीवदया तस मूल छे, एहनो अवर विस्तार ॥ ३ ॥ सर्वविरति निर्वाहने, मुनि आराधे तेह ॥ ते विण आराधन नोहे, तेहनुं सुण गुणगेह ॥ ४ ॥ यतिधर्मे समरथ नहीं, ते शुरू गृहीनो धर्म ॥ पन्निवज्ञतो परंपर लहे, सिद्ध स्वरूप अकर्म ॥ ५ ॥ द्वादश व्रतरूपे जलो, ते जाख्यो जगवंत ॥ आदरीये आदर करी, जिम हुवे सुख अनंत ॥ ६ ॥ केइक जोजनलालची, बहु नर नारीरत्त ॥ माल्य विलेपन जोगीया, दीसे घणा जगत्त ॥ ७ ॥ गीत तणा अर्थी घणा, द्यूत कथा रसलीण ॥ केइक वाहन गज वृषज, रसिया दीसे दीण ॥ ८ ॥ पण जे व्यसनी धर्मना, तेहना नमीये पाय ॥ धन्य तेह धरणीतले, पावन तेहनी काय ॥ ९ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

॥ हर्पजर हमशुं बोलजो जी ॥ ए देशी ॥ देशन सुणी गुरु वंदीने रे, कहे वत्सराज नरेश ॥ तारक जवमां तुं मल्यो रे, साचो तुम उपदेश ॥ १ ॥ सुगुरु मुऊ, तारक मलीयो आज ॥ सुगुरु मुऊ, सारो वांछित काज ॥ सुगुरु तुम, मालव वलग्यो याज॥ सुगुरु मुऊ, साचो जंगी ऊहाज

॥ ए आंकणी ॥ चरणधर्म प्रभु दोहिलो रे, मुकहुंती न सधाय ॥ श्रावकव्रत उचरावीये रे, मुजने करी सुपसाय ॥ सु० ॥ २ ॥ गुरु कहे देवाणुप्पिया रे, ठमाये तेम ठांम ॥ आरंभ केडे अनादिनो रे, लागी रह्यो जीव मांमी ॥ सु० ॥ ३ ॥ व्रत बारे गुरुजी मुखे रे, उच्चरीयां वत्सराज ॥ थइ कृतारथ आवीयो रे, निज मंदिर महाराज ॥ सु० ॥ ४ ॥ मासकल्प करीने तिहां रे, गुरु विचस्या अन्य देश ॥ श्रावकव्रत आराधतो रे, नृप पाले निज देश ॥ सु० ॥ ५ ॥ चैत्य करावे जिन तणां रे, बिंब भरावे सार ॥ दान सुपात्रे दे भलां रे, करे सफलो अवतार ॥ सु० ॥ ६ ॥ वली तेहज मुनि आवीया रे, विचरंता तेणे गाम ॥ वत्सराज वंदण चल्यो रे, जइ वंद्या गुणधाम ॥ सु० ॥ ७ ॥ देशन सुणी पूछे प्रभु रे, कहो पूरव अवदात ॥ आपद टली संपद हुइ रे, कोण कर्मनी वात ॥ सु० ॥ ८ ॥ गुरु कहे सांभल राजीया रे, जंबू भरत मझार ॥ पुर वसंतपुरमां वसे रे, शूर नृपति सुखकार ॥ सु० ॥ ९ ॥ सरलातम सोहामणो रे, दाक्षिण्य गुण संयुक्त ॥ निर्लोभी सहेजे भलो रे, देव गुरुनो भक्त ॥ सु० ॥ १० ॥ दान दुःखीने आपतो रे, निज संपद भूपाल ॥ पाले प्रजा रुडी परे रे, न्यायरीते उजमाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ इत्यादिक गुणे शोभतो रे, पण शीलालंकार ॥ शोभित दानगुणे करी रे, पसस्यो यशविस्तार ॥ सु० ॥ १२ ॥ तस अंतेउरमां शिरे रे, शूरवेगा वर नारी ॥ विद्याधरकुल उपनी रे, पाले पति आचार ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते उपर बीजी वरी रे, रतिचूला नृपजात ॥ तस रूपे रीझ्यो घणुं रे, न लहे दिह ने रात ॥ सु० ॥ १४ ॥ राये अवरने परहरी रे, वात जे ए उपरांत ॥ देवीए तुज आगल कह्युं रे, सघलुं तस वृत्तांत ॥ सु० ॥ १५ ॥ गंधवाहनगतिनी सुता रे, परणावी जेणे दोय ॥ ते देवीना कहेणथी रे, तुमे जाणो सहु कोय ॥ सु० ॥ १६ ॥ शूर नृपति चवी तुं थयो रे, नृपनंदन वत्सराज ॥ दानादिक शुभ कृत्यथी रे, पाम्यो अतुल वड राज ॥ सु० ॥ १७ ॥ कह्युं पूर्वे ईश्वरपणे रे, कोइक अंतरायनुं कर्म ॥ राज्यभ्रंशादिक तें लह्युं रे, पूर्व वयमां अशर्म ॥ सु० ॥ १८ ॥ गुरुवयणां एम सांभली रे, जातिस्मरण सार ॥ जेम भाख्युं तेम सांभस्युं रे, लह्यो वैराग्य अपार ॥ सु० ॥ १९ ॥

ज्ञानी तुम ज्ञानने रे, कही साची ए वाणी ॥ तुम विण कुण एम

उपदिशे रे, गिरुआ गुणनी खाणी ॥ सु० ॥ २० ॥ स्थापी राज्ये तनयने रे, थाइश हुं तुम शिष्य ॥ वांदीने घरे आवीयो रे, नरपति सबल जगीश ॥ सु० ॥ २१ ॥ श्रीशेखर निज पुत्रने रे, सोंपी राज्यनो भार ॥ त्रिहुं नारीशुं राजीयो रे, थयो सूधो अणगार ॥ सु० ॥ २२ ॥ वत्सराज ऋषिराजीयो रे, चाले उग्र विहार ॥ चोखुं चारित्र पालीने रे, पाम्या सुरपद सार ॥ सु० ॥ २३ ॥ देवलोकथकी चवी रे, करशे नरभव एक ॥ कर्म खपी केवल लही रे, लहेशे मुक्ति सुविवेक ॥ सु० ॥ २४ ॥ घनरथ प्रभुजीए कह्यो रे, शूर तणो संबंध ॥ आपद टली संपद थइ रे, पुण्य तणे अनुबंध ॥ सु० ॥ २५ ॥ इति वत्सराजसंबंधः ॥ पंचम खंडे छत्रीशमी रे, ढाल कही सुणो संत ॥ रामविजय कहे सांभलो रे, जिनगुण एकण चित्त ॥ सु० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ११३५ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देशन सुणी जिनराजनी, श्री मेघरथ भूपाल ॥ चारित्रने उत्सुक थयो, तजी मोह जंजाल ॥ १ ॥ घर आवी दृढरथ भणी, कहे बंधव ल्यो राज ॥ प्रभु पासे हुं व्रत ग्रही, सारीश आतम काज ॥ २ ॥ कहे दृढरथ सुण बंधवा, ए नरकांतज राज ॥ एहने कारण काज हुं, नवि विणसाडुं आज ॥ ३ ॥ तेणे निज अंगज स्थापीयो, मेघसेन अभिधान ॥ रथसेन दृढरथसुत भणी, युवराजा पद ठाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल सामत्रीशमी ॥

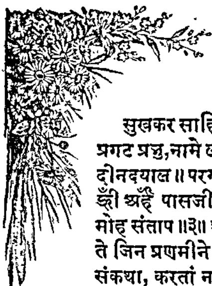
॥ तुमे भले आव्या कहीये जी, थूलिभद्र भले आव्या ॥ ए देशी ॥ मेघरथ घनरथ जिन वांदे जी ॥ प्रभुजी सोभागी ॥ मुज आपो चरण आनंदे जी ॥ वारु वडभागी ॥ १ ॥ मुज मनना मनोरथ फलीया जी ॥ प्रभु० ॥ आज देवाधिदेव मुज मलीया जी ॥ वारु० ॥ २ ॥ मुज चारित्र आपो चोखुं जी ॥ प्र० ॥ निज आतमगुणने पोखुं जी ॥ वा० ॥ ३ ॥ मुज भवजलथकी तारो जी ॥ प्र० ॥ घनरथ जिन मुज उगारो जी ॥ वा० ॥ ४ ॥ नृप चार सहस संघाते जी ॥ प्र० ॥ सुत सुंदर सातसें साथे जी ॥ वा० ॥ ५ ॥ बंधव दृढरथनी जोडी जी ॥ प्र० ॥ लीये चारित्र मदने मोडी जी ॥ वा० ॥६॥ ग्रही श्रीजिनहाथे दीक्षा जी ॥ प्र० ॥ आराधे जिननी शिक्षा जी ॥ वा० ॥ ७ ॥ पंच समिति गुप्ति रखवाले जी ॥ प्र० ॥

षट्काय जणी प्रतिपाले जी ॥ वा० ॥ ७ ॥ दोष रहित लीये आहार जी ॥ प्र० ॥ मुनि पाले पंचाचार जी ॥ वा० ॥ ए ॥ कहुं मुनिनी कीर्त्ति केती जी ॥ प्र० ॥ व्रत पाले जावनसेंती जी ॥ वा० ॥ १० ॥ श्री घनरथ जिन उपकारी जी ॥ प्र० ॥ प्रतिबोध्यां बहु नर नारी जी ॥ वा० ॥ ११ ॥ नव कमल ठवे प्रजुपाया जी ॥ प्र० ॥ सुर असुर मली गुण गाया जी ॥ वा० ॥ १२ ॥ मल धोइ अघाती केरो जी ॥ प्र० ॥ जिन लह्यो शिवठाम जलेरो जी० ॥ वा० ॥ १३ ॥ हवे मेघरथ मुनि निर्मायी जी ॥ प्र० ॥ करे सूधी साधुकमाइ जी ॥ वा० ॥ १४ ॥ आराधे स्थानक वीश जी ॥ प्र० ॥ बांधे जिननाम जगीश जी ॥ वा० ॥ १५ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन नाम जी ॥ प्र० ॥ गुरु थिविर साधु गुणग्राम जी ॥ वा० ॥ १६ ॥ वात्सल्य एहोनां करवां जी ॥ प्र० ॥ बहुश्रुत तपस्वी चित्त धरवा जी ॥ वा० ॥ १७ ॥ शुद्ध ज्ञान तणो उपयोग जी ॥ प्र० ॥ दर्शन गुण विनयनो योग जी ॥ वा० ॥ १८ ॥ आवश्यक शीलव्रत लेखे जी ॥ प्र० ॥ रहे निरतिचार विशेषे जी ॥ वा० ॥ १९ ॥ क्षण लव तप त्याग विचारो जी ॥ प्र० ॥ वेयावचे समाधि गुण धारो जी ॥ वा० ॥ २० ॥ ग्रहे ज्ञान अपूरव होंशे जी ॥ प्र० ॥ श्रुतजक्ति करे सुविशेषे जी ॥ वा० ॥ २१ ॥ प्रवचन प्रजावना सारी जी ॥ प्र० ॥ वीशमे बोले निर्धारी जी ॥ वा० ॥ २२ ॥ करे सिंहनिक्रीडित साचुं जी ॥ प्र० ॥ तप जेहवुं कंचन जाचुं जी ॥ वा० ॥ २३ ॥ करे किरिया मुनिवर साची जी ॥ प्र० ॥ जिनपद बांध्युं निकाची जी ॥ वा० ॥ २४ ॥ लाख वरस चरण आराधी जी ॥ प्र० ॥ चढती गुणश्रेणी वाधी जी ॥ वा० ॥ २५ ॥ निज काय अथाम ए जाणी जी ॥ प्र० ॥ दृढरथ मुनिशुं गुणखाणी जी ॥ वा० ॥ २६ ॥ तिलकाचल उपरे बेठी जी ॥ प्र० ॥ शुद्ध जूमितल पडिलेही जी ॥ वा० ॥ २७ ॥ लख चोराशीने खमावी जी ॥ प्र० ॥ मन वैराग्यजावना जावी जी ॥ वा० ॥ २८ ॥ करी शरणां चार उदार जी ॥ प्र० ॥ करे अणसण गुणजंडार जी ॥ वा० ॥ २९ ॥ वोसिरावी तेणे निज काया जी ॥ प्र० ॥ नहीं मन ममता ने माया जी ॥ वा० ॥ ३० ॥ मन मांहे समाधिने साधी जी ॥ प्र० ॥ सर्वारथसिद्धि ऋद्धि लाधी जी ॥ वा० ॥ ३१ ॥ तेत्रीश सहस वर्ष जाय जी ॥ प्र० ॥ तव जूखनी इछा थाय जी ॥ वा० ॥ ३२ ॥ तेत्रीश

पखवाडे उल्लास जी ॥ प्र० ॥ एक वार ले श्वासोश्वास जी ॥ वा० ॥ ३३ ॥ चंद्रोदय रुचि उद्योत जी ॥ प्र० ॥ तिहां चोसठ मणनुं मोती जी ॥ वा० ॥ ३४ ॥ चिहुं पासे चार ते सोहे जी ॥ प्र० ॥ बत्रीश मणनां मन मोहे जी ॥ वा० ॥ ३५ ॥ आठ सोल मणां कह्यां वारु जी ॥ प्र० ॥ तस पापतीयां मनोहारु जी ॥ वा० ॥ ३६ ॥ सोल आठ मणांनी उन्ने जी ॥ प्र० ॥ आगम मांहि प्रजु एम बोले जी ॥ पाठांतर ॥ ते दीपे तेज अमोले जी ॥ वा० ॥ ३७ ॥ चिहुं मणनां मोती बत्रीश जी ॥ प्र० ॥ चोसठ दोय मणीयां जगीश जी ॥ वा० ॥ ३८ ॥ एकसो अमत्रीश वखाणो जी ॥ प्र० ॥ एक मणीयां मोती जाणो जी ॥ वा० ॥ ३९ ॥ एम दोथसें त्रेपन होय जी ॥ प्र० ॥ मुक्ताफलसंख्या जोय जी ॥ वा० ॥ ४० ॥ समकितदृष्टि मति सारी जी ॥ प्र० ॥ सहुए जिहां एकावतारी जी ॥ वा० ॥ ४१ ॥ लवसत्तमिया एणे नामे जी ॥ प्र० ॥ देव सर्वार्थसिद्ध ठामे जी ॥ वा० ॥ ४२ ॥ प्रजु तिहां जइ लीये अवतार जी ॥ प्र० ॥ अगीयारमे नव अधिकार जी ॥ वा० ॥ ४३ ॥ दृढरथ मुनि पण तिहां जाय जी ॥ प्र० ॥ लही सुरपदवी सुखदाय जी ॥ वा० ॥ ४४ ॥ खंम पांचमे साडत्रीशमी ढाल जी ॥ प्र० ॥ कहे रामविजय उजमाल जी ॥ वा० ॥ ४५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाई ॥ खंम खंम चतुराइ घणी, शांति प्रजु रासे में सुणी ॥ तेह तणो ए पंचम खंम, पूरण हुओ राग अखंड ॥ १ ॥ संवत् सत्तर पंचाशीए सही, राजनगर चोमासुं रही ॥ श्री संजव जिनने सुपसाय, पंचम खंम रच्यो सुखदाय ॥ २ ॥ सागरगछ उदयाचलजाण, श्रीलक्ष्मीसागर सूरि गुणनिधान ॥ तेह तणे राज्ये अतिचंग, रास रच्यो में धरी मनरंग॥३॥ श्रीगुरु सुमतिविजय कविराज, उपकारी मांहे शिरताज॥तास शिष्य एम हर्षे जणे, शांति प्रजुने जाउं नामणे ॥४॥ सर्व गाथा ॥ ११७७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६३ ॥ खंम पांचेनी गाथा ॥ ४२०४ ॥ खंम पांचेना प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ १७१ ॥ पांचे खंमनी ढाल ॥ १५० ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबंधे रासबंधे सुकृतानुसंधे द्वादशजवनिबंधे देवराजवत्सराजसंबंधोपबृंहितदशमैकादशजववर्णनो नाम पंचमः खंमः समाप्तिमगमत् ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठः खंडः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

सुखकर साहिब सेवीये, त्रेवीशम जिन पास ॥ श्रीशंखेश्वर प्रगट प्रजु,नामे लीलविलास ॥१॥ वासवपूजित चरणकज,वंदु दीनदयाल ॥ परगट परतो पूरवा, चिंतामणि सुरसाल ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पासजी,मूलमंत्रनो जाप ॥ आपद सवि दूरे टले,मटे मोह संताप ॥३॥ अश्वसेनकुलदिनमणि,वामा मात मल्हार ॥ ते जिन प्रणमीने कहुं, ठठो खंम सुखकार ॥ ४ ॥ जिनगुण केरी संकथा, करतां नासे पाप ॥ डुग्ध सिता विस विणु पीये, तोहि नासे सवि ताप ॥ ५ ॥ शांतिनाथ सोलम विजु, कहेतां तास चरित्र ॥ जवकोटिक पातक टले,थाये जन्म पवित्र ॥६॥ सर्वारथ सुख जोगवी, तेत्रीश सागर आय ॥ चवी तिहांथी जिहां अवतरे, ते निसुणो चित्त लाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चिंतामणि स्वामी,सचा साहिब मेरा ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीपमां दक्षिण जरते, आदि जिणंद सुखकारी ॥ तेहनी संततिमां हुउं रे, कुरु नामे नृपति सुविचारी ॥ १ ॥ शांतीश्वर जिनकी, सुणो कीर्त्ति सारी ॥ ए आंकणी ॥ तिण नामे कुरु देश अनोपम, हुउं संपद गुणधारी ॥ तास तनय हस्ती तेणे नामे, हस्तिनापुर अवतारी ॥ शांतीश्वर० ॥ २ ॥ ते हथिणाउर सुरपुरसुंदर, शोजा समुदय जारी ॥ चोराशी बाजार विराजित, दीपे अति मनोहारी ॥ शां० ॥ ३ ॥ एकजूमि दोयजूमि त्रिजूमिक, चउ पंच जूमि प्रकारी ॥ सुर आवास जिस्यां जिहां मंदिर, निवसे सुखी नर नारी ॥ शां० ॥ ४ ॥ सहु जिनधर्मी जिनेश्वरगुणने, गाये नित्य अगारी ॥ दान दया धर्म जिहां अति दीपे, सहु कोइ शुज आचारी ॥ शां० ॥ ५ ॥ इक्ष्वाकुवंशी तिहां विश्वसेना,-जिध नरपति रतिकारी ॥ न्याये राज्य प्रजापति पाले, दूरे ईति निवारी ॥ शां० ॥ ६ ॥ स्वामी अमात्य सुहृद बल शोजित, कीर्त्ति कामणगारी ॥ चिहुं दिशि मांहे वध्यो जस महिमा,

रेख नहीं कांइ कारी ॥ शां० ॥ ७ ॥ तस घर रमणी रूप अलंकृत, रति रंजा पण हारी ॥ अचिरा नामे सती सत्यवंती, दान अजय दातारी ॥शां० ॥ ८ ॥ एकदा जाद्रपदे वदि पक्षे, सप्तमी तिथि अंधियारी ॥ जरणीगत चंदे मेघरथजीनो, जीव ते रयणी मकारी ॥ शां० ॥ ९ ॥ सरवारथसिद्धथंती चवीयो, अचिरा उयरे शुचि वारे ॥ शुज वेला आवी उपन्यो, पुत्रपणे अवतारी ॥ शां० ॥ १० ॥ कांइक सूती कांइक जागती, सुपन लहे दश चारे ॥ पहेलां हो गजवर वृषज ए बीजे, चिंतित काज सुधारी ॥ शां० ॥ ११ ॥ त्रीजे सिंहप लक्ष्मी चोथे, सहु सुखनी करनारी ॥ पंचमे माला हो ठ्ठे निशाकर, दीठो हो आरति टारी ॥ शां० ॥ १२ ॥ सातमे सूरज आठमे ध्वजवर, कीर्त्ति कांति वधारी ॥ नवमे कलश सरोवर दशमे, पेखे हो हर्ष अपारी ॥ शां० ॥ १३ ॥ सिंधु अग्यारमे बारमे अमरनुं, मंदिर दीठुं उदारी ॥ रत्ननो राशि ए तेरमे चउदमे, निर्धूम अग्नि विचारी ॥ शां० ॥ १४ ॥ हर्षजरे जागी सा सुंदरी, सुपन देखी दुःख वारी ॥ आवी हो कंत समीपे जगाडे, पीयुने हो अचिरा प्यारी ॥ शां० ॥ १५ ॥ विश्वसेन जाग्या तव देखे, आगे मोहनगारी ॥ आसन आप्युं हो बेसण काजे, बेठां हो अचिरा नारी ॥ शां० ॥ १६ ॥ वालमजी मध्यरात्रिनी वेला, उंहिरमाणी करारी ॥ दीठां हो चउदे सुपन मनोहर, फल कहो श्रुत अनुसारी ॥ शां० ॥ १७ ॥ राय सुणी हरख्यो मन मांहे, सुपन सवल सुखकारी ॥ मतिपूर्वक निज बुद्धिविज्ञाणे, अर्थ कहे तिण वारी ॥ शां० ॥ १८ ॥ सुत होशे कुलदीपक रुडो, सहु जगने उपकारी ॥ कहे राणी तुम वचन ए मुफने, सफल होजो हितकारी ॥ शां० ॥ १९ ॥ लेइ आणा निज सेजे आवी, अचिरा हो मंथरचारी ॥ कहे मुज सुपन रखे ए हणाये, अशुने हो एम निर्धारी ॥ शां० ॥ २० ॥ देव गुरु संबंध कथाए, करे जागरण संजारी ॥ थयो प्रजात हुवो जयजयरव, वंदिजन जयकारी ॥ शां० ॥ २१ ॥ ठ्ठे हो खंडे पहेली ढाले, करे जिनगुणशुं यारी ॥ राम मुनि कहे ते धन्य जगमां, जाउं उनकी बलिहारी ॥ शां० ॥ २२ ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विश्वसेन राजा सजा, बेठो आवी उमंग ॥ सुपनशास्त्रना जाणने, तेमावे मनरंग ॥ १ ॥ आठ जणा तव आवीया, निमित्त अंग अरू जाण ॥ देइ आशिष बेठा सवे, आसन अति मंगाण ॥ २ ॥ जूपे सन्मान्या घणुं,

पूछे सुपनविचार ॥ कहे सुपनपाठक तदा, शास्त्र तणा अधिकार ॥ ३ ॥ सुपन कह्यां बायाल सवि, त्रीश मोटकां तेम ॥ राजन् सुणो अम्ह ग्रंथमां, अठे वहोंत्तेर एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वीर जिनवर रे, गोयम गणहरने कहे ॥ ए देशी ॥ सुण राजन् रे, त्रीश मांहे चउदश शिरे ॥ दीठां राणीए रे, मध्यरयणीने आशरे ॥ होशे सुपनथी रे, सुत सोजागी सुंदरु ॥ जगपालक रे, नमशे आवी पुरंदरु ॥ त्रूटक ॥ पुरंदरा सवि आवी नमशे, चक्री जिनवर होयशे ॥ तुज जाग्य महोटुं सुण नरेश्वर, दुःख सघलुं खोयशे ॥ हुवे चउद सुपने चक्र जिनवर, सातथी हरिपद धणी ॥ चार बलजद्र एक मंमलिक, वात ए शास्त्रे जणी ॥ १ ॥ ते माटे रे, राजन् अचिरा राणीए ॥ शुज सुहणां रे, दीठां मन सुख आणीये ॥ सुणी राजन रे, दान दीये घणुं तेहने ॥ सन्मानी रे, पहोंचाड्या निज गेहने ॥ त्रू० ॥ निज गेह पहोता सुपनपाठक, राय राणीने कहे ॥ वात सघली सुपन केरी, निसुणी सा आनंद लहे ॥ निज गेह आवे थइ हर्षित, गर्जनी प्रतिपालना ॥ करे राणी शास्त्रवाणी, चित्त आणी वासना ॥ २ ॥ अति स्नेहल रे, अति मधुरुं नवि वावरे ॥ अति खारुं रे, अति तीखुं तेम परिहरे ॥ अति कडुवुं रे, नवि लेवे सा गुणजरी ॥ मुखहुंती रे, थोडुं बोले सा सुंदरी ॥ त्रू० ॥ सुंदरी अचिरा अति न बोले, अति न गाये तिम वली ॥ नवि सुवे ...ीग श्वासे, नवि दोडे मन रली ॥ खाट हिंमोला चढीने, घुमणी ... गर्जपालन, करे ग्रंथ मांहे यथा ॥ ३ ॥

... ॥ मांयदोषे रे, लोक घणो प्रलय ... आवीयो ॥ तिण दिनथी रे, ... नसावीयो सवि अशिव पणे, ... माता पिता चिंते, जाग्य सवलो ... हुओ अतिशय एवको ॥ पण किस्युं ... वमो ॥ ४ ॥ एह प्रणमी रे, आप... दोहग सवि वामीयां ॥ एह ... न जाये मुख ... गहगहे ॥

जतो... आलिवे ... प्रकार महि... शां० ॥ ४ ॥ गज ... दया धर्म ... दिनथ... इक्ष्वाकुवंशी ...मीयां ॥ ६ ... प्रजापति पासे ...णा थाशे ... ...जित, करख कही ... वा...

एम गर्भ वाधे सुकृत साधे, मात शुज दोहला लहे ॥ वरदान दीजे लाज लीजे, धर्म कीजे मन धसी ॥ मन जेह इछा उपजे ते, राय पूरे उल्लसी ॥ ५ ॥ एम अनुक्रमे रे, मास थया नव निर्मला ॥ साढा दिन रे, सात थया उपरे जला ॥ जेठ मासनी रे, कृष्ण त्रयोदशीने दिने ॥ जरणी उमु रे, आव्यो निशाकर शुज मने ॥ त्रू० ॥ शुज मने सघलां लोक सुखीयां, नहीं जगमां को दुःखी ॥ ग्रह थया गोचर ऊंच सघला, नीपनी सघली कृषि ॥ शुज लग्नवेला जले मुहूरत, वाय अनुकूल वायते ॥ मध्यरात्रिसमये वर्ण सोवन, कांतिपुंज विराजते ॥ ६ ॥ आरोगा रे, अचिरा माजीए जाइयो ॥ सुत नीरोग रे, त्रण जग हर्ष उपाइयो ॥ थयो उद्योत रे, नारकीने पण सुख थयुं ॥ सचराचर रे, सहु जंतुनुं दुःख गयुं ॥ त्रू० ॥ दुःख गयुं सघलुं हर्ष प्रगट्यो, अवधिज्ञाने जाणीयो ॥ जिनजन्म केरो छप्पन कुमरी, हर्ष हैडे आणीयो ॥ आठ अध गजदंत गिरिनी, कंदराथी आवी ए ॥ वली आठ नंदन कूटहुंती, आवे धरी मन जाव ए ॥ ७ ॥ प्रत्येके रे, रुचक गिरि निवासिनी ॥ आवे आठ आठ रे, दिशहुंती ते सुवासिनी ॥ तेम चारे रे, रुचक विदिशिनी जाणीये ॥ द्वीप मध्यम रे, रुचकनी चार वखाणीये ॥ त्रू० ॥ वखाणीये छप्पन मलीने, हूइ सघली ते सुरी ॥ नवुं निर्मित एक योजन, मित विमाने संचरी ॥ चार साथे महत्तरिका, चार सहस सामानिका ॥ सोल सहसा अंगरक्षक, साथ लेइ सैनिका ॥ ८ ॥ तिहां आवी रे, जिनजननीने पाये नमी ॥ करे वैक्रिय रे, वात संवर्तक मन रमी ॥ वरसावे रे, जलद वली आठे वली ॥ धरे दर्पण रे, आठ जणी उलट घणी ॥ त्रू० ॥ घणे उलट धरी कलशा, रहे जिननी सामुही ॥ कर आठ लेइ तालवृंता, जोवे जिनमुखडुं रही ॥ आठ चामर धरे चतुरा, चार तेम दीवीधरा ॥ रक्षाविधानादिक करे वली, चार देवी जासुरा ॥ ए ॥ एम सहु मली रे, सूतिकर्म करे जिण तणो ॥ मन मांहे रे, सहुने आनंद अति घणो ॥ धन्य धन्य धन्य रे, आज तणी ए यामिनी ॥ लही सेवा रे, सोलम जिनवर स्वामीनी ॥ त्रू० ॥ स्वामीनी सेवा जाग्ये पामी, आज वहेनरु अति जली ॥ त्रिहुं जगत केरो नाथ जेट्यो, दशा समकित निर्मली ॥ खंम छठे ढाल धीजी, कही रामविजय इसी ॥ एम छप्पन कुमरी स्तवी जिनने, गइ निज स्थानक हसी ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२ ॥

पूछे सुपनविचार ॥ कहे सुपनपाठक तदा, शास्त्र तणा अधिकार ॥ ३ ॥ सुपन कह्यां बायाल सवि, त्रीश मोटकां तेह ॥ राजन् सुणो अम्ह ग्रंथमां, अठे बहोंत्तेर एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वीर जिनवर रे, गोयम गणहरने कहे ॥ ए देशी ॥ सुण राजन् रे, त्रीश मांहे चउदश शिरे ॥ दीठां राणीए रे, मध्यरयणीने आशरे ॥ होशे सुपनथी रे, सुत सोजागी सुंदरु ॥ जगपालक रे, नमशे आवी पुरंदरु ॥ त्रूटक ॥ पुरंदरा सवि आवी नमशे, चक्री जिनवर होयशे ॥ तुज जाग्य महोटुं सुण नरेश्वर, दुःख सघलुं खोयशे ॥ हुवे चउद सुपने चक्र जिनवर, सातथी हरिपद धणी ॥ चार बलजद्र एक मंमलिक, वात ए शास्त्रे जणी ॥ १ ॥ ते माटे रे, राजन् अचिरा राणीए ॥ शुज सुहणां रे, दीठां मन सुख आणीये ॥ सुणी राजन रे, दान दीये घणुं तेहने ॥ सन्मानी रे, पहोंचाड्या निज गेहने ॥ त्रू० ॥ निज गेह पहोता सुपनपाठक, राय राणीने कहे ॥ वात सघली सुपन केरी, निसुणी सा आनंद लहे ॥ निज गेह आवे थइ हर्षित, गर्जनी प्रतिपालना ॥ करे राणी शास्त्रवाणी, चित्त आणी वालना ॥ २ ॥ अति स्नेहल रे, अति मधुरुं नवि वावरे ॥ अति खारुं रे, अति तीखुं तेम परिहरे ॥ अति कडवुं रे, नवि खेवे सा गुणजरी ॥ मुखहुंती रे, थोडुं बोले सा सुंदरी ॥ त्रू० ॥ सुंदरी अचिरा अति न बोले, अति न गाये तिम वली ॥ नवि सुवे अगासे नरीय श्वासे, नवि दोडे मन रली ॥ खाट हिंमोला चडीने, भूमणी न खीये तथा ॥ अति क्रोध न करे गर्जपालन, करे ग्रंथ मांहे यथा ॥ ३ ॥ तिहां पूर्वे रे, अशिव घणो पुरमां हतो ॥ मांयदोषे रे, लोक घणो प्रलय हतो ॥ अवतारे रे, जिण दिनथी प्रनु आवीयो ॥ तिण दिनथी रे, शिव महु ते नसावीयो ॥ त्रू० ॥ नसावीयो सवि अशिव ए[illegible] महिमा सुत तणो ॥ मन मांहे माता पिता चिंते, जाग्य सघलो [illegible] ५ ॥ गर्ज मांहिज रह्या सुतनो, जुर्ज अतिशय एवडो ॥ पण किगुं [illegible] गर्जदिनथी, प्रशम सुख इंड वडो ॥ ४ ॥ एम प्रणमी रे, आर[illegible]मीयां ॥ इंड आवी रे, दुःख दोहग सवि वामीयां ॥ एह [illegible] थाशे सही ॥ एह हर्षनी रे, वात न जाये सुख [illegible] कही ॥ वात न जाय अंतर, हर्ष हैडुं गहगहे ॥ त्रू० ॥

[illegible: damaged margin fragments]

एम गर्न वाधे सुकृत साधे, मात शुन दोहला लहे ॥ वरदान दीजे लान लीजे, धर्म कीजे मन धसी ॥ मन जेह इच्छा ऊपजे ते, राय पूरे उल्लसी ॥ ५ ॥ एम अनुक्रमे रे, मास थया नव निर्मला ॥ साढा दिन रे, सात थया उपरे जला ॥ जेठ मासनी रे, कृष्ण त्रयोदशीने दिने ॥ नरणी उडु रे, आव्यो निशाकर शुन मने ॥ त्रु० ॥ शुन मने सघलां लोक सुखीयां, नहीं जगमां को डुःखी ॥ ग्रह थया गोचर उंच सघला, नीपनी सघली कृषि ॥ शुन लग्नवेला जले मुहूरत, वाय अनुकूल वायते ॥ मध्यरात्रिसमये वर्ण सोवन, कांतिपुंज विराजते ॥ ६ ॥ आरोगा रे, अचिरा मातीए जाइयो ॥ सुत नीरोग रे, त्रण जग हर्ष उपाइयो ॥ थयो उद्योत रे, नारकीने पण सुख थयुं ॥ सचराचर रे, सहु जंतुनुं डुःख गयुं ॥ त्रु० ॥ डुःख गयुं सघलुं हर्ष प्रगट्यो, अवधिज्ञाने जाणीयो ॥ जिनजन्म घेरां उप्पन कुमरी, हर्ष हैडे आणीयो ॥ आठ अध गजदंत गिरिनी, कंदराथी आवी ए ॥ वली आठ नंदन कूटहुंती, आवे धरी मन नाव ए ॥ ७ ॥ प्रत्येके रे, रुचक गिरि निवासिनी ॥ आवे आठ आठ रे, दिशहुंती ते सुवासिनी ॥ तेम चारे रे, रुचक विदिशिनी जाणीये ॥ द्वीप मध्यम रे, रुचकनी चार वखाणीये ॥ त्रु० ॥ वखाणीये उप्पन मलीने, हुइ सघली ते सुरी ॥ नवुं निर्मित एक योजन, मित विमाने संचरी ॥ चार साथे महत्तरिका, चार सहस सामानिका ॥ सोल सहस्स अंगरक्षक, साथ लेइ सैनिका ॥ ० ॥ तिहां आवी रे, जिनजननीने पाये नमी ॥ करे वैक्रिय रे, वात संवर्तक मन रमी ॥ परसावे रे, जलद थली आठे वली ॥ धरे दर्पण रे, आठ जणी उलट धणी ॥ त्रु० ॥ धणे उलट धरी कलशा, रहे जिननी सामुही ॥ कर आठ लेइ तालवृंता, जोवे जिनमुखडुं रही ॥ आठ चामर धरे चतुरा, चार तेम दीवीधरा ॥ रक्षाविधानादिक करे वली, चार देवी आतुरा ॥ ए ॥ एम सहु मली रे, सूतिकर्म करे जिन तणो ॥ मन मांहे रे, सहुने आनंद अति घणो ॥ धन्य धन्य धन्य रे, आज तणी ए यामिनी ॥ अही मेरा रे, सोलम जिनवर स्वामिनी ॥ त्रु० ॥ स्वामीनी मेरा नाग्ये पामी, आस पहोतग अति जली ॥ त्रिहुं जगत घेरो नाथ नेहो, दशा समकित निर्मली ॥ खंम छठे ढाल पांची, कही रामविजय रुली ॥ एम उप्पन कुमरी स्तवी जिनने, गइ निज स्थानक रमी ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२ ॥

पूछे सुपनविचार ॥ कहे सुपनपाठक तदा, शास्त्र तणा अधिकार ॥ ३ ॥ सुपन कह्यां बायाल सवि, त्रीश मोटकां तेम ॥ राजन् सुणो अम्ह ग्रंथमां, अछे बहोंत्तेर एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वीर जिनवर रे, गोयम गणहरने कहे ॥ ए देशी ॥ सुण राजन् रे, त्रीश मांहे चउदश शिरे ॥ दीठां राणीए रे, मध्यरयणीने आशरे ॥ होशे सुपनथी रे, सुत सोजागी सुंदरु ॥ जगपालक रे, नमशे आवी पुरंदरु ॥ त्रूटक ॥ पुरंदरा सवि आवी नमशे, चक्री जिनवर होयशे ॥ तुज जाग्य महोदुं सुण नरेश्वर, दुःख सघलुं खोयशे ॥ हुवे चउद सुपने चक्र जिनवर, सातथी हरिपद धणी ॥ चार बलजद्र एक मंमलिक, वात ए शास्त्रे जणी ॥ १ ॥ ते माटे रे, राजन् अचिरा राणीए ॥ शुज सुहणां रे, दीठां मन सुख आणीये ॥ सुणी राजन रे, दान दीये घणुं तेहने ॥ सन्मानी रे, पहोंचाड्या निज गेहने ॥ त्रू० ॥ निज गेह पहोता सुपनपाठक, राय राणीने कहे ॥ वात सघली सुपन केरी, निसुणी सा आनंद लहे ॥ निज गेह आवे थइ हर्षित, गर्जनी प्रतिपालना ॥ करे राणी शास्त्रवाणी, चित्त आणी वासना ॥ २ ॥ अति स्नेहल रे, अति मधुरुं नवि वावरे ॥ अति खारुं रे, अति तीखुं तेम परिहरे ॥ अति करुवुं रे, नवि लेवे सा गुणजरी ॥ मुखहुंती रे, थोडुं बोले सा सुंदरी ॥ त्रू० ॥ सुंदरी अचिरा अति न बोले, अति न गाये तिम वली ॥ नवि सुवे अगासे जरीय श्वासे, नवि दोडे मन रली ॥ खाट हिंमोला चढीने, घूमणी न लीये तथा ॥ अति क्रोध न करे गर्जपालन, करे ग्रंथ मांहे यथा ॥ ३ ॥ तिहां पूर्वे रे, अशिव घणो पुरमां हतो ॥ मांघदोषे रे, लोक घणो प्रलयं [illegible]तो ॥ अवतारे रे, जिण दिनथी प्रज्ञु आवीयो ॥ तिण दिनथी रे, [illegible]व सहु ते नसावीयो ॥ त्रू० ॥ नसावीयो सवि अशिव एणे, आ[illegible] महिमा सुत तणो ॥ मन मांहे माता पिता चिंते, जाग्य सबलो अहो ॥ गर्ज मांहिज रह्या सुतनो, जुओ अतिशय एवमो ॥ पण किशुं आपणो [illegible] र्जदिनथी, प्रणत सुत इंडे वमो ॥ ४ ॥ एह प्रणमी रे, आप अचरिज [illegible]मीयां ॥ इंडे आवी रे, दुःख दोहग सवि वामीयां ॥ एह घणे पण प्र[illegible]णा याशे सही ॥ एह हर्षनी रे, वात न जाये मुख हर्ष [illegible]ख कही ॥ वात न जाय अंतर, हर्षे हैडुं गहगहे ॥ ॥ ५ ॥

करी पंच रूप सुरेश्वर चाले, प्रजुकुं एक रूपे काले रे ॥ जि० ॥ २२ ॥
दोय रूपे हरि चामर ढाले, एक छत्र धरे उजमाले रे ॥ जि० ॥ २३ ॥
वज्र लेइ प्रजु आगल दोडे, एक रूपे हरि मन कोडे रे ॥ जि० ॥ २४ ॥
मेरुशिखर लेइ आव्या रंगे, मलीया चोसठ मनरंगे रे ॥ जि० ॥ २५ ॥
वीश जुवनपति स्वामी कहीजे, बत्रीश व्यंतर विजु लीजे रे ॥ जि० ॥ २६ ॥
दोय रवि शशी ज्योतिषके इंदा, दश वैमानिक आनंदा रे ॥ जि० ॥ २७ ॥
सौधर्मेंद्र लीये उत्संगे, प्रजु स्नात्र करणकुं उमंगे रे ॥ जि० ॥ २८ ॥
सोवनरूप मणि माटीना, कलशा वली कीधा नवीना रे ॥ जि० ॥ २९ ॥
एक सहस उपर तेम आठ, एक जातिना अम जाति आठ रे ॥ जि० ॥
३० ॥ होय एक कोमी अने साठ लाख, कलशा ए शास्त्रनी साख रे ॥
जि० ॥ ३१ ॥ पणवीश योजन कलशा उंचा, बार योजन पहोला
प्रीब्या रे ॥ जि० ॥ ३२ ॥ नालूवां एक योजननां रे जाव्यां, कलशा नीरे
जरी लाव्या रे ॥ जि० ॥ ३३ ॥ अच्युत आदि नवे सुरस्वामी, प्रजु न्हवण
करे शिर नामी रे ॥ जि० ॥ ३४ ॥ स्थापी ईशान इंद्रनी गोदे, करे शक्र
नमण मन मोदे रे ॥ जि० ॥ ३५ ॥ वस्त्रे हो लूंठी प्रजुनुं अंग, शुचि
चंदने लेपे सुचंग रे ॥ जि० ॥ ३६ ॥ नव नव जक्ति करे तिहां देवा, प्रजु
गुण गाइ करे सेवा रे ॥ जि० ॥ ३७ ॥ आरति मंगल दीप उतारे, प्रजु
तो विण कुण हम तारे रे ॥ जि० ॥ ३८ ॥ छठे हो त्रीजी ढाल ए बोली,
कहे छे राम दिल खोली रे ॥ जि० ॥ ३९ ॥ जिनगुण जणतां पावन जीहा,
सफला होय रात ने दिहा रे ॥ जि० ॥ ४० ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥ श्लोक॥

॥ दोहा ॥

॥ इंद्र करे जिनवर तणी, स्तुति जोमी दोइ हाथ ॥ जवसमुद्रमां बूमतां, मल्यो जहाज तुं नाथ ॥ १ ॥ जय अचिरा राणी उयरे, सरोवर हंस समान ॥ जव्यकुमुदवनचंद्रमा, अतुलीबल जगवान ॥ २ ॥ जय अनादि अंजनरहित, निराकार निरुपाधि ॥ ज्योतिरूप जगदीश तुं, प्रगटी सहज समाधि ॥ ३ ॥ करवा पावन पतितने, तें लीधो अवतार ॥ डुस्तर जवसायर थकी, तार तार प्रजु तार ॥ ४ ॥ धन्य हुं कृतपुण्य हुं, दीठुं दरिसण आज ॥ ए मरुस्थल संसारमां, तुं सुरतरु [illegible]राज ॥ ५ ॥ इत्यादिक वचने करी, नमी स्तवी सुरराय ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर सौधर्मपति, निज आसन चल जाणी ॥ ज्ञान अवधि उपयोगथी, लह्युं जन्मकल्याण ॥ १ ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, पायो परम करार ॥ तेम्नी हरिणगमेषीने, हुकम करे तेणी वार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शुन्न नव अमृतवेलीकंदो ॥ ए देशी ॥ इंद्र कहे हरिणगमेषीने, सुख लहीये प्रभु देखीने रे ॥ जिन जायो नगीनो ॥ जगको दुःख दूरे कीनो रे ॥ प्रभु जायो नगीनो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वाउ सुघोषा घंट ए ताजी, रहे सोहम सुरलोक गाजी रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ पांचसें सुर मळी घंटा वाइ, सघली घंटा रणऊण थाइ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ खबर हुइ सौधर्मके वासी, मलीया ए तुरत उल्लासी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ कहे हरि जिनजन्मोत्सव काजे, जाशुं क्षेत्र नरते शुन्न साजे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ अचिरा राणीको नंदन नीको, जिन सोलम त्रिभुवनटीको रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ करी जन्मोत्सव बहु सुख पाशुं, अमो लाज अनंत उपाशुं रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ पालक योजन लाख विमान, तेणे वेसे इंद्र सुज्ञान रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ साथे सहस चोराशी सामान्य, अंगरक्षक चउ गुण मान रे ॥ जि० ॥ ९ ॥ अग्रमहिषी आठे गुणवंती, पीयु साथे चली पुण्यवंती रे ॥ जि० ॥ १० ॥ बत्रीश लाख विमानके स्वामी, सहु आइ मिले शिर नामी रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ कोइ आगे कोइ पूठसें आवे, मारग विच जिनगुण गावे रे ॥ जि० ॥ १२ ॥ पकखे नहीं कोइ सेवक स्वामी, जिननक्ति मांहे नहीं खामी रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ हर्ष नयो प्रभुको मुख जोवा, निज पातक मेलने धोवा रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ आइ उजाय नंदीश्वर द्वीपे, उहां आवी विमान संक्षेपे रे ॥ जि० ॥ १५ ॥ आवे नरत गजपुर उजाणा, प्रभु देखण हर्ष नराणा रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ आवी नमे जिन जिनजननीको, कहे तें सुत जायो नीको रे ॥ जि० ॥ १७ ॥ हर्ष कीयो त्रिहुं लोकके माइ, हम वांटी स्वर्गे वधाइ रे ॥ जि० ॥ १८ ॥ माइ तेरे सुतकुं लेइ जाशुं, सुरगिरि शिखरे नवराशुं रे ॥ जि० ॥ १९ ॥ करशुं समकित निर्मल साचुं, प्रभु देखी देखी अमे राचुं रे ॥ जि० ॥ २० ॥ जिनप्रतिरूप मेहले माय पासे, अवस्वापिनी दे उल्लासे रे ॥ जि० ॥ २१ ॥

करी पंच रूप सुरेश्वर चाले, प्रजुकुं एक रूपे काले रे ॥ जि० ॥ २२ ॥
दोय रूपे हरि चामर ढाले, एक छत्र धरे उजमाले रे ॥ जि० ॥ २३ ॥
वज्र लेइ प्रजु आगल दोडे, एक रूपे हरि मन कोडे रे ॥ जि० ॥ २४ ॥
मेरुशिखर लेइ आव्या रंगे, मलीया चोसठ मनरंगे रे ॥ जि० ॥ २५ ॥
वीश जुवनपति स्वामी कहीजे, बत्रीश व्यंतर विजु लीजे रे ॥ जि० ॥ २६ ॥
दोय रवि शशी ज्योतिषके इंदा, दश वेमानिक आनंदा रे ॥ जि० ॥ २७ ॥
सौधर्मेंद्र लीये उत्संगे, प्रजु स्नात्र करणकुं उमंगे रे ॥ जि० ॥ २८ ॥
सोवनरूप मणि माटीना, कलशा वली कीधा नवीना रे ॥ जि० ॥ २९ ॥
एक सहस उपर तेम आठ, एक जातिना अम जाति आठ रे ॥ जि० ॥
३० ॥ होय एक कोमी अने साठ लाख, कलशा ए शास्त्रनी साख रे ॥
जि० ॥ ३१ ॥ पणवीश योजन कलशा उंचा, बार योजन पहोला
प्रीछ्या रे ॥ जि० ॥ ३२ ॥ नालूवां एक योजननां रे जाव्यां, कलशा नीरे
जरी लाव्या रे ॥ जि० ॥ ३३ ॥ अच्युत आदि नवे सुरस्वामी, प्रजु न्हवण
करे शिर नामी रे ॥ जि० ॥ ३४ ॥ स्थापी ईशान इंद्रनी गोदे, करे शक्र
नमण मन मोदे रे ॥ जि० ॥ ३५ ॥ वस्त्रे हो लूंठी प्रजुनुं अंग, शुचि
चंदने लेपे सुचंग रे ॥ जि० ॥ ३६ ॥ नव नव जक्ति करे तिहां देवा, प्रजु
गुण गाइ करे सेवा रे ॥ जि० ॥ ३७ ॥ आरति मंगल दीप उतारे, प्रजु
तो विण कुण हम तारे रे ॥ जि० ॥ ३८ ॥ छठे हो त्रीजी ढाल ए बोली,
कहे ठे राम दिल खोली रे ॥ जि० ॥ ३९ ॥ जिनगुण जणतां पावन जीहा,
सफला होय रात ने दिहा रे ॥ जि० ॥ ४० ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥

॥ दोहा ॥

॥ इंद्र करे जिनवर तणी, स्तुति जोमी दोइ हाथ ॥ जवसमुद्रमां बूमतां, मल्यो जहाज तुं नाथ ॥ १ ॥ जय अचिरा राणी उयरे, सरोवर हंस समान ॥ जव्यकुमुदवनचंद्रमा, अतुलीबल जगवान ॥ २ ॥ जय अनादि अंजनरहित, निराकार निरुपाधि ॥ ज्योतिरूप जगदीश तुं, प्रगटी सहज समाधि ॥ ३ ॥ करवा पावन पतितने, तें लीधो अवतार ॥ डुस्तर जवसायर थकी, तार तार प्रजु तार ॥ ४ ॥ धन्य हुउं कृतपुण्य हुं, दीठुं दरिसण आज ॥ ए मरुस्थल संसारमां, तुं सुरतरु जिनराज ॥ ५ ॥ इत्यादिक वचने करी, नमी स्तवी सुरराय ॥ मेरुशिखरथी

आणीने, प्रभु सोंपे निज माय ॥ ६ ॥ निद्रा पाछी संहरी, जाग्या अचिर
माय ॥ सुत सुरपूजित देखीने, हैडे हर्ष न माय ॥ ७ ॥ इंद्र कहे उं
स्वरे, सहु सांजलतां वाणी ॥ जिन जिनजननी उपरे, जे चिंतवशे दुया
॥ ८ ॥ तस मस्तक तेम फूटशे, जेम उनाळे जाण ॥ एरंडफल फूटे सही
इम कहे इंद्र सुजाण ॥ ए ॥ वृष्टि करी तिहां रयणनी, अंगण कोडि
बत्रीश ॥ सोधर्माधिप चालीयो, प्रभुने नामी शीश ॥ १० ॥ नंदीश्व
द्वीपे जइ, यात्र करे सहु इंद ॥ निज निज स्थानक सहु गया, धरत
मन आनंद ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ हमचमीनी देशी ॥ सुत सोजागी सुरवरपूजित, निज नय
नीहाळी ॥ अचिरानी दासी उजाणी, वात कहण उजमाळी रे ॥ १
हमचडी ॥ ए आंकणी ॥ जय जय स्वामी कहुं शिर नामी, सुण सु
अंतर्जामी ॥ अचिरा राणी अंगज प्रसव्यो, इष्ट सुणो यशकामी रे
हम० ॥ २ ॥ छप्पन दिशिकुमरी प्रभु आवी, जिनजन्मोत्सव करवा ॥ सूति
कर्म कर्युं जिनजीनुं, सुकृतभंडारने भरवा रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ इंद्रे प
अभिषेक करीने, मेरुशिखरे फल लीधुं ॥ एहवो सुत अचिराए जन्म्यो
पुण्ये वांछित सीधुं रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ सुत सहेजे संसारे वहाला, नहान
महोटा कुळना ॥ पण चोसठ सुरपतिपूजित सुत, पार नहीं पुण
दळना रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ वात सुणी विश्वसेन नरेश्वर, हरख्यो अति म
मांहे ॥ धाराहत जेम नीपकुसुम तेम, रोमांचित थयो काय रे ॥ ह
॥ ६ ॥ अंग तणुं आजूषण सघळुं, मुकुट विना तस आप्युं ॥ संत
तान लगे नवि खूटे, धन देइ दारिद्र काप्युं रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ उत्र त
तेहने नवरावी, दासीबिरुद उताऱ्युं ॥ त्रिभुवनपति सुत हर्ष वधा
...यक मान वधार्युं रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ राय कहे पुर मांहे महोत्सव, सु
...स्वानी केडे ॥ कारागार सकळ शोधावी, दीन दुःखी दुःख फेडे रे
... ए ॥ मान अने उन्मान वधार्या, अकर ... पर्यंत ॥ गज
... मणि सुर्नीयुं, नहीं कोइ वेर किसन रे ... ॥ १० ॥ मादि
... आवे, वाग महमने खेले ॥ ... नरपति
... रे ॥ हु० ॥ ११ ॥ ... हरिसह

रवि शशीनुं स्वामीने ॥ ठठी जागरणे सहु जाग्या, गायो शिवगामीने रे ॥ हृ० ॥ १२ ॥ काढी अशुचि कर्ममंदिरथी, नीपाइ पक्वान्न ॥ सज्जन कुटुंब सहुने पोषे, रंगेशुं राजान रे ॥ हृ० ॥ १३ ॥ शांति पणे वरतावी जगमां, "शांति कुमर" घणुं जीवो ॥ नाम ठवे सहु कोइनी साखे, कुंवर ए जगदीवो रे ॥ हृ० ॥ १४ ॥ अमृत अंगुठे हरि ठवीयो, तेहथी होय आहार ॥ स्तनपान न करे मातानुं, शुचितानो नहीं पार रे ॥ हृ० ॥ १५ ॥ यडुक्तं ॥ दहशेऽशनमंवयार्पितं, न हि नीहारविधिश्च जन्मतः ॥ शुचिता त्रुवनेऽप्यनुत्तरा,यदहो स्तन्यमपीश नापिबः॥१॥पूर्व ढाल ॥ अनुपम रूप मनोहर वाधे, प्रज्ञु मनमोहन नीको ॥ सहस अगोत्तर लक्षण शोजित, तीन जुवनको टीको रे ॥ हृ० ॥ १६ ॥ अेंदल मुख मुकुरोपम दीपे, पद कूर्मोन्नत धारो ॥ एणीजंघ सरिखी जंघा, ऊरू करिकर आकारो रे ॥ हृ० ॥ १७ ॥ विस्तीरण प्रज्ञुजीनुं कटितट, दीठे मनडुं मोहे ॥ दक्षिण आवर्त्त गंजीरा, नाजि अंग अति सोहे रे ॥ हृ० ॥ १८ ॥ वज्र सरिखुं मध्य विराजे, पुरकपाट परे पहोळुं ॥ वक्षःस्थल पुरअर्गल उपम, प्रज्ञुनुं बाहुजुअलं रे ॥ हृ० ॥ १९ ॥ ग्रीवा कंबु सरिखी सुंदर, अधर होठ गुलाला ॥ कुंद तणा कुट्मल परे उज्ज्वल, दीसे दंतनी माला रे ॥ हृ० ॥ २० ॥ उत्तुंग सरलो नासावंशो, सज्ञानवृत्त ज्युं जाणो ॥ पद्मपत्र सरिखां दोय लोचन, अष्टमी शशी सम जाणो रे ॥ हृ० ॥ २१ ॥ दोलाकार श्रवणयुग प्रज्ञुना, मस्तक ठत्राकारं ॥ स्निग्धा अविकुल श्यामल कुंतल, राजे रूप उदारं रे ॥ हृ० ॥ २२ ॥ पद्मगंध सरिखो प्रज्ञुश्वासो, कनकवर्णी जस काया ॥ अप्सर इंद्राणी हुलरावे, सवली प्रज्ञुशुं माया रे ॥ हृ० ॥ २३ ॥ त्रिक ज्ञाने संयुत त्रिहुं जगना, नाथने नयणे निरखे ॥ आनंद धरी इंद्राणी पोते, रत्न ज्युं फरी फरी परखे रे ॥ हृ० ॥ २४ ॥ एक सहीयर लेइ प्रज्ञु संघोळे, बीजीने एम पोखे ॥ कनकलता तुं जो रे प्रज्ञुनुं, वदन पूनमविधु तोले रे ॥ हृ० ॥ २५ ॥ कोइ कहे सुणो सहीयर मारी, प्रज्ञु उपर पणुं मोहीं ॥ परवंधो मुजने विसरीयो, रहीं प्रज्ञु मुखडुं जोइ रे ॥ हृ० ॥ २६ ॥ सहीय ममाली वाळी जोळी, थान करे पाचाळी ॥ प्रज्ञु पिण निरखे जे नित्य जमदो, ते नहीं आपणी आळी रे ॥ हृ० ॥ २७ ॥ एक करथी बीजे कर लेवे, भूंइ उपर पग न धरे ॥ धरना

सवि धंधा विसारी, नित्य प्रभुगुणने समरे रे ॥ हु० ॥ २० ॥ ठेठे खंडे ढाल ए चोथी, प्रभु जायो जगस्वामी ॥ रामविजय कहे ए प्रभुजीने, हुं प्रणमुं शिर नामी रे ॥ हु० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ १२४ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गिरिकंदरचंपक परे, बीज तणो जिम चंद ॥ प्रभु वाधे मन मोहतो, सहु जन नयनानंद ॥ १ ॥ हर्षे हुलरावे रंगशुं, अचिरा प्रेमपडूर ॥ रोम रोम तन उल्लस्युं, निरखी सुत मुखनूर ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ माय कहे मेरी ठगनां मगनां ॥ ए देशी ॥ कहे सुतने हो एम अचिरा माता, तुज आवे मुज थइ सुखशाता ॥ मुख दीठे गयां पातक धूजी, तुज पूजे हुं पण सुरे पूजी ॥ १ ॥ तुं मुज प्राण तणो आधार, तुज उपर वारी वार हजार ॥ सुण मुज लाडकडा सुत मीठा, पूरव पुण्ये तुज मुख दीठा ॥ २ ॥ लाड लडावे हो अपणी रे मामी, नवपल्लव हुइ सुतगुण वामी ॥ हाये जडाव सोवननी हो कडली, अंगे वनी जरबाफ अंगडली ॥ ३ ॥ पहेराव्यां काने शुचि मोती, तृप्ति न पामे हो मुखडुं जोती ॥ मणि माणक मोतीकी हो टोपी, हर्षशुं लेइ सुतशिर आरोपी ॥ ४ ॥ कंठे हो तावित सोवन केरां, पहेरावे अचिराजी जलेरां ॥ कामणगारो ने वली शणगार्यो, ठमक ठमक चाले लागे हो प्यारो ॥ ५ ॥ मुख मधुरी बोले सुत वाणी, चिरं जीवो कहे अचिराजी राणी ॥ सुर बालकरूपे थइ आवे, राणे हो शांति कुमरकुं खेलावे ॥ ६ ॥ एणी परे वाधे हो प्रभु सोभागी, सहु कोइने जोवा रढ लागी ॥ आवे सभा मांहे बापके आगे, सहु कोइ ऊठी के पाउ लागे ॥ ७ ॥ आवो पधारो हमारे हो स्वामी, हो त्रिहुं जगके अंतर्यामी ॥ तुम हो जगवत्सल उपकारी, तुम मूरत लागत हम प्यारी ॥ ८ ॥ आठ वरस प्रभुकुं नये जाणी, नय बोले मात्रिन युं वाणी ॥ सुन निशाल वईजे हो सारो, शास्त्र नणावण मोहनगारो ॥ ए ॥ नरपति उत्सव मांहे हो नारी, धवल मंगल गाये सोहव नारी ॥ तनु भूषण भूषित ठवि सारी, प्रभु कीनी गजकी असवारी ॥ १० ॥ बहु आडंबर साथे हो आवे, पाठक मन मांहे आनंद पावे ॥ इण अवसरे मड्यां आसन इंदा, समर ... देख्यो ज्ञानदिणंदा ॥ ११ ॥ प्रभुकुं नी निशाल पठावे, मोह महा पवमान

कहावे ॥ देखो जगगुरु ज्ञानके दरीया, मुहसें न बोले गंभीरिम भरी-या ॥ १२ ॥ बहुत आमंबर होवे हो जिनको, मत जाणो परमारथ उनको॥ नहीं सोवन ध्वनि तेहवी बजावे, जेहवी हो कांस्यके पात्रमें थावे ॥ १३॥ काल त्रिहुंको ज्ञाता हो स्वामी, नहीं जिनकी प्रभुता मांहे खामी॥ अविनय एह हुवे जिनवरको, आव्यो वेश लइ द्विजवरको ॥ १४ ॥ प्रभुकुं बेठावे सिंहासन सोइ, देखी सवे मन अचरिज होइ॥ पाठक आगल रह्यो कर जोडी, प्रश्न करे मद मत्सर मोमी ॥ १५ ॥ मन संदेह टल्यो तब साचो, पाठक जाएयुं ए पंमित आठो ॥ पाठ पडे मन मान निवारी, तुम हो वडे जगगुरु उपकारी ॥ १६ ॥ इंद्र नमी निज स्थानक जावे, प्रभुजी फरी निज मंदिर आवे ॥ देखो जाण गंभीर ए केसे, दीनदयाल होवे जग ऐसे ॥ १७ ॥ अनुक्रमे यौवन पाम्या हो सांइ, रूप कला अधिकी चतुराइ ॥ वरस पंचवीश सहस वय थाये, तब प्रभुकुं लेइ राज्य बेठाये ॥ १८ ॥ परणावे प्रभुकुं बहुतेरी, नृपकन्या गुणरूप भलेरी ॥ सकल अंतेउरमां रतिकारी, नामे यशोमती राणी सारी ॥ १९ ॥ प्रभु विलसे तिण साथे भोगा, सहु मलीया मनोवांछित योगा ॥ चाले पद्मिनी पतिने हो छंदे, घर घर वरते हो अति आनंदे॥ २०॥ छठे खंडे हो पंचमी ढाल, राम कवि कहे अति उजमाल ॥ आगल सांभलजो हवे लोका, वाधशे जग मांहे पुण्यशलोका॥२१॥सर्व गाथा ॥ १४७॥श्लोक तथा गाथा ॥ १॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे दृढरथनो जीव, सरवारथसिद्धथी चवी ॥ पूरण आयु अतीव, आवीने तिहां उपजे ॥ १ ॥ यशोमतीनी कुख, शुभ वेलाए अवतस्यो ॥ पूर्ण समय गतदुःख, चक्र सुपन सूचित जएयो ॥ २ ॥ कस्यो महोत्सव सार, नयर मांहे बहु हर्षशुं ॥ "चक्रायुध" गुणधार, नाम ठव्युं नरपति सही ॥ ३ ॥ सुत वाधे श्रीकार, रूप कला गुण शोभतो जंगम सुरतरु सार, नर नारी मन मोहतो ॥ ४ ॥ शिखण कला विचार, निशाले ते पाठव्यो ॥ बत्रीश लक्षण धार, सकल शास्त्र सहेजे भएयो ॥ ॥ ५ ॥ यौवनवये कुमार, नृपकन्या परणावीयो ॥ रूपे गुणे जितमार, सुख विलसे संसारनां ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ पांच सोपारी लेइ हाथ ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिवसने योग, आयुधशालामां उपन्युं ॥ चक्ररतन उत्पन्न, आर सहस्रे हो शोजतुं ॥ १ ॥ उपन्यो हर्ष अपार, सेवक दीध वधामणी ॥ आयुधशालामां चक्र, उपन्युं जय जय जगधणी ॥ २ ॥ प्रजु निसुणी दीये दान, आठ दिवस उत्सव करे, चक्र तणो गुणखाणी, जयकमला कारण शिरे ॥ ३ ॥ चक्र असि ठत्र दंम, आयुधशालामां उपजे ॥ मणि कांगिणी ने हो चर्म, निधि सीरी गेहे नीपजे ॥ ४ ॥ पुरोहित वार्द्धिकी जाण, सेनापति गाथापति ॥ निज नगरे ए चार, रयण तणी कही उत्पत्ति ॥ ५ ॥ राजकुले स्त्रीरत्न, गिरि वैताढ्ये हो गज तुरी ॥ रयण ए जस दश चार, केम टके तेहना अरि ॥ ॥ ६ ॥ आयुधघरथी हो चक्र, चाल्युं वही पथ अंबरे ॥ केडे हो शांति दयाल, रयण कटक लेइ संचरे ॥ ७ ॥ यक्ष सहस्र समेत, चाल्युं प्रथम पूरव दिशे ॥ मागधतीर्थ आसन्न, वेलाकुले सेना वसे ॥ ८ ॥ वार्द्धिकी करे तत्काल, पुर द्वादश योजन तणुं ॥ सैन्यने रहेवा हो काज, अति सुंदर शोजा घणुं ॥ ए ॥ शुज आसन चक्रधार, वेसे हो मागध सन्मुखे ॥ त्रिहुं जगनो रे आधार, जस नामे सहु जग सुखी ॥ १० ॥ ते प्रजुने अनुजाव, जल मांहे द्वादश योजने ॥ मागध सुरनुं हो ताम, आसन चलीयुं चिंते मने ॥ ११ ॥ जाण्युं अवधि उपयोग, जिनचक्री इहां आवीया ॥ साधन जरतना खंम, जे सुरपति मन जावीया ॥ १२ ॥ जाग्य सबल मुऊ आज, जे जिनराज पधारीया ॥ आराधनने हो काज, जाउं अशुज निवारीया ॥ १३ ॥ लेइ आजरण अमूल्य, वस्त्र वली सुरनां जलां ॥ आवे हो बहु परिवार, प्रजुजक्ति जर्यां हैयमलां ॥ १४ ॥ कर जोमी कहे देव, नाथ सुणो त्रिजुवन तणा ॥ हुं तुम किंकर स्वामी, ठे मुऊमां अवगुण घणा ॥ १५ ॥ करशुं तुमारी हो सेव, दास थइ रहेशुं इहां ॥ तुम आणा परमाण, रहेशुं हो राखेशो जिहां ॥ १६ ॥ प्रजु सन्मानी हो तास, जक्तवत्सल जगवंत जी ॥ मोकलीयो निज ठाम, पहोतो प्रजु समरंत जी ॥ १७ ॥ तेम दक्षिण दिशि चक्र, चाल्युं हो वाटे आकाशनी ॥ आव्या दक्षिण दधितीर, तीरथ वरदाम आसनी ॥ १८ ॥ तेम आव्यो सुर तेह, कर जोमी आगल रह्यो ॥ तुं साहिब गुणगेह, तुम दरिसण जाग्ये लह्यो ॥ १९ ॥ तेहने स्वामी

णे गाम, वारुणी दिशे प्रज्ञु चालीया ॥ साधण देव प्रजास, दलजारे नग
हालीया ॥ २० ॥ तेह नम्यो ततकाल, श्रावी जगतगुरु पाउले ॥ उत्तर
पंथ नीहाली, चाल्युं हो चक्र उमाहले ॥ २१ ॥ श्राव्या नदीतट सिंधु,
जवसिंधु तारक विजुजी ॥ सिंधुदेवी ततकाल, श्रावी कहे जय जय प्रजुजी
॥ २२ ॥ स्नाननुं पीठ सुचंग, कलश कनकमय रूपने ॥ स्नानसामग्री हो
लेह, जेट करे जगजूपने ॥ २३ ॥ कहे स्वामी कर जोमी, उंलग करी
हो ताहरी ॥ करुणानजरे महाराज, जाग्यदशा जागी माहरी ॥ २४ ॥
मुऊ लायक खीजमत, प्रज्ञु फरमावीये हित धरी ॥ लही श्राणा निज
धाम, सिंधु गइ हर्ष जरी ॥ २५ ॥ तेमी सेनानी ताम, हुकम करे
चक्री इस्यो ॥ सिंधुनो पश्चिम खंम, साधी श्रावो सुणी उल्लस्यो ॥ २६ ॥
चर्मरत्न धरी सेन, सिंधु तरी परतट गयो ॥ खलजल्या तिहांना रे जूप,
तस सहामो कोइ नवि थयो ॥ २७ ॥ श्रावी नम्या सहु पाय, साथ
लेइने हो श्रावीया ॥ जेट हुइ जिनराय, चरण नमे नृप जावीया
॥ २८ ॥ सबलुं पुएयनुं जोर, सहस गमे नृप सेवता ॥ श्रावी नमे कर
जोमी, कोमी गमे जस देवता ॥ २९ ॥ छठे खंडे हो ढाल, छठी कही रली-
यामणी ॥ सुणो जवि थइ उजमाल, शांति प्रज्ञु कीर्ति घणी ॥ ३० ॥ १८३ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्र चल्युं नजमंमले, पूठे शांति नरिंद ॥ अनुक्रमे जातां पामीयो, वैताढ्याद्रि
शुचि वैताढ्य गिरिंद ॥ १ ॥ श्रावी नम्यो प्रज्ञु पुएयथी, वैताढ्याद्रि
कुमार ॥ वशवर्त्ती थइ एम कहे, जय करुणाजंमार ॥ २ ॥ गुफा तमि-
स्नानुं तदा, स्वयमुद्घाटी द्वार ॥ वैताढ्यपाल सुर चरण नमी, कहे
जय जगदाधार ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मनमोहना लाल ॥ ए देशी ॥ असवारी गजराजकी ॥ मनमोहना
लाल ॥ कीनी शांति दयाल हो ॥ जनरंजना लाल ॥ छत्र फरे शिर उपरे
॥ म० ॥ तीन जुवन रखवाल हो ॥ ज० ॥ १ ॥ मणि रयण गजराज-
के ॥ म० ॥ कुंजस्थल धर्युं सार हो ॥ ज० ॥ चार जोयण लगे ते सही
रे ॥ म० ॥ दूर करे अंधकार हो ॥ ज० ॥ २ ॥ कांगिणी लेइ हाथमां
रे ॥ म० ॥ करे मंमल तमहार हो ॥ ज० ॥ उंगणपचास श्रालिखे

रे ॥ म० ॥ सेन काजे चक्रधार हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ बचे उन्मग्ना निम्न
रे ॥ म० ॥ निर्मग्ना तेम जाण हो ॥ ज० ॥ वार्द्धिकी पाज करे ति
रे ॥ म० ॥ पामी प्रजुनी आण हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सैन्य सहु तिहां ज
रे ॥ म० ॥ जुर्ज जुर्ज पुण्य प्राग्भार हो ॥ ज० ॥ तमिस्र गुहाथी नीस
रे ॥ म० ॥ बाहिर जगदाधार हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ तत्रापातचिलातक
॥ म० ॥ म्लेछ तणा मही जूप हो ॥ ज० ॥ चिंते ए कुण आवीयं
॥ म० ॥ वैरिसैन्य विरूप हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ युद्ध तेहो साथे बालीयुं
पीडे सुनटनी कोम ॥ ज० ॥ देखी म्लेछने आकरा रे ॥ म० ॥ सैन्य
मचकोम हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ सेनानी सुणी आवीयो रे ॥ म० ॥ थइ तु
असवार हो ॥ ज० ॥ दंमरत्न ग्रही हाथमां रे ॥ म० ॥ धायो यम आ
हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ जट कोटी तव उठले रे ॥ म० ॥ स्वामिवले य
वान् हो ॥ ज० ॥ जागी पमी म्लेछां तणी रे ॥ म० ॥ नाठा ते ग
शान हो ॥ ज० ॥ ए ॥ केइ पड्या केइ आखड्या रे ॥ म० ॥ केइ हुवा संह
हो ॥ ज० ॥ सहामुं कोइ चाले नहीं रे ॥ म० ॥ हुइ म्लेछांनी हार
॥ ज० ॥ १० ॥ नासी सिंधुतटे गया रे ॥ म० ॥ तजी आहार सयमे
हो ॥ ज० ॥ वारिद नामे कामने रे ॥ म० ॥ तेह आराधे देव हो
ज० ॥ ११ ॥ तुष्ट थइ कहे म्लेछने रे ॥ म० ॥ अमे कुणमात्र अनाथ ह
॥ ज० ॥ इणशुं अम चाले नहीं रे ॥ म० ॥ ए त्रिहुं जगको नाथ ह
॥ ज० ॥ १२ ॥ म्लेछ कीयो आग्रह घणो रे ॥ म० ॥ वरसावे जलधा
हो ॥ ज० ॥ किमही तेह न उसरे रे ॥ म० ॥ वरसे मुसलधार हो
ज० ॥ १३ ॥ जिनचर्क्रसेना वहे रे ॥ म० ॥ वाध्युं पाणीपूर हो
ज० ॥ कहे प्रधान सुण माहिया रे ॥ म० ॥ राय राय बहुनूर हो ॥ ज०
१४ ॥ चर्मरत्न प्रजुजी धर्युं रे ॥ म० ॥ बार जोयण विस्तार हो ॥ ज०
जन्न चूंर्नी उपरी रे ॥ म० ॥ सेना जगदाधार हो ॥ ज० ॥ १५
दंमरत्न उपरे कर्युं रे ॥ म० ॥ छत्ररत्न सुखकार हो ॥ ज० ॥ चर्म
छत्रताबीच उपरे रे ॥ म० ॥ छत्र सणो विस्तार हो ॥ ज० ॥ १६
करे प्रकाश मणि रयणशुं रे ॥ म० ॥ जाणे उग्यो सूर हो ॥ ज०
१७ ॥ एम निज सेना उपरी रे ॥ म० ॥ जलनदि मेंघे धार हो ॥ ज०

सात दिवस थया वरसतां रे ॥ म० ॥ करे चक्रीश विचार हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ सोल सहस यक्ष स्वामीके रे ॥ म० ॥ अंग उलग करनार हो ॥ ज० ॥ ग्रही हथियारने धाइया रे ॥ म० ॥ जिहां ठे जलद कुमार हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ रे पापी तमे शुं करो रे ॥ म० ॥ विण खूटे मरणाश हो ॥ ज० ॥ विरमो नहींतर पामशो रे ॥ म० ॥ तुमे अम्हहुंती विनाश हो ॥ ज० ॥ २० ॥ जय पामीने उलस्या रे ॥ म० ॥ जइ नमीया प्रभुपाय हो ॥ ज० ॥ अमे अपराधी आकरा रे ॥ म० ॥ तुम्ह गिरुआ जिनराय हो ॥ ज० ॥ २१ ॥ तृण लेइ मुखमां सवे रे ॥ म० ॥ म्लेछ करे अरदास हो ॥ ज० ॥ गुनह खमो ए अम तणो रे ॥ म० ॥ तुम साहिब हम दास हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ नतवत्सल जगवंत जी ॥ म० ॥ गुनह करे वकसीस हो ॥ ज० ॥ हय गजवर मणि भेटणां रे ॥ म० ॥ मूकी नामे शीश हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ सेनानीने मूकीयो रे ॥ म० ॥ बीजो निष्कूट सिंधु हो ॥ ज० ॥ साधीने आवो वही रे ॥ म० ॥ हुकम करे जगबंधु हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ जइ सेनानी साधीया रे ॥ म० ॥ तिहांना देश अनेक हो ॥ ज० ॥ ते सघला आवी नम्या रे ॥ ज० ॥ मनमां धरीय विवेक हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ जइ रुषभकूट शांतिजी रे ॥ म० ॥ लखे पोतानुं नाम हो ॥ ज० ॥ शांति प्रभुकी साहिबी रे ॥ म० ॥ सीध्यां वांछित काम हो ॥ ज० ॥ २६ ॥ गंगोत्तर निष्कूट तिहां रे ॥ म० ॥ साधे सेनानी जाय हो ॥ ज० ॥ खंडप्रपात गुहा आवीया रे ॥ म० ॥ कृतमाल सुर अधिष्ठाय हो ॥ ज० ॥ २७ ॥ साधीने प्रभु नीसर्या रे ॥ म० ॥ गंगातट अहिठाण हो ॥ ज० ॥ गंगा आवीने कहे रे ॥ म० ॥ जय जय श्री जिनभाण हो ॥ ज० ॥ २८ ॥ छठे खंडे सातमी रे ॥ म० ॥ ढाल भणी सुखकार हो ॥ ज० ॥ रामविजय कहे पुण्यथी रे ॥ म० ॥ लहीये जयजयकार हो ॥ ज० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ २१५ ॥ श्लोक

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ गंगातटे निवास, स्वामी करे सेना तणो ॥ हवे जुओ पुण्यविलास, जे प्रकटे प्रभुजी तणो ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ भरताधिप राय, साधे देश सहु ॥ ए देशी ॥ द्वादश योजनने आयाम,

विस्तर नव योजन हितकाम ॥ शांतीश्वर राय, साध्या देश सहु ॥ ए आंकणी ॥ आठ योजन उंचा निर्धार, नव निधि मंजूषा आकार ॥ शां० ॥ १ ॥ वैडूर्य मणिमय जटित कपाट, प्रगट्या निधि तेहनो सुणो घाट ॥ शां० ॥ नैसर्गक पहेलो चित्त धार, पांडुक वीजो निधि सुखकार ॥ शां० ॥ २ ॥ पिंगल त्रीजुं सर्वरतन, चोथुं महापद्म पंचम मन्न ॥ शां० ॥ काल महाकाल माणव शंख, चार एवं नव निहि गुण संख ॥ शां० ॥ ३ ॥ स्कंधावार ने नगरनिवेश, पहेला निधिमां सयल निवेश ॥ शां० ॥ धान्यवीजनी सवि संपत्ति, वीजे हुवे एहनी उत्पत्ति ॥ शां० ॥ ४ ॥ नर महिला हय हाथीनां जाण, आजूषणविधि त्रीजे वखाण ॥ शां० ॥ चउद रत्न हुवे चोथे निधान, पांचमुं वस्त्र विविधनी खाण ॥ शां० ॥ ५ ॥ उठे कालत्रयनुं ज्ञान, महाकाले निसुणो मतिमान् ॥ शां० ॥ सुवन रूप्प मणि लोह प्रवाल, एहनो संजव सातमे जाल ॥ शां० ॥ ६ ॥ युद्धनीति सघलां हथियार, योध तणां अष्टम अवधार ॥ शां० ॥ चउविध काव्य ने तुर्यनां अंग, नाट्य नाटक विधि नवमे रंग ॥ शां० ॥ ७ ॥ पद्योपम जीवित सुरवास, ए नवनिधिसंबंध उल्लास ॥ शां० ॥ नव सहस निधि सुर कहे आय, जय जय चक्री त्रिजुवनराय ॥ शां० ॥ ८ ॥ मन माने तेम विलसो स्वामी, निधि अखूट तुम्हारे नाम ॥ शां० ॥ प्रगट्यां पूरव पुण्य प्रमाण, वरती तुम्हारी षट्खंम आण ॥ शां० ॥ ए ॥ निधि उत्सव कीधो तेणी वार, प्रजुनां पुण्य तणो नहीं पार ॥ शां० ॥ गंगा पूरव निष्कूट जाग, आप वशे कीधो वमजाग ॥ शां० ॥ १० ॥ साधी षट्खंम जारतवास, प्रजु वलीयो जस सुर नर दास ॥ शां० ॥ नहीं प्रजुने मन मोहविकार, उदय महा वलवान विचार ॥ शां० ॥ ११ ॥ विणु उदये नवि जोगव्यां जाय, विणु जोगवीयां मोक्ष न थाय ॥ शां० ॥ आठसें वरसे साधी हो देश, प्रजु आवे निज नयर उद्देश ॥ शां० ॥ १२ ॥ हुइ हथिणाउर घर घर वात, आव्यो साहिब जगविख्यात ॥ शां० ॥ वांध्यां तरियां तोरण वार, मुख वोले सहु मंगल चार ॥ शां० ॥ १३ ॥ करी दिग्विजय वरी जयश्रेणी, आवे प्रजु गजपुर वहु सेन ॥ शां० ॥ लाख चोराशी गजके हो घाट, आगे चले करता गलगाट ॥ शां० ॥ १४ ॥ हय रथ संख्या तेती हो जाण, प्रजुजी वखो

मोजी मदिराण ॥ शां० ॥ वाजे लाख चोराशी निशाण, जीत हुइ त्रिभु-
वन सुलतान ॥ शां० ॥ १५ ॥ कोमि अढार साथे असवार, ठन्नुं कोमी
पायक दल सार ॥ शां० ॥ चउद रयण नव निधि संघात, बहु आमंबर
अचिरानो जात ॥ शां० ॥ १६ ॥ शुन दिन गजपुर करे प्रवेश, दूर टल्या
जनना संक्लेश ॥ शां० ॥ वंदिजन बोले जयवाणी, आगल नाट करे कल्या-
ण ॥ शां० ॥ १७ ॥ सोहव नरी नरी मोती थाल, प्रभुको वधावे थइ उज-
माल ॥ शां० ॥ निज मंदिर आये नूपाल, सुखीयो सहु तिहां बाल-
गोपाल ॥ शां० ॥ १८ ॥ ठठे खंडे हो आठमी ढाल, आये जगत्प्रभु
दीनदयाल ॥ शां० ॥ रामविजय कहे पुण्यसंयोग, आइ मिले सवि
वांछित योग ॥ शां० ॥ १९ ॥ सर्व गाया ॥ २३५ ॥ श्लोक तथा गाया मली ॥

॥ दोहा ॥

॥ वासी नारतवर्षना, मलीयां देवी देव ॥ बत्रीश सहस नरेश्वरा,
सारे प्रभुनी सेव ॥ १ ॥ करे अनिषेक चक्री तणो, बार वरस मंमाण ॥
विद्याधर नूचर मली, सर्व समयना जाण ॥ २ ॥ करे उत्सव अनिषे-
कनो, नित्य एक एक राजान ॥ परणावे दोय पुत्रिका, रूपे रंन समान
॥ ३ ॥ चोसठ सहस अंतेउरी, एणी पेरे हुइ उदार ॥ दो दो तस वारां-
गना, एक लक्ष बाणुं हजार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ हरणी जब चरे ललना ॥ ए देशी ॥ प्रबल पुण्याइ शांतिकी ललना ॥
लखां हो कहेतां नावे पार ॥ साहिब सेवीये ललना ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
फिरत हूहाइ देशमां ॥ ल० ॥ लखां हो सहस बत्रीशने मेल ॥ सा० ॥
बत्रीश सहस नरिंदशुं ॥ ल० ॥ लखां हो करे अहोनिश प्रभु केलि ॥ सा०
॥ २ ॥ सहस बहोंतर पुरवरा ॥ ल० ॥ ल० ॥ सोहे ऋद्धि कमाल ॥
सा० ॥ पाटण संख्या हो सांनली ॥ ल० ॥ ल० ॥ बारु सहस अनियाल
॥ सा० ॥ ३ ॥ कोमि ठन्नुं वर गामना ॥ ल० ॥ ल० ॥ नोगवे नोग रसाल
॥ सा० ॥ सोल सहस यक्ष आगले ॥ ल० ॥ ल० ॥ रहे कर जोमी नाल
॥ सा० ॥ ४ ॥ दोय सहस अंगरक्षका ॥ ल० ॥ ल० ॥ सेव करे
दिल साच ॥ सा० ॥ चोसठ इंद्र हाजर रहे ॥ ल० ॥ ल० ॥ कोइ न
लोपे वाच ॥ सा० ॥ ५ ॥ दश कोमि अलंवध्वजाधरा ॥ ल० ॥ ल० ॥

दीवीधरा पांच लाख ॥ सा० ॥ साठ सहस दरबारमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ पंकित पूरे साख ॥ सा० ॥ ६ ॥ साठ सहस विरुदावली ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रतिदिन बोले नाट ॥ सा० ॥ त्रण लाख मंत्रीश्वर कह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ अंश नहीं उचाट ॥ सा० ॥ ७ ॥ बत्रीश सहस नाटक नलां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नव नव लीलविलास ॥ सा० ॥ वीश सहस आगर तणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ चाल्यो आवे धनराशि ॥ सा० ॥ ८ ॥ अक्षय खजीनो जेहनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ किमही न खूटे सोइ ॥ सा० ॥ प्रमुदित सवि परजा नइ ॥ ल० ॥ ल० ॥ शांति प्रभुमुख जोइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ चोसठ सहस करे नवां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नित्य प्रत्ये रूप दयाल ॥ सा० ॥ वर तरुणीके विलासमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ जातो न जाणे काल ॥ सा० ॥ १० ॥ विश्वसेन कुल दिनमणि ॥ ल० ॥ ल० ॥ अचिरा मात मल्हार ॥ सा० ॥ कंचनवर्ण तनु जेहनुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ निरखत हर्ष अपार ॥ सा० ॥ ११ ॥ साल ईति विरमी सही ॥ ल० ॥ ल० ॥ सहु सुखीयो संसार ॥ सा० ॥ शांति प्रभुके राजमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ वरत्यो जयजयकार ॥ सा० ॥ १२ ॥ वरस सहस पचवीश थयां ॥ ल० ॥ ल० ॥ चक्रिपद पालंत ॥ सा० ॥ अतिशय ज्ञाने हो आपणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ जब देखे नगवंत ॥ सा० ॥ १३ ॥ निर्मोही थइने रह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ जोग उपर अरिहंत ॥ सा० ॥ नव लोकांतिक देवनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ चलीयां आसन तंत ॥ सा० ॥ १४ ॥ आवे तिहां उतावला ॥ ल० ॥ ल० ॥ जिहां प्रभु शांति जिणंद ॥ सा० ॥ बुऊ बुऊ नगवंत जी ॥ ल० ॥ ल० ॥ परिहर मोहनो फंद ॥ सा० ॥ १५ ॥ स्थापो तीरथ त्रिभुवनपति ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोक सहु हितकार ॥ सा० ॥ चौदराजके चोकमें ॥ ल० ॥ ल० ॥ उंर न तारणहार ॥ सा० ॥ १६ ॥ एम सुर विनवीयो विभु ॥ ल० ॥ ल० ॥ आपे वरसीदान ॥ सा० ॥ ऊरण कीध वसुंधरा ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुर नर गुणगान ॥ सा० ॥ १७ ॥ चक्रायुध अंगज नणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ स्थापे राज्य दयाल ॥ सा० ॥ आप थया अलवेश्वरु ॥ ल० ॥ ल० ॥ दीक्षाने उजमाल ॥ सा० ॥ १८ ॥ आसन चलीयां इंद्रनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ जाणयुं अवधिज्ञान ॥ सा० ॥ संयमसीरी वरवा नणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ थया उत्सुक नगवान ॥ सा० ॥ १९ ॥ चोसठ सुर-

पति आवीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ देव देवी परिवार ॥ सा० ॥ प्रज्जु प्रणमी करे हर्षशुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ दीक्षामहोत्सव सार ॥ सा० ॥ २० ॥ सरवारथ नामे जली ॥ ल० ॥ ल० ॥ शिबिका रची तेणी वार ॥ सा० ॥ बेठा जगगुरु उपरे ॥ ल० ॥ ल० ॥ जगजनके आधार ॥ सा० ॥ २१ ॥ चामर वींजे सुरपति ॥ ल० ॥ ल० ॥ छत्र धरुं शिरदार ॥ सा० ॥ प्रथम उपाडे मानवी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नरनो प्रथम अधिकार ॥ सा० ॥ २२ ॥ सुर असुरेंद्र वहे पछी ॥ ल० ॥ ल० ॥ गरुड अने नागेंद्र ॥ सा० ॥ शिबिका उपाडे जिन तणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ धरता मन आनंद ॥ सा० ॥ २३ ॥ केइ गाये वाये रंगशुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ केइ नाटक करे सार ॥ सा० ॥ जाट परे विरुदावली ॥ ल० ॥ ल० ॥ सहु कहे जयजयकार ॥ सा० ॥ २४ ॥ जुवनोत्तर गुणवर्णना ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुरपति ससनेह ॥ सा० ॥ रासदायक नर आगले ॥ ल० ॥ ल० ॥ नृत्य करे गुणगेह ॥ सा० ॥ २५ ॥ जंजा जेरी मृदंगनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ वाजे वाजित्र सार ॥ सा० ॥ नजमंगल गाजी रह्युं ॥ ल० ॥ ल० ॥ डुंडुजिध्वनि मनोहार ॥ सा० ॥ २६ ॥ हाहा हूहू वर गायना ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाटकबंध संगीत ॥ सा० ॥ रंजा तिलोत्तमा उर्वशी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाचती अनुजव रीत ॥ सा० ॥ २७ ॥ उत्सवशुं प्रज्जु आवीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ गजपुर नगर उद्यान ॥ सा० ॥ सहस्राम्र वन मांहे आवीने ॥ ल० ॥ ल० ॥ उतरीया जगवान ॥ सा० ॥ २८ ॥ आजूषण उतारीयां ॥ ल० ॥ ल० ॥ मूक्यो परिग्रह-जार ॥ सा० ॥ पंच मुष्टि करे केशनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोच सहस परि-वार ॥ सा० ॥ २९ ॥ वस्त्रांचल इंद्रे लीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ क्षीरजलधि मांहे केश ॥ सा० ॥ वहेवाव्या रखे एहनी ॥ ल० ॥ ल० ॥ आशातन होय लेश ॥ सा० ॥ ३० ॥ तुमुल निवारे हो सुरविज्जु ॥ ल० ॥ ल० ॥ वरे प्रज्जु विरति सुनारी ॥ सा० ॥ ज्येष्ठ शित चउदशी दिने ॥ ल० ॥ ल० ॥ जरणीगत विधुचार ॥ सा० ॥ ३१ ॥ मुखे " नमो सि-द्धाणं " जणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रज्जु लीये संयमजार ॥ सा० ॥ पाठ सा-मायिक उच्चरे ॥ ल० ॥ ल० ॥ छठ जक्त चोविहार ॥ सा० ॥ ३२ ॥ मनःपर्यव नामे जलुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ संज्ञिमनोगत जाव ॥ सा० ॥ जाणे हो जेहथी निर्मेधा ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रगट्युं तिण प्रस्ताव ॥ सा० ॥ ३३ ॥ चउनाणी

प्रनु विचरीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ नहीं मन मोहविकार ॥ सा० ॥ प्रनु निर्मोही वंदीने ॥ ल० ॥ ल० ॥ पाठो वल्यो परिवार ॥ सा० ॥ ३४ ॥ इंडादिक सहु देवता ॥ ल० ॥ ल० ॥ नंदीश्वर करे यात्र ॥ सा० ॥ गणतां सुरसुख तृण समुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ पावन कीधां गात्र ॥ सा० ॥ ३५ ॥ खंम ठठे नवमी नली ॥ ल० ॥ ल० ॥ ढाल दीक्षाअधिकार ॥ सा० ॥ राम कहे सुणतां सही ॥ ल० ॥ ल० ॥ लहीये नवनिस्तार ॥ सा० ॥ ३६ ॥ २७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजे दिन जिन शांतिजी, कोइ सन्निवेश मकार ॥ परमान्ने करे पारणुं, सुमित्र तणे घरबार ॥ १ ॥ पंच दिव्य परगट हुवां, साडी बारह कोमि ॥ वृष्टि थइ सोवन तणी, पहोता वांछित कोम ॥ २ ॥ यडुक्तं ॥ अद्धत्तेरस कोमी, उक्कोसा तह होइ वसुधारा ॥ अद्धत्तेरस लरका, जहन्निया होइ वसुधारा ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ ग्रामाकर पुर विचरतां, शांतीश्वर जिनचंद ॥ अप्रतिबंध पट्र कायना, पालक महामुणींद ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ आज सखी शंखेश्वरो ॥ ए देशी ॥ चउनाणी चोखे चित्ते, नूमंमल मांहे ॥ सम तृण मणि नावे विनु, विचरे उत्साहे ॥ १ ॥ कल्पातीतपणुं नजे, कुविकल्प निवारी ॥ योगस्वरूपी योगना, धारक ब्रह्मचारी ॥ २ ॥ वरते शुरू मुनिनावमां, विरता दमवंता ॥ साधक शिवपदपंथना, सूधा गुणवंता ॥ ३ ॥ अमल अमायी अंतरे, खंतीगुण पूरा ॥ पमिमा अनिग्रह धारता, मौनी प्रनु शूरा ॥ ४ ॥ आठ मास ठद्मस्थमां, विचरी प्रनु आव्या ॥ गजपुर नयरे तिण वने, जगतीजन नाव्या ॥ ५ ॥ पत्र फूल फले नंदतो, नंदी तरु सोहे ॥ तिहां प्रनुजी पाउधारीया, नविजन मन मोहे ॥ ६ ॥ शुक्लध्यानमां वर्त्तता, तप ठठ चोविहार ॥ पोष नवमी तिथि उजली, निर्मल गुणधार ॥ ७ ॥ नरणी उडु शशी आवीयो, शुन वेला स्वामी ॥ निर्मल ध्यानदशा वधी, चढते परिणामी ॥ ८ ॥ घातिकर्म क्षय घातीयां, अविनाशी नावे ॥ उज्ज्वल केवल उपन्युं, निरुपाधि स्वनावे ॥ ९ ॥ नापक लोकालोकनुं, तिण वेला प्रगट्युं ॥ दोष अढारनुं तिण समे, वल सघलुं विघट्युं ॥ १० ॥ अंतराय अलगा थया, दुःखदायी माठा ॥ अरति रति वेगली, नय सघला घाठा ॥ ११ ॥ शोक दुगंठा

सामटी, मिथ्यात्वने काम ॥ वाख्या वेरी अनादिना, क्षायिक गुणधाम ॥ १२ ॥ आछादन अज्ञाननुं, उफामी नाख्युं ॥ निद्रा नाठी वापमी, अनुजवसुख चाख्युं ॥ १३ ॥ अविरति नवि ऊनी रही, अलगांथी जांखी ॥ राग द्वेष वेगा ठरी, हथियारने नाखी ॥ १४ ॥ दोष अढारथी वेगलो, प्रजु शांति जिणंदो ॥ तिण वेला अनुजावथी, चलियांसन इंद्रो ॥ १५ ॥ सुर मलीया चार निकायना, ततक्षण तिहां आवे ॥ वायुकुमारा जूमिनो, योजन समरावे ॥ १६ ॥ मेघसुरा गंधोदके, रजजूमि समारे ॥ मणिमय पीठ रचे तिहां, अति हर्ष पमाडे ॥ १७ ॥ जुवनपति ने ज्योतिषी, वैमानिक देवा ॥ रूप्य कनक मणि रयणना, विरचे गढ देवा ॥ १८ ॥ चिहुं दिशि द्वार विराजती, तोरणनी माला ॥ सुर नर मन मोही रहे, अति जाकजमाला ॥ १९ ॥ पावमीयां शोजे जलां, वीश सहसनी संख्या ॥ जूख तरष लागे नहीं, ते नयणे देख्यां ॥ २० ॥ द्वादश गुण प्रजु अंगथी, तेह मध्य अशोक ॥ जे नजरे दीठे थके, नासे सवि शोक ॥ २१ ॥ चिहुं दिशि सिंहासन जलां, ठत्रत्रय चारु ॥ चामर सुर व्यंतर सवे, विरचे दीदारु ॥ २२ ॥ अचिरानंदन शांति जी, पूरव दिशि द्वारे ॥ पेसे तीर्थ नमस्करी, सुर सेवा सारे ॥ २३ ॥ पूर्व दिशे सिंहासने, वेसे जिनदेवा ॥ प्रजुप्रतिरूप करी ठवे, त्रिहुं दिशि तिहां देवा ॥ २४ ॥ जामंमल पूठे धखुं, करे कुसुमनी वृष्टि ॥ जानुप्रमाण निरंतरे, थइ मन संतुष्टि ॥ २५ ॥ अंबर वाजे डुंडुजि, जो जो जवि लोका ॥ जाण करे आवी नमो, ज्युं थाउं अशोका ॥ २६ ॥ वारे परिषद तिहां मले, जिनवाणी सुणेवा ॥ कर जोमी जावे रही, जवजय अवगणवा ॥ २७ ॥ सुरवनिता मुनि साधवी, त्रिहुं अग्नि निकोणे ॥ व्यंतर जुवन ने ज्योतिषी, त्रय नैरुत जाणे ॥ २८ ॥ ते सुर वायव्य कूणमां, वैमानिक त्रिदशा ॥ नर नारी ईशानमां, त्रिहुं पर्षद सुयशा ॥ २९ ॥ एहवी वारे पर्षदा, मूल गढमां वेसे ॥ बीजा गढ मांहे सवे, तिर्यंच शुचि देशे ॥ ३० ॥ रौप्य तणा गढमां रहे, वाहन सवि जननां ॥ प्रजु दरिसणथी नवि रहे, मत्सर निज मनना ॥ ३१ ॥ यदुक्तं ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता जुजंगम् ॥ १ ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोऽन्ये त्यजंति, श्रित्वा

साम्यैकरूढप्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहम् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ सारंगी हरिबालने, सुतनी परे फरसे ॥ वाघशिशुने नंदिनी, चाटे अति हर्षे ॥ ॥ ३२ ॥ मांजारी हंसबालशुं, रमे हर्षे नेली ॥ मोरवधू अहिशुं करे, क्रीमा मन मेली ॥ ३३ ॥ वैर टले आजन्मनां, प्रजुने महिमाए ॥ देव अवर कोइ एहवो, नवि दीठो महि मांये॥३४॥यडुक्तं॥तीर्थंकराणां साम्राज्यं॰ ॥ समवसरणस्थिति तेहवी, लवलेशथी दाखी ॥ हवे निसुणो जवि देशना, जिनजी जे जाखी ॥ ३५ ॥ दशमी ठष्ठा खंमनी, कही ढाल सुरंगी ॥ रामविजय कहे सांजलो, प्रजु देशना रंगी ॥ ३६ ॥ ३१४ ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नामधेय कल्याण एक, आवी पुरुषरत्न ॥ चक्रायुध आगल कहे, वात करी स्थिर मन्न ॥ १ ॥ समवसर्या आवी इहां, श्रीशांति जिणंद दयाल ॥ प्रजु ए हर्षे वधामणी, हुं लाव्यो जूपाल ॥ २ ॥ वात सुणी हर्षित थयो, देइ यथोचित दान ॥ प्रजुवंदनने नीसर्यो, चक्रायुध राजान ॥ ३ ॥ पांचे अजिगम साचवी, प्रजु वांदे जूपाल ॥ कर जोमी उनो रही, स्तवना करे रसाल ॥ ४ ॥ जय स्वामिन् जगदीश्वरु, जय त्रिजुवनजन-बंधु ॥ जय अगाधतारक विजु, जय गुणमणिना सिंधु ॥ ५ ॥ जवजल पमतां जीवने, तारक तुम्हो जहाज ॥ पूरण पुण्ये मुजने, मलीया श्री जिनराज ॥ ६ ॥ ध्येय अनंतर सांजरो, ध्यायकने निज जाव ॥ दायक मुज उपर करो, प्रजुजी करुणाजाव ॥ ७ ॥ ठे अनंत गुण ताहरा, तेहमां एक गुण मुज ॥ देतां सेवक डुःख टले, दाम न बेसे तुज ॥ ८ ॥ दीनो-द्धरण धुरंधरा, हे अनाथना नाथ ॥ देखी हुं तुम मुखकमल, जगमां हुवो सनाथ ॥ ए ॥ नमी स्तवी जिनराजने, नाति दूर नवि पास ॥ बेसी निसुणे देशना, चक्रायुध उल्लास ॥ १० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हस्तिनागपुर वर जलुं ॥ ए देशी ॥ वर पांत्रीश वाणीगुणे, संयुत अति-शयनंगार रे ॥ प्रजु वरसे तिहां देशना, जेम जग पुष्कर जलधार रे ॥ त्रूटक ॥ जेम जग पुष्कर जलधार धर्मी, जिनदेशना सुखकार रे ॥ मुखकार गुणो अधि-कार, निरामयकारिणी सुविचार रे ॥ नि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ राजन् पाम्या ए नरजनुं, सघलुं तें हास्युं जोर रे ॥ पण अद्यापि न यत्न कर्या, निज

देहमां इंद्रिय चोर रे ॥ नृ० ॥ निज देहमां इंद्रिय चोर करे, अनरथ घणो गुण
काजे रे ॥ गुण काजे अनादिनो जीव फिरे, जग वाउलो गतलाज रे॥ज०॥३॥
शब्द रूप रस गंधना, वाला वली फरसने फंद रे ॥ जाण अजाण थइ रह्या,
एह सेवे ते सही मंद रे ॥ नृ० ॥ एह सेवे ते सही मंद कह्या, जिनआगमे
गुणहीन रे ॥ गुणहीन ए दीन थइने फरे, रोष रागमें लयलीन रे ॥ रो०
॥३॥ व्याधि लहे ते व्याधना, जेम निसुणी गीत सराग रे ॥ मरण लहे ते
रिणलो, तेम रागी सुणो वरुनाग रे ॥ नृ० ॥ तेम रागी सुणो वरुनाग
राग्यने, आदरो गुणवंत रे ॥ गुणवंत न कीजे कंत शब्द, सुणी आदरो
तिमंत रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ लोचन इंद्रिय चपलता, चलता मननी बहु थाय
॥ मनचंचलताए जीवडो, फरी फरी चिहुं गतिमां जाय रे ॥ नृ० ॥
ी फरी चिहुं गतिमां जाय नयण रस, राचीयां जग जूंठ रे ॥ जग जूंठ
ते मृत्यु पतंग, ज्युं वंचीया नहीं ठंच रे ॥ ज्युं० ॥ ५ ॥ स्वादे जे शुज
तणी, रसनावशवर्त्ती जीव रे ॥ कटुक विपाक लहे घणा, परजवे नरके
ीव रे ॥ नृ० ॥ परजवे नरके करे रीव सदैव, ते सुखीया जग मांहि रे ॥
ां मरे मीन तणी परे, ते सही दुःखीया गतछाय रे ॥ ते० ॥ ६ ॥ गंध
ुज कारणे, बहु जीव तणो करे नाश रे॥ पोपे हो इंद्रिय नासिका, नवि
ूढ विमास रे ॥ नृ० ॥ नवि जोवे मूढ विमासी, बांधे राशि पापनी
ग रे ॥ जेम भृंग लह्यो दुःख तेम गंधे, गति आपणी मति जंग रे
॥ फरस आठ मांहे जिके, ललचाणा लालचपूर रे ॥ बहु आरंज करे
हने सद्गति रही दूर रे ॥ नृ० ॥ तेहने सजति रही दूर सही जेम,
र हाथ रे ॥ पर हाथ लही जेम वेयण तिम, नृप जीवडो ए अनाथ
॥ ८ ॥ जे गुणठाण ते मूल छे, जे मूल ते वली गुणठाण रे ॥ हेतु
थी, बीजांकूरन्याय सुजाण रे ॥ नृ० ॥ बीजांकूरन्याय सुजाण,
आदरे निरुपाय रे ॥ निरुपाय करे जिनधर्म ते, सही सुखने
य रे ॥ स० ॥ ए ॥ आखर ए सही विणसशे, छेह देइ जाशे
ारे तुं फूरीश अति घणो, माटे म म कर विषय सनेह रे ॥ नृ० ॥
र विषय सनेह चक्रायुध, राजीया गुणगेह रे ॥ गुणगेह
, रमो रस रंजीया शुचि देह रे ॥ र० ॥ १० ॥ एहना जाणीने
तेहनां जग सरीयां काज रे ॥ जेम गुणधर्म कुमार जी, तजी

विषय लह्युं शिवराज रे ॥ जू० ॥ तजी विषय लह्युं शिवराज कहे, एम शांतिजी जगवान रे ॥ तव चक्रायुध कर जोमी कहे, कहो तातजी उपमान रे॥क० ॥ ११ ॥ कुण गुणधर्म किहां थयो केम, विषय तज्या तेणे स्वामी रे॥तास कथा मुजने कहो, केम आव्यो शुज परिणाम रे॥जू०॥ केम आव्यो शुज परिणाम कहे,तव केवली जगवंत रे॥ जगवंत अनंत गुणाकर,कहे मननी रली सुणो संत रे ॥ क० ॥ १२ ॥ जरते सोरीपुर नयरमां, दृढधर्म हुर्ज राजान रे ॥ तस घरणी शीलशालिनी निज,पीयुनुं लहे वहु मान रे॥जू०॥ निज पीयुनुं लहे वहु मान अमान, गुणे जरी वर नारी रे॥ वर नारी लज्जालु विनीत, गुणाकर सुंदरी सुखकार रे ॥ गु० ॥ १३ ॥ सुख जोगवतां कंतशुं, सुत जायो एक रतन्न रे ॥ नामे जलो गुणधर्मजी, मायमी करे तास जतन्न रे ॥जू० ॥ मायमी करे तास जतन्न, कला सघली जएयो गुणवंत रे ॥ गुणवंत महंत हुर्ज सत्ववंत, सोहामणो वलवंत रे ॥ सो०॥१४॥ यौवन वयमां आवीयो, तेह सकल कलानो जाण रे ॥ मात पिता मन वालहो, गुणधर्म कुंवर कुलजाण रे ॥ जू० ॥ गुणधर्म कुंवर कुलजाण, सुजग सरलाशयी प्रियवाण रे ॥ प्रियवाण हिताहित जाण, सज्जन जन आश्रयी गुणखाण रे ॥ स० ॥ १५ ॥ नयर वसंतपुरे वसे, इण समे नृप ईशानचंद्र रे ॥ कनकवती कनी तेहनी, तस स्वयंवर मांड्यो नरिंद रे ॥ जू० ॥ तस स्वयंवर काजे हूत समाजे,आवीयो उजमाल रे॥उजमाल सुणी गुणधर्मकुमारजी चालीयो ततकाल रे ॥ कु०॥ १६॥ आव्यो वसंतपुरे तदा, रहे ते नृपदत्त आवास रे ॥ एक दिन स्वयंवर देखवा, गुणधर्म गयो उल्लास रे॥ जू०॥ गुणधर्म गयो तिहां पण तेह आवी, नृपनी कनी तेणी वार रे ॥ तेणी वार जोतां तुरंत, लागी दृष्टि रागनी निर्धार रे॥ ला०॥ १७॥ नयणे थइने प्रीतमी, पेठी ते हैयमा मांय रे ॥ चित्त मांहि लागी चटपटी, तेह निज निज मंदिर जाय रे॥ जू०॥ तेह निज निज मंदिर जाय के नेह, नयण तणे जण दोय रे॥ जण दोय चितारे चित्त,एकेकने अति घणे मन मोह रे॥ए०॥ ॥१८॥ ठठे अगीयारमी ढालमां,कहे शांति जिणंद दयाल रे॥ काम महामद जेहने, तस न मटे कल्पनाजाल रे ॥जू०॥ तस न मटे कल्पनाजाल, विषय विरुर्ज सही डुःखदाय रे ॥ डुःखदाय कह्यो जिनराय ए, वात जूठी नहीं जग मांय रे॥ वा० ॥ १९॥ सर्व गाथा ॥ ३४३॥ श्लोक तथा गाथा मली॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती चित्तमां वस्यो, श्री गुणधर्म कुमार ॥ रात दिवस तस रूपमां, मोही मोहविकार ॥ १ ॥ प्रेम समो पावक नहीं, प्रेम समुं नहीं पाप ॥ प्रेम वडुं परवशपणुं, ए सम नहीं संताप ॥ २ ॥ प्रेत तणो "प्रे" लेइने, यमनो लेइ "म" कार, "प्रेम" शब्द एम निपन्यो, जिणथी दुःख दातार ॥ ३ ॥ कनकवती मन समरतो, श्री गुणधर्म कुमार ॥ निज उतारे आवीयो, पण जक नहीं लगार ॥ ४ ॥ राते मूकी कुमरीए, दासी तेहनी पास ॥ एक पाटी चित्रामनी, कर दीधी तस खास ॥ ५ ॥ कुमरे दीठी पट्टिका, तिहां कलहंसी रूप ॥ श्लोक एक तेहने तले, वांचे कुमर स्वरूप ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ आदौ दृष्टे प्रिये सानु,–रागाऽसौ कलहंसिका ॥ पुनस्तद्दर्शनं शीघ्रं, वांछत्येव वराक्यहो ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ भावाशय लही तेहने, रीज्यो कुमर अपार ॥ रूप लखी कलहंसनुं, श्लोक लखे तेणी वार ॥ ७ ॥ तद्यथा ॥ कलहंसोऽप्यसौ मुग्धु,हर्षं दृष्टानुरागवान् ॥ पुनरेव प्रियां दृष्टुं,–महो वांछत्यनारतम् ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ कनकवती कुमरी वली, सरस सुगंधी फूल ॥ दासी साथे मोकले, विलेपन तांबूल ॥ ८ ॥ पुष्प लेइ शिर पर धर्यां, मुख चावे तांबूल ॥ अंग विलेपन चोपडवुं, कुंवर गुणे अमूल्य ॥ ९ ॥ दान दीये संतोषनुं, उज्ज्वल मोतीहार ॥ ते कहे सुण कन्या तणो, एक संदेशो सार ॥ १० ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ काठेलाना गीतनी देशी ॥ कहे कर जोडी राजने ॥ वाहालेश्वर ॥ मुज स्वामिनी अरदास ॥ पीयु तुम प्रेमपयोधिमां ॥ वा० ॥ मग्न थइ सुविलास ॥ १ ॥ रात दिवस मुज हृदयमां ॥ वा० ॥ मोरने ज्युं जलधार ॥ लागी मुज तुज मोहनी ॥ वा० ॥ न गमे हो अवर विचार ॥ २ ॥ में तुम कंठे स्थापवी ॥ वा० ॥ परजाते वरमाल ॥ कोइ दिन विपयने पकमवो ॥ वा० ॥ पावुं न अति उजमाल ॥ ३ ॥ कुमरे हो मानी वातडी ॥ वा० ॥ दासी आवी करी नेह ॥ कनकवतीने मांडीने ॥ वा० ॥ वात कही ससनेह ॥ ४ ॥ हरिखाणी हरखी हैये ॥ वा० ॥ प्रगट हुई परजात ॥ स्वयंवर आवी रंगशुं ॥ वा० ॥ वर्यो गुणधर्म सुजान ॥ ५ ॥ साजन जन सहु हरखीयां ॥ वा० ॥ हरख्यां हो माय ने तात ॥ सरखी

मळी ए जोमली ॥ वा० ॥ उलट अंग न मात ॥ ६ ॥ करे उत्सव विवाहना ॥ वा० ॥ ईशानचंद्र जूपाल ॥ परणावी निज पुत्रिका ॥ वा० ॥ वरती हो मंगलमाल ॥ ७ ॥ ससरे बहु धन आपीयुं ॥ वा० ॥ मणिमय जूपण सार ॥ हय गय रथ दीधा घणा ॥ वा० ॥ कहे सहु जयजयकार ॥ ॥ ८ ॥ वोलावे निज कुंवरी ॥ वा० ॥ शुन्न दिन जोइ विशेष ॥ शिखामण देइ घणी ॥ वा० ॥ मात पिता हित लेख ॥ ए ॥ नक्ति करेजो कंतनी ॥ वा० ॥ आण वहेजो अखंम ॥ संगति मत करजो कदा ॥ वा० ॥ जे होवे डुर्जन लंठ ॥ १० ॥ सासु ससराजी तणो ॥ वा० ॥ विनय म चूकीश सार ॥ जोजन तुं करजे पठे ॥ वा० ॥ जमी रहे सवि परिवार ॥ ११ ॥ तुंकारो नवि दीजीये ॥ वा० ॥ कहीये न मर्म निटोल ॥ वैर वंधाये आकरां ॥ वा० ॥ वोलतां कमुवा रे वोल ॥ १२ ॥ सज्जन जननी सेवना ॥ वा० ॥ कीजे हो हर्षे रे धाय ॥ नीच निखर व्यसनी तणी ॥ वा० ॥ उजा न रहीये रे ठाय ॥ १३ ॥ शील अखंमित पालजे ॥ वा० ॥ कुलवधू नाम धराय ॥ शोजा सबल उपराजजे ॥ वा० ॥ वहेली हो मलजे रे आय ॥ १४ ॥ सूजे पीयु सूता पठी ॥ वा० ॥ जागजे पहेली प्रजात ॥ शोक्य सहु मांहे सही ॥ वा० ॥ नाम धरावे सुजात ॥ १५ ॥ शुं तुफने कहीये घणुं ॥ वा० ॥ सहजगुणे तुं सुशील ॥ दान देवाने अवसरे ॥ वा० ॥ वाइ म थाजे वखील ॥ १६ ॥ गुण सवि धारे अंगमां ॥ वा० ॥ अवगुण अलगा निवार ॥ देव गुरुना विनयमां ॥ वा० ॥ खामी न करशो लगार ॥ १७ ॥ नणंद जेठाणीशुं नमी ॥ वा० ॥ चालजे ए अम शिख ॥ विनय वमानो जालवे ॥ वा० ॥ कोनी म जांजीश जिख ॥ १८ ॥ शिख धरी शिर उपरे ॥ वा० ॥ चाली हो कंतनी साथ ॥ सहुशुं जुहार करी चल्यां ॥ वा० ॥ दंपती दोय सनाथ ॥ १९ ॥ अनुक्रमे आव्यां निज पुरे ॥ वा० ॥ जामिनी ने जरतार ॥ नृप परिजन आनंदीया ॥ वा० ॥ वाध्यो हो प्रेम अपार ॥ २० ॥ उतारी एक मंदिरे ॥ वा० ॥ कनकवती नृपनंद ॥ प्रेमविलुब्धो हो प्राणीयो ॥ वा० ॥ महोटो ए मोहनो फंद ॥ २१ ॥ मनमां वसी ते मानिनी ॥ वा० ॥ पण मुखथी न कहाय ॥ एक दिन देखी कंतने ॥ वा० ॥ कामिनी उजी रे थाय ॥ २२ ॥ मांड्युं आसन वेसवा ॥ वा० ॥ उजी हो जोमी हाथ ॥ चित्त चंचल

देखी तदा ॥ वा० ॥ विनवे सुणो प्राणनाथ ॥ २३ ॥ कहो एक को
प्रहेलिका ॥ वा० ॥ अभिनव अर्थ बनाय ॥ तुम साथे पीयु गोष्टिने
॥ वा० ॥ मुज मन हर्ष न माय ॥ २४ ॥ तदा गुणधर्मेणोक्तं ॥ दोहो ।
स्थल जातां जल उपरे, चाले जल न जराय ॥ जे नित्य लोक प्रतारिणी,
नारी कोण कहाय ॥ १ ॥ उत्तर ॥ होकी ॥ प्रश्न ॥ मुख अनेक अवगुण
ग्रहे, फरतो महेले सार ॥ नाटक करे कर पाय विणु, नारी कोण विचार
॥ २ ॥ उत्तर ॥ चालणी ॥ प्रश्न ॥ च्यार पयोधर आक्रमी, नरखंधे चढी जेह॥
तन्वंगी गुणसंयुता, कामिनी कहो कुण तेह ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ कावाकृति ॥
पुनस्तयोक्तं ॥ चातक शब्द किस्यो कहे, जग सहु माथे जेह ॥ दोय पद
मेलां मुकने, क्षण नवि विसरे तेह ॥ ४ ॥ उत्तर ॥ पीयुनाम ॥ पूर्व ढाल ॥ एम
वेलासनी वातमी ॥ वा० ॥ करी गुणधर्म कुमार ॥ आव्यो निज मंदिर
भणी ॥ वा० ॥ धरतो हर्ष अपार ॥ २५ ॥ ठठे हो वारमी ढालमां ॥
वा० ॥ सवल ए मोहविकार ॥ लालच विषयनी पाडुई ॥ वा० ॥ विहुं जव
दुःखनी देनार ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०३ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेठो ते आस्थानमां, बहु सेवक परिवार ॥ परिव्राजक एक आवीयो,
कहे आवी प्रतिहार ॥ १ ॥ तेडाव्यो नृपनंदने, आप्युं आसन
सार ॥ कुशलागम पूछे तदा, श्री गुणधर्म कुमार ॥ २ ॥ हुं जैरवाचार्यनो,
शिष्य मोकल्यो तेण ॥ तुम आकारण कारणे, न लहुं कारण केण ॥
३ ॥ किहां जैरवाचार्य छे, ते कहे अमुक स्थान ॥ पुर बाहिर मुज
साथ तुम, आवो सुगुणनिधान ॥ ४ ॥ संध्यासमय लही तदा, कहे
कुमार सुण स्वामी ॥ सही प्रजाते आवशुं, तिहांकणे हुं हितकाम ॥
५ ॥ वोलाव्यो उत्तर कही, नृपनंदन निज धाम ॥ सुखनिद्रामां यामिनी,
वीती जाग्यो ताम ॥ ६ ॥ कृत्य करी परजातनां, लेइ निज परिवार ॥
भैरव पासे आवीयो, नृपनंदन तेणी वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ गंगाधरने करी जुहार ॥ ए देशी ॥ व्याघ्रचर्म उपर आसन, दीठो
...नी ध्याने लीन ॥ शिर नामीने लागे पाय, कर जोडी उनो तिण ठाय
... ॥ देखी कुमर ससंभ्रम होय, देखाडे निज आसन सोय ॥ योगी

हेके हर्ष बहु धरी, बोलाव्यो ते आदर करी ॥ २ ॥ कहे विनीत गुण धर्म कुमार, भगवन् न घटे ए आचार ॥ गुरु सम आसन बेसे जेह, दुर्विनीत नर कहीये तेह ॥ ३ ॥ तमे महोटा योगीश्वर जाण, अमने मानेवी तुम आण ॥ तुम तूठे आपद सवि टले, मनोवांछित आवीने मले ॥ ४ ॥ निज पदाति वस्त्रोपरि तेह, बेठो कुमर धरी मन नेह ॥ मुऊ नगरी पाउधारो आज, सबल वधारो महारी लाज ॥ ५ ॥ कहे योगी सुण राजकुमार, तुं मुऊ मान्य सही निर्धार ॥ पण निःकिंचन हुं महाराज, शी तुम भक्ति करुं हुं आज ॥ ६ ॥ कहे कुमर तुमची आशिष, ए अम लक्ष कोटी बकशीस ॥ कहे योगी ते सांचुं कह्युं, पण लोकिकमां एवुं लह्युं ॥ ७ ॥ यतः ॥ भक्तिः प्रेमप्रियालापः, सन्मानं विनयस्तथा ॥ दानेन हि विना लोके, सर्वमेतन्न शोभते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे कुमर पुनरपि एम वाणी, सुनजरे जुवो तमे गुणखाणी ॥ करो आज्ञा अमने जे संत, ए तुम कहीए दान महंत ॥ ८ ॥ कहे योगी सुण भद्र कुमार, छे मुऊ पासे मंत्र उदार ॥ आठ वरस थयां करतां जाप, श्रम कीधो में बहुलो आप ॥ ए ॥ तास विघन प्रतिघातक थाय, जो तुं एक रयणी इण ठाय ॥ तो प्रयास सफलो होवे सही, एह वात भैरव मुखे कही ॥ १० ॥ कहे कुमर कर जोमी ताम, हुं तुं स्वामी तुमारे नाम ॥ कहो तेणे दिन आवुं तुम पास, साधो मंत्र तमे उल्लास ॥ ११ ॥ कहे योगी कालीचउदशी, प्रेतवने आवेवुं निशि ॥ हुं पण त्रिहुं शिष्यनी संघात, आवीश तिहां निसुणी एम वात ॥ १२ ॥ कुंवर प्रणाम करी घेर गयो, योगी मने अति हर्षित थयो ॥ घेर जइ चउदश दिवस सुजाण, आव्यो मसाणे कुंवर असिपाण ॥ १३ ॥ शिष्य संघाते योगी ताम, आव्यो कुंवर करे परणाम ॥ कहे योगी थाजे हुशियार, मुऊ राखणने साहस धार ॥ १४ ॥ कहे कुमर चिंता मत धरो, सुखे तमे मंत्र साधन करो ॥ कुण तुम साहामुं भाली शके, खड्ग काली उभो नवि चके ॥ १५ ॥ मंमल करी एक शब स्थापीयो, अग्नि प्रजाली होमविधि कीयो ॥ इण अवसरे प्रकट्यो निर्घात, विश्व बधिर करतो साक्षात ॥ १६ ॥ थइ द्विधा धरती तिण वार, नीसरीयो भीषण आकार ॥ काल कराल बनो यमदूत, प्रकट थयो तिहां एक अद्भुत ॥ १७ ॥ शुं तें नवि जाण्यो मेघनाद, क्षेत्रपाल

कहे महोटे साद ॥ मुज पूजा विण कीधे एम, मंत्रसिद्धि तुं चाहे केम ॥ १८ ॥ ए पण राजतनय अज्ञान, तें जोलवीयो मतिविज्ञान ॥ एम कही तेणे कीयो सिंहनाद, क्षेत्रपाले मांड्यो उन्माद ॥ १९ ॥ ते त्रण शिष्य योगीना जेह, पमीया उठलीने जूये तेह ॥ बोल्यो कुंवर मन साहस धरी, फोकट शुं गाजे मति फरी ॥ २० ॥ जो क्षेत्रपाल तुं अति बलवंत, तो युद्ध कर मुज साथे महंत ॥ तेहने निरायुध देखी कुमार, मूके खड्ग दूरे तेणी वार ॥ २१ ॥ बेहु सन्मुख आवीने अड्या, भुजदंडे मांहोमांहे भड्या ॥ बेहु बलीया कोइ नवि लमथडे, पग पमछंदे धर धमहडे ॥ २२ ॥ वज्रसार निज भुज जीमीयो, कुमरे क्षेत्रपाल पीमीयो ॥ तस साहस देखी थयो तुष्ट, बोल्यो माग माग वत्स इष्ट ॥ २३ ॥ कहे कुमर मूकी जो देव, थया सुप्रसन्न मुज उपरे हेव ॥ तो मुज उपर करुणा धरो, योगीनुं मनोवांछित करो ॥ २४ ॥ कहे क्षेत्रपाल एहनो सिद्ध मंत्र, थयो तुज महातम गुणवंत ॥ सकल समीहितने पूरशे, चिंता सवि मननी चूरशे ॥ २५ ॥ पण तुं मनोवांछित मुज पास, माग माग वत्स सुगुणनिवास ॥ महाजाग्ये दरिसण देवनुं, निष्फल नवि थाये निपन्युं ॥ २६ ॥ कहे कुमर तो तेम करो स्वामी, कनकवती होवे माहरे नाम ॥ परणी पण वांछे नवि जोग, कर्म तणो ए महोटो रोग ॥ २७ ॥ कहे ज्ञाने जोइ क्षेत्रपाल, वश थाशे तहारे जूपाल ॥ मुज प्रजाव कामितरूप हशे, तेहथी काज सकल सीऊशे ॥ २८ ॥ वर देइ पहोत्यो निज गाम, योगी प्रशंसे कुमरने ताम ॥ साहसिक तुजथी मुज काम, सीध्युं राखी तें मुज माम ॥ २९ ॥ अवसर मुजने संजारजो, कामकाज वली फरमावजो ॥ एम कहीने योगी चालीयो, कुंवर निज मंदिर हालीयो ॥ ३० ॥ निज आवास कुंवर आवीयो, साजन जन मनमां जावीयो ॥ ढाल ठठे खंडे तेरमी, सांजलतां श्रोता मन गमी ॥ ३१ ॥ ४२१ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंग पखाली आपणुं, धरतो दर्प अत्यंत ॥ वीर वेप मूकी शयन, कीधुं थइ निश्चिंत ॥ १ ॥ हवे बीजे दिन यामिनी, पहोर एक गइ जाम ॥ अदृश्य रूप लेइ रमणी, मंदिर पहोतो ताम ॥ २ ॥ कनकवती दीठी तिहां, दोय दासी बेहु पास ॥ बात करे ते रंगनी, निसुणे कुमर उल्लास ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल ॥ ए देशी ॥ कनकवती राणी तदा, चित्त चंचल जाणी ॥ कारण कांइक ए सही, कुमरे पहिचाणी ॥ १ ॥ चरित्र जोउं नारी तणां, किहां जाये एह ॥ विषय न वांछे मुजशुं, केम चंचल तेह ॥ २ ॥ पासे आवी उनो रह्यो, पण सा नवि देखे ॥ कनकवती दासी जणी, पूछे सुविशेषे ॥ ३ ॥ रात गइ छे केटली, कहे स्वामिनि वेला ॥ तिहांकणे जावानी थइ, हवे उठो सलीला ॥ ४ ॥ तुरत उठी उतावली, नाही मनरंगे ॥ अंग विलेपन अति जलां, दीपे शुचि अंगे ॥ ५ ॥ वस्त्र जलां पहेर्यां वली, आजरण अमूल ॥ हार हैये सोहे नवलखो, नाके नथफूल ॥ ६ ॥ घम घम घमके घूघरी, नूपुर पाय सोहे ॥ सोल शृंगार कस्या जला, रूपे मन मोहे ॥ ७ ॥ देवकुंवरी सम उंपती, रूपवंती रामा ॥ जर यौवन मांहे जामिनी, शोजे घणुं श्यामा ॥ ८ ॥ देवावास समान एक, रचीयुं ए विमान ॥ कुंवर जोइने थयो, मनमां हेरान ॥ ए ॥ आवी बेसे कामिनी, दासी संघाते ॥ कुंवर चिंते चित्तमां, उनो एकांते ॥ १० ॥ एता दिन हुं जाणतो, ए दीसे सुंहाली ॥ पण जोरावर ए घणुं, नजरे में जाली ॥ ११ ॥ कामिनी न होय केहनी, वानां सो कीजे ॥ पण एहना अंतरंगनी, नवि वात लहीजे ॥ १२ ॥ यतः ॥ रविचरियं० ॥ जलमज्झे० ॥ मुख बोले मीठी घणुं, मन मांहे धीठी ॥ नारी सरिखी कामिनी, सृष्टिए अवली न दीठी ॥ १३ ॥ यतः ॥ आवर्त्तः संशयानां० ॥ नर जोलाने जोलवे, मानिनी मतवाली ॥ विफरी वाघणनी परे, विरुई विकराली ॥ १४ ॥ पण जोउं एक वार हुं, जाये जिहां चावी ॥ केरु न मूकुं एहनी, थाशे जे जावी ॥ १५ ॥ एम विमासी विमानमां, बेठो एक देशे ॥ वात करे त्रणे मली, चाली आकाशे ॥ १६ ॥ दूरे रह्यो सवि सांजले, गुणधर्म सोजागी ॥ नारीचरित्र जोवा तणी, मनमां रढ लागी ॥ १७ ॥ उत्तर दिशे उतावलुं, ते चाल्युं विमान ॥ कुंवर मन मांहे धरे, जगवंतनुं ध्यान ॥ १८ ॥ दूरे जइने उतर्युं, आकाशथी हेतुं ॥ वन अशोकने आंतरे, एक सरोवर दीतुं ॥ १९ ॥ स्थानक ते रलीयामणुं, शोजा अति सारी ॥ देखीने ते उतरी, दासीशुं नारी ॥ २० ॥ एक विद्याधर तिहां थके, आवी तस पासे ॥ कनकवती कर जोमीने, प्रणमे

उल्लासे ॥ २१ ॥ पासे बेठी कामिनी, कुंवर पण बेठो ॥ चिंते कौतुक एहवो, किहांये नवि दीठो ॥ २२ ॥ अन्य वली आवी तिहां, रामा त्रण रुडी ॥ ते विद्याधरने नमी, बेठी नहीं कूडी ॥ २३ ॥ अन्य वली आव्या तिहां, खेचर बहु बलीया ॥ ते विद्याधरशुं सवे, आवीने मलीया ॥ २४ ॥ ते वनमां एक देहरुं, आदीश्वर केरुं ॥ दंड कलश ध्वजे शोभतुं, दीपे ते जलेरुं ॥ २५ ॥ ते सहुए तिहां आवीयां, जिन-भक्तिने काजे ॥ नाटकवारक केहनो, पूछ्युं खेचरराजे ॥ २६ ॥ कनक-वती उठी तिहां, परिधान समारी ॥ मांडे ते मनमोदशुं, नाटकविधि सारी ॥ २७ ॥ हाव भाव दाखे भला, नाचे तन वाली ॥ थेइ थेइ पाठ मुखे भणे, अंगे सुकुमाली ॥ २८ ॥ त्रणे सही जोडे रही, एके वीणा वाइ ॥ बीजी वेणु वजावती, जिनना गुण गाइ ॥ २९ ॥ त्रीजी ताल देइ करी, गाये तस जोडे ॥ गुणवंती चारे मली, नाचे मन कोडे ॥ ३० ॥ पास रह्यो देखे सहु, गुणधर्म कुमार ॥ विस्मय पाम्यो चित्तमां, जोइ नाटक सार ॥ ३१ ॥ नाच करंतां नारीनी, पडी किंकिणीमाला ॥ लघुकलशुं कुंवरे ग्रही, करशुं तेणी वेला ॥ ३२ ॥ नाटक अंते जोइयुं, नवि दीठी तेणे ॥ मन मांहे चिंता उपनी, एह लीधी केणे ॥ ३३ ॥ निज निज स्थानक सहु गया, नारी संघाते ॥ कुंवर निज पुर आवीयो, तेह पाछली राते ॥ ३४ ॥ निज घर आवी विमानथी, उतरी ते वेला ॥ हर्षेशुं सूतो जइ, कुंवर निज शाला ॥ ३५ ॥ छठे खंडे चौदमी, ढाले सुणो साचुं ॥ राम कहे विषया समुं, काम कोइ न काचुं ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परभाते तेडी कुमर, मंत्रिसुत निज मित्र ॥ आपी किंकिणी-मालिका, समजावी सवि सूत्र ॥ १ ॥ तुम पासे ए राखजो, बंधव सुणो विचार ॥ अवसर जोइ आपजो, कनकवतीने सार ॥ २ ॥ एम शिक्षा देइ करी, मित्र साथे गुणधर्म ॥ नारीमंदिर आवीयो, करवा चिंतित कर्म ॥ ३ ॥ उठीने उभी थइ, प्रमदा गुणनी खाण ॥ आप्युं आसन बेसवा, आगल रही सुजाण ॥ ४ ॥ कुमर कहे मांडो तमे, रामत पासा सार ॥ रमवा बेठां बिहुं जणां, आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रुमी रुमी रामतमीने रसे परवश थयो रे लाल ॥ ए देशी ॥ रंगभरी रुडी रे बेहु रामत रमे रे लाल, खेले खेले कनकवती ने कंत॥ रंग रंगीला रे पासा सोगठां रे लाल, हसी हसी नाखे दाव उल्लसंत॥ १॥ रंगजरी० ॥ ठेल ठबीलां रे बेहु जोडे रह्यां रे लाल, जोली जोली न कहे मनमानी वात ॥ करी करी चतुराइ दावने चालवे रे लाल, जोइ जोइ दावे कीयो पीयु मात ॥ रंग० ॥ २ ॥ हेजे हरिणाक्षी रे कहे निज कंतने रे लाल, पीयु एक ग्रहणक मुजने सार ॥ मित्रनी सहामुं रे तेणे अवलोकीयुं रे लाल, आपी आपी मित्रे हो माला ते वार ॥ रंग० ॥ ३ ॥ देखीने बोली रे किंकिणीमालिका रे लाल, आवी आवी किहांथी तुमारे हाथ॥ कहे प्रीतम तुमे ए पामी किहां रे लाल, न लहुं न लहुं किहां पामी प्राणनाथ ॥ रंग० ॥ ४ ॥ वालम मुजने दाखो ए किहां थकी रे लाल, लाधी लाधी आज तुम्हे अवनीश ॥ कुमर कहे मुज मित्र लहे सहु रे लाल, कहेशे कहेशे तुजने धरीय जगीश ॥ रंग० ॥ ५ ॥ ठे नेमित्तिक माहरो मित्रजी रे लाल, जाणे जाणे एह सयल अवदात ॥ ते कहे कनकवतीने हुं सही रे लाल, धारी धारी काले कहीश अवदात ॥ रंग० ॥ ६ ॥ ते बेहु आव्या रे आपण मंदिरे रे लाल, कनकवती कहे रे एम ॥ सहीयर ठानी रे वात ए आपणी रे लाल, वहेली वहेली कंतजीए लही केम ॥ रंग० ॥ ७ ॥ जाणी होशे शुं माहरी वातमी रे लाल, बोले बोले कनकवती एम बोल ॥ दीसे अजब गति एहनी अभिनवी रे लाल, नहीं नहीं कोइ जग एहनी तोल ॥ रंग० ॥ ८ ॥ रात पडी तेणे चैत्ये तेम गयो रे लाल, रंगे रंगे कनकवतीनी साथ ॥ वीणा वातां रे तास चरण तणुं रे लाल, आव्युं आव्युं एक नूपुर तस हाथ॥ रं० ॥ ए ॥ घणुं वली खोल्युं रे तेम लाध्युं नहीं रे लाल, थइ थइ मन मांहे दिलगीर ॥ मंदिर आवी रे कुंवर घरे गयो रे लाल, सूतो सूतो धरी दिलडा मांहे धीर ॥ रं०॥ १०॥ थये प्रजाते रे मित्रशुं आवीयो रे लाल, वेगो वेगो श्री गुणधर्म कुमर॥ गोष्टि करीने रे पीयुशुं प्रेमनी रे लाल, पूछे पूछे मित्र जणी तेणी वार ॥ रं० ॥ ११ ॥ ते पण बोले रे निमित्त तणे बले रे लाल, जाण्युं जाण्युं गयुं नूपुर वली आज ॥ मन शंकाणी रे वात सुणी करी रे लाल, कहे कहे फोगट ए श्यो

अवाज ॥ रं० ॥ १२ ॥ वातफली जो जाणी रे होय तो कहो शुं गयुं रे लाल, मानुं मानुं वात तुमारी साच ॥ आपण वीती रे वात न केम लहे रे लाल, जाखे जाखे कुमर एणी परे वाच ॥ रं० ॥ १३ ॥ माया गाली रे वोले मानिनी रे लाल, सुण सुण साहिब चतुर सुजाण ॥ में नवि जाण्युं रे पीयुमा माहरुं रे लाल, खोयुं खोयुं ए नूपुर किण गण ॥ रं० ॥ १४ ॥ मर्म ने मोसा रे पीयुजी न वोलीये रे लाल ॥ नहीं नहीं हुं कांइ तेहवी नार ॥ राजहुकमथी रे इण मंदिर रहुं रे लाल, महेल्युं महेल्युं में नवि घरनुं वार ॥ रं० ॥ १५ ॥ आण न लोपी रे पीयुमा ताहरी रे लाल, साचुं साचुं कुमर कहे कहो एह ॥ कोइके आवी रे मुजने एम कह्युं रे लाल, टालो टालो मुज मनमानो संदेह ॥ रं० ॥ १६ ॥ सुण सुण गुणधर्म कुमारजी ताहरी रे लाल, वारु वारु कनकवती वर नारी ॥ दूरे जातीनुं रे नूपुर पग तणुं रे लाल, पड्युं पड्युं नीकलीने तेणी वार ॥ रं० ॥ १७ ॥ जेणे जेणे ए लीधुं रे तेहने जाणुं सही रे लाल, लीधुं लीधुं छुंटावी तस पास ॥ वात कहीने रे अणवोल्यो रह्यो रे लाल, चिंते चिंते कनकवती ते उदास ॥ रं० ॥ १८ ॥ सही मुज साथे रे आव्यो नाहलो रे लाल, करी करी कोइ प्रयोगविशेष ॥ मुज जरतारे रे सघलो माहरो रे लाल, दीठो रात तणो सवि दोष ॥ रं० ॥ १९ ॥ यतः ॥ जोरजडं कला चांडी, चोरिका झीजितानि च ॥ प्रकटानि तृतीयेऽह्नि, सुचिह्नं सुकृतानि च ॥ ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ चिंतीने कनकवती कहे माहरुं रे लाल, आपो आपो ते नूपुर मुज नाथ ॥ कुमर कह्याथी रे मतिसागर तदा रे लाल, सोंप्युं सोंप्युं कनकवतीने रे हाथ ॥ रं० ॥ २० ॥ पुनरपि वोली रे कनकवती तदा रे लाल, साचुं साचुं कहो मुजने तुमे कंत ॥ किहांथी जड्युं रे ए नूपुर माहरुं रे लाल, जाखो जाखो तेह तणुं विरतंत ॥ रं० ॥ २१ ॥ ठ्ठे खंडे रे ढाल ए पन्नरमी रे लाल, दाखी दाखी रामविजय सुरसाल ॥ जग मांहि महोटी रे माया नारीनी रे लाल, धन्य धन्य जेणे वरजी ए जाल ॥ रं० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७७ ॥ श्लोक तथा गाथा सर्व ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती कहे जिहांकणे, पामीयुं नूपुर स्वामी ॥ ते स्थानक दीठुं तुमे, के निसुण्युं तस नाम ॥ १ ॥ कनकवती कहे कंतजी, ए दीठुं तमे

रीफ ॥ पण अन्ये जो कयुं होवे, तो करुं अग्निनी धीज ॥ २ ॥ एम कही चिंतातुर थइ, देइ गलहछो गाल ॥ गतउत्साहा कामिनी, नीचुं रही नीहाल ॥ ३ ॥ चिंताजलनिधिमां पमी, नयण जरे बहु नीर ॥ देखीने कायर थयो, कुंवर घणो दिलगीर ॥ ४ ॥ मोहनगारी मानिनी, मोह्यो सघलो लोक ॥ साहमा उंशियाला करे, जव लेइ वेसे शोक ॥ ५ ॥ वात करे कुंवर हसी, नयण सलूणे ताम ॥ रोष न कीजे वालही, प्रेम तणे ए ठाम ॥ ६ ॥ दोष नहीं तुजमां किस्यो, हुं जाणुं निर्धार ॥ वात सुणी हर्षित थइ, कनकवती तेणी वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ नयर रतनपुर जाणीये ॥ ए देशी ॥ कुंवर निज मंदिर गयो, मित्र सहित हर्षित थयो, नवि जयो, रोष किस्यो लवलेशथी ए ॥ १ ॥ राते वली गुणधर्म ए, आव्यो नारीघरमें ए, शर्मे ए, एकांते ऊनो रह्या ए ॥ २ ॥ वात करे ते दासी ए, सुण स्वामिनि उल्लासी ए, जासी ए, तिहां क्यारे वेला हुइ ए ॥ ३ ॥ वेलातिक्रम थाशे ए, तो विद्याधर रीसाशे ए, गाशे ए, तुज विण तिहां कुण गीतने ए ॥ ४ ॥ निसासो तव नाखे ए, कनकवती एम जाखे ए, राखे ए, लाज इहां प्रजु माहरी ए ॥ ५ ॥ मंदजाग्य धणीयाणी ए, कठिन ए कर्म कमाणी ए, जाणी ए, कीधी आवे आपणी ए ॥ ६ ॥ जनक घरे विद्याधरे, एणे मुजने अति आदरे, खेचरे, पूर्वे शपथ करावीयो ए ॥ ७ ॥ मुज आदेश थया विना, कांत म सेवे एकमना, रीफना, बोल म बोलीश कंतशुं ए ॥ ८ ॥ राते वेसी विमानमां, आवेवुं मुज शानमां, तानमां, मग्न रहेवुं मानिनी ए ॥ ९ ॥ एह कह्या उपरे वली, ए दीठे थइ व्याकुली, मन रुली, परण्यो ए राजकुमारने ए ॥ १० ॥ ए पीयु मुज वल्लज घणुं, एहनी उपमा शी जणुं, मन तणुं, चिंतित माहरुं मन लहे ए ॥ ११ ॥ पण तिहां जाती एणे सही, जाणी वात सकल लही, वली कही, वात उठे एणे वातमी ए ॥ १२ ॥ विद्याधर दीठो तिहां, नित प्रति जाउं हुं जिहां, कहो किहां, वात लही ए माहरी ए ॥ १३ ॥ कुण जाणे मुज पीयु जणी, विद्याधर हणे निर्गुणी, अवगुणी, के अथवा मुजने हणे ए ॥ १४ ॥ आशंका मुज मोटी ए, वहेनी चित्तमां खोटी ए, चोटी ए, दीधी खेचर हाथमां ए ॥ १५ ॥ यौवन काल नवीन ए, वहुल उपाय अधीन ए, अदीन

ए, उत्तम कुल ए माहरुं ए ॥ १६ ॥ लोक विषम ए वांको ए, जेम तेम लवय निःशंको ए, आंको ए, कोइ नहीं मुफ कर्मनो ए ॥ १७ ॥ तथा च श्लोकद्वयं ॥ नवीनो यौवनारंजो, वह्नपायः प्रवर्त्तते ॥ उत्तमे च समाख्याते, पितृश्वशुरयोः कुले ॥ १ ॥ अत्यंतविषमो लोको, यद्वा तद्वा प्रजल्पति ॥ कार्याणां गहनत्वेना,–कुलीचूतास्मि सर्वथा ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ वात सुणी दासी कहे, स्वामिनि आज तुं इहां रहे, मत बीहे, आज तुं हुं जाइश एकली ए ॥ १८ ॥ कहीश हुं माहरी ते सखी, कांइक भीले ठे डुःखी, मन रखे, रोष हैयामां लावता ए ॥ १९ ॥ कनकवती कहे तुफ विना, कुण पूरे मुफ कामना, नामना, ताहरी माहरे मन वसी ए ॥ २० ॥ रचीय विमान ते सोंपीयुं, जे जोइये ते आपीयुं, स्थापीयुं, प्रेम घणो ते उपरे ए ॥ २१ ॥ कुमर विचारे एहनो, राग ए सबल सनेहनो, मेहनो, दरिसण जेम चातक मने ए ॥ २२ ॥ दासी साथे आज ए, जाइ करुं निज काज ए, लाज ए, हवे एहनी राखुं नहीं ए ॥ २३ ॥ स्त्रीनाटक जोवा तणी, होंश हैये एहने घणी, नवि गणी, लाज एणे निज कुल तणी ए ॥ २४ ॥ परनारीने पाप ए, लहीये बहु संताप ए, आप ए, जगगुरु एम जाखे सुणो ए ॥ २५ ॥ यतः ॥ पंढत्वमिंद्रियछेदं, दौर्जाग्यं च जवे जवे ॥ जवेन्नराणां स्त्रीणां चा,–न्यकांतासक्तचेतसाम् ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ काढुं कूटी वांक ए, ए मुफ आगल वाक ए, लांक ए, जोउं एहनी केफनो ए ॥ २६ ॥ वेगे तेह विमानमां, उजी चाल्युं असमानमां, तानमां, तुरत जइ पहोंच्युं तिहां ए ॥ २७ ॥ चेटी विमानथी उतरी, खेचरने प्रणिपत करी, आदरे, उजी जिनालय आवीने ए ॥ २८ ॥ खेचर पूठे एवमी, कां रे तुफ वेला चढी, परवडी, तुफ स्वामिनी दीसे नहीं ए ॥ २९ ॥ कहे कांइक तन काहेलो, मर्म कह्यो में माहिलो, वाहलो, सुणी वैरी थइ घोलीयो ए ॥ ३० ॥ त्रात्र करो तुमे खेचरा, ए पापिणी दासी वरा, सादरा, करुं चिकित्सा एहनी ए ॥ ३१ ॥ एम कहीने केशे ग्रही, दासी विचारी जोइ रही, कोइ नहीं, जे ठोमावे तेहने ए ॥ ३२ ॥ खड्ग उगामीने रह्यो, नवि माने कोइनो कह्यो, नवि सह्यो, परमारथ पर मन तणो ए ॥ ३३ ॥ स्त्रीहत्या महोटी कही, क्रोध चढ्यो जाणे नहीं, जग सही, क्रोध आम ए आकरो ए ॥ ३४ ॥ समर समर जे ताहरे, दासी कहे एक

माहरे, वाहारे, श्री गुणधर्म कुमारजी ए ॥ ३५ ॥ त्रिज्ञुवनपूज्य ए जिनवरु, महारे एह परमेश्वरु, सुखकरु, आ जव परजव ए सही ए ॥ ३६ ॥ ते समरुयो जिन चित्तथी, हवे न चूकुं ध्यानथी, कोही नथी, मुऊ चिंता मरवा तणी ए ॥ ३७ ॥ नहीं कोइ मात ने ज्रात ए, महारो सगो सुजात ए, वात ए, एक गुणधर्मनी माहरे ए ॥ ३८ ॥ खड्ग उपाडे जाम ए, कुमरे हांक्यो ताम ए, काम ए, नीच तणुं मांड्युं किस्युं ए ॥ ३९ ॥ प्रकट थइने एम कहे, नारीवध जव जव दहे, सइहे, सज्जन गुरुनी शिखनी ए ॥ ४० ॥ यडुक्तं ॥ विश्वस्ते व्याकुले लोके, बालवृद्धाऽबलाजने ॥ प्रहरंति च ये पापा, ध्रुवं ते यांति डुर्गतिम् ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ स्त्रीहत्या पातक तणा, कारक सांजल निर्गुणा, तुऊ तणा, अवगुण हुं केता कहुं ए ॥ ४१ ॥ प्रायश्चित्तनो दाता ए, मलीयो हुं विख्याता ए, ज्ञाता ए, जेम जग मांहे गुरु कह्यो ए ॥ ४२ ॥ विद्याधर तव बोलीयो, अंतरपट सवि खोलीयो, मलीयो, मनोवांछित सवि माहरो ए ॥ ४३ ॥ जेहनो घात में ध्याइयो, ते मुऊ सहामो आवीयो, पाइयो, तुं कीधुं हवे ताहरुं ए ॥ ४४ ॥ सहामा बेहु आवी अड्या, वलीया बहु रोपे चड्या, ते लड्या, एक कामिनीने कारणे ए ॥ ४५ ॥ अवसर लही कुमार ए, कीधो तेहने प्रहार ए, सार ए, शिर छेद्युं खेचर तणुं ए ॥ ४६ ॥ सेवक सहु तस नाठा ए, कर दीठा घणुं काठा ए, माठां ए, कर्म कस्यां आवे उदे ए ॥ ४७ ॥ सहुने दीध दिलासो ए, शामाटे तुमे नासो ए, सांसो ए, मत करशो कोइ रागनो ए ॥ ४८ ॥ त्रण बाला आवी नमी, अमे परवशता बहु खमी, सवि शमी, आपद आज अमारकी ए ॥ ४९ ॥ छठे खंडे सोलमी, ढाल सज्जन मन संक्रमी, नवि गमी, राग दशा परनारीनी ए ॥ ५० ॥ ५४४ ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमने मूकावी तम्हे, विद्याधरथी आज ॥ छोडावे जीव पापथी, जेम गुरु गरीबनिवाज ॥ १ ॥ कहे गुणधर्म कुमार जी, कुण तुमचो अवदात ॥ एक चतुरा बोली तिहां, सुण स्वामी मुऊ वात ॥ २ ॥ शंखपुराधिप नयरनो, राजा डुर्लजराज ॥ पुत्री कमलवती अछुं, तेहनी हुं महाराज ॥ ३ ॥ जय एहने में वस्त्रहो, वांछ्यो नहीं लगार ॥ कुमर कहे जय नेहथी, किंवा कोप विकार ॥ ४ ॥ कुमरी कहे ए उपरे, नहीं नेह तिल:

मात ॥ रमती मुजने अपहरी, कृत्रिम थकी कुजात ॥ ५ ॥ निज रसना छेदन जणी, हुं तव थइ उजमाल ॥ नव खेचर मुजने कहे, म मर म मर सुण बाल ॥ ६ ॥ रमण कला विण माहरे, पम्बिजयो नहीं प्रेम ॥ मुज समीप नित्य आववुं, रजनी मांहे खेम ॥ ७ ॥ तुज सुशीलने होयशे, मुज अनुजाव विमान ॥ शिखवशुं नाटककला, करे मुज आगल गान ॥ ८ ॥ एम जो आणा माहरी, माने तुं निर्धार ॥ तो मुकुं तुज जीवती, में मान्युं तेणी वार ॥ ९ ॥ एम बीजी त्रीजी तथा, वश कीधी पणे स्वामी ॥ तुमे पहने हणतां थका, सार्युं अमारुं काम ॥ १० ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ पंथीमा रे संदेशमो ॥ ए देशी ॥ कुमर सुणी एम वातमी, कहे तेह-नेजी आम ॥ जाउं तुमे निज मंदिरे, करो उत्तम काम ॥ १ ॥ जाग्य-बले वालम वमो, मल्यो पुएयने योग ॥ चेटी मन हरखी घणुं, मुज स्वा-मिनी योग ॥ जाग्य० ॥ २ ॥ दासी संघाते हो आवीयो, कुंवर निज धाम ॥ कनकवती दासी जणी, पूछे एम ताम ॥ जाग्य० ॥ ३ ॥ शुं मुज कंते मारीयो, ते खेचर डुष्ट ॥ वात कही सवि मांमीने, थइ सांजली तुष्ट ॥ जा० ॥ ४ ॥ निज पीयु पौरुष सांजली, जुजबल परशंस ॥ करती हो कंतने पय नमे, हरख्यो निज हंस ॥ जा० ॥ ५ ॥ वात करे रसरंगनी, जामिनी जरतार ॥ मूकी हो मननो आंतरो, गणे धन्य अवतार ॥ जा० ॥ ६ ॥ गोष्टि करे मन मेलीने, हैडे धरी हेज ॥ रात समे तेणे मंदिरे, पोढ्यां सुख सेज ॥ जा० ॥ ७ ॥ सूतां हो आवी निडमी, रमतां तेणे रात ॥ इण अवसरे जे नीपनी, निसुणो ते वात ॥ जा० ॥ ८ ॥ हत-विद्याधर बंधवो, अनुजात ते वार ॥ निज बंधव मार्यो सुणी, चढ्यो क्रोध अपार ॥ जा० ॥ ९ ॥ आव्यो हो रीसे दोमीने, जिहां सूतां हो दोय ॥ जूदां हो वेहुने समुडमां, नाखे खेचर सोय ॥ जा० ॥ १० ॥ जुवो हो विषयनी वारता, अनरथ एम थाय ॥ विषयविलुद्धा मानवी, फरे चिहुं गति मांय ॥ जा० ॥ ११ ॥ जाग्यसंयोगे हो पामीयो, गुणधर्म कुमार ॥ फलक कोइ वाहण तणुं, जलमां तेणी वार ॥ जा० ॥ १२ ॥ वेले तणातो हो चालीयो, अति डुःखीयो हो दीन ॥ जूख्यो तरष्यो हो अति घणो, सहु कर्म आधीन ॥ जा० ॥ १३ ॥ सातमे दिवसे हो कुमरजी, जलनिधि-

तट दीठ ॥ पार लही भमतां थका, तापस एक दीठ ॥ भा० ॥ १४॥ प्रणिपत्य करी बेठो तिहां, आवी दुःखिणी हो ताम ॥ कनकवती निज वल्लभा, मन चिंते हो आम ॥ भा० ॥ १५ ॥ शुं ए कनकवती होवे, आवी हशे केम ॥ कुमरनो संशय वारवा, कुलपति कहे एम ॥ भा० ॥ १६ ॥ आज थकी त्रीजे दिने, पहेलां सुण आंही ॥ वन मांहे आवी ए कामिनी, धरती दुःख अथाह ॥ भा० ॥ १७ ॥ तरुशाखाए निज आतमा, बांधीने हो तेह ॥ मरवाने उद्यत थइ, तुज विरहे हो एह ॥ भा० ॥ १८ ॥ पाश छेदी में जीवती, राखी ए बाल ॥ आश्रम आणी हो माहरे, साले प्रेमनुं साल ॥ भा० ॥ १९ ॥ जाणी आगमन निमित्तथी, ताहरुं इण वार ॥ राखी दिलासो में देइने, ताहरी ए नारी ॥ भा० ॥ २० ॥ वात सुणी हर्षित थयो, मिल्यां दंपती दोय ॥ विरह टल्यो शाता थइ, करे कर्म सो होय ॥ भा० ॥ २१ ॥ कदली आदिक तरुफले, करी प्राणनी वृत्ति ॥ राते हो सूतां लतागृहे, बेहु थइ निश्चिंत ॥ भा० ॥ २२ ॥ सात दिवस जलमां गया, सात वरस समान ॥ वहाली हो ताहरा विरहनुं, थयुं दुःख असमान ॥ भा० ॥ २३ ॥ आज वियोगनुं दुःख टल्युं, थयुं शीतल अंग ॥ पुण्य-संयोगे हो ताहरो, मल्यो मुजने हो संग ॥ भा० ॥ २४ ॥ सुखनिद्रा मांहे पोढीयां, जुवो कर्मविलास ॥ खेचर आव्यो हो तिहांकणे, विरुद्ध विषयनी आश ॥ भा० ॥ २५ ॥ पुनरपि बेहुने उपाडीने, नाख्यां समुद्र मझार ॥ वैर वधे जेहथी घणां, ऊंडो विषयविकार ॥ भा० ॥२६॥ आयु जोरावर बेहुनुं, तरी फलके हो नीर ॥ बेहु मल्यां वली एकठां, पामी जल-निधितीर ॥ भा० ॥ २७ ॥ कुमर कहे सुण कामिनि, विधिविलसित एह ॥ विषयासक्त ए जीवने, शो विपत्ति संदेह ॥ भा० ॥ २८ ॥ यतः ॥ अनेनैव विरागेण, त्यक्ताशेषपरिग्रहाः ॥ निर्ममत्वान्महासत्त्वा,-स्तपः कुर्वंति साधवः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कनकवती कहे कंतने, श्यो खेद ए नाथ ॥ पौरुष हुंते विषाद कां, ॥ भा० ॥ २९ ॥ यतः ॥ दीनोद्धारो न विहितो, नेकछत्रा कृता पृथुकाथ, प्रकामं खिद्यतेऽथ किम् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ धात द्वी, गुणधर्म कुमार ॥ नारीसंघाते हो रातमां, रहे ते द्वीप-॥ केडे विद्याधर [illegible] सेवा काज ॥ जाइश या, नहीं मदेसुं आज [illegible] ३१ ॥ साहस धरी

सहामो थयो, जोरावरकाय ॥ विद्याधरने हो जीतीयो, तेणे लीलां मांय ॥ जा० ॥ ३१ ॥ जीवतो महेल्यो हो तेहने, नम्यो कुमरने पाय ॥ आप अखंम रह्यो तिहां, निरुपक्रम आय ॥ जा० ॥ ३३ ॥ छठे हो खंडे सत्तरमी, जाखी ए ढाल ॥ राम कहे धन्य ते जेणे, तजी विषयनी जाल ॥ जा० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ५०७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लइ आणा कुलपति तणी, श्रीगुणधर्म कुमार ॥ प्रिया सहित कोइ पुर जणी, चाल्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥ जातां पुर वनमां मल्या, गुणरत्नोदधि साध ॥ शांतमूर्त्ति सोहे जला, वरते सहज समाधि ॥ २ ॥ प्रिया सहित प्रणमे जइ, ते मुनिवरना पाय ॥ धन्य गणे निज आतमा, थयो रोमांचित काय ॥ ३ ॥ योग्य जीव जाणी करी, मुनिवर आणी जाव ॥ धर्म कहे जिनवर तणो, विषय रहित समजाव ॥ ४ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ रंगीले आतमा ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवरजी देशना, देशना सांजलो जवि चित्त लाय ॥ वैरागी आतमा ॥ चौद राजके चोकमें, चोकमें नव नव वेश बनाय ॥ १ ॥ वैरागी आतमा ॥ लाख चोराशी योनिमां, योनिमां रहीयो काल अनंत ॥ वै० ॥ पृथिवी पाणी तेउमां, तेउमां वायु कह्यो जगवंत ॥ वै० ॥ २ ॥ सात सात लक्ष एहोनी, एहोनी योनि कही जिनराज ॥ वै० ॥ वण प्रत्येकमां जीवनी, जीवनी दश लक्ष योनि समाज ॥ वै० ॥ ३ ॥ साधारणमां जाणीये, जाणीये चौदश लाख विचार ॥ वै० ॥ बि ति चउ इंद्रिय जीवनी, जीवनी दो दो कही निर्धार ॥ वै० ॥ ४ ॥ देव अने वली नारकी, नारकी योनि कही चउ चार ॥ वै० ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंचमां, तिर्यंचमां चउ लक्ष योनि संजार ॥ वै० ॥ ५ ॥ चउदश लक्ष ते मनुजनी, मनुजनी तेम जाणो गुणवंत ॥ वै० ॥ फिरतां लक्ष चोराशीमें, चोराशीमें वील्यो काल अनंत ॥ वै० ॥ ६ ॥ जाति ने योनि रही नहीं, रही नहीं जिहां नवि आयो ए जीव ॥ वै० ॥ जन्म मरण कीधां घणां, कीधां घणां दुःखीयो एह अतीव ॥ वै० ॥ ७ ॥ यडुक्तं ॥ न सा जाइ न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं ॥ न जाया न मुआ जब, सबे जीवा अणंतसो ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ क्युं सोवे तुं करारमें, करारमें

त्रिहुं जग लाग्या केरू ॥ वे० ॥ चेतन चेतो हो चित्तमां, चित्तमां ए दुशमनकुं फेरू ॥ वे० ॥ ७ ॥ खावंद माल अनंतके, अनंतके क्युं रहे होय दिलगीर ॥ वे० ॥ आप दशा परगट करो, परगट करो ज्युं जांजे नवत्तीर ॥ वे० ॥ ए ॥ साहिब दास ज्युं हुइ रह्यो, हुइ रह्यो इंद्रियके आधीन ॥ वे० ॥ पान करी मदमोहको, मदमोहको क्युं वेगो मसकीन ॥ वे० ॥ १० ॥ यतः ॥ आत्मविभूतिरयं चिरंतनः, पीतमोहमदिराविमोहितः॥ किंकरस्य मनसोऽपि किंकरै,-रिंद्रियैरहह किंकरीकृतः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ चेतन तेरे राजमें, राजमें विषय करे क्युं जोर ॥ वे० ॥ मित्र हुइ आइ मिले, आइ मिले ए पांचोही चोर ॥ वे० ॥ ११ ॥ क्षण सुख तोकुं चखायके, चखायके नाखेंगे लेइ दूर ॥ वे० ॥ ए संसार अनादिको, अनादिको वहे विषयाके पूर ॥ वे० ॥ १२ ॥ यडुक्तमागमे ॥ क्षणमित्त सुक्खा बहुकाल दुक्खा ॥ निंद निवारो हो मोहकी, मोहकी आलस अलगुं नाखी ॥ वे० ॥ घटमें ज्ञानदीपक करो, दीपक करो सुमति उघाडो आंख ॥ वे० ॥ १३ ॥ देशन सुणी गुरुराजकी, गुरुराजकी श्री गुणधर्म कुमार ॥ वे० ॥ मोह मव्यो ममता घटी, ममता घटी नागो विषयविकार ॥ वे० ॥ १४ ॥ कनकवती निज नारीने, नारीने कहे लीजे अब दीख ॥ वे० ॥ संयममारग आदरी, आदरी चलीये सद्गुरु शिख ॥ वे० ॥ १५ ॥ सा कहे विषयनिखारणी, निखारणी नवयोवन वय एह ॥ वे० ॥ सुख विलसो संसारनां, संसारनां दोहिलो ए नवल सनेह ॥ वे० ॥ १६ ॥ वृद्धपणामां वालहा, वालहा कीजे योगअभ्यास ॥ वे० ॥ योगदशा आवे नहीं, आवे नहीं जिहां लगे विषयपिपास ॥ वे० ॥ १७ ॥ यडुक्तं ॥ शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां, यौवने विषयैषिणाम् ॥ वार्धके मुनिवृत्तीनां, योगेनांते तनुत्यजाम् ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे गुणधर्म ए धर्मनो, धर्मनो वृद्धपणे नहीं लाग ॥ वे० ॥ जर्जर वय तनुबल घटे, बल घटे वाधे तृष्णा अताग ॥ वे० ॥ १७ ॥ यडुक्तं ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि,-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ॥ यत्नश्च नेपथ्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्नहो मोहविडंबना मे ॥ ४ ॥ अंगं गलितं पलितं मुंडं, दशनविहीनं जातं तुंडम् ॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं, तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ योवनमां पण कोइने, कोइने आवे वैराग्यनो जाग ॥ वे० ॥

तंत नहीं ए वय तणो, वय तणो धर्म विषे मन नाव ॥ वे० ॥ १९ ॥ कनकवती कहे पूछीने, पूछीने आयु तणुं अवसान ॥ वे० ॥ आदरजो तमे दीखने, दीखने थो एतुं मुफ मान ॥ वे० ॥ २० ॥ मन विणु मानी वातने, वातने वांदी गुरुना पाय ॥ वे० ॥ नगर नणी चाल्यो तदा, चाल्यो तदा जोजन पान उपाय ॥ वे० ॥ २१ ॥ काननमां मूकी करी, मूकी करी कनकवती तरु हेठ ॥ वे० ॥ राजकुमर तिहां आवीयो, आवीयो गुणचंद सा दीठ ॥ वे० ॥ २२ ॥ राग लह्यो देखी करी, देखी करी मानिनी मोहनगार ॥ वे० ॥ पूछे हो आवी तेहने, तेहने तुं केनी घरनारी ॥ वे० ॥ २३ ॥ किण कारण इहां एकली, एकली योवनरूप रसाल ॥ वे० ॥ तुफ नरतार किहां अछे, किहां अछे कहो मुफने इण काल ॥ वे० ॥ २४ ॥ राग लही ते कुमरनो, कुमरनो निज नरतार वेराग्य ॥ वे० ॥ निज वृत्तांत कह्युं सवि, कह्युं सवि मोही रही तस राग ॥ वे० ॥ २५ ॥ लागी नयणनी आशकी, आशकी जोइ रह्यां अनिमेष ॥ वे० ॥ नयण कमलदल पांखनी, पांखमी मोह्यो कुंवर ते देखी ॥ वे० ॥ २६ ॥ यतः ॥ दोहो ॥ नयण पदारथ नयण रस, नयणे नयण मिलंत ॥ अण-जाण्याशुं प्रीतमी, पहेलां नयण करंत ॥ ६ ॥ पूर्व ढाल ॥ जोग नणी करे प्रार्थना, प्रार्थना करे गुणचंद कुमार ॥ वे० ॥ आवो हो मानिनि मुफ घरे, मुफ घरे सफल करो अवतार ॥ वे० ॥ २७ ॥ प्राणप्रिया करी राखशुं, राखशुं देशुं नहीं दाण ठेह ॥ वे० ॥ अवर नणी नवि आदरुं, आदरुं तुफ उपर मुफ नेह ॥ वे० ॥ २८ ॥ कनकवती मन चिंतवे, चिंतवे इयो पीयुशुं हवे नेह ॥ वे० ॥ उपनशे नहीं माहरुं, माहरुं आखर ए निःस्नेह ॥ वे० ॥ २९ ॥ जाउं ए राजकुंवरघरे, कुंवरघरे जोगवुं लील-विलास ॥ वे० ॥ कहे वंची नरतारने, नरतारने आवीश हुं तुम पास ॥ वे० ॥ ३० ॥ राजकुंवर गयो मंदिरे, मंदिरे मोह्यो तेहने रूप ॥ वे० ॥ जग मांहे विषय समो नहीं, समो नहीं महोटो कोइ विरूप ॥ वे० ॥ ३१ ॥ छठे हो खंडे अढारमी, अढारमी ढाल विचारो एह ॥ वे० ॥ राम कहे जग कारिमो, कारिमो धिक् धिक् नारीनेह ॥ वे० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ६२४ ॥ २० ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे गुणधर्म कुमार, पुरमां जइ ठजो रह्यो ॥ को न दीये आधार,

आथ विना आदर किस्यो ॥ १ ॥ मन मांहे चिंते नारी, जूखी होशे माहरी ॥ करुं इहां कवण प्रकार, धन विण जोजन किहां थकी ॥ २ ॥ यतः ॥ पुत्ताय सीसाय० ॥ मंगाये नहीं जिख, जूख्यां रहेवाये नहीं ॥ न रही मनमां शिख, रमवा बेठो जूवटे ॥ ३ ॥ कांइक धन उपारजी, तुरत करावी रसवती ॥ लेइ मंरुक साज, उद्याने आवे वही ॥ ४ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ किण वाटे गया वनमाली रे ॥ वाइ महारी वहेनमीयां ॥ ए देशी ॥ वन मांहे आव्यो उजाइ रे ॥ नारी मोरे मन वसीयां ॥ कहे जोजन लाव्यो हुं धाइ रे ॥ नारी नवि उल्लसीयां ॥ कहे कुमर सुणो सुकुमाली रे ॥ नारी मो० ॥ तुने जूखे घणुं परजाली रे ॥ ना० ॥ १ ॥ आवी कुंवर बेठो जोडे रे ॥ नारी० ॥ आपण कीजे जोजन कोडे रे ॥ ना० ॥ मन विण जोजन वेठी रे ॥ ना० ॥ पण मन मांहे चिंता पेठी रे ॥ ना० ॥ २ ॥ नवि वोले रसीली वातो रे ॥ ना० ॥ प्रिय चिंते एहनी फरी धातो रे ॥ ना० ॥ बोले नेहविहूणी वाणी रे ॥ ना० ॥ कुंवरे तस वात पिठाणी रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ एणे मुजशुं मोह उतास्यो रे ॥ ना० ॥ बीजो कोइक दिल मांहे धास्यो रे ॥ ना० ॥ धिक् धिक् धिक् नारीनेहा रे ॥ ना० ॥ क्षण मांहि देखाडे बेहा रे ॥ ना० ॥ ४ ॥ हुं जाणतो हतो प्यारी रे ॥ ना० ॥ पण एह सबल धूतारी रे ॥ ना० ॥ में पाप कखुं इण माटे रे ॥ ना० ॥ डुर्गति परणी ए साटे रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ करी एहने में साव सोनानी रे ॥ ना० ॥ पण न रही जाति ए वानी रे ॥ ना० ॥ मुज सम नहीं कोइ अज्ञानी रे ॥ ना० ॥ समजाव्यो हतो मुज ज्ञानी रे ॥ ना० ॥ ६ ॥ वनमां कोइ मिष करी चाल्यां रे ॥ ना० ॥ आगल एक पुरुष नीहाल्यो रे ॥ ना० ॥ तेणे पूछ्युं कुमरने आइ रे ॥ ना० ॥ गयो राजकुंवर शुं जाइ रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ कहे राजकुंवर कोण आयो रे ॥ ना० ॥ इहां जे तुमे मुजने वतायो रे ॥ ना० ॥ कहे ते नर सुण विदेशी रे ॥ ना० ॥ इहां आव्यो कुमर अम देशी रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नृपनंदन गुणचंद्र नामे रे ॥ ना० ॥ आव्यो वन जोवा कामे रे ॥ ना० ॥ ते साथे नारी एक बोली रे ॥ ना० ॥ करी वात ते मनकुं खोली रे ॥ ना० ॥ ए ॥ तस आणाए अलगो जाइ रे ॥ ना० ॥ आव्यो इहांकणे जाइ रे ॥ ना० ॥ ते माटे पूढ्युं वात मीठी रे ॥ ना० ॥

नारी तस घर जाती दीठी रे ॥ ना० ॥ १० ॥ ते गइ एम उत्तर दीधो रे ॥ ना० ॥ ते चाल्यो नगर जणी सीधो रे ॥ ना० ॥ मन मांहे करे ए विचार रे ॥ ना० ॥ उत्तो गुणधर्म कुमार रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ तद्यथा ॥ दृष्टो च नोपकारेण, नांजसा हृत योषितः ॥ शहंते न कुलं शीलं, मर्यादां गणयंति च ॥ १ ॥ रहो न जायते यावत्, क्षणश्चार्थयिता न च ॥ सतीत्वं तावदेतासां, नारीणां नारदोऽवदत् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ एम चिंती कुमर तिहां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने एम तेणे समजावी रे ॥ ना० ॥ कहे तो तुज मोशाल मुकूं रे ॥ ना० ॥ हुं जवजावठथी चुकूं रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ तिहां पासे नगरमां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने मातुलघरे मोकलावी रे ॥ ना० ॥ जइ तेह मुनिनी पासे रे ॥ ना० ॥ ग्रहे चारित्र दिल उल्लासे रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ करे किरिया तप तपे काठां रे ॥ ना० ॥ घणां कर्म खपाव्यां माठां रे ॥ ना० ॥ थयो तेह महाव्रत धोरी रे ॥ ना० ॥ चढती परिणामनी दोरी रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ करी अणसण सुरपद लीधुं रे ॥ ना० ॥ तेहनुं वांछित कारज सीधुं रे ॥ ना० ॥ तिहांथी चवी नर-जव पामी रे ॥ ना० ॥ ते थाशे शिवगतिगामी रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ हवे कनकवतीनी कहाणी रे ॥ ना० ॥ निसुणो तुमे सहुए प्राणी रे ॥ ना० ॥ आवी मातुलघरथी रीसाणी रे ॥ ना० ॥ थइ गुणचंद्रनी धणी-याणी रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ राजकुमरने ते घणुं प्यारी रे ॥ ना० ॥ तेणे मूकी अवर विसारी रे ॥ ना० ॥ तव चिंते हो पहेली राणी रे ॥ ना० ॥ एणे नारी कुजात ए आणी रे ॥ ना० ॥ १७ ॥ एणे कामण मोहन कीधो रे ॥ ना० ॥ महारो पीयुडो वश करी लीधो रे ॥ ना० ॥ जग मांहि खार ए महोटो रे ॥ ना० ॥ परजवदुःखदायी खोटो रे ॥ ना० ॥ १८ ॥ तेणे जोजनमां विष दीधुं रे ॥ ना० ॥ मारी कनकवतीने वेर लीधुं रे ॥ ना० ॥ ध्यान रौद्र मांहे ते मूइ रे ॥ ना० ॥ चोथी नरके नारकपणे हुइ रे ॥ ना० ॥ १९ ॥ जुवो उत्तम कुलनी जाइ रे ॥ ना० ॥ शी कीधी कर्मकमाइ रे ॥ ना० ॥ दुःख मांहे काल निर्गमशे रे ॥ ना० ॥ तिहांथी जव बहुला जमशे रे ॥ ना० ॥ २० ॥ कहे प्रभुजी शांति जिणंदा रे ॥ ना० ॥ विरुआ ए विषयना फंदा रे ॥ ना० ॥ दुःखदायी ए विषयप्रमादो रे ॥ ना० ॥ महोटो जग ए उन्मादो रे ॥

ना० ॥ २१ ॥ ए वर्जे ते सुख पावे रे ॥ ना० ॥ सुर नर मली तस गुण गावे रे ॥ ना० ॥ ए विषय उपर वीतरागे रे ॥ ना० ॥ कही वात सबळ वैरागे रे ॥ ना० ॥ २२ ॥ छठे खंडे ढंगणीशमी दाखी रे ॥ ना० ॥ ए वात हैयामां राखी रे ॥ ना० ॥ कहे राम जे करशे करणी रे ॥ ना० ॥ वरशे शिवलीला गृहिणी रे ॥ ना० ॥ २३ ॥ इति विषये गुणधर्मकनकवती संबंधः ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ६५१ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रजु चक्रायुध निसुण, एह विषय अधिकार ॥ हवे कषाय उपर कहुं, नागदत्त विस्तार ॥ १ ॥ वर्द्धमान जिनवर तणे, वारे होशे तेह ॥ आगामिक हमणां कहुं, वात सुणो ससनेह ॥ २ ॥ नहीं कषाय विणु विषय को, तस नाशे जवनाश ॥ जवनाशे शिव संपजे, सहजानंद विलास ॥ ३ ॥ करे चक्रायुध स्वामीने, कर जोकी अरदास ॥ नागदत्त संबंध मुज, जगगुरु परकाश ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ म म करो माया काया कारमी ॥ ए देशी ॥ वसंतपुर जरत जंबू तणे, समृद्ध वसुदत्त दोय नंद रे ॥ सरल मन शांत गुण शोजता, मधुर मुख वाणी सुखकंद रे ॥ १ ॥ शांति जिनराज एम उपदिशे ॥ ए आंकणी ॥ सवि सुणो पर्षदा बार रे ॥ कटुक फल एह कषायनां, जाणी वर्जो सुविचार रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ व्यवहारे तेह मैत्रीपणे, मन कस्यो निश्चय एम रे ॥ एक जे कारिज आदरे, अवर पण आचरे तेम रे ॥ शां० ॥ ३ ॥ दोय उद्यानमां आवीया, एक दिन मुनिवर दीठ रे ॥ वज्रगुप्ताजिध गुणनिलो, दरिसण अति घणुं मीठ रे ॥ शां० ॥ ४ ॥ करीय प्रणिपत्य मुनिवर प्रत्ये, दोय कहे कहो हितशिख रे ॥ देशना दीध जवतारिणी, निसुणी लीधी दोय दीक्ष रे ॥ शां० ॥ ५ ॥ बंधन गेकी संसारनां, दोय हुवा श्रमण गुणधार रे ॥ अंते अनशन करी उपन्या, दोय सुरलोक मकार रे ॥ शां० ॥ ६ ॥ पण कर्युं दोय देवे तिहां, जे चवे पहेल इण गम रे ॥ तेणे बीजो प्रतिबोधवो, धर्मसंकेतने काम रे ॥ शां० ॥ ७ ॥ समृद्धदत्त जीव तिहांथी चव्यो, जरतमां अवतस्यो आय रे ॥ सागरदत्तने मंदिरे, धरणीनिवास पुर ठाय रे ॥ शां० ॥ ८ ॥ धनदत्ता नारी वर कुखमां,

नागसुरदत्त वर योग रे ॥ सुत थयो नागदत्ताभिधो, पूर्व सुकृतनो जोग रे ॥ शां० ॥ ए ॥ सकल शिख्यो कला नर तणी, जाण गांधर्वनो जोर रे ॥ चतुर पण सकल पुरजन तणां, चित्तनो ते थयो चोर रे ॥ शां० ॥ १० ॥ नाम गांधर्वपूर्वक थयुं, नागदत्त तेहनुं ताम रे ॥ कुशल वीणाकलामां घणो, गारुडीमां शिरे नाम रे ॥ शां० ॥ ११ ॥ एक दिन तेह उद्यानमां, मित्र संघाते नागदत्त रे ॥ क्रीडा करवा जणी चालीयो, मन धरी हर्ष अत्यंत रे ॥ शां० ॥ १२ ॥ वसुदत्त सुरे प्रतिबोधीयो, बंधवा बुऊ तुं बुऊ रे ॥ मेल कषायने वेगला, विषयरसमां मत मुंऊ रे ॥ शां० ॥ १३ ॥ पण मन मांहि आवे नहीं, इंद्रिये जनित सुख दास रे ॥ धर्म अतींद्रिय नवि जजे, अहो अहो विषय सुखपाश रे ॥ शां० ॥ १४ ॥ जिहां लगे कष्ट दीठुं नहीं, तिहां लगे नवि करे धर्म रे ॥ चिंती एम रूप मुनिनुं करे, जुर्ज जुर्ज मित्रनो मर्म रे ॥ शां० ॥ १५ ॥ सर्पकरंमक कर ग्रह्यो, नहीं रजोहरण मुखवस्त्र रे ॥ नागदत्त पासे ते आवीयो, मुनिवररूप नहीं वस्त्र रे ॥ शां० ॥ १६ ॥ पूठीयुं एह करंममां, शुं अठे तव कहे तेह रे ॥ नाग क्रीमा तणा एहमां, सांजल ठे गुणगेह रे ॥ शां० ॥ १७ ॥ बोलीयो नागदत्त मादृश, नाग क्रीमाव तुं आज रे ॥ तादृश नाग खेलावशुं, होंशथी हुं मुनिराज रे ॥ शां० ॥ १८ ॥ कहे ऋषि वात म करीश इसी, मादृश नाग दुर्दंत रे ॥ क्रीमव्या जाय कोणे नहीं, एह विषधर बलवंत रे ॥ शां० ॥ १९ ॥ देव पण ए ग्रही नवि शके, तो इहां तुं कोण मात्र रे ॥ मंत्र औषध विना तादृशे, वश न हुवे अहिजात रे ॥ शां० ॥ २० ॥ नाग बोल्यो अजिमानशुं, मूक जो अहि ग्रहुं केम रे ॥ के वली तुं ग्रहे मादृश, सुर कहे मुक तुं केम रे ॥ शां० ॥ २१ ॥ नागदत्त मूकीया पन्नगा, वलगीया सुर तणे अंग रे ॥ वेदना अंश नवि करी शके, दिव्य प्रजाव ए चंग रे ॥ शां० ॥ २२ ॥ नागदत्त कोपीयो एम जणे, मूक हवे तादृश नाग रे ॥ जोउं केहवा अठे जालमी, नहीं इहां विलंबनो लाग रे ॥ शां० ॥ २३ ॥ मेल इहां स्वजन सवि तादृशां, कर इहां पंचनी साख रे ॥ गारुडिक सुरवच सांजली, मेलीयां स्वजन हित दाखी रे ॥ शां० ॥ २४ ॥ कहे सुर उंचा स्वरथी तदा, नागदत्त मुक अहि साथ रे ॥ क्रीमवा चित्त चाहे घणुं, पण नहीं अहि मुक हाथ रे ॥ शां० ॥ २५ ॥ दोष देवो नहीं मुऊने, जो मसे एहने

आज रे ॥ स्वजन जन सहु मल्यां वारवा, म म कर एह अकाज रे ॥ शां० ॥ २६ ॥ वारीयो पण नवि विरमीयो, मूकीया नाग विरूप रे ॥ सोय अहि- वाहक एम कहे, सुणो मुफ भुजगस्वरूप रे ॥ शां० ॥ २७ ॥ रक्त- लोचन विपपूरितो, क्रूर दोय जीज विकराल रे ॥ क्रोध अजिधान पूरव दिशे, प्रथम एह भुजग संजाल रे ॥ शां० ॥ २८ ॥ आठ फणाटोप जीषण घणो, स्तब्धतनु याम्य दिशि जाण रे ॥ यम समानो महोरग कह्यो, जेहनुं मान अजिधान रे ॥ शां० ॥ २९ ॥ वंचनाकुशल जे अति घणो, पश्चिमे वक्र गति धार रे ॥ एह माया भुजंगी वली, धरीय नवि जाय निर्धार रे ॥ शां० ॥ ३० ॥ उत्तर दिशे वडो जालमी, लोज नामे अहि- राज रे ॥ एह डसीया नरा जगतमां, पूर्ण थाये निधन राज रे ॥ शां० ॥ ३१ ॥ जेहने चार ए अहि डसे, तस पछ्यानुं किस्युं चित्त रे ॥ रहित आलंबने जे नरा, ते लहे डुःख विचित्र रे ॥ शां० ॥ ३२ ॥ नागदत्त तेहने तव कहे, श्यो करे वातविस्तार रे ॥ मूक मुफ उपरे शीघ्र तुं, म कर मुफ फिकर लगार रे ॥ शां० ॥ ३३ ॥ मूकीया तेणे उतावला, मंत्र औषधे नहीं साध्य रे ॥ तनु डस्युं शेठना सुत तणुं, भूमि पड्यो थइने असाध्य रे ॥ शां० ॥ ३४ ॥ मित्रे उपचार बहुला कीया, नवि वली चेतना तास रे ॥ एह जीवाडो एम सहु मली, विनवे करी अरदास रे ॥ शां० ॥ ३५ ॥ तेह अहिवाहक बोलीयो, तो रहे जीवतो एह रे ॥ जे कहुं ते किरिया करे, डुष्कर घणो ससनेह रे ॥ शां० ॥ ३६ ॥ हुं पण पूरवे इण डस्यो, तास विप वारवा हेत रे ॥ कष्ट किरिया करुं एहवी, सांजलो तास संकेत रे ॥ शां० ॥ ३७ ॥ केश लुंचावुं निज शिर तणा, जीरण श्वेत मित मान रे ॥ वस्त्र शोजा विना वावरुं, तप करुं शुद्ध अनिदान रे ॥ शां० ॥ ३८ ॥ छठ अठम उपवासने, पारणे लूक आहार रे ॥ नवि लीउं भक्त आकंठता, पट् रस विगय निवार रे ॥ शां० ॥ ३९ ॥ जो एम नवि करुं हुं कदा, तेह विप उदय फरी थाय रे ॥ कोइ समे वन गृह शून्यमां, जमुं नहीं मुफ एक गाय रे ॥ शां० ॥ ४० ॥ एम किरिया करतां थका, मुफ नोहे एह विप- चार रे ॥ स्तोक निद्रा करुं वली अमो, लीजीये स्तोक आहार रे ॥ शां० ॥ ४१ ॥ बोलीये स्वल्प मितधर्मनुं, वाक्य मन मांहि विचार रे ॥ एम करे डुष्ट ए अहि तणुं, नवि चले जोर तिलजार रे ॥ शां० ॥ ४२ ॥

एहवी जो क्रिया ए करे, तो सही जीवे एम जाणो रे ॥ नहींतर ए मरशे इस्युं, साजन सहु मन आणो रे ॥ शां० ॥ ४३ ॥ कहे जन एम करशे क्रिया, तुमे करो एहने सज्ज रे ॥ प्रौढ मंमप तिहां आसखी, उच्चरे पाठ शुज कज्ज रे ॥ शां० ॥ ४४ ॥ सिद्ध सहुने प्रणमी करी, करे मुखे एम उच्चार रे ॥ सर्वथी प्राणातिपातने, सर्वथी अलिय तिम धार रे ॥ शां० ॥ ४५ ॥ सर्वथी अदत्त मैथुन वली, सर्व परिग्रह तेम जाण रे ॥ जावजीव नागदत्त कुमर ए, एहनां करे पच्चरकाण रे ॥ शां० ॥ ४६ ॥ वार त्रण दंमक एम जणी, अंते स्वाहा पद पाठ रे ॥ शेठसुत तेह साजो कस्यो, सुर तेणे करीय एम गाठ रे ॥ शां० ॥ ४७ ॥ जागीयो स्वजन हरख्यां सवे, दाखवी तस सवे वात रे ॥ सद्दही नवि तेणे तरक्षणे, सबल अवली तस धात रे ॥ शां० ॥ ४८ ॥ घर जणी नीसस्यो तव वली, जूमि पमीयो ततकाल रे ॥ पुनरपि सयणना कहेणथी, तेह जीवामीयो बाल रे ॥ शां० ॥ ४९ ॥ वार त्रीजी वली एम सही, निश्चय कीधलो जाम रे ॥ नागदत्ते वात मानी तदा, देवचिंतित थयुं काम रे ॥ शां० ॥ ५० ॥ देव वन मांहि तस आणीने, निज कही पूर्व जव वात रे ॥ सुणी तेणे जातिसमरण थयुं, प्रत्येकवुद्ध मुनि जात रे ॥ शां० ॥ ५१ ॥ देव तस चरण वंदी करी, गयो निज ठाम धरी हर्ष रे ॥ नागदत्त मुनि मही विचरतो, पाले आचार उत्कर्ष रे ॥ शां० ॥ ५२ ॥ देहकरंमथी बाहिरे, नीसरवा न दे जेह रे ॥ चार कषाय अहिने सदा, एहवो मुनि गुणगेह रे ॥ शां० ॥ ५३ ॥ नागदत्त मुनि अनुक्रमे हुवा, संयमश्रेणि गुणधार रे ॥ घातिकर्मक्षये उपन्युं, केवलज्ञान उदार रे ॥ शां० ॥ ५४ ॥ अनुक्रमे मुक्तिनारी वस्या, एम कहे शांति जिनचंद रे ॥ ए कषायातमा वश करे, प्रगट होय सहज आनंद रे ॥ शां० ॥ ५५ ॥ ढाल ठठे सुणो वीशमी, रामविजये कही एह रे ॥ शांति प्रजु देशना सांजली, समजजो जवि गुणगेह रे ॥ शां० ॥ ५६ ॥ इति कषायप्रमादोपरि नागदत्तसंबंधः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१५ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

॥ अथ प्रथमः प्राणातिपातविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण राजन् ए आदि दे, पंच प्रकार प्रमाद ॥ परिहरवो सुविवे-

कीए, मूकी मन विषवाद ॥ १ ॥ धर्म करेवो धसमसी, भेद चार जस सार ॥ दान शील तप भावना, मोक्ष तणां ए द्वार ॥ २ ॥ भेद दोय ते धर्मना, सागार ने अणगार ॥ दशविध कह्यो अणगारनो, धर्म मुक्ति दातार ॥ ३ ॥ वीश वसा जिहां पालवी, जीवदया भली भाति ॥ ते मुनिधर्म आराधतां, करे कर्मनो घात ॥ ४ ॥ तेहथी उतरतो कह्यो, कायरने सागार ॥ बार भेद छे तेहना, समकित मूल उदार ॥ ५ ॥ दर्शन मोह कर्मोपशम, आदि थकी उत्पन्न ॥ जीवादिक श्रद्धान शुद्ध, समकित वडुं रतन्न ॥ ६ ॥ यदुक्तं ॥ जिअ अजिअ पुण्ण पावा,–सव संवर बंध मुक्क निज्जरणा ॥ जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइ बहु भेआ ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ तत्त्वत्रयनो जे सदा, अध्यवसाय विवेक ॥ ते समकित कहीये वली, तेहना भेद अनेक ॥ ७ ॥ उक्तं च ॥ अरिहं देवो गुरुणो० ॥ समकित अरिहंत धर्मनुं, मूलभूत निर्धार ॥ ग्रंथ मांहे एहनो घणो, भाख्यो छे विस्तार ॥ ८ ॥ डुविध डुविध इत्यादिके, द्वादश व्रत आचार ॥ समकित उत्तर गुण सहित, भंग एहना धार ॥ ए ॥ कोडि तेरसें उपरे, तेम चोराशी कोडि ॥ बार लाख तस उपरे, सहस सत्यावीश जोडी ॥ १० ॥ दोय शत दोय कह्या वली, भंग एटला जाण ॥ ए सर्वे मांहि शिरे, समकित प्रथम वखाण ॥ ११ ॥ ए विण एके भंगनो, संभव नोहे तेम ॥ ते माटे प्रभुजी कह्युं, आगम मांहे एम ॥ १२ ॥ अत एवोक्तं ॥ मूलं दार पइठाणं, आहारो भायणं निहि ॥ डुछक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ कारक रोचक दीपके, समकित त्रिहुं प्रकार ॥ चारित्री अविरति तथा, मिथ्यादृष्टि विचार ॥ १३ ॥ पंच दोष एहना कह्या, शंका कंख विगिछ ॥ तेम पसंस संथव कह्यो, वर्जे समकित संच ॥ १४ ॥ मूल एह साजुं करे, आगल होय विस्तार ॥ समकित मूल व्रत बार जे, एह धर्म सागार ॥ १५ ॥ हवे प्रथम व्रत उपरे, भाखे प्रभु अवदात ॥ ते भवियण तुमे सांभलो, मूकी विकथा वात ॥ १६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ घरे आवी जननी नमे ॥ ए देशी ॥ शांति जिनेश्वर एम कहे, निसुणो तुमे सार ॥ नरभव हार्यो नवि मले, एह बीजी वार ॥ शां० ॥ १ ॥ व्रत पहेलुं सागारनुं, स्थूलप्राणातिपात ॥ विरमण करीये तेहनुं, कहे त्रिभु-

धन तात ॥ शां० ॥ २ ॥ प्राणीवध बहु भेद छे, दोयसें अंताल ॥ नव त्रिकशुं गुणतां थका, सत्यावीशज चाल ॥ शां० ॥ ३ ॥ करण करावण अनुमते, एक्यासी विचार ॥ लेखवतां त्रिहुं कालथी, संख्या अवधार ॥ शां० ॥ ४ ॥ यतः ॥ नू जल जलणानिल वण, बि ति चउ पंचिंदिएहिं नव जीवा ॥ मण वय काय गुणिया, हवंति ते सत्तवीसत्ति ॥ ३ ॥ इक्कासी इसा करण, कारणा-णुमइ ताडिया होइ ॥ सधिय तिकाल गुणिया, दुन्निसया हुंति तेयाला ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ ए सवि हिंसाभेदथी, विरम्या अणगार ॥ वीश वसा तेउने कही, दया संयम सार ॥ शां० ॥ ५ ॥ थूल उगारे दश रह्या, आरंभे हो पंच ॥ सापराध सापेक्षथी, अर्द्ध अर्द्धनो संच ॥ शां० ॥ ६ ॥ यतः ॥ थूल सुहुमा जीवा, संकप्पारंभओ अ ते दुविहा ॥ सावराह निरवराहा, सावक्खा चेव निरवक्खा ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ एम सागारी सवा वसो, करुणा पालंत ॥ अच्युत सुर लगी आयुखुं, बांधे गुणवंत ॥ शां० ॥ ७ ॥ पंच अतिचार पहरना, वह बंध छविछेद ॥ अतिभारारोपण वली, भात पाणी विछेद ॥ शां० ॥ ८ ॥ ए मुख्य व्रतने पालवा, बीजा वाड समान ॥ जीव-दया व्रत मूलगुं, भाखे भगवान ॥ शां० ॥ ९ ॥ यदुक्तं ॥ देवपूजा गुरू-पास्ति,—र्दानमध्ययनं तपः ॥ सर्वमप्येतदऽफलं, हिंसां चेन्न परित्यजेत् ॥ ६ ॥ जं आरुग्ग० ॥ यो दद्यात्० ॥ निरतिचार ए पालतां, लहे लीलविलास ॥ इह भव परभव सुख घणां, जेम ते यमपाश ॥ शां० ॥ १० ॥ चक्रायुध पूछे जिन कहे, वरते सुखवास ॥ नयरी वाणारसी अति भली, नहीं दरिद्र निवास ॥ शां० ॥ ११ ॥ दुर्मर्षण राजा तिहां, न्यायी गुणवंत ॥ राणी कमलश्री भली, शीले शोभंत ॥ शां० ॥ १२ ॥ नामे सुमंजरी आकरो, तिण नयरी तलार ॥ यमपाश जाति चांडाल छे, नहीं कर्मे लगार ॥ ॥ शां० ॥ १३ ॥ एक नलदामा वाणीयो, निवसे तिहां संत ॥ नाम सुमित्रा गेहिनी, दंपती एक चित्त ॥ शां० ॥ १४ ॥ तस घर मम्मण सुत अछे, लह्यो यौवनपूर ॥ सुख विलसे संसारनां, चढतुं जस नूर ॥ शां० ॥ १५ ॥ एक दिन एक हय उपरे, थयो नृप असवार ॥ वैरी सुरे ते आश्रयो, हयने तेणी वार ॥ शां० ॥ १६ ॥ उत्पतीयो वेगे तदा, गगने हय तेह ॥ दूरे जइ भूमि पड्यो, नृप कोइ वनगेह ॥ शां० ॥ १७ ॥ हय पहोतो परलोकमां, नृप आयुने योग ॥ बंच्यो ते वनमां भमे, भावी कर्मने जोग

॥ शां० ॥ १८ ॥ भूख तृषा लागी घणी, नृप चिंते हो एम ॥ पाणी विना प्राण माहरा, इहां रहेशे हो केम ॥ शां० ॥ १९ ॥ एहवे एक मृग आवीयो, भूपतिनी पास ॥ पूरव भव तस सांजस्यो, नृप देखी उल्लास ॥ शां० ॥ २० ॥ अक्षर लखी शिला उपरे, जणावे हो तेह ॥ देवल नामे हो ताहरो, सेवक गुणगेह ॥ शां० ॥ २१ ॥ आर्त्तध्यान मांहे मरी, थयो मृग वन मांहि ॥ तुफ दीठे मुफ सांजस्यो, पूरव भव आंहीं ॥ शां० ॥ २२ ॥ नीर देखाड्युं नृप भणी, जल पीधुं ते वार ॥ स्वस्थ थयो मन चिंतवे, मृगनो उपकार ॥ शां० ॥ २३ ॥ सेना पूठे संचरी, करी नरपति केड ॥ वन वन जोतां नृप भणी, आवी तेण वेरु ॥ शां० ॥ २४ ॥ सैन्य संघाते हो आवीयो, मृग लेइ साथ ॥ दान अभय दइ मूकीयो, पुरमां भूनाथ ॥ शां० ॥ २५ ॥ फिरतां हो एक दिन आवीयो, मृग मम्मण हाट ॥ पूरव मत्सरभावथी, उठ्यो लेइ लाठी ॥ शां० ॥ २६ ॥ तातने कहे अपराधीयो, मृग मरीश आज ॥ जनक कहे नवि कीजीये, एह सबल अकाज ॥ शां० ॥ २७ ॥ जीव कोइ हणीये नहीं, वली एह विशेष ॥ नृपतिने मन मानीयो, उपकारी रेख ॥ शां० ॥ २८ ॥ जनकनो वार्यो नवि रह्यो, रोपे हणे सोय ॥ मम्मण थयो विलखो घणुं, चाड्युं कहण न कोय ॥ शां० ॥ २९ ॥ यमदंडे तेण अवसरे, विनवीयो राय ॥ कर्म कर्युं इण मम्मणे, निर्दय मन थाय ॥ शां० ॥ ३० ॥ राय कहे कुण साखीयो, कहे ते तस बाप ॥ नृप पूछे साचुं कहे, आवी ते आप ॥ शां० ॥ ३१ ॥ रीझ्यो राय मने घणुं, सत्यवादी जाण ॥ मान सहित घोलावीयो, घर ते गुणखाणी ॥ शां० ॥ ३२ ॥ कहे तेहनी यमदंडने, मम्मणने हो मार ॥ कहेतो हिंसा नवि करुं, नरपति अवधार ॥ शां० ॥ ३३ ॥ तुं हिंसा न करे किस्युं, जाते चांडाल ॥ ते कहे राजन् माहरे, नहीं हिंसा टाल ॥ शां० ॥ ३४ ॥ कारण सुण तेहनुं कहुं, साहिब उजमाल ॥ हस्तिशीर्ष पुर छे नवुं, सोहे मुनि राय ॥ शां० ॥ ३५ ॥ दमदंत नामे वाणीयो, सुणी वाणी अनंत ॥ जिनवर पासे आदर्यो, संयम गुणवंत ॥ शां० ॥ ३६ ॥ तपबल नाथी ठरनी, तस लब्धि अनेक ॥ ते विचरंतो आवीयो, वनमां मुनि एक ॥ शां० ॥ ३७ ॥ रह्यो काउस्सग्ग मसाणमां, तरीयो अणगार ॥ जिण दीठे पावन हुवे, मानव अवतार ॥ शां० ॥ ३८ ॥ इ

अवसरे सुत माहरो, नामे अतिमुक्त ॥ बहु रोगे ते पीमीयो, न लहे ते उक्त ॥ शां० ॥ ३९ ॥ तेह गयो समशानमां, दीठा मुनिराज ॥ कर जोडी पाये नम्यो, कहे सीध्यां काज ॥ शां० ॥ ४० ॥ अवर नहीं कोइ तुज विना, मुज राखणहार ॥ तुं प्रभु नयणे निरखीयो, करुणाभंमार ॥ शां० ॥ ४१ ॥ मुनिपरभावे ते थयो, अंगे नीरोग ॥ वात आवी घरे मुज कही, गयो माहरो रोग ॥ शां० ॥ ४२ ॥ कुटुंब सहित रोगे दम्यो, नम्यो हुं मुनिपाय ॥ ते मुनिचरणप्रभावथी, थया नीरोगी काय ॥ शां० ॥ ४३ ॥ ते मुनिवर मुज देशना, कहे करुणाखाणी ॥ जीवदया तुम्हे पालजो, आतम हित जाणी ॥ शां० ॥ ४४ ॥ रोग सोग नावे कदा, दोहिल डुःखराशि ॥ धर्म अहिंसा सेवतां, होवे शिवपुरवास ॥ शां० ॥ ४५ ॥ श्रावकधर्म में आदस्यो, करी हिंसा त्याग ॥ मन वच काये नादरुं, निसुणो वमजाग ॥ शां० ॥ ४६ ॥ कृत्रिम कोप करी कहे, राजा तव एह ॥ कारिज कर नहीं तो तुंने, मूकीश यमगेह ॥ शां० ॥ ४७ ॥ ते कहे मरवुं एकदा, नहीं बीजी वार ॥ पण निज व्रत भांग्या तणा, डुःखनो नहीं पार ॥ शां० ॥ ४८ ॥ यडुक्तं ॥ वरमग्गिम्मि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मणा मरणं ॥ मा गहिय वयभंगो, माजीयं खलिय सीलस्स ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ राय सुणी हरख्यो घणुं, मूक्यो यमपाश ॥ सन्मानी घोलावीयो, परशंस्यो तास ॥ शां० ॥ ४९ ॥ मातंगनो स्वामी कस्यो, करे उत्तम काम ॥ आयु पूरे यमपाश ते, पहोतो सुरठाम ॥ शां० ॥ ५० ॥ अपर अंत्यज नृपहुकमथी, कस्यो मम्मण नाश ॥ फल कडुआं हिंसा तणां, लह्यां नरक निवास ॥ शां० ॥ ५१ ॥ एम जे ए व्रत साचवे, तस लीलविलास ॥ सुख पामे सुर शिव तणां, जेम ते यमपाश ॥ शां० ॥ ५२ ॥ ठे खंडे एकवीशमी, प्रभु भाखे दयाल ॥ पहेलुं व्रत एम पालतां, लहे सुख रसाल ॥ शां० ॥ ५३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०४ ॥

इति प्राणातिपातप्रथमव्रतसंबंधे यमपाशकथानकम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयो मृषावादविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजा अणुव्रत तणो, कहे जगगुरु अधिकार ॥ चक्रायुध नृप आगले, ते निसुणो अधिकार ॥ १ ॥ क्रोध मान माया वशी, लोज

त्रिविध तेम राग ॥ द्वेष हास्य जय वीकथी, क्रीडा विकथा लाग ॥ २ ॥ रति अरति दाक्षिण्य तेम, मुखरपणुं इत्यादि ॥ एह कारणथी संजवे, जगमां मिरपावाद ॥ ३ ॥ पीडाकारक जगतमां, सत्यवाद पण तेम ॥ मृषावाद तेहने कह्यो, नहीं परिणामे क्षेम ॥ ४ ॥ यतः ॥ अलियं न जासियव्वं, अछिहुं सव्वं वि जं न वत्तव्वं ॥ सच्चंपि जं न सच्चं, जं परपीडाकरं वयणं ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ ते उविध जिनवर कह्यो, स्थूल सूक्ष्म अवधार ॥ परिहासादिकथी सुहुम, तस यतना सागार ॥ ५ ॥ स्थूल तीव्र संक्लेशथी, ते परिहरवो नित्य ॥ अवगुण जेहमां अति घणा, एहज वडुं अकृत्य ॥ ६ ॥ यदावश्यकचूर्णीकृत् ॥ जेण जासियेण अप्पणो परस्स वा अतीव वा घातो वा अतिसंकिलेसो अ जायते तं अठाए अणठाएवाण वपज्जत्ति ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ कन्या गो जूमि तणुं, जव्य अलीक निवार ॥ थापण उलवीये नहीं, कूमी साख म धार ॥ ७ ॥ तथा च लौकिकं वचः ॥ कूटसाक्षी सुहृद्द्रोही, कृतघ्नो दीर्घरोषिवान् ॥ चत्वारः कर्मचांमालाः, पंचमो जातिसंजवः ॥ तथा ॥ हस्ते नरकपालं० ॥ चांमाली प्राह ॥ मित्रद्रोही० ॥ कूटसाक्षी मृषावादी, पक्षपाती जगत्त्रये ॥ कदाचिच्चलितो मार्गे, ते० ॥ ४ ॥ पूर्व दोहा ॥ सत्य मूल छे जस तणुं, तेम विश्वास निदान ॥ सत्य स्वर्गनुं बारणुं, सत्य सिद्धिसोपान ॥ ८ ॥ मंत्रयोग सत्ये फले, धर्म अर्थ ने काम ॥ सत्यवंत दुःख नवि लहे, परीया विषमे गाम ॥ ए ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ नोकरवाली वंदीये ॥ ए देशी ॥ शांति जिणेसर एम कहे, सवि सद्दहे रे जवियण जिनवाणी ॥ व्रत बीजुं तुमे आदरो, मृषावादनुं रे कीजे पच्चरकाण ॥ १ ॥ धन्य जिनवाणी जे सुणे ॥ ए आंकणी ॥ नवि बोले रे कूडुं लवलेश ॥ ते सुखीया सोजागीया, नवि पामे रे परजव संक्लेश ॥ ध० ॥ २ ॥ पंच अतिचार एहना, वर्जीजे रे सहसाज्याख्यान ॥ अणआलोची कोइने, नवि दीजे रे अछतां अपमान ॥ ध० ॥ ३ ॥ वात एकांतनी कोइने, नवि कहीये रे रहस्यज्याख्यान ॥ जेद स्वदारामंत्रनो, नवि करीये रे जेहथी होय हाण ॥ ध० ॥ ४ ॥ मोसुवएस दीजे नहीं, विहु वढतां रे कांही कूमी बुद्धि ॥ कूम लेख लखवो नहीं, मन आणीये रे धरी समताशुद्धि ॥ ध० ॥ ५ ॥ ए व्रत आदरीया विना, नाव आवे रे

हां उपनय होय ॥
खे व्रत कोइ ॥ धूरत श्रावकसुतनो, मृषा उपरे रे इहां उपनय होय ॥
ध० ॥ ६ ॥ ठे पारदारिक दस्युनी, प्रतिकिरिया रे जे बोले अलीक ॥ तस
तिकार न को मिले, ए धारजो रे मनमां तहकीक ॥ ध० ॥ ७ ॥ चार
आश्रवनुं एकण दिशे, दिशि एकण रे मृषावादनुं पाप ॥ जारे अस-
त्यनुं वाजवुं, एम बोले रे श्रीजगगुरु आप ॥ ध० ॥ ८ ॥ वायसपद
जेम एकवुं, सामुद्रिक रे लक्षणनां लक्ष ॥ अप्रमाण करे तेम इहां,
जूठ जाखवुं रे गुणगण प्रत्यक्ष ॥ ध० ॥ ९ ॥ यतः ॥ डुग्गंधो पूइमुहो,
अणिठवयणो अफरुस वयणो अ ॥ जल एल मूअ मम्मण, अलिअ
वयण जंपणे दोसा ॥ १ ॥ इह लोए चिय जीवा, जीहाछेहं वहं च
वंधं वा ॥ अयसं धणनासं वा, पावंति अ अलिय वयणाउ ॥ २ ॥ पूर्व
ढाल ॥ कूडसाखी उपरे कह्यो, जड शेठनो रे प्रभुजी दृष्टांत ॥ निसुणे
चारे पर्षदा, गुणअर्थी रे मन धरी एकांत ॥ ध० ॥ १० ॥ धरणीप्रति-
ष्ठित नयरमां, धनवर्जित रे दोय वणिक वसंत ॥ डुष्टबुद्धि सुबुद्धि
जलो, धन कारण रे परदेश जमंत ॥ ध० ॥ ११ ॥ कोइक पुर मांहे गया,
लाजहेते रे रह्या केता दिह ॥ देहचिंता टाळण जणी, एक दिन गयो
तेह सुबुद्धि अबीह ॥ ध० ॥ १२ ॥ खंनित घर मांहे खोदतां, जाग्य-
योगे रे जड्युं तास निधान ॥ बेहु मली जोवे यदा, एक सहस्स रे
दीनारनुं मान ॥ ध० ॥ १३ ॥ कृतकृत्य थइ निज पुर वल्या, आवी उप-
वने रे करे एम विचार ॥ नयरमेले जातां थका, ए वातनो रे वधशे
विस्तार ॥ ध० ॥ १४ ॥ डुष्टबुद्धि कहे ए सवि, धन दाटीये रे जूमिमां
ऊण ठाम ॥ शत एकेकने आशरे, लेइ जइये रे आपण निज धाम ॥ ध० ॥
१५ ॥ सरलपणे धीजे सवे, वात मानी रे कीधुं ते काम ॥ वट पासे
धन दाटीने, परजाते रे आव्या ते निज ठाम ॥ ध० ॥ १६ ॥ श
दीनार ते डुष्टनी, दिन केते रे नाठी तत्काल ॥ पुण्य विना स्थिर न
रहे, एह संपद रे सुणो जवि उजमाल ॥ ध० ॥ १७ ॥ यतः ॥
निमित्तद्धिपां हेम, नायुर्वेधकविद्धिपाम् ॥ न श्रीर्नीतिद्धिपामेक,—म
धर्मद्धिपां न हि ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ पुनरपि बेहु मली एकठा,
लाव्या रे शत शत दीनार ॥ अन्य दिवस डुर्बुद्धि ते, मन मांहे रे
एम विचार ॥ ध० ॥ १८ ॥ वंची सुबुद्धिने एकलो, जइ लावुं रे स

ते माल ॥ शुं न करे धनलालची, धन सम नहीं रे जगमां कोइ लाल ॥ ध० ॥ १ए ॥ राते जइ सवि सामटुं, धन लाव्यो रे कपटी ते कुजात ॥ ठल करी सरलने ठेतरी, धनलोनी रे वंचे निज तात ॥ ध० ॥ २० ॥ साथे तेमी जइ तेहने, पढे जोयुं रे तेणे धनगण ॥ मांहे कांही दीसे नहीं, कपटीनां रे जुर्ज एह विन्नाण ॥ ध० ॥ २१ ॥ हा हा उर्बुद्धि कहे, मुक वंची रे कोइ धूरत एह ॥ माल लेइ गयो माहरो, हेयुं कूटे रे हाथेशुं तेह ॥ ध० ॥ २२ ॥ चिंते सुबुद्धि चित्तमां, एह धूरत रे एहनां सवि काम ॥ धूत्ता होय सुलक्रणा, जग मांहे रे कहेवाये आम ॥ ध० ॥ २३ ॥ अम विहु विण को नवि लहे, एह स्थानक रे त्रीजो जन मात्र ॥ सही लीधुं आवी एणे, एह जेहवो रे जग नहीं कमजात ॥ ध० ॥ २४ ॥ खंम ठठे बावीशमी, ढाल नाखी रे निसुणो गुणवंत ॥ इव्य समो नहीं को रिपु, जेणे मेहव्युं रे धन तेह सत्यवंत ॥ ध० ॥ २५ ॥ ७१७ ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे सुबुद्धिने पापीयो, तें सही लीधुं एह ॥ बीजुं कोइ जाणे नहीं, तुं थयो सही निःस्नेह ॥ १ ॥ कहे सुबुद्धि उर्बुद्धि सुण, मुक मन एहवुं हुंत ॥ तो एकांते ए लह्युं, शाने तुक सोपंत ॥ २ ॥ पण वंचक तुंहीज सही, जग मांहे शिरदार ॥ तुक विण दूजो को नहीं, ए निधान लेनार ॥ ३ ॥ प्रीति रही नहीं तेउने, कलहो लाग्यो जोर ॥ मांहोमांहि धन कारणे, बोले वयण कठोर ॥ ४ ॥ जगमता बेहु आवीया, नरपतिने दरबार ॥ अरज करे उंचे स्वरे, उष्टबुद्धि तेणी वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ ए देशी ॥ राजन् अम बेहु पामीया, निधि कोइक ठाम उदार रे ॥ साहिब सुणो विनति ॥ ए आंकणी ॥ तुक नयथी अमे वृक्ष तले, लेइ संताड्युं निर्धार रे ॥ सा० ॥ १ ॥ मुज वंची एणे लीयुं, नहीं नूमि मांहे ते निधान रे ॥ सा० ॥ तुक विण कुण मुक सांनले, फरियाद ए सुगुणनिधान रे ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम बेठां ए नयरमां, वरते जो एहवो अन्याय रे ॥ सा० ॥ तो अम जेहवा अनाथनी, कहोने हवे शी गति थाय रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कहे राजन साखी इहां, ठे कोइ के कल्पित वात रे ॥ सा० ॥ धन कारण बहु केलवे, एम

कूम घणां कमजात रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ कहे डुर्बुद्धि इहां साखीयो, ठे वट-विटप महाराज रे ॥ सा० ॥ ते जो साख जरे इहां, तो देजो सावाश रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ लीधुं सुबुद्धिए वित्त ए, एम जो कहे ए वनवाणी रे ॥ सा० ॥ तो मुज साचो जाणजो, घणुं शुं कहुं तुमने ताणी रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ कहे नृपति जो एम हशे, तो पामीश बहु सन्मान रे ॥ सा० ॥ जो जूगे थाइश इहां, तो डुःख लहीश असमान रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ डुर्बुद्धि कहे रायने, करशुं प्रजाते ए काज रे ॥ सा० ॥ नरवर कहे ते बेहुने, जाउं देइ जमान घर आज रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ ते बिहु निज मंदिर गया, मन मांहे विमासे सुबुद्धि रे ॥ सा० ॥ डुर्घट काम एणे पमिवज्युं, कल शी केलवशे डुर्बुद्धि रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ अथवा जय होवे धर्मथी, नहीं खोटुं इहां तिलमात रे ॥ सा० ॥ श्यो नय मन मांहे आणवो, जिहां कूम त्यां धूम कहात रे ॥ सा० ॥ १० ॥ डुर्बुद्धि जइ निज घरे, कहे तात प्रत्ये समजाय रे ॥ सा० ॥ लाव्यो निधान हुं रातमां, ऊगमो मंमाणो थाय रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ जड शेठ वलतुं कहे, हवे करवो कोण उपाय रे ॥ सा० ॥ धन वाहालुं एकण दिशे, एक दिशि इज्जत कहेवाय रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ पुत्र कहे निर्धन तणी, इज्जत श्ये आवे काम रे ॥ सा० ॥ धनहुंती इज्जत घणी, वली वाधे जग मांहे माम रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ माटे वटकोटर वचे, पेसी रहो राते तात रे ॥ सा० ॥ प्रजाते कहेजो तुम्हे, धन लीधुं सुबुद्धे एम वात रे ॥ सा० ॥ १४ ॥ सुत उपरोधे मानीयुं, तेणे डुष्कर पण काम रे ॥ सा० ॥ अति लोनी नर जे हुवे, तेहनी न रहे जगमां माम रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ राते रह्यो वटकोटरे, प्रजाते मह्यां जनवृंद रे ॥ सा० ॥ महीपति पण तिहां आवीयो, जुवो कपटीनो हवे फंद रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुरजन नृप सहु देखतां, वटनरु पूजे जजनाव रे ॥ सा० ॥ डुष्टबुद्धि एम उचरे, कहो डव्यनी अमने जाव रे ॥ सा० ॥ १७ ॥ वैश्रमणालय मानजो, तुम उपर एह विवाद रे ॥ सा० ॥ सघले मलीने ठेरावीयो, कहो जेम होय अम आल्हाद रे ॥ सा० ॥ १८ ॥ वटकोटर मांहे रह्यो, सहु सांनलतां जड शेठ रे ॥ सा० ॥ कहे निसुणो सहु को तुम्हे, ए काम सुबुद्धिनुं ठेठ रे ॥ सा० ॥ १९ ॥ राय कहे ते सुबुद्धिने, निधि लीधो मुज देखाम

रे ॥ सा० ॥ चिंते सुबुद्धि तरु नवि कहे, दुर्बुद्धे रच्युं सवि आळ रे ॥ सा० ॥ २० ॥ थडकोटरथी नीसरी, वाणी नरनी ए थाज रे ॥ सा० ॥ सांकेतिक सहु इहांकणे, कोइ नरथी थयुं ए काज रे ॥ सा० ॥ २१ ॥ कर जोडी कहे भूपने, में देवुं धन उल्लास रे ॥ सा० ॥ पण जो हुकम होय राउलो, तो हुं करुं एक अरदास रे ॥ सा० ॥ २२ ॥ कहे राजा सुणो विनवो, कहे में लीधुं धन तेह रे ॥ सा० ॥ पण ए तरुकोटर विचे, मूकीने गयो निज गेह रे ॥ सा० ॥ २३ ॥ एक दिन सेठ आवीयो, तव दीठो इहां अहि एक रे ॥ सा० ॥ फण मांडी उपर रह्यो, भयंकर दीसे अति छेक रे ॥ सा० ॥ २४ ॥ मुज धन अधिष्ठायक थइ, रह्यो जो कहो तो हणुं देव रे ॥ सा० ॥ राय अनुज्ञा तव हुइ, करो कारिज एहेवा हेव रे ॥ सा० ॥ २५ ॥ शर्षप छगण सेइ घणां, तरुकोटर पूर्यं सुबुद्धि रे ॥ सा० ॥ अग्निथी धूम थयो घणो, गइ जड तणी शुद्धबुद्धि रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ लोचन आकुलाणां घणुं, पड्यो उछलीने भूपीठ रे ॥ सा० ॥ पुरपति पुरजन सहु मल्यां, जड शेठने प्रत्यक्ष दीठ रे ॥ सा० ॥ २७ ॥ पूछे सकौतुक सहु तिहां, कहे सुत दुष्टे मुज लाज रे ॥ सा० ॥ मोकरावी सहु शहेरमां, एणे कीधुं नीच अकाज रे ॥ सा० ॥ २८ ॥ कृपा साम्य जरावीने, तव इज्जतनो कर्यो नाश रे ॥ सा० ॥ मुज जेवो जग को नहीं, पड्यो मोह तणे हुं पाश रे ॥ सा० २९ ॥ वाक्य अलीक सुतने कह्युं, एहीज नवमां नरदेव रे ॥ सा० ॥ एम जाणीने सहु तुम्हे, मन गमो अलीकनी टेव रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ जड तणी राय मूर्छीयो, तस सुत लेइ नूपाल रे ॥ सा० ॥ धन सघलुं लेइ करी, पुर बाहिर कर्यो तत्काल रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ सुबुद्धि तणी सन्मानीयो, देइ वस्त्राभरण अमूल्य रे ॥ सा० ॥ नृप जन सहु घर आवीयां, जग एहवुं असत्यनुं शूल रे ॥ सा० ॥ ३२ ॥ इह परभव दुःखदायकु, जाणीने असत्य तजो दूर रे ॥ सा० ॥ सुण चक्रायुध राजीया, सत्यथी होय सुख सनूर रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ एम पीता उपदेश कर्यो, सनुजीए गंधर्व गान रे ॥ सा० ॥ कहे सहि शिर नामी, कही गमविजये ए ढाल रे ॥ सा० ॥ ३४ ॥
इति सुबुद्धिदुर्बुद्धिमंत्रिकथानकं ॥ सर्व गाथा ॥

॥ अथ तृतीयः स्थूलअदत्तादानविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्थूल अदत्त परित्यागनुं, व्रत त्रीजुं कहे स्वामी ॥ चक्रायुध नृप आगले,सवि नविजन हितकाम ॥ १ ॥ स्वामी जीव गुरु तीर्थंकर,अदत्त कह्युं चउ नेद ॥ चउ नेदे ए साधुने, तजवुं तजी मन खेद ॥ २ ॥ कनकादिक स्वामिअदत्त, नवि लीजे कोइ वार ॥ सचित्त फलादिक नेदतां, जीवादत्त विचार ॥ ३ ॥ तेह फलादिक जीवडे, नवि दीधा निज प्राण ॥ तेह नणी लेवुं नहीं, सचित्त फलादिक जाण ॥ ४ ॥ गृही दीधुं पण साधुने, आधाकर्मी जेह ॥ तीर्थंकर आणा नहीं, अदत्त तीर्थंकर तेह ॥ ५ ॥ श्रावकने प्रासुक वली, अनक्ष ने काय अनंत ॥ वावरतां तीर्थंकरे, अदत्त कह्युं नगवंत ॥ ६ ॥ सर्व दोष निर्मुक्त पण, अनिमंत्री गुरु सार ॥ जे नुंजीजे ते कह्यो, गुरुअदत्त सुविचार ॥ ७ ॥ स्वामिअदत्तनो इहांकणे, स्थूल व्रते अधिकार ॥ यत्न करीने राखवो, ए व्रत निरतिचार ॥ ८ ॥ चोरानीत न लीजीये, चोरप्रयोग निवार ॥ सरस नीरस वेहु नेलीने, नवि कीजे व्यापार ॥ ९ ॥ राज्यविरुद्ध न कीजीये, कूट तुला ने मान ॥ पंच दोष ए टालतां, शुद्ध व्रत कह्युं निदान ॥ १० ॥ यदुक्तं ॥ चोरश्चौरार्पको मंत्री,नेदज्ञः काणकक्रयी ॥ अन्नदः स्थानदश्चेति, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आदि ए आदि जिणेसर, नानि नरिंद मल्हार ॥ ए देशी ॥ शांति जिनेश्वर एम कहे, सांनलो सवि नर नारी ॥ एह अतिचार टालवा, चौरप्रसूति निवार ॥ जलवुं ए कुशलनुं पूछवुं, संज्ञाकरण सुविचार ॥ राजनोग्य धननिह्नव, अवलोकन तेम धार ॥ १ ॥ छठुं अमार्गनुं दर्शन, शय्यासमर्पण जाणो ॥ पदनंग जाणीये आठमो, विश्राम नवम वखाणो ॥ पादपतन आसन तिम, गोपन मन नवि आणो ॥ खंमखादन माहाराजिक, वर्जे ए सुगुण सुजाणो ॥ २ ॥ पद हितकारक पय, उपण जल तेल न दीजे ॥ पाकने कारण अग्निनुं, दान कदापि न कीजे ॥ पानने अर्थे शीतल जल, दीधे ए लाज न लीजे ॥ पशुबंधनने ए रज्जुनुं, दान देतां गुण छीजे ॥ ३ ॥ चौरप्रसूति अढार ए, जाणी करे जेह त्याग ॥ सुजस महोदय ते लहे, दिन दिन अधिक सोनाग ॥

॥ अथ चोरप्रसूतिकास्वरूपं गाथानिर्लिख्यते॥ जलनं कुशलं तर्जा, राजभागोऽवलोकनम् ॥ अमार्गदर्शनं शय्या, पदभंगस्तथैव च ॥ १ ॥ विश्रामपादपतनं, चासनं गोपनं तथा ॥ खंमस्य खादनं चैव, तथान्यन्माहाराजिकम् ॥ २ ॥ पद्याग्न्युदकरज्जूनां, प्रदानं ज्ञानपूर्वकम् ॥ एताः प्रसूतयो ज्ञेया, अष्टादश मनीषिभिः ॥३॥ पूर्व ढाल ॥ एह अदत्त निवारीने, साधे जे मुक्तिनो माग ॥ ते गृही उत्तम गति लहे, आगल शिवगति लाग ॥ ४ ॥ यदुक्तं ॥ खिते खले अरन्ने, दिआयराउं व सव्व घाए वा ॥ अन्नो से न विणस्सइ, अचोरिआए फलं एयं ॥ ४ ॥ गामागर नगराणं, दोण मुह मंमवं पट्टणाणं च॥ सुइरं हवंति सामी, अचोरिआए फलं एयं ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ ए व्रत पालवुं यलथी, जिनदत्त परे सुखकार ॥ चक्रायुध नृप आगले, कहे प्रज्ञु तस अधिकार ॥ नयर वसंतपुरे वसे, जिनदास श्रावक सार ॥ जीवाजीवादिक तत्त्वना, जाणे ए अर्थ विचार ॥ ६ ॥ जिनदत्त नामे ए नंदन, जन आनंदन जाचो ॥ जिनवर धर्म समाचरे, जाणे ए मारग साचो ॥ कुल कन्या विवाहनी, वात मांहे हवे राचो ॥ मात पिताने जिनदत्त, कहे संसार ए काचो ॥ ७ ॥ मित्रमंमलशुं परवस्यो, एक दिन उपवन जाय ॥ देखी उत्तंग मनोहर, जिनगृह हर्षित थाय ॥ मित्र संघाते ए आवे रे, जाव धरी मन मांहि ॥ पूजा करी जिनराजनी, चैत्यवंदन करे त्यांहि ॥ ८ ॥ अथ चैत्यवंदनं ॥ जय जय तुं जिनराज आज, मलीयो मुऊ स्वामी ॥ अविनाशी अकलंक, रूप जग अंतर्यामी ॥ रूपारूपी धर्म, देव आतम आरामी ॥ चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिवलीला पामी ॥ सिद्धि बुद्धि तुम वंदतां ए, सकल सिद्धि वर बुद्धि ॥ राम प्रज्ञु ध्याने करी, प्रगटे आतम ऋद्धि ॥ १ ॥ काल बहु स्थावर घरे, जमीयो जव मांहि ॥ विकलेंद्रिय मांहि वस्यो, स्थिरता नहीं क्यांहि ॥ तिरि पंचेंद्रिय मांहि देव, कर्मे हुं आयो॥ करी कुकर्म नरके गयो, दरिसन नवि पायो ॥ एम अनंत काले करी ए, पाम्यो नरअवतार ॥ हवे जगतारण तुं मिल्यो, जवजलपार उतार ॥ २ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ अथ स्तवनं ॥ श्री राग ॥ मुनि ध्येय नमो सुर गेय नमो, पतितपावन शुचि नाम नमो ॥ चिंतित सकल मनोरथ पूरण, कल्पतरु परिणाम नमो ॥ मु० ॥ १ ॥ जिनमुनिनाथ जिनेश्वर शंकर,

परमातम अरिहंत नमो ॥ पारंगत परमेष्ठी अधीश्वर, जयजंजन जगवंत नमो ॥ मु० ॥ २ ॥ शंज्ु स्वयंजु जगत्प्रजु अजयद, वीतराग गुणसिंधु नमो ॥ त्रिहुं कालके ज्ञायक, अशरण शरण सुबंधु नमो ॥ मु० ॥ ३ ॥ केवलकमलाकंत महोदय, सिद्ध बुद्ध सर्वज्ञ नमो ॥ तीर्थंकर तीर्थेश्वर ईश्वर, पुरुषोत्तम परमज्ञ नमो ॥ मु० ॥ ४ ॥ आप्त अनंत अचिंत्य गुणाकर, निर्मोही अविकार नमो ॥ पूर्णानंद स्वयंबुद्ध साहिब, योगीश्वर जितमार नमो ॥ मु० ॥ ५ ॥ लोकालोक प्रकाशक जासक, आनंदघन अविनाश नमो ॥ देवाधिदेव शरण एक तेरो, क्षायिक जावविलास नमो ॥ मु० ॥ ६ ॥ इत्यादिक शुज नामके धारक, करुं प्रणिपत्य त्रिहुं काल नमो ॥ राम कहे करो सेवक उपर, करुणा दीनदयाल नमो ॥ मु० ॥ ७ ॥ इति श्रीजिनस्तुतिः ॥ पूर्व ढाल ॥ एहवे तिहां एक आवी ए, जावी कनी मनरंगे ॥ यौवन रूप रसाली, मनोहर वाणी सुचंगे ॥ निज उत्तरीय करी मुख,–कोश धरी मन जाव ॥ जिनमुख मंमन करती, मनोहर रंग बनाव ॥ ए ॥ अंगे ए आंगी अनोपम, उंपती कांति अपार ॥ केसर घन घनसारशुं, विरचे ए विविध प्रकार ॥ पत्रवल्ली रचना वली, नवली कपोले ए सारी ॥ करती श्री जिनबिंबने, कुमरे नीहाली ए नारी ॥ १० ॥ जिनदत्त कहे निज मित्रने, कोण कनी ए सारी ॥ जक्ति करे जगवंतनी, मित्र कहे सुविचारी ॥ प्रियमित्र सारथवाहनी, नंदनी जिनमती नामे ॥ शुजलक्षण संपूरण, स्रष्टे घमी एह कामे ॥ ११ ॥ रूपे ए सरिखी रे ताहरे, जोडी मिले गृहवास ॥ तो सफलो होय विधि तणो, ए निर्माणप्रयास ॥ जिनदत्त कहे जिनजुवनमां, हास्य न कीजे ए जाइ ॥ आशातन होय जिन तणी, विषयकथा दुःखदायी ॥ १२ ॥ जघन्यतोऽपि जिनगृहे दश आशातना वर्जनीयाः ॥ तद्यथा ॥ तंबोल पाण जोयण, वाणह मेहूण सवण निठुवणं ॥ मुत्तुच्चारं जूअं, वज्जे जिणनाह जगईए ॥ ६ ॥ उत्कृष्टतश्चतुरशीतिसंख्यया आशातना वर्जनीयाः ॥ तद्यथा ॥ खेलं १ केलि २ कलिं ३ कला ४ कुललयं ५ तंबोल ६ मुगालयं ७, गाली ८ कंगुलीया ए सरीरधवणं १० केसे ११ नहे १२ लोहियं १३ ॥ जत्तो १४ सत्तय १५ पित्त १६ वंत १७ दसणा १८ विस्सामणं १ए दामणं २०, दंत २१ च्छी २२ नह २३ गल्ल २४ नासझ २५ सिरो २६ सुत्त २७ छवीणं २८ मलं ॥

७॥ मंतं २ए मीसण ३० लिक्खियं ३१ विनजणं ३२ नंमार ३३ छुघ्रासणं ३४ ठाणी ३५ कप्पम ३६ दालि ३७ पप्पम ३० वमी ३ए विस्सारणं नासणं ४० ॥ अक्कंदं ४१ विकहं ४२ सरबघमणं ४३ तेरिछसंठावणं, ४४ अग्गीसेवण ४५ रंधणं ४६ परिखणं ४७ निस्सीहियानंजणं ४० ॥ ० ॥ ठत्तं ४ए वाहण ५० सत्र ५१ चामर ५२ मणोणेगत्त ५३ मप्पिंगणं, ५४ सच्चित्ताण ५५ मचायचायमजिए ५६ दिठीइ नोअंजली ५७ ॥ साडे गत्तरमंगनंग ५० मजमं ५ए मोलिं ६० सिरे सेहरं, ६१ हुड्डा ६२ जिंडुह ६३ गिड्डीआइरमणं ६४ जोहार ६५ नंमक्किअं ६६ ॥ ए ॥ रिकारं ६७ भरणं ६० रणं ६ए विवरणंवालाण ७० पल्लछिअं, ७१ पाउ ७२ पायपसारणं ७३ पुमपुमी ७४ पंकं ७५ रउ ७६ मेहुणं ७७ ॥ जूअं ७० जेमण ७ए गुज्ज ०० विज्जा ०१ वणिजं ०२ सिज्जं ०३ जले मज्जणं, ०४ एमाइ अमवज्ज कज्जं मुजुर्ज वज्जे जिणंदालए ॥ १० ॥ इति चतुरशीति आशातनाविचारः ॥ १० ॥ पूर्व ढाल ॥ जाणो ए आशय माहरो, दक्ष तमे गुणवंता ॥ धारिय सेह ए नरनव, हुं करशुं फलवंता ॥ जिनमुख मंमन चातुरी, नार सही पूछुं एह ॥ नहीं लवलेशथी माहरे, एह उपर कांइ नेह ॥ १३ ॥ कीजे ए केम जिनमंदिर, नारीकथा सुणो नाइ ॥ एम कहीने रह्यो जिनदत्त, जिनमुख दृष्टि लगाइ ॥ जिनदत्त कुमर नीहालतां, थयो मनमां अनुराग ॥ शुन आकार ए जो वरुं, तो महारुं वम नाग्य ॥ १४ ॥ जाणवुं सर्वीजन स्वामिनी, जिनदत्त उपरे मोही ॥ मेल मले किम वालनो, कुंवरी ए निर्मोही ॥ जिनमती पण घरे आवी रे, पितरने कहे सवी वात ॥ ते निसुणी मन रीजीया, थइ सुखिणी मवि भ्रात ॥ १५ ॥ जिनदत्त पण घरे आवीयो, करे वाम व्यवहार ॥ न्यायमारग नवि लोपे ए, पाले अवंर आचार ॥ खंम उठे ए चोवीशमी, ढाल कही मनरागे ॥ राम कहे हवे रहूनी, वात सुणो नवि आगे ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ ०७२ ॥ ४७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ मित्रमित्र मारयवाद, गयो जिनदासने मंदिरे ॥ मेलणने विषाद, हर्ष धरी देवानुं ॥ १ ॥ तेहने दीधो मान, जिनदासे आदर घणो ॥ पूछुं वहो कुण काम, पावरास्या अम आंगणे ॥ २ ॥ ते कहे कन्यादान, देवाने हुं आवीयो ॥ सुण सुत सुगुणनिधान, अम मनमां घणुं नावीयो ॥

३ ॥ कीधी वात प्रमाण, जिनदत्तने जनके तिहां ॥ आव्यो घरे सुजाण, मुह माग्या पासा ढल्या ॥ ४ ॥ जिनदत्त मंदिर मांहि, आव्यो वात कही सवे ॥ पण संयमनी चाह, नवि इछे विवाहने ॥ ५ ॥ जिनमंदिरनी वात, मांमीने सघली कही ॥ पण ते निसुणी जात, मौन धरी मनमां रह्यो ॥ ६ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥

॥ चांदलीयोने उग्यो रे हरणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥ जिनमती बोले रे सहीयर माहरी रे, मन हरी जिनदत्ते लीध ॥ रयणी न जाये रे वेरिणी थइ रही रे, कांइ मुज कामण कीध ॥ जि० ॥ १ ॥ चंदनशीतल चंद्रनी चंद्रिका रे, मुज तन दहे रे अपार ॥ रात दिवस मुने वहुल सांजरे रे, श्वास मांहे सो वार ॥ जि० ॥ २ ॥ वैर वसाव्युं रे एहने निरखतां रे, नवि लही प्रीतिनी रीत ॥ बाहेर दीसे रे शीतल ए सही रे, पण ते ए अग्निनी भित्त ॥ जि० ॥ ३ ॥ माया लगाडी रे जिनघरे आवीने रे, पण नहीं मुजशुं रे राग ॥ हुं तस कारण अहोनिश टलवलुं रे, पण मिलवुं होवे भाग्य ॥ जि० ॥ ४ ॥ निगुणो वैरागी रे में तेहने सही रे, एक पखी रे एह प्रीत ॥ केम जोमाशे रे सहीयर माहरी रे, सयल विमासण चित्त ॥ जि० ॥ ५ ॥ सहीयर बोले रे धर धीरज मने रे, मिलशे हो वाल्हिम तेह ॥ तुजथी विवाहनी वातने सांजली रे, मौन धरी रह्यो तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ एम अनुरागे रे दिवस घणा गया रे, एक दिन घरथी रे तेह ॥ नीसरती निरखी रे पुररक्षके रे, वसुदत्ते ससनेह ॥ जि० ॥ ७ ॥ मोहनगारी रे निरखी मानिनी रे, मन मांहे मोह्यो अत्यंत ॥ जनकने नाखे रे परणावो मुने रे, जिनमती एह एकांत ॥ जि० ॥ ८ ॥ प्रियमित्र बोले रे ए जिनदत्तने रे, दीधी अम्हे सुणो संत ॥ माटे कहुं हवे ए शा कामनुं रे, सुणी तेह कोप धरंत ॥ जि० ॥ ९ ॥ दुष्ट रीसालो रे जिनदत्त उपरें रे, विषय ए अनरथमूल ॥ विषयविलुद्धा रे जग मांहे मानवी रे, गति मति निसे सवि धूल ॥ जि० ॥ १० ॥ एक कनक रे दूजी कामिनी रे, दोय घाटी विकराल ॥ बहु लेखाणा रे एह मांहे पापमा रे, तस नहीं सार संजाल ॥ जि० ॥ ११ ॥ आरक्षक ते नाके अहोनिशे रे, जिनदत्त हणवाने काज ॥ मन मांहि चिंते रे ए मारे चके रे, सही मुज महोटो

२३

रे काज ॥ जि० ॥ १२ ॥ एम निष्कारण जग मांहे पापीया रे, बांधे हो कर्मनो राशि ॥ सरल स्वभावी रे जिनदत्तने मने रे, वरते हो भाव उदास ॥ जि० ॥ १३ ॥ एक दिवस नृप रहवाडी चढ्यो रे, गयो उद्यान मकार ॥ वलतां विचाले रे कुंमल काननुं रे, पमीयुं रे कोइक ठार ॥ जि० ॥ १४ ॥ घरे आवीने रे राये जाणीयुं रे, कीधो हुकम कोटवाल ॥ कुंमल जोवा रे तुरत ते चालीयो रे, वसुदत्त थइ उजमाल ॥ जि० ॥ १५ ॥ कर्मसंयोगे रे कोइक कारणे रे, तिण वाटे जिनदत्त ॥ आगल चाल्यो रे बाहिर तिण समे रे, जोजो भावि निमित्त ॥ जि० ॥ १६ ॥ कुंमल दीवुं रे तेणे मारग पड्युं रे, तजी मारग तेणी वार ॥ दूर थइने रे अलगो नीसर्यो रे, सामुं न जोयुं लगार ॥ जि० ॥ १७ ॥ यतः ॥ आत्मवत्सर्वभूतानि, पर-द्रव्याणि लोष्टवत् ॥ मातृवत्परदारांश्च, यः पश्यति स पश्यति ॥ १ ॥ यः पर-दारे० ॥ पूर्व ढाल ॥ वसुदत्त आव्यो रे फिरतो तिहांकणे रे, पमीयुं कुंमल देखी ॥ तुरत लेइने नृपने सोंपीयुं रे, नृप लह्यो हर्ष विशेष ॥ जि० ॥ १८ ॥ नरपति पूछे रे किहां ए पामीयुं रे, ते कहे जिनदत्त हाथ ॥ जिनदत्त शाह रे परधन नवि हरे रे, एम बोले पुरनाथ ॥ जि० ॥ १९ ॥ कहे वसुदत्त ए सरिखो को नहीं रे, चोर अवर रे संसार ॥ धर्मी नाम धरावी धीरवे रे, परवंचक ए धूतार ॥ जि० ॥ २० ॥ नाम न लीजे रे साहेब एहनुं रे, एहवो नीच न कोय ॥ दुर्जन आव्या रे दावने चालते रे, रुठ्यो नृप सुणी सोय ॥ जि० ॥ २१ ॥ वध आदेश कर्यो कोटवा-लने रे, काने काचा हो राय ॥ जोजो विषय थकी विष नीपन्युं रे, कीधां कर्म न जाय ॥ जि० ॥ २२ ॥ क्रोधवशे वसुदत्ते बांधीयो रे, जिनदत्तने ततकाल ॥ पुरमां सहु कोय हाहारव करे रे, ए शुं थयुं रे अकाल ॥ जि० ॥ २३ ॥ जिनदत्त जेहवो धर्मी को नहीं रे, न करे एम अन्याय ॥ पण दुर्जन वसुदत्त भंभेरीयो रे, ज्ञान विहुणो ए राय ॥ जि० ॥ २४ ॥ कहेण न माने रे राजा कोइनुं रे, वसुदत्त रोष अपार ॥ रक्त चंदने लेपी तनु तेहनुं रे, कर्यो कणवीर सिंगार ॥ जि० ॥ २५ ॥ रासभ उपरे ते चढा-वीयो रे, लेइ चाल्यो वसुदत्त ॥ तुर्ते जिनदत्त अवस्था शी लही रे, कर्म उदय प्रपंच ॥ जि० ॥ २६ ॥ विरस वजाडे रे डिंडिम आगले रे, दहे बहु वांसे हो मार ॥ नागरजन परिजन रोवे घणुं रे, ए शुं कर्युं किरतार

॥ जि० ॥ २७ ॥ एहवा पुरुषरयणने मारतां रे, केम वहे नीचना हाथ ॥
केम एहवी गुणवंतने आपदा रे, शे दीधी जगनाथ ॥ जि० ॥ २८ ॥
चोक महेल गोंखे रही मानिनी रे, जोवे जिनदत्तरूप ॥ गति एहनी
नारीनी शी हशे रे, थयुं ए अकाज विरूप ॥ जि० ॥ २९ ॥ आव्यो प्रिय-
मित्र सारथवाहने रे, मंदिर हेठे रे तास ॥ सुणी कोलाहल आवी
गोखमां रे, जिनमती सुदती उल्लास ॥ जि० ॥ ३० ॥ दीठो रे जेहवे ते
जिनदत्तने रे, रुदन करे तेणी वार ॥ हा मुज वालेसर जिनदत्तने रे, कां
रुठो किरतार ॥ जि० ॥ ३१ ॥ हैयडुं जराइ रे आव्युं हेजथी रे, नयण
वहे जलधार ॥ शोकपयोनिधि वेल वधी घणुं रे, अहो अहो मोहप्रकार
॥ जि० ॥ ३२ ॥ कां मुज उपरे दैवज कोपीयो रे, जे मुज जीवनप्राण ॥
ए जिनदत्तने जो तें एम कर्युं रे, हवे जीव्युं अप्रमाण ॥ जि० ॥ ३३ ॥
एम विलपंती दीठी ते सती रे, मन चिंते जिनदत्त ॥ पार नहीं कांइ
एहनी प्रीतिनो रे, मुज उपर एकचित्त ॥ जि० ॥ ३४ ॥ मुज दुःख देखी
रे दुःखिणी ए घणुं रे, अहो ए नेह अछेह ॥ जो मुज आवे रे दुःखनो
छेहडो रे, तो करुं एहथी सनेह ॥ जि० ॥ ३५ ॥ नहींतर मुजने सागारी
हजो रे, अणसण परजव सार ॥ एम चिंतवतां रे आव्यो तेहने रे. वध-
स्थानक तेणी वार ॥ जि० ॥ ३६ ॥ प्रियमित्र सारथवाहनी पुत्रिका रे,
जइ घरे चैत्य मकार ॥ जइ जिनवर आगल प्रणमी करी रे. करे एम
मनशुं विचार ॥ जि० ॥ ३७ ॥ में मुज वालेसर जिनदत्तनुं रे, कष्ट टले
निर्धार ॥ एह काउस्सग्ग तो पारेवो सही रे, रही उभी निरधार ॥ जि०
॥ ३८ ॥ चित्तशुं चिंती शासनदेवता रे, करजो मुजने सहाय ॥ जो हुं
साची हुं जिनशासने रे, तो मुज राखजो लाज ॥ जि० ॥ ३९ ॥ तुष्ट
थइ तस शीलप्रजावथी रे, शासनदेवी ते वार ॥ आवे तिहां शूली भांजी
करी रे, नृप करे सेवे अप धार ॥ जि० ॥ ४० ॥ नर थांप्यो शूली नव
दोरिका रे, करे सब सहस्रप्रहार ॥ कुसुम तणी माला जेम ते थयो रे, सरखो
शीलआधार ॥ जि० ॥ ४१ ॥ जइ आरक्षक नरे नृप विनव्यो रे, थय
विस्मय मन भारी ॥ आव्यो तिहां दोडी उतावलो रे, जय जय शुं गुणधार
॥ जि० ॥ ४२ ॥ गज केसरी आण्यो सहेलनां रे, सहु करे जयजयकार ॥
नरपति पूछे पुरजनी कहो रे, वसुदत्तनो अधिकार ॥ जि० ॥ ४३ ॥ नर-

पति कोप्यो वसुदत्त उपरे रे, मूकाव्यो जिनदत्त ॥ सज्जन जिनशासन आराधतां रे, सहु उपरे सम चित्त ॥ जि० ॥ ४४ ॥ जिनदत्तनी परशंसा सहु थयी रे, धन्य धन्य ए जिनधर्म ॥ राजहुकमथी मंदिर आवीयो रे, सहु साजन लह्यां शर्म ॥ जि० ॥ ४५ ॥ वात सुणीने काउस्सग्ग पारीयो रे, जिनमती हर्षे न माय ॥ धन्य जिनशासननी रखवालिका रे, शासनदेवी तुं माय ॥ जि० ॥ ४६ ॥ वात सुणी प्रियमित्रना मुख थकी रे, हरख्यो मन मांहि तेह ॥ परणी शुज मुहूरत सा सुंदरी रे, वाध्यो सबल सनेह ॥ जि० ॥ ४७ ॥ जोग्य विषयसुख जोगवीयां घणां रे, जिनमतीशुं मनरंग ॥ एक दिवस मुनि सुस्थितनी कने रे, हर्षे संयम मन उछरंग ॥ जि० ॥ ४८ ॥ चारित्र जोगुं पाली चित्त चोखे बन्हे रे, थयां सुरवर सुरलोक ॥ शांति प्रजु त्रीजा व्रत उपरे रे, कह्यो उपनय गतशोक ॥ जि० ॥ ४९ ॥ उडे खंडे रे ढाल पचवीशमी रे, रामविजय कही सार ॥ परधन परनारीथी वेगला रे, तेहना धन्य अवतार ॥ जि० ॥ ५० ॥ इति परद्रव्यापहारविरमणे तृतीयं जिनदत्तकथानकं ॥ ३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४७ ॥ श्लो० ॥ ४७ ॥

॥ अथ चतुर्थो मैथुनविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ जिनवर कहे, सुण चक्रायुध जूप ॥ आलस अलगुं परहरी, हवे अब्रह्म सरूप ॥ १ ॥ स्थूल सूक्ष्म जेदे कह्युं, मैथुन दोय प्रकार ॥ सूक्ष्म हवत् कामथी, इंद्रियजनित विकार ॥ २ ॥ औदारिक वैक्रिय तथा, स्त्री साथे संजोग ॥ स्थूल कह्यो ते जिनवरें, मन वच काया योग ॥ ३ ॥ मैथुन विरमणाख्य ते, ब्रह्मचर्य दोय जेद ॥ सर्व देशथी आगमे, जाख्युं प्रजु गतवेद ॥ ४ ॥ सर्व नारी परिहार जे, सर्व थकी ते ब्रह्म ॥ इतर देशथी जाणीये, ए सागारी धर्म ॥ ५ ॥

॥ ढाल उवीशमी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥ शांति प्रजु जिनराज प्रकाशे, ए व्रत निरतिचार जी ॥ पालंतां शिवपद पामीजे, सुणो हवे तास विचार जी ॥ १ ॥ म कर विषयविष ध्यान ए विरुड, कहे अनिरानो नेह जी ॥ का जोगी परिहर मनि प्राजे, निपुण धरी आनंद जी ॥ म० ॥ २ ॥ कामवृद्धि विषया कन्या,—दिक पर नहीं एम जाण जी ॥ राग गमन

करतां होय पहेलो, भाखे त्रिभुवनजाण जी ॥ म० ॥ ३ ॥ इत्वर भाटी देइ वश कीधी, किणहीक गणिका नारी जी ॥ स्वल्प काल साधारण बुद्धे, गमने बीजो अतिचार जी ॥ म० ॥ ४ ॥ अनंग तणी क्रीमा नवि करवी, परनारी संघात जी ॥ अधरदशन कुचमर्दन चुंबन, तजी आलिंगन वात जी ॥ म० ॥ ५ ॥ परनारीनां अंग मनोहर, नवि निरखे सविकार जी ॥ शीलवंत श्रावकने भाख्युं, एम कहे जगदाधार जी ॥ म० ॥ ६ ॥ यतः ॥ पढ उन्नंग दंसणे अ, गोमुत्त गहण कुसुमिणे चेव ॥ जयणा सव्व करे, इंदिअ अवलोयणे अ तहा ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ ढांक्यां अंग नारीनां जोतां, उलटे राग अताग जी ॥ फरसे तेम वली वाधे वमणो, वरजे तेह महाभाग जी ॥ म० ॥ ७ ॥ नजरे आवे रूप कदाचित्, न धरे राग ने द्वेष जी ॥ गोमूत्रादिक ग्रहतां न करे, मर्दन योनिविशेष जी ॥ म० ॥ ८ ॥ शयन करंतां पहेलुं चिंते, शल्य विषोपम काम जी ॥ खिणमित्त सुख बहु काल लगे दुःख, मन चिंतवीये आम जी ॥ म० ॥ ९ ॥ एम भावन वैराग्ये सूतां, कुसुमिण नावे रात जी ॥ मोह उदयथी कदाचित् आवे, तो निसुणो तस वात जी ॥ म० ॥ १० ॥ उठी इरियावही पमिक्कमीये, निंद तजी ततकाल जी ॥ काउस्सग्ग कीजे चउ लोगस्सनो, भावे थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ ११ ॥ इंद्रिय अवलोकननी जयणा, दृष्टिनिवर्त्तनरूप जी ॥ यदुक्तं ॥ गुरोरुवयणकक्खो,-रु अंतरे तह थणंतरे दिठुं ॥ सा हरइ नउ दिठिं, नय बंधइ दिठिए दिठिं ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ अनंगक्रीमा उपर ए विस्तर, भाखे श्रीजिनभूप जी ॥ म० ॥ १२ ॥ अथवा निज नारीशुं आतुर, भावविषय असमान जी ॥ चोराशी आसन आसेवन, न करे श्रद्धावान जी ॥ म० ॥ १३ ॥ पुरुष नपुंसक सेवन तिम वली, हस्तकर्म परिहार जी ॥ काष्ट चर्म फल माटी घटित जे, कामोपगरण धार जी ॥ म० ॥ १४ ॥ एह थकी जे क्रीमा करवी, ते पण त्रीजो जाण जी ॥ हवे विवाह तणो कहुं चोथो, ते निसुणो गुणखाण जी ॥ म० ॥ १५ ॥ कन्या फल लिप्साए परना, पालकनो विवाह जी ॥ निज दारा संतोषी न करे, सुणो तस मर्म उत्साह जी ॥ म० ॥ १६ ॥ निज दारा संतोषी निज विण, न धरे अवर विचार जी ॥ परदारा वर्जी निज वेश्या, विणु नहीं विषयविकार जी ॥ म० ॥ १७ ॥ अवरथी मन वच काये न करे, न करावुं

ए प्रसंग जी ॥ जो जोडे विवाह ते परना, मैथुन कारण भंग जी ॥ म० ॥ १८ ॥ हुं विवाहकारक नहीं मैथुन, कारक एणे भाव जी ॥ व्रत सापेक्ष अभंग विचारी, भंगाभंग विभाग जी ॥ म० ॥ १९ ॥ निज अपत्य उद्वाहनी चिंता, पण न करे सुश्राद्ध जी ॥ जो चिंताकारक होवे कोइ, ते जग विरला साध जी ॥ म० ॥ २० ॥ अथवा सज्ज निज नारी हुंते, परणे बीजी जेह जी ॥ परविवाह करे ते चोथो, अतिचार सुणो नेह जी ॥ म० ॥ २१ ॥ तीव्र काम उपर नवि कीजे, अध्यवसाय अत्यंत जी ॥ मुखकक्षोपस्थादि न सेवे, चिरंकाल एक चित्त जी ॥ म० ॥ ॥ २२ ॥ केशाकर्षण दंत नखक्षत, करी न जगाडे काम जी ॥ कामवृद्धिकारी गुटिकादिक, केरुं न लीये नाम जी ॥ म० ॥ २३ ॥ वेदोदय असहिष्णुपणाथी, निज नारी आगार जी ॥ मैथुनमात्रे वेदोपशमन, नहीं अवर विस्तार जी ॥ म० ॥ २४ ॥ अधिक कुचेष्टाथी गुण न हुवे, साहमुं बहु रूप पाप जी ॥ परदारा वर्जी पंच वरजे, अवरने त्रण कहाय जी ॥ म० ॥ २५ ॥ ॥ उक्तं च ॥ परदारवज्जिणो पं,—च हुंति तिन्निउ सदार संतुठे ॥ इत्थीइ तिन्नि पंचय, भंगविगप्पेहिं नायव्वा ॥ १ ॥ स्वदारसंतोषिणस्तु त्रय एवांत्याः ॥ आद्यौ तु भंगावेवेति ॥ पूर्व ढाल ॥ एम नारीने पण वर्जेवा, अतिचार उन्माद जी ॥ परपुरुष निज पति ब्रह्मचारी, अनिसरतां होय आद जी ॥ म० ॥ २६ ॥ परिग्रह वारक दिन शोक्यने, निज पीयुशुं तेण दिस जी ॥ शोक्य तणो वारक लोपंते, बीजो होय जगीश जी ॥ म० ॥ २७ ॥ एम पंचे जाणेवा जुगते, नारीने अतिचार जी ॥ निज दारा संतोषीने पण, पंचे ठे अवर प्रकार जी ॥ म० ॥ २८ ॥ पोते नाटक देइ महीने, गणिका सही निज नारी जी ॥ गमन करंतां बीजो होवे, तेहने पण अतिचार जी ॥ म० ॥ २९ ॥ अनाभोग अतिक्रम आदिकथी, पहेलो पण कोइ वार जी ॥ त्रण पूर्वे दाख्या ठे तेहीज, एम कह्या पंच अतिचार जी ॥ म० ॥ ३० ॥ तथा च सूत्रं ॥ सदार संतोसिस्स इमे पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वेति ॥ एतद्व्रतफलमाह ॥ पूर्व ढाल ॥ कनक भेद्य नीपजावे कोइ, आपे कनकनी कोडी जी ॥ तेहतुं पण फल शीलव्रतनी, न करे जगमां होड जी ॥ म० ॥ ३१ ॥ यतः ॥ जो देइ कणय कोडी, अहवा कारेइ कणयजिण भवणं ॥ तस्स न तत्तिय पुन्नं, जत्तिय बंभव्वए

धरिए ॥ ४ ॥ परसमयेऽपि ॥ एकरात्र्युषितस्यापि, या गतिर्ब्रह्मचारिणः ॥ न सा क्रतुसहस्रेण, वक्तुं शक्या युधिष्ठिर ॥ ५ ॥ एकतश्चतुरो वेदा, ब्रह्मचर्यं तु एकतः ॥ एकतः सर्वपापानि, मद्यं मांसं तु एकतः॥ ६ ॥ पूर्व ढाल ठिन्नेंद्रिय दो नाग नगंदर, कुरूव नपुंसक रंक जी ॥ वंध्या निंदू विषकन्या तिम, होये कुशील जग नंक जी ॥ म० ॥ ३२ ॥ देवद्रव्यने नक्षण करवे, परनारीने पापे जी ॥ सात वार सत्तमीए पहोंचे, एम कहे जिनवर आप जी ॥ म० ॥ ३३ ॥ परेप्याहुः ॥ तस्माद्धर्मार्थिभिस्त्याज्यं, परदारोपसेवनम् ॥ नयंति परदारस्तु नरकानेकविंशतिं ॥ ७ ॥ पूर्व ढाल ॥ निज दारा संतोषीने पण, पर्वदिवस सुविशेष जी ॥ विषय तणो परिहार करेवो, परमतमां पण देख जी ॥ म० ॥ ३४ ॥ यडुक्तं ॥ विष्णुपुराणे ॥ चतुर्दश्यष्टमी चैवा,–मावास्या चैव पूर्णिमा ॥ पर्वाण्येतानि राजेंद्र, रविसंक्रातिरेव च ॥ ८ ॥ तैलस्त्रीमांससंजोगी, पर्वस्वेतेषु वै पुमान् ॥ विएमूत्रनोजनं नाम, प्रयाति नरकं मृतः॥ ए ॥ पूर्व ढाल॥ बत्रीश उपम कही ए व्रतनी, सांजल तस अधिकार जी ॥ नविया दशमा अंग मजारे, चोथे संवर द्वार जी ॥ म० ॥ ३५ ॥ ठठे खंडे ढाल ठत्रीशमी, चोथा व्रत अधिकार जी॥ राम कहे ए व्रत पालंतां, होवे जयजयकार जी ॥ म० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल ॥ सारो सोरठ देश देखाडे रसीया॥ ए देशी ॥ शीलवंत सुगुण मोरे मन वसीया॥ बत्रीश उपम गुणयुत धारी, नाम जपे रे जाये पाप नसीयां रे ॥ शील० ॥ १ ॥ मुकुट ने दोम वसन फूल अश्वत्र, चंदनमां गोसीस रसीयां रे ॥ शी० ॥ २ ॥ चंद लवण रयणायर रूमो, मणि वैडूर्य उल्लसीयां रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ औषधिए करी हेमगिरि महोटो, सिंधुमां सीतोदा सिरीया रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ दशमे सयंजूरमण जलनिधिमां, वर्त्तुल नगमां रुचक गिरिया रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ गज मांहि ऐरावत हरि मृगमां, असुरमां वेणुदेव वरीया रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ पनरमी उपम जुवनपतिमां, धरणीधर जेम गुण नरीया रे ॥ शी० ॥ ७॥ सहु सद मांहे जेम सौधर्मी, ब्रह्म सुरलोकमां सुख करीयां रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ स्थिति महोटी लवसत्तम सुरनी, दानमां दान अजय गरीया रे ॥ शी० ॥ ए ॥ वीशमी उपम रंग मांहि किर्मजी, कवही न जाये उतरीया रे ॥ शी० ॥ १० ॥ वज्रऋषजनाराच संघयणे, संठाण मांहि समचउरसीया रे ॥ शी० ॥ ११

ध्यानमां ध्यान शुक्ल मन मान्युं, ज्ञानमां केवल आरसीया रे ॥ शी० ॥ १२ ॥ पचवीशमी उपम लेश्यामां, शुकलथी कर्म कठिन खसीयां रे ॥ शी० ॥ १३ ॥ मुनिमां जेम तीर्थंकर स्वामी, सुर नर आवी नमे धसीश रे ॥ शी० ॥ १४ ॥ क्षेत्र विदेह ज्युं क्षेत्रमें महोटुं, मेरु महीधरमां लसीया रे ॥ शी० ॥ १५ ॥ वन मांहि नंदनवन जेम महोटुं, तरुमां जंबू उलसीया रे ॥ शी० ॥ १६ ॥ जेम हय गज नर सैन्यमां महोटो, जग चक्रीश्वर जुज वसीया रे ॥ शी० ॥ १७ ॥ जेम रथमां हरिनो रथ महोटो, तेम व्रत मांहि शील कसीया रे ॥ शी० ॥ १८ ॥ बत्रीश उपम चोथा व्रतनी, जाणी पालो व्रत धसमसीया रे ॥ शी० ॥ १९ ॥ १००० ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए व्रत डुक्कर पालतां, पहोंचे सयल जगीश ॥ परदारा लंपट तिके, दुःख पामे निशदिस ॥ १ ॥ यतः ॥ मेरु गरिठो जह पवयाणं, एरावणो सारपलो गयाणं ॥ सिंहो बलिठो जह सावयाणं, तहेव सीलं पवरं वयाणं ॥ १ ॥ अन्ययोक्तं ॥ नपुंसकत्वं, तिर्यक्त्वं दौर्भाग्यं च जवे जवे ॥ जवेन्नराणां स्त्रीणां चा,–न्यकांतासक्तचेतसाम् ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ परनारीलोलुपपणे, करालपिंग दुःख दीठ ॥ कहे चक्रायुध स्वामीने, कवण हुउं कहो इठ ॥ ३ ॥ प्रजु संबंध कहे तेहनो, करालपिंग जस नाम ॥ पर्षद थिर चित्त सांजले, करीय प्रजुने प्रणाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥ कुंथु जिणेसर केसर जीनी देहमी रे लो ॥ ए देशी ॥ जविय‍ण, विषय न सेवो विरुउ दुःखदायी घणुं रे लो ॥ कहे जिन शांतिजी रे लो ॥ ज० ॥ क्षेत्र जरतमां नलपुर पुर सोहामणुं रे लो ॥ सुणो मन मांहे जी रे लो ॥ ज० ॥ तिहां नलपुत्र नरेश्वर राज्य करे गुणी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ उज्ज्वल जेहनी कीर्ति चिहुं दिशिमां सुणी रे लो ॥ सुणो मन० ॥ १ ॥ ज० ॥ तेहने पाटरानी इष्ट गुणहीन ते जलो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ नाम करालपींग अने मम निर्मलो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ शांतिहरण मांहे काली अति रलीयामणी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ राय तणे मन मान्यो लोक जने घणो रे लो ॥ सु० ॥ २ ॥ ज० ॥ तिण पुरमां एक दुर्दनद नामे वसे रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ नामे ते पुरंदर धन करी

उल्लसे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ तेहने पुरोहित साथे, प्रीति अछे घणी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रात दिवस रहे नेला, होंश हैया तणी रे लो॥ सु० ॥ ३ ॥ ज० ॥ ते व्यवहारी घरे, नारी सारी अछे रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रूपवंती गुणवंती, पति मनमां रुचे रे लो॥ सु० ॥ ज० ॥ नामे ते प्रद्युम्न,–सीरी रति सारसी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ देखी ते पुरोहितना, मन मांहे वसी रे लो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ज० ॥ थयो विषया अभिलाषी, नाखी लाजने रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रात दिवस ते दोडे, नरवर काजने रे लो॥ सु० ॥ ज० ॥ एक दिवस ते उपर, नृप रीज्यो अति रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ मागो मनोवांछित कहे, हर्षे नृपति रे लो ॥ सु० ॥ ५ ॥ ज० ॥ विषयानो उमाह्यो, वाह्यो ते धसी रे लो ॥ क० ॥ राजन् मनोवांछित वर आपो, इछा छे इसी रे लो ॥ सु० ॥ राजन् पुरमां मनमानीती, नारीशुं रमुं रे लो ॥ क० ॥ राजन् मनमान्या सुख मांहि, काल हुं निर्गमुं रे लो ॥ सु० ॥ ६ ॥ रा० ॥ मन शरमाणो बोले, घंधाणो कहे रे लो ॥ क० ॥ सांजल वात पुरोहित तुज, साथे दिल जे वहे रे लो ॥ सु० ॥ कहे नृप ते साथे तुज रमवुं, अवर न इछवी रे लो ॥ क० ॥ धरजे वात पुरोहित एह, कही जे प्रीछवी रे लो ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे नृप एहथी जो विपरीत तुं, चालीश एकदा रे लो ॥ क० ॥ कहे नृप करशुं तुज शिर दंम, अन्यायी परे तदा रे लो ॥ सु० ॥ मानी नृपनी वाणी निर्गल, ते पुरमां थयो रे लो ॥ क० ॥ आगल उंचो उंट वली ते, उकरडे गयो रे लो ॥ सु० ॥ ८ ॥ जमतो पुरमां ते दिन रात के, माता सांढ ज्युं रे लो ॥ क० ॥ करतो परनारीशुं केलि, कुलागत सवि तज्युं रे लो ॥ सु० ॥ एक दिन मोह्यो ते पुष्पदेवनी, नारी उपरे रे लो ॥ क० ॥ रागे अंध थयो ते चिंते, चित्तने अंतरे रे लो ॥ सु० ॥ ए ॥ केम ए नारी सारी प्यारी, मह्मारे वश थशे रे लो ॥ क० ॥ देखी एहना मुखनुं फूल के, मुज दिल उल्लसे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ एम चिंती तस खासी, दासीशुं मली रे लो ॥ क० ॥ दाखी तेहनी आगल सघली, वात ए मन रली रे लो ॥ सु० ॥ १० ॥ जंडे तेम कर जेम तुज स्वामिनी, मुजने आदरे रे लो ॥ क० ॥ मुजने क्षण क्षण तस दीदार, हियामां सांजरे रे लो ॥ सु० ॥ मानीश ताहरो पाम निरंतर, जीवीश जिहां लगे रे लो ॥ क० ॥ करजे

मुज उपर अनुकूल, मनावी उलगे रे लो ॥ सु० ॥ ११ ॥ पामी अव
सर तेणी दासीए, वात सवे कही रे लो ॥ क० ॥ निसुणी शीलवती
ए वात, निखर मानी नहीं रे लो ॥ सु० ॥ रे रे धिक् जूंनी शुं बोली, बोल
तुं एहवा रे लो ॥ क० ॥ जूंना पुर मांहे बहु विटल, वसे ए जेहवा रे लो
॥ सु० ॥ १२ ॥ हुवे मुख एहवानुं जोइ, पापी आतमा रे लो ॥ क० ॥
वहेनी चिरं जीवो मुज वालम, अवरनी नहीं तमा रे लो ॥ सु० ॥ फरीने
दासी कहे तुज वात, न माने ए किमे रे लो ॥ क० ॥ कहेण न चाले इहां
मुज, कांइ करो तुमे जे गमे रे लो ॥ सु० ॥ १३ ॥ पामी अवसर एक
दिवस ते, आवीने कहे रे लो ॥ क० ॥ वहेली करो करुणा मुज उपर,
विरहे तन दहे रे लो ॥ सु० ॥ कहेवा लागी ते एम न घटे, तुमने
बोलवुं रे लो ॥ क० ॥ जो जाणे तुम मित्र तो थाये, इहां कांइ अजिनवुं
रे लो ॥ सु० ॥ १४ ॥ न० ॥ निसुणी वाणी पुरोहित, थयो मनमां खुशी
रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ जाणी ते अनुकूल, कहे फरीने हसी रे लो ॥
सु० ॥ न० ॥ कहे तेहने एम करवुं, जेम तुम नाहलो रे लो ॥ क० ॥
सुंदरी तो पूराये आपण, चित्त उमाहलो रे लो ॥ सु० ॥ १५ ॥ न० ॥ कही
एकांते तेणे निज, कंतने वातमी रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ निसुणी मनमां
सूधी, तस ईर्ष्या चढी रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ मन नांग्युं दिल मांहे, रीज रही
नहीं रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ जगमां एह शिरे, जूंनी करणी सही रे लो ॥ सु० ॥ १६
॥ न० ॥ हवे तेणे कीधी नृप शिर, वेदन आकरी रे लो ॥ क० ॥ न० ॥
मंत्रबले करे पासे, पुरोहित चाकरी रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ कहे राजन पुरोहित,
टालो वेदनी रे ॥ क० ॥ न० ॥ करो उपकार ए मुज तो, विलसुं मेदिनी रे
लो ॥ सु० ॥ १७ ॥ न० ॥ मंत्र थकी तेणी वारे, वेदन ततक्षणे रे लो ॥ क० ॥ न० ॥
तुष्ट थयो राजेश्वर, वर मागो नणे रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ विप्र कहे
सुण राजन्, माहरी विनति रे लो ॥ क० ॥ साहेब मुजने एह मयाथी,
आपो करुं विनति रे लो ॥ सु० ॥ १८ ॥ राजन् छे किंजल्पद्वीपे, सुन्दर
पंखीयां रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ नाम थकी किंजल्प, बहु में परखीयां
रे लो ॥ सु० ॥ रा० ॥ ए पुन्यदेवने मूको, जइने लावशे रे लो ॥ क० ॥
॥ रा० ॥ चोंप करी करी कारज, वहेलो आवशे रे लो ॥ सु० ॥ १९ ॥
रा० ॥ कहे तेडी पुन्यदेवने, काज करो तुम्हे रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥

तुम आदेश प्रमाण, जइ लावुं अमे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ घेर आवी एक जूमि, गृह सत्वर कस्था रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ ते उपर एक यंत्र, पल्यंक लेइ धस्थो रे लो ॥ सु० ॥ २० ॥ ज० ॥ शिखवीयुं सेवकने, जव आवे रही रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ यंत्रशय्या वेसारी, नाखेजो मही रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ ते छानो मुज पासे, पुरोहित लावजो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ काम करीने जिहां हुं, तिहां तुमे आवजो रे लो ॥ सु० ॥ २१ ॥ ज० ॥ चालणने मिष जइ ते, वनमां उतस्यो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ ततक्षण तेह पुरोहित, हर्ष हैये जस्यो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ पुष्पदेवने मंदिर, ते आव्यो वही रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ कूड तणी रचना तेणे, मूर्खे नवि लही रे लो ॥ सु० ॥ २२ ॥ ज० ॥ पद्मसीरीए यंत्र, पल्यंके वेसारीयो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ ततक्षण ते उछलीने, चोंय सिधावीयो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ जांग्युं तेहनुं अंग, थयुं सवि जाजरुं रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ छवकाणी सवि संधि ज्युं, जूनुं जाजरुं रे लो ॥ सु० ॥ २३ ॥ ज० ॥ बांधी मयूरने बंधे, शेठने आपीयो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ छपामी कठ पंजरमां, तस स्थापीयो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ चाल्या कोइ देशांतर, खटमासी रह्या रे लो ॥ क० ॥ ॥ ज० ॥ काज करीने वलीया, नवि कोणे लह्या रे लो ॥ सु० ॥ २४ ॥ ज० ॥ निज पुर आवी मीणे, लेप कस्यो तने रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ चहोड्यां पंचवरणनां, पिंछां अति वने रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ जइ दरबारे जेट, कस्यो ते जूपने रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रीज्यो राजा जोर, देखी तस रूपने रे लो ॥ सु० ॥ २५ ॥ राजन् वहु अहीयां पण मारग, मांहे मरी गयां रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ आव्यो ए इहांकणे एक ए, द्विज वहु दिन थया रे लो ॥ सु० ॥ राजन कहे ए पंखी माणस, सरिखो केम अठे रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ कहे बोलावो एहने, मुज मनमां रुचे रे लो ॥ सु० ॥ २६ ॥ ज० ॥ लइ करमां ते प्राजन, आर दीये घणुं रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ बोल तुं पंखी नृप आ,—गल वहु शुं जणुं रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ ते कहे किंजल्पामि, तस वाणी सुणी रे लो ॥ क० ॥ राजन द्विज जंजखीयो जाखे, वयतुं ते जणी रे लो ॥ सु० ॥ २७ ॥ रा० ॥ कहे पुष्पदेव ए मुज, पुरोहित सारिसो रे लो ॥ क० ॥ राजन् हाथ तणे आरीसे, करकंकण किस्यो रे लो ॥ सु० ॥ राजन्

जुवो निरखी जेम, संदेह टले परो रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ परखीने निरखंतां, ते जाणयो खरो रे लो ॥ सु० ॥ २७ ॥ रा० ॥ पूछे ए शुं कारण, मुज दाखो तुमे रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ कहे पुष्पदेव कहंतां, लाजुं हुं अमे रे लो ॥ सु० ॥ रा० ॥ वात सुणीने मनमां, नृप कोप्यो घणो रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ कहे आरक्षक नरने, जइ एहने हणो रे लो ॥ सु० ॥ २ए ॥ ज० ॥ करीय कदर्थना पुर, शेरीमां फेरीयो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ जइ वधजूमे नृप, सुजटे ते मारीयो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ गयो नरकावनि ताजी, जिहां अयपूतली रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ आलिंगावे असुर, पचारे वली वली रे लो ॥ सु० ॥ ३० ॥ ज० ॥ जमशे ते बहु काल, लगे संसारमां रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रहे एम विषय नड्या जव, कारागारमां रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ ठठे खंडे ढाल, कही सत्तवीशमी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ शांति प्रजुनी देशन, सुणो साकर समी रे लो ॥ सु० ॥ ३१ ॥ इति चतुर्थव्रतोपरि करालपिंगपुरोहितकथानकम् ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४३ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ५ए ॥

॥ अथ पंचमः परिग्रहपरिमाणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे पंचम व्रत जिन कहे, परिग्रहनुं परिमाण ॥ तेम इच्छापरिमाण वली, जाखे श्री जिनजाण ॥ १ ॥ सचित्त अचित्त मिश्र जाणीये, परिग्रहना त्रण जेद ॥ नव जेदे होय तिम वली, एम जाखे गतवेद ॥ २ ॥ क्षेत्र वास्तु धन धान्य तेम, रूप्य कुप्य ने हेम ॥ द्विपद चतुष्पदनो सदा, मन राखीजे प्रेम ॥ ३ ॥ परिग्रह वाध्यो ए घणुं, होय बहु दुःखदातार ॥ सिद्धांते एहना अठे, वली अनेक प्रकार ॥ ४ ॥ धान्य रत्न स्थावर द्विपद, चउपद कुप्यविचार ॥ सामान्ये षट् जेद एम, उत्तर चोसठ चार ॥ ५ ॥ धान्यजेद चोवीश ठे, १ जव २ गहूं ने वली ३ शालि ॥ ४ विहि ५ सठीअ ६ कुद्रवा, ७ अणुआ ८ कंगू ए राल ॥ ६ ॥ १० तिल ११ मुग १२ मासा १३ अलसी तिम, १४ हरिमंथ १५ त्रिपुट १६ निपाव ॥ १७ मठ १८ चोला १ए वटी वली, २० मसुर २१ तुंवरि तिम जाव ॥ ७ ॥ २२ कुलछी २३ धन्नय २४ इचनक, धान्य जेद चोवीश ॥ रत्न जाति वली तेटली, एम जाखे जगदीश ॥ ८ ॥ १ ॥ सोवन २ त्रपु ३ त्रांबुं ४ रजत, ५ लोह ६ सीस ७ सुहिरण ॥

८ पाषाण ९ वज्र १० मणि ११ मौक्तिका, १२ प्रवाल १३शंख तिम गणि ॥ ९ ॥ १५तिणि सागरु १६ चंदण वली, १७वस्त्र १८अन्न तेम १९काष्ठ ॥ २० चर्म २१ दंत २२ वाल २३ गंध तिम्, २४ द्रव्यौषध ए काष्ठ ॥ १० ॥ स्थावर त्रिहुं नेदे कह्युं, नूमि घर तरु जाणी ॥ द्विपद दोय चक्रारबंध, माणुस तेम वखाण ॥ ११ ॥ चक्रारबंधो गंत्र्यादि, मानुष्यं दासादीति ॥ चोपद दश नेदे कह्यां,गो महिषी तिम उष्ट्र ॥ अज एलग आस आसतरग, हय रासज ने करह ॥ १२ ॥ नानाविध उपगरणना, नेद अनेक विचार ॥ कुप्य कह्यो चोसठिमो, परिग्रह नेद उदार ॥ १३ ॥ लोन अल्प जेम जेम होये, जेम जेम अल्पारंज ॥ तेम तेम सुख वाधे घणुं, धर्मसिद्धि प्रारंज ॥ १४ ॥ नरनव सार आरोग्यता, धर्म एह सत्य सार ॥ सुख ए संतोष सार छे, विद्या निश्चय सार ॥ १५ ॥ यतः ॥ ब्रह्मज्ञानविवेकनिर्मलधियः कुर्वंत्यहो पुष्करं, यन्मुंचंत्युपनोगनांज्यपि धनान्येकांततो निःस्पृहाः ॥ न प्राप्तानि पुरा न संप्रति न च प्राप्तौ दृढप्रत्ययौ, वांछामात्रपरिग्रहाएयपि वयं त्यक्तुं न तानि क्षमाः ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ परिग्रहथी विरम्या नहीं, ते लहे पुःखसमुदाय ॥ श्रावक सुलस तणी परे, कहे एणी परे जिनराय ॥ १६ ॥ कहे चक्रायुध स्वामीने, सुलस कह्यो कुण तेह ॥ पंचम व्रत उपर प्रनु, परकाशो तुमे जेह ॥ १७ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ नरत नृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥ शांति जिणेसर एम कहे ए, सुण चक्रायुध राय ॥ परिग्रह पुःख दीये ए ॥ नयर अमरपुर नरतमां ए, सवि शोनासमुदाय ॥ परि० ॥ १ ॥ अमरसेन तिहां राजीयो ए, शेठ रूपनदत्त सार ॥ प० ॥ श्रावक समकितधारकु ए, जिनगुरु पूजणहार ॥ प० ॥ २ ॥ जिनदेवी तस नारजा ए, रूपे रंन समान ॥ प० ॥ सुलस नामें सुत अति नलो ए, सोहे सुगुणनिधान ॥ प० ॥ ३ ॥ यौवनवय परणावीयो ए, जिनदास तनया सार ॥ प० ॥ पतिछंदे चाले नली ए, नामे सुनद्रा नारी ॥ प० ॥ ४ ॥ जनक कहेणथी एकदा ए, गुरु पासे ते सुजाण ॥ प० ॥ आदरे श्रावकव्रत विना ए, एक परिग्रह परिमाण ॥ प० ॥ ५ ॥ रसिक कलानो अति घणो ए, विषय न वेसे चित्त ॥ प० ॥ मात विचारे मनमां ए, सुत ए शूनो चीत ॥ प० ॥ ६ ॥ नवि बोले निज नारीशुं

ए, न जुए दृष्टि सराग ॥ प० ॥ न करे उद्यम वणिजनो ए, रहेशे निर्भाग्य ॥ प० ॥ ७ ॥ जिनदेवी कहे कंतने ए, निःस्पृह सरिखो पु ॥ प० ॥ विषय न वांछे चित्तशुं ए, केम चलशे घरसूत ॥ प० ॥ ८ तेम करो जेम ए विषयने ए, वांछे वालम नंद ॥ प० ॥ शेठ कहे ना भणी ए, बोल मां एम मतिमंद ॥ प० ॥ ९ ॥ केडे काल अनादि ए, लाग्या रिपु थइ जेह ॥ प० ॥ ते रिपुने सुत सोंपतां ए, श्यो मावि सनेह ॥ प० ॥ १० ॥ यतः ॥ भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता,-स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ॥ कालो न यातो वयमेव याता,-स्तृष्णा न जीर्णा वय मेव जीर्णाः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ विण शिखवीयां आवडे ए, आहार विषय विकार ॥ प० ॥ पण अनादिनो दोहिलो ए, धर्म तणो व्यापार ॥ प० ११ ॥ हठ नवि मूके कामिनी ए, लीधी शेठनी केड ॥ प० ॥ पाड्या प डुंगर पडे ए, भावी न जाये फेडी ॥ प० ॥ १२ ॥ शेठे नट विट तेडी ए, जूआरी कमजात ॥ प० ॥ चतुराइ शिखण भणी ए, सोंप्यो तेहने जात ॥ प० ॥ १३ ॥ लही कुसंगति तेहनी ए, विसारी सवि वात ॥ प० ॥ भणतर तेणे विसारीयुं ए, इंद्रियसुखनी घात ॥ प० ॥ १४ ॥ कौतुक हास्य विनोदनी ए, सुणतां वात रसाल ॥ प० ॥ मन विंधाणुं तेहनुं ए, फसीयो विषयनी जाल ॥ प० ॥ १५ ॥ निर्वल संगतिथी नीपन्यो ए, वेश्याशुं संयोग ॥ प० ॥ हाव भाव करी भोलव्यो ए, विलसे विषयिक भोग ॥ प० ॥ १६ ॥ मात पिता धन मोकले ए, मोकले मन धरी नेह ॥ प० ॥ सुत वेगे विलसे तिहां ए, मोह तणी गति एह ॥ प० ॥ १७ ॥ घरहुंती नवि नीसरे ए, लाग्यो गणिकारंग ॥ प० ॥ विषयअग्निमां जीवडा ए, फसीया जेम पतंग ॥ प० ॥ १८ ॥ यतः ॥ लोलेक्षणावक्रनिरीक्षणेन० ॥ मात पिता बहु मोकले ए, जन तेमांने काज ॥ प० ॥ पण गणिका जावा न दे ए, नवि लोपे तस लाज ॥ प० ॥ १९ ॥ लालच भूंडी विषयनी ए, ऊंडी अतिहि अगाध ॥ प० ॥ संसारी एहमां पड्या ए, न लहे सुख निराबाध ॥ प० ॥ २० ॥ मात पिता झूरे घणुं ए, सुतने संभारी जोर ॥ प० ॥ आ भव कीधां आ भवे ए, आव्यां कर्म कठोर ॥ प० ॥ २१ ॥ वांक नहीं इहां कोइनो ए, सहामो चढावी पाड ॥ प० ॥ विटल पुरुषने सोंपीयो ए, कीधां ए सुतने लाड ॥ प० ॥ २२ ॥ खाड खणी

आपण सही ए, पनीयां आपण मांहि ॥ प० ॥ निसासा नाखे घणा ए, पण चिंत्युं नवि थाय ॥ प० ॥ २३ ॥ सोल वरस लगे तिहां रह्यो ए, मात पिता घयां क्षीण ॥ प० ॥ आरतध्यानमां बेहु जणां ए, गयां परलोके दीण ॥ प० ॥ २४ ॥ गुणवंती तस नारजा ए, तेम धन महेले तास ॥ प० ॥ तेह न आपे कंतने ए, अहो अहो मोहविलास ॥ प० ॥ २५ ॥ धन नीतुं तव तेणीए ए, निज आनूषण सार ॥ प० ॥ दासी संघाते मोकल्यां ए, अक्काए चिंत्युं तिवार ॥ प० ॥ २६ ॥ धन नीतुं एहना घर तणुं ए, मोकल्यो निज शणगार ॥ प० ॥ ए मुज राखवुं नवि घटे ए, फरी मोकल्युं सुविचार ॥ प० ॥ २७ ॥ हवे अक्का मन चिंतवे ए, श्यो निर्धनशुं नेह ॥ प० ॥ कहे पुत्रीने एहशुं ए, हवे श्यो करवो सनेह ॥ प० ॥ २८ ॥ ढाल कही अमवीशमी ए, ठठा खंम मजार ॥ प० ॥ रामविजय कहे धन वडुं ए, स्वारथी ए संसार ॥ प० ॥ २९ ॥ १००९ ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे पुत्री माता प्रते, बहु धननो दातार ॥ सोल वरस लगे जेहशुं, विलस्या नोग उदार ॥ १ ॥ केम ठंमाये वालहो, प्राणथी अधिको एह ॥ सोंप्यां में हाये करी, जेहने धन मन देह ॥ २ ॥ कहे अक्का पुत्री सुणो, तुम कुल ए आचार ॥ निर्धनीया नर परिहरे, धनवंतशुं व्यवहार ॥ ३ ॥ तस मन जाणी पंच दिन, अक्का परखी जेह ॥ इक्षु मगावे एक दिन, दीये कूचा धरी नेह ॥ ४ ॥ मा ए शुं हुं ढोर हुं, निःपीमित इक्षुदंम ॥ जे लेइ मुज आगे धस्या, अक्का कहे कुरंम ॥ ५ ॥ जो ए चाव्ये रस होवे, तो सेवे सुलस कुमार ॥ सांठो चूसी रस लीयो, ठेता ठोम गमार ॥ ६ ॥ पुत्री कहे कूचा घणे, कामे आवे माय ॥ घेर घालायी ढोरनी, नूख एहथी जाय ॥ ७ ॥ रस लेइ पोथी तणो, निरस आपे हाय ॥ रीसाणी पाठी दीये, शुं मुज दीठ अनाथ ॥ ८ ॥ मा कहे निरस पोथी ए, जिम न रंगाये पाय ॥ तेम ए निर्धन सुलसथी, कोमी काम न थाय ॥ ९ ॥ कहे पुत्री पोथी निरस, पण दशा दीपके होय ॥ तेम ए निर्धन सुलसमां, गुण केताएक जोय ॥ १० ॥ राग लही पुत्री तणो, ठानी रही ते वार ॥ विण पूछ्ये ए काढवो, मनमां कस्यो विचार ॥ ११ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥

पूरवे सुकृत न में कीयो ॥ ए देशी ॥ अक्का कहे उतावली, आवी ते सुलसनी पास ॥ तुमे भूमि हेठा उतरो, बे कारिज रे उपर आवास ॥ १ ॥ धिक् धिक् दुर्जन प्रीतडी रे ॥ जे आपे रे छटकीने छेह ॥ रंग कुसुंभ तणो जिस्यो, जेम न टके रे जग नारनो नेह ॥ धि० ॥ २ ॥ मन मांहि कुंवर चिंतवे, शुं हशे एहने काज ॥ सोल वरस मांहि एहवुं, नवि सुणीयुं रे संभलाव्युं ते आज ॥ धि० ॥ ३ ॥ दासी कहे तव आवीने, शुं रह्यो मूढ विमासी ॥ निर्लज्ज थइने केम रह्यो, नहीं ताहरे रे कोडी एक पास ॥ धि० ॥ ४ ॥ आथ विना आदर नहीं, मनमां विचारी जोय ॥ ए वेश्यामंदिर नवि शूनां, प्रीति लूखी रे इहांकण नवि होय ॥ धि० ॥ ५ ॥ सुलस निज मंदिर भणी, नीसर्यो न लहे माग ॥ मन खेद पामे अति घणो, एह देखी रे उपजे वैराग्य ॥ धि० ॥ ६ ॥ अणुसार मारग समरतो, आव्यो निज गृह पास ॥ चिहुं पासे पडीयुं जीर्ण ते, गृह देखी रे थयो मन उदास ॥ धि० ॥ ७ ॥ छोइ सवि उखडी गइ, नलियां तणी नहीं शुद्धि ॥ भांगे कपाटे उहस जिस्यो, तेह देखी रे भूली गयो बुद्धि ॥ धि० ॥ ८ ॥ पूछीयुं पाडोशी भणी, घर स्वामीनुं शुं नाम ॥ ते कहे ताहरे शुं अछे, ए नामनुं रे पूछ्यानुं काम ॥ धि० ॥ ए ॥ ते कहे सहेजे पूछीयुं, ए रूपचंदत्तनुं गेह ॥ आम अवस्था कां थइ, जीवे छे के वली मूर्ड तेह ॥ धि० ॥ १० ॥ ते कहे शेठ ने तस प्रिया, वेहु पहुतलां परलोक ॥ घर पछ्युं संभाल्या विना, एम निसुणी रे मनमां धरे शोक ॥ धि० ॥ ११ ॥ धिक् व्यसन मुझ वेश्या तणुं, हुं थयो मूढ गमार ॥ मृत पितर में नवि जाणीयां, नवि गणीयो रे अपयश अपकार ॥ धि० ॥ १२ ॥ धन धूल मांहि मेलीयुं, सेवीयां सात व्यसन्न ॥ शुं काम में रुडुं कर्युं, देखाडुं रे हवे केम वदन्न ॥ धि० ॥ १३ ॥ घर जोइने पाछो वल्यो, आवीयो जीर्णोद्यान ॥ खर ताम्रपत्रे दुरकिया, तेहे लखीया रे अक्षर धरी शान ॥ धि० ॥ १४ ॥ सुलस श्रीजिनवर नमी, लखे भामिनीने लेख ॥ आह्लाद सहित उतावलो, तुं वांचे मृगनयणी विशेष ॥ धि० ॥ १५ ॥ हुं आज गणिकाघर थकी, नीसरी आव्यो गेह ॥ मृत पितर निसुणी लाजीयो, तुझ न मल्यो रे आव्यो

धन एह ॥ धि० ॥ १६ ॥ हवे आजथी हुं समजीयो, परदेश जइ करी काज ॥ आवीश वहेलो हुं सही, तुं राखजे रे रुमी मुझ घरलाज ॥ धि० ॥ १७ ॥ लखी लेख करमां धर्यो, देवानुयोगे तत्र ॥ निज नारी दासी तिहांकणे, आवी तेहने रे सोंप्यो तेणे पत्र ॥ धि० ॥ १८ ॥ इम समरी चालीयो, ते सुलस कोइएक देश ॥ परिधान जूनां चीवरां, नहीं पासे रे धन कांइ लवलेश ॥ धि० ॥ १९ ॥ आपने अरचे जमे, परदेशमां छमास ॥ एक नगर जीर्णोद्यानमां, जइ पहोंच्यो रे थाक्यो असराल ॥ धि० ॥ २० ॥ तिहां ब्रह्मतरु अंकुर निरखी, चिंतवे चित्त मांहि ॥ ए विजय विणु होवे नहीं, जइ जोउं रे मन धरीय उम्माह ॥ धि० ॥ २१ ॥ जइ खोदीयुं ते गण ततक्षण, सहस एक दीनार ॥ नीसर्यो निधि तिहां हर्ष पाम्यो, मन चिंते रे तुठ्यो किरतार ॥ धि० ॥ २२ ॥ संगोप्य करी पुर मांहि आव्यो, सुलस धरी आनंद ॥ ढाल छंगणत्रीशमी, खंड छठे रे भुणे साजनवृंद ॥ धि० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ११२३ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर मांहे एक वणिकने, वेगे आवी हाट ॥ विसामो लेवा भणी, मूकी मन उचाट ॥ १ ॥ ग्राहक बहुला आवीया, देखी व्याकुल तास ॥ सुलस करे साहाय्य तस, लाखो मन उल्लास ॥ २ ॥ तस महापणने देखीने, रीज्यो शेठ अपार ॥ पूछे किहांथी आवीया, चालक अहो कुमार ॥ ३ ॥ तुम आव्ये आज माहरे, लाभ थयो अणचिंत ॥ कहो मुझ आगल मांगीने, सघलो तुम वृत्तांत ॥ ४ ॥ वासी अमरपुरी तणो, प्राघूर्णक गुणधाम ॥ ते कहे मंदिर तुम तणे, आव्यो तुं हुं स्वामी ॥ ५ ॥ शेठे मंदिर लेईने, न्हवराव्यो भली भात ॥ जीमाड्यो भोजन सरस, वेसारी मन शांत ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ देशी भमरलडीनी ॥ शेठ कहे कुण कारण आव्या ॥ भमरलडी ॥ सुलस कहे निज काज ॥ तातजी हुं इहां आवीयो तो ॥ भ० ॥ धन उपराजण आज ॥ १ ॥ नहीं इहां कोइ माहरो सगो तो ॥ भ० ॥ तुम्हे हो पिताने रे ठाम ॥ करो करुणा मुझ उपरे तो ॥ भ० ॥ कोइ बतावो सुधाम ॥ २ ॥ हाट अपाव्युं भाडके तो ॥ भ० ॥ करे तिहां वणिज

व्यापार ॥ लालच मनमां अति घणी तो ॥ ज० ॥ जेम तेम धन मेलुं सार ॥ ३ ॥ षट् महीना त्यां अतिक्रम्या तो ॥ ज० ॥ बमणा थया रे दीनार ॥ लाने लोन वध्यो घणो तो ॥ ज० ॥ मन मांहि करे रे विचार ॥ ४ ॥ लेइ करियाणुं सामटुं तो ॥ ज० ॥ सुलस चल्यो लेइ साथ ॥ तिलकपुरे ते आवीयो तो ॥ ज० ॥ रत्नवाने बहुली रे आथ ॥ ५ ॥ मन चिंतित सवि पामीयो तो ॥ ज० ॥ लान तिहां पण तेह ॥ वाहण माल जरी चल्यो तो ॥ ज० ॥ रत्नद्वीपे गुणगेह ॥ ६ ॥ नेट लइ नृपने मल्यो तो ॥ ज० ॥ दाण अर्ध मेल्युं राय ॥ आदरमान दीधुं घणुं तो ॥ ज० ॥ कीध महा सुपसाय ॥ ७ ॥ लान घणो तिहांकणे थयो तो ॥ ज० ॥ फली मनोरथमाल ॥ निज पुरने जावा नणी तो ॥ ज० ॥ सुलस थयो उजमाल ॥ ८ ॥ लेइ लक्ष्मीने चालीयो तो ॥ ज० ॥ वाहण वेसी कुमार ॥ नर दरीये नांग्युं तदा तो ॥ ज० ॥ अहो अहो कर्मविकार ॥ ए ॥ मन चिंते बहु जीवनो तो ॥ ज० ॥ उदय वनो बलवान ॥ कोमी उपाय करे कोइ तो ॥ ज० ॥ फले कृतकर्म निदान ॥ १० ॥ आयु जोरावर सुलसनुं तो ॥ ज० ॥ चढीयुं रे फलक हाथ ॥ पंचम दिवसे पामीयो तो ॥ ज० ॥ किहांएक तीर अनाथ ॥ ११ ॥ वन देखी कदली तणां तो ॥ ज० ॥ कस्यो तस फलथी आहार ॥ वि-साम्यो जइ तरु तले तो ॥ ज० ॥ मन मांहि धरे रे विचार ॥ १२ ॥ कष्ट सह्यां में अति घणां तो ॥ ज० ॥ मेली ऋद्धि अपार ॥ पण मुज हाथ रही नहीं तो ॥ ज० ॥ कर्म कठिन निर्धार ॥ १३ ॥ अथवा दैव उल्लंघीने तो ॥ ज० ॥ कीजे क्रिया जग जेह ॥ न फले सरजल चातके तो ॥ ज० ॥ ग्रह्युं गले नीसरे तेह ॥ १४ ॥ यडुक्तं ॥ दैवमुल्लंघ्य यत्कार्यं, क्रियते फल-वन्न तत् ॥ सरोंनश्चातकेनात्तं, गलरंध्रेण निर्गतम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ तोपण में नवि ठांमवुं तो ॥ ज० ॥ साहस सुखनुं रे हेत ॥ वाहला बंधवनी परे तो ॥ ज० ॥ कदिय ए छेह न देत ॥ १५ ॥ सुलस विचारी चित्तमां [illegible] ॥ ज० ॥ आगल चाल्यो ए जाम ॥ पंखीसमूहे चूंथीयुं तो ॥ ज० ॥ [illegible] एक दीठुं रे ताम ॥ १६ ॥ ते नरशबवसनांचले तो ॥ ज० ॥ बांधी रे दीठी गांठ ॥ ते सुलसे छोमी जइ तो ॥ ज० ॥ लीधां पण रत्नो उत्कंठ ॥ १७ ॥ अणदीधुं लेवुं नहीं तो ॥ ज० ॥ एह प्रतिज्ञा रे मुज

पण ए निःस्वामिक थते तो ॥ ज० ॥ महुं नवि लहे कोइ गुद्य ॥ १८ ॥ चैत्य करावीश अजिनवां तो ॥ ज० ॥ करशुं ए जीर्ण उद्धार ॥ पुण्य ए एहना स्वामीने तो ॥ ज० ॥ होशे नहीं जस पार ॥ १९ ॥ एम चिंती लीधां तेणे तो ॥ ज० ॥ कोमीनां मूलनां पंच ॥ ताणी गांठे बांधीयां तो ॥ ज० ॥ सुलसे करी रुमो संच ॥ २० ॥ वेलाकूलपुर आवीयो तो ॥ ज० ॥ जलनिधि तट सुखकार ॥ श्रीसार शेठने मंदिरे तो ॥ ज० ॥ आव्यो ते सुलस कुमार ॥ २१ ॥ आगत स्वागत बहु करी तो ॥ ज० ॥ शेठ दीये सन्मान ॥ बिहु कोडे दोय वेचीयां तो ॥ ज० ॥ रयण दो तेज अमान ॥ २२ ॥ जांम ग्रही बहु तेहनां तो ॥ ज० ॥ निज पुर चालण प्रेम ॥ साथ संघाते चालीयो तो ॥ ज० ॥ मन मांहे चिंते रे एम ॥ २३ ॥ मलशुं जइ घर नारीशुं तो ॥ ज० ॥ करशुं ए लीलविलास ॥ स्वजन सहु साथे मली तो ॥ ज० ॥ पूरशुं मंदिरवास ॥ २४ ॥ एक महोटी अटवी तिहां तो ॥ ज० ॥ जातां ए आवी विचाल ॥ एक प्रदेशे तेहने तो ॥ ज० ॥ उतर्यो साथ विशाल ॥ २५ ॥ धान्यपाक सहुको करे तो ॥ ज० ॥ आवी उजाती ए धाम ॥ थइ सन्नद्ध सहामो थयो तो ॥ ज० ॥ पूरवा वेरीनां काम ॥ २६ ॥ रण मांहे नासी गया तो ॥ ज० ॥ सुलसना सुजट अनेक ॥ रह्यो तिहांकणे एकलो तो ॥ ज० ॥ सुलस धरी मन टेक ॥ २७ ॥ बांध्यो पाठा बाहुए तो ॥ ज० ॥ लूंटी लीयो सवि माल ॥ कर्मदशा जब पालटी तो ॥ ज० ॥ नर होय जेम कंगाल ॥ २८ ॥ ते लेइ चाल्या सुलसने तो ॥ ज० ॥ वेच्यो ए वणिकने हाथ ॥ तेणे जइ पारसकूलमां तो ॥ ज० ॥ आप्यो ए सुलस अनाथ ॥ २९ ॥ रुधिर तणे काजे लीयो तो ॥ ज० ॥ जुर्ज जुर्ज पूरव पाप ॥ बंधातां मालिम नहीं तो ॥ ज० ॥ उदये लहे रे संताप ॥ ३० ॥ आकर्षी नरतनु थकी तो ॥ ज० ॥ रुधिर जरे कुंम केइ ॥ ते मांहे तिहां उपजे तो ॥ ज० ॥ जीव घणा लघुदेही ॥ ३१ ॥ मेराग तेहनो नीपजे तो ॥ ज० ॥ वसन रंगाये रे तेण ॥ रंग न तेहनो सुकरे तो ॥ ज० ॥ दाघे ए पण जलणेण ॥ ३२ ॥ सुलस सहे दुःख उपवां तो ॥ ज० ॥ रुधिरशुं खरड्यां रे अंग ॥ पड्यो अचेत नूमितले गो ॥ ज० ॥ विरुर्ज ए कर्मप्रसंग ॥ ३३ ॥ जारंम एक तिहां आवीयो तो सुध्ज० ॥ चंचुमां ग्रही तस सार ॥ लेइ उड्यो अंबरतले तो ॥ ज० ॥

नहीं कोइ राखणहार ॥ ३४ ॥ रोहणगिरि जइ उतस्यो तो ॥ न० मूकी शीलातल जाम ॥ नक्षणने उद्यत थयो तो ॥ न० ॥ आरंन्न वी रे ताम ॥ ३५ ॥ आव्युं नक्ष्य देखी करी तो ॥ न० ॥ तेणे पण दी रे दोट ॥ मांहोमांहे वलग्या वन्हे तो ॥ न० ॥ करे एक एकने चे ॥ ३६ ॥ अहो संसारविमंबना तो ॥ न० ॥ मत्स्यगलागल एह ॥ को केहनुं वहालुं नहीं तो ॥ न० ॥ स्वारथ साथ सनेह ॥ ३७ ॥ कल करंतां देखीने तो ॥ न० ॥ लघुकलशुं ततकाल ॥ तेह सुलस नासी क तो ॥ न० ॥ पेठो गिरिविवर विचाल ॥ ३८ ॥ ते वेहु पंखी जव ग तो ॥ न० ॥ नीसस्यो सुलस कुमार ॥ गिरिनिर्फर निर्मल करे तो न० ॥ निज तनु लेइने वारि ॥ ३९ ॥ व्रणसंरोहिणीने रसे तो ॥ न० व्रण कस्यां साजां तेण ॥ गिरि उपरथी उतस्यो तो ॥ न० ॥ सुलस नाग्यवशेण ॥ ४० ॥ नूमितले जब आवीयो तो ॥ न० ॥ गर्त्ता रेणुक दीठ ॥ नर बहु खणता देखीया तो ॥ न० ॥ मन चिंते कौतुक मीठ ॥ ४१ ॥ ठठे खंडे नीशमी तो ॥ नवि सुणो ॥ परिग्रह एम दुःखदाय राम कहे परिग्रह थकी तो ॥ नवि सुणो ॥ विरमे महासुख थाय ॥ ४२ ॥ सर्व गाथा ॥ ११७१ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुलस देखी तिहां पंचकुल, हरख्यो चित्त अपार ॥ पूठे हवे अर तेहने, कवण देश आचार ॥ १ ॥ लेइ खनित्र करमां खणे, किण कारण ए संधि ॥ कुण पर्वत ए दाखवो, मुजने सवि संबंध ॥ २ ॥ ते नर कहे सुण पंथीया, जे देशांतर जाय ॥ ते काछा सघलुं लहे, तुं एम घेलो कांय ॥ ३ ॥ शुं आकाश थकी पड्यो, जे न लहे कांइ वात ॥ सुलस कहे ते पण खरुं, निसुणो मुज अवदात ॥ ४ ॥ एक विद्याधर माहरे, सूधो जीवन प्राण ॥ मेरु गिरि देखाडवा, मुज लेइ चल्यो सुजाण ॥ ५ ॥ देवयोग वचमां मल्यो, रिपु विद्याधर एक ॥ युद्ध थयुं ते वेहुने, हुं पडीयो तब ठेक ॥ ६ ॥ नाग्ययोगे रह्यो जीवतो, जे तुम्हे कह्युं ते साच ॥ माटे तुम पूछुं अछुं, कहो मुज साची वाच ॥ ७ ॥ ते कहे रोहण नामथी, पर्वत ने ए देश ॥ वज्रसार नरराजीयो, तेह तणे आदेश ॥ ८ ॥ ए नर नूमि खणी घणी, काढे रयण अंबार ॥ कर देइ राजा प्रते, लेइ जाये घरबार ॥ ९ ॥ तास

वचन सांजली सुलस,मनमां थयो खुशाल ॥ धन उपराजण ए जलो,लह्यो उपाय सुविशाल ॥ १० ॥ रत्नपुंज पुरमां रही, वृद्ध वणिकने गेह ॥ नर साथे गर्त्ता जइ, मेले रयण सनेह ॥ ११ ॥ एक बहुमूलुं पामीयो, रयण गोपवी अंग ॥ बीजां रयणनो जाग देइ, चाल्यो धरी मनरंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ काने मुद्रा शिर जटा ॥ ए देशी ॥ सुलस तिहांथी चालीयो ॥ सुणो नवि जावे लाल ॥ लोज महा दुःखदायक ॥ जज जगवंतकुं वे ॥ मायानो बांध्यो प्राणीयो ॥ सु० ॥ पग पग पामे अपायकुं ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीमंतपुर मांहे आय के ॥ सु० ॥ वेची रयण करवा दाम के ॥ ज० ॥ करियाणुं बहु लेइ चल्यो ॥ सु० ॥ चिंते थयुं मुझ काम के ॥ ज० ॥२॥ मारग मांहि आवतां ॥ सु० ॥ अटवी आवी विकराल के ॥ ज० ॥ दव लाग्यो तिहां जोरशुं ॥ सु० ॥ पवने हो पसरी जाल के ॥ ज० ॥ ३ ॥ करियाणुं दाधुं सवे ॥ सु० ॥ कर्म सबल प्रतिकूल के ॥ ज० ॥ जीव लेइ नाठो तिहां ॥ सु० ॥ लोज ए दुःखनुं मूल के ॥ ज० ॥ ४ ॥ कोइक गामने परिसरे ॥ सु० ॥ जमतां दो तापस दीठ के ॥ ज० ॥ कर जोमी तेहने नम्यो ॥ सु० ॥ पासे जइ उपविठ के ॥ ज० ॥ ५ ॥ तापस कहे तब सुलसकुं ॥ सु० ॥ कोन मूलकसें आया इहां ॥ ज० ॥ फिकर करे क्युं चित्तमां ॥ सु० ॥ बस्स तें जावेगा किहां ॥ ज० ॥ ६ ॥ सुलस कहे सांइ सुणो ॥ अवे उपकारी लाल ॥ धन कारण जगती जम्यो ॥ ज० ॥ पार न आयो दलिद्रको ॥ अवे० ॥ काल बहु युं निर्गम्यो ॥ ज० ॥ ७ ॥ अब सांइ मुजको मीले ॥ अ० ॥ जाग्य फल्यां मेरां सही ॥ ज० ॥ तुम जैसे मोकुं मिले ॥ अ० ॥ उरकुं अब जाचुं नहीं ॥ ज० ॥ ८ ॥ काहे पूकारत द्रव्यकुं ॥ अवे सुण बाबू लाल ॥ धन हम धूल समा गिने ॥ ज० ॥ ए मायाके खेल हे ॥ अवे० ॥ सो योगी वर्जे जिणे ॥ ज० ॥ ए ॥ दोलत दुनिया कारिमी ॥ अ० ॥ विणसंतां नहीं बार के ॥ ज० ॥ मस्त रहो अनुध्यानमां ॥ अ० ॥ धरो एक योगसें प्यार के ॥ ज० ॥ १० ॥ सुलस कहे तुम सच कहा ॥ अवे सुण सांइ लाल ॥ मार्ग योगाभ्यासका ॥ ज० ॥ पण जग दुनियादारकुं ॥ अ० ॥ बंधन आशापाशका ॥ ज० ॥ ११ ॥ धन विणु जगत पके नहीं ॥ अवे० ॥ धन मूल ए संसार के ॥ ज० ॥ कर

करुणा मो उपरे ॥ अ० ॥ तुम हो वडे सिरदार के ॥ ज० ॥ १२ ॥ कहे परिव्राजक काहेकुं ॥ अ० ॥ शोच करत दिल जीतरे ॥ ज० ॥ धन बहु तेरा हे इहां ॥ अ० ॥ तिनमें दारिद्र दूरे करे ॥ ज० ॥ १३ ॥ सुलस कहे मोकुं कहो ॥ अ० ॥ धन मिले कोन उपायसें ॥ ज० ॥ रसकूपी रस जो मिले ॥ अ० ॥ कंचन होवे आयसें ॥ ज० ॥ १४ ॥ सुलस कहे फुरमावीये ॥ अ० ॥ मुज लायक होवे काज के ॥ ज० ॥ महिषीपुत्र कों आणी के ॥ अ० ॥ तेलमें देपो आज के ॥ ज० ॥ १५ ॥ मृत महिषीपुत्र लेइ धखुं ॥ अ० ॥ तेल मांहे पट् मास के ॥ ज० ॥ सुलसको किणहीके घरे ॥ अ० ॥ जिमाडे सो उल्लास के ॥ ज० ॥ १६ ॥ पट् मासे दोय नीसरे ॥ अ० ॥ पुस्तक पुत्र लेइ हाथ के ॥ ज० ॥ दोय तुंबी दोरी ग्रही ॥ अ० ॥ मंचिका लीधी साथ के ॥ ज० ॥ १७ ॥ गिरिविवरे दोय आवीया ॥ सु० ॥ यक्षप्रतिमा पूजी करी ॥ ज० ॥ वलि देवे चूतदेवको ॥ सु० ॥ आगे चले दोनुं फिरी ॥ ज० ॥ १८ ॥ दीप कीयो उन पुत्रको ॥ सु० ॥ दोउ जन आगे गये ॥ ज० ॥ चोरस रसकूप देखी के ॥ अ० ॥ दो दिलमें हर्षित जये ॥ ज० ॥ १९ ॥ वलि देइ कहे सुलसको ॥ सु० ॥ इस मांची पर बेठ के ॥ ज० ॥ तुंब लेइ दोउ हाथमें ॥ अवे० ॥ जाउं रस लेणको . बेठ के ॥ ज० ॥ २० ॥ सुलस गयो रसकूपमें ॥ सु० ॥ मुख समरे नवकार के ॥ ज० ॥ रस लेवा उद्यत थयो ॥ सु० ॥ शब्द सुण्यो तेणी वार के ॥ ज० ॥ २१ ॥ ए रस कोढी हे बूरो ॥ सु० ॥ मत करसें फरसो तुमे ॥ ज० ॥ तुं साधर्मिक माहरो ॥ सु० ॥ उनसें वारत हे अम्हे ॥ ज० ॥ २२ ॥ तनु रस लागेसें होवे ॥ सु० ॥ तिनमें प्रानको नाश के ॥ ज० ॥ आराधक जिनधर्मको ॥ सु० ॥ तुं आयो धनआश के ॥ ज० ॥ २३ ॥ लावो तुंबक रस जरी देउं ॥ सु० ॥ करुं तुमकुं साहाज के ॥ ज० ॥ सुलस कहे तुम बंदन ॥ अवे धर्मबांधव लाल ॥ वात कहो तुम आज के ॥ ज० ॥ २४ ॥ ठठे खंडे एकत्रीशमी ॥ अ० ॥ ढाल कही धन उपरे ॥ ज० ॥ धन निज संकट अवगुणी ॥ अ० ॥ जे एकज उपकृत करे ॥ ज० ॥ २५ ॥ सर्व० ॥ १२०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे धर्मबांधव सुणो, लोज वडो जग मांहि ॥ लोजवशे ए जीवनो, पामे दुःख अथाह ॥ १ ॥ नयरी विशालामां वसुं, जिनशेखर अजिधान ॥

समुद्र चढ्यो धनकारणे, नांज्युं अधविच यान ॥ २ ॥ उदधि तस्यो फलद्दक सही, जमतां अटवी मांहि ॥ परिव्राजक मुजने मल्यो, नाख्यो कूपक मांहि ॥ ३ ॥ तुंबक जरी कंठे गयो, लेइ तुंबक तेणे नीच ॥ दोर ठेदी नाख्यो मुने, पमीयो रस अधविच ॥ ४ ॥ जाणुं तुजने पण तेणे, ठेतरीयो सही आज ॥ जो सुश्रावक मत करो, तस विश्वास शुज काज ॥ ५ ॥ सुलसे पण संबंध निज, दाख्यो तेणे रसतुंब ॥ दोय जरी दीधां तिहां, न कस्यो कांइ विलंब ॥ ६ ॥ मांची तल बांधी निविम, सुलसे हलावी दोर ॥ कूपकंठ लगे ताणीयो, योगीए करी जोर ॥ ७ ॥ दे तुंबक मुजने प्रथम, ते कहे बांध्यां ताणी ॥ मांची तले बूटे नहीं, आपीश पठे सुजाण ॥ ८ ॥ तेणे जाण्युं नेहू मल्यो, न ठगाये हवे एह ॥ तुंब सहित तेणे सुलसने, नाख्यो कूप निःस्नेह ॥ ए ॥ कूप मूकी योगी गयो, निठुर नीच कुपात्र ॥ सुलस कूपमेखल पड्यो, अक्षत रहीयुं गात्र ॥ १० ॥ सुलस गाढ स्वर उच्चरे, पंचपरमेष्टिजाप ॥ कहे चेतन ए ताहरां, उदये आव्यां पाप ॥ ११ ॥ जो परिग्रह आगल थकी, मूलथी मेल्यो होत ॥ तो एवडुं स्याने इहां, डुःख हुं नजरे जोत ॥ १२ ॥ अधुना पण प्राणी इहां, लेइ चारित्र उदार ॥ करी अणसण आराधना, जिम हुवे तुज उद्धार ॥ १३ ॥ जिनशेखर तव सांजली, कहे म म चिंतव एम ॥ कहुं निस्सरण उपाय हुं, सांजल धरी मन प्रेम ॥ १४ ॥ एक गोधा आवे अठे, रस पीवाने अत्र ॥ तस पुछ वलगी तुं जजे, ते जिहां जाये तत्र ॥ १५ ॥ कहे जिनशेखर माहरुं, अल्प आयु अवशेष ॥ कर उपकार तुं मुजने, देइ धर्मोपदेश ॥ १६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ महावीरजीनी देशना ॥ ए देशी ॥ सुलस कहे हवे तेहने ए, जिनशेखर अवधार तो ॥ चिहुं गतिमां जाइ जीवडो ए, जमतां न आव्यो पार तो ॥ १ ॥ श्रीजिनवरनी देशना ए ॥ ए आंकणी ॥ पांचे ए आश्रव सेववे ए, पहेले ए प्राणातिपात तो ॥ बीजो मृषावाद परिहरो ए, अदत्त करे गुणघात तो ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ मैथुन परिग्रहमां घणुं ए, [illegible] रम्यो जीव तो ॥ जोगवे नरक निगोदमां ए,करतो वेदने ए रीव तो ॥ श्रीजि० ॥ एक समरे अरिहंतने ए, सिद्ध जजे गुणवंत तो ॥ आचारिज उवझायने

ए, समरे महामुनि संत तो ॥ श्रीजि० ॥ ४ ॥ ए पंच मंगल मूलगां ए, ध्यातां हो जवनिस्तार तो ॥ शरण नहीं कोइ ए विना ए, जव मांहे राखणहार तो ॥ श्रीजि० ॥ ५ ॥ शरण इजो वली तुज जणी ए, अरिहंत सिद्ध सुसाध तो ॥ केवलिजापित धर्मनुं ए, राखजो दिलमां समाध तो ॥ श्रीजि० ॥ ६ ॥ तुं कोइनो नहीं ताहरुं ए, कोइ नहीं जग मांहे तो ॥ एक जिनधर्म छे ताहरो ए, वलगजे एहीनी बांहे तो ॥ श्रीजि० ॥ ७ ॥ लख चोराशी खामजे ए, म धरीश कोइशुं वैर तो ॥ स्वारथीयुं सहुको मल्युं ए, वाहलां हो वहेती सेर तो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ सगपण ए संसारनां ए, हुवां अनंती वार तो ॥ वहालो वैरी थइ अवतरे ए, वैरी वहालो संसार तो ॥ श्री० ॥ ए ॥ मिथ्यादुष्कृत दीजीये ए, सेव्यां ए पाप अढार तो ॥ आ जव परजव सेवीया ए, दोष अनेक प्रकार तो ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे तें कस्यां वली कारव्यां ए, पनर ए कर्मादान तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावजे ए, दुर्गतिनां ए निदान तो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सांजल आहारीपणुं ए, लाग्युं अनादिनुं केम तो ॥ क्यांहि रह्यो नहीं ए विना ए, हवे तस मूर्छा फेम तो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ चार प्रकार आहारना ए, तुं वोसिरावजे आज तो ॥ अरथ सरे जेम ताहरो ए, वलीयो थइ कर काज तो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ शूर थजे तुं इण समे ए, म करीश कायर जाव तो ॥ असुर सुरादिक स्थिर नहीं ए, ए संसार स्वजाव तो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ जिनशेखर मनशुद्धिशुं ए, सद्दहीया सवि बोल तो ॥ ध्यान धरे नवकारनुं ए, रह्यो मने थइ अमोल तो ॥ श्री० ॥ १५ ॥ षट्कायना जीव उपरे ए, राग ने द्वेष निवार तो ॥ आयु पूरुं करी अवतस्यो ए, अष्टम कल्प मकार तो ॥ श्री० ॥ १६ ॥ न दीये हुंकारो यदा ए, जाण्युं गयो परलोक तो ॥ सुलस रुवे कंठ मूकीने ए, धर्मबांधवने शोक तो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ हा जिनशेखर बांधवा ए, साधर्मिक गुणधार तो ॥ मुज मूकीने किहां गयो ए, द्यो उत्तर एणी वार तो ॥ श्री० ॥ १८ ॥ धर्माराधन रजुथी ए, मूकीने दुःखकूप तो ॥ सुरपदवी सही पामीया ए, जाणुं ए मतिथी स्वरूप तो ॥ श्री० ॥ १ए ॥ एणे अवसरे आवी गोधिका रे, रस पीवा तिण गय तो ॥ पान करी पाछी वली ए, पुछे हो वलग्यो जाय तो ॥ श्री० ॥ २० ॥ किहांइ सूवे बेसे किहां ए, किहांइ जजो एण मेल तो॥

कष्टथी बाहेर नीसस्यो ए, जुर्ड जुर्ड कर्मना खेल तो ॥ श्री० ॥ २१ ॥ रवि पर्वत देखी करी ए, मूकी हो तेहनुं पुछ तो ॥ एक दिशि लेइने चालीयो ए, सुलस धरी मति ऊंच तो ॥ श्री० ॥ २२ ॥ आगे जातां एक हाथीयो ए, साहामो धायो विकराल तो ॥ सुलस विचारे हो चित्तमां ए, मूके नहीं ए व्याल तो ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अंत नायो एक डुःखनो ए, बीजुं आयुं सन्मुख तो ॥ में बहु पाप समाचस्युं ए, पूरव नव कोइ तिरक तो ॥ श्री० ॥ २४ ॥ नाठो ते गजनय थकी ए, करी आव्यो तत्काल तो ॥ करे फाली ऊगालीयो ए, चिंतित थयुं विसराल तो ॥ श्री० ॥ २५ ॥ पकतां हो नाग्यवशे तिहां ए, तरु उपर पड्यो आय तो ॥ मास्या मरे नहीं ते सही ए, जस निरुपक्रम आयु तो ॥ श्री० ॥ २६ ॥ शाखा हो अवलंबी रह्यो ए, दृढचित्त सुलस कुमार तो ॥ गज तरु धंधोले रह्यो ए, थरथर धूजे अपार तो ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सिंह तिहांकणे आवीयो ए, गज हणीयो क्षण मांय तो ॥ आमिष तस नक्षण करे ए, मत्स्य ज्युं ए नव न्याय तो ॥ श्री० ॥ २८ ॥ वाघ जोरावर तिहां वली ए, आव्यो हो मांस उद्देश तो ॥ एक डुव्य कारण बिहु जणा ए, वढीया ते सुविशेष तो ॥ श्री० ॥ २९ ॥ युद्ध करंतां बेहुने ए, रात पनी तिण वार तो ॥ सुलस विचारे चित्तमां ए, नाव्यो ए कर्मनो पार तो ॥ श्री० ॥ ३० ॥ तरुशाखाए एकण दिशे ए, दीठो उद्योत अत्यंत तो ॥ सुलस विचारे ए शुं हशे ए, जोउं जइ टले भ्रांति तो ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जोतां हो एक माला विचे ए, दीठो मणि तिहां एक तो ॥ पासे भुजगस्थानक वली ए, देखी चिंते सुविवेक तो ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ विषअपहर ए भुजंगनुं ए, शिरमणि रयण ए होय तो ॥ लेइ करतल ते उतस्यो ए, हर्षे ते मणि जोय तो ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ वाघ हरि दोय नासीया ए, ते मणिने उद्योत तो ॥ रात गइ रवि उगीयो ए, प्रगटी पूर्व दिशे ज्योति तो ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ ठठे खंडे बत्रीशमी ए, ढाल नणी मनरंग तो ॥ डुःख जग जीव सहे घणा ए, परिग्रहने परसंग तो ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५९ ॥ श्लोक ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ थये प्रनाते मणिरयण ते, गांठे बांधी सार ॥ चाल्यो अति उतावलो, सुलस अरण्य मजार ॥ १ ॥ भूख्यो तरस्यो अति घणो, सहेतो

दुःख अपार ॥ साते दिवसे पामीयो, ते अटवीनो पार ॥ २ ॥ सप्तम दिन एक पर्वते, दीठो अग्निप्रकाश ॥ तस अनुसारे तिहां गयो, मनमां सुलस विमासी ॥ ३ ॥ धातुर्वादी बहु मिल्या, करे धातुरस योग ॥ सुलस तिहां ऊनो जइ, पूर्व कर्मने जोग ॥ ४ ॥ आदर देइ स्थापीयो, तेणे तेहने निज पास ॥ जोजन आपे जावतां, सुलस लह्यो विश्वास ॥ ५ ॥ सूतां एक दिन तेहनी, गांठे देखी गरछ ॥ ठानो ठोडीने लीयो, अर्थ करे अनरछ ॥ ६ ॥ तस ठामे बांध्यो अवर, तत्प्रमाण पाषाण ॥ ठगकारक एम ठग करी, परधन हरे अजाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ स्वामी सोहंकर, श्रीसेरीश ए ॥ ए देशी ॥ पाछली रयणी रे, सुलस ते जागीयो ॥ धातु धमंतां हुं रह्यो निर्जागीयो ॥ त्रूटक ॥ निर्जागीयो इहां अर्थ केरी, आश महारी नवि फली ॥ बहु दिवस थया मुज धातु धमतां, द्रव्य कोडी नवि मिली ॥ ए द्रव्यअर्थी करे व्यर्थी, अग्निकिरिया अति घणी ॥ बहु पापकर्मी नहीं धर्मी, आश एहोनी सवि हणी ॥ १ ॥ यतः ॥ धातु धमे विणु जा धणआशा, सिर मुंडे विणु जा रुयासा ॥ वेश धरे विणु जा घरआशा, ए तिन्निवि आशा हूइ निराशा ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ अह ऊठीने रे, सुलस ते चालीयो ॥ मारग मांहे रे, बहु दुःख सालीयो ॥ त्रू० ॥ सालीयो बहु दुःख नास मनमां, अर्थ विणु बहु वन नमे ॥ पूरवे खोया अरथ केरी, चिंत सबली चित्त दमे ॥ मन मांहे आशा अर्थ केरी, करुं उपराजण नवी ॥ आवीयो अटवीशीपेपुरमां, सबल शोना अभिनवी ॥ २ ॥ मणि वेचणने रे, छोडे गांठी ए ॥ पाषाण देखी रे, पड्या त्रूपीठ ए ॥ त्रू० ॥ त्रूपीठ पडीयो करे हा हा, दुःख्यो मुजने अति घणो ॥ ते धातुवादीए ठगी अनुपम, रयण लीधां मुज तणो ॥ अथवा नहीं तस कांइ दूषण, दोष सवि मुज कर्मनो ॥ मन चिंतवुं तम होय क्यांथी, लेश नहीं जस धर्मनो ॥ ३ ॥ पूरव जन्म में रे, कर्म कीधां घणां ॥ केइ रण जांग्यां रे, होडी जन तणां ॥ त्रू० ॥ जन तणां जांग्यां तेम रण वळी, देवद्रव्य गाथारणा ॥ में नम्यां होंसे ते विनोदे, काउ बहु वय पूरणा ॥ अथवा दरिद्री नारी विधवा, द्रव्य हीने धारम्यां ॥ ते कर्म मुजने उदये आ नव, आवीयां महारां कर्मा ॥ ४ ॥

मन एम चिंते रे, शुं इण जीविते ॥ दुःखीयो कीधो रे, मुजने देव तें॥ नू०॥ देव तें जो कीध दुःखीयो,प्राण तजवा में हवे॥ कृष्ण चउदिशि रयण पितृवन, जइ गाढ स्वरे चवे॥ वेताल नूत पिशाच निसुणो, मांस वहेंचुं मुज तणुं॥ तुमे जेम जाणो तेम श्रावी, करो जक्षण तनु तणुं ॥ ५ ॥ कर लेइ काती रे, बहु श्राव्या तिहां ॥ वेतालादि रे, सुलस अछे जिहां ॥ नू०॥ जिहां सुलस छे ते तिहांकणे, श्रावी एणी परे उचरे ॥ वैराग्यथी जो मांस विक्रय, करे छे तुं आदरे॥ तो निपत इहांकणे नूमि उपरे, पड्यो ते निर्जय थइ ॥ सहु पासे विंटाइ वल्यां हवे, वात सुणो तिहां जे हुइ ॥ ६ ॥ एहवे अवसर रे, जिनशेखर जयो ॥ अवधिज्ञाने रे, जोइ अल-जीयो ॥ नू० ॥ अलजीयो जोइ तुरत सोइ, सुलस पासे आवीयो ॥ ते नूत नाठां हतां माठां, तास जइ बोलावीयो॥ जो सुलस श्रावक अहं तुज प्रति, नमुं हुं कर जोमीने ॥ तें मुज आराधन सुणावी, बुजीयो मद छोमीने ॥ ७ ॥ थयो सुरलोके रे, अष्टमे हुं सही ॥ इंद्र सामानिकनी, ऋद्धि में लही ॥ नू० ॥ में लही ऋद्धि ए तुज प्रसादे, धर्मगुरु मुज तुं थयो॥ उप-कार ताहरो अछे सबलो, ते न जाये में कह्यो ॥ एम निसुणी ते पण सुलस उठ्यो, जाणी जिनशेखर सुरो ॥ कहे धर्मबांधव तुजने पण, हुं नमुं हुं सादरो ॥ ८ ॥ देव तव बोले रे, शुं तुज प्रिय करुं ॥ सुलस कहे तुम रे, दीठे दिल ठल्युं ॥ नू०॥ दिल ठल्युं तोपण कहो मुजने,कर्म हवे केतुं रह्युं ॥ निविम ए अंतराय केरुं, ज्ञानथी जे तुम्हे लह्युं ॥ कहे देव ए तुम क्षीण सरिखुं, कर्म रह्युं लवलेशथी ॥ पण जोगकर्म अछे घणुं तेणे, चरण हमणां तुज नथी ॥९॥ माणिक्य सोवन रे, धनराशि घणी॥ सुर बहु ढोइ रे, तेहना गुण जणी ॥ नू० ॥ गुण जणी ढोइ साथ साथे, नयर तस पहों-चामीयो ॥ सुर शिख मागी गयो स्थानक, शुज अशुज नसामीयो॥ पुर मांहे सघले वात पसरी, नयरपति साहमो जइ॥ बहु करी उत्सव नयर मांहे, लावीया हर्षित थइ ॥ १० ॥ निज घरे आव्या रे, साथ स्वजन घणां ॥ सहु जन बोले रे, हर्ष वधामणां ॥ नू० ॥ वधामणां लीये जामणां तेम, प्रथम नारी पीयु तणां ॥ बहु दिवस वहालेसर पधार्या, आज उलट अति घणा॥ कंत कामिनी दोय मलीयां, दिवस वलीया सुखना ॥ अंतराय माठा सवे पाठा, दिवस नाठा दुःखना ॥ ११ ॥ काम-

पताका रे, पण अनुरागिणी ॥ वेणीबंधे, मितांशुकत्यागिणी ॥ त्रू० ॥ त्या गिणी देखी तेहने पण, करी राखी गेहिनी ॥ दोय नारी साथे जोग विलसे, विमल कीर्त्ति जेहनी ॥ एक दिवस चिंते चित्त मांहे, जीव परिग्रह मिति विना ॥ तें दुःख बहुलां सह्यां परिग्रह, व्रत लीधां एकमना ॥ १२ ॥ द्रव्य अनेरुं रे, धर्मव्यय करे ॥ साते क्षेत्रे रे, परिगल वावरे ॥ त्रू० ॥ वावरे साते क्षेत्रे बहुलुं, वित्त तेम विलसे वली ॥ एक दिवस अशुभना उदयथी तस, द्रव्य खूटुं अति मली ॥ दिल मांहे विलखो थयो सुलस तो, द्रव्य नाहे जेटले ॥ आठमा सुरलोकथी सुर, आवी पूरे तेटले ॥ १३ ॥ कहे मुफ वेगां रे, तुम चिंता किसी ॥ जे तुम जोइये, तें देजो उल्लसी ॥ त्रू० ॥ उल्लसी लेजो वृष्टि करीने, कहे सोवनराशिनी ॥ गेते निज परिग्रह विरति माफक, लीधुं नहीं मति आशनी ॥ सुर कहे सुलसने एह रुडुं, कर्युं आतमहित नणी ॥ ए द्रव्य विण परिमाण लीधे, दीधे वेदन अति घणी ॥ १४ ॥ यतः ॥ यथा यथाऽल्पो लोकः स्या,–दल्पारंभपरिग्रहो ॥ तथा तथा सुखं नृणां, धर्मसिद्धिश्च जायते ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ वांछित धन देइ, सुलसने ते गयो ॥ इंद्रियामां रे, तस घमणो थयो ॥ त्रू० ॥ थयो घमणो सुलस एक दिन, गयो वाडी मन रुली ॥ तिहां कर्मयोगे निधान देखी, चित्तमां चिंते वली ॥ ए द्रव्य न घटे मुफ लेवुं, व्रतनंग ते आदर्यो ॥ मन एम चिंती निरखी नजरे, सुलस पाछो उंगस्यो ॥ १५ ॥ दीठुं रायने रे, सुभटे तिहां कणे ॥ पुरमां जइने रे, नृप आगे नणे ॥ त्रू० ॥ आगे नणे तुमे रही छाना, सुलसनी परीक्षा करो ॥ तेणे सात दिवसना लगी परखयो, जाणीयो गुणमति नर्यो ॥ नृप तेनी पूछे कह्यो शुं ए, केम निधि लीधो नहीं ॥ कहे सुलस माहरे नियम उपर, लीधे व्रत नांगे सही ॥ १६ ॥ गुणवंत जाणी रे, निज नंडारनी ॥ कूंची सोंपी रे, नृप दरबारनी ॥ त्रू० ॥ दरबारनी नहि दान नृपति, सुलसने पूछी करे ॥ पुर मांहे गवरो सुजस पसर्यो, कीर्ति मह मुख उच्चरे ॥ ढाल ठठ मंगल नेवी,–हासी मंगल भइ ॥ एम नियम पाळे धन्य ते नर, नमो तेहने पद जइ ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२०३ ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिहां आवीया, अमरचंद मुनिराय ॥ आवी नर

कह्युं सुलसने, कीधो तास पसाय ॥ १ ॥ सुलसे जइ रायने कह्युं, राय घणे परिवार ॥ गुरुवंदणने आवीयो, तिण उद्यान मजार ॥ २ ॥ पांचे अजिगम साचवी, करी पंचांग प्रणाम ॥ गुरु वांदी बेठा सवे, तिहां यथोचित स्थान ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ मोरी मातजी रे, अनुमति द्यो व्रत आदरुं रे ॥ ए देशी ॥ गुरु जाखे तिहां देशना रे, मीठी अमीय समाणी रे ॥ ए नरजव दोहिलो लह्यो रे, कांइ हारो गुणखाणी रे॥ १ ॥ मोरा प्राणीया रे, एह धर्म नित्य आदरो रे॥ शुजगुण गणीया रे, मत प्रमाद समाचरो रे ॥ ए आंकणी ॥ घूणाक्षर न्याये करी रे, ए सामग्री लाधी रे ॥ ते हवे तुमे सफली करो रे, जैन-क्रियाने साधी रे ॥ मोरा० ॥ २ ॥ आयु ठजाणुं जाय ठे रे, न लीये लगार विसामो रे ॥ काल कुलालना चक्र ज्युं रे, एह फिरे अविरामो रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पंच प्रमाद मांहे पड्या रे, आप सवारथ माह्या रे ॥ काल ठजातो नवि लहे रे, मोहपिशाचे वाह्या रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सूर्य-गतागत आठखुं रे, प्रतिदिन ए क्षय पामे रे ॥ जन्म जरादिक देखीने रे, क्षण निर्वेद न कामे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ मोहमद्यपाने करी रे, जग मतवालुं दीसे रे ॥ आतमतत्त्व न ठंलखे रे, साचुं ए विशवावीशे रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गुरुवाणी निसुणी सवे रे, जीव जविक मन हरख्या रे ॥ देव धर्म गुरुतत्त्वने रे, सूधे लक्षण परख्या रे॥ मो० ॥ ७ ॥ इण अवसरे पूठे तिहां रे, मुनिनें सुलस शिर नामी रे, केम न रही प्रजु माहरे रे, संपद कष्टे पामी रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ देइ ज्ञान उपयोगने रे, जाखे एम चठनाणी रे ॥ संपद आवीने गइ रे, सुण हेतु तस गुणखाणी रे ॥ मो० ॥ ए ॥ ताम्राकर गामे हतो रे, तारचंद्र अजिधानो रे ॥ कौटुंबिक कुलमां वसो रे, श्रद्धावान ते दानो रे ॥ मो० ॥ १० ॥ याचक श्रमणादिक जणी रे, दान अवारित आपे रे ॥ श्रावक हुतो अहोनिशे रे, मन शुज करणीमां स्थापे रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ एक दिन अशुजना योगथी रे, तस मनमां एम आव्युं रे ॥ हा दीधुं में अति घणुं रे, पण तस फल नवि पाव्युं रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ शुं दीधे गुण नीपन्यो रे, आज पछी नवि देवुं रे ॥ गुण-कीर्त्ति बोले नहीं रे, पाहुं कांइ न लेवुं रे ॥ मो० ॥ १३ ॥ दानादिक तस

दीजीये रे, जे मुख कीर्त्ति बोले रे ॥ शुं दीधे होये साधुने रे, जे वाते ख्याति न खोले रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ एम विच विच बांध्या तेणे रे, कर्म कठिन अंतरायो रे ॥ वली देखी मुनि अन्यदा रे, दान देवा मति थायो रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ एम अनेक वारे तेणे रे, दीधुं खंड्युं दानो रे ॥ अंते समाधि मरी थयो रे, सुर सौधर्म विमानो रे ॥ मो० ॥ १६ ॥ तिहांथी चवीने तुं हुवो रे, इन्यनंदन गुणवंतो रे ॥ जेम दीधुं तेम पामीयो रे, वात करी मुनि तंतो रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ ते माटे मनशुद्धिथी रे, देवुं दान विवेके रे ॥ पांचे दूषण मांहिले रे, लांछित न करीये एके रे ॥ मो० ॥ १८ ॥ दान शील तप ए नलां रे, मन शुद्धे होय लेखे रे ॥ जो आदरीये नावथी रे, तो फल आपे विशेषे रे ॥ मो० ॥ १९ ॥ सुलस सुणी प्रतिबुझीयो रे, राय कहे द्यो शिखो रे ॥ नवजलनिधिनी तारिणी रे, लेश्श हुं हवे दीखो रे ॥ मो० ॥ २० ॥ राय कहे हुं पण सही रे, लेश्श व्रत तुज साथे रे ॥ जोरू मिली जुगते नली रे, नवुं कह्युं जगनाथे रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ गुरु वांदी घरे आवीया रे, पुत्रने सोंपी राजो रे ॥ बेहु जणे संयम आदर्युं रे, साख्यां आतमकाजो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥ संवेग रसमां झीलता रे, तप तपता अति गाढां रे ॥ शुन नावनमां वर्त्तता रे, सफल करे रात दहाडा रे ॥ मो० ॥ २३ ॥ व्रतनावन नावे नली रे, समतावंत संतोषी रे ॥ मुनिमारग अवगाहतां रे, आतमगुणनो पोषी रे ॥ मो० ॥ २४ ॥ सुलस मुनि केवल लह्युं रे, घातिकर्म क्षय घाती रे ॥ दुःखदायी ए अनादिनो रे, जाण्यो परिग्रह साथी रे ॥ मो० ॥ २५ ॥ कहे नविकजन आगले रे, एह परिग्रह मूर्छा रे ॥ धनमूर्छा उतारीने रे, जैनधर्ममां ढूको रे ॥ मो० ॥ २६ ॥ सुलस मुनि मुक्ते गया रे, अनंत चतुष्टयधारी रे ॥ सादि अनंत नागे रह्या रे, तेह नमो सुविचारी रे ॥ मो० ॥ २७ ॥ ए पंचम व्रत उपरे रे, सुण चक्रायुध राजा रे ॥ शांति प्रभुजी एम कहे रे, व्रत पाले शिवराजा रे ॥ मो० ॥ २८ ॥ नहे खंम चोत्रीशमी रे, ढाले सुलस अवदात रे ॥ राम कहे व्रत पालतां रे, वाधे जग आख्याति रे ॥ मो० ॥ २९ ॥ इति पंचमपरिग्रहपरिमाणव्रतोपरि सुलसकथानकं समाप्तम् ॥ इति पंच अणुव्रतकथानकानि ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ १३१५ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ६४ ॥

॥ अथ षष्ठो दिशिपरिमाणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच अणुव्रत इम कह्यां, हवे त्रण गुणव्रत तंत ॥ चक्रायुध नरवर सुणे, कहे शांति जगवंत ॥ १ ॥ दिशिपरिमाण कह्युं प्रथम, जोगोपजोगनुं मान ॥ अनर्थदंडविरमण वली, ए त्रण गुणव्रत जाण ॥ २ ॥ ऊर्ध्व अधो तीर्छी दिशे, अधिकगमन अनाजोग ॥ अतिचार त्रण ए कह्या, सुणुं बीजा दोय योग ॥ ३ ॥ क्षेत्रवृद्धि चोथो कह्यो, स्मृतिनुं अंतर्ध्यान ॥ अतिचार ए टालीने, पालो दिशिपरिमाण ॥ ४ ॥ लोजोदधि संकेलीयो, जेणे प्रजुं ए व्रत सार ॥ त्रस थावर बहु जीवने, ते अजय तणो दातार ॥ ५ ॥ तपलोह गोलक समुं, अविरतिपाप ए जीव ॥ सकल जीव प्रत्ये दहे, तेणे आरंज अतीव ॥ ६ ॥ यद्यपि सघले गमननी, शक्ति नथी इणे देह ॥ तोपण अवर निबंध तस, होवे नहीं संदेह ॥ ७ ॥ दिशिपरिमाण कस्या विना, पामे बहु डुःखराशि ॥ जेम स्वयंजूदेवनी, नवि पहोती मन आश ॥ ८ ॥ चक्रायुध कहे स्वामीने, कोण स्वयंजूदेव ॥ किहां थयो किणी परे डुःख लह्युं, ते जाखो जिनदेव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ जठ कलालण जर बनो हे ॥ ए देशी ॥ शांति प्रजु कहे जलो हे, गंगातट इणे नाम ॥ गाम सुदंत सोहामणुं हे, राजा तिहां अजिराम ॥ १ ॥ जविषण जावे सांजलो हे ॥ दिशिपरिमाण विचार ॥ पालंतां सुख पामीये हे, लहीये जव निस्तार ॥ ज० ॥ २ ॥ नाम स्वयंजूदेव छे हे, तिहां कौटुंबिक एक ॥ करे कृषि कर्मारंजनुं हे, नहीं संतोष विवेक ॥ ज० ॥ ३ ॥ निद्रा विरामे एकदा हे, ते चिंते एम रात ॥ मनोवांछित न हुर्छ कदा हे, लाज ए कर्मनी वात ॥ ज० ॥ ४ ॥ गमन करुं देशांतरे हे, लावुं बहु धन कोमि ॥ जेम पूरावे मादरा हे, सघला वांछित कोम ॥ ज० ॥ ५ ॥ करी सामग्री चालीयो हे, उत्तर पंथ अपार ॥ लक्ष्मीशीर्षकपुर गयो हे, करवा वणिज व्यापार ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेह नयर मांहे वसी हे, करे व्यवसाय उपाय ॥ लाज हुर्छ निज कर्मने हे, अनुसारे तिण वाय ॥ ज० ॥ ७ ॥ पण तृप्तो नहीं जीवनो हे, देखी बहु धनवंत ॥ परदेशी पूछे घणा हे, कुण कुण देश महंत ॥ ज० ॥ ८ ॥ वात

सुणी तेहोने मुखे हे, नव नवी होंश धरंत ॥ भाये नव नव देशनो हे, लोभीने लोभ हवंत ॥ भ० ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ श्रूयमाणाः शुभादेशा, राजानः सेवितास्तथा ॥ सर्वं दूरस्थितं वस्तु, स्यात्प्रायो विस्मयावहम् ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ कोइक नगरे आवीने हे, पूछे वणिकनी पास ॥ किहांथी तुमे धन लावीया हे, ते परकाशो उल्लास ॥ भ० ॥ १० ॥ ते कहे देश चिलात मांहे, बहु मेलीने आज ॥ अमो आव्या हर्षे इहां हे, सीधां वांछित काज ॥ भ० ॥ ११ ॥ कांइक संबल लेइने हे, चाल्यो चिलातनी वाट ॥ साथ सहित थइ सावदो हे, जुर्ड नवि लोभनो गठ ॥ भ० ॥ १२ ॥ तप्तवालुका नामनी हे, विचि उल्लंघी रे पंथ ॥ हिम शीतल मारग चाल्यो हे, जिहां बहु छे उत्पंथ ॥ भ० ॥ १३ ॥ तिहांथी गिरिमार्गे गयो हे, अटवी विषम अपार ॥ लोभवशे शुं नवि करे हे, प्राणी अंगीकार ॥ भ० ॥ १४ ॥ एणी परे भमतो एकदा हे, पहोतो देश चिलात ॥ राजविरोध तिहां घणो हे, म्लेच्छने अन्य संघात ॥ भ० ॥ १५ ॥ साथ चिलातनो जाणीने हे, लूंटी लीयो सवि सार ॥ साथने पाछो वालीयो हे, निज मंदिर तिण वार ॥ भ० ॥ १६ ॥ नजर वंचीने तेहोनी हे, नाठो स्वयंभूदेव ॥ मन चिंते महोकम थयो हे, करशुं वांछित हेव ॥ भ० ॥ १७ ॥ करमसंयोगे जइ पड्यो हे, शबरशिशुने रे पास ॥ कर चरणे तेणे बांधीयो हे, रुधिर विलंब्यो रे तास ॥ भ० ॥ १८ ॥ नाख्यो जइ अटवी वचे हे, फक्की करी अंग जोर ॥ मृत जाणी गृध्र पंखीयां हे, आयां करे बहु सोर ॥ भ० ॥ १९॥ चंचुप्रहारे चुंटीने हे, तस भक्षण करे तेह ॥ मन चिंतुं मनमां रह्युं हे, अति लोभे गति एह ॥ भ० ॥ २० ॥ गृध्रने आव्यां जाणीने हे, अलगाथी जिल्लवाल ॥ वाणे ते पंखी हणे हे, जुर्ड जुर्ड कर्म चंमाल ॥ भ० ॥ २१ ॥ सांज पड्ये ते स्वयंभूने हे, तेकी लावे रे गेह ॥ बंध छोमी वेसारीने हे, जीमाडे ससनेह ॥ भ० ॥ २२ ॥ रात राखी स्वयंभूने हे, मंदिर मांहे प्रभात ॥ वनमां नाखे बांधीने हे, जुर्ड जुर्ड कर्मनी वात ॥ भ० ॥ २३ ॥ एम दुःख सहेतां एक दिने हे, वनमां बाघण एक ॥ आवी भूखी अति घणुं हे, नाठा शबरशिशु छेक ॥ भ० ॥ २४ ॥ बाघण लेइ स्वयंभूने हे, चाली विकराल ॥ निज स्थानक ते आणीयो हे, भूख्यां ॥ भ०

॥ २५ ॥ बंधन छानी तेहनां हे, मूकी ते मृतप्राय ॥ निज बालकने खोलवा हे, चाचण चाली वन मांय ॥ ज० ॥ २६ ॥ पूठे अवसर पामीने हे, नाठो स्वयंभू रे छव ॥ नाही नदीमां जइ मिल्यो हे, केइक साथनी पूठ ॥ ज०॥ २७॥ अनुक्रमे मंदिर आवीयो हे, इम चिंतवतो रे चित्त ॥ धन-लोभे बहु धरा भम्यो हे, न गइ दारिद्र ईति ॥ ज० ॥ २८ ॥ अति लोभी अति दुःख लहे हे, तेहमां नहीं संदेह ॥ जेहवो गयो तेवो आवीयो हे, जीव फरी तुं गेह ॥ ज० ॥ २९ ॥ धिक् तुजने संसारमां हे, रहेतां कवण सवाद ॥ नित्य उठी निज बंधुमां हे, तुज अवगुण अपवाद ॥ ज० ॥ ३० ॥ नाग्यसंयोगे मुनि मल्या हे, लीधो संयमजार ॥ मुनिवर मारग पालतो हे, लोन न राखे लगार ॥ ज० ॥ ३१ ॥ समता सूधी मन धरे हे, पाले शुद्धाचार ॥ साधु स्वयंभू पामीया हे, सुरपदवी अवतार ॥ ज० ॥ ३२ ॥ दिशिविरमणे जीवनो हे, लहे एणी परे बहु दुःख ॥ एम जाणी ए व्रत धरो हे, जेम लहो अविचल सुख ॥ ज० ॥ ३३ ॥ छठे खंडे पांत्रीशमी हे, ढाल छठे व्रत जाण ॥ राम कहे गुणवंतनां हे, करो नित्य उठी वखाण ॥ ज० ॥ ३४ ॥ इति षष्ठदिशिविरमणव्रते स्वयंभू-देवकथानकम् ॥ ६ ॥ सर्व गाथा ॥ १३५८ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६५ ॥

॥ अथ सप्तमा नोगोपनोगविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार मांहे व्रत सातमुं, गुणव्रत बीजुं सार ॥ कहे प्रनु चक्रायुध प्रत्ये, नविक जीव उपकार ॥ १ ॥ नोजन ने वली कर्मथी, विहु नेदे कह्युं तेह ॥ नोग अने उपनोगनुं, मान करो गुणगेह ॥ २ ॥ अनंतकाय वली अनक्ष्यनुं, नोजन वर्जे जाणी ॥ तेह तणो लवलेशथी, सुण विस्तार सुजाण ॥ ३ ॥ अनक्ष्य तजे सघलुं तज्युं, तेहनां बावीश नाम ॥ ५ पंचुं-बरि ९ चउ विगइ तेम, १० हिम वरजो गुणधाम ॥ ४ ॥ ११ विष १२ करगा सवि १३ मृत्तिका, १४ रयणीनोजन जाण ॥ १५ बहुबीजां मत वावरो, तेम १६ अनंत १७ संधाण ॥ ५ ॥ १८ घोलवमां १९ वायंगणां, २० अणजाएयां फल फूल ॥ २१ तुच्छफल वली २२ चलित रस, वर्जे होय सवि शूल ॥ ६ ॥ उत्तम गृही न वावरे, ए बावीश अनक्ष्य ॥ एकवीश गुण पूरो सही, कहीये तेह सुदक्ष ॥ ७ ॥ काय अनंत न वावरे, जिहां अनंत जीव

घात ॥ सिद्ध थकी पण अनंत गुण, जेहमां जीवसंघात ॥ ८ ॥ यतः ॥ नृभ्यो नैरयिकाः सुराश्च निखिलाः पंचाक्षतिर्यग्गणोऽथ क्षाप्याज्वलनो यथोत्तरममी संख्यातिगा भाविताः ॥ तेभ्यो भूजलवायवः समधिकाः प्रोक्ता यथानुक्रमं, सर्वेभ्यः शिवगा अनंतगुणितास्तेभ्योऽप्यनंतांशगाः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ नाम कह्यां बत्रीश तस, आरिजदेश प्रसिद्ध ॥ गुणव्रत बीजे धारीने, परिहरीये मति शुद्ध ॥ ए ॥ १सूरणकंद निवारीये, २ वज्रकंद तेम धार ॥ ३ आर्द्र हरिद्रा परिहरो, ४ शृंगबेर विनिवार ॥ १० ॥ ५ आर्द्र कचूर ६शतावली, ७ विरालिका दोय वेलि ॥ तिम ८ कुंवर ए थोहर १० गलो, ११ लशुन कंदने मेल ॥ ११ ॥ १२वंशकरेल १३ गज्जर वली, जे वली १४ साजी थाय ॥ ते लवणकने वरजीये, एम बोले जिनराय ॥ १२ ॥ लोढक १५ पद्मिनिकंद तेम, १६ गिरिकर्णिका विचार ॥ १७ किसलय पत्र १८ खरिंशुका, १ए थेगकंद अवधार ॥ १३ ॥ २० आर्द्र मोथ ए वीशमी, २१ भ्रमर वृक्षनी ठाल ॥ लोकप्रसिद्धां २२ खिल्लहरु, २३ अमृतवेलीने टाल ॥ १४ ॥ २४ मूलकंद निवारीये, चोवीशमो ए बोल ॥ जाणी जे भक्षण करे, ते नर सही निटोल ॥ १५ ॥ २५ भूमिरुहां छत्रक कह्यां, वर्षाकाले होय ॥ भूमिफोट सहुको कहे, धोले वर्णे जोय ॥ १६ ॥ धान्य विदल जे अंकुरित, ते विरुहा कहेवाय ॥ शाक जाति २६ टंक वाथुलो, खातां अवगुण थाय ॥ १७ ॥ २७ शुक्रवल्लि २८ पल्यंक तेम, शाक भेद अवधार ॥ कोमल तिम वली ३० आंबली, अबद्ध अस्थि निर्धार ॥ १८ ॥ ३१ आलुक ३२ पिंडालुक कह्या, कंदभेद तेम जाण ॥ ए बत्रीशे परिहरे, श्रावक तेह सुजाण ॥ १ए ॥ १ सचित्त २ अचित्त मिश्र जाणीये, तेम ३ डुपक ४ अपक्क ॥ ५ तुछौषधि भक्षण तथा, न करे मतिपरिपक्क ॥ २० ॥ अतिचार ए वारतां, ए होय निरतिचार ॥ कर्म थकी हवे सांभलो, ए व्रतनो विस्तार ॥ २१ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

॥ कूमा कानजी रे, महारी लोवमी तुं लाव ॥ ए देशी ॥ कर्म थकी खरकर्म सघलां, दूर छंडे जाण ॥ तास अतिचार पन्नर, भाखे श्रीजिनभाण ॥ १ ॥ कहे जिन शांतिजी रे ॥ भविजन भावथी तुं धार ॥ धरो मन खांते जी रे, कठिन कर्म दूरे फार ॥ ए आंकणी ॥ पन्नर कर्मादान वारो, कर्मनुं आदान ॥ आतमाने एम तारो, भजो श्री भगवान ॥ कहे०

॥२॥ इंगालकर्म वारीये ने, वन कापो दूर ॥ शकट भाडी स्फोट मद्देसो,
सुख होवे पूर ॥ क० ॥ ३ ॥ कर्म पंच टाळीये, पांच वणिज वार ॥
दांतनो व्यापार छूंडो, लाख दूरे वार ॥ क० ॥ ४ ॥ रस केश विष केरो,
वणिज निवारी ठांम ॥ पापनो परिहार कीजे, धर्म साधे मांम ॥ क० ॥
५ ॥ यंत्रपीलण ने निर्लंछन, पापकारण जाण ॥ दाव अग्नि दान
देतां, होय गुणनी हाणि ॥ क० ॥ ६ ॥ शोषवे जळठाणसुधी, नीचमां
शिरदार ॥ असतीपोषण वारीये तो, पामीये गति सार ॥ क० ॥ ७ ॥
एह पन्नर पंच जोगे, वीश अतिचार ॥ एहनो त्यागन मदेसो. कहीये
वारंवार ॥ क० ॥ ८ ॥ भोग उपरे भाखीये, जितशत्रुनो दृष्टांत ॥
लाखीये निलमंगिला, उपभोग उपर वात ॥ क० ॥ ९ ॥ कहे प्रभु
ए भरतमां, वसंतपत्तन नाम ॥ राजवी जितशत्रु तिहां, नामने परि-
णाम ॥ क० ॥ १० ॥ नाम सुबुद्धि मंत्री साथे, अश्व जोरा ताम ॥
चालीयो जितशत्रु राजा, अश्व खेलवा ताम ॥ क० ॥ ११ ॥ वाग खेंचे
पवननी परे, दोडीया ह्य दोय ॥ राजा ने मंत्रीश दोनुं, नाखे जंगल जोय
॥ क० ॥ १२ ॥ तीन दिवस वन मांहे, न मल्युं जेहने नीर ॥ केडेथी
लधि सैन्य आव्युं, पुरमां आण्या वीर ॥ क० ॥ १३ ॥ भोजन कीधां
भावतां, आकंठ भूख्ये जोर ॥ माय नहीं उदर मांहे, एहवो त्रिस्यो घोर
॥ क० ॥ १४ ॥ रातमां आहार बाहिर, वमनमार्गे जाय ॥ पेट मांहे
शूळ उठी, श्वास त्रिश्वास थाय ॥ क० ॥ १५ ॥ राय ते परलोक मांहे, गयो
हेदी धार ॥ आर्तध्याने ते मरीने, थयो व्यंतर मार ॥ क० ॥ १६ ॥ भोगना
परिमाण पाळे, एहवी मति होय ॥ मति मति मोह देखे, हर्ष महु कोय
॥ क० ॥ १७ ॥ मांगसो परिभोग उपरे, कहे श्रीजिन शांति ॥ निल-
मंगिला नारी केरी, वात सुणो खांति ॥ क० ॥ १८ ॥ वडोज नगर मांहे
दुर्ग, वसिदेव विप्र ॥ वेदनो ते जाण मूर्खो, करम करे क्षिप्र ॥ क० ॥
१९ ॥ तेहने घरे छे सुनंदा, नामथी वर नारी ॥ खंजने जनि सारखी,
मानो आकार ॥ क० ॥ २० ॥ तेह दंपति जोरछूटि, दिन जाय
दूरि ॥ दंपतिसुख नारीने रहे, कीधो आनंदपूर ॥ क० ॥ २१ ॥ दंपती
तत्काल मळतां, न हसारे हेह ॥ एकदा तो निज घरे, पहेर मांहे एह
॥ क० ॥ २२ ॥ बेठा पर्वे पहेरीने ए, पोतानुं कह्यां जोर ॥ एकदो कहे

नहीं उतारुं, श्यो करो छो शोर ॥ क० ॥ २३ ॥ राग आणी तेह ताणी, फरी न बोल्यो बोल ॥ कामिनीनो प्रेम गाढो, रंग रातो चोल ॥ क० ॥ २४ ॥ एक दिवस धाड आवी, बोलती मुख मार ॥ कर्मना संयोगहुंती, विप्रने घरबार ॥ क० ॥ २५ ॥ उतरे नहीं नारी केरां, नूषण तेणी वार ॥ छेदीयां तस अंग सुंदर, खड्ग तीखी धार ॥ क० ॥ २६ ॥ वलवले ते नारी उन्नी, फरे लोहीधार ॥ चरण छेदे नूमि उपर, पमी ते निर्धार ॥ क० ॥ २७ ॥ आचस्यां एम आवे उदये, नहीं को राखणहार ॥ राखो राखो मुखे नाखे, नित्यमंमिता नारी ॥ क० ॥ २८ ॥ कंथ तेहनो नासी पेठो, कोइ नाव्युं पास ॥ रौडध्याने ते मरीने, गइ नरकावास ॥ क० ॥ २९ ॥ एम जे परिनोग उपरे, राखे माया नूरि ॥ तेहनी एह गति होवे, ठांमो माया दूर ॥ क० ॥ ३० ॥ ठठे खंडे ए त्रीशमी, ढाल नाखी सार ॥ शांति प्रनुनी देशनाथी, पामीये नवपार ॥ क० ॥ ३१ ॥ इति सप्तमनोगोपनोगोपरि जितशत्रुनित्यमंमिताकथानके ॥ ३२ ॥ सर्व० ॥ १४१० ॥ श्लो० ॥ ६६ ॥

॥ अथाष्टमोऽनर्थदंमविरमणव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजुं गुणव्रत प्रनु, कहे शांति जिनराज ॥ अनर्थदंम विरमण करो, जिम सीजे आतमकाज ॥ १ ॥ अपध्यान पहेलुं वली, पाप तणो उपदेश ॥ हिंस्रप्रदान त्रीजुं कह्युं, दुःखदायी सुविशेष ॥ २ ॥ तेम आचरण प्रमादनुं, चोथो नेद वखाण ॥ चार नेद एम नीपजे, श्रोता सुणो सुजाण ॥ ३ ॥ पंच अतिचार एहना, प्रथम कह्यो कंदर्प ॥ रागे हास्यादिक वचन, बोले जे धरी दर्प ॥ ४ ॥ कौकुचपणुं निवारीये, मुख नू नेत्रविकार ॥ हास्यजनक विटनी परे, ते बीजो अवधार ॥ ५ ॥ ए प्रमादथी नीपजे, मुखरपणुं तेम टाल ॥ असंबद्धनाषी घणो, जेम तेम बोले आल ॥ ६ ॥ महा अनर्थनुं हेतु ए, पहेलो पापउपदेश ॥ ए वर्जे जे मानवी, न लहे तेह किलेश ॥ ७ ॥ यडुक्तं ॥ बहूनां समवाये हि, सिद्धे कार्ये समं फलम् ॥ यदि कार्यविपत्तिः स्या,–न्मुखरस्तत्र बाध्यते ॥ १ ॥ अन्यच्च ॥ अविआणिय पठाचं, परचित्तमलक्खिऊण जं नणियं ॥ किंपावयरतत्तोवि, दुज्ञा अन्नंपि लोअंमि ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ वली चतुर्थ अधिकरणनो, हल कुवार शकटादि ॥ सङ्घ करी मेहले नहीं, तेम नवि

जोडे आदि ॥ ८ ॥ यडुक्तं ॥ कार्ये शुभेऽशुभे वाऽपि प्रवृत्तिर्यैः कृतादितः ॥ ज्ञेयास्ते तस्य कर्त्तारः, पश्चादप्युपचारतः ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ उपजोग परिजोग वस्तुने, अधिक न मेले जाण ॥ अधिके माग्युं आपतां, होय अनर्थ गुणहाणि ॥ ए ॥ एह अतिचार पांचमो, वर्जो निरतिचार ॥ ए अष्टम व्रत पालतां, लहीये जवनो पार ॥ १० ॥ एह उपर प्रजुजी कहे, समृद्धिदत्त संबंध ॥ चक्रायुध नृप सांजले, जाव जक्ति अनुबंध ॥ ११ ॥

॥ ढाल सात्रीशमी ॥

॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥ जीरे धातकी खंम मजार, क्षेत्र जरत ऐरवत जलुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे तिहां रिपुमर्दन राय, यश जगतमां उजलुं ॥ जीरेजी ॥१॥ जीरे समृद्धिदत्त सुविचार,कोटुंबिक तिण पुर वसे ॥ जि० ॥ जीरे कुटुंब तणो स्वामी, हर्ष हियामां उल्लसे ॥जी० ॥ २ ॥ जीरे एक दिन सूतो सेज,मन मांहे एम चिंतवे ॥ जी० ॥ जीरे जो हुं थाउं जूप, जरत खंम साधुं सवे ॥ जी० ॥३॥ जीरे साधतो जाउं वैताढ्य,दे विद्या नजचर जली ॥ जी० ॥ जीरे विद्याबल आकाश, तव जडुं हुं मन रली ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे एम चिंतवतो ताम,सेजथी उंचो उबल्यो ॥ जी० ॥ जीरे पमतो ते जूपीठ, पमीयो दहमानवे कल्यो ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे पीमाणो तन जोर, करे आक्रंद अति घणो ॥ जी० ॥ जीरे स्वजन मिल्यां तव धाइ, शुं थयुं तुम असने जणो ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे रहीया मुज मन मांहे, मनह मनोरथ माहरा ॥ जी० ॥ जीरे उबली मूढ गमार, पग जांग्या तें ताहरा ॥ जी० ॥ ७ ॥ जीरे घणुं निर्जंग्यो तास, केतेक दिने साजो थयो ॥ जी० ॥ जीरे पाले ते निज गेह, हियमामां हर्षित हुउ ॥ जी० ॥ ८ ॥ जीरे एक दिन लीधुं तेण, सहु अमूलक उपतुं ॥जी० ॥ जीरे जे खड्गनुं तेज,अवर नहीं कोइ जीपतुं ॥ जी० ॥ ए ॥ जीरे पुरमां पसरी वात,खड्ग तणी अतिही थणी ॥ जी० ॥ जीरे एक दिन पुरने जूप, सजामां बेठे सुणी ॥ जी० ॥ १० ॥ जीरे एक दिन खड्गरत्न, प्रमाद थकी तस विसर्युं ॥ जी० ॥ जीरे गृहअंगण ते मूकी,मांहे शयन जइ कर्युं ॥ जी० ॥ ११ ॥ जीरे सांजर्युं तस मध्यराति, पण प्रमादे न आणीयो ॥ जी० ॥ जीरे चिंते कुण लेइ जाय, रह्यो निश्चिंतो प्राणीयो ॥ जी० ॥ १२ ॥ जीरे चोरे हर्युं तेणी राति, खड्ग लेइने ते चल्यो ॥ जी० ॥ जीरे शेठनो सुत अही बंदी, जातां नृपसेवक मिल्या ॥ जी० ॥

१३ ॥ जीरे जोर कस्युं नृपलोक, निधन पमाड्यो चोरने ॥ जी० ॥ जीरे चोरे मरतां तेह, मार्यो शेठ किशोरने ॥ जी० ॥ १४ ॥ जीरे खड्ग ग्रही प्रजात, नेट कस्युं जइ रायने ॥ जी० ॥ जीरे समृद्धिदत्तने क्रोध, नाखे नृप घोलाइने ॥ जी० ॥ १५ ॥ जीरे केम कीधो तें अन्याय, खड्ग एह ताहरुं सही ॥ जी० ॥ जीरे वात कही समजाय, पण नृप कहे मेलुं नहीं ॥ जी० ॥ १६ ॥ जीरे राये दंड्यो तास, केम प्रमाद तें आदस्यो ॥ जी० ॥ जीरे निर्धन करी घरबार, मूक्यो ते शोके नस्यो ॥ जी० ॥ १७ ॥ जीरे एक दिन तेण अयाण, विप वेचातुं कोइने ॥ जी० ॥ जीरे दीधुं धनने लोज, नृपवैरीने जोइने ॥ जी० ॥ १८ ॥ जीरे लेइ तेणे पंनाल, सरवरमां विप घातीयुं ॥ जी० ॥ जीरे ते पीधे केइ लोक, पुर मांहे मृत्यु पामीयुं ॥ जी० ॥ १९ ॥ जीरे नृप जाणी ते वात, जव पीधे बहु नर मूआ ॥ जी० ॥ जीरे राये कढावी शुद्धि, कहो ए कुण कारण हुआ ॥ जी० ॥ २० ॥ जीरे कोइकथी लही वात, विपप्रयोगनी मांहिली ॥ जी० ॥ जीरे राये तेड्यो तेह, तुरत न कीधी काहेली ॥ जी० ॥ २१ ॥ जीरे पूछे नर तेमावी, को पासे तें विप लीयुं ॥ जी० ॥ जीरे शुं हवे जूठे थाय, समृद्धिदत्ते मुजने दीयुं ॥ जी० ॥ २२ ॥ जीरे राये जाणी अनीति, समृद्धिदत्तने दंमीयो ॥ जी० ॥ जीरे पुरमां तस अप्रीति, सहुको जाणे लंठीयो ॥ जी० ॥ २३ ॥ जीरे वली एक दिनने योग, कौटुंबिक कोइ आवीयो ॥ जी० ॥ जीरे नूतन वत्स युग एक, ते संघाते लावीयो ॥ जी० ॥ २४ ॥ जीरे समृद्धिदत्त तेणी वार, पूछे तेहने प्रेमशुं ॥ जी० ॥ जीरे ए वत्स दमवा योग्य, दमता नथी कारण किस्युं ॥ जी० ॥ २५ ॥ जीरे आर कशा ने घात, निर्दय परिणामे करी ॥ जी० ॥ जीरे वत्स दमो सुविशेष, लघुवयमां उलट धरी ॥ जी० ॥ २६ ॥ जीरे वात सुणी धृप दोय, ते उपर कोप्या घणुं ॥ जी० ॥ जीरे नाम थकी पण एह, प्राणीने दुःख असलामणुं ॥ जी० ॥ २७ ॥ जीरे तेणे जइ ते वत्स दोय, दमवा मांड्या निर्दयी ॥ जी० ॥ जीरे ते सुकुमार शरीर, वेदन सहे थाणी नहीं ॥ जी० ॥ २८ ॥ जीरे तनु दुर्वल थइ तेह, एक दिन काल कस्यो थने ॥ जी० ॥ जीरे अकामनिर्जरायोग, थया व्यंतर सुर एकमने ॥ जी० ॥ २९ ॥ जीरे ज्ञान तणे उपयोग, अहित कारक तस जाणीयो ॥ जी० ॥ जीरे आवी तिहां सुर दोय, सबलो तेहने

ताणीयो ॥ जी० ॥ ३० ॥ जीरे मार पड्यो तस जोर, मुखहुंती सुर ए
फहे ॥ जी० ॥ जीरे कां दीधो उपदेश, जीन थकी जीव डुःख लहे
जी० ॥ ३१ ॥ जीरे चरण नमीने तेह, निज अपराध खमावतो ॥ जी० ॥
जीरे टलवलतो ते देखी, सुरे मूक्यो तेने जीवतो ॥ जी० ॥ ३२ ॥ जीरे
समृद्धिदत्त मन मांहे, चिंते में मातुं कखुं ॥ जी० ॥ जीरे अनर्थदंम एकेक,
कीधाथी बहु डुःख वखुं ॥ जी० ॥ ३३ ॥ जीरे मन आव्यो वैराग्य, भावे
तेणे संयम ग्रह्युं ॥ जी० ॥ जीरे पाले निरतिचार, सुर वैमानिक सुख
लह्युं ॥ जी० ॥ ३४ ॥ जीरे पामी नरअवतार, समृद्धिदत्त संयम ग्रही ॥
जी० ॥ जीरे आगामिक भव सार, शिवलीला लहेशे सही ॥ जी० ॥
३५ ॥ जीरे शांति प्रभुए ए वात, अष्टम व्रत उपर कही ॥ जी० ॥ जीरे व्रत-
पालण उजमाल, भवियण तुम्हे थाजो वही ॥ जी० ॥ ३६ ॥ जीरे ठठे खंडे
एह, ढाल कही साम्त्रीशमी ॥ जी० ॥ जीरे राम प्रभुनी वाणी, भवियण
मन साकर समी ॥ जी० ॥ ३७ ॥ इत्यष्टमानर्थदंमविरमणव्रतोपरि समृद्धिदत्त-
कथानकम् ॥ ८ ॥ इति त्रीणि गुणव्रतकथानकानि ॥ स० ॥ १४५८ ॥ ६ए॥

॥ अथ नवमः सामयिकव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे शिक्षाव्रत जिन कहे, चउ संख्याए सार ॥ सामायिक व्रत प्रथम
तिहां, कहे प्रभु जगदाधार ॥ १ ॥ साम अने सम तिम वली, सम्यग्
एक विचार ॥ सामायिक एक अर्थ ए, भाख्यो सूत्र मकार ॥ २ ॥
नाम स्थापना द्रव्यथी, भाव निक्षेपा चार ॥ प्रभुजी भाखे तेहनो, अर्थ
अनोपम सार ॥ ३ ॥ यतः ॥ महुरपरिणाम सामं, समं तुला सम्म खीर खंम
जुई ॥ दोरे हारस्सतिइइग, धम्मे आइं तु दव्वंमि ॥ १ ॥ आउवमाइ पर-
ड,—क्कमकरणं राग दोस मज्जत्थं ॥ नाणाइतिगं तसाइ, पोसणं भाव-
सामाइं ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ मन वच काया योगनो, डुष्ट प्रयोग निवार ॥
अनवस्थान चोथो वली, स्मृतिविहीन तेम धार ॥ ४ ॥ अतिचार पंच एहना,
म वली दोष बत्रीश ॥ सामायिकमां टालीये, तो लहीए सयल जगीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

॥ सामायिक द्वात्रिंशद्दोषस्वरूपं कथ्यते ॥ चोपाई ॥ आर्त्त रौद्र तणो परि-
र, अतिथि सीम संयम आचार ॥ आणो समतानो परिणाम, सामायिक

करवो अनिराम ॥ १ ॥ तेह तणा जे दोष बत्रीश, ते पनणीशुं मन धरीय जगीश ॥ ते सांजली श्रावक खप करे, लीले जिम जवसायर तरे ॥ २ ॥ बत्रे बांहे वाली पालठी, प्रथम दोष ए जुगतो नथी ॥ आधुं पातुं आसन थाय, वीजुं ए दूषण कहेवाय ॥ ३ ॥ दृष्टि न राखे एके दिशे, जोवे चपलपणे चिहुं दिशे ॥ त्रीजो दोष सामायिक जाण, व्रतधर परिहर हियडे आण ॥ ४ ॥ अल्प बहुल लागे सावज्ज, चोथे दोष निवारो कज्ज ॥ पूठे नींत पाटी ने थंन, पंचम दोष जे ले अवष्टंन ॥ ५ ॥ अति संकोडे अंग उवंग, बठो दोष करे व्रतनंग ॥ आलस मोडे ए सातमो, नांजे करमक ए आठमो ॥ ६ ॥ नवमो मल उतारे जेह, मिल तणो व्रत दूपे तेह ॥ खण खणे ए दशमो जाण, टालंतां व्रत कहे प्रमाण ॥ ७ ॥ अंगे विश्रामण कारवे, दोष अग्यारमे व्रत हारवे ॥ बारम दोष जे निद्रा करे, बार दोष कायना परिहरे ॥ ८ ॥ वचन तणा दश दोष पिठाण, परिहर चतुरपणुं चित्त आण ॥ बोले कुवचन पहेलो दोष, लाग्यो जाए म धर संतोष ॥ ए ॥ बीजो म नणीश सहसात्कार, आर्त्त स्वर हुवे त्रीजे वार ॥ आपण ठंदे जे बोलीये, चोथो दोष विपे तो लीये ॥ १० ॥ नणतां सूत्र म कर संदेप, पंचम दोष तणो निदेप ॥ कलह म मंमीश जा व्रत सार, बठा दोष तणो परिहार ॥ ११ ॥ विकथा सप्तम दोष निवार, पर उपहास आठमो विचार ॥ संपद पद विण उतावलो, म नणो नवम दोषथी टलो ॥ १२ ॥ जाव आव एम कहीये नहीं, दशम दोष परहरीये सही ॥ वचन तणा ए जाणी दोष, टाली करो सामायिक पोष ॥ १३ ॥ मनना दोष हवे सांजली, परिहर नवियण दूरे रली ॥ प्रथम दोष मन नहीं विवेक, नहु जाणो ऊणो अतिरेक ॥ १४ ॥ जस कीर्त्ति वांठे अति घणी, करे सामायिक जे तेह नणी ॥ बीजो दोष ए आगम कह्यो, नवियण जाणीने नवि ग्रह्यो ॥ १५ ॥ हियडे वांठे धननो लाह, त्रीजो दोष घणो गुणदाह ॥ चोथो दोष जे करे गर्व, एहथी निर्गमीशुं फल सर्व ॥ १६ ॥ करे सामायिक जे बीहतो, बारे दोष सुगुण ईहतो ॥ पुत्र धनादिक तणुं निदान, करतां बठो दोष निदान ॥ १७ ॥ सामायिक फलविधि जे कही, शुं जाणुं होशे वा नहीं ॥ एम संशय हियडे आणीये, सप्तम दोपने श्रुति जाणीये ॥ १८ ॥ अष्टम करे मन आणी रोप, अविनय करतां नवमो

दोष ॥ नक्ति हीण ए दशमो सही, श्रावक ए आदरवा नहीं ॥ १९ ॥ इति सामायिकद्वात्रिंशद्दोषस्वरूपं ॥ काव्यं ॥ बत्तीस दोसेहिं विसुद्धिमेअं, करिज्ज सामाइयमप्पमत्तो ॥ निच्चं नरो जो निसदीस कालं, वरिज्ज तं मुत्तिरमा कमेणं ॥ १ ॥ दोहो ॥ ए व्रत उपर जिन कहे, सिंह श्रावक अवदात ॥ नविक जीव सहु सांजलो, करी निज मन एकांत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सबाइ गुरु वाहणनी परे तारे ॥ ए देशी ॥ नरते रमणीय इण नाम, पुर सुंदर शोजागाम, बहु जंतुनो विश्राम ॥ १ ॥ जिणंदराय देशना देइ तारे, नवजलनिधि पार उतारे ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥ तिहां हेमांगद अनिधान, राजा बहु बुद्धिनिधान, सुंदर तन शोने वान ॥ जि० ॥ २ ॥ हेमश्री तेहने राणी, रूपे जीती इंद्राणी, वली लावण्यगुणमणि खाणी ॥ जि० ॥ ३ ॥ श्रावक जिनदेव विचारी, जिनदासी तस घर नारी, शीलादि गुणे करी सारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ सिंह नामे हो अंगज सोहे, रूपे साजनमन मोहे, कहिए ते न रहे कोहे ॥ जि० ॥ ५ ॥ जीवाऽजीवादिक जाण, समजु सघलो गुणखाण, मावित्रने जीवनप्राण ॥ जि० ॥ ६ ॥ विहु टंक आवश्यककारी, सूधो सामायिकधारी, रुडो श्रावकआचारी ॥ जि० ॥ ७ ॥ इक दिन सारथ संघाते, चाल्यो व्यापारने हेते, सिंह खइ करियाणुं खंते ॥ जि० ॥ ८ ॥ साथ उतस्यो अटवी मांहे, तटिनीतट जोइ उत्साहे, लीधुं सामायिक सिंह शाहे ॥ जि० ॥ ९ ॥ सघलो आरंन निवारी, मुनिनी परे समताधारी, करी मन वच तन एकतारी ॥ जि० ॥ १० ॥ तटिनीजल शीतल वासे, बहु उडे मशकनी राशे, कस्यो धूम बहु तव त्रासे ॥ जि० ॥ ११ ॥ रह्यो सिंह अचल गुणगेह, सहे मशकपरीषह देह, न चले मेरु जिम तेह ॥ जि० ॥ १२ ॥ बहु मशकसमूहे विंटाणो, आवी मखीयो तव टाणो, ध्यानदीपक नवि उंलवाणो ॥ जि० ॥ १३ ॥ त्वच नेदीने मुख मांहे घाली, पीये रुधिर ते मशकनी आली, सिंहे काया न संजाली ॥ जि० ॥ १४ ॥ जाणे ए पुजल सार, व्रत पालीजे निर्धार, ए विणु नम्यो बहु संसार ॥ जि० ॥ १५ ॥ कोइनो नहीं तुं तुज कोइ, मत रहे तन उपर मोही, रखे जातो ए व्रत खोइ ॥ जि० ॥ १६ ॥ निश्चल परिणामे रहीयो, परीषह उत्कट तेणे सहीयो, एहवो सिंहो जन कहीयो ॥ जि० ॥ १७ ॥ आव्यो दक्षिण दिशि वात,

उभी गयो मशकनो व्रात, सूणी आव्यां तस गात ॥ जि० ॥ १८ ॥ उप- सर्ग टल्यो थइ शाता, पारे सामायिक गुणवंता, एम काम पडे रह्यो तंत ॥ जि० ॥ १९ ॥ अनुक्रमे देशांतरे जाय, बहु लाठीनो लाज उपाय, घर आव्यो सिंह कमाय ॥ जि० ॥ २० ॥ साते क्षेत्रे वित्तने वावे, लखमी सुकृतारथ थावे, देशमां बहुलो यश पावे ॥ जि० ॥ २१ ॥ गृहिधर्म रुडी परे पाली, अंते अणसण संजाली, गयो सुरलोके रुचिशाली ॥ जि० ॥ २२ ॥ लहेशे एक नरअवतार, आदरशे संयमजार, होशे सिद्धिवधू- जरतार ॥ जि० ॥ २३ ॥ एम ए व्रत पाल्युं सार, आपे जवजलनो पार, जव हुण तव ए गुण धार ॥ जि० ॥ २४ ॥ छठे आरुत्रीशमी ढाल, कहे रामविजय उजमाल, व्रतवंतने नमो त्रण काल ॥ जि० ॥ २५ ॥ इति नवम- सामायिकव्रते सिंहश्रावककथानकम् ॥ ९ ॥ १५०८ ॥ ३२ ॥

॥ अथ दशमो देशावकाशिकव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजुं शिक्षाव्रत हवे, व्रत दशमुं तेम जाण ॥ शांति प्रजुजी एम कहे, जवियणने हित आण ॥ १ ॥ जावजीव दिशिविरतिनुं, जे व्रत कह्युं सार ॥ ते मांहे प्रतिदिन धारवो, संक्षेपे सुविचार ॥ २ ॥ सर्व व्रत संक्षे- पथी, अथवा ए व्रत जाण ॥ मुहुत्त दिवस वली पक्षता, ए व्रतनुं परिमाण ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ एग मुहुत्तं दिवसं, राई पंचाहमेव पक्खे वा ॥ वयमिह धारेह दढं, जावइ यं उछहे कालं ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ एणे सघलां व्रत नियमनो, प्रतिदिन करे संक्षेप ॥ चउद नियम संजारतां, संक्षेपतां निर्लेप ॥ ४ ॥ अत एव ॥ सच्चित्त दव विगई, वाहण तंबोल वच्छ कुसु- मेसु ॥ वाणह सयण विलेवण, बंज दिसि न्हाण जत्तेसु ॥ २ ॥ पूर्व ढाल ॥ पंच अतिचार एहना, प्रथमानयन प्रयोग ॥ प्रेष्य प्रयोग बीजो वली, शब्दानुपाती तिम योग ॥ ५ ॥ रूपानुपाती चोथो कह्यो, पंचम पुजल- क्षेप ॥ दशमा व्रत मांहे कहे, श्री जिनवर गतलेप ॥ ६ ॥ गंगदत्त श्रावक परे, पालीजे निर्धार ॥ परंपराए ए व्रत सही, शिवसुखनुं दातार ॥ ७ ॥ कहे चक्रायुध कुण थिजो, गंगदत्त गुणवंत ॥ पर्षद बारे आगले, जाखे श्री जगवंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥

॥ रहो रहो रे यादव दो घमीयां ॥ ए देशी ॥ सुणो सुणो रे प्राणी शिखमीयां ॥ सु० ॥ अक्षय निधि जिनधर्म ए पामी, काहेकुं मागत जिखमीयां ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शंखपुरे गंगदत्त व्यवहारी, वास वसे शुन चोघमीयां ॥ सु० ॥ २ ॥ जिनवर धर्म करे मन शुद्धे, जाणे ए चिंतामणि जमीयां ॥ सु० ॥ ३ ॥ देशावकाशिक एक दिन घरनुं, लीधुं न नीसरुं शेरमीयां ॥ सु० ॥ ४ ॥ साथ बहु आव्यो जाणीने, मित्र आवी कहे आरमीयां ॥ सु० ॥ ५ ॥ साथे चलो बहु लान होवेगो, कहे गंगदत्त मुऊ आखमीयां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मित्र कहे व्रत काले करेजो, लान बहु आज सांपमीयां ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे गंगदत्त ए लान न लेखे, व्रत नवि ठोडुं पा घमीयां ॥ सु० ॥ ८ ॥ धन पुष्कल बहु वेर मिलेगो, धर्म करो दिन रातमीयां ॥ सु० ॥ ९ ॥ आज अठे व्रत देशावकाशिक, मूको विकथा वातमीयां ॥ सु० ॥ १० ॥ मित्र लही तस निश्चय निज घर, आवे उत्साह विणु अमवडीयां ॥ सु० ॥ ११ ॥ हुई प्रजाते निश्चय पूरो, करी आवश्यक पमवमीयां ॥ सु० ॥ १२ ॥ साथमें आवे वणिज करणकुं, करियाणां बहु ढग पमीयां ॥ सु० ॥ १३ ॥ लीये लाखोके माल मुलावी, उनमें लान बहुत जमीयां ॥ सु० ॥ १४ ॥ चिंते सवि ए धर्म महातम, दरिद्र उडी जाये ज्युं चिमीयां ॥ सु० ॥ १५ ॥ लानके धनसें चैत्यजक्ति उर, साहामीवत्सलसें जुमीयां ॥ सु० ॥ १६ ॥ बहु दिन श्रावकव्रत आराधी, चाखत अनुजव सेलमीयां ॥ सु० ॥ १७ ॥ अंते अणसण करी सुरलोके, विलसे अप्सर गोरमीयां ॥ सु० ॥ १८ ॥ एक अवतार करी लही केवल, चमशे शिवपुर पावमीयां ॥ सु० ॥ १९ ॥ दशमा व्रत उपर ए जिनवर, कह्यो संबंध रसवेलमीयां ॥ सु० ॥ २० ॥ ओगणचालीशमी खंम ठठे, ढाल सिराडे ए चमीयां ॥ सु० ॥ २१ ॥ राम कहे व्रतपालक नरकुं, नव निधि आवी रहे खमीयां ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति दशमदेशावकाशिकव्रते गंगदत्तकथानकम् ॥ १० ॥ १५३८ ॥ ७४ ॥

॥ अथैकादशः पौषधव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजुं शिक्षाव्रत हवे, कहे जिन त्रिजुवनजाण ॥ व्रत मांहे अग्यारमुं, पौषधव्रत मन आण ॥ १ ॥ पुष्ट करे जे धर्मने, आदरीये तिविपर्व ॥ ते

पौषध आराधतां, लहीये वांछित सर्व ॥ २ ॥ प्रथम पोषध आहारनो, देश सर्व दोय भेद ॥ चोविहार नीवी प्रमुख, तपथी कह्यो गतवेद ॥ ३ ॥ बीजो देह सत्कारनो, सर्व देशथी जोय ॥ ब्रह्मचर्य पौषध तिमज, अव्यापार तिम होय ॥ ४ ॥ पंच अतिचार एहना, वर्जो चतुर सुजाण ॥ नाम कहे प्रभु तेहनां, शांतिनाथ भगवान ॥ ५ ॥ यत्सूत्रं ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जा संथारए ॥ १ ॥ अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिज्जा संथारए ॥ ॥ २ ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमी ॥ ३ ॥ अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चारपासवणभूमी ॥ ४ ॥ पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ॥ ५ ॥ पूर्व दोहा ॥ ए व्रत पालंतां भलां, सफल होय दिन रात ॥ श्रावक साधु जेहवो, निर्मल गुण अवदात ॥ ६ ॥ यदुक्तं ॥ सामायिय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ १ ॥ ए व्रत उपरे जिन कहे, जिनचंद्रनो दृष्टांत ॥ चक्रायुध नृप सांभले, भाव धरी एकांत ॥ ७ ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

॥ मेरे जीउमें लागी आशकी ॥ ए देशी ॥ सुप्रतिष्ठपुरमां हुवो, नृप अनंतवीर्य बलवान रे ॥ रूपवती राणी मनमोहन, कमनीय कंत सुजाण रे ॥ १ ॥ भवि जीउमें व्रत गुण धारीये ॥ जेम सफल फले सवि आश रे ॥ एकमना ए व्रत पालतां, होय आनंद लीलविलास रे ॥ भ० ॥ २ ॥ श्रावक जिनचंद्र नामथी, तिहां निवसे निश्चल धर्म रे ॥ सुंदर आकृति सुंदरी नामे, करे गेहिनी शुभ कर्म रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिनमत शुद्ध जाणे भलो, जीवाऽजीवादिक तत्त्व रे ॥ समकित मूल श्रावकव्रत पाले, टाले मिथ्यामति तंत रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ एक दिन पौषध लेइ बेठो, पौषधशाला मझार रे ॥ सावद्ययोग पच्चरकाण करीने, एकमने निरतिचार रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इण अवसर पहेले सुरलोके, हरि निरखे जिनचंद्र रे ॥ अहो अहो धन्य धन्य एह महामति, एम प्रशंसे इंद रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ पूछे तव सुरसेवक स्वामी, श्यो गुण दीठो तास रे ॥ इंद्र कहे पोसहव्रत एहनो, अविचल लीलविलास रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ एक सुर मिथ्यावचन मिथ्यात्वी, करवा आव्यो ताम रे ॥ श्रावक जिनचंद्र पासे आवी, वहेन यइ कहे आम रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ सूरज उदय अकाले कीधो, सुण बांधव

गुणवंत रे ॥ जोजन हुं लावी तुम कारण, पारणुं करो सत्यवंत रे ॥ ज० ॥ ए ॥ वचन सुणी मन मांहे विचारी, केम एम हुवो प्रजात रे ॥ धर्मध्यानादिक करणीने, अनुसारे हजी रात रे ॥ ज० ॥ १० ॥ कारण कांइक ए संजवीये,कौतुकवाली वात रे॥ कोइक देव तणी ए लीला, रखे चलतो तिलमात रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मौन लही रहीयो मन मांहे, धरी अरिहंततनुं ध्यान रे ॥ जीव रखे व्रत कर तुं काचुं, एम जाख्युं श्री जगवान रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ मित्र थइ कर लेइ विलेपन, वली सुगंधां फूल रे ॥ आवी ऊजो जिनचंद्र आगे, ग्रहो ए मित्र अमूल रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ तुं मुज जीवन हुं तुज वहालो, लाव्यो जक्तिने काज रे ॥ अंगीकार करो मुज बांधव, जेम थाउं सुखीया आज रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ जिनचंद्र चित्तमां एम विमासे, न घटे ए मुज फास रे ॥ गंध विलेपन कुसुम ए लेतां, होय पोषधव्रत नाश रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ रही अणबोल्यो ध्याने विचारे, रखे धरे पुजलआश रे ॥ मायाजाले म पम मनपंखी, कां थाय तृष्णादास रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ देवे जाण्युं चित्त नवि चलीयुं, करी तव पुरुषनुं रूप रे ॥ तस कामिनी लइ जातो देखे, जिनचंद्र एह स्वरूप रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ निज नारीनी विमंबन देखे, मूकावो प्राणनाथ रे ॥ पण ते ध्यान थकी नवि चूके,समरे एक जगनाथ रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ एम अनुकूल थकी नवि चलीयो, तव सुर करे विकराल रे ॥ सिंह पिशाचादिक अति विरुआं, रूप घणां ततकाल रे ॥ ज० ॥ १९ ॥ ते तिलमात्र न क्षोन्यो मनमां, देखी जयंकर रूप रे ॥ देहनो नेह न राखे हृदये, समरे एक शुद्ध स्वरूप रे ॥ ज० ॥ २० ॥ निश्चल जाणी प्रगट थइ ते, सुर नामे निज शीश रे ॥ जय जय तुं पहेले सुरलोके, स्तवीयो अमारे ईश रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ धन्य तुम्हो कृतपुण्य तुम्हारुं, जीवित जन्म प्रमाण रे ॥ कहो मुज लायक कांइक कारज, शिर वहुं तुमची आण रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ कहे जिनचंद्र निरीह सुमतिधर, नहीं मुज लालच कोय रे ॥ जो कहो गो तो तिम करो जिम, शासनउन्नति होय रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ अंगीकार करीने सुरवर, आठ दिवस लगी सार रे ॥ अष्टाइमहोत्सव जिनमंदिर, मांडे जक्ति उदार रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ धूप कुसुम वर गंध विलेपन, करे जिनजक्ति रसाल रे ॥ पूजा सत्तर प्रकार विरची, नाटक

भक्ति विशाल रे ॥भ०॥२५॥ प्रभु आगल नाचे ते सुरवर,थेइ थेइ शब्द कहंत रे ॥ तार तार करुणारससागर, जगतवत्सल जयवंत रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ तुंहीज तत्त्व परम हितकारी,परम भक्तप्रतिपाल रे ॥ देव निरंजन निरुपाधिक गुण, जय जय देव दयाल रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ लोक सहु देखी चित्त हरख्यां, धन्य जिनशासन एह रे ॥ जिहां एहवा प्रभुने दरबारे,नाचे देव सनेह रे ॥ भ० ॥२८॥ देव कहे चिंतामणि सुलहो,कल्पद्रुम सुरकुंज रे ॥ पण ए जैनधर्म अति डुलहो, लही सेवो निर्दंज रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ थे ए सुर शिवपद सुख शाश्वत, सुणी एम केइ भविवृंद रे ॥ बुज्या धर्म भजी जिनवरनो, आणी मन आनंद रे ॥ भ० ॥ ३० ॥ करी प्रभावना शासन केरी, सुर पहोतो निज ठाम रे ॥ इंद्रने कहे जे तुमो परकाश्यो, ते नर गुणमणिधाम रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥ इणी परे पोषधव्रत आराधो, नवि चालीजे चित्त रे॥ तो सुर शिवपद सुख पामीजे, कहे जगगुरु सुपवित्त रे ॥ भ० ॥ ३२ ॥ ठठे खंडे चालीशमी ढाले, पोषधव्रत अधिकार रे ॥ रामविजय कहे एम व्रत निर्मल,पालतां भवनिस्तार रे ॥भ०॥ ३३ ॥ इति एकादशपोषधव्रते जिनचंद्रकथानकम् ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ १५७० ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ७६ ॥

॥ अथ द्वादशोऽतिथिसंविभागव्रतसंबंधः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अतिथिसंविभागनुं, द्वादश व्रत अभिराम ॥ शिक्षाव्रत चोथुं सही,कहे शांति भगवान ॥१॥ लौकिक तिथि पर्वादिनो,जिणे वरज्यो व्यवहार ॥ भोजनकाले आवीयो, अतिथि कहीये सार ॥ २ ॥ उक्तं च ॥ तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना ॥ अतिथि तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विडुः ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ साधु अतिथि कह्यो श्राद्धने,तस निरवद्य आहार॥ संविभाग कीजे भलो, इण व्रते लहे भवपार ॥ ३ ॥ प्रथम यतिने आपीने, पठे वावरे आप ॥ मुनि न मले तोपण करे, दिशालोक गतपाप ॥ ४ ॥ यडुक्तं ॥ पढमं जईण दाऊण, अप्पणा पणमिऊण पारेई ॥ असइ असुविहिआणं,भुंजेइ य कय दिसालोउं ॥ २ ॥ अन्यत्राप्युक्तं ॥ अर्हद्भ्यः प्रथमं निवेद्य सकलं सत्साधुवर्गाय च, प्राप्ताय प्रविभागतः शुचिधिया दत्वा यथाशक्तितः ॥ देशायातसधर्मचारिभिरलं, सार्द्धं च काले स्वयं, भुंजीतेति सुभोजनं गृहवतां पुण्यं जिनैर्भाषितम् ॥ ३ ॥ पूर्व दोहा ॥ पंच अतिचार

एहना, सचित्त उपरे निक्षेप ॥ सचित्ते तिम ढांके वली, बीजो कहे गतक्षेप ॥ ५ ॥ निजने अणदेवा जणी, बुद्धे कहे परकीय ॥ मत्सर चोथो जिन कहे, कालातिक्रम होय ॥ ६ ॥ शूरपाल परे पालीये, ए व्रत निरतिचार ॥ पूछे चक्रायुध तदा, कहे जिन जगदाधार ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

॥ अरज अरज सुणोने रूमा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥ कहे जिन कहे जिन एहीज जरतमां होजी, नयर कंचनपुर नाम ॥ तिहां नृप तिहां नृप जितरिपु नामथी होजी, गिरुउं गुण अजिराम ॥ १ ॥ सुगुण सुगुण सनेहा सुणो वातमी होजी, कहे प्रज्ञु शांति दयाल ॥ देतां देतां हो दान सुपात्रने होजी, सवि सुख लहीये रसाल ॥ सु० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ तस घर तस घर राणी सुलोचना होजी, रमणी रूपजंमार ॥ तिहां एक तिहां एक महीपाल नामथी होजी, क्षत्रिय निवसे उदार ॥ सु० ॥ ३ ॥ करे नित्य करे नित्य कर्षणकर्मने होजी, तस घर धारिणी नार ॥ तेहनी तेहनी हो कुखना उपन्या होजी, अंगज छे तस चार ॥ सु० ॥ ४ ॥ पहेलो हो पहेलो हो धीरपाल नामथी होजी, पृथ्वीपाल सुजाण ॥ देवपाल देवपाल त्रीजो हो जाणीये होजी, शूरपाल चोथो वखाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंगज अंगज ए सोहामणा होजी, चारे चतुर विनीत ॥ रूपे रूपे हो अति रलियामणा होजी, शैशवजाव व्यतीत ॥ सु० ॥ ६ ॥ यौवन यौवन वय परणावीया होजी, चारेने वर नारी ॥ पहेली पहेली हो चंद्रमती सती होजी, कीर्तिमती सुविचार ॥ सु० ॥ ७ ॥ त्रीजी त्रीजी हो शांतिमती जणी होजी, शीलमती गुणगेह ॥ निज घर निज घर काम करे जलां होजी, धरती अविहम नेह ॥ सु० ॥ ८ ॥ एक दिन एक दिन वर्षाकालमां होजी, चारे महीपाल नंद ॥ पाठली पाछली रयणीए उठीने होजी, खेत्रे गया सुखकंद ॥ सु० ॥ ९ ॥ पूठल पूठलथी तस कामिनी होजी, जात लेइने हो चार ॥ चाली चाली हो चतुरा चमकती होजी, खेत्र जणी सुविचार ॥ सु० ॥ १० ॥ मारग मारग मांहे उलस्यो होजी, चिहुं दिशिथी जलधार ॥ गडगम गमगम घन गाजे घणुं होजी, वरसे अखंमित धार ॥ सु० ॥ ११ ॥ पवन पवन ऊकोले अति घणो होजी, ऊमी मांमी रे आसार ॥ कंचुक कंचुक चीर जीनां घणुं होजी,

तव ते चतुरा हो चार ॥ सु० ॥ १२ ॥ वम तले वड तले आवी ऊनी रही होजी, घहेरी जेहनी हो गय ॥ टप टप जलबिंदु चूवे होजी, वाये शीतल वाय ॥ सु० ॥ १३ ॥ वात करे वात करे ऊनी थकी होजी, मानिनी हसी हसी तेह ॥ एहवे एहवे हो महीपाल पूठथी होजी,आव्यो तिहां ससनेह ॥ सु० ॥ १४ ॥ जातां जातां हो देत्र जणी तिहां होजी, मार्गे जलदने जोर ॥ ते पण ते पण वमतरुने तले होजी, ठानो रह्यो एक गेर ॥ सु० ॥ १५ ॥ उंये उंये रहीने सांजले होजी, ते वहूअरनी रे वात ॥ विजन विजन लहीने निराकुली होजी, पहेली वोले निश्चिंत ॥ सु० ॥ १६ ॥ अवसर अवसर आज मल्यो जलो होजी, कहो मन जे हुवे इष्ट ॥ काही काही कहापण केलवी होजी, वहूअर वोले कनिष्ठ ॥ सु० ॥ १७ ॥ सुणीये सुणीये हो एहवुं संसारमां होजी, वाडीने पण हुवे कान ॥ न घटे न घटे स्वजावतुं जाखवुं होजी,मुज मन मांहे ए ज्ञान ॥ सु० ॥ १८ ॥ यतः ॥ दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं, रात्रौ नैव च नैव च ॥ संचरंति महाधूर्त्ताः, वटे वररुचिर्यथा ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ वोले वोले हो चंद्रमती तिहां होजी, नहीं इहां कोइनो प्रचार ॥ गोष्ठि गोष्ठि करीजे दिल खोलीने होजी, मुजने हर्ष अपार ॥ सु० ॥ १९ ॥ कहे तव कहे तव शीलमती सती होजी, कहो अनुक्रमे तुमे एह ॥ वारक वारक आवे माहरे होजी, वात कहीश ससनेह ॥ सु० ॥ २० ॥ पहेली पहेली कहे मन माहरे होजी, घृत ताव्युं ततकाल ॥ जो जले जो जले दिप्रवट उष्णमां होजी, तो जमुं थइ उजमाल ॥ सु० ॥ २१ ॥ वली तेम वली तेम शिरावथी जली होजी, सुंदर दहीने संयोग ॥ मलती मलती हो आम्रकचूरीशुं होजी, जोजन ए देवयोग ॥ सु० ॥ २२ ॥ वीजी वीजी हो कीर्त्तिमती कहे होजी, सुणो मुज मननी रे आश ॥ वहेनी वहेनी हो होंश हियडे रहे होजी,कहीये कोने ए जाप ॥ सु० ॥ २३ ॥ साव साव दूध खीर खांमशुं होजी, मांमा सुंदर जोम ॥ सरहां सरहां घृत शाल दालशुं होजी, मुज जीमणनो रे कोड ॥ सु० ॥ २४ ॥ त्रीजी त्रीजी हो शांतिमती कहे होजी, मुज मोदकनी रे आश ॥ अवर अवर वली सुखजक्षिका होजी, मुज मन जावे मीगश ॥ सु० ॥ २५ वलतुं वलतुं हो शीलमती वदे होजी, नहीं मुज जोजन प्रेम ॥ खाधुं खाधुं हो

वेसी रहे नहीं होजी, सुणो मुऊ मन मांहे एम ॥ सु० ॥ २६ ॥ नाही नाही हो निर्मल नीरशुं होजी, चंदन चर्चित अंग ॥ पहेरी पहेरी हो वसन सोहामणां होजी, नूषण नूषित चंग ॥ सु० ॥ २७ ॥ मांमी मांमी हो थाल सोहामणा होजी, कनककचोलां रे मांहे ॥ पीरसुं पीरसुं सुसर जेठ कंतने होजी, नोजन मनने उत्साह ॥ सु० ॥ २८ ॥ पोषी पोषी हो एहजन सर्वने होजी, देइ दीनादिक दान ॥ केडे केडे हो निकुत्सित जे रह्युं होजी, अशन अने वली पान ॥ सु० ॥ २९ ॥ जमतां जमतां ते नोजन मुऊ मने होजी, होवे हर्ष अपार ॥ नाख्यो नाख्यो हो अनिप्राय आपणो होजी, शीलमती तिण वार ॥ सु० ॥ ३० ॥ निसुणी निसुणी हो कान मांमी करी होजी, सुसरे सघली रे वात ॥ त्रिहुं जणी त्रिहुं जणी फरी बोले तिहां होजी, नवली ताहरी रे धात ॥ सु० ॥ ३१ ॥ आपण आपण कौटुंबिक घरे होजी, अशनादिक रे डुलंन ॥ वसन वसन आनूषण वातमी होजी, करवी एह अचंन ॥ सु० ॥ ३२ ॥ करीये करीये मनोरथ एहवो होजी, जेहवुं आपणुं नाग्य ॥ करवुं करवुं हो कर्षण कर्मनुं होजी, किहांथी एह मिले खाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥ चिंते चिंते महीपाल मनमां होजी, मुऊ घरनारी कुहाम ॥ नोजन नोजन वहूने आपे नहीं होजी, न सरे मननी रंहाम ॥ सु० ॥ ३४ ॥ घर जइ घर जइने निज नारीने होजी, समजावीश सुविचार ॥ पूरीश पूरीश ए त्रिहुं वहू तणा होजी, मनचिंतित रे आहार ॥ सु० ॥ ३५ ॥ बोले बोले असमंजस बोलमा होजी, चोथी वहू कमजात ॥ केवल केवल एहने पूरवुं होजी, कुत्सित उदन नात ॥ सु० ॥ ३६ ॥ विरमी विरमी हो दृष्टि गइ क्षेत्रमां होजी, वहूअर ते गुणवंत ॥ आवी आवी महीपाल नारीने होजी, वात कही सवि तंत ॥ सु० ॥ ३७ ॥ कहीने कहीने गयो निज क्षेत्रमां होजी, जुवो नावी संबंध ॥ न टले न टले हो टाल्यो कोइनो होजी, जो करे कोटि प्रबंध ॥ सु० ॥ ३८ ॥ खंम खंम छठे ढाल ए नणी होजी, एकतालीशमी सार ॥ राम राम कहे जग दोहिला होजी, गुणना जाणणहार ॥ सु० ॥ ३९ ॥ १६२४ ॥ ८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वहूअर जब वेला थइ, तब आवी निज घेर ॥ सासुए पहेलांथी करी, ते नोजननी पेर ॥ १ ॥ जमवा वेसारी सवे, उलाउले सनूर ॥

नोजन पीरसे नावतां, आणी आनंदपूर ॥ २ ॥ त्रणे जणी मन चिंतवे, मनचिंतित आहार ॥ केम मलीयो अणचिंतव्यो, ए थयो कवण प्रकार ॥ ३ ॥ शीलमतीने सासुए, पीरस्युं आणी कदन्न ॥ पंक्तिनेद जाणी करी, विलखुं थयुं वदन्न ॥ ४ ॥ में कांइ विणसाड्युं नहीं, न लही कारणशुद्धि ॥ त्रणे जणी पण चिंतवे, खोटी सासुबुद्धि ॥ ५ ॥ जमी उठी चारे जणी, पण मन विस्मय नारी ॥ पुनरपि कारजने वशे, चाली क्षेत्र मझार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बेंतालीशमी ॥

॥ सुग्रीव नयर सोहामणुं जी ॥ ए देशी ॥ मारग मांहे चिहुं जणी जी, करती एम विचार ॥ मनगमतो आवी मल्यो जी, आपणने आहार रे ॥ १ ॥ वहेनी, ए थयो कवण प्रकार ॥ चिंतित फलीयुं सार रे ॥ व० ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ शीलमतीने सर्वे कहे जी, चिंतित सरिखुं रे थाय ॥ तें कदशन जो चिंतव्युं जी, तेवुं मलीयुं आय रे ॥ व० ॥ २ ॥ कीजे मनोरथ महोटको जी, तुछ न धरीये रे चित्त ॥ शीलमती कहे सांजलो जी, शी ए वात विचित्र रे ॥ व० ॥ ३ ॥ नोजन सार असारनो जी, उदरे एकज नाव ॥ शुं फूलो नोजन लही जी, शो ए तुम्ह स्वनाव रे ॥ व० ॥ ४ ॥ मनगमतुं जब माहरे जी, थाशे कारिज तेह ॥ लेखे जन्म तव आवशे जी, म म धरजो संदेह रे ॥ व० ॥ ५ ॥ नित्य प्रत्ये नोजन नावतां जी, पीरसे सासु रे तास ॥ तव त्रिहुं जणीने जीमतां जी, मनमां हुइ विमास रे ॥ व० ॥ ६ ॥ पूछे सासुने किस्यो जी, शीलमतीनो रे दोष ॥ नोजन अंतर एवमो जी, नवि कीजे धरी शोष रे ॥ व० ॥ ७ ॥ कही सासुए मूलथी जी, वरु नीचे करी जेह ॥ वात सुणीने सा हुइ जी, म्लानमुखी गुणगेह रे ॥ व० ॥ ८ ॥ नित्य प्रत्ये रहे ते झूरती जी, न वले तननो रे वान ॥ मुख करमाणुं फूल ज्युं जी, पामी ते अपमान रे ॥ व० ॥ ए ॥ यतः ॥ चिताच्चोऽप्यधिकां चिंतां, लोके जानामि निश्चितम् ॥ चिता दहति निर्जीवं, चिंता दहति सजीवकम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ एक दिन कंते पूछीयुं जी, कां तुं डुर्बल काय ॥ शी तुझ चिंता उपनी जी, मुझ मन आरति थाय रे ॥ वहाली, ए थयो कवण प्रकार ॥ १० ॥ ढलक ढलक आंसु ढले जी, कां एवमी दिलगीर ॥ निसासो नाखी कहे

जी, आंसु लूही चीर रे ॥ व० ॥ ११ ॥ वात सवे मांमी कही जी, धुरहुंती आमूल ॥ शूरपाल मनमां थयो जी, वात सुणी प्रतिकूल रे ॥ व० ॥ १२ ॥ अहो गुणवंती उपरे जी, एहवो अनादर नाव ॥ निर्गुण मुज माता पिता जी, जे विपरीत स्वनाव रे ॥ व० ॥ १३ ॥ एह मनोरथ अति नलो जी, आगल ए अनुसार ॥ थाशे सहु नारीशिरे जी, ए महारी घरनार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ ते माटे देशांतरे जी, जइ मेळुं धन कोमि ॥ थोडे दिवसे नारीना जी, पूरुं वांछित कोम रे ॥ व० ॥ १५ ॥ एम चिंती कहे नारीने जी, जाइश हुं परदेश ॥ तुज मनोरथ पूरवा जी, मत डुःख धरे लवलेश रे ॥ १६ ॥ स्वामी, तुम विणु घमी रे छ मास ॥ ए आंकणी ॥ शीलमती कहे साहिबा जी, वहालेसर अवधार ॥ तुमे चाले देशांतरे जी, मुजने कोण आधार रे ॥ स्वामी० ॥ १७ ॥ सात नलुं पण सासरुं जी, पीयर तेम मोशाल ॥ पण प्रीतम विना नारीनी जी, न लीये कोइ संनाल रे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ यौवननर मुज देहमी जी, दोषी लोक अनेक ॥ वालम परदेशे चले जी, करी पग पग मुज छेक रे ॥ स्वा० ॥ १९ ॥ अलगी न रहुं अध घमी जी, आवीश तुम संघात ॥ गया अलगी नवि रहे जी, देह थकी तिलमात रे ॥ स्वा० ॥ २० ॥ कहे प्रीतम सुण कामिनी जी, तुज पासे मुज प्राण ॥ अंतर नहीं तुज मुज विचे जी, सुंदरी सुगुणनिधान रे ॥ वहा० ॥ २१ ॥ पगबंधन परदेशमां जी, केम सचवाये नारी ॥ ते माटे मंदिर रहो जी, द्यो आदेश विचार रे ॥ वहा० ॥ २२ ॥ ना कहेतां रुकुं नहीं जी, जा कहेतां निःस्नेह ॥ जाउं म जाउं एम कहुं जी, उदासीन पक्ष एह रे ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ नयणे जल चाल्यां घही जी, हियडुं न धरे रे धीर ॥ शी गति होशे माहरी जी, सुण नणदलरा वीर रे ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ तुमे गुणवंता नाहला जी, जिहां जाशो तिहां रुद्धि ॥ रखे मुजने विसारता जी, पीयु पामी नव निधि रे ॥ स्वा० ॥ २५ ॥ सुण सुंदरी नवि विसरे जी, तुज गुण वसीया रे चित्त ॥ चित्त गयंदा मावतां जी, उतरे नहीं कल्पांत रे ॥ स्वा० ॥ २६ ॥ तुम आवे ए छोमवो जी, कंचुक वेणीबंध ॥ एम प्रतिज्ञा आदरी जी, महोटो मोह प्रतिबंध रे ॥ स्वा० ॥ २७ ॥ सुगुण सनेहा साहिबा जी, वहेलाही वलजोह डुंगरजीवी जीवजो जी, उंबर ज्युं फलजोह रे ॥ स्वा० ॥ २८ ॥ नारी

मनावी नीसर्यो जी, मंदिरथी शूरपाल ॥ खड्ग लेइ एकण दिशे जी, हवे जुवो भाग्यविशाल रे ॥ सा० ॥ २ए ॥ बहेंतालीशमी ढालमां जी, नर नारीने रे राग ॥ परदेशे एम नीसर्यो जी, आगल फलशे भाग्य रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १६६० ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ०१॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलमती मन दुःख धरे, पीयु चाल्यो परदेश ॥ हडकूदण लागी हिये रति न लहे लवलेश ॥ १ ॥ स्रोचित गृहकारज करे, पण मन चिंता धंन ॥ क्षण क्षण हियडे सांचरे, शूरपाल निज कंत ॥ २ ॥ मात पिताए पुत्रीगुं, किहां गयो सुत शूरपाल ॥ सज्जन सहुको एम कहे, नहीं तेहनी कांइ भाल ॥ ३ ॥ शोध करी तेहनी घणी, मात पिता तेणी वार ॥ पण किहांय लाध्यो नहीं, धरे मन खेद अपार ॥ ४ ॥ करे मांहोमांहे मंत्रणुं, केणे दुहवीयो तेह ॥ जे एम रीसावी गयो, कोइक कारण एह ॥ ५ ॥ आपण दुहवीयो नहीं, ते कनिष्ठ गुणगेह ॥ सहुने वाहालो जीव जेम, केम तेणे दीधो छेह ॥ ६ ॥ पुछे शीलमती भणी, वडे तुं गंभीर ॥ शुं रीसाणो वल्लहो, ते दाखो अम वात ॥ ७ ॥ आण न लोपी केहनी, में कांइ तिलमात्र ॥ पण मुज वेणी ए वल्लहे, हाथे गुंथी रात्र ॥ ८ ॥ कह्युं मुजने आव्या विना, नवि छोडेवी वेण ॥ बीजुं कांइ जाणुं नहीं, कह्युं मुज कारण केण ॥ ए ॥

॥ ढाल त्रेंतालीशमी ॥

॥ नारी रे निरुपम नागिला ॥ ए देशी ॥ वात सुणी रे करे मंत्रणुं, बांधव मली माय ताय रे ॥ आपण किणे दुहव्यो नहीं, केम गयो एम रीसाय रे ॥ १ ॥ हा शूरपाल तुं किहां गयो, मोहे कहे एम माय रे ॥ तेम महीपाल पण वलवले, हियडलां आव्यां भराय रे ॥ हा० ॥ २ ॥ बांधव चिंहुं एम चिंतवे, नारी केरुं अपमान रे ॥ इणे न सह्यायुं रे बांधवे, गयो मन धरी अभिमान रे ॥ हा० ॥ ३ ॥ जननी जनक धन बंधुने, तजे एकज मांहे गोद रे ॥ न सहे तुंकार कोइनो वली, मानधन जे जग होय रे ॥ हा० ॥ ४ ॥ ए परानव सही तेहने, जे कर्यो छे तम नारी रे ॥ मानधन पुरुष मांगे नहीं, नारी अपमान निर्धार रे ॥ हा० ॥ ५ ॥ विरहातुर थयुं दुःख घणां, नवि लही बांधवशोध रे ॥ जेम अति कष्टथी

नवि लहे, प्रथम गुणठाणीया बोधि रे ॥ हा० ॥ ६ ॥ हवे शूरपाल ते चालीयो, जोवतो गिरि वन गाम रे ॥ अनुक्रमे नयर एक आवीयुं, महाशाल जेहनुं नाम रे ॥ हा० ॥ ७ ॥ जंबूतरु हेठल विश्रम्यो, वसन नाखी धरापीठ रे ॥ शयन कीधुं श्रमातुर नणी, उंघ आवी अति मीठ रे ॥ हा० ॥ ८ ॥ तास प्रजाव तरुछायमी, तेम रही दिवस मध्याह्न रे ॥ अहो अहो पुण्य प्रगट हुयुं, ते सुणो सहु सावधान रे ॥ हा० ॥ ९ ॥ तेह नगरी तणो राजीयो, काल पहोतो ततकाल रे ॥ पंच दिव्य मंत्री अधिवासीयां, पुर मांहे फरे उजमाल रे ॥ हा० ॥ १० ॥ जाग्यने योगे तिहां आवीयां, पोढीयो जिहां शूरपाल रे ॥ हाथीए कलशलो ढालीयो, जागीयो जाग्यविशाल रे ॥ हा० ॥ ११ ॥ हरखी हेषारव हय करे, चामर छत्र धरंत रे ॥ गजवरे खंधे बेसारीयो, वंदिजन बिरुद उच्चरंत रे ॥ हा० ॥ १२ ॥ सर्व सामंत आवी नम्या, देखीयो लक्षणवंत रे ॥ स्वामी अम जाग्ये चल ए कह्युं, मलीयो तुं गुणवंत रे ॥ हा० ॥ १३ ॥ आवीया बहुत आमंवरे, वाजते हर्षनिशाण रे ॥ स्वामी अमचा घणुं जीवजो, वरस कोमाकोमि मान रे ॥ हा० ॥ १४ ॥ एम आशिष दीये गोरमी, धवल गाती सुकुमार रे ॥ करीय अजिषेक बेसारीयो, तख्त उपर ततकाल रे ॥ हा० ॥ १५ ॥ वखत फलीयो वले वाधीयो, सीमना सवि नम्या राय रे ॥ सवल धरा धिंग थइ जोगवे, प्रबल जस पुण्य सखाय रे ॥ हा० ॥ १६ ॥ एक दिन नारी तस सांजरी, नीसर्यो जेहने काज रे ॥ स्वजन सहुको वली सांजर्यां, चिंतवे एम नरराज रे ॥ हा० ॥ १७ ॥ माहरी आथ श्या कामनी, जोगवुं एकलो आम रे ॥ पूरवुं जो नहीं नारीनां, सकल मनोवांछित काम रे ॥ हा० ॥ १८ ॥ यतः ॥ किं तया क्रियते लक्ष्म्या, *विदेशगतया ननु ॥ अरयो यां न पश्यंति, बंधुभिर्या न भुज्यते ॥ १ ॥* पूर्व ढाल ॥ एम चिंती नृपे हाथशुं, लख्यो निज नारीने लेख रे ॥ राज्य पाम्यो पण ताहरुं, पामीश सुख मुख देखी रे ॥ हा० ॥ १९ ॥ लेख आपी नृपे मोकल्या, सेवको तेमवा काज रे ॥ तुरत कंचनपुरे ते गया, खोलता आवीया बाज रे ॥ हा० ॥ २० ॥ पण महीपाल लाधो नहीं, कह्युं एक नयरने लोक रे ॥ काल दुर्जिक्षमां ते गयो, इहां थकी धरी मन शोक रे ॥ हा० ॥ २१ ॥ तेह सह कुटुंब किहां गयो, खबर नहीं

इहां कोइ तास रे ॥ एम सुणी तेह वलीया सवे, आवीया भूपति पास रे ॥ हा० ॥ २२ ॥ वात सुणी राय विलखो थयो, चिंतवे चित्तमां एम रे ॥ अहो अहो माहरां सयण ते, वरततां हशे कहो केम रे ॥ हा० ॥ २३ ॥ राज्य पाम्यो पण रति नहीं, सांजली सयणनुं दुःख रे ॥ एह वेदण रहे अति घणी, जुउं जुउं कर्म अति तिक्ख रे ॥ हा० ॥ २४ ॥ खंड ठहे कही कर्मनी, अजव गति ढाल त्रेंताल रे ॥ राम कहे सांजलो हवे कहुं, जे सहुं ते महीपाल रे ॥ हा० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १६०४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिण वरसे ते नीसस्यो, गेह थकी शूरपाल ॥ तेह थकी बीजे वरस, कालो पड्यो दुष्काल ॥ १ ॥ मूल थकी वूठो नहीं, पड्यो काल विकराल ॥ भूरि लोक क्षय नीपन्यो, वहेंचे भूखे बाल ॥ २ ॥ मारग दुःसंचर हुवा, फरे तस्करनां वृंद ॥ भूख्या नर जक्षण करे, मानव प्रत्ये अलद ॥ ३ ॥ कष्ट थकी पामे तिहां, मुनिवर पण आहार ॥ रंक मली लीये कूटीने, पड्यो हाहाकार ॥ ४ ॥ परणी पण तरुणी तजे, निःस्नेही जरतार ॥ नेह रहे नहीं कोइनो, न पले निज आचार ॥ ५ ॥ गति मति सवि जाये गली, पड्यो जाणी काल ॥ निज कुटुंब लेइ नीसस्यो, मंदिरथी महीपाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

॥ हो सायर सुन सोहामणा ॥ ए देशी ॥ हो महीपाल परिवारशुं, परिवारशुं रे हो नीसरीयो परदेश ॥ हो संबल नहीं एक दिवसनो, एक दिवसनो रे हो नहीं समाधि लवलेश ॥ १ ॥ निज कृत्य आगे रे कोइ बलीयो नहीं रे ॥ ए आंकणी ॥ हो गाम नयर पुरमां जमे, पुरमां जमे रे हो कोइ दीये आदकार ॥ लोक कहे परदेशीया, परदेशीया रे हो उना न रहो इण ठार ॥ नि० ॥ २ ॥ हो शून्य मंदिर आवी रहे, आवी रहे हो भूख्यां न जाये रात ॥ हो निंद न आवे नयणले, नयणले रे हो उठी चले प्रजात ॥ नि० ॥ ३ ॥ हो पंथे पग चाले नहीं, चाले नहीं रे हो सांजले कुवचन तास ॥ करे गुजरान फल फूलशुं, फल फूलशुं रे हो चिंते चित्त उदास ॥ नि० ॥ ४ ॥ हो केम कुटुंब नीवाहशुं, नीवाहशुं रे हो नहीं कोमी पेदाश ॥ सूरज उगे उठीने, उठीने रे हो करवी परनी आश ॥ नि० ॥ ५ ॥ हो जेम तेम करतां अनुक्रमे, अनुक्रमे रे हो आव्या पुर महासाल ॥ लोक वसे सुखीयां घणां, सुखीयां

घणां रे हो देखी थयां उजमाल ॥ नि० ॥ ६ ॥ हो करे पुरमां आजीविका, आजीविका रे हो चाले सुखे गुजरान ॥ शीलमती कारज करे, कारज करे रे हो पति विणु न लहे मान ॥ नि० ॥ ७ ॥ हो एक दिन सासु एम कहे, एम कहे रे हो जीरण कंचुक उतार ॥ वेणी ढोमाव तुं शिर तणी, शिर तणी रे हो कहेण न माने लगार ॥ नि० ॥ ८ ॥ हो सासु ससरो थाक्यां कही, थाक्यां कही रे हो पण ते हठीली जाण ॥ हो थइ सहुने अलखामणी, अलखामणी रे हो कर्म करे ते प्रमाण ॥ नि० ॥ ए ॥ हो पतिविरहे थइ डुबली, डुबली रे हो बीज चांदलीया रेह ॥ हो दण दण प्रीतम सांजरे, सांजरे रे हो साले नवल सनेह ॥ नि० ॥ १० ॥ हो मुखहुंती बोले नहीं, बोले नहीं रे हो करे सविशेषुं काम ॥ हो कुललज्जा राखे जली, राखे जली रे हो शीलमती निज माम ॥ नि० ॥ ११ ॥ हो हवे सुणो ते पुरराजीयो, राजीयो रे हो शूरपाल अजिधान ॥ लोक सहु हितकारणे, कारणे रे हो सरोवर मांड्युं सुजाण ॥ नि० ॥ १२ ॥ हो निर्धन जन आवे घणां, आवे घणां रे हो तिहांकणे करवा काम ॥ डुःस्थित लोक मजुरीयां, मजुरीयां रे हो पामे खासां दाम ॥ नि० ॥ १३ ॥ हो वात नगरमां विस्तरी, विस्तरी रे हो थयो जाणी रोजगार ॥ हो महीपाल पण आवीयो, आवीयो रे हो लेइ साथे परिवार ॥ नि० ॥ १४ ॥ हो करे रोजगार मजुरनो, मजुरनो रे हो उदरजरण सुखे थाय ॥ हो वान वल्यो वेला वली, वेला वली रे हो दिवस सुखे तस जाय ॥ नि० ॥ १५ ॥ हो एक दिन गज चढी राजीयो, राजीयो रे हो सरोवर जोवा काज ॥ हो तेजी तुरिय पलाणीया, पलाणीया रे हो साथे सयलो साज ॥ नि० ॥ १६ ॥ हो नवरंग नेजा फरहरे, फरहरे रे हो नोवत घुरे रे *निशाण* ॥ हो थइ असवार ते आवीयो, आवीयो रे हो जालां कलहल जाण ॥ नि० ॥ १७ ॥ हो गजखंधे चढ्यो राजवी, राजवी रे हो उन्नी सुजटनी कोमि ॥ हो करे रे मजुरी मजुरीयां, मजुरीयां रे हो चोंप धरी मन कोम ॥ नि० ॥ १८ ॥ हो निरखे नजरे निहालीने, निहालीने रे हो तव दीठो महीपाल ॥ हो शीलमती दीठी प्रिया, दीठी प्रिया रे हो डुबली विरहनी जाल ॥ नि० ॥ १ए ॥ हो पर नरने निरखे नहीं, निरखे नहीं रे हो शीलमती सुकुमार ॥

नजर न मांडे कोइशुं, कोइशुं रे हो काम करे उजमाल ॥ नि० ॥२०॥ हो बांधव माता तेम वली, तेम वली रे हो करतां देखी काम ॥ थइ दिलगीर मन चिंतवे, चिंतवे रे हो मुज कुटुंब थयुं श्याम ॥ नि० ॥ २१ ॥ हो कर्म कमाइ जोगवे, जोगवे रे हो नहीं इहां कोइनो चार ॥ हो गर्व म करशो मानवी, मानवी रे हो खोटो अथिर संसार ॥ नि० ॥ २२ ॥ हो राय कहे पंचकुल प्रत्ये, कुल प्रत्ये रे हो शुं लहे कर्म करे एह ॥ रूपक एक दिन दिन प्रत्ये, दिन दिन प्रत्ये रे हो पामे एम कहे तेह ॥ नि० ॥ २३ ॥ हो साहिब तुमची आणथी, आणथी रे हो मध्यम लहे रे आहार ॥ कहे नृप कुटुंब उदेशीने, उदेशीने रे हो पंचकुलने तेणी वार ॥ नि० ॥ २४ ॥ हो ए मागस घणां कामनां, कामनां रे हो करे मजुरी खास ॥ हो वमणुं वधतुं एहोने, एहोने रे हो यो जेम वधे उल्लास ॥ नि० ॥ २५ ॥ यतः ॥ साधु-साधुजने स्वामी, निर्विशेषो यदा जवेत् ॥ तदा साधुगुणोत्साहः, साधोरपि न वर्द्धते ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ हो जात उत्तम देवुं वली, देवुं वली रे हो प्रभु आदेश प्रमाण ॥ हो कहे तेम्ही महीपालने, महीपालने रे हो कहे श्रम तुम्पा रात ॥ नि० ॥ २६ ॥ हो करी सलाम मुखे उचर्यो, उचर्यो रे हो महाप्रसाद महाराज ॥ ते पण तेमहीज मुखे कहे, मुखे कहे रे हो सीध्यां वांछित काज ॥ नि० ॥ २७ ॥ हो महीपालने नृप कहे, नृप कहे रे हो केना तुम अंगजात ॥ हो ते कहे साहिब माहरी, माहरी रे हो सांजलो सघली वात ॥ नि० ॥ २८ ॥ हो चार तनय प्रभु माहरे, माहरे रे हो वडूअर तेहनी ए चार ॥ एक गयो परदेशमां, परदेशमां रे हो रीसाथी निर्धार ॥ नि० ॥ २९ ॥ हो ते अमने वहालो घणुं, वहालो घणुं रे हो हुतो जीवनप्राण ॥ हो ते परदेश गया पछी, गया पछी रे हो हुवां अमे घणुं हेरान ॥ नि० ॥ ३० ॥ हो कोइ नगरथी आवीया, आवीया रे हो कंचनपुर अम वास ॥ हो तुज छाया आवी रह्या, आवी रह्या रे हो गुण साहिब अरदास ॥ नि० ॥ ३१ ॥ हो कहे नरपति महीपालने, महीपालने रे हो ए सघु वहु अम गेह ॥ तस डेराने मूकजो, मूकजो रे हो मन करजो संदेह ॥ नि० ॥ ३२ ॥ हो नृप निज मंदिर आवीयो, आवीयो रे हो एम कही ... आदेश ॥ लोक सहु विस्मय लह्यां, विस्मय लह्यां रे हो अगणित ... विशेष ॥ नि० ॥ ३३ ॥ हो कोइ साथे बोले नहीं, बोले नहीं

रे हो आपणो ए राजान ॥ हो एह कर्मकर उपरे, उपरे रे हो एवडुं केम सन्मान ॥ नि० ॥ ३४ ॥ हो चुम्मालीशमी ढालमां, ढालमां रे हो प्रकट्यो पुण्यविलास ॥ हो रामविजय कहे सांजलो, सांजलो रे हो मन मांहे धरी उल्लास ॥ नि० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३५ ॥ श्लोक ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ घर आवी सुसरो कहे, शीलमतीने एम ॥ जीरण कंचुक परहरी, पहेर नवो धरी प्रेम ॥ १ ॥ जातां नृपआवासमां, पोसाये निर्धार ॥ एक नूर कह्यो आदमी, कपडुं नूर हजार ॥ २ ॥ पण नवि माने ते ते कहण, सूतां सुख मांहे राति ॥ ढाश लेवाने मोकली, ते उग्ये परजात ॥ ३ ॥ राजजुवन उजी रही, नूतन जाणी तास ॥ प्रतिहारिणी तव जइ, नृपने करे अरदास ॥ ४ ॥ नृप आवी कहे तेहने, कां तुऊ एहवो वेश ॥ जीरण कंचुक केम धरे, लाजे नहीं सुविशेष ॥ ५ ॥ लाजे नीचुं जोवती, नवि बोले ते लगार ॥ कंते सूधी उंलखी, सतीशिरोमणि सार ॥ ६ ॥ राजाए देवरावीयुं, गोरस वहुलुं तास ॥ आवी मंदिर लेइने, धरती अंग उल्लास ॥ ७ ॥ बीजे दिन तेमहीज गइ, शीलमती नृपगेह ॥ नृप कहे मुऊ अर्पित ग्रहो, वारवाण धरी नेह ॥ ८ ॥ ते न लीये तव रोषथी, बोल्यो राजा एम ॥ कहेण न मानीश माहरुं, तो नहीं तुऊने क्षेम ॥ ए ॥ सा बोली सुंदर अहव, होय असुंदर देव ॥ पण निश्चे खंडुं नहीं जीवजाव निलमेव ॥ १० ॥ यतः ॥ आयातु यातु लक्ष्मीर्वा, यत्तद्वा वदताज्जनः ॥ जीवितं मरणं वाऽस्तु, सतां धर्मान्न विच्युतिः ॥ १ ॥

॥ ढाल पीस्तालीशमी ॥

॥ मानां दरजणनी लंकानो राजा ॥ ए देशी ॥ कर्त्रिम कोप करी कहे रे, सेवकने तव जूप ॥ आण न माने माहरी, ए नारीनुं अकल स्वरूप रे ॥ १ ॥ हियमानी वातो, नृप रीज्यो रे ए निरखी धातो, मनमानी रे मनमानी ए नारी सुजातो, रे हियमानी वातो ॥ ए आंकणी ॥ क्षेपो ए कारागारमां रे, अजर न करवो आज ॥ नृपआणा निसुणी धस्या, लेइ चाल्या करत दिवाज रे ॥ हि० ॥ २ ॥ पण न चली निज चित्तथी रे, शीलमती गुणवंत ॥ तुष्ट थइ पाठी तिहां, तेडावे ते निज कंत रे ॥ हि० ॥ ३ ॥ पूछ्युं कुण कारण प्रिये रे, नवि मूके वारवाण ॥ वैरूप्यकारक एहशुं, केम

रीझी रही तुं अजाण रे ॥ हि० ॥ ४ ॥ शीलमती कहे माहरे रे, वालमजी निज हाथ ॥ वेणी रची ए प्रेमशुं, पहेराव्यो कंचुक नाथ रे ॥ हि० ॥ ५ ॥ पीयुहाथे ए उतरे रे, शाने कहो कांइ वात ॥ कंत विना हुं कोइनुं नवि, मानुं कहेण तिलमात रे ॥ हि० ॥ ६ ॥ राय कहे हुं ताहरो रे, भामिनी तुं भरतार ॥ शीलमती कहे स्वामीने, न घटे कहेवो ए विचार रे ॥ हि० ॥ ७ ॥ सकल प्रजा रक्षक तुम्हे रे, पंचम गो लोकपाल ॥ करतां ए अन्यायने, पृथिवी जाय रसाताल रे ॥ हि० ॥ ८ ॥ जे दुःशील पराभवी रे, सतीउंनो आधार ॥ ते जो शील खंमन करे तो, नहीं कोइ राखणहार रे ॥ हि० ॥ ए ॥ जेहनी रक्षा तेहथी रे, भय उपजे जग मांहि ॥ वाम भखे जो चीभडां तो, कुण करे एहनो न्याय रे॥ हि० ॥ १० ॥ यडुक्तं ॥ गोत्रं विगोपितं तेन, पौरुषं चरितं तथा ॥ भ्रामितो मेदिनीपीठे,-ऽयशःपटहकोऽखिले ॥ २ ॥ महार्घ्यमपि तेन स्वं विहितं रजसा समं ॥ परस्त्रीसेवनं येन, निर्लज्जेन कृतं खलु ॥ ३ ॥ युग्मं ॥ पूर्व ढाल ॥ पारे पाणी तव कहे रे, सुण भडु उजमाल ॥ सहु वांछे जेहने प्रिया, तुज वांछे ते भूपाल रे ॥ हि० ॥ ११ ॥ शीलमती कहे मुज तननें रे, कंत अने के अगन्न ॥ ते विणु कोइ अडे नहीं, साचुं मानजो मन्न रे॥ हि० ॥ १२ ॥ यतः ॥ दोहो ॥ केसरीकेश भुयंगमणि, सरणाइ सुहमांह ॥ सतीपयोधर कृपणधन, चढशे हाथ मुआंह ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल ॥ राय कहे संकेतनां रे, वचन प्रतीतिने काज ॥ साहामुं जोइ निहाल तुं, खोटुं कहेतां मुज लाज रे ॥ हि० ॥ १३ ॥ आव्यो इहां हुं एकलो रे, शूरपाल अभिधान ॥ राय अपुत्रीयो इहां मुउ, थइ बेठो हुं राजान रे ॥ हि० ॥ १४ ॥ प्रत्यय सहिन सुणी करी रे, वयण विमासे नारी ॥ कंत सही ए माहरो, जाणे इंगित आकार रे ॥ हि० ॥ १५ ॥ तव सन्मुख निरख्युं तेणे रे, उंळख्यो निज कंत ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, नाठी मननी भ्रांति रे॥ हि० ॥ १६ ॥ सा दर्शन मनमां हुइ रे, थयुं रोमांचित अंग ॥ जेम घनदर्शन मोरमी, तेम वाध्यो अंनररंग रे ॥ हि० ॥ १७ ॥ दासीने फरमावीयुं रे, न्यासी करो एहनी सेव ॥ ए गुणवंती स्वामिनी, सेवो एहने जेम देव रे ॥ हि० ॥ १८ ॥ स्नान कराव्युं तेहने रे, चंदन ननु परमाय॥ पट्टांशुक पहेरावीयां, वर आभूषण शोभाय रे ॥ हि० ॥ १९ ॥ श्यामा ते

शोजे घणुं रे, रूपवती रति रंज ॥ जूषण ठवि शोजे घणी, दीठे होय नरने अचंज रे ॥ हि० ॥ २० ॥ रमऊम करती कामिनी रे, आवी नृपति पास ॥ नृप आदर आपे घणो, दीधुं अर्द्धासन तास रे ॥ हि० ॥ २१ ॥ सामंत मंत्रीश्वर सवे रे, ऊठी करे प्रणाम ॥ तिण दिन शांतिमती हती, साथे वली गइ निज धाम रे ॥ हि० ॥ २२ ॥ गुलक्षेप वेला तदा रे, नासी गइ निज गेह ॥ निज कुटुंबनी आगले, वात आवी कही सवि तेह रे ॥ हि० ॥ २३ ॥ निज हरखी हरिणी सही रे, वेठी हो कारागार ॥ सहु कहे जुगतुं एहने, कीधुं एणे किरतार रे ॥ हि० ॥ २४ ॥ जे हठवादी घणुं होवे रे, ते पामे छुःख एम ॥ वृद्ध कह्युं जे मानशे, ते पग पग लेहशे क्षेम रे ॥ हि० ॥ २५ ॥ ठो थानी ए पाथरी रे, शुं गोफाव्यानुं काम ॥ एह हठीलीनुं हवे, मत लेजो कोइ नाम रे ॥ हि० ॥ २६ ॥ एक दिन ते महीपालने रे, नृपे तेड्यो सकुटुंब ॥ जोजन कारण आवीयां, निज जनक ने बंधव बंब रे ॥ हि० ॥ २७ ॥ स्नान करावयां तेहोने रे, वसन वलां अति चंग ॥ आजूषण पहेरावीयां, राजाए धरी मन रंग रे ॥ हि० ॥ २८ ॥ मनमां महीपालादिका रे, वारु विमासे विचार ॥ आपणने ए राजीयो, केम एम करे उपचार रे ॥ हि० ॥ २९ ॥ जेने जेहथी रे सहेलुं होवे रे, निर्गुण पण तस पास ॥ पामे स्नान अचिंतव्यो, नहीं इहां कोइ अवर विमास रे ॥ हि० ॥ ३० ॥ आसन रम्य वेसारीयां रे, जोजनकाज ते वार ॥ थाल विचित्र मंगावीने, नृप पण वेठो गुणधार रे ॥ हि० ॥ ३१ ॥ नृपआदेशे आवे तिहां रे, शीलमती वर नारी ॥ पूर मनोरथ आपणा, प्रिये चिरसंचित इण वार रे ॥ हि० ॥ ३२ ॥ पीरसे जोजन प्रेमशुं रे, अहो अहो जक्ति अपार ॥ चिंते महीपाल चित्तशुं, सही इहांकणे कोइ विचार रे ॥ हि० ॥ ३३ ॥ जोजन करी ऊठ्यां सवे रे, वेसाड्यां आसार ॥ शूरपाल महीपालने रे, चरणे नमे धइ प्रगस रे ॥ हि० ॥ ३४ ॥ तात ते हुं तुम अंगजो रे, नामे जे शूरपाल ॥ मात पिता तुम्हे माहरां, नलोवां मुज जाग्य विशाल रे ॥ हि० ॥ ३५ ॥ राज्य अचिंतित में लयुं रे, ए सवि तुम्ह प्रसाद ॥ हुं सेवक हुं राउलो, मननां म धरो विषाद रे ॥ हि० ॥ ३६ ॥ जाणीने पण तुम कने रे, नीच करावयुं काम ॥ ते गुनहो सवि माहरो, खमजो तमे कहुं

शिर नामी रे ॥ हिं० ॥ ३७ ॥ शीलमती कर जोमीने रे, नाखे होनामी शीश ॥ खमजो मुज अपराध ए, तुमने जे चढावी रीस रे॥ हिं०॥३७॥ तुम वचने नवि मूकीयो रे, में कंचुक तेण वाय ॥ ते मुज आदेश कंतनो, कुलवती केम लोपाय रे ॥ हिं० ॥ ३ए ॥ महीपाल पण हरखीयो रे, उलखीयो निज नंद ॥ नाग्य वडुं वरस ताहरुं, दीठे थयो आनंद रे ॥ हिं० ॥ ४० ॥ तुज देखी मुज मने रे, वाध्या हर्षकल्लोल ॥ सिंधु उदय शीतांशुने, जेम पसरे जग कल्लोल रे ॥ हिं० ॥ ४१ ॥ कर जोडी उनो रह्यो रे, जनक आगल गुणवंत ॥ जनक उपामी शूरने, सिंहासन लेइ ठवंत रे ॥ हिं० ॥ ४२ ॥ सुसरो शीलमती नणी रे, कहे पुत्री तुं धन्य धन्य ॥ जीवलोकमां तुज समी, नवि दीठी में कोइ अन्य रे ॥ हिं० ॥ ४३ ॥ जेह मनोरथ ताहरा रे, होता घणुं असंनाव्य ॥ तुज नाग्ये अणचिंतव्या, थया संपूर्ण सनाव रे ॥ हिं० ॥ ४४ ॥ राख्युं शील तें आपणुं रे, नवि लोपी पीयुआण ॥ तो सवि नारीमां शिरे तुं, वेटी थइ गुणखाण रे ॥ हिं० ॥ ४५ ॥ पग पग तुजने दूहवी रे, ते खमजे अपमान ॥ शीलमती कहे ताननी, तेहथी मुज वाध्यो वान रे ॥ हिं० ॥४६॥ मात पिता सुसरा तणी रे, शिव कल्पतरु वाय ॥ मुजने मानेवी घटे, जेहथी वांछित सुख थाय रे ॥ हिं० ॥४७॥ सहु परिवार मल्यो तिहां रे, आनंद अंग न माय ॥ पीलासीशमी ढालमां, एम प्रगट्यो पुण्यपसाय रे ॥ हिं० ॥ ४८ ॥ १७ए३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरपाल नृपति हवे, तेड्या सवि सामंत ॥ कहे महीपाल ए मुज जनक, ए मुज बांधव गुणवंत ॥ १ ॥ ए माताजी माहरी, ए नोजाइ सार ॥ कर जोडी प्रणमो तुम्हे, ए माहरो परिवार ॥ २ ॥ एम कह्याथी सवि नम्या, मानिआव प्रमाण ॥ नयर मांहे उत्सव हुवो, वाग्यां ढोल निशान ॥ ३ ॥ निज बांधवने मानशुं, नूरि देशनुं राज्य ॥ आपीने हर्षित कर्या, सीध्यां वांछित काज ॥ ४ ॥ पुण्यपसाये नोगवे, मनोवांछित वर नोग ॥ शील-मतीशुं प्रीति बहु, सरिखो मल्यो संयोग ॥ ५ ॥

॥ ढाल नेवाशीशमी ॥

॥ होजी सुंदर सुंदर वरसीतो मेह, आजुनो ढाहरो रे धणी ॥ श्रीजिनहो साज ॥ ए देशी ॥ होजी नोगवे ते सुखनोग, न्यायधर्म वरते घणो ॥

हो लाल ॥ होजी पुण्य तणे संयोग, तेज सबल ते नृप तणो ॥ हो लाल ॥ १ ॥ होजी वेरी नम्या सवि पाय, आवी करे सहु चाकरी ॥ हो० ॥ होजी एके आरे होय, पाणी पीये वाघ बाकरी ॥ हो० ॥ २ ॥ होजी बलीयो शूरपाल राय, माय तायनी करे सेवना ॥ हो० ॥ होजी साते व्यसन निवार, पद प्रणमे जिनदेवना ॥ हो० ॥ ३ ॥ होजी एक दिवस उद्यान, श्रुतसागर मुनि आवीया ॥ हो० ॥ होजी षट्कायना रखवाल, सहु उपर समजावीया ॥ हो० ॥ ४ ॥ होजी वंदन काज नरेंद्र, तात प्रिया साथे चल्या ॥ हो० ॥ होजी आवी वनह मझार, गुरु वंदे हेजे हल्या ॥ हो० ॥ ५ ॥ होजी गुरु दीये देशन सार, ए संसार अशाश्वतो ॥ हो० ॥ होजी एक जिनधर्म ए सार, करो दिल राखी हिंसतो ॥ हो० ॥ ६ ॥ होजी तन धन योवन एह, जाय नदीना पूर ज्युं ॥ हो० ॥ होजी कारिमो सयण सनेह, उडी जाये अर्कतूल ज्युं ॥ हो० ॥ ७ ॥ होजी कूमो ए राज्यविलास, आश किसी करो एहनी ॥ हो० ॥ होजी जलमां जेम पतास, तेम पुद्गलछवि देहनी ॥ हो० ॥ ८ ॥ होजी ग्रहे श्रावकनो धर्म, निसुणी गुरुनी देशना ॥ हो० ॥ होजी पूछे कहो मुझ मर्म, कर्म कर्यां क्यां क्लेशनां ॥ हो० ॥ ९ ॥ होजी केम दुःख ने वली सुख, पाम्यो प्रभु परकाशीयो ॥ हो० ॥ होजी गुरु कहे सुण राजेंद्र, दानगुणे चित्त वासीयो ॥ हो० ॥ १० ॥ होजी कर्यो तें अतिथिसंविभाग, पूरव भव ते सांभलो ॥ हो० ॥ होजी कहे मुनिवर वडभाग, सुणे नृप मूकी आमलो ॥ हो० ॥ ११ ॥ होजी भरते भूमिप्रतिष्ठ, नयरे वीरदेव नामथी ॥ हो० ॥ होजी निवसे श्रावक एक, जस मनमां शंका नथी ॥ हो० ॥ १२ ॥ होजी तस घरे सुमता नारी, चित्त चोखी शुद्ध श्राविका ॥ हो० ॥ होजी माने निज गुरुआण, समजु सुधी भाविका ॥ हो० ॥ १३ ॥ होजी अष्टमी दिन एक वार, वीरदेव पोषध आदर्यो ॥ हो० ॥ होजी पारण दिन उजमाल, चिंते एम हर्षे भर्यो ॥ हो० ॥ १४ ॥ होजी जगमां ते नर धन्य, पोषधव्रतने पारणे ॥ हो० ॥ होजी पडिलाभे शुद्ध अन्न, मुनिवरने हित कारणे ॥ हो० ॥ १५ ॥ होजी ऊभो दिशि अवलोक, करवा लाग्यो चिहुं दिशे ॥ हो० ॥ होजी आवतुं मुनियुग दीठ, देखी दिलडे उल्लसे ॥ हो० ॥ १६ ॥ होजी सहामो जइ वीरदेव, पडिलाभे मुनि भावशुं ॥ हो० ॥ होजी

अनुमोदे तस नारी, दान मुनिनुं मन वस्युं ॥ हो० ॥ १७ ॥ होजी थयां सुकृतारथ दोय, मुनिवरवोरीने वह्या ॥ हो० ॥ होजी दंपतीना तिणीवार, मनह मनोरथ सवि फल्या ॥ हो० ॥ १८ ॥ होजी पाल्युं तेणे बहु काल, श्रावकव्रत नावे करी ॥ हो० ॥ होजी करी अणसण अंतकाल, गयां ईशाने ते मरी ॥ हो० ॥ १९ ॥ होजी तिहांथी चवी नरदेव, शूरपाल थयो तुं सही ॥ हो० ॥ होजी नारीनो ते जीव, शीलमती इहांकणे थइ ॥ हो० ॥२०॥ होजी पूरव नव दत्त दान, तास प्रनावे पामीया ॥हो०॥ होजी चिंतित धन सन्मान, तुम्हे लह्यां सवि सुख कामीयां ॥ हो० ॥ २१ ॥ होजी एम सांजली ततकाल, जातिसमरण उपन्युं ॥ हो० ॥ होजी दीठुं सवि शूरपाल, पूरवनवकृत आपणुं ॥ हो० ॥ २२ ॥ होजी चंड्पाल सुतने राज्य, सोंपी जनक नारी सही ॥ हो० ॥ होजी त्रिहुं जणे लीधी दीख, क्रोध कषाय धरे नहीं ॥ हो० ॥ २३ ॥ होजी पाली विशुद्ध चारित्र, घातिकरम क्षय घातीयां ॥ हो० ॥ होजी त्रिहुं जण लही वर नाण, मुक्ति गयां नव जीतीयां ॥ हो० ॥ २४ ॥ होजी कहे एम शांति नगवान, अतिथिसंविनाग व्रत उपरे ॥ हो० ॥ होजी निसुणे पर्षद बार, जिनवरवाणी ए आदरे ॥ हो० ॥ २५ ॥ होजी ठे कही ए ढाल, हर्षे तेंतालीशमी ॥ हो० ॥ होजी राम कहे उजमाल, नवि सुणजो साकर समी ॥ हो० ॥ २६ ॥ इति द्वादशअतिथिसंविनागव्रते शूरपालकथानकम् ॥ १२ ॥ १०२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम व्रत बारे जिन कह्यां, श्रावकनां अति सार ॥ चक्रायुध नृप आगले, नविजनने उपगार ॥ १ ॥ धर्म गृहीनो साधतां, करे निज आतम शुद्धि ॥ चढते परिणामे चढी, संयम ग्रहे विबुध ॥ २ ॥ अथवा एकादश वली पडिमा वहे सुजाण ॥ अंते अणसण आदरे, श्रावक तेह सुजाण ॥ ३ ॥ त्रिधा चतुर्धा आदरे, अणसण ने सागार ॥ वर्धमान परिणामथी, पाले निरतिचार ॥ ४ ॥ इह लोकाशंसा प्रथम, तिम परलोकाशंस ॥ जीवितआशंसा कही, तेम वली मरणाशंस ॥ ५ ॥ काम नोग वांछे नहीं, पंच दोष ए टाल ॥ आराधे संलेखना, श्रावक थइ उजमाल ॥ ६ ॥ जघन्य आयु सौधर्मनुं, अच्युत सुर उत्कृष्ट ॥ सुरलोके सुख नोगवी, शिवपद लहे अजीष्ट ॥ ७ ॥ धर्म एह श्रावक तणो, बीजो मुनिवर धर्म ॥ पंच समिति

त्रण शुचिशुं,साध्यो दे शिवशर्म॥०॥एह अनंतर हेतु छे,शिवपदनो मुनिधर्म॥ निश्चय समकितशुं धर्यो,दाणमें दे शिवशर्म ॥ए॥यतः॥एग दिवसंपि जीवो ॥

॥ ढाल सम्तालीशमी ॥

॥ नल राजारे देश, होजी पुंगलहुंती पल्हाणीया ॥ ए देशी ॥ निसुणी श्री जिनवाण, होजी कहे चक्रायुध नूपति ॥ तारो हो त्रिजुवनस्वामी, होजी द्यो मुफ दीक्षा जिनपति ॥ १ ॥ नमीयो नवमां जोर, होजी चोर कर्म आठे अव्यां ॥ कलुआ कठिन कषाय, होजी काल अनादिना रहे नव्या ॥ २ ॥ नांजो ए फुशमन जोर, होजी उगारो अरिहंत जी॥ करुं प्रनु तुमने निहोर, होजी नक्तवत्सल नगवंत जी ॥ ३ ॥ जन्म जरा मरणादि, होजी अंगने दीपित अति घणुं ॥ नवदहथी निस्तार, होजी प्रनुजीशुं तुम अति नणुं ॥ ४ ॥ प्रनु कहे करुणावंत, होजी धर्मे विलंब न कीजीये ॥ जो मनडुं होय गम, होजी तो शुचि संयम लीजीये ॥ ५ ॥ सुत स्थापी निज पाट, होजी पांत्रीश नृपशुं परवर्यो ॥ चक्रायुध जिनहाथ, होजी नावे संयम आदर्यो ॥ ६ ॥ दीधी जिनजीए दीख, होजी शिख ग्रहे जिनवर कने ॥ कर जोमी प्रनु पास, होजी पूछे तत्त्व कहो मुने ॥ ७ ॥ तत्त्व कहे उतपत्ति, होजी जइ एकांते चिंतवे ॥ समय समय ए.जीव, नारकी आदिक संनवे ॥ ८ ॥ एम उपजता तेह, त्रुवनत्रय माये नहीं ॥ एम धरी संशय चित्त, होजी प्रनु पासे पूछे जइ ॥ ए ॥ प्रनु प्रकाशे तत्त्व, होजी विगम कहे त्रिजुवनधणी ॥ पुनरपि जइ एकांत, होजी विगम विचारे बहु गुणी ॥ १० ॥ सर्व विगम जो होय, हो शून्यपणुं तो जग नजे ॥ न रहे जगमां कोइ, होजी वस्तु विगमने उपजे ॥ ११ ॥ पुनरपि पूछे तत्त्व, होजी स्थिति नाखे शासनपति ॥ समज्या सकल सरूप, होजी संशय न रह्यो एक रति ॥ १२ ॥ त्रिपदीने अनुसार, होजी अंग फुवालस ते रचे ॥ एम सघला एक रीति, हो द्वादशांग विरचे रुचे ॥ १३ ॥ आवे पढे प्रनु पास, होजी आसनथी जिन उठीया ॥ इंद्र आवे नरी थाल, होजी वासे मन संतुठीया ॥ १४ ॥ वास लेइ प्रनु हाथ, होजी आपे संघने मन रुली ॥ दीये प्रदक्षिणा तीन, होजी प्रनु पूछे ते लली लली ॥ १५ ॥ तस शिर स्थापे वास, होजी संघ सहित जिनवर मुदा ॥ गणधरपद अधिवास, होजी एम सहुनो कीधो मुदा ॥ १६ ॥ अवर वली

नर नार, होजी प्रभुजीए बहु दीक्षित कस्यां ॥ ग्रहीया संयमभार, होजी सहेजे भवसायर तस्या ॥ १७ ॥ चरण असह नर नारी, होजी ते हुआं श्रावक श्राविका ॥ शुद्ध समकित व्रतधार, होजी ते सहुए मन भाविका ॥ १८ ॥ एम चतुर्विध संघ, होजी शांति जिणेसर स्थापीयो ॥ समकित रयण अमूल, होजी प्रभुजीए सहुने आपीयो ॥ १९ ॥ पोरिसि अंते जिनभाण, होजी देववंदक मांहे आवीया ॥ बीजा वप्र मझार, होजी जगगुरु सहु मन भावीया ॥ २० ॥ जिनचरने पादपीठ, बेसे प्रथम तिहां गणधरु ॥ बीजी पोरसि मांहे, होजी करे व्याख्यान मनोहरु॥२१॥संघनी आगल एम, होजी कहे कथा अघहारिणी ॥ अंतरंग वात विनोद, होजी धर्मनी स्थिरता-कारिणी ॥ २२ ॥ सत्तालीशमी ढाल, होजी छठे खंडे सोहामणी ॥ राम-विजय कहे एम, होजी सांभलो आतम हित भणी ॥ २३ ॥ १०५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोहराजके राजमां, धर्मराजकी आण ॥ वर्तावे चेतन तदा, जीवित जन्म प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाल अमृतालीशमी ॥

॥ हो प्रभु महेर कर महाराज ॥ ए देशी ॥ क्षेत्र मानवलोक मांहे, देह नयर मंडाण ॥ मोह नामा वसे नरपति, जगत सहु जस आण ॥ १ ॥ रे जीव समज सुगुण सुजाण ॥ तुं तो म धर मोहनी आण, हांरे जेम लहे कोमि कल्याण ॥ रे जीव० ॥ ए आंकणी ॥ मोह घरणी रंगे परणी, माया नामे नारी ॥ तेह बेहुथी उपन्यो सुत, सबल मदन कुमार ॥ रे जी० ॥ २ ॥ लोभ नामे महामंत्री, क्रोध दुर्द्धर पास ॥ राग द्वेष महारथी दो, मिथ्यात्व जास खवास ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ मान नामे वसो गजवर, मोह वाहन जोर ॥ चड्यो इंद्रियअश्व उपर, करत सबलो शोर ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ विषय त्रेवीश मोह आगल, खडे रहत चोबदार ॥ एक एकपें उमराव पोढे, चढत पाप अढार ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ आठ बांधव राज विलसे, रूप शत अडवन्न ॥ एक पूठे अनंत वर्गण, सेन चढत अगम्म ॥ रे जी० ॥ ६ ॥ प्राण वाणिज वसे उनमें, चित्त पुर आरक्ष ॥ राज सबलो मोह केरो, साचवे यह दक्ष ॥ रे जी० ॥ ७ ॥ निगुणी गुरुउपदेश भीतर, फिरे मन आ-रक्ष ॥ देहपुरमां धर्म नृपति, लहे प्रवेश प्रत्यक्ष ॥ रे जी० ॥ ८ ॥

घृति आर्जव नामे राणी, तेहनी मनोहारी ॥ धर्म नृपति कंत साथे, रहे अन्नेद विचार ॥ रे जी० ॥ ए ॥ सचिव महोटो सबल गुणवंत, नामश्री संतोष ॥ अहोनिशे निज स्वामी सेंती, वाध्यो प्रेमनो पोष ॥ रे जी० ॥ १० ॥ *मंनडेश्वर अछे आगे, नाम समकित धीर ॥ सामंत व्रत गुण मूल* केरा, रहत पास अन्नीरु ॥ रे जी० ॥ ११ ॥ अणुव्रतादिक पत्ति बहुला, रहत जास समीप ॥ मातंग मार्दव नाम गर्जत, वस्रो ए अवनीप ॥ रे जी० ॥ १२ ॥ योध उपशम आदि जिनके, बहुत हे जूंफार ॥ चारित्ररथ चढी चलत आगे, श्रुत सेनानी सार ॥ रे जी० ॥ १३ ॥ करी मानस हाथ अपने, सबल धर्मनरिंद ॥ देहपुरमां आय अपनी, वसति करे अहमिंद ॥ रे जी० ॥ १४ ॥ निर्घाटीयो तव मोह नृपको, वरती अपनी आण ॥ मोहको अवकाश कोइ, देहु मत गुणखाणी ॥ रे जी० ॥ १५ ॥ बहुत दिनकी आण उनकी, करत हुवे हेरान ॥ विश्वास ए अन्याय नृपको, म कर चतुर सुजाण ॥ रे जी० ॥ १६ ॥ जो कदाचित् मोहके वश, होत ए अज्ञान ॥ कर्मपरिणति फेरी उनको, लेइ स्थापे ठाण ॥ रे जी० ॥ १७ ॥ जेम अनीतिपुरे विपत्तिमां, वणिकसुत बुद्धि दान ॥ रत्नचूडने उद्धस्यो यम,-घंट गणिका जाण ॥ रे जी० ॥ १८ ॥ कुण हुर्ज ते कवण गामे, कहे संघ कर जोमी ॥ कहे गणधर प्रथम तेहनी, कथा मनने कोम ॥ रे जी० ॥ १ए ॥ खंम ठठे एह चाखी, ढाल ए अमयाल ॥ रत्नचूम तणुं हवे चरित्र, सुणो चरित उजमाल ॥ रे जी० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १७७७ ॥ श्लोक ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जरतक्षेत्रमां अति जली, बहु इन्यनो वास ॥ तामलिप्ती नगरी घणुं, दीठे होय उल्लास ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर मालीयां, चोराशी बाजार ॥ अमरपुरी मनुं अवतरी, मानवलोक मकार ॥ २ ॥ सदाचार वासे वसे, रत्नाकर तिहां शेठ ॥ दोलतने दोरे करी, बीजा सहु ए हेठ ॥ ३ ॥ तस घरणी पुण्यातमा, लावण्यरूप निधान ॥ सरस्वती नामे जली, प्रीतमनुं बहु मान ॥ ४ ॥ निज करगत महारत्नशिख, उद्योतित निज धाम ॥ निशा शेष देखी सुपन, कहे पीयुने अनिराम ॥ ५ ॥ प्रिये तनय होशे जलो, हरखी निसुणी वाणी ॥ सुत जन्म्यो समये तिणे, रत्नचूम

अभिधान ॥ ६ ॥ बालपणे शिखी कला, सकल करी तेणे चूंप ॥ योवन-
वय मन मोहतो, मानिनी तणां अनूप ॥ ७ ॥

॥ ढाल उगणपचासमी ॥

॥ मनमोहनां लाल ॥ ए देशी ॥ एक दिवस हट शहेरमां रे ॥ मन-
मोहनां लाल ॥ चाल्यो रत्नचूड ताम हो ॥ जनरंजनां लाल ॥ मारगमां
सामी मली रे ॥ म० ॥ सौनाग्यमंजरी नाम हो ॥ जन० ॥ १ ॥ नृप मन-
मानीती घणुं रे ॥ म० ॥ गणिका ते मदवंत हो ॥ ज० ॥ खंधे तेणे
फूहवी रे ॥ म० ॥ बोले ते एम संत हो ॥ ज० ॥ २ ॥ पालव साही
तेहनो रे ॥ म० ॥ बोली करी उपहास्य हो ॥ ज० ॥ नंदन सुण तुं
शेठना रे ॥ म० ॥ पंमित जननी नाप हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ धने अनेग
मूकापणुं रे ॥ म० ॥ पश्यतने पण होय हो ॥ ज० ॥ जे तुं बाल
दिवसमां रे ॥ म० ॥ न चले सहामुं जोय हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ देखे
नहीं मुऊ आवती रे ॥ म० ॥ धनमद न घटे ए तुऊ हो ॥ ज० ॥ ते
माटे कहे नीतिनां रे ॥ म० ॥ जाण वचन ए गुऊ हो ॥ ज० ॥ ५ ॥
जनक उपार्जित वित्तशुं रे ॥ म० ॥ न करे कोण विलास हो ॥ ज० ॥
निज नुज अर्जित संपदा रे ॥ म० ॥ विलसे तस साबाश हो ॥ ज० ॥
६ ॥ एम कही स्थानक गइ रे ॥ म० ॥ गणिका गुणनुं पात्र हो
॥ ज० ॥ रत्नचूड मन चिंतवे रे ॥ म० ॥ करुं हवे परदेशयात्र हो ॥ ज०
॥ ७ ॥ सत्य वचन करवुं सही रे ॥ म० ॥ एहनुं में धनहेत हो ॥ ज० ॥
धन आणी परदेशथी रे ॥ म० ॥ करुं पूर्ण संकेत हो ॥ ज० ॥ ८ ॥
घर आव्यो रत्नचूडजी रे ॥ म० ॥ मन धरतो विषवाद हो ॥ ज० ॥
पूछे पिता आवी तदा रे ॥ म० ॥ धरतो मन आह्लाद हो ॥ ज० ॥ ए ॥
श्याम वदन केम ताहरुं रे ॥ म० ॥ दीसे कां दिलगीर हो ॥ ज० ॥
किसी अनुरति ताहरे रे ॥ म० ॥ तुं मुऊ मनमानो हीर हो ॥ ज० ॥
१० ॥ तात जइश परदेशमां रे ॥ म० ॥ धन उपराजण काज हो ॥
ज० ॥ योवनवय निज जनकनी रे ॥ म० ॥ ऋद्धि नोगवतां लाज हो
॥ ज० ॥ ११ ॥ कहे रत्नाकर वत्स तुं रे ॥ म० ॥ नानमीयो सुकुमार
हो ॥ ज० ॥ केम परदेशे एकलो रे ॥ म० ॥ में मोकलाये बाल हो ॥
ज० ॥ १२ ॥ वत्स विलसो सुख मंदिरे रे ॥ म० ॥ नित्य नवला

ए जोग हो ॥ ज० ॥ वेगां तुऊ केम ऊपन्यो रे॥ म०॥ परदेशे जवानो रोग हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ विषम पंथ परदेशनो रे ॥ म० ॥ इंड्रिय वश होय जास हो ॥ ज० ॥ नारी लालचे नवि पडे रे ॥ म० ॥ बोले वचन विमास हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ ते परदेशे संचरे रे ॥ म० ॥ वत्स ए डुष्कर वात हो ॥ ज० ॥ रत्नचूम कहे माहरो रे ॥ म० ॥ न चले निश्चय तात हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ ड्व्य लक्ष लेइ तातनुं रे ॥ म० ॥ ऊधारे परदेश हो ॥ ज० ॥ चाले करियाणुं ग्रही रे ॥ म० ॥ कोइक वाहण वेसी हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ शेठ शिखामण दे घणी रे ॥ म० ॥ वत्स रहेजो हुशियार हो ॥ ज० ॥ पुर अनीति मत जायजो रे॥ म० ॥ ज्यां नहीं न्यायविचार हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ तिहां नृपति अन्याय वे रे ॥ म० ॥ अविचारित प्रधान हो ॥ ज० ॥ सर्वग्राह्य आरक्षको रे ॥ म० ॥ लहे नृपनुं बहुमान हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ नाम अशांति पुरोहितो रे ॥ म० ॥ गृहीतजक्षक शेठ हो ॥ ज० ॥ मूलनाश सुत तेहनो रे ॥ म० ॥ नयर मांहे बहु वेठ हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ रणघंटा गणिका तिहां रे ॥ म० ॥ यमघंटा तस माय हो ॥ ज० ॥ द्यूतकार चोरादिका रे ॥ म० ॥ बहु निवसे डुःखदाय हो ॥ ज० ॥ २० ॥ लोक वसे तिहां अति घणां रे ॥ म० ॥ ऊंचा जस आवास हो ॥ ज० ॥ जे अजाण जाये तिहां रे ॥ म० ॥ पाडे तेहने पाश हो ॥ ज० ॥ २१ ॥ एवुं अनीतिपुर मूकीने रे ॥ म० ॥ करजो सुखे व्यवसाय हो ॥ ज० ॥ जनकशिखामण चित्त धरी रे ॥ म० ॥ चाल्यो ते सुखदाय हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ शकुन जलां थयां तेहने रे ॥ म० ॥ वेगां प्रवहण तेह हो ॥ ज० ॥ चाल्या जलनिधिमां सुखे रे ॥ म० ॥ धरता हर्ष अबेह हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ धीवर इछित द्वीपने रे ॥ म० ॥ चलव्या पण ते वाय हो ॥ ज० ॥ जोरावर जवितव्यता रे ॥ म० ॥ आव्या अनीतिपुर ठाय हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ पोत देखी ते आवतुं रे ॥ म० ॥ हरख्यां सघलां लोक हो ॥ ज० ॥ हेरि कोट ऊंची करी रे॥ म० ॥ रविदरिसण जेम कोक हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ हवे जवियण तुम्हे सांजलो रे ॥ म० ॥ ए संबंध रसाल हो ॥ ज० ॥ ठहे ऊंगणपचास रे ॥ म० ॥ राम कहे ऊजमाल हो ॥ ज० ॥ २६ ॥ १९१० ॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वंदरकांठे नांगर्युं, वाहण तेणी वार ॥ कोइक नरने पूठीयुं, द्वीप नयर आचार ॥ १ ॥ चित्रकूट ए द्वीप ठे, पूर्वोदित अभिधान ॥ नगरादिकनुं दाखव्युं, चमक्यो सुणी सुजाण ॥ २ ॥ अहो अजाण्यो आज हुं, आव्यो एणे ठाम ॥ जिहां जनके वार्यो हतो, न थयुं चिंतित काम ॥ ३ ॥ पण मुऊ एक आधार ठे, रे शकुन पवन अनुकूल ॥ मन उत्साह तेम माहरो, शुं करशे प्रतिकूल ॥ ४ ॥ शोच किस्यो करवो हवे, थाशे सघलुं इष्ट ॥ पुण्यदशा जब पाधरी, दूरे टले अनिष्ट ॥ ५ ॥ एम धीरज मनमां धरी, उतरीया तेणी वार ॥ रत्नचूड वेलातटे, करे निवास उदार ॥ ६ ॥ भांड उतार्यां यानथी, दीये शुल्क धन तास ॥ राजपंचकुलने तिहां, रत्नचूड सुविलास ॥ ७ ॥

॥ ढाल पचासमी ॥

॥ जोरावर हाथीना गीतनी देशी ॥ तिण अवसर तेणी ठाय रे, पुरमांथी आया, धन काज उमाह्या, चारे सम भाया, निगुणा दुःखदाया, आवीने उभा रे चारे वाणीया रे ॥ १ ॥ पूठे कुशल क्षेम वात रे, भाइ भले आव्या, देखी सुख पाव्या, साजनजी सोहाव्या, कहोने शुं लाव्या, लावो रे करियाणुं ते लेशुं अम्हे रे ॥ २ ॥ निसुणी एहवी वात रे, हरख्यो मन मांहे, चिंते रे उत्साहे, दीसे ए शाहे, कूडी नहीं प्राहे, मुद्रा रे दीसे ठे शाहुकारनी रे ॥ ३ ॥ कहे धूर्त ते चार रे, वाहालेसर मोरा, करीये ठैये निहोरा, सुण साजन गोरा, करियाणां तोरां, लेशुं रे रंगेशुं सघलांही अम्हे रे ॥ ४ ॥ देशुं एहनुं मूल रे, जेवुं तमने गमशे, दारिद्र निगमशे, आरति सवि समशे, वांठित सवि सरशे, देशुं रे भरी वाहण जे कहेशो तेणे रे ॥ ५ ॥ आप्यो सघलो माल रे, लेइने ते चाल्या, मन मांहे माल्या, रंगेशुं रेल्या, आव्या पुर ठेल्या, माल वहेंचीने घेरे लइ गया रे ॥ ६ ॥ हवे रत्नचूड कुमार रे, मन धरी आनंदा, देखे नरवृंदा, मुख पूनमचंदा, साजन सुखकंदा, आवे रे नयरीनो नरपति भेटवा रे ॥ ७ ॥ विचमांहे कारुक एक रे, सहामो तस आयो, धींगड मल्ल धायो, प्रणमी कहे पायो, कुंवरजी लायो, अवल तुमारे काजे पादुका रे ॥ ८ ॥ देवरावी तंबोल रे, कहे कुंवर रंगे, मनने उठरंगे, निसुणो एकंगे, जाणो ए अभंगे, करीश खुशाल हुं जातां

तुफने रे ॥ ९ ॥ आगल चाल्यो कुमार रे, कोइ सहामो आव्यो, धूरतमां चावो, काणे कस्यो दावो, मुफ लोचन लावो, सहस माटे रे सोंप्युं तहारा बापने रे ॥ १० ॥ एम कही आप्युं धन तास रे, हियफामां चिंते कुंवर एकांते, बोले ए संते, गिरुउं गुणवंते, चाखे रे आवासे लेवा आवजो रे ॥ ११ ॥ आगल जातां चार रे, व्यंसक वली मलीया, बोले कलफलीया, मांहोमांहे जलीया, कुंवर सांजलीया, वात करे रे वाद तणी तिहां रे ॥ १२ ॥ एक कहे समुद्रनुं नीर रे, गंगाना कणीया, ए छे अणगणीया, बुद्धिमंत बहु जणीया, तेणे न जाये गणीया, पण न गणीजे रे वनिता-हृदयने रे ॥ १३ ॥ बीजो बोले उक्ति रे, एहवी ए जाखी, हियफामां राखी, सुणजो सहु साखी, कामित आकांखी, ग्रंथ ने नारीहृदय न को लहे रे ॥ १४ ॥ त्रीजो बोले ताम रे, कपटी शिरदार, वयणां निर्धार, खोटां न लगार, जाणे ए सार, शुक्र गुरुनी सरिखो बुद्धे जे हुवे रे ॥ १५ ॥ चोथो बोले ठेक रे, परदेशथी आयो, मोरे मन जायो, बालक ए कहायो, सूधो छे माह्यो, जाणे रे सघली ए सुजाषित वारता रे ॥ १६ ॥ बोल्यो अन्य तव कूरे रे, ए गंगा दीसे, मनकुं केम हींसे, साचुं कहींसें, माह्यो जाणींसें, मान करावो रे सायरजल तणुं रे ॥ १७ ॥ एम कस्यो तेणे हठवाद रे, उजम उपायो, न रह्यो मन साह्यो, अमपे मन आयो, ना एम न कहायो, कुंवर तेणे रे वात अंगीकरी रे ॥ १८ ॥ सायरजल तणुं मान रे, अमने करी आपो, तुमे बोल ए थापो, संशयने कापो, अम धन तुम दापो, नहींतर लेशुं रे ताहरी संपदा रे ॥ १९ ॥ एम कही लीये तस बोल रे, ताली त्रण दीधी, प्रतिज्ञा कीधी, कारिज थइ सिद्धि, जुवो ठग कुबुद्धि, चाल्यो ते तिहांथी कुंवर आगले रे ॥ २० ॥ चिंते मनमां एम रे, सहु ए ठग दीठा, हियमाना मीठा, मुहमाना मीठा, लागे ए अनीठा, माहरे रे जनके ए कहीया तेहवा रे ॥ २१ ॥ ए कारिज निर्वाह रे, कहोने केम करशुं, कोने जइ कहेशुं, उत्तर श्यो देशुं, यश केम इहां लहेशुं, चिंते रे चित्त मांहे रत्नचूम एहवुं रे ॥ २२ ॥ चिंते एक उपाय रे, गणिकाघरे जाउं, बुद्धि कोइ उपाउं, जेम सुखीयो थाउं, माणसमां आउं, इस्युं विमासी गयो गणिकाघरे रे ॥ २३ ॥ छठे पचासमी ढाल रे, जवियण सांजलजो, कूडुं मत लवजो, ठगबुद्धि स

धरजो, हियडामां मरजो, हुं बलिहारी रे जाउं तेहनी रे॥२४॥ १०४

॥ दोहा ॥

॥ रत्नचूड गणिकाघरे, आवी उठो जाम ॥ रणघंटा उठी थइ, आ दीधो ताम ॥ १ ॥ गौरव सहित जमाडीयो, देइ बहु सन्मान ॥ वा करे ते प्रेमनी, प्रमदा गुणनी खाण ॥ २ ॥ संध्याकाल थयो तदा, स विठावी सेज ॥ सार शृंगार जला कीया, गणिकाए धरी हेज ॥ ३ ॥ म खोलीने प्रेमनी, करवा लागी वात ॥ मन पाखे उत्तर दीये, रत्नसा अंगजात ॥ ४ ॥ चिंताए न गमे किसी, मीठी पण कोइ वात ॥ जे तावीला पुरुषने, लागे कटुक निवात ॥ ५ ॥ शेठ सुणो एणी परे पा पूछुं तमने एक ॥ ए विवादनी उपरे, कहो उत्तर मुज छेक ॥ ६ ॥ निरांइ थया विना, न गमे रंगविलास ॥ प्रेम धरी मुजने तुम्हे, बु कहो सुविलास ॥ ७ ॥ तव बोले गणिका तिहां, सांजल चतुर सुजा ॥ देवयोग इण बंदरे, आवे कोइ अजाण ॥ ८ ॥ सर्व मली ए तेहना से वंचीने दाम ॥ एक अंश ते डव्यनो, पहोंचाडे नृपधाम ॥ ९ ॥ बीजे जाग प्रधाननो, शेठनो त्रीजो अंश ॥ चोथो आरक्षक तणो, अधिकार निर्दिश ॥ १० ॥ लीये पुरोहित पांचमो, छठो महारी माय ॥ मति पूछ ने आगले, सहु आवे चित्त लाय ॥ ११ ॥ ते माटे तुमने तिहां, तेमी, जा आज ॥ सांजलजो तुमे चित्त धरी, सहेजे सरशे काज ॥ १२ ॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

॥ उंचुं देहरुं आदिनाथनुं रे जोजो ॥ ए देशी ॥ रणघंटा कहे तेहने रे आवो, करी नारीनुं रूप ॥ मोरा साहेबा रे ॥ काम सबल ए बुद्धिनुं रे जोजो ॥ ए आंकणी ॥ थइ नारी गयो तेहने रे जोजो, केडे ते नार स्वरूप ॥ मोरा साहेबा रे ॥ का० ॥ १ ॥ करी प्रणाम थका नारी रे जोजो, पासे बेठी तेह ॥ मो० ॥ पूछे तेहने ताहरी रे केडे, कोण ए रूपनुं गेह ॥ मो० ॥ २ ॥ ते कहे श्रीदत्त शेठनी रे माता, रूपवती करी एह ॥ मो० ॥ एह मही ते माहरी रे माता, एहशुं निविड सनेह ॥ मो० ॥ ३ ॥ एक वार एहने मल्या विना रे माता, कल न पडे मुज अंग ॥ मो० ॥ ए पण बेठी मंदिरे रे माता, अहोनिश मुज गुण गाय ॥ मो० ॥ ४ ॥ हमणां ए निज करी मुजने रे माता, मनवा आ

एणी वार ॥ मो० ॥ तेमी लावी एहने रे माता, ए छे मुज आधार ॥ मो० ॥ ५ ॥ एहवे वणिक ते आवीयो रे जोजो, प्रणमे श्रका पाय ॥ मो० ॥ वात कही रत्नचूडनी रे जोजो, धुरिहुंती समजाय ॥ मो० ॥ ६ ॥ प्रसुं करियाणक एहनुं रे जोजो, अम्हे करी कूड उपाय ॥ मो० ॥ कहे श्रका तुम एहमां रे जोजो, कोमी लाज न थाय ॥ मो० ॥ ७ ॥ ते कहे केम अमने कहो रे जोजो, सा कहे जाएयुं आम ॥ मो० ॥ तुम चिंतित करियाणशुं रे जोजो, पूरशुं थान निकाम ॥ मो० ॥ ८ ॥ इम अनेक प्रकारनी रे जोजो, कहेशे मशकने हाम ॥ मो० ॥ पूरो ए प्रवहण माहरुं रे जोजो, तो केम पूरशो लाम ॥ मो० ॥ ए ॥ चार वणिक तब पोढीया रे तेहने, एवमी किहांथी बुद्धि ॥ मो० ॥ कहे श्रका मत जाणजो रे जाइ, थाश माटे निर्बुद्धि ॥ मो० ॥ १० ॥ ए धूरतपुर आवीयो रे होशी, तेह धूरत शिरदार ॥ मो० ॥ कोइक मायानो निद्र रे नोहे, सपणा एक प्रकार ॥ मो० ॥ ११ ॥ लाज थायजो तुम्हने रे जाइ, तो होय मुजने लाह ॥ मो० ॥ पण मन मांकी म राखशो रे जाइ, मनमा मांहे चाह ॥ मो० ॥ १२ ॥ तेह गया निज मंदिरे रे आव्यो, फाकम होडी ताम ॥ मो० ॥ विकसित मुख बोले इसी रे श्रका, आज थयुं मुज काम ॥ मो० ॥ १३ ॥ आज व्यवहारी आवीयो रे कोइ, नेट छपानह कीध ॥ मो० ॥ करीश खुशाल हुं तुजने रे तेणे, एहवुं वचन मुज दीध ॥ मो० ॥ १४ ॥ तस सर्वस्व लीधे सही रे थाशुं, हुं खुशाल दिल मांहे ॥ मो० ॥ ए कहेवाने आवीयो रे पासे, तुमचे धरी उत्साह ॥ मो० ॥ १५ ॥ कहे श्रका सुण काख्या रे कीजे, मनोरथ आप समान ॥ मो० ॥ अनुगत एहवुं मागतां रे माथे, पनो ताहरे छपान ॥ मो० ॥ १६ ॥ कहेशे ए नरिंदने रे हुउं, मंदिरमां सुत आज ॥ मो० ॥ तुं खुशाल किशा नहीं रे त्यारे, आपरडो आवीश बाज ॥ मो० ॥ १७ ॥ ते पण सुणी विसरो चइ रे पाछो, आव्यो निज परचार ॥ मो० ॥ धूरत एकदम आवीयो रे करतो, आपपो गुण विस्तार ॥ मो० ॥ १८ ॥ यमघंटा पोढी इसी रे कूमी, ताहरी शी ए बुद्धि ॥ मो० ॥ आगलथी धन आवीयुं रे मादुं, कीधुं किहां गइ शुद्धि ॥ मो० ॥ १९ ॥ कहे तम धन किश नथी रे ए मे, कीधो सरवंकार ॥ मो० ॥ कहे अज इप थानदी रे कहेशो, पाडना

सही तुं सुखार ॥ मो० ॥ २० ॥ अन्य लोचन अथवा किसी रे तेहवी, वस्तु देखाडशे तुक ॥ मो० ॥ तुं मति केलवीने तदा रे तेहने, कहीश नहीं ए मुक ॥ मो० ॥ २१ ॥ कहेशे ते तोलनयंत्रथी रे लेइ, तुक लोचनगुं तोली ॥ मो० ॥ सरिखुं थाय तो ताहरुं रे लेजो, इयो तव उत्तर बोल ॥ मो० ॥ २२ ॥ कहे कितव तुम एहवुं रे सूके, नहीं तस बोलण थाय ॥ मो० ॥ ते माटे धन एहनुं रे माहरे, हाथे आव्या प्राय ॥ मो० ॥ २३ ॥ ते पण उठीने गयो रे आव्या, व्यंसक ते वली चार ॥ मो० ॥ कहेवा लाग्या आपणी रे आवी, वात सकल विस्तार ॥ मो० ॥ २४ ॥ कहे अक्का तुम वातमां रे कांइ, देखुं नहींय सकार ॥ मो० ॥ ते बुद्धिमंतनी आगले रे कांइ, नहीं तुम जोर लगार ॥ मो० ॥ २५ ॥ कहेशे सायर नीरनुं रे माहरे, करवुं सही परिमाण ॥ मो० ॥ पण नदीउंना नीरने रे जाइ, करो अलगुं तुमे जाण ॥ मो० ॥ २६ ॥ ते नहीं थाये तुम्हथी रे त्यारे, खोशो पत्नी आय ॥ मो० ॥ खोटो विचार न कीजीये रे जेहथी, न रहे शरम निज हाथ ॥ मो० ॥ २७ ॥ ते पण उठीने गया रे हरख्यो, शेठनंदन गुणवंत ॥ मो० ॥ छठे एकावनमी ढाली रे जोजो, बुद्धिबलीयो बलवंत ॥ मो० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ १७७१ ॥ श्लोक ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रणघंटाशुं उठीयो, शेठनंदन गुणखाणी ॥ तस मंदिरमां आवीयो, करतो नास वखाण ॥ १ ॥ लेइ अनुमति तेहनी, आव्यो निज आवास ॥ अक्का कथित उपायथी, कारिज करे उल्लास ॥ २ ॥ तांमपात्री वणिजो थकी, लीधुं धन चउ लक्ष ॥ वारिधिजल मितकारथी, तावत् वली प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ तिण व्यतिकरथी ते हुउ, पुर मांहे परसिद्ध ॥ अन्य दिवस सुत शेठनुं, गयो नरपतिने सन्निद्ध ॥ ४ ॥ करी प्रणाम उभो रह्यो, पूछे नृप वृत्तांत ॥ अनुक्रम मांडी कह्यो, गयलो ते अवदात ॥ ५ ॥ नरपति मन चिंते इस्युं, अद्भुत एहनुं भाग्य ॥ तग अम नगरीलोकने, जेणे उगीया ए लाग ॥ ६ ॥ माग माग राजा कहे, थयो तुक उपर तुष्ट ॥ बुद्धिमंत सुत देखीने, थइ मुक मन सुख पुष्टि ॥ ७ ॥ रणघंटा सुतने दीयो, प्राण वल्लभा थाय ॥ गजतुरंगमथी मेदिनी, थइ गणिका सुखदाय ॥ ८ ॥ वस्त्र दीधां घणां, पूरी मननी मरांद ॥ रणघंटानां रंगशुं, पूर्यां सकल

लाड ॥ ए ॥ लाज थयो बहु तेहने, जरी करियाणे यान ॥ रत्नचूड निज पुर जणी, चाल्यो सुगुणनिधान ॥ १० ॥ थोडे दिवसे आवीयो, रत्नचूड निज गेह ॥ रत्नाकर हरख्यो घणुं, सुत ऋद्धि देखी अछेह ॥ ११ ॥ प्रणमे चरण पिता तणा, माताना वली पाय ॥ सुत जीवो युग कोडि लगे, थे आशिष पसाय ॥ १२ ॥ मांडीने सघलुं कहुं, निज वृत्तांत अशेष ॥ रत्नाकरना हृदयमां, हर्ष थयो सुविशेष ॥ १३ ॥ ईषत् तस गुणवर्णना, पिता करे तेणी वार ॥ पुत्रप्रशंसा नवि करे, गुरुजन एम व्यवहार ॥ १४ ॥ यतः ॥ प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्रबांधवाः ॥ कर्मांते दासभृत्याश्च, पुत्रा नैव मृताः स्त्रियः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ आव्यां घणां वधामणां, साजन हर्ष अपार ॥ पुत्र पिता बेहु मल्या, वरत्यो जयजयकार ॥ १५ ॥ आवी सौजाग्यमंजरी, तस देखणने काज ॥ रत्नचूड आसन ठवी, बहुत वधारी लाज ॥ १६ ॥ जद्र तुऊ उपदेशथी, उपराजी बहु ऋद्धि ॥ जइ परदेश कमाइयो, थइ मुऊ कारिजसिद्धि ॥ १७ ॥

॥ ढाल बावनमी ॥

॥ कंसार ते सूधो केलव्यो ॥ ए देशी ॥ सौजाग्यमंजरी कहे एहवुं, तुम जाग्य हतुं थयुं तेहवुं ॥ तुम शोजा आवी अति जली, तुम कीर्त्ति वाधी उजली ॥ १ ॥ तुम उपर मोही हुं घणुं, तुम गुणसमुदाय केता जणुं ॥ प्राणजीवन तुम एक माहरे, गृहिणी याइश घर ताहरे ॥ २ ॥ लेइ जेट्यो उपायन जूपति, घणुं रीज्यो देखी तेहनी रति ॥ हर्षित नृपनी आणा वरी, घर राखी सौजाग्यमंजरी ॥ ३ ॥ धन आप्युं पितानुं मूलगुं, कर जोडी थइ रह्यो उंलगुं ॥ जुज उपराज्युं द्रव्य वावरे, बहु त्याग ने जोग समाचरे ॥ ४ ॥ अन्य पण परणी तेणे कामिनी, गुणवंती जे गजगामिनी ॥ करे पुण्यनां काम ते अति घणां, जिनचैत्य करावे सोहामणां ॥ ५ ॥ विलसे रुडी जोगसंपदा, सुहणा मांहे नहीं आपदा ॥ सुख मांहे काल गयो घणो, यश चावो चिहुं दिशि तेह तणो ॥ ६ ॥ एक दिवस मुनीश्वर आवीया, शम दमवंता समजावीया ॥ रत्नचूडे जइ मुनि वंदीया, गुरुदेशना सुणी आनंदीया ॥ ७ ॥ लीधे संयम मुनिवरजी कने, पाले निरतिचार रुडे मने ॥ करे किरिया मुनिवर निर्मली, शुद्ध जाव सहित मननी रली ॥ ८ ॥ अंते ते अणसण आदरी, सुरलोकनी लीला तेणे

वरी ॥ पद पाम्या महानंद अनुक्रमे, धन्य ते जे एहवा मुनि नमे ॥ ९ ॥ हवे निसुणो उपनय ए सही, अभ्यंतरनी वातो कही ॥ कुल उत्तम मानवजव लह्यो, नविजीव वणिकनो सुत कह्यो ॥ १० ॥ हित- कारक श्रीगुरु जाणीये, ते तेहनो तात वखाणीये ॥ श्रद्धादि जनित प्रोत्सा- हना, ते वेश्यावचन निदाननां ॥ ११ ॥ पुण्य लक्ष्मी उपचयकारिणी, आगल पण नवजलतारिणी ॥ मूलद्रव्य चारित्र गुरुए दीयुं, ते राते ठेकाणे सहुजीयुं ॥ १२ ॥ पुर वाल्युं अनीतिनुं जे तदा, गुरु सारण वारण दे मुदा ॥ संयम प्रवहण उपम लही, नवसायर तरवो ठे सही ॥ १३ ॥ कर्णधारक तुल्य विमलमना, साधर्मिक साथ तपोधना ॥ नवि- राज्य नियोगाज जाणीये, प्रमाद जे हृदयमां आणीये ॥ १४ ॥ पुर पाम्युं अनीतिना नामनुं, कुप्रवृत्ति तणुं जे प्रवर्तनु ॥ मोह नूपति नाम अन्या- यीयो, पुरमां सवसे जे गाइयो ॥ १५ ॥ जांनमाही वणिक सम जाणीया, पार दुष्ट कपाय ते राखीया ॥ हरे द्रव्यविवेक ते पापीया, पणे लोक पणा संतापीया ॥ १६ ॥ विपयाशा हो वेश्या सम कही, तेहने जाय मले जीवडो सही ॥ कर्मपरिणति अक्का अति जली, शुन मतिदायक कुल पूर्वली ॥ १७ ॥ उह्लंघी अशुन सवि तेहथी, प्राणी मलीयो निज गेहथी ॥ धर्ममारगमां फरी आवीयो, जन्मनूमि परे सुख पामीयो ॥ १८ ॥ एह उपनय दिल मांहे धारीये, गुण आदरी अवगुण वारीये ॥ कीजे धर्मनुं कारिज धसमसी, धन्य वात ए जेहने मन वसी ॥ १९ ॥ चक्रायुध गणधर उपदिस्यो, श्रीसंघ तणा दिलमां वस्यो ॥ ए उपनय दिलमां राखजो, नवि अनुनव स्वादने चाखजो ॥ २० ॥ पावनमी ढाल वठ सुणी, अंतर उपनय दाख्यो मुनि ॥ कहे रामविजय सहु सांनली, नवि धर्म करो तजी आमली ॥ २१ ॥ २०१९ ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी गणधर देशना, सामाचारी सार ॥ साधुने सवि दाखवी, तेहथी नवनिस्तार ॥ १ ॥ थिविरकल्प प्रकाशीयो, श्रुतकेवली नगवान ॥ श्रीचक्रायुध गणधरु, नविकज सूर समान ॥ २ ॥ प्रनु विचरे पुहवी- तले, पद पग्ना कज हेम ॥ सुर नर कोडे परिवर्या, वरत्युं जगमां देम ॥ ३ ॥ केइक दीक्षा आदरे, केइ ग्रहे श्रावकधर्म ॥ नडकवल्लिाणी

थया, केइक तजी विकर्म ॥ ४ ॥ तम नातुं सवि जगततुं, उग्यो जिनवर जाण ॥ कौशिक जिम एक अजव्यने, न थयुं कांइ कल्याण ॥ ५ ॥ अग्निए पण सीके नहीं, जे करमु कण होय ॥ तेम अजव्यने तारवा, समरथ नहीं जिन कोय ॥ ६ ॥ ऊपर जूमि न नीपजे, जेम जगमां कांइ धान्य ॥ बोधि न होय अजव्यने, तेम जिनदेशन वाणी ॥ ७ ॥ अतिशयवंत महामुनि, महागोप अनिधान ॥ गुण अनंत जिनवर तणा, कुण कही शके सुजाण ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

॥ त्रिपदीनी देशी ॥ चोत्रीश अतिशयवंत मुणिंद, महीमंम्ल विचरे जिनचंद, जवियण मन आनंद तो ॥ १ ॥ जयो जयो जवियण मन आणंद ॥ ए आंकणी ॥ खेद मल रोग रहित प्रजु अंग, श्वास पद्मगंध होय सुचंग, मांस रुधिर सित रंग तो ॥ जयो० ॥ २ ॥ नवि देखे आहार नीहार, अतिशय जन्म तणा ए चार, होवे अंग मकार तो ॥ ज० ॥ ३ ॥ योजन जूमि सुर नर तिरि कोम, वेसे निराकुल मनने कोम, कुण करे एहनी होम तो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सहु समजे योजन लगे वाणी, जलके जामंमल नीशाणी, श्रीजिनगुणनी खाणी तो ॥ ज० ॥ ५ ॥ पंचशत कोश लगे दुर्जिक्ष, रोग वैर ईति मारी प्रत्यक्ष, अति वर्षण ने अवर्ष तो ॥ ज० ॥ ६ ॥ स्वपर चक्र जय बोल ए आठ, न हुवे ए आगमनो पाठ, एम अग्यारनो गठ तो ॥ ज० ॥ ७ ॥ घातिकर्मक्षयथी ए अग्यार, हवे देवकृत उंगणीश विचार, सुणीये जवि निर्धार तो ॥ ज० ॥ ८ ॥ धर्मचक्र प्रजु आगल सोहे, चामरयुग जविजन मन मोहे, मणिसिंहासन जोय तो ॥ ज० ॥ ए ॥ ठत्रत्रय इंद्रध्वज प्रवर, हेमकमल विरचे तिहां सुरवर, त्रिहुं गढ अतिहि मनोहर तो ॥ ज० ॥ १० ॥ चउमुह रचना धर्मप्रकाश, चैइयतरु दीठे उल्लास, अधो होय कंटक आस्य तो ॥ ज० ॥ ११ ॥ तरुनमन दुंदुजिध्वनि सारी, पृष्ठानुपाती पवन निर्धारी, अतिशय गुण बलिहारी तो ॥ ज० ॥ १२ ॥ पंखी पण प्रदक्षिणा दिंती, गंध जलवृष्टि तिहांकणे हुंती, कुसुमवृष्टि विरचंती तो ॥ ज० ॥ १३ ॥ व्रत लीधे नवि वाधे केश, जघन्य थकी सुरकोटि प्रवेश, ऋतु अनुकूल अशेष तो ॥ ज० ॥ १४ ॥ ए उंगणीश अतिशय सुर कीधा, एम चोत्रीश थया परसिद्धा, सघलां कारिज सिद्धां तो ॥ ज० ॥ १५ ॥

गुण अनंत जिनजीना दीसे, जोतां जवियणनां मन हीसे, दिन दिन चडती जगीश तो ॥ ज० ॥ १६ ॥ अतिशय गुण जिनजीना जेह, जिन विण बीजो न लहे तेह, महिमा अतुल अठेह तो ॥ ज० ॥ १७ ॥ विचरे मही अचिरानो जायो, चोसठ इंद्रे मली गुण गायो, त्रिजुवनजन मन जायो तो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चक्रायुध गणधर प्रजु साथ, सेवे प्रजुने जोडी हाथ, जय शिवपुरना साथ तो ॥ ज० ॥ १९ ॥ जाणत पण पूछे कर जोडी, गणधर प्रजुजीने मद मोडी, पहोंचे जवियण कोडि तो ॥ ज० ॥ २० ॥ बठे खंडे त्रेपनमी ढाल, शांति प्रजु अतिशय गुणमाल, जवियण सुणो उजमाल तो ॥ ज० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २०४८ ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विश्वसेन कुलचंदलो, अचिरा मात मल्हार ॥ सोलम जिन त्रिजुवनधणी, नोधारा आधार ॥ १ ॥ जक्तवत्सल जावठ हरण, सेवकजन साधार ॥ करुणारस सायर प्रजु, कहुं तेहनो परिवार ॥ २ ॥

॥ ढाल चोपनमी ॥

॥ कंवरजीने मुख मांजली ॥ ए देशी ॥ जवियण वंदो रे जावशुं, प्रजुनो परिवारो रे ॥ गुणवंतजीना गुण स्तव्ये, लहीये जवजल पारो रे ॥ जवियण वंदो रे जावशुं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुण सत्यावीश शोजता, शमरस जंकारो रे ॥ प्रजुजीना मुनिवर नमुं, बासठ हजारो रे ॥ ज० ॥ २ ॥ एकसठ सहस गुणे जरी, षट् शत अधिकेरी रे ॥ हस्तदीक्षित नमुं साधवी, गुणशील जरेरी रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ शुद्ध समकित गुणधारका, बारे व्रत पाले रे ॥ नव तत्त्व जाण्या धर्मथी, अतिदूषण टाले रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ रागे रंगाणा धर्मने, जिनधर्म ए जाणे रे ॥ सार ए अवर असार छे, न डगे कोइ टाणे रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ चउदश आठमने दिने, करे पोसह जावे रे ॥ शुद्ध अशनादिक साधुने, हर्षे पडिलाने रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ शांति प्रजुवाणी सुणी, हुवा प्रतिबुद्धा रे ॥ साधुनी संगत मूकीने, न रहे ते जूदा रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ दोय लाख उपर वली, नेवुं सहस सुणीजे रे ॥ एहवा श्रावक जिन तणा, नित्य प्रत्ये समरीजे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ गुणवंती हुइ श्राविका, त्रण लाख उदार रे ॥ त्राणुं सहस उपर वली, प्रणमो नर नारी रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ जिन नहीं पण जिन सारिखा, त्रिहुं कालना ज्ञाता रे ॥ आठ सहस

श्रुतकेवली, षट्कायना त्राता रे ॥ ज० ॥ १० ॥ जव संख्यात मनुष्यना, रूपी ड्रव्यने देखे रे ॥ अवधिज्ञानी मुनिवरा, त्रण सहसने लेखे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ समय क्षेत्र मांहे संज्ञिता, मनजावने जाणे रे ॥ मनः-पर्यवनाणी मुनि, सहस चार वखाणे रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ केवलज्ञाने जाणता, सहु लोक अलोक रे ॥ चार सहस त्रणसें वली, वंदो गतशोके रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ वैक्रियलब्धिधरा जला, षट् सहस मुणिंद रे ॥ चारसें दोय सहस नमो, वादी आणंद रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ ए परिवार जिणंदनो, कर जोमी जाले रे ॥ मुक्तिमार्ग साधे जलो, वंदो त्रिहुं काले रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ वैयावृत्त्य करे जलुं, सहु विघ्न निवारे रे ॥ यक्ष गरुम नामे जलो, प्रजुसेवा सारे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ जक्त तणी सान्निध्य करे, निर्वाणी नामे रे ॥ शांति प्रजु शासनसुरी, समरो शुज कामे रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ मुख्य सहु मांहे शिरे, चक्रायुध जात रे ॥ कोणाचल नृप स्वामीनी, करे सेव सुजात रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ चालीश धनुषनी देहमी, मृगलांठन स्वामी रे ॥ कांचन-वर्ण तनु शोजतुं, प्रणमो शिर नामी रे ॥ ज० ॥ १९ ॥ अप्रतिरूप जिणं-दनुं, वपु सुंदर दीपे रे ॥ एक मने अवलोकतां, सवि पातक ठीपे रे ॥ ज० ॥ २० ॥ जुवनत्रय प्रजुता तणां, सूचक उक्किठां रे ॥ आठ अशो-कादिक तणां, प्रातिहारज दीठां रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ यतः ॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि,–र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ जामंमलं डुंडुजिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ एम प्रजु प्रजुता जोगवे, त्रिहुं जगत प्रतिपाल रे ॥ सहज समाधिनी लीलमां, विचस्या बहु काल रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ सौख्य अतींड्रियना धणी, वरते समजावे रे ॥ साधक बाधकता मटी, सहजातम जावे रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ घट घट व्यापक जे विजु, अविकल अविनाशी रे ॥ परमातम प्रगटी कला, शुज ज्योतिविलासी रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ चोपनमी ए ढालमां, खंम ठठे सु-णीजे रे ॥ शांति प्रजुपद सेवतां, जन्म सफल गणीजे रे ॥ ज० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरिस पंचविंशति सहस, कुमरपणे जगदीश ॥ मात पिता आ-गल रह्या, दिन दिन अधिक जगीश ॥ १ ॥ सामानिक राजापणुं, वरिस तेटलां जाण ॥ सुखलीला प्रजु जोगवी, अतिशय गुणमणि-

॥ जात्य मणि आगल नवि शोभे, तुछ असार अकीकां ॥ से० ॥ ३० ॥ ठठे पंचावनमी ढाले, देशना दीधी जिणंदे ॥ रामविजय कहे अहो- निश दिलमां, धरीये मन आनंदे ॥ से० ॥ ३१ ॥ ११११ ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ एणी परे देशना, उठ्या त्रिजुवनजाण ॥ शिखर चढ्या शिखरी तणे, जाणी निज निर्वाण ॥ १ ॥ केवलज्ञानी साधुजी, नवसें साथ मुणिंद ॥ अणसण कीधुं अरिहंतजी, एकमासिक सुखकंद ॥ २ ॥ सपरिवार सुरपति सवे, जगतप्रजुनी पास ॥ परम प्रीति संपन्न ते, करे सेवना खास ॥ ३ ॥ ज्येष्ठ श्याम तेरश दिने, जरणी ऊडु विधुयोग ॥ शुक्ल चरम जेद ध्यावतां, लहे गुणगाण अयोगी ॥ ४ ॥ डुचरिम समय अयोगीने, करी वहोत्तरनो नाश ॥ चरम समय ते खेपवी, पहोता शिवपुरवास ॥ ५ ॥ समय पएसंतर वली, अणफरसीने ताम ॥ गति परिणामे पंचमी, गति लही त्रिजुवनस्वामी ॥ ६ ॥ अनुक्रमे साधु सवि तिहां, पाम्या परमानंद ॥ सिद्धपणुं पाम्या मुनि, मोमी जवजयफंद ॥ ७ ॥ नाथ थयो शिवनारीनो, जाणीने जग- नाथ ॥ अश्रुजलाविल लोचने, रुदन करे सुरनाथ ॥ ८ ॥ गुण संजारे स्वामीना, आव्यां हृदय जराय ॥ हा! प्रजु तुम विरहो पड्यो, कहो हवे केम खमाय ॥ ए ॥ संशयतिमिर विनाशवा, हा! दिनकर उपमान ॥ अमने मूकी अनाथ परे; किहां गया हे जगवान ! ॥ १० ॥ सहु जापा संवादिनी, गाजत जेम घनमेह ॥ तुम विण कुण दइ देशना, हरशे अम संदेह ॥ ११ ॥ डुर्जिक्षादिक अशिव सवि, पीमाकर जग मांहे ॥ तस उपशम करशे कवण, तुम विणु तिहुअणनाह ॥ १२ ॥ काज तजी देवलोकनां, महीयल आवी स्वाम ॥ करशुं कोनी चाकरी, तुम विणु प्रजु गुणधाम ॥ १३ ॥ धरता एम मन खेदने, इंद्र सवे तेणी वार ॥ करे उत्सव निर्वाणनो, हवे निसुणो अधिकार ॥ १४ ॥

॥ ढाल उप्पनमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥ जिनवर मुक्ते पधास्या जाणी, मन खेद धरे जविप्राणी रे ॥ प्रजु मुक्ति पधास्या ॥ प्रजु जगजीवन जइ शिव वरीया, थया निरुपाधिक सुखदरिया रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ पतित पावन परमातम नामे, थइ बेगे अविचल धामे रे ॥ प्र० ॥ सार न

ले हवे सेवक केरी, रह्यो आपणने मोह घेरी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कुण करशे अम सार संजाल, प्रजु तुम विणु दीनदयाल रे ॥ प्र० ॥ जक्तवत्सल प्रजु नाम धरावी, उपगार करो प्रजु आवी रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शुं कहेवुं वीतरागने एह, जेहना मनमां नहीं नेह रे ॥ प्र० ॥ चार निकाय तणा सुर मलीया, जिनजक्ति करण जलफलीया रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ क्षीरोदधिनां हो नीर मगावी, पहेलां प्रजुने नवरावी रे ॥ प्र० ॥ गोशीर्षचंदन घसी रंगे, सुर लेप करे जिनअंगे रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ मुख महेली कर्पूर सुवास, पहेरावे देवडूष्य वास रे ॥ प्र० ॥ अगरु उखेवे जक्ति महमूर, पसरे तस परिमल पूर रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मंदार पारिजातकसंतान, फूले पूजे जगवान रे ॥ प्र० ॥ शिबिका रयण तणी विरचावे, प्रजुजी तनु तिहां पधरावे रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इंद्रादिक शिबिका उपाडे, नैरुत कूणे पहोंचाडे रे ॥ प्र० ॥ चंदनदारुचिता तिहां विरची, प्रजुअंग धर्युं तिहां अर्ची रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अपर चिता अणगारने हेते, सुरे कीधी मननी प्रीते रे ॥ प्र० ॥ अग्निकुमार सुरे तिहां आवी, मुखे अग्नि तिहां सलगावी रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ वायुकुमार विकुर्व्या वाय, प्रजाली प्रजुनी काय रे ॥ प्र० ॥ दाधां शोणित मांसने जाणी, मेघ सुर वरसावे पाणी ॥ प्र० ॥ १० ॥ चिताअनल शमीयो तिण वेला, सहु इंद्र यथा तिहां जेला रे ॥ प्र० ॥ दक्षिण ऊर्ध्व दाढ सुचंगा, महे पति सौधर्म सुरंगा रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ चमर अपर महे दक्षिण केरी, दाढा धरी जक्ति घणेरी रे ॥ प्र० ॥ वाम दाढा अध उपर दोइ, ईशान बलींद्र ले सोइ रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ शेष अव्यावीश दंत सुरिंदा, लीये धरी मनमां आनंदा रे ॥ प्र० ॥ शेष अस्थि अनिमेष विचारी, लीये जावशुं करी एक तारी रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ विद्याधरनर उजा जोडे, चिताजस्म महे मन कोडे रे ॥ प्र० ॥ सकल उपद्रव टालणहारी, प्रजुजक्तिनी जाउं वलिहारी रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ एम संस्कार करी प्रजुअंगे, करे थूज तिहां मनरंगे रे ॥ प्र० ॥ सोवन रयणनुं काम विराजे, दीठे जवजावठ जाजे रे ॥ प्र० ॥ १५ ॥ ते उपर जिनपडिमा स्थापे, दरिसणथी डुरितने कापे रे ॥ प्र० ॥ केसर सुखडशुं जे पूजे जवि, अशुज कर्म तस जूंजे रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ जक्ति करे जिनपडिमानी सारी, जगमां

धन्य ते नर नारी रे ॥ प्र० ॥ करी निर्वाणमहोत्सव महाल्या, नंदीश्वर यात्राए चाल्या रे ॥ प्र० ॥ १७ ॥ करी जिनजक्ति तिहां जले जावे, कर जोमी जिनगुण गावे रे ॥ प्र० ॥ बावन प्रासादे जिनराया, पूजी करे निर्मल काया रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ प्रजुगुणज्ञानमां तान बनावी, घणी वार त्यां जावना जावी रे ॥ प्र० ॥ निज निज स्थानक ते सुर जावे, दिलमां प्रजुके गुण ध्यावे रे ॥ प्र० ॥ १९ ॥ समकितवंत तणी ए करणी, जवसायरपार उतरणी रे ॥ प्र० ॥ कुगति हरी दीये मुक्ति सहेली, प्रजुपूजाए दरिसण जेली रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ ढाल उप्पनमी खंडे उठे, प्रजु पूजो चित्त अकुंठे रे ॥ प्र० ॥ रामविजय कहे उत्तम तेह, जेहने प्रजु साथे सनेह रे ॥ प्र० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ २१४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर मुक्ति पधारीया, चक्रायुध गणधार ॥ प्रजुगुण समरंता मने, महीयल करे विहार ॥ १ ॥ साधु संघाते परिवस्या, सूधा समतावंत ॥ जविक जीव प्रतिबोधता, सुरनरसेवित संत ॥ २ ॥ गुण सत्यावीश साधुना, अंगे धरे अणगार ॥ समतारस मांहे फीलता, नहीं ममता अहंकार ॥ ३ ॥ अरति निवारी चित्तथी, रतिपति न लहे लाग ॥ चक्रायुध गणधर तणुं, जग प्रसर्युं सौजाग्य ॥ ४ ॥ आतम गुण वामी जली, सिंचे उपशम नीर ॥ वानर इंड्रिय चपलता, काढी मूके धीर ॥ ५ ॥ कटुक जाम काढ्यां परां, क्रोधादिक जस नाम ॥ वामी जली वैराग्यनी, चोपके अजिराम ॥ ६ ॥ शांतिनाथ जिनराजनी, शिर पर धारे आण ॥ स्याद्वाद मत उपदिशे, नय गम जंग प्रमाण ॥ ७ ॥ ड्रव्ये गुण पर्यायनुं, चिंतन करे सुधर्म ॥ अप्रमत्तता जूमिमां, निविम खपाड्यां कर्म ॥ ८ ॥ जर्म मल्यो मोहरायनो, चेतन कीधी केमी ॥ करणशस्त्र करमां ग्रही, नाख्यो मोह उखेमी ॥ ९ ॥ श्रेणि चढी गुणठाणमां, वरतावे निज आण ॥ वीतरागता जावथी, पाम्यो केवलनाण ॥ १० ॥ सुर असुरादिक सवि मिल्या, उत्सव करे अपार ॥ गगने गाजे डुंडुजि, वरत्यो जयजयकार ॥ ११ ॥ जवस्वरूप नाटक समुं, दीठुं नजरे ताम ॥ जव्य जीवनी आगले, दीये देशना आम ॥ १२ ॥

॥ ढाल सत्तावनमी ॥

॥ दुलहो मानवजव लाधो ॥ ए देशी ॥ कहे चक्रायुध केवलनाणी, सांजलो सहु जविप्राणी ॥ जव अनादि संयोग ए दीसे, शुं देखी देखी हीसे रे ॥ १ ॥ जविका, धर्म करो मद मूकी ॥ नहींतर जाशो जव चूकी रे ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ मन मांहे चिंते मात पिता मुज, जाइ ने जोजाइ ॥ पण कोइ काम पडे नवि आवे, साथे आप कमाइ रे ॥ ज० ॥ २ ॥ लोज घणो मन मांहे राखे, मेले धन केइ लाख ॥ पाप परिग्रह जेलो कीधो, पण अंते सहु राख रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मन मांहे जाणे मान तणे वश, पूरुं हुं सहुनुं पाडुं ॥ शिख देयंतां जागे अवलो, बोले वायक आकुं रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ बहु प्रकारे बालपणुं निज, पोपे बहु आरंजी ॥ निष्कारण जग मांहे बांधे, कर्म कठिन सारंजी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ पुजलनी मूर्छा मांहे पमीयो, पापकर्म करे केइ ॥ करे अन्याय रहे वली अलगो, परने माथे देइ रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ त्रीश महा मोहस्थानक वारो, निज आतम साधारो ॥ कहे चक्रायुध गणधर गिरुउं, ते जवि हृदयमां धारो रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ जल मांहे पेसी जे हणे त्रसने, मत्स्यादिकने जलशस्त्रे ॥ पादादिक आक्रमण करीने, प्रथम स्थानक कह्युं शास्त्रे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ वाध्र लीले त्रस जीवने वींटी, जे हणे ते दुःख सहेशे ॥ हाथे मुख रूंधी हणे त्रसने, कहो तस शी गति होशे रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ मंमप वामादिक मांहे रूंपी, धूमाकुल करी मारे ॥ महा मोहस्थानक सेवंतो, रुले चिहुं गति संसारे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ दुष्ट मने असि मुजर शस्त्रे, उत्तम अंग विदारे ॥ निर्दय परिणामी त्रस उपर, करतो ए कर्म वधारे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मायाए वेश लेइ वणिजादिक, पंथ चलीने साथे ॥ वच मांहे गलकर्तन करे पापी, जूंमा कह्या जगनाथे रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ गूढाचार निगूहे जूंमो, मायाए परमाया ॥ आछादे जिम शकुन विघातक, छइ ढांके निज काया रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ ए छठ्ठुं स्थानक मत सेवो, हवे सप्तम सुणो प्राणी ॥ असत्यवादी सूत्रारथ निहव, कह्यो जिन अवगुण खाणी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ दुष्टाचरण रहितने अंते, आप करे अपराधे ॥ छायाभ्रंश करे ते पापी, आतमगुणथी न वाधे रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ नवमे जाण हुं तो पर्षदमां, साचां जूठां जे बोले ॥ कलह थकी अणविरम्यो मानव, नावे कोडी मूले रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ नायक रहित सचिव

नरपतिनो, राज कलत्र विधंसी ॥ अर्थाविगम उपाय भणी तेम, ध्वंसे ते पूरो डंसी रे ॥ भ० ॥ १७ ॥ सामंतादिक परिकर भेदे, तस अधिकार पभावी ॥ धीग थइ हरे भोगने परना, शुभमति मूके भावी रे ॥ भ० ॥ १८ ॥ नहीं कुमार कहे बालकुमारो, ब्रह्मचारी लोक आगे ॥ स्त्री वशवर्ती अग्यारमुं स्थानक, सेवतो जाणशे आगे रे ॥ भ० ॥ १९ ॥ नहीं ब्रह्मचारी कहे ब्रह्मचारी, बारमुं स्थानक मातुं ॥ जस निश्रा विचरे तेहनुं धन, ताके ते पातक कातुं रे ॥ भ० ॥ २० ॥ अणईश्वर ईश्वर जेणे कीधो, परिगल वित्त घर पामी ॥ ईर्ष्या द्वेष धरे स्वामीशुं, तेहमां महोटी खामी रे ॥ भ० ॥ २१ ॥ जेम सापिण अंमकपुट निहणे, तेम पोषकने मारे ॥ सेनापति शास्तार प्रत्ये ते, रुडो नहीं आचारे रे ॥ भ० ॥ २२ ॥ देश तणो नायक जे दीसे, निगम तणो अधिकारी ॥ शेठ बहुयशने जे मारे, सोलमुं ए ठाण भारी रे ॥ भ० ॥ २३ ॥ बहु जनना नेता प्राणीने, त्राण जे द्वीप समान ॥ प्रावचनी नरने जे निहणे, सत्तरमुं कह्युं ठाण रे ॥ भ० ॥ २४ ॥ संयत विरत उपस्थित तपसी, धर्म थकी चूकावे ॥ महा मोहनो बंध करे ते, मुक मनमां न सुहावे रे ॥ भ० ॥ २५ ॥ जिन अनंत नाणी वरदंशी, तेहनो अपयश बोले ॥ एकोनविंशतितम ए स्थानक, सेवतो कहो कुण तोले रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ नैयायिक मारग अपकारी, बहु जनने भंभेरे ॥ भावयति निंदी ए महेलो, फरशे चिहुं गति फेरे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ आचारिज उवज्झाये भणाव्यो, सबल थयो श्रुतपाठी ॥ बाल करे खिंसा वली तेहोनी, मति तेहनी घणुं माठी रे ॥ भ० ॥ २८ ॥ आचारिज उवझायने न करे, सम्यग् जे उपगार ॥ अप्रतिपूजक तेहनो जे नर, तास अकज अवतार रे ॥ भ० ॥ २९ ॥ त्रेवीशमुं स्थानक अबहुश्रुत, बहुश्रुत नाम धरावे ॥ चोवीशमे अतवस्सी तपीयो, हुं एम कीर्ति गवावे रे ॥ भ० ॥ ३० ॥ ग्लान तणुं वेयावच्च न करे, समरथ हुंतो जेह ॥ पणे न कर्युं नवि करशे ए माहरे, महामोह बांधे तेह रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥ जेह कथा अधिकरण प्रयुंजे, तीरथ भेद करंतो ॥ छवीशमुं महामोहनुं स्थानक, बोधि न पामे मरतो रे ॥ भ० ॥ ३२ ॥ जे आधार्मिक योग प्रयुंजे, निमित्त वशीकरणादि ॥ श्लावा मित्र तणे वली हेते, महामोहनो उन्माद रे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ जे मानुष्यक भोग अतृप्तो, पारलौकिकने चाहे ॥ अठ्यावीशमुं

मोहनुं स्थानक, ए दाख्युं जिननाहे रे ॥ ज० ॥ ३४ ॥ देव तणी सुति ऋद्धि ने वीरज, वल यश वर्ण विशेष ॥ तास श्रवर्ण जे वालमति कहे, नहीं तेहमां गुणरेख रे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ नवि देखे ने कहे हुं देखुं, देव अने वली यक्ष ॥ अज्ञानी जन पूजा अर्थी, वांधे मोह प्रत्यक्ष रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ ए त्रीशे स्थानक सेवंतो, महामोहनो अधिकारी ॥ जाणीने तुमे विरमो एहथी, कहे गणधर उपकारी रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ ढाल सत्तावनमी खंम ठठे, गणधर देशना दीधी ॥ समकितदृष्टि जे नर नारी, श्रवणपुटे करी पीधी रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सर्व गाथा ॥ ११०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री चक्रायुध केवली, देशन अमृतसार ॥ जविक जीव केइ बुऊवी, उतास्था जवपार ॥ १ ॥ आयु जाणी अवशेष निज, थोडुं गणधर देव ॥ बहु साधुशुं परिवस्था, सारे सुर नर सेव ॥ २ ॥ जरत क्षेत्र मध्य खंममां, पावन तीरथ सार ॥ कोटिशिलाजिध ठे जलुं, नामे जवनिस्तार ॥ ३ ॥ श्री चक्रायुध केवली, विचरंता मुनि साथ ॥ कोटिशिलाए आवीया, जगतारण जगनाथ ॥ ४ ॥ अणसण कीधुं तिहांकणे, बहु केवलिपरिवार ॥ श्री चक्रायुध गणधरु, पाम्या शिवपद सार ॥ ५ ॥ काले कोटिशिला विषे, सिद्धा मुनिवर कोमि ॥ चक्रायुध सिद्धा पठी, वंडु वे कर जोमी ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठावनमी ॥

॥ ऋषज जिणंदा ऋषज जिणंदा ॥ ए देशी ॥ तीरथ वंदो ए तीरथ वंदो, कोटिशिलाजिध जेम चिर नंदो ॥ कोमि गमे गया जिहां मुनि मुक्ते, ते तीर्थ प्रणमो जवि जक्ते ॥ ती० ॥ १ ॥ श्री चक्रायुध गणधर सिद्धा, शांति प्रजु वारे परसिद्धा ॥ ते पूठे मुनि संख्यात कोमि, मुक्ते गया प्रणमुं कर जोमी ॥ ती० ॥ २ ॥ कुंथु जिणंद हुआ जगवंता, सत्तरमा जिन गिरुआ गुणवंता ॥ संख्यात कोडी तस तीरथ सिद्धा, मुनि वंदो गुणरयण समिद्धा ॥ ती० ॥ ३ ॥ श्रीअरनाथे तीरथ तरीया, द्वादश कोमि मुनि शिवपद वरीया ॥ एह शिला उपरे कुःख वारी, सिद्ध थया जाउं बलिहारी ॥ ती० ॥ ४ ॥ मल्लि जिणेसर त्रिभुवनस्वामी, सुर नर आवी नमे शिर नामी ॥ ए प्रजु तीरथे मुनि षट् कोमी, शिव पाम्या प्रणमो

मन कोमि ॥ ती० ॥ ५ ॥ श्रीमुनिसुव्रत वारे ए कहीये, कोटिशिला देखी गहगहीये ॥ त्रण कोमि मुनिवर मुक्ति पधास्या,ते वंदीने नवडुःख वास्यां ॥ ती० ॥ ६ ॥ नमि जिन तीरथमां गुणनरीया, एक कोडि मुनि षट्काय पीहरीया ॥ एह शिला उपर आलोटी, पाम्या हो शिवपदवी महोटी ॥ ती० ॥ ७ ॥ एम अवर पण मुनिवर सिद्धा, पण ते इहां गणनाए न लीधा ॥ कोटि अनूना जेहने वारे, सिद्धा तेहनो इहां अधिकारे ॥ ती० ॥ ८ ॥ कोटिशिला तिण माटे कहीये, ए तीरथ सेव्ये सुख लहीये ॥ चारणश्रमण मुनि इहां आवे, सुर नर किन्नर मली गुण गावे ॥ ती० ॥ ए ॥ जिहां एक मुनिनुं होय निर्वाण, ते तीरथ नमे कोमि कल्याण ॥ जिहां मुनि मुक्ति गया केइ कोमि, ते तीरथ प्रणमो कर जोमी ॥ ती० ॥ १० ॥ कोटिशिलाविध तीरथ दीसे, जोतां नविजननां मन हीसे ॥ तीरथ वंदो ए नरतमां वारु, राम कहे सुणो सुगुण श्रोतारु ॥ ती० ॥ ११ ॥ २२१३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ शांति जिन शांति जिन शांति जिनराजीया, पुण्यथी आज तुऊ सेव पामी ॥ गायतां स्वामिगुण रासलीला घणी, आजथी शुन दशा सरस जामी ॥ शां० ॥ १ ॥ मात अचिरा तणो तनय सोहामणो, तुम तणां नामणां नित्य लीजे ॥ राय विश्वसेनना कुमर कुलचंदला, ताहरे नाम शुन काज सीके ॥ शां० ॥ २ ॥ धन्य तुं धन्य तुं धन्य हुं धन्य हुं, नाग्यथी सरस तुम दरिस दीठो ॥ सोलमा जिनवरा दुःखहरा शंकरा, आजथी माहरो पाप नीठो ॥ शां० ॥ ३ ॥ दिव्य कंचनवने अजब शोना वनी, धनुष चालीश तनुमान सामी ॥ देवना देव तुऊ सेवना मन वसी, माहरां सुकृतमां नहीय खामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ दिव्य अनुपम घणुं रूप रलीयामणुं, तुम तणुं नयण जोतां निहाली ॥ दुरित दूरे टले लखी चहुली मले, सुजस वेला वले अति रसाली ॥ शां० ॥ ५ ॥ ताहरुं नाम वर मंत्र मन जेहने, तेहने रिपु परानव न लागे ॥ सिद्धि नव निधि वर बुद्धि विलसे तिहां, नविजना जे रहे तुऊ रागे ॥ शां० ॥ ६ ॥ गाजती गजघटा तास घर आंगणे, नृपति सेवे थइ दास नित्ये ॥ विमल कमला वरे कीर्त्ति जग विस्तरे, जे जना तुम

जपे नाम चित्ते ॥ शां० ॥ ७ ॥ शांति जिन सांजलो एक
नति बहु करी एम दाखुं ॥ नेक नजरे करी निरखो मुफ
विना अवर दिलमां न राखुं ॥ शां० ॥ ८ ॥ हुं सयोगी अ
जयो, हुं सरागो तुमे वीतरागो ॥ हुं सदाशी निराशी तु
मेलव्यो मेल तुफ जक्तिरागो ॥ शां० ॥ ए ॥ मुफ सम से
ताहरे घणा, तुफ सम अवसर नहीं कोइ महारे ॥ शरण हुं अ
करवा जणी, जक्तवत्सल तणुं बिरुद तहारे ॥ शां० ॥ १० ॥ प्र
तणो रास रंगे रच्यो, हर्षशुं हुं मच्यो एह गातां ॥ बोधिप्राप्ति
घणी संपदा, पलक नहीं वार तुम चरण ध्यातां ॥ शां० ॥ १
संवत् जयो वरस पंचाशीयो, राजनगरे रह्या अधिक हेजे ॥ आ
शांति जिन पार्श्व जिन वीर जिन, चार प्रजु दीपता सहज तेजे
१२ ॥ तेह प्रजु सान्निध्ये रासरचना करी, अतिहि आनंद म
धारी ॥ श्री सुमतिविजय सुगुरुचरणसुपसायथी, राम प्रजु शांति
सौख्यकारी ॥ शां० ॥ १३ ॥ इति शांतिजिनस्तुतिः ॥ २२२६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शांति प्रजु जामणे जाउं ॥ ए देशी ॥ जवियण जाव
आवो ॥ शांति प्रजु गुण गाउं रे ॥ मोती थाल जरीने लावो,
गुणरास वधावो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ जग मांहे अधिक अछे मीठाइ, ज
विविध मन जाइ रे ॥ तेहथी एहमां अधिक सरसाइ, स्वाद ए
सुखदायी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पहेले जव श्रीषेण नरिंदा, बीजे युगल सु
कंदा रे ॥ त्रीजे सुर सौधर्म सुरिंदा, सुख विलसे आनंदा रे ॥ ज०
३ ॥ चोथे विद्याधरकुले आया, अमिततेज गुण गाया रे ॥ पांच
प्राणत सुरपद पाया, छठे राम कहाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ सातमे अच्यु
इंद्र कहीजे, आठमे चक्री सुणीजे रे ॥ नवमे ग्रैवेयक निसुणीजे, नवमे
नाम जपीजे रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ दशमे मेघरथ राय अदीनो, दान अजय
जिणे दीनो रे ॥ करे प्रशंसा स्वामी शचिनो, जस गुणरसमां जीनो रे
॥ ज० ॥ ६ ॥ सर्वारथसिद्ध सुर अवतारे, सुख पाम्या श्रीकार रे ॥
जव अग्यारमे बारमे जरते, थयो जिन जगदाधार रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ शांति
प्रजुना गुणनी माला, गातां रंग रसाला रे ॥ मनोवांछित लहे लछी विशाला,

मंदिर झाकझमाला रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ डुःख दोहग सवि दूर पलाये, जे ए प्रजुगुण गाये रे ॥ दोषी डुश्मन नासी जाये, जन्म कृतारथ थाये रे ॥ ज० ॥ ए ॥ जिनगुण गणतां जावे जणतां, श्रवणे तेम सांजलतां रे ॥ अवगे अलगां होय अणमिलतां, आवी मले सवि चलतां रे ॥ ज० ॥ १० ॥ मूकी विकथा वात अनेरी, जिनगुण वात जलेरी रे ॥ करतां कुगति न जूवे हेरी, लहीये मुक्तिनी शेरी रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तपगछनायक सुगुरु मुणिंदा, श्रीहीरविजय सूरिंदा रे ॥ बुझव्यो अकबर शाह नरिंदा, मोहनवल्लीकंदा रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ पम्ह अमारि तणा वजमाया, झजीया कर ढोमाया रे ॥ मावर सरोवर जाल मूकाया, महीयल सुजस गवाया रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ साह कुंयरकुल साहस धीरा, नाथीकुखे हीरा रे ॥ प्रगव्या पूरव पुण्य अंकुरा, धर्म करण थया शूरा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ अकबर शाह कत्थो जेणे सीधो, विरुद जगद्गुरु दीधो रे ॥ महीयल मांहे सवलो यश लीधो, चिंतित कारिज कीधो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ श्री विजयदान गुरु पाट पटोधर, उदयो अधिक सवाइ रे ॥ पंच विषय परिहार कस्यो जेणे, तप तपीयां सुखदायी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ दोय सहस आंबिल जस कीधां, तिम नीवी तिम जाणो रे ॥ त्रण सहस पट् शत वली उपरे, तप उपवास वखाणो रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ चार कोमि संख्याए कीधो, श्री सह गुरु सद्यायो रे ॥ अष्टोत्तरशत मुनि जिणे दीख्या, ए गुरु पुण्ये पायो रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ पंच शत संख्या जस उपदेशे, देहरासर प्रासादो रे ॥ जविजन जाव धरीने मांड्या, दीठे हुवे आनंदो रे ॥ ज० ॥ १९ ॥ बिंबप्रतिष्ठा कीधी गुरुजीए, पचास वार उदारो रे ॥ पाटण प्रमुख नयर बहु उत्सव, वरत्यो जयजयकारो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ यात्रा दोय सिद्धाचल केरी, दोय गिरनारे कीधी रे ॥ लाख बिंब जुहास्यां जिननां, महीयल इज्जत लीधी रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ मान तजी रुषि मेघजी नामे, लूका मतनो स्वामी रे ॥ जिनप्रतिमा आराधक हुई, हीर गुरुने पामी रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ मागशिर शुदि नवमी दिन सुंदर, साह कुंयरकुल आयो रे ॥ १५८३ च्याशीए पालणपुरमां, नाथीए कुंवर जायो रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ १५९६ छन्नुंए कार्त्तिक वदिमां, बीजे दीक्षा लीधी रे ॥ संवत् सोल साते ... रे, पंडितपदवी दीधी रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ संवत् सोल आठे वाचक

माहा शुदि पंचमी दीधुं रे ॥ विजयदान सूरीश्वर उत्तम, चिंतित
ज कीधुं रे ॥ ज० ॥ २५ ॥ सोल दाहोत्तरे शीरोहीमां, आचारिजपद
रे॥ सोजागी महिमानिधि महोटा, जिनशासन दीपायुं रे ॥ज०॥२६॥
ति शुति सूधी गुरु धारे, समतारस जंडारो रे ॥ जेणे ए गुरुजी
निरख्या, धन्य तेहनो अवतारो रे ॥ ज० ॥ २७ ॥ श्रीहीरविजय
पाट पटोधर, साह कमा कुलचंदो रे ॥ मात कोडाइ कुखे उप्पन्ना,
वपतेन सूरि वंदो रे ॥ ज० ॥ २८ ॥ शाहसजा मांहे वाद करीने,
त स्थिरता स्थापी रे ॥ विरुद सवाइ जगगुरु पायो, कीर्तिलता
पी रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ तास पाट उदयाचल उदयो, शुद्ध प्ररूपणकारी
श्री राजसागर सूरि जग जयवंता, जवियणने उपकारी रे ॥ ज० ॥
देवीदास अंबर कुलदिनमणि, मात कोडिमदे जायो रे ॥ मन·
सोजागी सद्गुरु, महिमानिधि मुनिरायो रे ॥ ज० ॥ ३१ ॥ संवत्
त्रीया वरसे, आचरिजपद पायो रे ॥ श्रीराजसागर सूरि नाम
, सागरगछ दीपायो रे ॥ ज० ॥ ३२ ॥ शाह शिरोमणि सहस·
, शांतिदास सुजाण रे ॥ जस उपदेशे बहु धन खरच्युं, खरा
प्रमाण रे ॥ ज० ॥ ३३ ॥ कीर्तिकमला श्रीगुरुजीनी, जग मांहे
मरी रे ॥ जवियण मन मांहे अति हर्षे, जस गुणमाला समरी रे
॥ ३४ ॥ तेह गुरुपाट पटोधर प्रगट्या, श्रीवृद्धिसागर सूरिंदा रे ॥
विचारे चतुरा, मोहनवल्लीकंदा रे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ रूप अनोपम
विराजे, शुज लक्षण अति रुडां रे ॥ बहु नर नारी जेणे प्रतिबोध्यां,
न जाखे कूडां रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ गुणनिधि तेहने पाट विराजे,
लक्ष्मीसागर सूरि गाजे रे ॥ कीर्ति जेहनी जग मांहे गाजे, जविजन
गंजे रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ संप्रति मानविजय ते गुरुजी, सोजागी
ागा रे ॥ वैरागी वहाला जविजनने, शमतारस जंडारा रे ॥ ज० ॥
तेह तणे राज्ये ए रचीयो, शांति प्रभुनो रासो रे ॥ जवियण
णीने निसुणो, लहीये सुख विलासो रे ॥ ज० ॥ ३९ ॥ २२७२ ॥

॥ ढाल ॥

ाग धन्याश्री ॥ श्रीगुरु हीरसूरीश्वरशिष्य ॥ ए आंकणी ॥ कल्याण·
वपाय पुरंदर, दिन दिन चढत जगीशा ॥ श्रीगु० ॥ १ ॥

मंदिर झाकझमाला रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ छुःख दोहग सवि दूर पलाये, जे प्रजुगुण गाये रे ॥ दोषी छुश्मन नासी जाये, जन्म कृतारथ थाये रे॥ ज ॥ ए ॥ जिनगुण गणतां जावे जणतां, श्रवणे तेम सांजलतां रे ॥ अल अलगां होय अणमिलतां, आवी मले सवि चलतां रे॥ ज० ॥ १० ॥ मूक विकथा वात अनेरी, जिनगुण वात जलेरी रे॥ करतां कुगति न जूवे हेरी लहीये मुक्तिनी शेरी रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तपगछनायक सुगुरु मुणिंद श्रीहीरविजय सूरिंदा रे ॥ बुझव्यो अकबर शाह नरिंदा, मोहनवल्लीकंद रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ परूह अमारि तणा वजडाया, जजीया कर छोडाव रे ॥ कावर सरोवर जाल मूकाया, महीयल सुजस गवाया रे ॥ ज० १३ ॥ साह कुंयरकुल साहस धीरा, नाथीकुखे हीरा रे ॥ प्रगट्या पूर पुण्य अंकुरा, धर्म करण थया शूरा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ अकबर शाह करू जेणे सीधो, बिरुद जगगुरु दीधो रे ॥ महीयल मांहे सवलो यश लीधो चिंतित कारिज कीधो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ श्री विजयदान गुरु पाट पटे धर, उदयो अधिक सवाइ रे ॥ पंच विषय परिहार कस्यो जेणे, त तपीयां सुखदायी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ दोय सहस आंबिल जस कीधां तिम नीवी तिम जाणो रे ॥ त्रण सहस पट्र शत वली उपरे, तप उप वास वखाणो रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ चार कोमि संख्याए कीधो, श्री सह गु सद्यायो रे ॥ अष्टोत्तरशत मुनि जिणे दीख्या, ए गुरु पुण्ये पायो रे ॥ ज ॥ १८ ॥ पंच शत संख्या जस उपदेशे, देहरासर प्रासादो रे ॥ जवि जन जाव धरीने मांड्या, दीठे हुवे आनंदो रे ॥ ज० ॥ १ए ॥ बिंब प्रतिष्ठा कीधी गुरुजीए, पचास वार उदारो रे ॥ पाटण प्रमुख नयर बहु उत्सव, वरत्यो जयजयकारो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ यात्रा दोय सिद्धाचल केरी, दोय गिरनारे कीधी रे ॥ लाख बिंब जुहार्यां जिननां, महीयल इज्जत लीधी रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ मान तजी ऋषि मेघजी नामे, लूंका मतनो स्वामी रे ॥ जिनप्रतिमा आराधक हुर्ज, हीर गुरुने पामी रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ मागशिर शुदि नवमी दिन सुंदर, साह कुंयरकुल आयो रे। पन्नर त्र्याशीए पाल्हणपुरमां, नाथीए कुंवर जायो रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ पन्नर छन्नुए कार्तिक वदिमां, बीजे दीक्षा लीधी रे ॥ संवत् सोल साते नागोरे, पंडितपदवी दीधी रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ संवत् सोल आठे वाचक

त्या शुदि पंचमी दीधुं रे ॥ विजयदान सूरीश्वर उत्तम, चिंतित
दीधुं रे ॥ ज० ॥ २५ ॥ मोल दाहाने शीरोहीमां, आचारिजपद
सोभागी महिमानिधि महोटा जिनशासन दीपायुं रे ॥ ज० ॥ २६ ॥
शुद्धि सूधी गुरु धारे, समतारस भंडारो रे ॥ जेणे ए गुरुजी
निरख्या, धन्य तेहना अवतारो रे ॥ ज० ॥ २७ ॥ श्रीहीरविजय
पटोधर, साह कमा कुलचंदा रे ॥ मात कोडाइ कुखे उप्पन्ना,
सेन सूरि चंदो रे ॥ ज० ॥ २८ ॥ शाहसभा मांहे वाद करीने,
जस लिरता वधार्यो रे ॥ विरुद सवाइ जगगुरु पायो, कीर्त्तिलता
व्यो रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ तास पाट उदयाचल उदयो, शुद्ध प्ररूपणकारी
श्री राजसागर सूरि जग जयवंता, भविषणने उपकारी रे ॥ ज० ॥
देवीदास व्यवहार कुलदिनमणि, मात कोडिमदे जायो रे ॥ मन-
सोभागी सद्गुरु, महिमानिधि मुनिरायो रे ॥ ज० ॥ ३१ ॥ संवत्
सोला वरस, आचारिजपद पायो रे ॥ श्रीराजसागर सूरि नाम
सागरगछ दीपायो रे ॥ ज० ॥ ३२ ॥ शाह शिरोमणि सहस-
शांतिदास सुजाण रे ॥ जस उपदेशे बहु धन खरच्युं, लख
प्रमाण रे ॥ ज० ॥ ३३ ॥ कीर्तिकमला श्रीगुरुजीनी, जग मांहे
प्सरी रे ॥ भविषण मन मांहे अति हर्षे, जस गुणमाला समरी रे
॥ ३४ ॥ तेह गुरुपाट पटोधर प्रगट्या, श्रीवृद्धिसागर सूरिंदा रे ॥
विचारे चतुरा, मोहनवल्लीकंदा रे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ रूप अनोपम
विराजे, शुभ लक्षण अति रुडां रे ॥ बहु नर नारी जेणे प्रतिबोध्यां,
न नाखे कूडां रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ गुणनिधि तेहने पाट विराजे,
कीर्त्तिसागर सूरि छाजे रे ॥ कीर्त्ति जेहनी जग मांहे गाजे, भविमन
भांजे रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ संप्रति मानविजय ते गुरुजी, सोभागी
दारा रे ॥ वैरागी वहाला भविजनने, शमतारस भंडारा रे ॥ ज० ॥
॥ तेह तणे राज्ये ए रचीयो, शांति प्रभुनो रासो रे ॥ भविषण
धरीने निसुणो, लहीये सुख विलासो रे ॥ ज० ॥ ३९ ॥ ११७५ ॥

॥ ढाल ॥

राग धन्याश्री ॥ श्रीगुरु हीरसूरीश्वरशिष्य ॥ ए आंकणी ॥ कल्याण-
उवझाय पुरंदर, दिन दिन चढत जगीशा ॥ श्रीगु० ॥ १ ॥

शा हरखानंदन सोजागी,साचो वड वैरागी ॥ सम्मति अर्थ विचारी सद्गुरु, साचो शुजमति रागी ॥ श्री० ॥ २ ॥ मात पुंजीबाइ कुखे जायो, नामे नव निधि थाइ ॥ वाचक धर्मविजय वर तेहना, दीपे अधिक सवाइ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तस अंतेवासी गुणजरीया, बोल न बोले विरुथा ॥ श्रीजयविजय विबुध श्रुतदरिया, पाले सूधी किरिया ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तस पदपंकज भ्रमर सरिखा, श्रीशुजविजय कवीशा ॥ गुणगंजीरिम मेरुगिरीशा श्रुतजलसिंधु मुनीशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ तस चरणांबुज सेवक सुंदर, शुज-किरियागुणशूरा ॥ साधे योगाज्यास अखंमित, नहीं गुणरयणे अधूरा ॥ श्री० ॥ ६ ॥ महिमावंत महंत मुनीश्वर, चरण नमे अवनीशा ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय उपगारी, प्रतपो कोमि वरीसा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ते श्रीगुरु महिमानिधि सान्निध्य, रास रसिक में निपायो ॥ शांति प्रजुगुणराशि जणंतां, नव निधि आनंद पायो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पूर्व चरित्र तणे अनुसारे, ए संबंध बनाया ॥ लाज अनंत लह्यो ए रचतां, दिन दिन सुजस सवाया ॥ श्री० ॥ ए ॥ सकल संघने मंगलकारी, शांति जिणंद सुखदाया ॥ रामविजय कहे ए जिनवरके, हर्षे धरी गुण गाया ॥ श्री० ॥ १० ॥ संवत् सत्तर पंचाशीया वर्षे, वैशाख मास कहाया ॥ शुदि सप्तमी गुरु पुष्य संयोगे, पूरण कलश चढाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ अधिक न्यून जे कांइ एणीमें, अणउपयोगे लिखाया ॥ ते सुकवि सवि शोधी लेजो, करी सुनजर सुपसाया ॥ श्री० ॥ १२ ॥ श्रीराजनगरनो संघ सोजागी, तेहने प्रथम सुणाया ॥ क्रुद्धि वृद्धि प्रगटी अधिकेरी, आनंद अधिक उपाया ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबंधे रासबंधे सुकृतानुसंधे प्रजोरवतारजन्म जन्ममहोत्सव नामस्थापन लेखकशालामहोत्सव यौवनवयःप्रापण राज्यस्थापन राजकनीपाणिग्रहण चक्ररत्नोत्पत्ति पट्खंमसाधन चक्रवर्त्तिराज्याजिषेकोत्सव पट्खंमपालन जवाऽसारताजासन, वार्षिकदानसमर्पण चारित्रग्रहण केवलोत्पत्ति चतुःषष्टिसुरेंद्रमिलन समवसरणनिर्माण तद्दर्शन देशनादान तन्मध्ये पंचेंद्रियविषयवर्णन, तदुपरि गुणध... संबं..., तदनंतर कषायोपरि नागदत्तसंबंधकथन तदनंतर वि...ता. सम्यक्त्वमूलश्राद्धद्वादशव्रतकथन तन्मध्ये प्रथमव्रतोपरि यमपाश...५ तदनंतर द्वितीयव्रतोपरि जद्रश्रेष्ठिसंबंधकथन तदनंतर तृतीयव्रतो-

परि जिनदत्तकथानक चतुर्थव्रतोपरि करालपिंगलपुरोहितसंबंध पंचम व्रतोपरि सुलससंबंध षष्ठव्रते स्वयंभूदेवसंबंध सप्तमव्रतोपरि जितशत्रुनृप-निलमंजितानारीदृष्टांतनिरूपण अष्टमव्रते समृद्धदत्तसंबंधोपदेश नवमव्रते सिंहश्रावकावदातवर्णन दशमदेशावकाशिकव्रते गंगदत्तसंबंधवर्णन, एका-दश पौषधव्रतोपरि जिनदत्तसंबंध द्वादशव्रतोपरि शूरपालनृपसंबंधवर्णन इति श्राद्धव्रतसंबंधकथनानंतर शुद्धयतिधर्मस्वरूपश्रवणतः प्रतिबुद्धचक्रायु-धनृपचारित्रग्रहण गणधरपदस्थापन द्वादशांगिरचन पाश्चात्यपौरुष्यां संघ-स्याग्रे गणधरदेशनासमर्पण तन्मध्येऽभ्यंतरंगस्वरूपकथन, तदुपरि रत्नचूडसंबं-धनिरूपण तदुपनयमेलन तदनंतर प्रभुविहारावसरे चतुस्त्रिंशदतिशयवर्णन प्रभुपरिवारसंख्याकथन अष्टमहाप्रातिहार्यवर्णन श्रायुधसंबंधमिलन निजा-युरवशेषबहुपरिवारेण सम्मेतगिरिगमन तत्र चतुःषष्टिसुरेंद्रमिलन प्रभु-देशनाश्रवण तन्मध्ये सिद्धस्वरूपवर्णनावसरे सिद्धसुखपृच्छया वनचरसंबंध-कथन तदनंतर नवशतकेवलज्ञानिसाधुजिरनशनविधान निर्वाणपदप्रापण निर्वाणकल्याणिकोत्सवकरण तदनंतर चक्रायुधगणधरकेवलोत्पत्तिवर्णन देशनायां त्रिशन्महामोहस्थानकनिरूपण अनेकभव्यजीवप्रतिबोधन को-टिशिलातीर्थगमन तत्र मुक्तिपदप्रापण कोटिशिलातीर्थस्तवन शांतिजिन-राजस्तुतिमाहात्म्यवर्णनाद्यनेकसंबंधोपबृंहितः षष्ठः खंडः समाप्तिमगमत् ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं शांतिजिनरासः ॥ शुभं भवतु श्रीश्रमणसंघस्य ॥ शुभं स्ताल्लेखकपाठकयोः ॥ सर्व गाथा ॥ २२८९ ॥ प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ८८ ॥ प्रथमखंडे ढाल ॥ १८ ॥ द्वितीयखंडे ढाल ॥ ३० ॥ तृतीय-खंडे ढाल ॥ ३३ ॥ चतुर्थखंडे ढाल ॥ ३४ ॥ पंचमखंडे ढाल ॥ ३७ ॥ षष्ठ-खंडे ढाल ॥ ६१ ॥ सर्वस्मिन् मूलत्रा ढाल ॥ २१३ ॥ प्रथमखंडे गाथा ॥ ४३७ ॥ द्वितीयखंडे गाथा ॥ ८२८ ॥ तृतीयखंडे गाथा ॥ ८३४ ॥ चतुर्थखंडे गाथा ॥ १००७ ॥ पंचमखंडे गाथा ॥ ११८८ ॥ षष्ठखंडे गाथा ॥ २२८९ ॥ सर्व-स्मिन् मूलत्रा गाथासंख्या ॥ ६५८३ ॥ प्रथमखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥ ४१ ॥ द्वितीयखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥ २० ॥ तृतीयखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥ १५ ॥ तुर्यखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥ ४२ ॥ पंचमखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥ ६३ ॥ षष्ठखंडे प्रास्ताविक श्लोक गाथा ॥

॥ ७७ ॥ सर्वस्मिन् भूत्वा प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ २६९ ॥ इ
पंमित श्रीरामविजयविरचित शांतिनाथ भगवाननो रास समाप्त ॥

॥ अथ स्त्रीने शील पालवाना यत्किंचित् बोलो लखीए ढीए ॥

१ पिता बांधव प्रमुख कोइ पण पुरुषनी कोटे वलगी मलवुं नहीं. २ को
परपुरुषने न्हवरावबो नहीं. ३ कोइ परपुरुषनुं उवटणादिकथी अंगमर्द
करवुं नहीं. ४ कोइ परपुरुष साथे पत्रादिकथी खेलवुं नहीं. ५ कोइ प
पुरुषनो ठेको पकमी वात करवी नहीं. ६ कोइ परपुरुष साथे हसीने हा
ताळी लेवी नहीं. ७ कोइ परपुरुषनी वेणी गुंथवी नहीं. ८ कोइ परपुरुष
अंग चांपवां नहीं. ९ कोइ परपुरुषना हाथनी पाननी बीमी लेवी नह
१० कोइ परपुरुष साथे एक शय्याए बेसवुं अने सुवुं नहीं. ११ वाटे शेरी
पुरुषना संघमां जावुं नहीं. १२ घोमा वगेरे आमश विनाना वाहन
बेसवुं नहीं. १३ ज्येष्ठ, ससरो, सासु तथा सासरामां कोइ मोटेरानी सा
ठट्ठाबाजी करवी नहीं. १४ कोइ परपुरुष साथे एकांतमां रहेवुं नह
१५ परपुरुषथी दृष्टि मेलावी सरागथी जोवुं नहीं. १६ कोइ परपुरुष सा
सांकेतिक भाषाथी बोलवुं नहीं. १७ योगी, भरमा अने भिक्षाचरनी सा
भाषण करवुं नहीं. १८ कोइ पुरुष देखे तेम वडीनीति लघुनीति कर
नहीं. १९ ज्यां पुरुष सुता होय, त्यां अनर्गल थइ फरवुं नहीं. २० पु
देखतां आलस मरडवुं नहीं. २१ तेम शरीरना अवयव उघाडा करी व
बधा नहीं. २२ अत्यंत मिष्ट पदार्थ खावा पर प्रीति राखवी नहीं. २३ भोज
अल्प करवुं. २४ मोटे स्वरथी हसवुं नहीं. २५ अजाणे घेर जावुं नहीं.
पीयर झाझुं रहेवुं नहीं. २७ घरनी वात कोइने कहेवी नहीं. २८ सासरा
द्रव्य कपटथी पीयरीयाने आपवुं नहीं. २९ धीरा तथा नीचा स्वरथी बोल
३० अंग सर्व मंडित राखवुं. ३१ पोताना स्वामीनुं अपमान थाय त्यां जवुं नह

॥ इति श्रीजैनकथारत्नकोषस्याष्टमो
भागः समाप्तिमगमत् ॥

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.
Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.